(सरकारी गजट उत्तर प्रदेश भाग-4 में प्रकाशित)

सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, प्रयागराज की विज्ञप्ति संख्या परिषद् –9/989, के सातत्य में ***शैक्षिक सत्र 2020-21*** *के लिए स्वीकृत नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित एकमात्र पाठ्य-पुस्तक*

संस्कृत

कक्षा-12

- चन्द्रापीडकथा (उत्तरार्द्ध)
- रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः)
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)
- निबन्ध, अलंकार एवं व्याकरण

डॉ० रमेश कुमार उपाध्याय
एम०ए० (हिन्दी, संस्कृत), पी-एच० डी०
भूतपूर्व साहित्य विभागाध्यक्ष,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज

श्रीमती आशा मिश्रा
एम० ए० (संस्कृत, हिन्दी) बी० एड०,
आचार्या-ज्वालादेवी इण्टर कॉलेज
प्रयागराज

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ० प्र०, प्रयागराज द्वारा
स्वीकृत पाठ्यक्रम पर आधारित

संस्करण 2020-21

प्राक्कथन

माध्यमिक शिक्षा परिषद् उ० प्र०, प्रयागराज के अनुसार संस्कृत विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र होगा। समय तीन घण्टे, न्यूनतम उत्तीर्णांक 33 है।

संस्कृत भाषा भारतीय साहित्य की अमूल्य निधि है इसीलिए इसे देववाणी की संज्ञा दी गयी है। इसे ध्यान में रखते हुए माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश ने कक्षा-12 संस्कृत हेतु चर्चित एवं जनप्रिय तीन पुस्तकें निर्धारित की हैं। क्रमानुसार ये पुस्तकें हैं—चन्द्रापीडकथा (उत्तरार्द्ध भाग), रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः), अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)। इसके अतिरिक्त संस्कृत व्याकरण का भी पूर्ण समावेश है। विद्यार्थियों की सुविधा को देखते हुए उपर्युक्त कृतियों को एक पुस्तक का स्वरूप दिया गया है।

बाणभट्ट द्वारा रचित 'चन्द्रापीडकथा' संस्कृत गद्य साहित्य की सर्वश्रेष्ठ रचना है। बाणभट्ट की इस कृति के माध्यम से इसे सरल रूप में प्रस्तुत किया गया है।

रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः) को सरल एवं बोधगम्य रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इसमें प्रस्तुत अनुपम सूक्तियों से परिपूर्ण सर्वगुणसम्पन्न इसकी रचना अत्यन्त चमत्कारिणी और मनोहारिणी है।

'काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला' इस कथन के आधार पर 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' को सर्वश्रेष्ठ नाटक माना गया है। यह महाकवि कालिदास की अमर कृति है। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक को सरल एवं बोधगम्य रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

छात्र-छात्राओं के अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रत्येक रचनाकारों का जीवन-परिचय, शैली, कृतियों की कथावस्तु, श्लोकों एवं गद्यावतरणों पर आधारित प्रश्नोत्तर, हिन्दी अनुवाद, हिन्दी व्याख्या, संस्कृत व्याख्या एवं शब्दार्थ आदि दिये गये हैं। सम्पूर्ण कृतियों से उद्धृत सूक्तियों को भी प्राथमिकता दी गयी है। इसके अतिरिक्त अतिलघु उत्तरीय एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों का भी पूर्ण समावेश है।

संस्कृत व्याकरण भाग के अन्तर्गत निबन्ध, अलंकार, अनुवाद, कारक एवं विभक्ति, समास, सन्धि, शब्द-रूप, धातु-रूप, प्रत्यय, वाच्य परिवर्तन आदि जैसे विविध पक्षों पर विधिवत् प्रकाश डाला गया है ताकि छात्रगण अधिकाधिक लाभ अर्जित कर सकें।

प्रस्तुत संस्करण की रचना विशेषतः विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर की गयी है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह उनके अध्ययन में अधिकाधिक सहायता प्रदान करेगी।

—व्याख्याकार

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, प्रयागराज द्वारा 2020-21 की परीक्षा के लिए निर्धारित

संस्कृत : कक्षा-12

अंक-विभाजन

➡ सामान्य निर्देश

संस्कृत विषय में 100 अंकों का एक प्रश्न-पत्र होगा। प्रश्न-पत्र के प्रत्येक खण्ड में निर्धारित अंकों के अन्तर्गत दीर्घ उत्तरीय, लघु उत्तरीय, अतिलघु उत्तरीय एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों का समावेश कर कई प्रश्न पूछे जा सकते हैं। प्रश्न-पत्र में प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक ही उत्तर के आकार की संक्षिप्तता या दीर्घता का द्योतक होगा। प्रत्येक प्रश्न-पत्र के अन्तर्गत समाविष्ट पाठ्यक्रम का अंक विभाजन निम्नवत् होगा—

खण्ड-क (गद्य) — 20 अंक

➡ चन्द्रापीडकथा

1.	गद्यांश के आधार पर प्रश्नोत्तर।	**10**
2.	कथात्मक पात्रों का चरित्र-चित्रण (हिन्दी में, अधिकतम 100 शब्द)।	**4**
3.	रचनाकार का जीवन-परिचय एवं गद्य-शैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)।	**4**
4.	सन्दर्भित पुस्तक से सम्बन्धित वैकल्पिक प्रश्न।	**2**

खण्ड-ख (पद्य) — 20 अंक

➡ रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः)

1.	किसी श्लोक की सन्दर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या	**2+5=7**
2.	किसी श्लोक की सन्दर्भ सहित संस्कृत में व्याख्या।	**2+5=7**
3.	कवि-परिचय एवं काव्य-शैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)।	**4**
4.	काव्यगत तथ्यों एवं भावों पर आधारित वैकल्पिक प्रश्न।	**2**

खण्ड-ग (नाटक) — 20 अंक

➡ अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)

1.	पाठगत नाटक के किसी गद्यांश अथवा पद्य की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या।	**2+5=7**
2.	पाठगत नाटक के अंशों से सूक्तिपरक पंक्ति की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या।	**2+5=7**
3.	नाटककार का जीवनपरिचय एवं नाट्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)।	**4**
4.	सन्दर्भित पुस्तक से सम्बन्धित वैकल्पिक प्रश्न।	**2**

खण्ड-घ (नाटक) 10 अंक

विभिन्न विषयों पर संस्कृत में निबन्ध (10 पंक्तियाँ)–संस्कृत साहित्य, जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा, यातायात के नियम आदि।

खण्ड-ङ (अलंकार) 3 अंक

निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में– उपमा तथा रूपक।

खण्ड-'च' (व्याकरण) 27 अंक

1.	अनुवाद – ऐसे हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद जहाँ उपपद विभक्तियों का प्रयोग हो।	**8**
2.	कारक तथा विभक्ति	**3**
3.	समास	**3**
4.	सन्धि	**3**
5.	शब्दरूप	**3**
6.	धातुरूप	**3**
7.	प्रत्यय	**2**
8.	वाच्य परिवर्तन	**2**

निर्धारित पुस्तकें एवं पाठ्यवस्तु

खण्ड-(क) गद्य– महाकवि बाणभट्टप्रणीतम् – कादम्बरीसारतत्त्वभूतम् ''चन्द्रापीडकथा'' का उत्तरार्द्ध भाग-सा तु समुत्थाय महाश्वेतां–जग्रन्थ बाणभट्टस्य वाक्यैरेव कथामिमाम्।।इति।।

खण्ड-(ख) पद्य– महाकविकालिदासप्रणीतम् – रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग) श्लोक संख्या 41 से समाप्तिपर्यन्त।

खण्ड-(ग) नाटक– महाकविकालिदासप्रणीतम्–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः) (आकाशे) रम्यान्तरः कमलिनी हरितैः ……… इत्यादि पद से अंक की समाप्ति तक।

खण्ड-(घ) निबन्ध– विभिन्न विषयों पर संस्कृत में निबन्ध (10 पंक्तियाँ) संस्कृत साहित्य, जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा, यातायात के नियम आदि विषयों पर निबन्ध)

खण्ड-(ङ) अलंकार- निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में– उपमा तथा रूपक।

खण्ड-(च) व्याकरण–

1. अनुवाद– ऐसे हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद जहाँ उपपद विभक्तियों का प्रयोग हो।

2. कारक तथा विभक्ति–

निम्नलिखित सूत्रों तथा वार्तिकों के आधार पर कारकों तथा विभक्तियों का ज्ञान–

(क) चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)

(1) कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् (2) चतुर्थी सम्प्रदाने

(3) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (4) क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः

(5) स्पृहेरीप्सितः (6) नमःस्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च

(ख) पंचमी विभक्ति (अपादान कारक)

(1) ध्रुवमापायेऽपादानम्

(2) अपादाने पञ्चमी
(3) जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम् ।(वा0)
(4) भीत्रार्थानां भयहेतुः
(5) आख्यातोपयोगे

(ग) षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध कारक)

(1) षष्ठी शेषे
(2) षष्ठी हेतुप्रयोगे
(3) क्तस्य च वर्तमाने
(4) षष्ठी चानादरे

(घ) सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)

(1) आधारोऽधिकरणम्
(2) सप्तम्यधिकरणे च
(3) साध्वसाधुप्रयोगे च। (वा0)
(4) यतश्च निर्धारणम् ।

3. समास

निम्नांकित समासों की परिभाषा अथवा संस्कृत में विग्रहसहित समास का नाम।
(1) द्वन्द्वः, (2) अव्ययीभावः, (3) द्विगुः।

4. सन्धि

सन्धि, सन्धि-विच्छेद, नामोल्लेख तथा नियम-ज्ञान।
निम्नलिखित सूत्रों के अनुसार संधियों का उदाहरण सहित ज्ञान—

(क) व्यंजन सन्धि या हल सन्धि– (1) स्तोःश्चुना श्चुः, (2) ष्टुना ष्टुः, (3) झलां जशोऽन्ते, (4) खरि च, (5) मोनुऽस्वारः, (6) झलां जश् झशि, (7) तोर्लि, (8) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।

(ख) विसर्ग सन्धि– (1) विसर्जनीयस्य सः, (2) ससजुषोरुः, (3) अतोरोरप्लुतादप्लुते, (4)हशि च, (5) खरवसानयोर्विसर्जनीयः, (6) वा शरि, (7) रोरि, (8) ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।

5. शब्द-रूप

(अ) नपुंसकलिंग– गृह, वारि, दधि, मधु, जगत्, नामन्, मनस्, ब्रह्मन्, धनुष्।
(आ) सर्वनाम– सर्व, तद्, यद्, किम्, युष्मद्, अस्मद्, इदम्, एतत्, अदस्, भवत्।
(इ) 01 से 100 तक के संख्यावाचक शब्द तथा कति के रूप।

6. धातु-रूप

निम्नलिखित धातुओं के लट्, लङ्, लोट्, विधिलिङ् एवं लृट् लकार में रूप।
(अ) आत्मनेपद– लभ्, वृध्, भाष्, शी, विद्, सेव्।
(आ) उभयपद– नी, याच्, दा, ग्रह्, ज्ञा, चुर्, श्रि, क्री, धा।

7. प्रत्यय ल्युट्, णमुल्, अनीयर्, टाप्, ङीष्, तुमुन्, क्त्वा।

8. वाच्य परिवर्तन वाक्यों में कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य पदों का वाच्य परिवर्तन।

●●

विषय-सूची

विषय पृष्ठ-संख्या

खण्ड - 'क' (गद्य)

चन्द्रापीडकथा (उत्तरार्द्ध भाग)

- महाकवि बाणभट्ट **9**
- चन्द्रापीडकथा : कथा-सार **13**
- चन्द्रापीडकथा : पात्र-परिचय **14**
- चन्द्रापीडकथा **20**
  (उत्तरार्द्ध भाग : शब्दार्थ, हिन्दी अनुवाद, व्याकरणात्मक टिप्पणी एवं प्रश्नोत्तर)
- अतिलघु उत्तरीय प्रश्न **90**
- बहुविकल्पीय प्रश्न **92**

खण्ड - 'ख' (पद्य)

रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः)

- महाकवि कालिदास : एक संक्षिप्त परिचय **96**
- रघुवंश महाकाव्य : एक संक्षिप्त परिचय **101**
- रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः) **107**
  (हिन्दी एवं संस्कृत व्याख्या)
- अतिलघु उत्तरीय प्रश्न **124**
- बहुविकल्पीय प्रश्न **135**

खण्ड - 'ग' (नाटक)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)

(आकाशे) रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः .... इत्यादि)

- महाकवि कालिदास **128**
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् : चतुर्थ अङ्क का सारांश **132**

- प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण 133
- अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः) 140
- सूक्तिपरक वाक्यों की ससंदर्भ हिन्दी व्याख्या 152
- अतिलघु उत्तरीय प्रश्न 155
- बहुविकल्पीय प्रश्न 158

खण्ड - 'घ'

निबन्ध 164

खण्ड - 'ङ'

अलंकार 184

खण्ड - 'च' (व्याकरण)

1. अनुवाद 185
गत वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गये वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद 199

2. कारक तथा विभक्ति 204
गत वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर 208
बहुविकल्पीय प्रश्न 212

3. समास 218
गत वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गये समास (उत्तर सहित) 221
बहुविकल्पीय प्रश्न 224

4. सन्धि 228
बहुविकल्पीय प्रश्न 233

5. शब्द-रूप 237
बहुविकल्पीय प्रश्न 246

6. धातु-रूप 257
बहुविकल्पीय प्रश्न 278

7. प्रत्यय 285
बहुविकल्पीय प्रश्न 287

8. वाच्य-परिवर्तन 295
गत वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गये वाच्य-परिवर्तन 296

- **प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र** 301

●●

खण्ड - 'क' (गद्य)

महाकविबाणभट्टप्रणीतम्

चन्द्रापीडकथा

(उत्तरार्द्ध भाग)

महाकवि बाणभट्ट (2017 NF, NI, 19 DE, 20 ZR, ZT, ZU)

जीवन-परिचय–बाणभट्ट संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ गद्य कवि हैं। उनके समय, जीवन-परिचय तथा रचनाओं आदि के विषय में किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। इसका कारण है उनके आश्रयदाता हर्षवर्धन का ऐतिहासिक व्यक्तित्व होना, साथ ही उनकी कृतियों में वर्णित घटनाएँ तथा अन्य बाह्य साक्ष्य भी उसे प्रमाणित करते हैं। हर्षचरित के प्रथम दो उच्छ्वासों और कादम्बरी (भूमिका, श्लोक 10 से 20) में बाण ने अपनी आत्मकथा और वंश-परिचय दिया है। हर्षचरित के प्रथम उच्छ्वास में इन्होंने अपने वंश की पौराणिक उत्पत्ति बतायी है। इनके वंश प्रवर्तक वत्स, सरस्वती के पुत्र सारस्वत के चचेरे भाई थे। बाण के पिता का नाम चित्रभानु तथा माता का नाम राजदेवी था। बचपन में ही उनकी माता का देहान्त हो गया और पिता ने उनका पालन-पोषण किया। 14 वर्ष की आयु में ही इनके पिता का भी स्वर्गवास हो गया। पिता की मृत्यु के बाद शोकसन्तप्त बाण अपने मित्रों के साथ देशाटन पर निकल पड़े और यायावरी जीवन व्यतीत करने लगे। भ्रमण के दौरान बाण राजदरबारों तथा गुरुकुलों में भी गये। विद्वानों के बीच रहते हुए बाण की प्रकृति बदल गयी और वे अपने वात्स्यायन वंश के अनुरूप गम्भीर स्वभाव के होकर अपनी जन्म-भूमि को लौट आये। इनके पूर्वजों का निवास-स्थान शोण (सोन) नदी के पास प्रीतिकूट नामक ग्राम था।

समय–बाण सम्राट् हर्ष के सभा-पण्डित थे, अतः बाण के समय-निर्धारण में कोई कठिनाई नहीं है। हर्ष का राज्याभिषेक अक्टूबर, 606 ई. में हुआ और उनकी मृत्यु 648 ई. में हुई। ताम्रपत्रों तथा चीनी यात्री ह्वेनसांग के संस्मरणों से ये तिथियाँ निर्णीत हो चुकी हैं। ह्वेनसांग ने 629 से 645 ई. तक भारत-भ्रमण किया था और वह हर्ष के निकट सम्पर्क में भी आया था। अतः बाण का समय 7वीं शताब्दी ई. का पूर्वार्द्ध मानना उचित है।

8वीं शताब्दी ई. से लेकर अनेक संस्कृत ग्रन्थकारों ने बाण और उनके ग्रन्थों का उल्लेख किया है, अतः बाण के समय के विषय में कोई विवाद नहीं है।

रचनाएँ–मुख्य रूप से बाणभट्ट के दो ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं–

1. हर्षचरित, 2. कादम्बरी।

इनके नाम से तीन और ग्रन्थ माने जाते हैं–

1. चण्डीशतक, 2. मुकुटताडितक, 3. पार्वती परिणय।

परन्तु इन तीनों रचनाओं की प्रामाणिकता सन्दिग्ध है।

हर्षचरित—यह आठ उच्छ्वासों में लिखी हुई एक आख्यायिका है। इसके प्रारम्भ में स्वयं बाण ने अपने वंश का विशद् वर्णन किया है और अगले उच्छ्वासों में हर्ष की वंश-परम्परा से प्रारम्भ करते हुए उनकी उत्पत्ति तथा विकास का विस्तृत वर्णन किया है।

कादम्बरी—यह एक अनूठा कथा-ग्रन्थ है। इसमें एक काल्पनिक कथा वर्णित है। कादम्बरी को हम आधुनिक युग में उपन्यास कह सकते हैं। भाव और भाषा-शैली सभी दृष्टियों से कादम्बरी एक उत्कृष्ट रचना है, अतः यह कथन उचित ही है कि कादम्बरी के रसज्ञों को भोजन भी अच्छा नहीं लगता—"**कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते।**"

पार्वती परिणय—यह एक नाटक है, इसमें भगवान् शिव तथा पार्वती का विवाह वर्णित है।

चण्डीशतक—यह सौ श्लोकों का संग्रह-ग्रन्थ है। इसमें अत्यन्त सुन्दर शब्दावली में भगवती चण्डिका की स्तुति की गयी है।

मुकुटताडितक—यह एक नाटक है, परन्तु अब अप्राप्य है।

बाण की शैली एवं काव्य-सौन्दर्य

(2017 ND, NH, 18 BD, BE, 19 CZ, DB, DC, DD, DF, 20 ZO,ZP, ZR, ZS)

बाण संस्कृत गद्य-काव्य के मूर्द्धन्य सम्राट् माने गये हैं। उन्होंने गद्य में पद्यों से भी अधिक सौन्दर्य एवं चमत्कार-प्रदर्शन किया है। बाण की सबसे प्रमुख विशेषता है कि उन्होंने अपने दोनों गद्य-काव्यों में शैलीगत समस्त विशेषताओं का संग्रह करने का प्रयत्न किया है, अतः उनके ग्रन्थ सभी के लिए आनन्ददायी हैं। बाण के अनुसार नवीन या चमत्कारिक अर्थ, उत्कृष्ट स्वभावोक्ति, सरल श्लेष प्रयोग, सुन्दर रसाभिव्यक्ति और ओज-गुणयुक्त शब्दयोजना, ये सारे गुण एकत्र दुर्लभ हैं। परन्तु बाण की रचनाओं में ये सभी गुण प्राप्त होते हैं।

रीति—बाण पाञ्चाली रीति के कवि हैं। उनकी रचनाओं में भाव और भाषा का अनुपम समन्वय मिलता है। पाञ्चाली रीति का तात्पर्य है, विषय के अनुरूप शब्दावली का प्रयोग और बाण इसके सिद्धहस्त कवि हैं।

शैली—बाण के समय चार प्रकार की गद्य-शैलियाँ प्रचलित थीं, जिनमें से तीन बाण के साहित्य में मिलती हैं–दीर्घसमासा, अल्पसमासा और समासरहिता। बाण का किसी शैली पर विशेष आग्रह नहीं था।

समासों का अस्तित्व गद्य शैली की प्रमुख विशेषता माना जाता है–'**ओजः समास भूयस्त्वमेतद् गद्यस्य जीवितम्।**' समासों का जमघट लगा देने में बाण ने कमाल दिखलाया है। जिस प्रकार उन्होंने समास-बहुल लम्बे-लम्बे वाक्यों का प्रयोग किया है, उसी प्रकार समासरहित छोटे-छोटे वाक्यों के प्रयोग में भी कौशल दिखाया है।

भाषा—बाण की भाषा का प्रवाह अविच्छिन्न है। उन्होंने भाव और भाषा का अत्यन्त सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया है। शृङ्गार रस के वर्णन में कोमलकान्त पदावली है और करुण रस के वर्णन में सरल-सुबोध पदावली का प्रयोग है। अतएव उनके काव्य में ललित पदविन्यास और रचनाशैली अत्यन्त आकर्षक प्रतीत होती है। नये-नये अर्थों का सन्निवेश भी उन्होंने विलक्षण ढङ्ग से किया है। बाण का अक्षय शब्दकोश और पदावलियों का अविराम स्पन्दन, काव्य के लिए अपेक्षित समस्त तत्त्व जो बाण की कृतियों में वर्तमान हैं, उसे देखकर ही '**बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्**' की उक्ति चल पड़ी, जो सार्थक भी है।

अलङ्कार—बाण की रचनाओं में अलङ्कारों की छटा दर्शनीय है। उन्होंने अलङ्कारों का प्रयोग समुचित तथा अत्यन्त स्वाभाविक रूप में किया है। कहीं भी अलङ्कारों के कारण भाषा की रमणीयता में व्याघात नहीं उत्पन्न हुआ है। बाण के अलङ्कार-प्रयोग के विषय में प्रसिद्ध है कि बाण के लम्बे-लम्बे समास यदि पहाड़ी नदी की वेगवती धारा के समान हैं, तो उनकी श्लिष्ट उपमाएँ इन्द्रधनुष की छाया की भाँति उसे रंगीन बना देती हैं। उनके अनुप्रासों से भाषा में एक विलक्षण स्वर-माधुर्य आ गया है–'**मधुकरकलकलङ्ककालीकृतकालेय-कुसुमकुड्मलेषु**'। उनके श्लेष जुही की माला में पिरोये गये चम्पक पुष्पों की भाँति हैं–'**निरन्तर श्लेषघनाः सुजातयो महास्त्रजश्चम्पककुड्मलैरिव**'। बाण की उत्प्रेक्षाओं और उपमाओं से सम्पूर्ण कथा व्याप्त है। वस्तुतः बाण के चित्रणों का अधिकांश सौन्दर्य उनकी उत्प्रेक्षाओं में ही है। बाण के अर्थापत्ति, विरोधाभास आदि अलङ्कारों के प्रयोग भी बड़े स्वाभाविक बन पड़े हैं।

रस–बाण रससिद्ध कवि हैं। शृङ्गार उनका सर्वप्रिय रस है। वे संयोग शृङ्गार के वर्णन में जितने सिद्धहस्त हैं, उससे अधिक सफलता उन्हें विप्रलम्भ शृङ्गार के वर्णन में मिली है। बाण जिस रस का प्रयोग करते हैं, उसका मार्मिक वर्णन कर पूर्ण रसास्वाद कराते हैं।

चरित्र-चित्रण–बाण ने हर्षचरित में ऐतिहासिक और कादम्बरी में काल्पनिक पात्र लिये हैं। कादम्बरी के पात्र समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि हैं, साथ ही, दिव्यलोक के पात्र भी हैं। प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण अति उत्तम है, जबकि गौण पात्रों का चित्रण उतना प्रभावशाली नहीं बना। बाण मर्यादित प्रेम के समर्थक हैं।

बाण ने तत्कालीन समाज और संस्कृति का बहुत सुन्दर और सजीव चित्रण किया है। बाण के सुभाषित उनकी सूक्ष्म दृष्टि और चिन्तन-शक्ति के परिचायक हैं।

बाण की दो-एक प्रशस्तियाँ यहाँ दी जा रही हैं। कादम्बरी के उत्तरभाग के 7वें श्लोक में कादम्बरी की रसभरता के विषय में भूषणभट्ट ने स्वयं कहा है–

(1) कादम्बरी रसभरेण समस्त एव मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्॥

(2) रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनोहरति।
तत् किं तरुणी, नहि नहि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य॥

–धर्मदाससूरि, विदग्धमुखमण्डन, 4/28

बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम् (2013 BC, BD, 17 NC, NF, 18 BC, BE)

कवि की सर्वतोमुखी प्रतिभा, व्यापक ज्ञान, अद्भुत वर्णन-शैली और प्रत्येक वर्ण्य विषय के सूक्ष्मातिसूक्ष्म वर्णन के आधार पर यह सुभाषित प्रचलित है कि बाण ने किसी विषय को अछूता नहीं छोड़ा है और उसने जो कुछ वर्णन कर दिया है, उससे आगे कहने के लिए कुछ शेष नहीं रहता।

बाण ने जितनी सुन्दरता, सहृदयता और सूक्ष्मदृष्टि से बाह्य प्रकृति का वर्णन किया है, उतनी ही गहराई से अन्तःप्रकृति और मनोभावों का विश्लेषण भी किया है। प्रत्येक वर्णन इतने व्यापक और सटीक होते हैं कि पाठक को यह अनुभव होता है कि उन परिस्थितियों में वह भी ऐसा ही सोचता या करता। प्रातःकालवर्णन, सन्ध्यावर्णन, शूद्रकवर्णन, चाण्डालकन्या-वर्णन, विन्ध्याटवी-वर्णन, शबरसैन्यवर्णन, जाबाल्याश्रमवर्णन, जाबालिवर्णन, उज्जयिनीवर्णन, तारापीडवर्णन, इन्द्रायुधवर्णन, अच्छोद-सरोवरवर्णन, महाश्वेतावर्णन, कादम्बरीवर्णन आदि में बाण ने वर्णन ही नहीं किया है, अपितु प्रत्येक वस्तु का सजीव चित्र उपस्थित कर दिया है। इसी प्रकार विलासवती के पुत्रहीनताजन्य विषाद का वर्णन, चन्द्रापीड को देखकर स्त्रियों के हाव-भाव का वर्णन, पुण्डरीक को देखकर महाश्वेता के प्रेमोद्रेक का वर्णन, चन्द्रापीड को देखकर कादम्बरी के हार्दिक भावों का वर्णन, पुण्डरीक की मृत्यु पर महाश्वेता और कपिंजल के विलाप का वर्णन बाण की हार्दिक सम्वेदना और सहृदय-हृदयता का परिचायक है। चन्द्रापीड को दिए गए शुकनासोपदेश में तो कवि की प्रतिभा का चरमोत्कर्ष परिलक्षित होता है। कवि की लेखनी भावोद्रेक में बहती हुई सी प्रतीत होती है। शुकनासोपदेश में ऐसा प्रतीत होता है मानो सरस्वती साक्षात् मूर्तिमती होकर बोल रही हैं।

बाण के वर्णनों में भाव और भाषा का सामंजस्य, भावानुकूल भाषा का प्रयोग, अलंकारों का सुसंयत प्रयोग, भाषा में आरोह और अवरोह तथा लम्बी समासयुक्त पदावली के पश्चात् लघु-पदावली गुण विशेषरूप से प्राप्त होते हैं। प्रत्येक वर्णन में पहले विषय का साङ्गोपाङ्ग वर्णन मिलता है; बड़े समस्त पद मिलते हैं; तत्पश्चात् श्लेषमूलक उपमाएँ और उत्प्रेक्षाएँ; तदनन्तर विरोधाभास या परिसंख्या से समाप्ति। श्लेषमूलक उपमा-प्रयोग, विरोधाभास और परिसंख्या के प्रयोगों में क्लिष्टता, दुर्बोधता और बौद्धिक परिश्रम अधिक है। कहीं-कहीं वर्णन इतने लंबे हो गए हैं कि ढूँढ़ने पर भी क्रियापद मिलने कठिन हो जाते हैं। महाश्वेता-दर्शन में एक वाक्य 67 पंक्ति का है और कादम्बरी-दर्शन में तो एक वाक्य 72 पंक्ति का हो गया है। विशेषणों के विशेषणों की परम्परा इतनी लंबी हो जाती है कि मूल क्रिया लुप्त सी हो जाती है और कथा-प्रवाह तो प्रयागस्थ संगम

में सरस्वती की भाँति अदृश्य हो जाता है। ऐसे वर्णनों में वर्णन का स्वारस्य रह जाता है, परन्तु कथा-प्रवाह पद-पद पर प्रतिहत हो जाता है।

कुछ मनोरम वर्णन उदाहरणार्थ दिए जा रहे हैं। सन्ध्या का वर्णन करते हुए कवि की कल्पना है कि ऊर्ध्वमुख ऋषियों ने सूर्य का तेज पी लिया है, अतः उसका तेज मन्द पड़ गया है। सप्तर्षियों को पैर न लग जाएँ, इसलिए मानो सूर्य ने अपने पैर (किरण) समेट लिए हैं। तपोवन की धेनु की तरह संध्या मानो दिन भर कहीं घूम कर अब आ गई है। सूर्य के पश्चिम समुद्र में गिरने से जो बूँदें उठीं, वे ही मानो तारे हो गए।

ऊर्ध्वमुखैः.....ऊष्मपैस्तपोधनैरिव परिपीयमानतेजःप्रसरो विरलातपो दिवसस्तनिमानमभजत्। उद्यत्सप्तर्षिसार्थस्पर्शपरिजिहीर्षयेव......रविरम्बरतलादलम्बत। क्वापि विहृत्य दिवसावसाने लोहिततारका तपोवनधेनुरिव कपिला परिवर्तमाना सन्ध्या मुनिभिरदृश्यत। अपराम्भसि पतिते दिनकरे...अम्भससीकरनिकरमिव तारागणमम्बरमधारयत्।

कादम्बरी के सौन्दर्य के वर्णन में उत्प्रेक्षा, उपमा, श्लेष अलंकारों की छटा दर्शनीय है–

देहार्धप्रविष्टहरगर्वितगौरीविजिगीषयेव सर्वाङ्गानुप्रविष्टमन्मथदर्शितसौभाग्यविशेषाम्,...गौरीमिव श्वेतांशुकरचितोत्तमाङ्गाभरणाम्,...आकाशकमलिनीमिव स्वच्छाम्बरदृश्यमानमृणालकोमलोरुमूलाम्,...कल्पतरुलतामिव कामफलप्रदाम्...कादम्बरीं ददर्श।

विन्ध्याटवी-वर्णन में समासभूयस्त्व, ओज गुण और विरोधाभास का ताल-मेल दर्शनीय है–

उन्मदमातङ्गकपोलस्थलगलितमदसलिलसिक्तेनेव निरन्तरमेलालतावनेन मदगन्धिनान्धकारिता,...प्रेताधिपनगरीव सदासंनिहितमृत्युभीषणा महिषाधिष्ठिता च,...क्रूरसत्त्वापि मुनिजनसेविता, पुष्पवत्यपि पवित्रा विन्ध्याटवी नाम।

बाण की रचना में अलंकार स्वयं आते गए हैं। श्लेष, परिसंख्या और विरोधाभास वाले स्थल आयास-साध्य हैं। उपमा, उत्प्रेक्षा और रूपक के उदाहरण पद-पद पर प्राप्य हैं। उज्जयिनी-वर्णन में परिसंख्या अलंकार का प्रयोग करते हुए वर्णन किया गया है कि–केवल मणि-दीपों में ही अनिर्वाण (न बुझना) था, कोई ऐसा व्यक्ति नहीं था, जिसे मोक्ष-प्राप्ति न हो। चकवा-चकवी के युगल का ही वियोग होता था, अन्य किसी के जोड़े का वियोग नहीं होता था। वर्ण (जाति) परीक्षा सोने की ही होती थी, अन्य की नहीं। ध्वजाओं में ही अस्थिरता थी, अन्यत्र नहीं। कुमुद ही मित्र (सूर्य) से द्वेष करते थे, अन्य कोई मित्रद्वेषी नहीं था।

यस्यां चानिवृत्तिर्मणिप्रदीपानाम्, अन्तस्तरलता हाराणाम्, ... द्वन्द्ववियोगश्चक्रवाकनाम्नाम्, वर्णपरीक्षा कनकानाम्, अस्थिरत्वं ध्वजानाम्, मित्रद्वेषः कुमुदानाम्, कोशगुप्तिरसीनाम्।

राजकुलवर्णन में श्लेष के आधार पर उत्कृष्ट कवि के गद्य का स्वरूप बताया गया है कि उसमें विविध पदों के द्वारा नवीन अर्थों की अभिव्यक्ति की जाती है।

उत्कृष्टकविगद्यमिव विविधवर्णश्रेणिप्रतिपाद्यमानाभिनवार्थसंचयम्, नाटकमिव प्रकटपताकाङ्कशोभितम्।

महाश्वेता में नवयौवनावस्था का प्रवेश इसी प्रकार हुआ जैसे वसन्त में चैत्रमास, चैत्रमास में नवपल्लव, नवपल्लव में फूल, फूल में भौंरा, भौंरे में मद। इसमें एकावली अलंकार का बहुत सुन्दर प्रयोग हुआ है।

क्रमेण च कृतं मे वपुषि वसन्त इव मधुमासेन, मधुमास इव नवपल्लवेन, नवपल्लव इव कुसुमेन, कुसुम इव मधुकरेण, मधुकर इव मदेन नवयौवनेन पदम्।

उपर्युक्त वर्णनों में बाण की सूक्ष्मदृष्टि, वर्णनों की व्यापकता, वर्णनों की सर्वांगीणता के साथ ही रस, अलंकार और मनोरम कल्पनाओं का समन्वय सहृदयों को यह कहने के लिए बाध्य करता है कि 'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्'।

चन्द्रापीडकथा : कथा-सार

प्राचीनकाल में शूद्रक नामक एक राजा था। विदिशा नाम की नगरी उसकी राजधानी थी। एक बार जब वह सभा मण्डप में बैठा हुआ था कि दक्षिण दिशा से एक चाण्डाल कन्या पिंजड़े में एक तोता लिए हुए आयी और उसके समीप जाकर बोली, "महाराज यह तोता सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञाता और पृथ्वी का एक रत्न है। इसे आप स्वीकार करें।" राजा के पूछने एवं उनकी उत्सुकता को सन्तुष्ट करने हेतु शुक ने बताया कि बाल्यकाल में वह एक मुनि कुमार के द्वारा जाबालि के आश्रम में पहुँच गया। मेरे विषय में मुनियों की जिज्ञासा जानकर जाबालि ऋषि ने इस प्रकार बताया–

अवन्ति में उज्जयिनी नाम की एक नगरी में तारापीड नाम का एक राजा हुआ था। शुकनास नाम का एक ब्राह्मण उसका मन्त्री था। देवताओं की आराधना, पूजापाठ के बाद तारापीड को चन्द्रापीड नाम का और मन्त्री शुकनास को वैशम्पायन नाम का पुत्र-रत्न प्राप्त हुआ। विद्याध्ययन एवं युवावस्था प्राप्त होने पर चन्द्रापीड को युवराज और वैशम्पायन को उसका मन्त्री नियुक्त किया गया। विजय में मिली कुलूत राजा की पुत्री राजकन्या पत्रलेखा को चन्द्रापीड की सेवा में नियुक्त किया गया। दिग्विजय अभियान में चन्द्रापीड किरातों की नगरी सुवर्णपुर पहुँचा। अपने इन्द्रायुध पर सवार वह एक दिन शिकार खेलते समय किन्नरों के एक युगल का पीछा करते हुए अच्छोद सरोवर के तट पर पहुँच गया। वहाँ शिव मन्दिर में एक कन्या को पूजा करते हुए देखा। चन्द्रापीड के पूछने पर उस कन्या ने बताया कि वह गन्धर्वराज हंस की पुत्री महाश्वेता है। महर्षि श्वेतकेतु के पुत्र पुण्डरीक ने एक दिन उसे देखा और वे इतने आसक्त हो गये कि उनका जीवन खतरे में पड़ गया। पुण्डरीक के मित्र कपिंजल से सूचना पाकर रात्रि में जब मैं उनसे मिलने यहाँ पहुँची तब तक वे अपना प्राण त्याग चुके थे। मैंने उनके शरीर के साथ सती होने का निर्णय लिया तभी कोई उनके शरीर को लेकर आकाश में उड़ गया। उसी समय मुझे आकाशवाणी सुनाई पड़ी कि शाप का अन्त होने पर यह फिर तुमसे मिलेगा। तब तक तुम यहीं रहकर तपस्या करो। कुछ देर के बाद पुण्डरीक का मित्र कपिंजल भी जो हमारे निकट खड़ा था, अचानक मुझे अकेला छोड़कर दूर आसमान में उड़ता हुआ विलीन हो गया।

महाश्वेता अपनी आपबीती चन्द्रापीड को सुनाकर उसका उचित अतिथि सत्कार किया। महाश्वेता एक दिन चन्द्रापीड को साथ लेकर अपनी प्रिय सखी कादम्बरी को समझाने के लिए हेमकूट गयी। सखी के दुःख से प्रभावित होकर कादम्बरी विवाह नहीं करना चाहती थी। किन्तु महाश्वेता के साथ पहुँचे युवराज चन्द्रापीड को देखते ही वह उस पर आसक्त हो गई। कुछ दिनों उपरान्त अपनी सेविका पत्रलेखा को वहीं रुकने के लिए कहकर चन्द्रापीड अपनी सेना में लौट आया। किन्तु वहाँ आये पत्रवाहक से मिले पत्र को पढ़कर वैशम्पायन एवं सेवक को पत्रलेखा के साथ जाने का आदेश देकर अपनी राजधानी लौट आया। कुछ दिनों बाद एक दूत के माध्यम से कादम्बरी का सन्देश पाकर वैशम्पायन की खोज के बहाने चन्द्रापीड कादम्बरी से मिलने चल पड़ा। यात्रा के बीच में ही चन्द्रापीड को जानकारी प्राप्त हुई कि अच्छोद सरोवर के किनारे वैशम्पायन पड़ा हुआ है। वह वापस आना ही नहीं चाहता है। चन्द्रापीड के वहाँ पहुँचने पर महाश्वेता ने उसे बताया कि वैशम्पायन ने उसके प्रति दुर्व्यवहार किया जिसके कारण उसने उसे शुक हो जाने का शाप दे दिया है। चन्द्रापीड इतना सुनते ही वहीं गिरकर मर गया। यह दृश्य देखकर पत्रलेखा भी इन्द्रायुध को लेकर अच्छोद सरोवर में कूद पड़ी। तदन्तर सरोवर से एक पुरुष निकला। सारी कथा कादम्बरी और महाश्वेता को सुनाकर दोनों को अपने प्रेमियों से पुनर्मिलन के लिए आश्वस्त किया।

राजा शूद्रक शुक के मुख से इतना सुनते ही मृत्यु को प्राप्त हो गया। इस घटना के बाद चन्द्रापीड जीवित हो गया और फिर चन्द्रलोक से पुण्डरीक भी आ गया। परिणामस्वरूप चन्द्रापीड का कादम्बरी के साथ और पुण्डरीक का महाश्वेता के साथ विवाह सम्पन्न हो गया।

चन्द्रापीडकथा : पात्र परिचय

शूद्रक

(2017 NF, NG, 18 BD, 20 ZT)

बाण की कादम्बरी की कथा दो जन्मों से सम्बन्धित है। राजा शूद्रक पूर्वजन्म में युवराज चन्द्रापीड था। चन्द्रापीड पूर्वजन्म में चन्द्रमा था। वह शाप के कारण पृथ्वी पर दो बार जन्म लेता है। प्रथम बार चन्द्रापीड के रूप में जन्म लेकर मित्र वैशम्पायन की मृत्यु के आघात से प्राण त्याग देता है, तत्पश्चात् राजा शूद्रक के रूप में जन्म लेता है। राजा शूद्रक का शारीरिक सौष्ठव अत्यन्त आकर्षक था। उसके चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार कही जा सकती हैं–

महाबलशाली चक्रवर्ती सम्राट्–राजा शूद्रक महाप्रतापी चक्रवर्ती सम्राट् था। उसके पराक्रम के आगे समस्त राजा अपना मस्तक झुकाते हैं और उसकी आज्ञा शिरोधार्य करते हैं। अपने पराक्रम और तेज के कारण वह दूसरे इन्द्र के समान प्रतीत होता था। चक्रवर्ती के लक्षणों से सम्पन्न शूद्रक चारों समुद्रों की मालारूपी मेखलावाली पृथ्वी का स्वामी था–''**अशेषनरपतिशिरः समभ्यर्चितशासनः पाकशासन इवापरः, चतुरुदधिमालामेखलाया भुवो भर्त्ता, प्रतापानुरागावनत-समस्तसामन्तचक्रः, चक्रवर्तीलक्षणोपेतः, चक्रधर इव'' इति।** वह सम्पूर्ण पृथ्वी के भार को हाथों में कङ्गन के समान अनायास धारण करता था–''**वलयमिव लीलया भुजेन भुवनभारमुद्वहन्।**''

संयमी–शूद्रक के राजमहल में अनेक स्त्रियाँ उसकी परिचायिकाओं के रूप में कार्य करती थीं। उसे स्नानादि कराती थीं, परन्तु शूद्रक उनके बीच अनासक्त भाव से रहता था। बाण ने शूद्रक के लिए स्पष्ट कहा है–''**प्रथमे वयसि वर्तमानस्यापि रूपवतोऽपि सन्तानार्थिभिरमात्यैरपेक्षितस्यापि सुरतसुखस्योपरि द्वेष इवासीत्।**'' अर्थात् मन्त्रियों के द्वारा सन्तान की आकाङ्क्षा करने पर भी वह स्त्री-सुख से विमुख था। वह जितेन्द्रिय था, इन्द्रियों का दास नहीं। बाण पुनः शूद्रक को '**वनितासम्भोगसुखपराङ्मुखः**' कहकर उसके संयमी होने का परिचय देते हैं।

शास्त्रपारङ्गत एवं गुणग्राही–राजा शूद्रक समस्त शास्त्रों का ज्ञाता था और दूसरों के गुणों को भी परखनेवाला था। उसके राज-दरबार में विद्वानों और गुणीजनों का सदा आदर होता था। अनेक छन्दों का ज्ञाता शूद्रक अपना समय शास्त्रचर्चाओं में व्यतीत करता था–''**कदाचिदाबद्धविदग्धमण्डलः काव्यप्रबन्धरचनेन, कदाचिच्छात्रालापेन, कदाचिदाख्यानकाख्यायिकेतिहासपुराणाकर्णनेन....।**'' वह राज-सभा में प्रायः विद्वत् सभाओं और गोष्ठियों का आयोजन करता रहता था–''**आदर्शः सर्वशास्त्राणाम्, उत्पत्तिः कलानाम्, कुलभवनं गुणानां, आगमः काव्यामृतरसानाम्, उदयशैलो मित्रमण्डलस्य, उत्पातकेतुरहितजनस्य प्रवर्तयिता गोष्ठीबन्धानाम्, आश्रयो रसिकानाम्।**'' वह सभा में लोभरहित विद्वान् मन्त्रियों से घिरा रहता था–''**नीतिशास्त्रनिर्मलमनोभिरलुब्धैः स्निग्धैः प्रबुद्धैश्चामात्यैः परिवृतः।**''

सौन्दर्य का प्रशंसक–राजा शूद्रक किसी भी प्रकार के गुण का प्रशंसक है, वह स्वाभाविक सौन्दर्य की भी प्रशंसा करता है। राजसभा में जब चाण्डालकन्या राजा के समक्ष उपस्थित होती है, तो उसके सौन्दर्य को देखकर वह चकित रह जाता है–''**अहो! विधातुरस्थाने रूप-निष्पादनप्रयत्नः....मन्ये च मातङ्गजातिस्पर्शदोषभयादस्पृशतेयमुत्पादिता प्रजापतिना, अन्यथा कथमियमक्लिष्टता लावण्यस्य।**''

धर्मनिष्ठ–राजा शूद्रक धर्म के प्रति आस्था रखता है। उसके दैनिक कृत्यों में ईश्वरोपासना भी सम्मिलित है। पितरों को तर्पण देता है, मन्त्रों से पवित्र जल से सूर्य को अञ्जलि देता है तथा देवालय में शङ्कर की पूजा करता है–''**सम्पादितपितृजलक्रियो मन्त्रपूतेन तोयाञ्जलिना दिवसकरमभिप्रणम्य देवगृहमगमत्। उपरचित पशुपतिपूजश्च।**''

इस प्रकार पराक्रम का रसिक होते हुए भी विनय का व्यवहार करनेवाला शूद्रक विजय-प्राप्ति का उत्कट अभिलाषी एवं अत्यधिक शक्तिशाली था।

चाण्डालकन्या

(2018 BD, 19 DA, 20 ZU)

सौन्दर्य की प्रतिमा–अपने अत्यधिक सौन्दर्य के कारण चाण्डालकन्या सौन्दर्य की प्रतिमा के सदृश थी। राजा शूद्रक

जैसा पराक्रमी तथा चक्रवर्ती सम्राट् भी उसके अप्रतिम सौन्दर्य को देखकर चकित रह जाता है–''**असुरगृहीतामृतापहरणकृत-कपटपटुविलासिनीवेशस्य श्यामतया भगवतो हरेरिवानुकुर्वतीम्।**'' उसका रूप-लावण्य विष्णु के मोहिनी रूप का अनुकरण करनेवाला था। अपलक नेत्रों से चाण्डालकन्या के रूप-सौन्दर्य को देखते हुए वह सोचता है कि यदि विधाता ने उसे इतना रूप दिया तो उसे ऐसे कुल में जन्म क्यों दिया। वह सोचता है कि शायद अछूत को छूने के दोष के भय से इसे बिना छुए ही बना डाला है–''**यदि नामेयमात्मरूपोपहसिता-शेषरूपसम्पदुत्पादिता किमर्थमपगत-स्पर्शसम्भोगसुखे कृतं कुले जन्म।**'' अन्ततः शूद्रक विधाता को धिक्कारता है कि ऐसे अनुपयोगी स्थान पर सर्व-सौन्दर्य तथा रूपलावण्यता की कमनीयता क्यों स्थापित की–**सर्वथा धिग्धिग्विधातारमसदृशसंयोगकारिणम्, अतिमनोहराकृतिरपि क्रूरजातितया....।**''

चतुरता–रूपवती होने के साथ ही चाण्डालकन्या अत्यन्त चतुर एवं विवेकशील स्त्री है। शूद्रक के समक्ष सभाभवन में प्रवेश करके वह सभी लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए जर्जर बाँस के टुकड़े को फर्श पर जोर से पटकती है, जिससे उत्पन्न तेज आवाज के कारण पूरी सभा का ध्यान उसकी ओर चला जाता है। इससे स्पष्ट है कि वह कितनी चतुराई से सभा-मण्डप में अपनी उपस्थिति का महत्त्व उत्पन्न करती है।

वात्सल्यमयी–चाण्डालकन्या का हृदय स्नेह तथा वात्सल्य से परिपूर्ण है। पिंजड़े में बन्द तोते के रूप में भी पुत्र के लिए उसके हृदय में अगाध स्नेह तथा वात्सल्य है। वह अपने पुत्र की देख-रेख तथा रक्षा के लिए मृत्युलोक में निवास करना स्वीकार करती है और चाण्डाल कुल में जन्म लेकर अपने आचरण को पवित्र रखती है। शुक रूप में स्थित पुत्र के शाप का अन्त समीप समझकर वह सम्पूर्ण वृत्तान्त राजा को सुनाती है।

वस्तुतः कादम्बरी के अनुसार चाण्डालकन्या महामुनि श्वेतकेतु की पत्नी एवं पुण्डरीक की माता है, जिसके शापग्रस्त हो जाने पर उसकी रक्षा के लिए चाण्डाल कुल में जन्म लेती है, जिससे स्पर्श के दोष से बची रहे। वैशम्पायन नामक शुक के शापमुक्त होने पर वह पुनः अपने लोक को चली जाती है।

वैशम्पायन नामक शुक

(2018 BE, 19 CZ)

यह तोता अपने पहले के दो जन्मों में क्रमशः श्वेतकेतु का पुत्र पुण्डरीक तथा शुकनास नामक मन्त्री का पुत्र वैशम्पायन था। चन्द्रमा के शाप के कारण यह मनुष्य लोक में शुकनास के यहाँ उत्पन्न हुआ। महाश्वेता के द्वारा शाप दिये जाने पर तोते की योनि में उत्पन्न हुआ। पूर्वजन्म के संस्कार के कारण इसका शास्त्रज्ञान तथा महाश्वेता के प्रति अनुराग आदि नष्ट नहीं हुए। इसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

शास्त्रज्ञ तथा कलाओं में निपुण–पूर्वजन्मों के संस्कार के कारण शुक सम्पूर्ण विद्याओं, कलाओं, शास्त्रों, पुराणों, इतिहास तथा राजनीति का ज्ञानी था। इसका यह ज्ञान राजा 'शूद्रक' के लिए आशीर्वाद के रूप में कही हुई निम्न आर्या में स्पष्ट हो जाता है–

स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम्॥

अपने इसी ज्ञान के कारण इसने अपने तथा शूद्रक के पूर्वजन्मों की कथा को स्पष्ट रूप में कहा था।

मनुष्य की वाणी में बोलनेवाला–इसकी वाणी मनुष्य के समान स्पष्ट थी। स्वयं राजा शूद्रक उसकी इस चमत्कारयुक्त वाणी से प्रभावित होकर अपने मन्त्री कुमारपालित से कहता है कि सुना आप लोगों ने इस पक्षी की वर्णों के उच्चारण में स्पष्टता और स्वर में मधुरता! पहले तो यही महाश्चर्य है कि यह (शुक) वर्णों की परस्पर स्पष्ट पृथकतावाली सुस्पष्ट मात्रा, अनुस्वार, स्वर तथा व्याकरण-संयत अक्षरोंवाली वाणी बोलता है–''**श्रुता भवद्भिरस्य विहङ्गमस्य स्पष्टता वर्णोच्चारणे, स्वरे च मधुरता! प्रथमं तावदिदमेव महदाश्चर्यम्....।**''

महाश्वेता का प्रेमी–पूर्वजन्म के संस्कार के कारण इसे महाश्वेता से अति प्रेम था। अतः जैसे ही इसके पङ्खों में उड़ने की शक्ति आयी, वह महाश्वेता से मिलने के लिए उड़ चला।

दुर्भाग्यशाली–यह दुर्भाग्यशाली भी था। जन्म लेते ही इसकी माता स्वर्ग चली गयी और बचपन के आरम्भ में ही इसके पिता को वृद्ध भील ने मार डाला। यह इसके पूर्वजन्म के पिता श्वेतकेतु की तपस्या का प्रभाव था कि किसी प्रकार इसके जीवन की रक्षा हो सकी।

पूर्वजन्म का ज्ञाता—इसे पहले के दो जन्मों का पूर्ण ज्ञान था। इसी ज्ञान के आधार पर वह राजा शूद्रक को कहानी सुनाता है। संक्षेप में इसके सम्पूर्ण गुण चाण्डालकन्या के द्वारा शूद्रक के समक्ष निम्नलिखित कथन से स्पष्ट हैं–

देव! विदितसकलशास्त्रार्थः, राजनीतिप्रयोगकुशलः, पुराणेतिहासकथालापनिपुणः,...

सकलभूतलरत्नभूतोऽयं वैशम्पायनो नाम शुकः। ...तदयात्मीयः क्रियताम्।

इसी ज्ञान के आधार पर वह राजा शूद्रक से स्वयं सम्मान प्राप्त करता है। राजा शूद्रक स्वयं वैशम्पायन शुक से पूछते हैं कि क्या आपने कुछ अभीष्ट खाद्य पदार्थों का अन्तःपुर में आस्वादन किया–

कच्चिदभिमतमास्वादितमभ्यन्तरे भवता किञ्चिदशनजातम्।

अन्ततः राजा शूद्रक उसके चरित्र से प्रभावित होकर जिज्ञासावश उसके विषय में समस्त जानकारी देने का निवेदन करता है।

कादम्बरी का चरित्र-चित्रण

(2017 CN, NG, NH, 18 BC, 19 CZ, DA, DB, DF, 20 ZR, ZS)

परिचय—कादम्बरी बाणभट्ट कृत 'कादम्बरी' की प्रमुख स्त्री पात्र है। वह गन्धर्वों के राजा चित्ररथ की एकमात्र पुत्री है। वह चन्द्रापीड की प्रेमिका, महाश्वेता की सखी और सम्पूर्ण कलाओं में दक्ष स्त्री है।

प्रमुख नायिका—कादम्बरी के नाम पर ही रचना का नामकरण होने से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि कादम्बरी मुख्य स्त्री-पात्र है। यद्यपि यह कथानक के आदि में ही हमारे सामने आती है और महाश्वेता के मुख से ही हमें उसका परिचय मिलता है, किन्तु नायक चन्द्रापीड की प्रिया होने के कारण तथा बाद के कथानक में सर्वत्र मुख्य रूप से उपस्थित होने से वही इस आख्यायिका की नायिका है।

सच्ची प्रेमिका—वह चन्द्रापीड को पहली बार देखते ही उस पर अनुरक्त हो जाती है और सदैव उनके पास रहना चाहती है, **'हे सखि! महाश्वेते, × × × दर्शनादारभ्य शरीरस्याप्ययमेव प्रभुः किमुत भवनस्य परिजनस्य वा।'** एकान्त में चन्द्रापीड के बारे में सोचना और पत्रलेखा के द्वारा चन्द्रापीड को सन्देश भेजना इसके प्रमाण हैं। पत्रलेखा चन्द्रापीड से कादम्बरी की मनोभावना का वर्णन करती हुई कहती है–"वह चन्द्रापीड के मरने पर उसके साथ सती होना चाहती है, किन्तु आकाशवाणी के द्वारा पुनर्मिलन का सन्देश दिये जाने पर यह सब-कुछ छोड़कर अच्छोद सरोवर के किनारे ही उसके मृत शरीर की रक्षा और सेवा करती हुई एक तपस्विनी का जीवन व्यतीत करने लगती है।"

सङ्कोची—यह अत्यन्त लज्जाशीला और सङ्कोची स्वभाव की है। इसी कारण से महाश्वेता के बार-बार आग्रह करने पर भी वह चन्द्रापीड को अपने हाथ से पान देने में सङ्कोच करती है और महाश्वेता के मुख से अपनी दृष्टि हटाये बिना ही उसे पान देती है। इसी कारण ही विभिन्न प्रकार से चन्द्रापीड के द्वारा पूछे जाने पर भी स्पष्ट रूप से अपने प्रेम को प्रकट नहीं करती।

प्रिय सखी—वह महाश्वेता की प्रिय सखी है। वह महाश्वेता से प्रेम करती है और महाश्वेता इससे प्रेम करती है। महाश्वेता कादम्बरी का परिचय कराती हुई चन्द्रापीड से कहती है–**'सरलहृदया महानुभावा च कादम्बरी।'**

सम्पूर्ण कलाओं में दक्ष—वह सङ्गीत, चित्रकारी, शृङ्गार आदि सम्पूर्ण कलाओं में दक्ष है। इस प्रकार कादम्बरी के चरित्र में अनेक विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

चन्द्रापीड का चरित्र-चित्रण

(2017 ND, NH, NI, 18 BD, BE,BG, 19 DA, DB, DD, DE, DF, 20 ZO, ZP, ZR, ZU)

'कादम्बरी' महाकवि बाण की श्रेष्ठ गद्य-काव्यात्मक रचना है। चन्द्रापीड इस गद्य-काव्य का धीरोदात्त नायक है। उसके चरित्र में निम्नलिखित विशेषताएँ दिखायी पड़ती हैं–

रूपवान्—चन्द्रापीड सुन्दर राजकुमार है। जब उसमें यौवन आता है तब तो उसका अङ्ग-प्रत्यङ्ग निखर उठता है। शिक्षा प्राप्त कर जब वह घर आता है, तब नवयौवन उसके सौन्दर्य को दोगुना कर देता है।

बुद्धिमान् और गुणवान्—चन्द्रापीड की बुद्धि बहुत तीव्र है। विद्या-मन्दिर में वह आचार्यों द्वारा पढ़ायी गयी सम्पूर्ण विद्याओं को बहुत थोड़े समय में ग्रहण कर लेता है। सभी शास्त्रों, शस्त्रविद्या, घोड़े और हाथी पर सवारी, पक्षियों की भाषा का ज्ञान आदि सभी में वह पारङ्गत हो जाता है।

वीर—चन्द्रापीड महान् वीर तथा पराक्रमी भी है। वह युवराज बनकर दिग्विजय करने के लिए चलता है, तो चारों दिशाओं को जीतकर सबको अपने अधीन कर लेता है।

सच्चा मित्र—चन्द्रापीड सच्चा मित्र है। अपने मित्र वैशम्पायन के बिना वह रह नहीं सकता। चाहे विद्यालय में पढ़ने जाय अथवा दिग्विजय के लिए प्रस्थान करे, मित्र उसके साथ रहता है। मित्र ही कठिनाई के समय सहायता करता है–ऐसा उसका विश्वास है। चन्द्रापीड को जब यह पता चलता है कि महाश्वेता के शाप से वैशम्पायन मर गया है, तब अपने मित्र के शोक में व्याकुल चन्द्रापीड प्राण त्याग देता है।

सच्चा प्रेमी—चद्रापीड कादम्बरी से प्रेम करता है। कादम्बरी के प्रथम दर्शन में ही उसके हृदय में प्रेम प्रवाहित हो जाता है। उसका प्रेम निःस्वार्थ और वासनारहित है। कादम्बरी से मिलने के लिए वह आकुल होता है। उज्जयिनी से वर्षा-आँधी में चलकर भी वह कादम्बरी के पास पहुँचने का प्रयास करता है। कादम्बरी की प्रत्येक इच्छा को वह पूर्ण करना चाहता है। उसके प्रेम में कहीं भी स्वार्थ अथवा वासना की गन्ध नहीं है।

दिव्य पुरुष—चन्द्रापीड यद्यपि राजा तारापीड का पुत्र अर्थात् लौकिक मनुष्य है, परन्तु वास्तव में वह लोकपाल चन्द्रमा है। शाप के कारण वह पहले चन्द्रापीड के रूप में और फिर राजा शूद्रक के रूप में जन्म लेता है। शापमुक्त होकर वह फिर चन्द्रलोक, हेमकूट और उज्जयिनी पर शासन करता है।

संक्षेप में, चन्द्रापीड चन्द्रमा का अवतार है। वह वीर, बुद्धिमान् तथा गुणवान् राजकुमार के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुआ है।

पुण्डरीक का चरित्र-चित्रण (2017 NF, NI, 20 ZQ,ZT)

पुण्डरीक महाकवि बाणभट्ट कृत कादम्बरी का महत्त्वपूर्ण पात्र है। उसके चरित्र में निम्न प्रमुख विशेषताएँ देखने को मिलती हैं–

सुन्दर एवं चञ्चल—महामुनि श्वेतकेतु से आकृष्ट लक्ष्मी के मानसपुत्र का नाम पुण्डरीक है। तीनों लोक में श्वेतकेतु का रूप सर्वाधिक सुन्दर है, अतः पुत्र पुण्डरीक भी अत्यन्त सुन्दर युवक है। लक्ष्मी का पुत्र होने से उसमें नैसर्गिक चञ्चलता भी है। तभी तो महाश्वेता के आकृष्ट होते ही वह अपनी मानसिक दुर्बलता के कारण उस पर आसक्त हो जाता है।

कुशल प्रेमी—महाश्वेता के पुष्पमञ्जरी विषयक कौतूहल को देखकर वह उसके पास चला आता है और अपने कानों से उतारकर उसके कानों में पहनाते समय अनजाने ही महाश्वेता के गालों के स्पर्शसुख से उसकी अँगुलियाँ काँप जाती हैं और रुद्राक्षमाला उसके हाथ से गिर जाती है। मुनिपुत्र होने पर भी पुण्डरीक प्रणयव्यापार में प्रवीण है।

वाक्पटु—महाश्वेता के प्रेमपाश में आबद्ध हो जाने से कपिञ्जल उसकी भर्त्सना करता है, तो वह असत्य भी बोल जाता है और कहता है कि वह कामवश नहीं है। बनावटी क्रोध से वह महाश्वेता को प्रेम-फटकार भी सुनाता है, किन्तु अवसर मिलते ही छिपकर तरलिका के पास पहुँच जाता है और महाश्वेता के बारे में सारी बातें पूछता है। वह प्रेमपत्र भी तरलिका के माध्यम से महाश्वेता के पास पहुँचा देता है। पुण्डरीक की धार्मिकता, विद्वत्ता, तपस्विता एवं मित्रता आदि का मूल्याङ्कन कपिञ्जल के शब्दों में किया जा सकता है और यह कहा जा सकता है कि पुण्डरीक के अन्दर अनेक विशेषताएँ हैं।

महाश्वेता का चरित्र-चित्रण (2017 NC, 18 BE, BG, 19 DB, 20 ZO, ZP, ZQ, ZS, ZT)

गौरवर्णा, परम रूपवती गन्धर्वराज हंस की पुत्री महाश्वेता स्वभाव से सरल, उदार हृदयवाली, अतिथि सेवापरायण, तर्कशीला एवं बुद्धिमती है। उसकी माँ गौरी चन्द्रमा के वंश में उत्पन्न अप्सराओं के कुल में पैदा हुई थी। इससे स्पष्ट है कि बाण रचित 'कादम्बरी' की मुख्य नायिका कादम्बरी की सहेली महाश्वेता का जन्म अप्सराओं के कुल में हुआ था। महाश्वेता अपनी माँ गौरी से भी अधिक गौर वर्ण की और अत्यन्त आकर्षक थी। इसी कारण मुनिकुमार पुण्डरीक इसकी तरफ आकर्षित हुआ और अल्पकालिक विछोह भी सहन करने में अक्षम होकर मृत्यु को प्राप्त हो गया था।

दृढ़ संकल्पवती—महाश्वेता दृढ़ संकल्पवाली युवती है। मुनिकुमार पुण्डरीक को प्रथम दर्शन में ही आकर्षित होकर

उसे प्राप्त करने का निश्चय कर लेती है। कपिञ्जल से पुण्डरीक की अस्वस्थता की सूचना पाकर वह रात्रि में उससे मिलने तरलिका के साथ निर्भय होकर सरोवर की तरफ जाती है। वहाँ पुण्डरीक की मृत्यु की दशा में पाकर उसके साथ सती होने का निर्णय लेती है। आकाशवाणी सुनकर कि 'तुम प्राणों का परित्याग मत करना, तुम्हारा इसके साथ फिर मिलन होगा', महाश्वेता ने तपस्विनी के रूप में वहीं रहने का संकल्प किया। पिता के राजमहल में वैभवपूर्ण सुखमय जीवन का परित्याग करके निर्जन वन-प्रान्तर में रहकर कठोर तपस्यारत जीवन व्यतीत करना उसके दृढ़ संकल्पी व्यक्तित्व का ही द्योतक है।

पतिव्रता– महाश्वेता मानसिक रूप से पुण्डरीक को अपना पति स्वीकार कर चुकी थी। सामाजिक मान्यता के अभाव में भी पतिपरायण होकर एकनिष्ठ भारतीय आदर्श नारी का वह प्रतिनिधित्व करती है। वह दृढ़ चरित्र की स्वामिनी है। आकाशवाणी की सूचना पर वह पुण्डरीक के पुनर्आगमन तक तपस्विनी का जीवन व्यतीत करने का संकल्प लिए है। वैशम्पायन के प्रेम प्रदर्शन करने पर वह उसे शुक होने का श्राप देती है। यह उसके पातिव्रत्य धर्म पालन की गरिमा का स्पष्ट उदाहरण है।

व्यवहार कुशल एवं कोमल हृदयवाली– महाश्वेता के व्यक्तित्व की मुख्य विशेषता उसकी व्यवहार कुशलता एवं दयालुता है। वह उच्च कुलीन गन्धर्वराज हंस की पुत्री है। राजमहल में उसका बचपन व्यतीत हुआ। कोमल हृदयवाली होने के कारण ही वह तपस्वी कुमार पुण्डरीक को अपना हृदय दे देती है। वह राजकुमार चन्द्रापीड का आतिथ्य-सत्कार करती है। कादम्बरी उसकी प्रिय सहेली है। उसके कल्याण की कामना हेतु चन्द्रापीड को साथ लेकर वह उसके पास जाती है। अपने सम्पर्क में आने वाले केयूरक, पत्रलेखा आदि प्रत्येक व्यक्ति से वह बड़ी ही कुशलतापूर्वक व्यवहार करती है। सभी उसका सम्मान करते हैं। उसका व्यवहार चातुर्य उस समय भी प्रकट होता है जब पुण्डरीक अपनी अक्षमाला लौटाने के लिए कहता है तो वह अपनी एकावली उसके हाथ पर रखकर चली जाती है। वह सद्गुणी, निश्छल और सरलहृदया है। उसके चरित्र में कहीं भी अशिष्टता या कपटता का दर्शन नहीं होता है। चन्द्रापीड को वह अपनी आपबीती बिना कुछ छिपाये बता देती है। उसे सत्य के उद्घाटन करने में कभी लज्जा या ग्लानि का अनुभव नहीं करती है।

कठोर तपोव्रती– महाश्वेता कठोर तपोव्रती है। मुनिजनों का आदर करने वाली है। पुण्डरीक की दुरवस्था की सूचना देने जब कपिञ्जल राजमहल में जाकर उससे मिलता है तो महाश्वेता उसका चरण धुलकर अपने आँचल से साफ करती है। पुण्डरीक से मिलने के लिए वह गुरुजनों की आज्ञा लिये बिना ही रात्रि में ही यह सोचकर चल पड़ती है कि कहीं पुण्डरीक के प्राणों पर संकट न आ जाये। पुण्डरीक की मृत्यु पर वह पहले सती होने का निर्णय लेती है किन्तु आकाशवाणी एवं दिव्य पुरुष के कथन पर वह तपस्विनी बन कर वहीं निर्जन वन में गुफा में रहने लगती है। वह पाशुपत व्रत एवं कठोर अनुष्ठानों में अपना जीवन लगा देती है। यह क्रम तब तक चलता है जब तक शाप का अन्त नहीं हो जाता है।

स्पष्ट है कि महाश्वेता प्रेम, त्याग, करुणा, सहानुभूति, सरलता, निष्कपटता आदि अनेक मानवीय सद्गुणों से युक्त एक आदर्श भारतीय नारी सिद्ध होती है।

पत्रलेखा का चरित्र-चित्रण

(2017 ND, NF, 18 BC, BG, 19 CZ, DD, DE, DF, 20 ZO, ZU)

पत्रलेखा का परिचय युवराज चन्द्रापीड को महादेवी द्वारा दी गयी आज्ञा से प्राप्त होता है–महाराज ने कुलूत देश को जीतकर उस देश के राजा की पुत्री पत्रलेखा को कैदियों के साथ यहाँ लाकर रनिवास की सेविकाओं के बीच नियुक्त कर दिया था। उसे अनाथ राजपुत्री जानकर मेरे मन में उसके प्रति प्रेम हो गया। मैंने उसे अपनी पुत्री के समान पाल-पोसकर बड़ा किया है। 'अब यह पानदान का डिब्बा लेकर चलने वाली तुम्हारी योग्य सेविका बने'– आयुष्मान् उसके प्रति साधारण सेविका की दृष्टि न रखें और अपनी भावनाओं के समान ही इसे भी चंचलता से रोकें। स्पष्ट है कि उज्जयिनी के राजा तारापीड की पत्नी महारानी विलासवती द्वारा पालित पुत्री पत्रलेखा की सामाजिक स्थिति विशिष्ट थी।

स्वस्थ एवं सौन्दर्यवती–लम्बी, स्वस्थ एवं सुगठित शरीरवाली पत्रलेखा रूपवती एवं आकर्षक व्यक्तित्ववाली थी। गन्धर्व राजपुत्री कादम्बरी उसके सौन्दर्य को देखकर चकित रह गई थी। पत्रलेखा के सौन्दर्य के सम्बन्ध में कादम्बरी की यह युक्ति "अहो! मानुषीषु पक्षपातः प्रजापतेः" पूर्णतया सत्य प्रतीत होती है।

योग्य परिचारिका–चन्द्रापीड की ताम्बूल करङ्कवाहिनी पत्रलेखा सभी दृष्टिकोणों से सुयोग्य परिचारिका प्रमाणित होती है। वह अपने कर्त्तव्य का पूर्णरूप से निर्वाह करती है। सेवाकाल में वह सदैव चन्द्रापीड के साथ रहती है। जिस समय

चन्द्रापीड दिग्विजय के लिए उज्जयिनी से निकलता है और वह सुवर्णपुर पहुँचता है, हर जगह वह चन्द्रापीड के साथ रहती है। चन्द्रापीड का सानिध्य पत्रलेखा को सुख की अनुभूति करता है।

कर्त्तव्यपरायण–पत्रलेखा अपने कर्त्तव्य के प्रति सदैव जागरूक रहती है। उज्जयिनी हो या सुवर्णपुर, दिग्विजय यात्रा हो या कादम्बरी का महल सब जगह, हर समय वह अपने कर्त्तव्य के प्रति तत्पर रहती है। वह चन्द्रापीड की सेविका भी, सलाहकार भी और सखी भी है।

विश्वासपात्र–पत्रलेखा विश्वासपात्र सेविका है। वह छाया सदृश चन्द्रापीड के साथ सदैव उपस्थित रहती है। विश्वासपात्र होने के कारण ही चन्द्रापीड अपने मनोभावों को उससे प्रकट कर देता है। वह उससे कादम्बरी के प्रति अपने हृदय को भी खोल देता है। पत्रलेखा अपनी विश्वसनीयता के कारण कादम्बरी का भी विश्वास भाजन है। कादम्बरी भी चन्द्रापीड के प्रति मनोभावों को पत्रलेखा के समक्ष प्रकट कर देती है।

स्पष्ट है कि महाकवि बाण ने पत्रलेखा को कर्त्तव्यपरायण, स्वामिभक्त, आदर्श सेविका के रूप चित्रित किया है।

शुकनास का चरित्र-चित्रण (2017 NF, NI, 20 ZQ)

अवन्ति में उज्जयिनी के राजा तारापीड का प्रधान मंत्री शुकनास का चरित्र अपने विशिष्ट गुणों के कारण सर्वश्रेष्ठ है। शुकनास की बुद्धि बड़े-बड़े कार्यों के संकट में भी स्थिर रहती थी। राजा तारापीड प्रजा को निश्चिन्त करके राज्य का भार मंत्री शुकनास के ऊपर डालकर सुख से रहने लगा था। शुकनास ने अपनी बुद्धि के बल से उस महान राज्य के भार को सरलता से धारण कर लिया था। वह धीर-गम्भीर, विद्वान एवं राज्य संचालन में कुशल ब्राह्मण था। वह महाराज तारापीड का विश्वासपात्र था।

निर्भीक एवं कर्त्तव्यनिष्ठ–शुकनास के चरित्र की मुख्य विशेषता उसकी कर्त्तव्यनिष्ठता है। वह राज्य की सेवा को अपना परम धर्म मानता है वह समयानुसार राज्य के हित में निर्णय लेता है और अपने कार्य से राज्य का हित करता है। वह लगन एवं पूर्ण निष्ठा के साथ राज्य के समस्त कार्यों का संपादन करता है। निर्भीक स्वभाव, विवेकशीलता, दूरदर्शिता, अनुभव परिपक्वता का दर्शन उस समय स्पष्ट परिलक्षित होता है जब वह युवराज चन्द्रापीड को अनेक प्रकार के उपदेश देकर उसे सावधान करता है। वह उसे राजा का कर्त्तव्य सिखाता है।

राज्य के प्रति समर्पित– प्रधानमंत्री शुकनास राज्य एवं राजा के प्रति एकनिष्ठ समर्पित है। वह राज्य एवं प्रजा के कल्याण में सदैव संलग्न रहता है। चन्द्रापीड के जन्म के अवसर पर उसकी प्रसन्नता देखने लायक होती है। युवराज पद पर जब चन्द्रापीड का राज्याभिषेक किया जाता है तो वह उसे बहुविधि उपदेश देकर भविष्य में लोकप्रिय राजा के रूप में तैयार करता है। उसके उपदेशों, सम्बोधन, चेतावनी से उसकी राज्यभक्ति परिलक्षित होती है।

महाराज तारापीड का विश्वासपात्र– प्रधानमंत्री शुकनास महाराज तारापीड का पूर्ण विश्वासपात्र मंत्री है। चन्द्रापीड को शिक्षा पूर्ण होने पर गुरु आश्रम से वापस लाने के लिए प्रबन्ध मंत्री शुकनास ही करता है। चन्द्रापीड को इस सन्दर्भ में राजा के पत्र के साथ मंत्री शुकनास का भी पत्र मिलता है। इस उदाहरण से शुकनास की गरिमा एवं विश्वासपात्रता का परिचय मिलता है। राजा तारापीड राज्य संचालन का भार शुकनास पर डालकर चिन्ता रहित हो जाते हैं।

धीर-गंभीर स्वभाव– ब्राह्मण मंत्री शुकनास सम्पूर्ण राज्य संचालन की शक्ति पाकर भी अत्यन्त सरल, विनम्र, राजा एवं प्रजा का कल्याण चाहने वाला सद्चरित्र व्यक्ति ही सिद्ध होता है। वह राजनैतिक संकट प्रकट होने पर भी अविचलित रहता है। वह सभी समस्याओं का समाधान अपने विवेक, बुद्धि कौशल से करता है।

दूरदृष्टिवाला– प्रधानमंत्री शुकनास अनुभवी एवं दूरदर्शी है। वह धन-वैभव से उत्पन्न बुराई को समझता है। लक्ष्मी के प्रभाव से व्यक्ति दूषित विचारवाला हो जाता है। इसलिए युवराज चन्द्रापीड को लक्ष्मी की विशेषताओं से अवगत कराता है। शुकनासोपदेश इसका सर्वोत्तम उदाहरण है।

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि शुकनास के चरित्र में वे सभी गुण मौजूद हैं जो एक राजभक्त मंत्री में होना चाहिए। वह धैर्यवान, निर्भीक, निस्पृह, बुद्धिमान् और निष्ठावान् मंत्री है।

●●

महाकविश्रीबाणभट्टविरचितम्

चन्द्रापीडकथा

(उत्तरार्द्ध भाग : शब्दार्थ, हिन्दी अनुवाद, व्याकरणात्मक टिप्पणी एवं प्रश्नोत्तर)

➥ **सा तु समुत्थाय महाश्वेतां स्नेहनिर्भरं कण्ठे जग्राह। महाश्वेतापि दृढतरदत्तकण्ठाग्रहा, ताम् अवादीत्–''सखि कादम्बरि! भारते वर्षे राजा तारापीडो नाम। तस्यायम् आत्मजः चन्द्रापीडो नाम दिग्विजयप्रसङ्गेन अनुगतो भूमिमिमाम्। एष च दर्शनात् प्रभृति मे निष्कारणबन्धुतां गतः। कथिता चास्य बहुप्रकारं प्रियसखी। तत् अपूर्वदर्शनोऽयम् इति विमुच्य लज्जाम्, अविज्ञातशीलः इत्यपहाय शंकाम्, यथा मयि तथा अत्रापि वर्तितव्यम्'' इत्यावेदिते तया चन्द्रापीडः प्रणामम् अकरोत्।**

शब्दार्थ– समुत्थाय = उठकर। स्नेहनिर्भरम् = स्नेहभाव से पूर्ण होकर। कण्ठे = गले से। जग्राह = लगा लिया। दृढ़तरदत्तकण्ठग्रहा = दृढ़ता के साथ गले लगाती हुई। अवादीत् = कहा। तस्यायम् = यह उसका। आत्मजः = पुत्र। दिग्विजयप्रसङ्गेन = दिग्विजय के प्रसंग से। अनुगतः = आया है। भूमिमिमाम् = इस स्थान पर। एषः = यह। निष्कारण बन्धुतां = बिना किसी कारण के ही भ्रातृत्व भाव को। गतः = पहुँच गये हैं। कथिता = कही गयी है। बहुप्रकारम् = बहुत प्रकार से। तत् = अतः। अपूर्वदर्शनः = पहले न देखा हुआ। विमुच्य = छोड़कर। अविज्ञातशीलः = अनजानशील-स्वभाववाला। इत्यपहाय = छोड़कर। यथा मयि = जैसा मुझमें। तथा अत्रापि = वैसा ही इसमें। वर्तितव्यम् = व्यवहार करना चाहिए। इत्यावेदिते = ऐसा निवेदन करने पर। अकरोत् = किया।

हिन्दी अनुवाद– कादम्बरी ने उठकर अत्यन्त प्रेम के साथ महाश्वेता को गले लगा लिया। महाश्वेता ने भी उसे कसकर गले से लगाते हुए कहा–सखी कादम्बरी, भारतवर्ष में तारापीड नाम के राजा हैं। यह उन्हीं के पुत्र चन्द्रापीड दिग्विजय के प्रसंग में यहाँ आये हुए हैं। मैंने इन्हें जब से देखा तभी से ये मेरे अकारण भाई बन गये हैं। इनसे मैंने तुम्हारे विषय में बहुत कुछ कह दिया। अतः प्रथम दर्शन के कारण होने वाली लज्जा तथा अज्ञात शील-स्वभाव के कारण होने वाली शङ्का को छोड़कर तुम इनके प्रति भी वही व्यवहार करो जो मेरे प्रति करती हो। महाश्वेता के ऐसा कहने पर चन्द्रापीड ने कादम्बरी को प्रणाम किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– दृढ़तरदत्तकण्ठग्रहा = (दृढ़तरः दत्तः कण्ठहः यया सा) तस्यायम् = (तस्य + अयम्) भूमिमिमाम् = (भूमिम् = इमाम्) अविज्ञातशीलः = (अविज्ञातः शीलः यस्य सः) इत्यपहाय = (इति + अपहाय)।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?
उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता बाणभट्टः अस्ति।
प्रश्न 2. का समुत्थाय महाश्वेतां स्नेहनिर्भरं कण्ठे जग्राह?
उत्तर– कादम्बरी समुत्थाय महाश्वेतां स्नेहनिर्भरं कण्ठे जग्राह।
प्रश्न 3. तारापीडस्य आत्मजः कः आसीत्?
उत्तर– तारापीडस्य आत्मजः चन्द्रापीडः आसीत्।
प्रश्न 4. 'दिग्विजयप्रसङ्गेन अनुगतो भूमिमिमाम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद लिखिए।
उत्तर– चन्द्रापीड दिग्विजय के प्रसंग से यहाँ आये हुए हैं।
प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कं प्रणामम् अकरोत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः कादम्बरीं प्रणामम् अकरोत्।

➥ **कादम्बर्यपि सविभ्रमकृतप्रणामा महाश्वेतया सह पर्यङ्के सह निषसाद। ससंभ्रमं परिजनोपनीतायां हेमपादाङ्कितायां पीठिकायां चन्द्रापीडः समुपाविशत्। परिजनोपनीतेन सलिलेन कादम्बरी स्वयम् उत्थाय महाश्वेतायाः चरणौ**

प्रक्षाल्य उत्तरीयांशुकेन अपमृज्य, पुनः पर्यङ्कम् आरुरोह। चन्द्रापीडस्यापि कादम्बर्याः सखी मदलेखा प्रक्षालितवती चरणौ।

शब्दार्थ– अपि = भी। सविभ्रमकृतप्रणामा = उतावली के साथ प्रणाम करती हुई। परिजनोपनीतायाम् = सेवकों द्वारा लायी गयी। हेमपादाङ्कितायाम् = सुनहरे पैरों वाली। पीठिकायाम् = छोटे से सिंहासन पर। समुपाविशत् = बैठ गया। सलिलेन = जल से। स्वयम् उत्थाय = स्वयम् उठकर। प्रक्षाल्य = धोकर। उत्तरीयांशुकेन = आँचल से। अपमृज्य = पोंछकर। आरुरोह = बैठ गयी। प्रक्षालितवती = धोया।

हिन्दी अनुवाद– कादम्बरी भी उतावली में चन्द्रापीड को प्रणाम करके महाश्वेता के साथ शैय्या पर बैठ गयी। चन्द्रापीड भी सेविकाओं द्वारा शीघ्रता से लाये गये सुनहरे पैरों वाले आसन पर बैठ गया। इसके पश्चात् सेविकाओं द्वारा लाये गये जल से कादम्बरी ने स्वयं उठकर महाश्वेता के पैरों को धोया और अपने आँचल से पोंछने के बाद वह फिर पलंग पर जा बैठी। कादम्बरी की सखी मदलेखा ने भी चन्द्रापीड के पैरों को धोया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सविभ्रमकृतप्रणामा = सविभ्रमेण कृतः प्रणामः यया सा। समुपाविशत् = सम् + उपाविशत्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. कादम्बरी कया सह पर्यङ्के निषसाद?

उत्तर– कादम्बरी महाश्वेतया सह पर्यङ्के निषसाद।

प्रश्न 3. 'ससंभ्रमं परिजनोपनीतायां हेमपादाङ्कितायां पीठिकायां चन्द्रापीडः समुपाविशत्' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– चन्द्रापीड भी सेविकाओं द्वारा शीघ्रता से लाये गये सुनहरे पैरों वाले आसन पर बैठ गया।

प्रश्न 4. का महाश्वेतायाः चरणौ प्रक्षाल्य उत्तरीयांशुकेन अपमृज्य, पुनः पर्यङ्कम् आरुरोह?

उत्तर– कादम्बरी महाश्वेतायाः चरणौ प्रक्षाल्य उत्तरीयांशुकेन अपमृज्य, पुनः पर्यङ्कम् आरुरोह।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडस्य चरणौ का प्रक्षालितवती?

उत्तर– चन्द्रापीडस्य चरणौ कादम्बर्याः सखी मदलेखा प्रक्षालितवती।

➥ **अथ महाश्वेता कादम्बरीम् अनामयं पप्रच्छ। सा तु सखीप्रेम्णा गृहनिवासेन कृतापराधेव लज्जमाना कृच्छ्रादिव कुशलम् आचचक्षे। मुहुर्तापगमे च महाश्वेता ताम्बूलदानोद्यतां ताम् अभाषत्–''सखि कादम्बरि, सर्वाभिरस्माभिः अयम् अभिनवागतः चन्द्रापीडः आराधनीयः। तदस्मै तावत् दीयताम्'' इति। इत्युक्ता सा शनैः अव्यक्तमिव ''सखि, लज्जेऽहम् अनुपजातपरिचया प्रागल्भ्येनानेन। गृहाण त्वमेव अस्मै प्रयच्छ'' इत्युवाच। पुनः पुनः अभिधीयमाना च तया ग्राम्येव चिरात् दानाभिमुखं मनश्चक्रे। महाश्वेतामुखात् अनाकृष्टदृष्टिरेव वेपमानाङ्गयष्टिः प्रसारयामास च ताम्बूलगर्भं हस्तपल्लवम्। चन्द्रापीडस्तु स्वभावपाटलं धनुर्गुणाकर्षणकृतकिणश्यामलं पाणिं प्रसार्य ताम्बूलं प्रतिजग्राह। अथ सा गृहीत्वा अपरं ताम्बूलं महाश्वेतायै प्रायच्छत्।**

अथवा **अथ महाश्वेता .... मनश्चक्रे।** (2017 NC)

अथवा **अथ महाश्वेता .... हस्तपल्लवम्।** (2019 DB)

शब्दार्थ– अनामयम् = रोगहीनता, स्वस्थ। सखीप्रेम्णा = सखी के प्रेम से। गृहनिवासेन = घर में रहने के कारण। कृतापराधेन = अपराधिनी जैसी। कृच्छ्रादिव = कठिनाई से। आचचक्षे = कही। मुहूर्तापगमे = एक क्षण बीतने पर। ताम्बूलदानोद्यतां = ताम्बूल देने के लिए तैयार। ताम् = उससे, कादम्बरी से। अभाषत् = बोली। सर्वाभिरस्माभिः = सभी लोगों द्वारा। अभिनवागत = नया-नया आया हुआ। आराधनीयः = सत्कार योग्य है। दीयताम् = दो। अव्यक्तमिव = अप्रगट रूप से। अनुपजात परिचयः = परिचय न होने से। प्रागल्भ्येनानेन = इस ढिठाई से। गृहाण = लो। अस्मै = इसके लिए। प्रयच्छ = दो। इत्युवाच = इस प्रकार कहा। पुनः पुनः = बार-बार। अभिधीयमाना = कही जाने पर। ग्राम्येव = ग्रामीण स्त्री के समान तात्पर्य भोलेपन के साथ। चिरात् = बड़ी देर के बाद। दानाभिमुखम् = देने की ओर। मनश्चक्रे = मन किया। अनाकृष्टदृष्टिरेव = बिना दृष्टि हटाये। वेपमानाङ्गयष्टिः = कांपते

हुए शरीर से। प्रसारयामास = फैलाया। ताम्बूलगर्भम् = ताम्बूल युक्त। स्वभावपाटलम् = स्वभावतः लाल। धनुर्गुणाकर्षणकृतकिणश्यामलम् = धनुष की डोरी खींचने से पड़े हुए घट्टे के कारण काले। पाणिम् = हाथ को। प्रसार्य = फैलाकर। प्रतिजग्राह = ले लिया। अपरम् = दूसरा। प्रायच्छत् = दिया।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् महाश्वेता ने कादम्बरी से उसके स्वास्थ्य के विषय में पूछा। अपनी सखी के प्रेम से पूर्ण होते हुए भी घर में रहने के कारण (अर्थात् महाश्वेता की तरह मैं भी क्यों नहीं वनवासिनी बन गयी) अपने आप को अपराधिनी जैसी मानती हुई कादम्बरी ने लज्जित होकर बड़ी कठिनाई से कुशल समाचार कहा! थोड़ी देर बीतने पर पान देती हुई कादम्बरी से महाश्वेता ने कहा– "सखि! हम सबों को नवागन्तुक अतिथि का सत्कार करना चाहिए। अतः पहले इन्हें पान दो।" ऐसा कहने पर कादम्बरी ने बहुत धीरे से अप्रगट रूप में कहा– "सखि! परिचय न होने के कारण इस प्रकार की धृष्टता करने में मुझे लज्जा आ रही है। इसलिए तुम्हीं उन्हें दे दो।" गाँव की भोली-भाली स्त्री के समान बार-बार समझाने पर कादम्बरी ने पान देने का विचार किया और महाश्वेता की ओर से बिना दृष्टि हटाये (अर्थात् चन्द्रापीड की ओर बिना देखे ही) काँपते हुए शरीर से पानयुक्त हाथ को (चन्द्रापीड की ओर) बढ़ा दिया। स्वभावतः लाल किन्तु धनुष की डोरी खींचने से पड़ने वाली रगड़ से काले पड़े हुए हाथ को बढ़ाकर चन्द्रापीड ने उसे ले लिया। इसके पश्चात् दूसरा पान लेकर कादम्बरी ने महाश्वेता को दिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– ताम्बूलदानोद्यताम् = ताम्बूलदानाय उद्यता या ताम्। अनुपजातपरिचया = अनुपजातः परिचयः यस्याः सा। प्रागल्भ्येनानेन = प्रागल्भ्येन + अनेन। इत्युवाच = इति + उवाच। ग्राम्येव = ग्राम्या + इव। अनाकृष्टदृष्टिरेव = अनाकृष्टा दृष्टिः यया सा। वेपमानाङ्गयष्टिः = वेपमाना अंगयष्टिः यस्या सा। धनुर्गुणाकर्षणकृतकिणश्यामलम् = धनुषः गुणस्य आकर्षणेन कृतः यः किणः तेन श्यामलम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' (उत्तरार्द्ध भाग) से उद्धृत है।

प्रश्न 2. महाश्वेता काम् अभाषत्?
उत्तर महाश्वेता कादम्बरीम् अभाषत्।

प्रश्न 3. "सखि! लज्जेऽहम् अनुपजातपरिचया प्रागल्भ्येनानेन।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर सखि! परिचय न होने के कारण इस प्रकार की धृष्टता से मुझे लज्जा आ रही है।

प्रश्न 4. "अस्मै" में कौन-सी विभक्ति है?
उत्तर– "अस्मै" में चतुर्थी विभक्ति है। 'अस्मै' चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप है।

प्रश्न 5. "वेपमानाङ्गयष्टिः" का शाब्दिक अर्थ लिखिए।
उत्तर– "वेपमानाङ्गयष्टिः" का शाब्दिक अर्थ है—काँपती हुई शरीर वाली।

प्रश्न 6. "सखि कादम्बरि, सर्वाभिरस्माभिः अयम् अभिनवागतः चन्द्रापीडः आराधनीयः।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– सखि! हम सभी को नवागन्तुक (अतिथि) चन्द्रापीड का सत्कार करना चाहिए।

➥ **अत्रान्तरे कंचुकी समागत्य महाश्वेताम् अवोचत्–"आयुष्मति, देवः चित्ररथः देवी च मदिरा त्वां द्रष्टुम् आह्वयतः" इति। इत्येवम् अभिहिता गन्तुकामा महाश्वेता "सखि! चन्द्रापीडाः क्वास्ताम्?" इति कादम्बरीम् अपृच्छत्। असौ तु "सखि महाश्वेते, किमेवम् अभिदधासि? दर्शनादारभ्य शरीरस्याप्ययमेव प्रभुः किमुत भवनस्य विभवस्य परिजनस्य वा–यत्रास्मै रोचते प्रियसखीहृदयाय वा, तत्र अयम् आस्ताम्" इत्यवदत्। तत् श्रुत्वा महाश्वेता "तत् अत्रैव त्वत्प्रासादसमीपवर्तिनि प्रमदवने क्रीडापर्वतकमणिवेश्मनि आस्ताम्" इत्यभिधाय, गन्धर्वराजं द्रष्टुं ययौ। चन्द्रापीडोऽपि तयैव सह निर्गत्य, केयूरकेण उपदिश्यमानमार्गः, मणिमन्दिरम् अगात्।**
(2020 ZQ, ZT)

शब्दार्थ– अत्रान्तरे = इसी बीच। समागत्य = आकर। अवोचत् = कहा। द्रष्टुम् = देखने के लिए। आह्वयतः = बुला रहे हैं। अभिहिता = कही गयी। गंतुकामा = जाने की इच्छा वाली। क्वास्ताम् = कहाँ रहें। अभिदधासि = कहती हो। प्रभुः = स्वामी। किमुत = फिर। यत्रास्मै = जहाँ इन्हें। रोचते = अच्छा लगे। त्वत्प्रासादसमीपवर्तिनि = तुम्हारे महल के पास। प्रमदवने = प्रमदवन

में। क्रीडापर्वतकमणिवेश्मनि = क्रीडा पर्वत पर बने मणिगृह में। आस्ताम् = रहें। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर। ययौ = चली गयी। निर्गत्य = निकलकर। उपदिश्यमानमार्गः = बताये हुए मार्ग से। आगत् = गया।

हिन्दी अनुवाद– इसी बीच कंचुकी ने आकर महाश्वेता से कहा– देवी, महाराज चित्ररथ और महारानी मदिरा आपको देखने के लिए बुला रही हैं। ऐसा कहने पर वहाँ जाने की इच्छा से महाश्वेता ने कादम्बरी से कहा– सखि! चन्द्रापीड कहाँ रहेंगे? कादम्बरी ने कहा– "सखि! ऐसा क्यों कह रही हो। जब से मैंने इन्हें देखा है उसी समय से यह मेरे शरीर के भी स्वामी बन गये हैं फिर घर, वैभव और परिजनों की तो बात ही क्या है? जहाँ इन्हें अच्छा लगे और प्रिय सखी, तुमको भी जहाँ रुचिकर हो वहाँ ये रहें। यह सुनकर महाश्वेता ने कहा–तो तुम्हारे महल के समीप प्रमदवन में बने क्रीडापर्वत के मणिमन्दिर में रहेंगे। इसके बाद महाश्वेता गन्धर्वराज को देखने चली गयी। चन्द्रापीड भी उसी के साथ निकल कर केयूरक द्वारा बताये गये मार्ग से मन्दिर में चला गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– क्वास्ताम् = क्व + आस्ताम्। शरीरस्याप्ययमेव = शरीरस्य + अपि + अयम् + एव। यत्रास्मै = यत्र + अस्मै।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखए।

अथवा प्रस्तुत गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. कः समागत्य महाश्वेताम् अवोचत्?

उत्तर– कंचुकी समागत्य महाश्वेताम् अवोचत्।

प्रश्न 3. देवः चित्ररथः देवी च मदिरा कां द्रष्टुम् आह्वयतः?

उत्तर– देवः चित्ररथः देवी च मदिरा महाश्वेतां द्रष्टुम् आह्वयतः।

प्रश्न 4. "त्वत्प्रासादसमीपवर्तिनि प्रमदवने क्रीडापर्वतकमणिवेश्मनि आस्ताम्।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– तुम्हारे महल के समीप प्रमदवन में बने क्रीडापर्वत के मणिमन्दिर में रहेंगे।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः केन उपदिश्यमानमार्गः मणिमन्दिरम् अगात्?

उत्तर– चन्द्रापीडः केयूरकेण उपदिश्यमानमार्गः मणिमन्दिरम् अगात्।

➥ **गते च तस्मिन् गन्धर्वराजपुत्री, विसृज्य सकलं सखीजनम् परिजनं च प्रासादम् आरुरोह। तत्र च शयनीये निपत्य, एकाकिनी एवं चिन्तयामास– 'अहो! किमिदम् आरब्धं चपलया मया। न परीक्षिता अस्य चित्तवृत्तिः। परित्यक्तः कुलकन्यकानां क्रमः। न परिक्षिता अस्य चित्तवृत्तिः। परित्यक्तः कुलकन्यकानां क्रमः। गुरुजनात् न त्रस्तम्। लोकापवादात् नौद्विग्नम्। आसन्नवर्ती, सखीजनोऽपि उपलक्षयतीति मन्दया मया न लक्षितम्। तथा महाश्वेताव्यतिकरेण प्रतिज्ञा कृता श्रुत्वैतं वृत्तान्तं किं वक्ष्यति अम्बा तातो वा? किं करोमि? केनोपायेन स्खलितम् इदं प्रच्छादयामि? पूर्वकृतापुण्यसंचयेनैवायम् आनीतो मम विप्रलम्भकः चन्द्रापीडः' इति सचिन्त्य गुर्वीम् लज्जाम् उवाह।**

(2018 BD, 20 ZS)

शब्दार्थ– गते च तस्मिन् = उसके चले जाने पर। गन्धर्वराजपुत्री = कादम्बरी। विसृज्य = छोड़कर। परिजनम् = सेविकाओं को। प्रासादम् आरुरोह = महल पर चढ़ गयी। शयनीये = विस्तर पर। निपत्य = पड़कर। एकाकिनी = अकेली। चिन्तयामास = विचार किया। आरब्धम् = किया। चपलया मया = मुझ चंचला ने। न परीक्षिता = परीक्षा नहीं ली। अस्य चित्तवृत्तिः = इसकी (चन्द्रापीड की) भावना। परित्यक्तः = छोड़ दिया। कुलकन्यकानां क्रमः = कुलीन कन्याओं की परिपाटी। न त्रस्तम् = नहीं डरी। लोकापवादात् = संसार की बदनामी से। नोद्विग्नम् = घबरायी नहीं। आसन्नवर्ती = समीप से स्थित। सखीजनोऽपि = सखियाँ भी। उपलक्षयतीति = देखती हैं। मन्दया मया = मुझ मूर्ख ने। लक्षितम् = नहीं देखा, नहीं सोचा। महाश्वेताव्यतिकरेण = महाश्वेता के सम्बन्ध में। प्रतिज्ञा कृता = प्रतिज्ञा की। किं वक्ष्यति = क्या कहेंगे। केनोपायेन = किस उपाय से। स्खलितम् इदम् = इस गलती को। प्रच्छादयामि = ढकूँ, छिपाऊँ। पूर्वकृतापुण्यसंचयेनैव = मेरे पूर्व जन्म के संचित पापों द्वारा ही। आनीतः = लाया गया है। मम विप्रलम्भकः = मेरा वंचक। संचिन्त्य = सोचकर। गुर्वीम् = बहुत भारी। उवाह = धारण किया।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड के जाने पर गंधर्वराजपुत्री कादम्बरी सभी सखियों और सेविकाओं को छोड़कर महल में चली गयी। वहाँ शय्या पर पड़कर अकेली सोचने लगी–अरे, मुझ चंचला ने यह क्या कर डाला? उसकी भावनाओं की परीक्षा नहीं ली।

कुल कन्याओं की परिपाटी छोड़ दी। मैं गुरुजनों से भयभीत नहीं हुई। संसार की बदनामी से भी व्याकुल नहीं हुई। पास में स्थित सखियाँ भी समझ रही हैं। मुझ मूर्ख ने इसका भी ध्यान नहीं रखा। महाश्वेता के सम्बन्ध से मैंने (अविवाहित रहने की) प्रतिज्ञा की थी, किन्तु इस वृत्तान्त को (चन्द्रापीड के प्रति मेरी अनुरक्ति को) सुनकर माता-पिता क्या कहेंगे। क्या करूँ? कैसे इस भूल पर पर्दा डालूँ? निश्चय ही मेरे पूर्व जन्म में किये पापों ने ही मुझे ठग लेने वाले इस चन्द्रापीड को यहाँ ला दिया है। इस प्रकार सोचकर वह बहुत अधिक लज्जित हो उठी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– लोकापवादात् = लोक + अपवादात्। केनोपायेन = केन + उपायेन।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकं च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'अहो! किमिदम् आरब्धं चपलया मया।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– 'अरे! मुझ चंचला ने यह क्या कर डाला?'

प्रश्न 3. गन्धर्वराज पुत्री, विसृज्य सकलं सखीजनं परिजनं च कुत्र आरुरोह?

उत्तर– गन्धर्वराज पुत्री, विसृज्य सकलं सखीजनं परिजनं च प्रासादम् आरुरोह।

प्रश्न 4. कस्य न परीक्षिता चित्तवृत्तिः?

उत्तर– चन्द्रापीडस्य न परीक्षिता चित्तवृत्तिः।

प्रश्न 5. गुरुजनात् न त्रस्तं का?

उत्तर– कादम्बरी गुरुजनात् न त्रस्तम्।

➥ **चन्द्रापीडोऽपि प्रविश्य मणिगृहम्, शिलातलास्तीर्णायाम् उभयतः उपर्युपरि निवेशितबहूपधानायां कुथायां निपत्य, केयूरकेण उत्सङ्गे गृहीतचरणयुगलः दोलायमानेन चेतसा चिन्तां विवेश। 'किं तावत् अस्याः कादम्बर्याः सहभुवः एते विलासाः? आहोस्वित् अनाराधित प्रसन्नेन मकरकेतुना मयि नियुक्ताः? येन मां सरागेण चक्षुषा तिर्यक् विलोकयति, आलोकिता च लज्जया आत्मानम् आवृणोति' इति। भूयश्चाचिन्तयत् 'किमनेन वृथैव मनसा खेदितेन? यदि सत्यमेवेयं धवलेक्षणा मय्येवं जातचित्तवृत्तिः, न चिरात् स एवैनाम् अप्रार्थितानुकूलः मन्मथः प्रकटीकरिष्यति, स एवास्य संशयस्य छेत्ता भविष्यति' स इत्यवधार्य, विनोदार्थं कादम्बर्या प्रहिताभिः कन्यकाभिः सह अक्षैः, गेयैः, विपञ्चीवाद्यैः, स्वरसंदेहविवादैः सुभाषितगोष्ठीभिः अन्यैश्च सरसालापैः क्रीडन् आसांचक्रे।**

चन्द्रापीडोऽपि प्रविश्य .... आवृणोति इति। (2017 ND, NF)

शब्दार्थ– शिलातलास्तीर्णायाम् = शिला तल पर बिछायी गई। उपर्युपरि = ऊपर-ऊपर। निवेशितबहूपधानायाम् = जिसके ऊपर बहुत तकिये रखे हुए हैं। कुथायाम् = कालीन पर। निपत्य = पड़कर। उत्संगे = गोद में। गृहीतचरणयुगलः = जिसके दोनों चरण ग्रहण किये गये हैं। दोलायमानेन = हिलते हुए, चंचल। चेतसा = चित्त से। चिन्तां विवेश = चिन्ता में पड़ गया। सहभुवः = साथ उत्पन्न होने वाली, स्वाभाविक। एते विलासाः = यह कामचेष्टाएँ। अनाराधितप्रसन्नेन = बिना आराधना के प्रसन्न होने वाले। मकरकेतुना = कामदेव द्वारा। मयि नियुक्ताः = मुझ में नियुक्त की गयी। सरागेण चक्षुषा = रागयुक्त नेत्रों से। तिर्यक् विलोकयति = तिरछे देखती है। आलोकिता = देखी जाने पर। लज्जया = लज्जा के कारण। आत्मानम् = अपने आपको। आवृणोति = छिपा लेती है। भूयश्चाचिन्तयत् = फिर सोचा। वृथैव = व्यर्थ ही। मनसा खेदितेन = मन के दुःखी होने से। सत्यमेवेयम् = सचमुच ही यह। धवलेक्षणा = निर्मल दृष्टिवाली। मय्येव = मुझ पर इस प्रकार। जातिचित्तवृत्तिः = जिसकी चित्तवृत्ति हो गयी है। न चिरात् = शीघ्र ही। अप्रार्थितानुकूलः = बिना प्रार्थना के ही अनुकूल। मन्मथः = कामदेव। प्रकटीकरिष्यति = प्रकट करेगा। स एव = वही। संशयस्य = शंका का। छेत्ता भविष्यति = काटने वाला होगा। इत्यवधार्य = ऐसा निश्चय करके। विनोदार्थम् = मन बहलाव के लिए। प्रहिताभिः = भेजी गयी। अक्षैः = जुआ से। गेयैः = गीतों से। विपञ्चीवाद्यैः = वीणा बजाने से। स्वरसंदेहविवादैः = स्वर में संदेह होने के तर्क से। सुभाषितगोष्ठीभिः = मधुर गोष्ठियों से। सरसालापैः = मधुर बातचीत से। क्रीडन् आसांचक्रे = खेलता रहा।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड भी मणिगृह में जाकर शिला पर बिछी हुई तथा दोनों ओर रखी हुई अनेक तकियों वाली कालीन

पर लेट गया। केयूरक ने उसके चरणों को अपनी गोद में कर लिया। इसके पश्चात् वह चंचल हृदय से सोचने लगा– कादम्बरी की यह चेष्टाएँ स्वाभाविक हैं तथा बिना आराधना के ही प्रसन्न हो जाने वाले कामदेव ने उसे मेरे प्रति अनुरक्त कर दिया है, जिससे वह प्रेमपूर्वक मुझे तिरछी आँखों से देखती है और जब उसकी ओर मैं देखने लगता हूँ तो लज्जा से अपने को छिपा लेती है। उसने विचार किया कि इस प्रकार मन ही मन दुःखी होने से क्या लाभ है। यदि सचमुच ही उस शुभ्रनेत्रों वाली (कादम्बरी) का अनुराग मेरे प्रति होगा तो बिना प्रार्थना किये मेरे प्रति अनुकूल हो जाने वाला कामदेव शीघ्र ही उसे प्रकट कर देगा। वही इस शंका को मिटाएगा। ऐसा निश्चय कर मनबहलाव के लिए कादम्बरी द्वारा भेजी गयी कुमारियों के साथ जुआ, गीत, वीणा के स्वरों के विषय में तर्क-वितर्क, सुभाषित, गोष्ठी तथा मधुर बातचीत द्वारा चन्द्रापीड खेलता (मनोरंजन करता) रहा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– शिलातलास्तीर्णायाम् = (शिलातले आस्तीर्णायाम्)। निवेशितबहूपधानायाम् = (निवेशितानि बहूपधानानि यस्याम्)। गृहीतचरणयुगलः = (गृहीतम् चरणयुगलम् यस्य सः)। भूयश्चाचिन्तयत् = (भूयः + च + अचिन्तयत्) मय्येव = (मयि + एव)। सत्यमेवेयम् = (सत्यम् +एव + इयम्)। जातचित्तवृत्तिः = (जात चित्तवृत्तिः यस्याः सा)। इत्यवधार्य = (इति + अवधार्य) ऐसा निश्चय करके।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. "आहोस्वित् अनाराधित प्रसन्नेन मकरकेतुना मयि नियुक्ताः?" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– बिना आराधना के ही प्रसन्न होने जाने वाले कामदेव ने उसे मेरे प्रति अनुरक्त कर दिया है।

प्रश्न 3. मणिगृहे कः प्राविशत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः मणिगृहे प्राविशत्।

प्रश्न 4. उत्सङ्गे गृहीतचरणयुगलः केन?

उत्तर– केयूरकेण उत्सङ्गे गृहीतचरणयुगलः।

प्रश्न 5. अनाराधित प्रसन्नेन केन मयि नियुक्ताः?

उत्तर– अनाराधित प्रसन्नेन मकरकेतुना मयि नियुक्ताः।

➥ **एवं मुहूर्तं स्थित्वा, कादम्बरीपरिजनेन निर्वर्तितस्नानविधिः, अर्चिताभिमतदैवतः, क्रीडापर्वतके एव सर्वम् आहारादिकम् अहःकर्म चक्रे। अथ क्रीडापर्वतकस्य प्राग्भागे मनोहारिणि मरकतशिलातले समुपविष्टः दृष्टवान् सहसैव धवलेनालोकेन विलिप्यमानम् अम्बरतलम्। अद्राक्षीच्च मदलेखाम् आगच्छन्तीम्, तस्याश्च समीपे तरलिकाम्, तया च सितांशुकोपच्छदे पटलके गृहीतं शरच्छशिनम् इव प्रभावर्षिणम् अतितारं हारम्। दृष्ट्वा च 'इदम् अस्य धवलिम्नः कारणम्' इति निश्चित्य, प्रत्युत्थानादिना समुचितेन उपचारेण मदलेखां प्रतिजग्राह। सा तस्मिन्नेव मरकतग्राव्णि मुहूर्तम् उपविश्य, स्वयम् उत्थाय, चन्द्रापीडं चन्दनेन अनुलिप्य, द्वे दुकूले परिधाप्य, तैश्च मालतीकुसुमदामभिः आरचितशेखरं कृत्वा, तं हारम् आदाय उवाच।**

शब्दार्थ– मुहूर्तं = थोड़ी देर। स्थित्वा = ठहरकर। कादम्बरी परिजनेन = कादम्बरी की सेविकाओं द्वारा। निर्वर्तितस्नानविधिः = स्नान क्रिया को समाप्त करने वाला। अर्चिताभिमतदैवतः = इष्टदेव की पूजा करने वाला। क्रीडापर्वतके एव = क्रीडापर्वत पर ही। आहारादिकम् = भोजनादि। अहःकर्म = दिन का कार्य। चक्रे = क्रिया। प्राग्भागे = पूर्व की ओर। मनोहारिणि = सुन्दर। मकरतशिलातले = मरकत मणि की चट्टान पर। समुपविष्टः = बैठा हुआ। दृष्टवान् = देखा। सहसैव = अकस्मात्। धवले नालोकेन = शुभ्र प्रकाश से। विलिप्यमानम् = लिया हुआ। अम्बरतलम् = आकाश को। अद्राक्षीच्च = और देखा। आगच्छन्तीम् = आती हुई। सितांशुकोपच्छदे = श्वेत रेशम में लिपटे। पटलके = संपुट में। शरच्छशिनम् = शरद के चन्द्रमा के समान। प्रभावर्षिणम् = प्रकाश की वर्षा करने वाले। अतितारम् = तारों से भी अधिक। हारम् = माला को। धवलिम्नः = उज्ज्वलता का। प्रत्युत्थानादिना = उठाने आदि। उपचारेण = स्वागत। प्रतिजग्राह = ग्रहण किया। मरकतग्राव्णि = मरकत मणि पर। उपविश्य = बैठकर। उत्थाय = उठकर। अनुलिप्य = लेप करके। द्वे दुकूले = दो कपड़े। परिधाप्य = पहिनाकर। मालतीकुसुमदामभिः = मालती पुष्प की माला ने। आरचितशेखरम् = सिर को सजाकर। आदाय = लेकर। उवाच = बोली।

हिन्दी अनुवाद– थोड़ी देर ठहरकर चन्द्रापीड ने कादम्बरी के सेवकों की सहायता से स्नानक्रिया समाप्त करके, देवताओं की पूजा आदि से निवृत्त होकर क्रीडा-पर्वत पर ही भोजनादि दैनिक कर्मों को पूरा किया। क्रीड़ा पर्वत के पूर्वी भाग में सुन्दर मरकत की शिला पर बैठे हुए चन्द्रापीड ने सहसा उज्ज्वलता से परिपूर्ण हो जाने वाले आकाश को देखा और उसने श्वेत रेशम से ढकी हुई पोटली में चन्द्रमा के समान प्रकाश फैलाने वाले तारों से भी श्रेष्ठ हार को ली हुई तरलिका के साथ आती हुई मदलेखा को भी देखा। उसे देखकर और यह निश्चय करके कि यह (आकाश में दिखाई देने वाली उज्ज्वला) इसी (हार) के कारण है, उठकर बड़े सत्कार के साथ मदलेखा का स्वागत किया। मदलेखा ने उसी मरकत की शिला पर कुछ देर बैठने के बाद स्वयं उठकर चन्द्रापीड को चन्दन लगाया, दो कपड़े पहनाया, मालती पुष्प की मालाओं से उसके सिर को सजाया और उस हार को लेकर कहा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कादम्बरीपरिजनेन = कादम्बर्याः परिजनः तम्। निर्वर्तितस्नानविधिः = निर्वर्तितः स्नानविधिः यस्य सः। अर्चिताभिमतदैवतः = अर्चितः अभिमतदैवतः येन सा। धवलेनालोकेन = धवलेन + आलोकेन। अद्राक्षीच्च = अद्राक्षीत् + च। शरच्छशिनम् = शरत् + शशिनम्। आरचितशेखरम् = आरचितः शेखरः यस्य तम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. 'दृष्टवान् सहसैव धवलेनालोकेन विलिप्यमानम् अम्बरतलम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– (चन्द्रापीड ने) सहसा उज्ज्वलता से परिपूर्ण हो जाने वाले आकाश को देखा।
प्रश्न 3. कः कादम्बरीपरिजनेन निर्वर्तित स्नानविधिः?
उत्तर– चन्द्रापीडः कादम्बरीपरिजनेन निर्वर्तितस्नानविधिः।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडः कम् अद्राक्षीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः मदलेखाम् अद्राक्षीत्।
प्रश्न 5. कः मदलेखां प्रतिजग्राह?
उत्तर– चन्द्रापीडः मदलेखां प्रतिजग्राह।

➥ **''कुमार! शेषनामा हारोऽयं भगवता अम्भसां पत्या गृहम् उपगताय प्रचेतसे दत्तः। पाशभृतापि गन्धर्वराजाय, गन्धर्वराजेनापि कादम्बर्यै, तयापि त्वद्वपुः अस्य अनुरूपमिति विभावयन्त्या अनुप्रेषितः। अतः अर्हति इयम् बहुमानं त्वत्तः महाश्वेतयापि कुमारस्य संदिष्टम् न खलु महाभागेन मनसापि कार्यः कादम्बर्याः प्रथमप्रणयभङ्गः इति उक्त्वा तं तस्य वक्षःस्थले बबन्ध। चन्द्रापीडस्तु, विस्मयमानः प्रत्यवादीत् ''मदलेखे, निपुणासि। जानासि ग्राहयितुम्। उत्तरावकाशम् अपहरन्त्या कृतं वचसि कौशलम्'' इत्युक्त्वा कादम्बरीसंबद्धाभिरेव कथाभिः सुचिरं स्थित्वा, विसर्जयांवभूव मदलेखाम्।** (2020 ZU)

शब्दार्थ– अम्भसां पत्या = जल के स्वामी वरुण द्वारा। गृहम् उपगताय = घर आये हुए। प्रचेतसे = कुबेर को। दत्तः = दिया। पाशभृतापि = कुबेर द्वारा भी। गन्धर्वराजाय = चित्ररथ के लिए। कादम्बर्यै = कादम्बरी के लिए। त्वद्वपुः = तुम्हारा शरीर। अस्य अनुरूपमिति = इसके योग्य है। विभावयन्त्या = विचार करती हुई। अनुप्रेषितः = भेजा है। अर्हति इयम् बहुमानं त्वत्तः = (कादम्बरी) आप से सम्मान पाने योग्य है। संदिष्टम् = संदेश दिया है। मनसापि = मन से भी। कार्यः = कराना चाहिए। प्रथमप्रणयभङ्गः = पहले प्रेम का नाश। उक्त्वा = कहकर। वक्षस्थले = छाती पर। बबन्ध = बाँध दिया। विस्मयमानः = चकित होते हुए। प्रत्यवादीत् = उत्तर दिया। निपुणासि = चतुर हो। जानासि = जानती हो। ग्राहयितुम् = ग्रहण कराना। उत्तरावकाशम् = (उत्तरस्यावकाशम्) उत्तर का अवसर। अपहरन्त्या = दूर करती हुई। वचसि = वाणी में। कादम्बरीसम्बद्धाभिः = कादम्बरी से सम्बन्धित। कथाभिः = बातचीत से। सुचिरम् = देर तक। विसर्जयाम् बभूव = विदा किया।

हिन्दी अनुवाद– ''कुमार यह शेष नाम का हार है, इसे वरुण ने अपने घर आये हुए कुबेर को, कुबेर ने चित्ररथ को और चित्ररथ ने कादम्बरी को दिया था, यह आपके शरीर के ही योग्य है, ऐसा विचार करके कादम्बरी ने इसे आपके पास भेजा है, अतः (इसे स्वीकार करके) आपको कादम्बरी का सम्मान करना चाहिये। देवी महाश्वेता ने भी आपको संदेश दिया है कि आप कादम्बरी के इस प्रथम प्रणय को भङ्ग न करें, ऐसा कहकर उसने हार को उसकी छाती पर बाँध दिया। चन्द्रापीड ने चकित होकर कहा–

मदलेखे तुम बहुत कुशल हो। ग्रहण कराना जानती हो। उत्तर का अवसर दिये बिना ही तुमने वाणी की कुशलता प्रकट कर दी। ऐसा कहकर उसने बहुत देर तक कादम्बरी सम्बन्धी बातचीत करके मदलेखा को विदा किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– पाशभृतापि = (पाश बिभर्ति यः स तेन)। त्वद्वपुः = त्वत् + वपुः। अनुरूपमिति = अनुरूपम् + इति। मनसापि = मनस् + अपि। उत्तरावकाशम् = उत्तर + अवकाशम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकं च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. "यदलेखेनिपुणासि। जानासि ग्राहयितुम्। उत्तरावकाशम् अपहरन्त्या कृतं वचसि कौशलमः।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– यद लेखे तुम बहुत कुशल हो। ग्रहण कराना जानती हो। उत्तर का अवसर दिये बिना ही तुमने वाणी की कुशलता प्रकट कर दी।

प्रश्न 3. हारस्य किं नामास्ति?

उत्तर– हारस्य शेषनामास्ति।

प्रश्न 4. भगवता अम्भसां पत्या गृहम् उपगताय हारं कस्मै दत्तः?

उत्तर– भगवता अम्भसां पत्या गृहम् उपगताय हारं प्रचेतसे दत्तः।

प्रश्न 5. चित्ररथः हारं कस्यै दत्तः?

उत्तर– चित्ररथः हारं कादम्बर्यै दत्तः।

➥ **अथ अदर्शनम् उपगते भगवति गभस्तिमालिनि, चन्द्रापीडः गृहकुमुदिन्याः तीरे चन्दनरसैः क्षालितम् कादम्बरीपरिजनोपदिष्टम् शिलापट्टम् अधिशिश्ये। कादम्बरी तु मदलेखया सह तत्र आगत्य, कंचित् कालं स्थित्वा, कृतप्रस्तावा "कथं राजा तारापीडः? कथं देवी विलासवती? कथम् आर्यः शुकनासः? कीदृशी च उज्जयिनी? कियत्यध्वनि सा? कीदृशं भारतं वर्षम्?" इत्यशेषं पप्रच्छ। एवं विविधाभिश्च कथाभिः सुचिरं स्थित्वा उत्थाय कादम्बरी, केयूरकं चन्द्रापीडसमीपशायिनम् आदिश्य, शयनसौधशिखरम् आरुरोह। तत्र च सितदुकूलवितानतलास्तीर्णम् शयनम् अभजत्।** (2017 NG, 19 DC)

अथ अदर्शनम् .... पप्रच्छ। (2017 NC)

अथदर्शनुपगते भगवति .... आरुरोह। (2018 BG)

शब्दार्थ– अदर्शनम् उपगते = छिप जाने पर। गभस्तिमालिनि = किरणमाली सूर्य। गृहकुमुदिन्याः तीरे = घर की बावड़ी के किनारे। परिजनोपदिष्टम् = सेविकाओं द्वारा बताये गये। अधिशिश्ये = सो गया। आगत्य = आकर। कंचित् कालं = कुछ समय। स्थित्वा = ठहरकर। कृतप्रस्तावा = बातचीत करती हुई। कीदृशी = कैसी। कियत्यध्वनि = कितनी दूर। इत्यशेषम् = इस प्रकार सब। पप्रच्छ = पूछा। विविधाभिश्च = तरह-तरह की। समीपशायिनम् = समीप में सोने वाले। आदिश्य = आदेश देकर। शयनशौधशिखरम् = शयन करने के महल के ऊपरी भाग में। आरुरोह = चढ़ गयी। सितदुकूलवितानतलास्तीर्णम् = श्वेतमण्डप के नीचे बिछी हुई। शयनम् अभजत् = शैया को ग्रहण किया।

हिन्दी अनुवाद– भगवान सूर्य के अस्त हो जाने पर चन्द्रापीड ने घर की बावड़ी के किनारे चन्दन के रस से धुली तथा कादम्बरी की सेविकाओं से बतायी गयी शिला पर शयन किया। कादम्बरी ने मदलेखा के साथ वहाँ आकर कुछ देर ठहरकर इस प्रकार बातें कीं, "राजा तारापीड कैसे हैं? देवी विलासवती कैसी हैं? आर्य शुकनास कैसे हैं? उज्जयिनी कैसी है? वह कितनी दूर है? भारतवर्ष कैसा है?" इसके बाद उठकर कादम्बरी ने केयूरक को उसके पास सोने का आदेश दिया और वह स्वयं अपने शयन करने के लिए महल के ऊपरी हिस्से में चली गयी, वहाँ उसने श्वेत मंडप के नीचे बिछी हुई शय्या पर शयन किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कियत्ध्वनि = कियति + अध्वनि। इत्यशेषम् = इति + अशेषम्। सितदुकूलवितानतलास्तीर्णम् = सितं च यत् दुकूलं तस्य वितानः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' (उत्तरार्द्ध भाग) से उद्धृत है।

प्रश्न 2. चन्द्रापीडः कस्याः तीरे शिलापट्टम् अधिशिष्ये?

उत्तर– चन्द्रापीडः गृहकुमुदिन्याः तीरे शिलापट्टम् अधिशिष्ये।

प्रश्न 3. ''भगवति'' में कौन-सी विभक्ति एवं वचन है?

उत्तर– ''भगवति'' में सप्तमी विभक्ति एवं एकवचन है।

प्रश्न 4. कादम्बरी कुत्र आरुरोह?

उत्तर– कादम्बरी शयनसौधशिखरम् आरुरोह।

प्रश्न 5. ''शयनसौधशिखरम्'' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

उत्तर– 'शयनसौधशिखरम्' का शाब्दिक अर्थ है–शयन करने के लिए राजमहल के ऊपरी भाग पर।

➥ **चन्द्रापीडोऽपि तत्रैव शिलातले, निरभिमानताम् अतिगम्भीरतां च कादम्बर्याः, निष्कारणवत्सलतां महाश्वेतायाः, अतिसमृद्धिं च गन्धर्वराजलोकस्य मनसा भावयन्, केयूरकेण संवाह्यमानचरणः, क्षणादिव क्षणदां क्षपितवान्। अथ समुद्गते सवितरि, शिलातलात् उत्थाय चन्द्रापीडः प्रक्षालितमुखकमलः, कृतसन्ध्यानमस्कृतिः गृहीतताम्बूलः ''केयूरक! विलोकय, देवी कादम्बरी प्रबुद्धा वा न वा? क्व सा तिष्ठति?'' इत्यवोचत्। गतप्रतिनिवृत्तेन च तेन ''देव! मन्दरप्रासादस्य अधस्तात्, अङ्गणसौधवेदिकायां महाश्वेतया सह अवतिष्ठते'' इत्यावेदिते, ताम् आलोकितुम् आजगाम। दृष्ट्वा च कादम्बरीं समुपसृत्य, तस्यामेव सुधावेदिकायां विन्यस्तम् आसनं भेजे।**

(2019 DA)

शब्दार्थ– निरभिमानताम् = अभिमानहीनता। अतिगंभीरताम् = अत्यन्त गम्भीरता को। निष्कारणवत्सलताम् = निःस्वार्थ स्नेह को। अतिसमृद्धिं = अत्यन्त वैभव। मनसा भावयन् = मन में सोचते हुए। संवाह्यमानचरणः = जिसके पैर दबाये जा रहे हों। क्षणादिव = क्षणमात्र के समान। क्षणदां = रात्रि को। क्षपितवान् = बिता दिया। समुद्गते सवितरि = सूर्य निकलने पर। प्रक्षालितमुखकमलः = कमल जैसे मुख को धोने वाले। कृतसंध्यानमस्कृतिः = संध्यावन्दन करने वाले। गृहीतताम्बूलः = पान खाने वाले। विलोकय = देखो कि। प्रबुद्धा = जगी हुई। इत्यवोचत् = इस प्रकार कहा। गतप्रतिनिवृत्तेन = जाकर लौटने वाले। मन्दरप्रासादस्य = मन्दर महल के। अधस्तात् = नीचे। अङ्गणसौधवेदिकायाम् = महल के आँगन की वेदी पर। अवतिष्ठते = बैठी है। इत्यावेदिते = ऐसा निवेदन करने पर। आलोकितुम् = देखने के लिए। आजगाम = आया। समुपसृत्य = पास जाकर। सुधावेदिकायाम् = उज्ज्वल वेदी पर। विन्यस्तम् = रखे हुए। आसनम् भेजे = आसन को ग्रहण किया।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड ने उसी शिला पर कादम्बरी की अभिमानहीनता तथा अत्यन्त गम्भीरता और महाश्वेता के निःस्वार्थ स्नेह तथा गन्धर्वराज चित्ररथ के वैभव को मन ही मन सोचते हुए केयूरक द्वारा पैर दबाये जाने से सारी रात को क्षण मात्र के समान बिता दिया। इसके पश्चात् सूर्योदय होने पर शिलातल से उठकर चन्द्रापीड ने हाथ-मुँह धोया, संध्यावंदन किया और पान खाकर केयूरक को आदेश दिया कि जाओ देखो देवी कादम्बरी जगी हैं या नहीं और वह इस समय कहाँ हैं? केयूरक वहाँ जाकर लौटा और बोला– राजकुमार! वह अन्दर महल के नीचे आँगन की वेदिका पर महाश्वेता के साथ बैठी हैं। उसके ऐसा कहने पर चन्द्रापीड उसे देखने के लिए आया और कादम्बरी के पास जाकर उसी वेदी पर रखे हुए आसन पर बैठ गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– संवाह्यमानचरणः = संवाह्यमानो चरणौ यस्य सः। प्रक्षालितमुखकमलः = (प्रक्षालितं मुखकमलं येन सः। कृतसंध्यानमस्कृतिः = कृता संध्यायाः नमस्कृतिः येन सः। इत्यवोचत् = इति + अवोचत्। इत्यावेदिते = इति + आवेदिते।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकं च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''केयूरक! विलोकय, देवी कादम्बरी प्रबुद्धा वा न वा? क्व सा तिष्ठति?'' इत्यवोचत्। रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– केयूरक! देखो, देवी कादम्बरी जगी हैं या नहीं तथा वे कहाँ हैं? इस प्रकार कहा।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः केन संवाह्यमानचरणः, क्षणादिव क्षणदां क्षपितवान्?

उत्तर– चन्द्रापीडः केयूरकेण संवाह्यमानचरणः क्षणादिव क्षणदां क्षपितवान्।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः शिलातलात् उत्थाय किम् अकरोत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः शिलातलात् उत्थाय प्रक्षालितमुखकमलः कृतसन्ध्यानमस्कृतिः।
प्रश्न 5. कादम्बरी अङ्गणसौधवेदिकायां कया सह अवतिष्ठते?
उत्तर– कादम्बरी अङ्गणसौधवेदिकायां महाश्वेतया सह अवतिष्ठते।
प्रश्न 6. 'महाश्वेतया' में कौन-सी विभक्ति है?
उत्तर– 'महाश्वेतया' में तृतीया विभक्ति एकवचन है।
प्रश्न 7. 'गतप्रतिनिवृत्तेन' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।
उत्तर– 'गतप्रतिनिवृत्तेन' का शाब्दिक अर्थ है–जाकर लौटे हुए।

➥ **स्थित्वा च कंचित् कालम् महाश्वेतायाः वदनं विलोक्य, मन्दस्मितम् अकरोत्। असौ तु तावतैव विदिताभिप्राया कादम्बरीम् अब्रवीत्–''सखि! जिगमिषति खलु कुमारः, पृष्ठतः राजचक्रम् अविदितवृत्तान्तं दुःखम् आस्ते। युवयोः दूरस्थितयोरपि कमलिनीकमलबान्धवयोरिव स्थिरेयं प्रीतिः आप्रलयात्। अतः अभ्यनुजानातु भवती'' इति। अथ कादम्बरी 'स्वाधीनोऽयं जनः कुमारस्य, कोऽत्रानुरोधः? इत्यभिधाय गन्धर्वकुमारान् आहूय, ''प्रापयत कुमारं स्वां भूमिम्'' इति आदिदेश। चन्द्रापीडोऽपि उत्थाय प्रणम्य प्रथमं महाश्वेताम्, ततः कादम्बरीम् ''देवि! किं ब्रवीमि? बहुभाषिणः न श्रद्दधाति लोकः। स्मर्तव्योऽस्मि परिजनकथासु'' इत्याभिधाय, कन्यकान्तःपुरात् निर्जगाम्।** (2017 NI)

असौ तु तावतैव .... कन्यकान्तःपुरात् निर्जगाम्। (2018 BC)

शब्दार्थ– कंचित् कालम् = कुछ देर तक। वदनम् = मुख। विलोक्य = देखकर। मंदस्मितम् = हल्की मुस्कान्। अकरोत् = किया। तावतैव = तुरन्त ही। विदिताभिप्राया = अभिप्राय जानने वाली। जिगमिषति = जाना चाहता है। पृष्ठतः = पीछे। राजचक्रम् = राजपरिवार। अविदितवृत्तान्तम् = समाचार न जानने वाला। दुःखम् आस्ते = दुःखी है। युवयोः = तुम दोनों का। दूर स्थितयोः = दूर स्थित रहने वालों का। कमलिनीकमलबान्धवयोरिव = कमल की लता और सूर्य के समान। स्थिरेयम् = स्थिर है। आप्रलयात् = प्रलय तक। अभ्यनुजानातु = अनुमति दें। भवती = आप। स्वाधीन = अधीन हैं। अयम् जनः = यह व्यक्ति। कोऽत्रानुरोधः = इसमें अनुरोध कैसा? आहूय = बुलाकर। प्रापयत = पहुँचा दो। स्वां भूमिम् = अपने स्थान को। आदिदेश = आदेश दिया। बहुभाषिणः = बहुत बोलने वाले का। न श्रद्दधाति = नहीं श्रद्धा रखता है। स्मर्तव्योऽस्मि = स्मरण योग्य हूँ। परिजनकथासु = सखियों के वार्त्तालाप में। कन्यकान्तःपुरात् = कन्याओं के अन्तःपुर से। निर्जगाम = निकल गया।

हिन्दी अनुवाद– थोड़ी देर ठहरकर चन्द्रापीड ने महाश्वेता के मुख की ओर देखकर मुस्करा दिया। उसने उसके अभिप्राय को जानकर कादम्बरी से कहा–सखि, राजकुमार जाना चाहते हैं, सारा राजपरिवार इनका समाचार न मिलने से इनके पीछे दुःखी है। परस्पर दूर रहने वाले तुम दोनों का यह प्रेम कमल और सूर्य के प्रेम की भाँति प्रलयकाल तक दृढ़ रहे। अतः आप जाने की अनुमति प्रदान करें। कादम्बरी ने कहा– मैं तो कुमार के अधीन हूँ, अतः मुझसे अनुरोध की बात ही क्या है? ऐसा कहकर गन्धर्वकुमारों को बुलाकर उसने आदेश दिया कि कुमार को उनके स्थान पर पहुँचा दो। चन्द्रापीड ने उठकर पहले महाश्वेता और कादम्बरी को प्रणाम करते हुए कहा– देवि, क्या कहूँ? अधिक बोलने वाले पर लोग श्रद्धा नहीं रखते। सखियों से बातचीत करते समय मेरी भी याद कीजिएगा। ऐसा कहकर वह कन्याओं के महल से बाहर निकल गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तावदैव (तावत् + एव) विदिताभिप्राया = (विदितः अभिप्रायः यया सा) स्थिरेयम् = (स्थिर + इयम्)।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. ''प्रापयत कुमारं स्वां भूमिम्'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– कुमार को उनके स्थान पर पहुँचा दो।
प्रश्न 3. कः महाश्वेतायाः वदनं विलोक्य, मन्दस्मितम् अकरोत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः महाश्वेतायाः वदनं विलोक्य, मन्दस्मितम् अकरोत्।

प्रश्न 4. महाश्वेता कादम्बर्या का अब्रवीत्?

उत्तर– सखि! जिगमिषति खलु कुमारः, पृष्ठतः राजचक्रम् अविदितवृत्तान्तं दुःखम् आस्ते।

प्रश्न 5. कादम्बरी का अब्रवीत्?

उत्तर– कादम्बरी अब्रवीत् – "स्वाधीनोऽयं जनः कुमारस्य, कोऽत्रानुरोधः।"

➥ **कादम्बरीवर्जम् अशेषः कन्यकाजनः तं व्रजन्तम् आबहिस्तोरणात् अनुवव्राज। निवृत्ते च कन्यकाजने, चन्द्रापीडः केयूरकेण उपनीतं वाजिनम् आरुह्य, गन्धर्वकुमारैः तैः अनुगम्यमानः, हेमकूटात् निर्गत्य, प्राप्य महाश्वेताश्रमम्, अच्छोदसरस्तीरे संनिविष्टम् इन्द्रायुधखुरपुटानुसारेणैव आगतम् आत्मनः स्कन्धावारम् अपश्यत्। निवर्तिताशेष-कुमाराश्च, सानन्देन सकुतूहलेन सविस्मयेन च स्कन्धावारजनेन प्रणम्यमानः स्वभवनं विवेश।** (2019 DF)

शब्दार्थ– कादम्बरीवर्जम् = कादम्बरी को छोड़। अशेषः = सम्पूर्ण। व्रजन्तम् = जाते हुए। आबहिस्तोरणात् = मुख्य द्वार तक। अनुवव्राज = पीछे-पीछे गयीं। निवृत्ते = लौटने पर। उपनीतम् = लाये गये। वाजिनम् = घोड़े पर। आरुह्य = सवार होकर। अनुगम्यमानः = अनुगमन किया गया। निर्गत्य = निकलकर। प्राप्य = पाकर, पहुँचकर। सन्निविष्टम् = स्थित। इन्द्रायुधखुरपुटानुसारेण = इन्द्रायुध के खुर के चिह्नों के अनुसार। आगतम् = आये हुए। आत्मनः = अपने। स्कन्धावारम् = सेना के पड़ाव को। अपश्यत् = देखा। निवर्तिताशेषकुमाराः = शेष सभी (गन्धर्व) कुमारों को लौटा देने वाले। सकुतूहलेन = कुतूहल के साथ। सविस्मयेन = विस्मय के साथ। स्कन्धावारजनेन = सेना के लोगों द्वारा। प्रणम्यमानः = प्रणाम किया गया। विवेश = प्रवेश किया।

हिन्दी अनुवाद– कादम्बरी को छोड़ सभी कन्याएँ जाते हुए चन्द्रापीड के पीछे-पीछे मुख्य द्वार तक गयीं। कन्याओं के लौट जाने पर चन्द्रापीड केयूरक द्वारा लाये गये घोड़े पर सवार होकर पीछे-पीछे चलने वाले गन्धर्व-कुमारों के साथ हेमकूट से निकलकर महाश्वेता के आश्रम में पहुँचा। वहाँ उसने इन्द्रायुध के खुर-चिह्नों को देखते हुए वहाँ तक पहुँचे और अच्छोद तालाब के किनारे स्थित अपनी सेना के पड़ाव को देखा। सभी गन्धर्व कुमारों को उसने लौटा दिया। सारी सेना ने आनन्द, कुतूहल और आश्चर्य के साथ उसे प्रणाम किया। इसके पश्चात् वह अपने घर में चला गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– इन्द्रायुधखुरपुटानुसारेण = इन्द्रायुधस्य खुरपुटस्य अनुसारेण। निवर्तिताशेषकुमाराः = निवर्तिताः अशेषाः कुमाराः येन सः।

||प्रश्नोत्तरः||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' (उत्तरार्द्ध भाग) से उद्धृत है।

प्रश्न 2. चन्द्रापीडः केन उपनीतं वाजिनम् आरूढः?

उत्तर– चन्द्रापीडः केयूरकेण उपनीतं वाजिनम् आरूढः।

प्रश्न 3. 'निवर्तिताशेषकुमाराश्च, सानन्देन सकुतूहलेन सविस्मयेन च स्कन्धावारजनेन प्रणम्यमानः स्वभवनं विवेश।' रेखांकित अंश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

उत्तर– सभी गन्धर्वकुमारों को (वापस) लौटाकर आनन्द, कौतुक और आश्चर्यपूर्वक स्कन्धावार (छावनी) में टिके हुए सैनिकों के द्वारा प्रणाम किये जाते हुए अपने भवन में प्रवेश किये।

प्रश्न 4. 'व्रजन्तम्' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

उत्तर– 'व्रजन्तम्' का शाब्दिक अर्थ है–'जाते हुए।'

➥ **तत्र च वैशम्पायनेन पत्रलेखया च सह, 'एवं महाश्वेता, एवं कादम्बरी, एवं मदलेखा, एवं केयूरकः' इत्यनयैव कथया दिवसम् अनैषीत्। तामेव कादम्बरीं चिन्तयतः जाग्रत एव सा जगाम रात्रिः। अपरेद्युश्च समुत्थिते भगवति रवौ, आस्थानमण्डपगतः सहसैव प्रतीहारेण सह प्रविशन्तं केयूरकं ददर्श। दूरादेव कृतप्रणामम् एनम् 'एहिएहि' इत्युक्त्वा गाढम् आलिङ्ग्य, आत्मनः समीपे एव समुपावेशयत्।**

शब्दार्थ– सह = साथ। एवं = इस प्रकार। इत्यनयैव = ऐसी ही। कथया = बातचीत द्वारा। अनैषीत् = बिताया। चिन्तयतः = चिन्ता करते हुए। जाग्रत एव = जागते हुए ही। जगाम = गयी, बीत गयी। अपरेद्युश्च = और दूसरे दिन। समुत्थिते = निकलने पर।

आस्थानमण्डपगतः = सभामंडप में गये हुए। सहसैव = अचानक। प्रतीहारेण सह = प्रतीहारी के साथ। प्रविशन्तं = प्रवेश करते हुए। कृतप्रणामम् = प्रणाम करने वाले को। एहि-एहि = आओ-आओ। गाढ़म् आलिङ्ग्य = भली-भाँति गले लगाकर। समुपावेशयत् = बिठाया।

हिन्दी अनुवाद– यहाँ वैशम्पायन और पत्रलेखा के साथ, महाश्वेता ऐसी है, कादम्बरी ऐसी है, मदलेखा ऐसी है, केयूरक ऐसा है– इस प्रकार की चर्चा में चन्द्रापीड ने दिन बिता दिया और कादम्बरी की चिन्ता में ही रात भी जागते ही बीत गयी। दूसरे दिन सूर्योदय होते ही सभामण्डप में आये हुए चन्द्रापीड ने अचानक प्रतीहारी के साथ प्रवेश करने वाले केयूरक को देखा। आओ-आओ कहते हुए उसे दूर ही से प्रणाम करने वाले केयूरक को चन्द्रापीड ने कसकर गले से लगा लिया और अपने समीप ही बिठा लिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– इत्यनयैव = इति + अनया + एव। अपरेद्युश्च = अपरेद्युः + च। सहसैव = सहसा + एव। कच्चित् = कत् + चित्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'इत्यनयैव कथया दिवसम् अनैषीत्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– इस प्रकार की चर्चा में (चन्द्रापीड ने) दिन बिता दिया।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः केन सह दिवसम् अनैषीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः वैशम्पायनेन पत्रलेखया सह दिवसम् अनैषीत्।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः प्रतीहारेण सह प्रविशान्तं कं ददर्श?

उत्तर– चन्द्रापीडः प्रतीहारेण सह केयूरकं ददर्श।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः आत्मनः समीपे कं समुपावेशयत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः आत्मनः समीपे केयूरकं समुपावेशयत्।

➥ **पप्रच्छ च– ''केयूरक! कथय, कच्चित् कुशलिनी ससखीजना देवी कादम्बरी भगवती महाश्वेता च'' इति। असौ तु ''अद्य कुशलिनी, याम् एवं देवः पृच्छति'' इत्यभिधाय, कादम्बरीप्रहितानि अभिज्ञानानि अदर्शयत्– मरकतहरिन्ति, व्यपनीतत्वञ्चि पूगीफलानि, शुककपोलपाण्डूनि ताम्बूलदलानि, मृगमदामोदमनोहरमलयजविलेपनं चेति। अब्रवीच्च– ''अञ्जलिना देवम् अर्चयति कादम्बरी, महाश्वेता च कुशलवचसा। नमस्कारेण च मदलेखा। संदिष्टं च तव महाश्वेतया।**

शब्दार्थ– पप्रच्छ = पूछा। कथय = कहो। कच्चित् = क्या। ससखीजना = सखियों के साथ। असौ = यह। याम् = जिसको। पृच्छति = पूछते हैं। प्रहितानि = भेजे गये। अभिज्ञानानि = पहचान चिह्नों को। अदर्शयत् = दिखाया। मरकतहरिन्ति = मरकत मणि जैसी हरी। व्यपनीतत्वञ्चि = छिलके रहित। पूगीफलानि = सुपाड़ी। शुककपोलपांडूनि = सुग्गे के कपोल जैसे पीले। ताम्बूलदलानि = पान के पत्ते। मृगमदामोद = कस्तूरी की गन्ध से युक्त। मनोहरमलयजविलेपनम् = मनोहर चन्दन का लेप। अब्रवीच्च = और कहा। अञ्जलिना = हाथ जोड़कर। कुशलवचसा = कुशल समाचार से। अर्चयति = अभिनन्दन करती है। संदिष्टम् = संदेश दिया है।

हिन्दी अनुवाद– और पूछा– ''केयूरक! बताओ, सखियों सहित कादम्बरी तथा देवी महाश्वेता कुशलपूर्वक हैं न? उसने कहा– राजकुमार, आप इस प्रकार जिनके बारे में पूछते हैं वह कुशलपूर्वक हैं। इसके पश्चात् उसने कादम्बरी द्वारा भेजे गये मरकतमणि जैसे हरे छिलके रहित पूगीफल (सुपाड़ी), सुग्गे के कपोल जैसे पीले पान तथा कस्तूरी की गन्ध युक्त चन्दन के लेप आदि स्मरण चिह्नों को दिखाया। उसने कहा कि देवी कादम्बरी ने हाथ जोड़कर, महाश्वेता ने कुशल प्रश्न द्वारा तथा मदलेखा ने प्रणाम द्वारा आपका अभिनन्दन किया है और देवी महाश्वेता ने आपको सन्देश दिया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कच्चित् = कत् + चित्। मृगमदामोदमनोहरमलयजविलेपनम् = मृगमदमोदेन मनोहरम् यत् मलयजस्य विलेपनम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकं च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''केयूरक! कथय, कच्चित् कुशलिनी ससखीजना देवी कादम्बरी भगवती महाश्वेता च'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– केयूरक! बताओ सखियों सहित कादम्बरी देवी महाश्वेता कुशलपूर्वक हैं न?

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः केन पप्रच्छ?

उत्तर– चन्द्रापीडः केयूरकेन पप्रच्छ।

प्रश्न 4. कादम्बर्या प्रहितानि किम् अदर्शयत्?

उत्तर– कादम्बर्या प्रहितानि अभिज्ञानानि अदर्शयत्।

प्रश्न 5. प्रतिहारी किम् अब्रवीत्?

उत्तर– प्रतिहारी अब्रवीत् –''अञ्जलिना देवम् अर्चयति कादम्बरी, महाश्वेता च कुशलवचसा, नमस्कारेण च मदलेखा।''

➥ **''धन्या खलु ते येषां न गतोऽपि चक्षुषोर्विषयम्। स्पृहयन्ति खलु जनाः सर्वे व्यतीतदिवसाय। त्वया वियुक्तं विनिवृत्तमहोत्सवमिव वर्तते गन्धर्वराजनगरम्। जानासि च मां कृतसकलपरित्यागाम्। तथापि 'अकारणपक्षपातिनं भवन्तं द्रष्टुम् इच्छति मे हृदयम्।' अपि च बलवत् अस्वस्थशरीरा कादम्बरी। स्मरति च स्मेराननं स्मरकल्पं त्वाम्। अतः पुनरागमनेन अहसि इमां सम्भावयितुम्। अवश्यं सोढव्या चेयं कदर्थना कुमारेण। भवत्सुजनतैव जनयति अनुचिते संदेशप्रागल्भ्यम् इति, इत्युक्त्वा, एषः देवस्य शयनीये विस्मृतः हार प्रहितः'' इत्युत्तरीयपटान्तसंयत तत्सर्वं विमुच्य चामरग्राहिण्याः करे समर्पितवान्।**

धन्या खलु ते .... कदर्थना कुमारेण। (2017 ND)

स्पृहयन्ति खलु जनाः .... चेयं कदर्थना कुमारेण। (2018 BC)

शब्दार्थ– येषां = जिनके। चक्षुषोर्विषयम् = नेत्रों का विषय। गतोऽपि = हुए हो। स्पृहयन्ति = चाहते हैं। वियुक्तं = रहित। अलग। विनिवृत्तमहोत्सवमिव = बीते हुए महोत्सव के समान अर्थात् उदास। कृतसकलपरित्यागाम् = सबका परित्याग करने वाली। अकारणपक्षपातिनं = निःस्वार्थ पक्षपात करने वाले। द्रष्टुम् = देखने के लिए। बलवत् = बहुत अधिक। अस्वस्थशरीरा = रुग्ण। स्मेराननं = हंसता हुआ मुख। स्मरकल्पम् = कामदेव के समान। पुनरागमनेन = पुनः आगमन द्वारा। सम्भावयितुम् अहसि = सम्मानित करने योग्य हैं। सोढव्या = सहन करें। कदर्थना = कष्ट। भवत्सुजनतैव = आपकी सज्जनता ही। जनयति = उत्पन्न करती है। संदेशप्रागल्भ्यम् = संदेश भेजने की धृष्टता। शयनीये = बिस्तर पर। विस्मृतः = भूल हुआ। प्रहितः = भेजा है। उत्तरीयपटान्तसंयतम् = चद्दर के आँचल में बँधे। विमुच्य = खोलकर। समर्पितवान् = दे दिया।

हिन्दी अनुवाद– वे लोग धन्य हैं जिन्होंने अभी तक आपका दर्शन नहीं किया है। यहाँ के सभी लोग फिर उन्हीं बीते हुए दिनों की लालसा में पड़े हैं। आपके बिना गन्धर्वराज का नगर बीते हुए उत्सव के समान उदासी से भर गया है। आप जानते हैं कि मैंने सब कुछ छोड़ दिया है **फिर भी आपके प्रति निःस्वार्थ स्नेह रखने वाला मेरा हृदय आपको देखना चाहता है।** देवी कादम्बरी भी अधिक अस्वस्थ हो गयी हैं। वह कामदेव तुल्य आपके मुस्कान युक्त मुख का स्मरण करती रहती हैं, अतः अपने पुनः आगमन द्वारा उसे सम्मानित करें। आप इतना कष्ट अवश्य उठाएँ। आपकी सज्जनता ही इस अनुचित संदेश को भेजने की धृष्टता करा रही है। ऐसा कहकर उसने कहा कि आपके बिस्तर पर भूले हुए इस हार को उन्होंने भेजा है। इसके पश्चात् उसने दुपट्टे के आँचल में बँधी हुई सारी वस्तुओं को खोलकर चमर डुलाने वाली सेविका को समर्पित कर दिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– चक्षुषोर्विषयम् = चक्षुषोः + विषयम्। गतोऽसि = गतः + असि। विनिवृत्तमहोत्सवमिव = विनिवृत्तमहा + उत्सवम् + इव। स्मेराननम् + स्मेः + आननम्। पुनरागमनेन = पुनः + आगमनेन।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'अकारणपक्षपातिनं भवन्तं द्रष्टुम् इच्छति मे हृदयम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– फिर भी आपके प्रति निःस्वार्थ स्नेह रखने वाला मेरा हृदय आपको देखना चाहता है।

प्रश्न 3. 'अकारण पक्षपातिनं भवन्तं द्रष्टुम् इच्छति मे हृदयम्।' केनोक्त?

उत्तर– केयूरकेणोक्तः।

प्रश्न 4. अस्वस्थशरीरा का?
उत्तर– अस्वस्थशरीरा कादम्बरी।
प्रश्न 5. जनाः कस्यै स्पृहयन्ति?
उत्तर– जनाः व्यतीतदिवसाय स्पृहयन्ति।

➥ **चन्द्रापीडस्तु तत् सर्वं शिरसि कृत्वा, स्वयमेवजग्राह। तेन च विलेपनेन विलिप्य, कण्ठे हारम् अकरोत्। आगृहीतताम्बूलश्च मुहूर्तादिव उत्थाय, केयूरकद्वितीय एव मन्दुरां प्रविवेश। प्रविश्य च लीलामन्दं सकुतूहलम् उवाच– "केयूरक! कथय, मन्निर्गमादारभ्य को वा वृतान्तो गन्धर्वराजकुले? केन वा व्यापारेण वासरम् अतिनीतवती गन्धर्वराजपुत्री? के वा अभवन् आलापाः परिजनस्य? आसीद्वा कच्चित् अस्मदाश्रयिणी कथा?" इति।** (2020 ZP)

शब्दार्थ– शिरसि कृत्वा = सिर पर करके, सम्मान के साथ स्वीकार करके। जग्राह = ग्रहण किया। विलेपनेन = लेप द्वारा। विलिप्य = लेप करके। आगृहीतताम्बूलश्च = और पान खाकर। उत्थाय = उठकर। केयूरकद्वितीय = केयूरक के साथ। मन्दुराम् = घुड़साल में। प्रविवेश = प्रवेश किया। लीलामन्दम् = प्रसन्नता के साथ। मन्निर्गमादारभ्य = मेरे निकलने के समय से। व्यापारेण = कार्य द्वारा। वासरम् = दिन को। अतिनीतवती = बिताया। गन्धर्वराजपुत्री = कादम्बरी। के = कौन सी। अभवन् = हुई। आलापाः = बातें। अस्मदाश्रयिणी = मुझसे सम्बन्धित।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड ने सारी वस्तुएँ आदर से स्वीकार करते हुए ले लीं। उसने चन्दन के लेप को शरीर पर लगा लिया और हार को गले में डाल लिया। पान खाकर थोड़ी ही देर में उठकर वह केयूरक के साथ ही घुड़साल में गया और प्रसन्नता तथा जिज्ञासा के साथ धीरे-धीरे बोला– केयूरक बताओ मेरे वहाँ से आने के समय से अब तक गन्धर्व राजकुल का क्या समाचार है? कादम्बरी ने किन कार्यों द्वारा दिन बिताया। सखियों के साथ कौन-सी बातें हुईं। क्या मुझसे सम्बन्धित कोई बात भी हुई थी?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कृत्वा = कृ + क्त्वा। मन्निर्गमादारभ्य = मत् + निर्गमात् + आरभ्य।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकं च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. "केयूरक! कथय, मन्निर्गमादारभ्य को वा वृतान्तो गन्धर्वराजकुले? रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– केयूरक! बताओ, मेरे वहाँ से आने के समय से अब तक गन्धर्व राजकुल का क्या समाचार है?
प्रश्न 3. चन्द्रापीड कं स्वयमेव जग्राह?
उत्तर– चन्द्रापीडः कादम्बरी प्रहितानि अभिज्ञानानि स्वयमेव जग्राह।
प्रश्न 4. कः मन्दुरां प्रविवेश?
उत्तर– चन्द्रापीडः केयूरक द्वितीय एव मन्दुरां प्रविवेश।
प्रश्न 5. गन्धर्वराजपुत्री का आसीत्?
उत्तर– गन्धर्वराजपुत्री कादम्बरी आसीत्।

➥ **केयूरकस्तु सर्वम् सर्वम् आचचक्षे– "देव श्रूयताम्– निर्गते त्वयि, देवी कादम्बरी सौधशिखरम् आरुह्य देवस्यैव गमनमार्गम् आलोकितवती। तिरोहितदर्शने च देवे, सखेदम् अवतीर्य, तमेव क्रीडापर्वतकम् आगतवती– यत्र स्थितवान् देवः। तम् उपेत्य च देवेन अत्र स्थितम् अत्र स्नातम् अत्र भुक्तम्, अत्र सुप्तम् इति देवस्यैव स्थानचिह्नानि पश्यन्ती क्षपितवती दिवसम्। दिवसावसाने च महाश्वेतायाः प्रयत्नात् तस्मिन्नेव मणिवेश्मनि आहारम् अकरोत्। अस्तमिते च भगवति रवौ, उदिते च चन्द्रमसि, तत्रैव कंचित् कालं स्थित्वा, शय्यागृहम् अगात्। तत्र प्रबलया शिरोवेदनया दारुणेन दाहज्वरेण च अभिभूयमाना, दुःखदुःखेन क्षणदाम् अनैषीत्। उषसि च माम् आहूय, देवस्य वार्तोपलम्भार्थम् आदिष्टवती" इति।**

शब्दार्थ– आचचक्षे = बताया। श्रूयताम् = सुनिए। निर्गते त्वयि = तुम्हारे चले आने पर। सौधशिखरम् = महल की चोटी पर। आरुह्य = चढ़कर। गमनमार्गम् = जाने का रास्ता। आलोकितवती = देखती रही। तिरोहितदर्शने = आँखों से ओझल हो जाने पर। सखेदम् = कष्ट के साथ। अवतीर्य = उतरकर। क्रीडापर्वतकम् = क्रीडा के लिए बने पर्वत पर। आगतवती = आई। स्थितवान्

= ठहरे थे। उपेत्य = पहुँचकर। स्नातम् = स्नान किया था। भुक्तम् = भोजन किया था। स्थानचिह्नानि = स्थान चिह्नों को। पश्यन्ती = देखती हुई। क्षपितवती = बिताया। दिवसावसाने = सायंकाल। मणिवेश्मनि = मणिमहल में। आहारम् अकरोत् = भोजन किया। अस्तमिते = अस्त हो जाने पर। उदिते च चन्द्रमसि = चन्द्रमा के उदय हो जाने पर। कंचित् कालम् = कुछ देर। स्थित्वा = रुककर। शय्यागृहम् = सोने के घर में। अगात् = आई। शिरोवेदनया = सिर की पीड़ा से। दारुणेन = कठिन। दाहज्वरेण = दाह (जलन) ज्वर से। अभिभूयमाना = अभिभूत होकर। दुःखदुःखेन = दुःख के साथ। क्षणदाम् = रात को। अनैषीत् = बिताया। उषसि = उषाकाल में। माम् = मुझको। आहूय = बुलाकर। वार्तोपलम्भार्थम् = समाचार जानने के लिए। आदिष्टवती = आदेश दिया।

हिन्दी अनुवाद– केयूरक ने चन्द्रापीड को सभी बातें बतायीं। उसने कहा राजकुमार सुनिये– आपके वहाँ से निकलते ही देवी कादम्बरी महल के ऊपरी भाग में जाकर आपके जाने का रास्ता देखती रहीं। जब आप आँखों से ओझल हो गये तो वह कष्ट के साथ वहाँ से उतरकर उसी क्रीड़ा पर्वत पर आयीं जहाँ आप ठहरे थे। वहाँ पहुँचकर, आपने जहाँ विश्राम किया था, जहाँ स्नान किया था, जहाँ भोजन किया था, जहाँ शयन किया था– इस प्रकार आपके ही स्थान-चिह्नों को देखती हुई उन्होंने सारा दिन बिता दिया। सायंकाल महाश्वेता के प्रयत्न से उसी मणिमहल में उन्होंने भोजन किया। सूर्य के अस्त हो जाने तथा चन्द्रमा के निकल आने पर वहीं कुछ देर रुककर सोने के लिये घर में चली गईं। वहाँ सिर की तीव्र पीड़ा और भयंकर ज्वर के कारण बड़े कष्ट के साथ रात बिताई। उषाकाल में ही उन्होंने मुझे बुलाकर आपका समाचार जानने के लिए आदेश दिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– दिवसावसाने = (दिवसस्य अवसाने)।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. ''उषसि च माम् आहूय, देवस्य वार्तोपलम्भार्थम् आदिष्टवती'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– उषाकाल में ही उन्होंने मुझे बुलाकर आपका समाचार जानने के लिए आदेश दिया।

प्रश्न 3. कः आचचक्षे?

उत्तर– केयूरकः आचचक्षे।

प्रश्न 4. का सौधशिखरम् आरुह्य देवस्यैव गमनमार्गम् आलोकितवती?

उत्तर– देवी कादम्बरी सौधशिखरम् आरुह्य देवस्यैव गमनमार्गम् आलोकितवती।

प्रश्न 5. कादम्बरी कस्य वार्तोपलम्भार्थम् आदिष्टवती?

उत्तर– कादम्बरी देवस्य (चन्द्रापीडस्य) वार्तोपलम्भार्थम् आदिष्टवती।

➥ **चन्द्रापीडः तत् आकर्ण्य जिगमिषुः अश्वः अश्वः इति वदन् भवनात् निर्ययौ। आरोपितपर्याणम् इन्द्रायुधम् आरुह्य, पश्चात् आरोप्य पत्रलेखाम्, वैशम्पायनं स्कन्धावारे स्थापयित्वा, अन्यतुरगारूढेन केयूरकेण अनुगम्यमानः हेमकूटं ययौ।**

शब्दार्थ– तत् = यह। आकर्ण्य = सुनकर। जिगमिषुः = जाने की इच्छा वाला। अश्वः अश्वः = घोड़ा-घोड़ा। वदन् = कहता हुआ। भवनात् निर्ययौ = घर से निकल पड़ा। आरोपित पर्याणम् = जीन कसे हुए। पश्चात् = पीछे। पत्रलेखाम् आरोप्य = पत्रलेखा को बिठाकर। स्कन्धावारे = शिविर में। स्थापयित्वा = नियुक्त करके। अन्यतुरगारूढ़ेन = दूसरे घोड़े पर सवार। ययौ = गया।

हिन्दी अनुवाद– यह सुनकर जाने के लिए उद्यत चन्द्रापीड घोड़ा-घोड़ा कहता हुआ घर से बाहर निकल पड़ा। जीन कसे हुए इन्द्रायुध पर सवार होकर अपने पीछे पत्रलेखा को बिठाकर तथा सेना के शिविर में वैशम्पायन को नियुक्त करके दूसरे घोड़े पर सवार होकर पीछे-पीछे आने वाले केयूरक के साथ हेमकूट को चल पड़ा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– आरोपितपर्याणम् = आरोपितम् पर्याणम् यस्मिन् तम्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकं च नाम लिखित।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **''आरोपितपर्याणम् इन्द्रायुधम् आरुह्य हेमकूटं ययौ।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– जीन कसे हुए इन्द्रायुध पर सवार होकर हेमकूट को चल पड़ा।
प्रश्न 3. **चन्द्रापीडः किं वदन् भवनात् निर्ययौ?**
उत्तर– चन्द्रापीडः अश्व अश्व इति वदन् भवनात् निर्ययौ।
प्रश्न 4. **चन्द्रापीडः केन अनुगम्यमानः हेमकूटं ययौ?**
उत्तर– चन्द्रापीडः केयूरकेण अनुगम्यमानः हेमकूटं ययौ।
प्रश्न 5. **चन्द्रापीडः कुत्र ययौ?**
उत्तर– चन्द्रापीडः हेमकूटं ययौ।

➥ **आसाद्य कादम्बरीभवनद्वारम्, अवतीर्य द्वारपालार्पिततुरङ्गः कादम्बरीप्रथमदर्शनकुतूहलिन्या पत्रलेखया अनुगम्यमानः, प्रविश्य, ''क्व देवी कादम्बरी तिष्ठति?'' इति संमुखागतम् अन्यतमं वर्षवरम् अप्राक्षीत्। कृतप्रणामेन च तेन ''देव क्रीडापर्वतकस्य अधस्तात् कमलवनदीर्घिकातीरे विरचितं हिमगृहम् अध्यास्ते'' इत्यावेदिते केयूरकेण उपदिश्यमानवर्त्मा, हिमगृहस्य मध्यभागम् आससाद। तस्य च एकदेशे सखीकदम्बकपरिवृताम्, मृणालदण्डमण्डपिकायाः तले कुसुमशयनम् अधिशयानाम् कादम्बरी व्यलोकयत्।**

शब्दार्थ– आसाद्य = पहुँचकर। कादम्बरीभवनद्वारम् = कादम्बरी के महल के द्वार पर। अवतीर्य = उतरकर। द्वारपालार्पिततुरङ्ग = द्वारपाल को घोड़ा सौंपकर। कादम्बरी प्रथमदर्शन कुतूहलिन्या = कादम्बरी को पहले-पहल देखने के लिए उत्सुक। सम्मुखागतम् = सामने से आते हुए। अन्यतमम् वर्षवरम् = नपुंसक (राजभवनों की स्त्रियों के महलों में नपुंसक सेवक नियुक्त किये जाते थे।) अप्राक्षीत् = पूछा। कृतप्रणामेन = प्रणाम किये जाने पर। अधस्तात् = नीचे। कमलवनदीर्घिकातीरे = कमलवन की बावड़ी के किनारे। विरचितम् = बने हुए। हिमगृहम् = हिमगृह में। अध्यास्ते = विराजमान है। इत्यावेदिते = ऐसा निवेदन करने पर। उपदिश्यमानवर्त्मा = बताये गये मार्ग से। आससाद = पहुँचा। एकदेशे = एक भाग में। सखीकदम्बकपरिवृताम् = सखियों के समूह से घिरी हुई। मृणालदण्डमण्डपिकायाः = कमल के डण्ठल से बने छोटे मण्डप के। तले = नीचे। कुसुमशयनम् = फूलों की शय्या पर। अधिशयानाम् = सोई हुई। व्यलोकयत् = देखा।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड ने कादम्बरी के महल के द्वार पर पहुँचकर घोड़े से उतरकर उसे द्वारपाल को सौंप दिया और कादम्बरी को पहले-पहल देखने के लिए उत्सुक पीछे-पीछे आने वाली पत्रलेखा के साथ महल के भीतर प्रवेश करके सामने से आते हुए एक नपुंसक सेवक से पूछा कि– देवी कादम्बरी कहाँ हैं? उसने प्रणाम करके कहा– राजकुमार! क्रीड़ा पर्वत के नीचे कमलवन की बावड़ी के किनारे बने हुये हिमगृह में विराजमान हैं। उसके ऐसा कहने पर केयूरक द्वारा बताये गये मार्ग से चन्द्रापीड हिमगृह के बीच में पहुँचा और उसने वहाँ एक स्थान पर सखियों से घिरी हुई तथा कमलदण्ड के बने छोटे-से मण्डप में फूलों की सेज पर सोई हुई कादम्बरी को देखा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कादम्बरीभवनद्वारम् = कादम्बर्याः भवनस्य द्वारम्। द्वारपालार्पिततुरङ्गः = द्वारपालम् अर्पितः तुरङ्गः येन सः। कादम्बरीप्रथमदर्शनकुतूहलिन्या = कादम्बर्याः प्रथमदर्शनस्य कुतूहलिनी या तया। कमलवनदीर्घिकातीरे = कमलवनस्य या दीर्घिका तस्या तीरे। इत्यावेदिते = इति + आवेदिते।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।**
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. **''देव क्रीडापर्वतकस्य अधस्तात् कमलवनदीर्घिकातीरे विरचितं हिमगृहम् अध्यास्ते।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– राजकुमार! क्रीडापर्वत के नीचे कमलवन की बावड़ी के किनारे बने हुए हिमगृह में विराजमान हैं।
प्रश्न 3. **चन्द्रापीडः कुत्रः आसीदत्?**
उत्तर– कादम्बरी भवनद्वारम् आसीदत्।
प्रश्न 4. **चन्द्रापीडः संमुखागतम् अन्यतमं वर्षवरं किम् अप्राक्षीत्?**
उत्तर– चन्द्रापीडः अप्राक्षीत्—'क्व देवी कादम्बरी तिष्ठति'?

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कुत्र आससाद?

उत्तर– हिमगृहस्य मध्यभागम् आससाद।

➥ **अथ सा संमुखम् आपतन्तम् तं दूरादेव दृष्ट्वा कुसुमशयनात् उत्तस्थौ। चन्द्रापीडस्तु समुपसृत्य पूर्ववदेव तां महाश्वेताप्रणामपुरस्सरं दर्शितविनयः प्रणनाम। कृतप्रतिप्रणामायां च तस्यां स्मिन्नेव कुसुमशयने समुपविष्टायाम्, प्रतिहार्या समुपनीतां जाम्बूनदमयीम् आसन्दिकां पादेनैव उत्सार्य क्षितावेव उपविशत्।**

शब्दार्थ– आपतन्तम् = आते हुए। दूरादेव = दूर ही से। कुसुमशयनात् = फूल की सेज से। उत्तस्थौ = उठकर खड़ी हो गई। समुपसृत्य = पास जाकर। पूर्ववदेव = पहले जैसे ही। महाश्वेताप्रणामपुरस्सरम् = पहले महाश्वेता को प्रणाम करके। दर्शितविनयः = विनम्रता के साथ। प्रणनाम = प्रणाम किया। कृतप्रतिप्रणामायाम् = बदले में प्रणाम करने पर। समुपविष्टायाम् = बैठ जाने पर। समुपनीताम् = लाई गई। जाम्बूनदमयीम् = सोने की बनी हुई। आसन्दिकाम् = मञ्चिका को। पादेनैव = पैर से ही। उपविशत् = बैठ गया।

हिन्दी अनुवाद– कादम्बरी सामने से आने वाले चन्द्रापीड को दूर से ही देखकर फूल की सेज से उठ खड़ी हुई। चन्द्रापीड ने उसके पास जाकर पहले ही की तरह प्रथम महाश्वेता को प्रणाम किया, फिर बड़े आदर के साथ कादम्बरी को भी प्रणाम किया। प्रणाम के बदले प्रणाम करके जब कादम्बरी उसी फूल की सेज पर बैठ गई तो चन्द्रापीड भी प्रतीहारी द्वारा लाई गई सोने की मञ्चिका को पैर से हटाकर भूमि पर ही बैठ गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– दूरादेव = दूरात् + एव। पूर्ववदेव = पूर्ववत् + एव। पादेनैव = पादेन + एव।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकं च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''कृतप्रतिप्रणामायां च तस्यां स्मिन्नेव कुसुमशयने समुपविष्टायाम्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– प्रणाम के बदले प्रणाम करके कादम्बरी उसी फूल की सेज पर बैठ गई।

प्रश्न 3. कादम्बरी कं सम्मुखम् आपतन्तम् दूरादेव दृष्ट्वा कुसुमशयनात् उत्तस्थौ?

उत्तर– कादम्बरी चन्द्रापीडं सम्मुखम् आपतन्तम् दूरादेव दृष्ट्वा कुसुमशयनात् उत्तस्थौ।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः कुत्र उपविशत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः क्षिताम् उपविशत्।

प्रश्न 5. आसन्दिका कीदृशः आसीत्?

उत्तर– आसन्दिका जाम्बूनदमयीम् आसीत्।

➥ **अथ केयूरकः ''देवि! देवस्य चन्द्रापीडस्य प्रसादभूमिः एषा पत्रलेखा नाम ताम्बूलकरङ्कवाहिनी इत्याभिधाय पत्रलेखाम् अदर्शयत्। अथ कादम्बरी दृष्ट्वा तां ''अहो मानुषीषु पक्षपातः प्रजापतेः'' इति चिन्तयांबभूव। कृतप्रणामां च तां, सादरम् 'एह्येहि' इत्याहूय, आत्मनः समीपे समुपावेशयत्। दर्शनादेव उपारूढप्रीत्यतिशया च मुहुर्मुहुरेनाम् करतलेन पस्पर्श।**

शब्दार्थ– प्रसादभूमिः = कृपापात्र। तांबूलकरङ्कवाहिनी = पान का डिब्बा लेकर चलने वाली। अदर्शयत् = दिखाया। मानुषीषु = मनुष्य जाति की स्त्री पर। प्रजापतेः = ब्रह्मा का। चिन्तयांबभूव = विचारमग्न हो गई। कृतप्रणामा = प्रणाम करने वाली। एह्येहि = आओ-आओ। इत्याहूय = इस प्रकार बुलाकर। आत्मनः समीपे = अपने पास। समुपवेशयत् = बिठाया। दर्शनादेव = देखने के समय से ही। उपारूढप्रीत्यतिशया = अत्यधिक प्रेम के कारण। मुहुर्मुहुरेनाम् = बार-बार इसको। करतलेन = हाथ से। पस्पर्श = छुआ, सहलाया।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् केयूरक ने पत्रलेखा को दिखाते हुए कहा– देवि! यह कुमार चन्द्रापीड की कृपापात्री पान का डिब्बा लेकर चलने वाली पत्रलेखा है। कादम्बरी उसे देखकर एक मानुषी के प्रति किये गये ब्रह्मा के पक्षपात के विषय में सोचने लगी। ब्रह्मा ने इसे कितना अलौकिक सौन्दर्य दिया जैसा कि मनुष्य जाति में नहीं होना चाहिए, इसी पर वह सोचने लगी। कादम्बरी ने उसे प्रणाम करती हुई पत्रलेखा को आदर के साथ आओ, आओ कहती हुई बुलाकर अपने पास बिठा लिया और उसे देखते ही उसके प्रति आकर्षित हो जाने के कारण प्रेमपूर्वक उसे बार-बार हाथ से स्पर्श किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– एह्येहि = एहि + एहि। उपारूढप्रीत्यतिशया = उपारूढा अतिशया प्रीतिः यस्याः सा। मुहुर्मुहुरेनाम् = मुहुः + मुहुः + एनाम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. 'अहो मानुषीषु पक्षपातः प्रजापतेः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– अरे! ब्रह्मा ने मानुषी के प्रति कैसा पक्षपात किया है।
प्रश्न 3. पत्रलेखा का आसीत्?
उत्तर– चन्द्रपत्नी रोहिण्याः अवतारः चन्द्रापीडस्य च ताम्बूलकरङ्कवाहिनी आसीत्।
प्रश्न 4. केयूरकः काम् अदर्शयत्?
उत्तर– केयूरकः पत्रलेखाम् आदर्शयत्।
प्रश्न 5. कादम्बरी पत्रलेखां दृष्ट्वा का चिन्तयांबभूव?
उत्तर– कादम्बरी पत्रलेखां दृष्ट्वा 'अहो मानषीषु पक्षपातः प्रजापतेः' इतिचिन्तयांबभूव।

➥ **चन्द्रापीडस्तु तदवस्थां चित्ररथतनयाम् आलोक्य निपुणालापेन अपृच्छत्– ''देवि! जानामि कामरतिं निमित्तीकृत्य प्रवृत्तोऽयं व्याधिः। कुसुमेषु पीडया पतितां त्वाम् अवेक्ष्य दूयते मे हृदयम्। इच्छामि देहदानेनापि स्वस्थाम् अत्र भवतीम् कर्तुम्'' इति।** (2019 DD, 20 ZP)

शब्दार्थ– तदवस्थां = उस अवस्था में। चित्ररथतनयाम् = चित्ररथ की पुत्री कादम्बरी को। आलोक्य = देखकर। निपुणालापेन = चतुराईपूर्ण बातों से। अपृच्छत् = पूछा। जानामि = जानता हूँ। कामरतिम् = कामक्रीड़ा को। निमित्तीकृत्य = कारण बनाकर। प्रवृत्तोऽयं व्याधिः = यह रोग उत्पन्न हुआ है। अवेक्ष्य = देखकर। दूयते = दुःखी हो रहा है। देहदानेनापि = शरीर दान करके। कुसुमेषु पीडया = काम के बाणों की पीड़ा से।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड ने कादम्बरी को उस अवस्था में देखकर चतुराई-पूर्ण बातचीत करते हुए कहा– देवि, मैं जानता हूँ कि तुममें कामक्रीड़ा के लिए ही यह रोग उत्पन्न हुआ है। कामबाणों की पीड़ा के कारण फूलों पर पड़ी हुई तुमको देखकर मेरा हृदय बहुत दुःखी हो रहा है। मैं अपना शरीर देकर भी आपको स्वस्थ करना चाहता हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तदवस्थाम् = तत् + अवस्थाम्। प्रवृत्तोऽयं = प्रवृतः अयं। देहदानेनापि = देहदानेन + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकं च नाम लिखत।
अथवा **अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः ?**
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा अस्य लेखकः बाणभट्टः च अस्ति।'
प्रश्न 2. चन्द्रापीडः कस्य तनयां आलोक्य अपृच्छत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः चित्ररथ तनयाम् आलोक्य अपृच्छत्।
प्रश्न 3. ''इच्छामि देहदानेनापि स्वस्थाम् कर्त्तुम्'' केन एवं कं प्रति उक्तः?
उत्तर– चन्द्रापीडेन एवं कादम्बरीं प्रति उक्तः, यत् इच्छामि देहदानेनापि स्वस्थाम् कर्त्तुम्।
प्रश्न 4. ''निपुणालापेन'' में कौन-सी विभक्ति है?
उत्तर– ''निपुणालापेन'' में तृतीया विभक्ति और एकवचन है।
प्रश्न 5. 'अवेक्ष्य' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।
उत्तर– 'अवेक्ष्य' का शाब्दिक अर्थ है– 'देखकर'।

➥ **कादम्बरी तु तम् अशेषम् अस्य अव्यक्तव्यावहारसूचितम् अर्थ मनसा गृहीत्वापि शालीनताम् अवलम्बमाना तूष्णीमेव आसीत्। ततः मदलेखा प्रत्यवादीत्– ''कुमार! किं कथयामि? अस्याः खलु कुमारभावोपेतायाः दारुणोऽयम् अकथनीयः संतापः। मृणालिन्याः किसलयमपि हुताशनायते। ज्योत्स्नापि आतपायते। धीरत्वमेव प्राणसंधारणमस्याः'' इति।**

शब्दार्थ– अशेषम् = समस्त। अव्यक्तव्याहारसूचितम् = अप्रकट संकेत से सूचित होने वाले। अर्थम् = अभिप्राय को। मनसा गृहीत्वापि = मन में समझते हुए भी। अवलम्बमाना = आश्रय लेकर। तूष्णीमेव आसीत् = चुप रह गई। प्रत्यवादीत् = बोली। कुमारभावोपेतायाः = कुमार के ही भावों से युक्त। दारुणः = भयंकर। अकथनीयः = न कहने योग्य। मृणालिन्या = कमलिनी के। किसलयमपि = पत्ते भी। हुताशनायते = अग्नि जैसे गरम लगते हैं। ज्योत्स्नापि = चाँदनी भी। आतपायते = धूप जैसी लगती है। धीरत्वमेव = धैर्य ही प्राणसन्धारणमस्याः = इसके प्राणों को धारण करने वाला।

हिन्दी अनुवाद– कादम्बरी उसके अप्रकट व्यवहार से सूचित होने वाली सारी बात मन ही मन जानकर भी शिष्टता के कारण चुप रह गई। तब मदलेखा ने उत्तर दिया– कुमार! क्या कहूँ? कुमार की ही यादों में मग्न रहने वाली इस कादम्बरी का सन्ताप सहन करने योग्य नहीं है। कमल का पत्ता भी इसे अग्नि के समान जलाता है और चाँदनी भी धूप-सी लगती है। अब केवल धैर्य ही इसके प्राणधारण का एक मात्र सहारा है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– गृहीत्वापि = गृहीत्वा + अपि। प्रत्यवादीत् = प्रति + अवादीत्। किसलयमपि = किसलयम् + अपि। ज्योत्स्नापि = ज्योत्स्ना + अपि। धीरत्वमेव = धीरत्वम् + अपि।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश के पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश के पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. '<u>धीरत्वमेव प्राणसंधारणमस्याः।</u>' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– (केवल) धैर्य ही इसके प्राण धारण का एकमात्र सहारा है।
प्रश्न 3. कादम्बरी कस्य अव्यक्तव्यावहारसूचितम् अर्थ मनसा गृहीत्वापि तूष्णीमेव आसीत्?
उत्तर– कादम्बरी चन्द्रापीडस्य अव्यक्तव्यावहारसूचितम् अर्थ मनसा गृहीत्वापि तूष्णीमेव आसीत्।
प्रश्न 4. मदलेखा का प्रत्यवादीत्?
उत्तर– मदलेखा प्रत्यवादीत्–"कुमार! किं कथयामि? अस्या खलु कुमारभावोपेतायाः दारुणोऽयम् अकथनीयः संतापः।
प्रश्न 5. मृणालिन्याः किसलयमपि हुताशनायते काम्?
उत्तर– कादम्बरीं मृणालिन्याः किसलयमपि हुताशनायते।

➥ **चन्द्रापीडोऽपि उभयतः घटमानार्थतया संदेहदोलारूढेनैव चेतसा महाश्वेतया सह प्रीत्युपचतुराभिः कथाभिः महान्तं कालं स्थित्वा, महता यत्नेन मोचयित्वा आत्मानं स्कन्धावारगमनाय कादम्बरीभवनात् निर्ययौ।**

शब्दार्थ– उभयतः = दोनों ओर से। घटमानार्थतया = घटित होने वाली। बातों के कारण। सन्देहदोलारूढेनैव चेतसा = सन्देह के झूले पर चढ़े हुए मन से। प्रीत्युपचतुराभिः = प्रेम से बढ़ने वाली चतुराइयों से। कथाभिः = बात-चीत से। महान्तम् कालम् = बहुत देर तक। स्थित्वा = रुककर। महता यत्नेन = बड़े प्रयत्न से। मोचयित्वा = छुड़ाकर। आत्मानम् = अपने को। स्कन्धावारगमनाय = सेना शिविर में जाने के लिए। निर्ययौ = निकला।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड भी दोनों ओर घटित होने वाली बातों के कारण सन्देहयुक्त हृदय से महाश्वेता के साथ प्रेम बढ़ाने वाली चतुराइयों से पूर्ण बातें करता हुआ बहुत देर तक ठहरने के पश्चात् बड़े प्रयत्न से स्वयं को वहाँ से मुक्त करके सेना-शिविर में जाने के लिए कादम्बरी के घर से निकला।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– प्रीत्युपचतुराभिः = प्रीति + उपचतुराभिः।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. 'स्कन्धावारगमनाय कादम्बरीभवनात् निर्ययौ।' रेखाकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– सैनिकों के शिविर में जाने के लिए कादम्बरी के घर से निकला।
प्रश्न 3. संदेहदोलारूढेनैव चेतसा कः?
उत्तर– चन्द्रापीडः संदेहादोलारूढेनैव चेतसा।

प्रश्न 4. कादम्बरी भवनात् कः निर्ययौ?

उत्तर– कादम्बरीभवनात् चन्द्रापीडः निर्ययौ।

प्रश्न 5. 'चन्द्रापीडः' कुतः निर्ययौ?

उत्तर– चन्द्रापीडः कादम्बरीभवनात् निर्ययौ।

➥ **निर्गतं च तम् तुरङ्गमम् आरुरुक्षन्तं पश्चात् आगत्य केयूरकः अभिहितवान्– ''देव! मदलेखा विज्ञापयति– देवी कादम्बरी प्रथमदर्शनजनितप्रीतिः पत्रलेखाम्-निवर्त्यमानाम् इच्छति। पश्चात् यास्यति'' इति।**

शब्दार्थ– निर्गतम् = निकले हुए। तुरङ्गमम् आरुरुक्षन्तं = घोड़े पर सवार होने की इच्छा करने वाले। पश्चात् आगत्य = पीछे आकर। अभिहितवान् = कहा। विज्ञापयति = निवेदन करती है। प्रथमदर्शनजनितप्रीतिः = प्रथम दर्शन के कारण उत्पन्न होने वाले प्रेम के कारण। अनिवर्त्यमानाम् = लौटाना। यास्यति = जायेगी।

हिन्दी अनुवाद– कादम्बरी के महल से निकलकर घोड़े पर सवार होने वाले उस चन्द्रापीड के पीछे आकर केयूरक ने कहा– राजकुमार! मदलेखा ने निवेदन किया है कि पहले-पहल देखने के कारण स्नेहपूर्ण होकर देवी कादम्बरी पत्रलेखा को लौटाना नहीं चाहती हैं, वह पीछे (बाद में) जायेगी।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. ''देवी कादम्बरी प्रथमदर्शनजनितप्रीतिः पत्रलेखाम्-निवर्त्यमानाम् इच्छति।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– देवी कादम्बरी प्रथम दर्शन से उत्पन्न प्रीतिवाली होती हुई पत्रलेखा को (पीछे) लौटाना चाहती है।

प्रश्न 3. केयूरकः कम् अभिहितवान्।

उत्तर– केयूरकः तुरङ्गम् आरुरुक्षन्तं चन्द्रापीडम् अभिहितवान्।

प्रश्न 4. मदलेखा किं विज्ञापयति?

उत्तर– मदलेखा विज्ञापयति- ''देवी कादम्बरी प्रथमदर्शनजनितप्रीतिः पत्रलेखां-निवर्त्यमानाम् इच्छति।''

प्रश्न 5. चन्द्रापीडस्य पश्चात् कः आजगाम?

उत्तर– चन्द्रापीडस्य पश्चात् केयूरकः आजगाम।

➥ **तदाकर्ण्य चन्द्रापीडः ''धन्या पत्रलेखा, यामेवम् अनुगृह्णाति। दुर्लभो देवीप्रसादः। प्रवेश्यताम्'' इत्यभिधाय, स्कन्धावारम् आजगाम। प्रविशन्नेव पितुः समीपात् आगतं लेखहारकम् अद्राक्षीत्। धृततुरङ्गमश्च, प्रीतिविस्फारितेन चक्षुषा दूरादेव अपृच्छत्– ''अङ्ग! कच्चित् कुशली तातः सह सर्वेण परिजनेन? अम्बा च सर्वान्तःपुरैः'' इति।** (2017 NH)

शब्दार्थ– तदाकर्ण्य = यह सुनकर। अनुगृह्णाति = अनुग्रह करती हैं। देवीप्रसादः = देवी की कृपा। प्रवेश्यताम् = भीतर ले जाओ। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर। आजगाम = आया। प्रविशन्नेव = प्रवेश करते ही। पितुः समीपात् = पिता के पास से। आगतम् = आये हुए। लेखहारकम् = पत्रवाहक को। अद्राक्षीत् = देखा। धृततुरङ्गमश्च = घोड़ा थाम लेने पर। प्रीतिस्फारितेन = प्रेम से फैली हुई। चक्षुषा = नेत्रों द्वारा। दूरादेव = दूर ही से। अपृच्छत् = पूछा। कच्चित् = क्या। सर्वेण परिजनेन = सभी परिजनों के साथ। अम्बा = माता। सर्वान्तःपुरैः = सभी अन्तःपुर के लोगों के साथ।

हिन्दी अनुवाद– यह सुनकर चन्द्रापीड ने कहा– पत्रलेखा धन्य है जिस पर कादम्बरी की ऐसी कृपा है, क्योंकि उसकी कृपा दुर्लभ है। पत्रलेखा को कादम्बरी के पास ले जाओ। ऐसा कहकर वह सेनाशिविर की ओर चल पड़ा। शिविर में प्रवेश करते ही उसने पिता के पास से आये हुए पत्रवाहक को देखा। सेवक द्वारा घोड़े को थाम लेने के बाद प्रेम से खुली आँखों द्वारा चन्द्रापीड ने दूर से ही पूछा–पिता जी सभी परिजनों के साथ तथा माता जी रनिवास में सभी रहने वालियों के साथ सकुशल हैं न।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तदाकर्ण्य = तद् + आकर्ण्य। इत्यभिधाय = इति + अभिधाय। धृततुरङ्गमश्च = धृतः तुरंगमः यस्य स।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. "धन्या पत्रलेखा, यामेवम् अनुगृह्णाति।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– पत्रलेखा धन्य है, जिस पर कादम्बरी इतना अनुग्रह करती है।

प्रश्न 3. का पत्रलेखाम् अनिवर्त्यमानाम् न इच्छति?

उत्तर– कादम्बरी पत्रलेखाम् अनिवर्त्यमानाम् न इच्छति।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः कुत्र आजगाम्?

उत्तर– चन्द्रापीडः स्कन्धावारम् आजगाम्।

प्रश्न 5. समीपात् आगतं कम् अद्राक्षीत्?

उत्तर– समीपात् आगतं लेखाहारकम् अद्राक्षीत्।

➥ **अथासौ उपसृत्य प्रणामानन्तरम् 'देव! यथाज्ञापयसि' इत्यभिधाय, लेखद्वितयम् अर्पयांबभूव। युवराजस्तु शिरसि कृत्वा स्वयमेव तत् उन्मुच्य पपाठ– "स्वाति! उज्जयिनीतः परममाहेश्वरः महाराजः तारापीडः सर्वसम्पदाम् आयतनम् चन्द्रापीडम् उत्तमाङ्गे चुम्बन नन्दयति। कुशलिन्यः प्रजाः। कियानपि कालः भवतः दृष्टस्य गतः। बलवत् उत्कण्ठितं नः हृदयम्। ततः लेखवाचनविरतिरेव प्रयाणकालतां नेतव्या" इति। शुकनासप्रेषिते द्वितीयेऽपि अमुमेवार्थम् अवाचयत्।**

शब्दार्थ– उपसृत्य = समीप में आकर। प्रणामानन्तरम् = प्रणाम करने के बाद। यथाज्ञापयसि = जैसी आज्ञा। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर। लेखद्वितयम् = दो पत्र। अर्पयाम्बभूव = अर्पित किया। शिरसिकृत्वा = सिर पर धारण करके। उन्मुच्य = खोलकर। पपाठ = पढ़ा। उज्जयिनीतः = उज्जयिनी से। परममाहेश्वरः = बहुत बड़े शिवभक्त। सर्वसंपदाम् = सभी सम्पत्तियों के। आयतनम् = घर। उत्तमांगे = सिर पर। चुम्बन् = चुम्बन करते हुए। नन्दयति = प्रसन्न होते हैं। कुशलिन्यः = कुशलपूर्वक। कियानपिकालः = कितना समय। भवतः = आपके। दृष्टस्य = देखे हुए। गतः = बीत गया। बलवत् = अधिक। नः = हम लोगों का। लेखवाचनविरतिरेव = पत्र पढ़ते ही। प्रयाणकालताम् नेतव्या = प्रस्थान का समय समझना। शुकनासप्रेषिते = शुकनास द्वारा भेजे गए। द्वितीयेऽपि = दूसरे पत्र में भी। अमुमेवार्थम् = इसी आशय को। अवाचयत् = पढ़ा।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् पत्रवाहक ने उसके समीप जाकर कहा– राजकुमार, आप जैसा कह रहे हैं, सभी कुशल हैं। ऐसा कहकर उसने दो पत्र अर्पित किए। राजकुमार ने उसे सिर लगाकर स्वयं खोलकर पढ़ा–"स्वस्ति, उज्जयिनी से परम शैव महाराज तारापीड सभी सम्पत्तियों से पूर्ण चन्द्रापीड के सिर का चुम्बन लेते हुए आनन्दित हो रहे हैं। सारी प्रजा सकुशल है। आपको देखे कितना समय बीत गया। हम लोगों का हृदय अत्यन्त उत्सुक है। अतः पत्र पढ़ने का समाप्तिकाल ही प्रस्थान का समय समझो अर्थात् पत्र पढ़ते ही प्रस्थान कर दो।" शुकनास द्वारा भेजे गये दूसरे पत्र में भी इसी आशय को पढ़ा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– प्रणामानन्तरम् = प्रणाम + अनन्तरम्। इत्यभिधाय = इति + अभिधाय। शिरसिकृत्वा = शिरसि + कृ + क्त्वा।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'कियानपि कालः भवतः दृष्टस्य गतः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– आपको देखे कितना समय बीत गया है।

प्रश्न 3. पत्रवाहकः कस्य समीपम् अगच्छत्?

उत्तर– पत्रवाहकः चन्द्रापीडस्य समीपम् अगच्छत्।

प्रश्न 4. लेखद्वितीयं कः अर्पयांबभूव?

उत्तर– पत्रवाहकः लेखद्वितीयम् अर्पयांबभूव।

प्रश्न 5. पत्रं केन उन्मुच्य पपाठ?
उत्तर– युवराज चन्द्रापीडः पत्रं उन्मुच्य पपाठ।

➥ **वैशम्पायनोऽपि समुपसृत्य लेख द्वितयम् अपरम् आत्मीयम् अस्मात् अभिन्नार्थम् अदर्शयत्। अथ 'यथाज्ञापयति तातः' इत्युक्त्वा, तथैव तुरगाधिरुढः प्रयाणपटहम् अवादयत्। समीपे स्थितं च महाबलाधिकृतं मेघनादनामानम् आदिदेश– ''भवता पत्रलेखया सह आगन्तव्यम्। नियतं च केयूरकः ताम् आदाय एतावतीं भूमिम् आगमिष्यति। तन्मुखेन च विज्ञाप्या देवी कादम्बरी। गरीयसी गुरोः आज्ञा इति कृत्वा गतोऽस्मि इदानीम् उज्जयिनीम्। स्मर्तव्योऽस्मि परिजनकथासु। जीवन पुनः देवीचरणारविन्दवन्दनानन्दम् अननुभूय न स्थायति चन्द्रापीडः'' इति। इत्यादिश्य तम् वैशम्पायनं स्कन्धावारभर नियुज्य स्वयं तथारुढ एव सैन्येनानुगम्यमानः तमेव लेखहारकम् उज्जयिनीमार्गम् पृच्छन् प्रतस्थे।**

शब्दार्थ– समुपसृत्य = पास आकर। अपरम् = दूसरे। आत्मीयम् = अपने। अस्मात् = उससे। अभिन्नार्थम् = अभिन्न अर्थ वाले। अदर्शयत् = दिखाया। तथैव = उसी प्रकार। तुरगाधिरूढः = घोड़े पर चढ़ते हुए। प्रयाणपटहम् = प्रस्थान का नगाड़ा। अवादयत् = बजवाया। महावलाधिकृतं = सेनापति को। आदिदेश = आज्ञा दी। भवता = आप द्वारा। आगन्तव्यम् = आइएगा। नियतम् = निश्चय ही। आदाय = लेकर। एतावतीं भूमिम् = यहाँ तक। आगमिष्यति = आएगा। तन्मुखेन = उसके मुख से। विज्ञाप्या = सूचित करना। गरीयसी = सबसे बड़ी है। गुरोः = पिता की। इति कृत्वा = ऐसा करके। गतोऽस्मि = चला गया हूँ। इदानीम् = इस समय। स्मर्तव्योऽस्मि = स्मरण करने योग्य हूँ। परिजनकथासु = परिजनों से बातचीत के प्रसंग में। जीवन् = जीवित रहते हुए। देवीचरणारविन्दवन्दनानन्दम् = देवी कादम्बरी के चरणों की वन्दना के आनन्द। अननुभूय = बिना अनुभव किए। न स्थास्यति = नहीं रहेगा। इत्यादिश्य = ऐसा आदेश देकर। स्कन्धावारभारे = शिविर के भार में। नियुज्य = नियुक्त करके। पृच्छन् = पूछते हुए। प्रतस्थे = प्रस्थान किया।

हिन्दी अनुवाद– वैशम्पायन ने भी चन्द्रापीड के पास जाकर उसी आशय के अपने दो पत्र उसे दिखाए। उसके पश्चात् पिता की जैसी आज्ञा ऐसा कहकर चन्द्रापीड ने घोड़े पर सवार होकर प्रस्थान का नगाड़ा बजवा दिया और अपने समीप ही स्थित सेनापति मेघनाद को आदेश दिया कि तुम पत्रलेखा के साथ आना। केयूरक उसे निश्चय ही यहाँ तक लेकर आयेगा। उसके द्वारा देवी कादम्बरी को सूचित करना कि पिता की आज्ञा सबसे बड़ी होती है। इसलिए मैं सम्प्रति उज्जयिनी चला गया हूँ। वह परिजनों से बातचीत के प्रसंग में मेरी याद करती रहेंगी। यदि यह चन्द्रापीड जीवित रहा तो देवी के चरणों की वन्दना के आनन्द का अनुभव किये बिना न रहेगा। उसे ऐसा आदेश देकर तथा सेनाशिविर का भार वैशम्पायन को सौंप कर स्वयं घोड़े पर सवार हो, सेना को साथ लिये, उसी पत्रवाहक से उज्जयिनी का मार्ग पूछते हुए प्रस्थान किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– समुपसृत्य = सम + उपसृत्य। तथैव = तथा + एव। महाबलाधिकृतम् = महाबलम् + अधिकृतम्। तन्मुखेन = तत् + मुखेन। गतोऽस्मि = गतः + अस्मि। इत्यादिश्य = इति + आदिश्य।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. ''जीवन पुनः देवीचरणारविन्दवन्दनानन्दम् अननुभूय न स्थायति चन्द्रापीडः।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– यदि यह चन्द्रापीड जीवित रहा तो देवी के चरणों की वन्दना के आनन्द का अनुभव किये बिना न रहेगा।
प्रश्न 3. कः समुपसृत्य लेख द्वितीयम् आत्मीयम् अस्मात् अभिन्नार्थम् अदर्शयत्?
उत्तर– वैशम्पायनः समुपसृत्य लेख द्वितीयम् आत्मीयम् अस्मात् अभिन्नार्थम् अदर्शयत्।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडस्य सेनापतिः कः आसीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडस्य सेनापतिः मेघनादः आसीत्।
प्रश्न 5. चन्द्रापीडः मेघनादं किम् आदिदेश?
उत्तर– भवता पत्रलेखया सह आगन्तव्यम्।

➥ **क्रमेण च अतिप्रवृद्धपादपया वनगजपातितपादपपरिहारेण वक्रीकृतमार्गया पत्रसंकरकषायगिरिनदीजलया शून्यया दिवसम् अटव्या गत्वा, परिणतरविबिम्बे सन्ध्यारुणातपे वासरे रक्तचन्दनतरोः उपरि बद्धं सरसपिशितपिण्डनिभैः अलक्तकैः आर्द्रीकृतं महान्तं रक्तध्वजं दूरत एव ददर्श। तदभिमुखश्च कंचिदध्वानं गत्वा, केतकीसूचिखण्डपाण्डुरेण वनद्विरददन्तकपाटेन परिवृताम्, तोहतोरणेन सनाथीकृतद्वारदेशाम्, लोहमहिषेण अध्यासितशिलावेदिकाम्, निस्संस्कारतया यत्किंचनकारिणा खञ्जतया मन्दं मन्दं संचारिणा, बधिरतया संज्ञाव्यवहारिणा, लम्बोदरतया प्रभूताहारिणा, विस्फोटकव्रणबिन्दुभिः कल्माषितसकलशरीरेण क्षणमप्यमुक्तकालकम्बलखण्डेन जरद्द्रविडधार्मिकेण अधिष्ठितां चण्डिकावसतिम् अपश्यत्। तस्यामेव च आवासम् अरोचयत्।**

शब्दार्थ– क्रमेण = क्रम से। अतिप्रवृद्धपादपया = अत्यन्त बड़े-बड़े वृक्षों वाले। वनगजपातितपादपपरिहारेण = जंगली हाथियों द्वारा गिराये गये वृक्षों को बचाकर। वक्रीकृतमार्गया = टेढ़े-मेढ़े रास्तेवाली। पत्रसंकरकषायगिरिनदीजलया = पत्तों के मिलने से पहाड़ी नदियों के कसैले जलवाली। शून्यया = सूनसान। अटव्या = जंगल से। परिणतरविबिम्बे = सूर्यबिम्ब के बूढ़े हो जाने पर। सन्ध्यारुणातपे = सन्ध्याकालीन लाल धूप वाले। रक्तचन्दनतरोः = लाल चन्दन के वृक्ष के। उपरि बद्धम् = ऊपर बँधे हुए। सरसपिशितपिण्डनिभैः = रसदार मांस के लोथड़े के समान। अलक्तकैः = लाक्षा रस से। आर्द्रीकृतं = गीला किये। रक्तध्वजं = लाल पताका। ददर्श = देखा। तदभिमुखश्च = उसकी ओर। कंचिदध्वानम् = कुछ रास्ता। केतकी सूचिखण्डपाण्डुरेण = केवड़े के फूल जैसे पीले। वनद्विरददन्तकपाटेन = जंगली हाथियों के दांतों के किवाड़। परिवृताम् = घिरी हुई। लौहतोरणेन = लोहे के तोरण से। सनाथीकृतद्वारदेशाम् = जिसका दरवाजे का हिस्सायुक्त है। लौहमहिषेण = लोहे के भैंसे से। अध्यासित- शिलावेदिकाम् = युक्त है शिलावेदी जिसकी। निस्संस्कारतया = असंस्कृत (अपढ़) होने के कारण। यत्किंचनकारिणा = जो कुछ भी करने वाले। खञ्जतया = लँगड़ा होने के कारण। संचारिण = चलने वाले। बधिरतया = बहरा होने से। संज्ञाव्यवहारिणा = संकेत से बात करने वाले। लम्बोदरतया = बड़ा पेट होने से। प्रभूताहारिणा = अधिक भोजन करने वाले। विस्फोटकव्रणबिन्दुभिः = चेचक के दागों से कल्माषितसकलशरीरेण = काले शरीर वाले। क्षणमप्यमुक्तकालकम्बलखण्डेन = काले कम्बल के टुकड़े को क्षणभर को भी न छोड़ने वाले। जरत्द्रविडधार्मिकेण = बूढ़े द्रविड धार्मिक से। अधिष्ठताम् = युक्त। चण्डिकावसतिम् = चंडिका देवी का मंदिर। अपश्यत् = देखा। आवासम् अरोचयत् = ठहरना पसन्द किया।

हिन्दी अनुवाद– क्रमशः चलते-चलते चन्द्रापीड ने बड़े-बड़े पेड़ों वाले जंगली हाथियों द्वारा गिराये गये पेड़ों को बचाकर टेढ़े-मेढ़े रास्तों वाले तथा पत्तों के मिलने से पहाड़ी नदियों के कसैले जल वाले सूने जंगल में दिन भर चलकर सूर्य-बिम्ब के बूढ़े हो जाने तथा संध्या की लाल धूप फैल जाने पर (अर्थात् सूर्य डूबने के समय) लाल चन्दन के वृक्ष के ऊपर बँधे हुए तथा रसदार मांस के लोथड़े के समान लाक्षा रस से भिगोए हुए बहुत बड़े लाल झण्डे को दूर ही से देखा। उसकी ओर कुछ रास्ता तय करने के बाद उसने चण्डिका देवी के मन्दिर को देखा, जिसके किवाड़ केतकी फूल जैसे हाथी के दांत से बने थे, जिसका दरवाजा लोहे के तोरण से युक्त था, जिसके सामने शिला की वेदी पर लोहे का भैंसा बना हुआ था तथा जिसमें एक बूढ़ा द्रविड़ पुजारी बैठा हुआ था जो अपढ़ होने से स्वच्छन्दताचारी था, लंगड़ा होने से धीरे-धीरे चलने वाला था, बहरा होने से उससे संकेत द्वारा ही बात हो सकती थी तथा लम्बा पेट होने के कारण बहुत अधिक खाने वाला था। उसका सारा शरीर चेचक के दागों से काला हो गया था और जो क्षणमात्र के लिये भी काले कम्बल के टुकड़े को नहीं छोड़ता था। उसने वहीं ठहरना पसन्द किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– वनगजपातितपादपपरिहारेण = वनानां गजाः तैः पातिताः पादपाः तेषाम् परिहारः तेन। वक्रीकृतमार्गया = वक्रीकृतः मार्गः यस्याः सा तया। पत्रसंकरकषायगिरिनदीजलया = पत्राणाम् संकरेण कषायम् गिरः नद्याः जलम् यस्याम् सा तया। परिणतरविबिम्बे = परिणतम् रविबिम्बकम् यस्याम् तस्याम्। केतकीसूचिखण्डपाण्डुरेण = केतक्याः सूचिखण्डः तद्वत् पांडुरः तेन। वनद्विरददन्तकपाटेन = वनद्विरदानाम् दन्तकपाटः तेन। सनाथीकृतद्वारदेशाम् = सनाथीकृतः द्वारदेशः यस्याः ताम्। अध्यासितशिलावेदिकाम् = अध्यासितां शिलावेदिका यस्याः ताम्।

॥ प्रश्नोत्तरः॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''विस्फोटकव्रणबिन्दुभिः कल्माषितसकलशरीरेण क्षणमप्यमुक्तकालकम्बलखण्डेन जरद्द्रविडधार्मिकेण अधिष्ठितां चण्डिकावसतिम् अपश्यत्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– चेचक के दागों से काले पड़े हुए शरीर वाले बूढ़े द्रविड़ धार्मिक के द्वारा आश्रित चण्डिका देवी मन्दिर को देखा।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः दूरत एव किं ददर्श?

उत्तर– चन्द्रापीडः महान्तं रक्तध्वजं दूरत एव ददर्श।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः कंचिद ध्वानं गत्वा किम् अपश्यत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः कचिदध्वानं गत्वा चण्डिकावसितम् अपश्यत्।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कुत्र आवासम् अरोचयत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः चण्डिका देव्याः मन्दिरेषु आवासम् अरोचयत्।

➥ **अथावतीर्य तुरगात् प्रविश्य भक्तिप्रवेणेन चेतसा तां प्रणनाम। कृतप्रदक्षिणश्च पुनः प्रणम्य, प्रशस्तदेवतोद्देशदर्शनकुतूहलेन परिभ्रमन्, तं द्रविडधार्मिकम् अपश्यत्। न्यवारयच्च तेन सार्धम् प्रारब्धकलहान् उपहसतः स्वसैनिकान्। उपसान्त्वनैश्च कथमपि तं प्रशमम् उपनीय, क्रमेण जन्मभूमिम्, जातिम्, विद्याम्, कलत्रम्, अपत्यानि, विभवम्, वयःप्रमाणम्, प्रव्रज्यायाः कारणञ्च स्वयमेव पप्रच्छ।** (2017 NF)

शब्दार्थ– अथावतीर्य = इसके पश्चात् उतरकर। तुरगात् = घोड़े से। भक्तिप्रवेणेन = भक्ति से भरे हुए। चेतसा = हृदय से। प्रणनाम = प्रणाम किया। कृतप्रदक्षिणश्च = प्रदक्षिण करके। प्रशस्तदेवतोद्देश्यदर्शनकुतूहलेन = प्रशस्त देवता के उद्देश्य से दर्शन की उत्सुकता के कारण। परिभ्रमन् = घूमते हुए। न्यवारयच्च = और रोका। तेन सार्धम् = उसके साथ। प्रारब्धकलहान् = झगड़ने वाले। उपहसतः = हँसते हुए। स्वसैनिकान् = अपने सैनिकों को। उपशान्त्वनैः = समझा-बुझाकर। कथमपि = किसी प्रकार। प्रशमम् उपनीय = शान्त करके। कलत्रम् = स्त्री। अपत्यानि = संतान। विभवम् = सम्पत्ति। वयः प्रमाणम् = आयु। प्रव्रज्यायाः = संन्यास का। पप्रच्छ = पूछा।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड ने घोड़े से उतरकर देवी के मन्दिर में जाकर भक्तिपूर्ण हृदय से प्रणाम किया। प्रदक्षिणा करके फिर प्रणाम करके प्रशस्त देवता के उद्देश्य से दर्शन की उत्सुकता में घूमते हुए उसने उस बूढ़े द्रविड़ धार्मिक को देखा और उसके साथ झगड़ा करते हुए तथा उसकी हँसी उड़ाते हुए अपने सैनिकों को रोका। उसे समझा-बुझाकर शान्त करके उसने उसकी जन्मभूमि, जाति, विद्या, स्त्री, सन्तान, सम्पत्ति, आयु तथा संन्यास लेने का कारण पूछा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अथावतीर्य = अथ + अवतीर्य। न्यवारयच्च = न्यवारयत् + च। कथमपि = कथम् + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. ''न्यवारयच्च तेन सार्धम् प्रारब्धकलहान् उपहसतः स्वसैनिकान्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– उसके साथ कलह को आरम्भ करने वाले तथा (उसका) उपहास करते हुए अपने सैनिकों को रोका।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः तुरगात् अवतीर्य भक्तिप्रवेण चेतसा कां प्रणनाम?

उत्तर– चन्द्रापीडः तुरगात् अवतीर्य भक्तिप्रवेण चेतसा चण्डीदेवीं प्रणनाम।

प्रश्न 4. प्रशस्तदेवतोद्देशदर्शनकुतूहलेन परिभ्रमन् चन्द्रापीडः कम् अपश्यत्।

उत्तर– प्रशस्तदेवतोद्देशदर्शनकुतूहलेन परिभ्रमन् चन्द्रापीडः द्रविड़धार्मिकम् अपश्यत्।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः द्रविडधार्मिकेन किं पप्रच्छ?

उत्तर– चन्द्रापीडः प्रविडधार्मिकेन जन्मभूमिम्, जातिम्, विद्याम्, कलत्रम्, अपत्यानि, विभवम्, वयःप्रमाणम्, प्रव्रज्यायाः कारणञ्च पप्रच्छ।

➥ **पृष्टश्चासौ अवर्णयत् आत्मानम्। अतीतस्वशौर्यसौन्दर्यविभववर्णनावाचालेन तेन सुतराम् अरज्यत राजपुत्रः। कादम्बरीविरहातुरस्य तस्य तच्चरितं मनोविनोदनताम् अगात्। अस्तम् उपगते च भगवति सप्तसप्तौ, शाखावसक्तपर्याणेषु, पुरोनिखातकुन्तयष्टिसंयतेषु वाजिषु, दूरगमनखिन्ने परिकल्पितयामिके, सुषुप्सति सैनिकजने,**

चन्द्रापीडः परिजनेन एकदेशे संयतस्य इन्द्रायुधस्य पुरः परिकल्पितं शयनीयम् अगात् निषण्णस्य चास्य पस्पर्श दुःखासिका हृदयम्। अनुपजातनिद्र एव ताम् अनयत् निशाम्।

शब्दार्थ– पृष्टश्चासौ = पूछे जाने पर उसने। आत्मानम् = अपने को, अपने विषय में। अवर्णयत् = वर्णन किया। अतीतस्वशौर्यसौन्दर्यविभववर्णनावाचालेन = अपने अतीतकाल की वीरता, सुन्दरता, सम्पत्ति आदि को खूब बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करने वाले। तेन = उससे। सुतराम् = अत्यन्त। अरज्यत = प्रसन्न हुआ। कादम्बरीविरहातुरस्य = कादम्बरी के विरह से व्याकुल। तच्चरितम् = उसका चरित्र। मनोविनोदनताम् = मनोरंजन करने वाला। अगात् = पहुँच गया, हो गया। अस्तमुपगते = अस्त हो जाने पर। सप्तसप्तौ = सूर्य के। शाखावसक्तपर्याणेषु = जिनकी जीनें डालियों पर लटका दी गई हों। पुरोनिखातकुन्तयष्टिसंयतेषु = सामने गाड़े गये भालों के डंडे में बँधे हुए। दूरगमनखिन्ने = बहुत दूर चलने से थके हुए। परिकल्पितयामिके = बिस्तर लगाकर। सुषुप्सति सैनिकजने = सैनिकों के सो जाने पर। परिजनेन = सेवकों द्वारा। एकदेशे = एक स्थान पर। संयतस्य = बँधे हुए। पुरः = सामने। परिकल्पितम् = लगाये गये। शयनीयम् = बिस्तर पर। अगात् = आया। निषण्णस्य = बैठ जाने के लिए। पस्पर्श = स्पर्श किया। दुःखासिका = चिंता। अनुपजातनिद्रः = बिना नींद आए, जागते ही, निशाम् अनयत् = रात बिता दी।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड से पूछे जाने पर उस द्रविड़ ने अपना वर्णन किया। उसने अपने अतीत की वीरता, सुन्दरता और सम्पत्ति का इतना बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया कि उससे राजकुमार को बहुत आनन्द हुआ। कादम्बरी के विरह में व्याकुल राजकुमार के लिए उसका चरित्र मनोरंजन की सामग्री बन गया। सूर्यास्त होने पर घोड़ों की जीनें डालियों पर लटकाकर और सामने गड़े हुए भालों के डण्डों में घोड़ों को बाँधकर जब दूर से आने के कारण थके हुए सैनिक बिस्तर लगाकर सोने लगे तब चन्द्रापीड भी बँधे हुए इन्द्रायुध के सामने एक स्थान पर सेवक द्वारा लगाये गये बिस्तर पर पहुँचा। वहाँ बैठते ही उसके हृदय में चिन्ता उत्पन्न हो गई जिससे उसने सारी रात जागते ही बिता दी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– पृष्टश्चासौ = पृष्टः + च + असौ। कादम्बरीविरहातुरस्य = कादम्बर्याः विरहेण आतुरस्य। तच्चरितम् = तत् + चरितम्। शाखावसक्तपर्याणेषु = शाखासु अवसक्तानि पर्याणि येषाम् तेषु।

‖ प्रश्नोत्तरः ‖

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. ''अस्य पस्पर्श दुःखासिका हृदयम्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– उनके हृदय को दुःख की अनुभूति ने स्पर्श किया।
प्रश्न 3. चन्द्रापीडेन पृष्टः कः आत्मानम् अवर्णयत्?
उत्तर– चन्द्रापीडेन पृष्टः द्रविडधार्मिकः आत्मनम् अवर्णयत्।
प्रश्न 4. कादम्बरीविरहातुरः कः आसीत्?
उत्तर– कादम्बरीविरहातुरः चन्द्रापीडः आसीत्।
प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कस्य चरित वर्णनं श्रुत्वा मनोविनोदम् अकरोत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः जरद्द्रविड धार्मिकस्य चरित वर्णनं श्रुत्वा मनोविनोदम् अकरोत्।

➥ **उषसि च उत्थाय तस्य जरद्द्रविडधार्मिकस्य मनोरथं धनविसरैः पूरयित्वा, रमणीयेषु प्रदेशेषु कृतवसतिः अल्पैरेवाहोभिः उज्जयिनीम् आजगाम। तत्र पौराणां नमस्काराञ्जलिसहस्राणि प्रतीच्छन् विवेश नगरीम्। दृष्ट्वा च पितरं दूरादेव अवतीर्य वाजिनः मौलिना महीम् अगच्छत्। अथ प्रसारितभुजेन 'एह्येहि' इत्याहूय, पित्रा सुचिरं गाढम्, उपगूढः, करे गृहीत्वा विलासवतीभवनम् अनीयत राज्ञा। तयापि तथैव प्रत्युद्गम्य अभिनन्दितागमनः दिग्विजयसंबद्धाभिरेव कथाभिः कंचित् कालं स्थित्वा, शुकनासं द्रष्टुम् आययौ। तत्रापि अमुनैव क्रमेण सुचिरं स्थित्वा, निवेद्य वैशम्पायनं स्कन्धावारवर्तिनं कुशलिनम् आलोक्य च मनोरमाम् आगत्य विलासवतीभवने एव सर्वाः स्नानादिकाः क्रियाः निरवर्तयत्।**

शब्दार्थ– उषसि = प्रातःकाल। उत्थाय = उठकर। जरद्द्रविडधार्मिकस्य = बूढ़े द्रविड़ धार्मिक का। धनविसरैः = धनराशि से। पूरयित्वा = पूर्ण करके। कृतवसतिः = निवास करने वाला। अल्पैरेवाहोभिः = थोड़े ही दिनों में। आजगाम = आया। पौराणाम् = नगरवासियों के। नमस्कारांजलिसहस्राणि = हजारों नमस्कारों को। प्रतीच्छन् = स्वीकार करते हुए। विवेश = प्रवेश किया। दूरादेव

= दूर ही से। अवतीर्य = उतरकर। वाजिनः = घोड़े से। मौलिना = सिर से। महीम् अगच्छत् = पृथ्वी पर पहुँचा, सिर झुकाकर प्रणाम किया। प्रसारितभजेन = भुजा फैलाकर। ऐह्येहि = आओ-आओ। इत्याहूय = इस प्रकार बुलाकर। पित्रा = पिता द्वारा। सुचिरम् = देर तक। गाढम् उपगूढः = दृढ़ आलिंगन करने के बाद। करे गृहीत्वा = हाथ पकड़कर। अनीयत् = ले जाया गया। राज्ञा = राजा द्वारा। प्रत्युद्गम्य = आगे बढ़कर। अभिनन्दितागमनः आगमन का स्वागत किया है। द्रष्टुम् आययौ = देखने के लिए आया। तत्रापि = वहाँ भी। अमुनैवक्रमेण = उसी क्रम से। सुचिरं स्थित्वा = देर तक रुककर। निवेद्य = निवेदन करके। स्कन्धावारवर्तिनं = शिविर में स्थित। कुशलिनम् = कुशलपूर्वक। आलोक्य = देखकर। आगत्य = आकर। निरवर्तयत् = पूरा किया।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड प्रातःकाल उठकर उस बूढ़े द्रविड़ धार्मिक की अभिलाषा धन से पूरी करके रमणीय स्थानों में ठहरता हुआ थोड़े ही दिनों में उज्जयिनी आ गया, वहाँ हजारों नागरिकों की प्रणामाञ्जलि स्वीकार करते हुए उसने नगर में प्रवेश किया। उसने पिता को देखकर दूर ही से घोड़े से उतरकर मस्तक से भूमि का स्पर्श करते हुए प्रणाम किया। अपनी भुजाएँ फैलाकर पिता ने आओ-आओ कहते हुए उसका दृढ़ आलिंगन किया और हाथ पकड़कर राजा उसे विलासवती के महल में ले गया। उसने भी (विलासवती ने) उसी प्रकार उठकर उसके आगमन का स्वागत किया। देर तक दिग्विजय सम्बन्धी बातें करता हुआ कुमार वहाँ रुका रहा फिर शुकनास को देखने आया। वहाँ भी उसी क्रम से देर तक रुककर वैशम्पायन सेनाशिविर में ही है, ऐसा निवेदन करके मनोरमा का दर्शन किया और विलासवती के महल में आकर स्नानादि की सारी क्रियाएँ पूरी कीं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कृतवसतिः (कृता वसतिः येन सः), निवास करने वाला। अल्पैरेवाहोभिः = (अल्पैः + एव + आहोभिः)।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक बाणभट्ट हैं।

प्रश्न 2. "तत्र पौराणां नमस्काराञ्जलिसहस्राणि प्रतीच्छन् विवेश नगरीम्।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– नगरवासियों के हजारों प्रणामाञ्जलियों को स्वीकार करते हुए उज्जयिनी नगरी में प्रवेश किया।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः जरद्द्रविडधार्मिकस्य मनोरथं कैः अपूरयत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः जरद्द्रविडधार्मिकस्य मनोरथं धनविसरैः अपूरयत्।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः कुत्र आजगाम?

उत्तर– चन्द्रापीडः उज्जयिनीम् आजगाम।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कं द्रष्टुम् आययौ?

उत्तर– चन्द्रापीडः शुकनासं द्रष्टुम् आययौ।

➥ **अपराह्णे निजमेव भवनम् अयासीत्। तत्र च रणरणकखिद्यमानमानसः, कादम्बर्या विना न केवलम् अवन्तिनगरम् सकलमेव महीमण्डलम् शून्यम् अमन्यत। ततः गन्धर्वराजपुत्रीवार्ताश्रवणोत्सुकः पत्रलेखाया आगमनं प्रत्यपालयत्। कतिपयदिवसापगमे च मेघनादः पत्रलेखाम् आदाय आगच्छत्, कृतनमस्कारां च ताम् दूरादेव स्मितेन प्रकाशितप्रीतिः अब्रवीत् "पत्रलेखे! कथय-तत्रभवत्याः महाश्वेतायाश्च देव्या कादम्बर्याः कुशलम्? कुशली वा सकलः परिजनः" इति। सा अब्रवीत्–"देव! यथाज्ञापयसि, भद्राम्। त्वाम् अर्चयति शेखरकृताञ्जलिना कादम्बरी" इत्येवम् उक्तवतीम् पत्रलेखाम् आदाय, मन्दिराभ्यन्तरं विवेश।**

(2018 BD, 19 CZ)

अथवा कतिपयदिवसापगमे .... मन्दिराभ्यन्तरं विवेश। (2019 DD)

शब्दार्थ– अपराह्णे = दोपहर के बाद। अयासीत् = आया। रणरणकखिद्यमानमानसः = चिन्ता से दुःखी हृदय वाला। कादम्बर्या विना = कादम्बरी के बिना। सकलमेव = संपूर्ण। महीमण्डलम् = पृथ्वी को। शून्यम् = सूनसान। अमन्यत = समझ लिया। गन्धर्वराजपुत्रीवार्ताश्रवणोत्सुकः = कादम्बरी का समाचार सुनने के लिए उत्सुक। आगमनम् = आने की। प्रत्यपालयत् = प्रतीक्षा करने लगा। दिवसापगमे = कुछ दिन बीतने पर। आदाय = लेकर। कृतनमस्काराम् = नमस्कार करने वाली। स्मितेन = मुस्कान से। प्रकाशितप्रीतिः = प्रेम प्रकट करते हुए। अब्रवीत् = कहा। कथय = बताओ। तत्र भवत्याः = देवी। परिजनः = सेवकवर्ग, सखियाँ। भद्रम् = कल्याण है। अर्चयति = पूजा करती है। शेखरकृताञ्जलिना = सिर पर अंजलि करके। उक्तवतीम् = कहने वाली की।

आदाय = लेकर। मन्दिराभ्यन्तरम् = मन्दिर के भीतर। विवेश = प्रवेश किया।

हिन्दी अनुवाद– दोपहर के बाद चन्द्रापीड अपने महल में आया। वहाँ कादम्बरी की चिन्ता में खिन्न हृदय चन्द्रापीड को कादम्बरी के बिना केवल उज्जयिनी ही नहीं बल्कि सारी दुनिया शून्य प्रतीत होने लगी। वह कादम्बरी का समाचार सुनने के लिए पत्रलेखा की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ दिन बीतने पर मेघनाद पत्रलेखा को लेकर आया। अपनी मुस्कान द्वारा चन्द्रापीड ने दूर ही से नमस्कार करने वाली पत्रलेखा के प्रति प्रेम प्रकट करते हुए कहा– पत्रलेखा! बताओ देवी कादम्बरी तथा उसके सारे परिजन कुशलपूर्वक हैं न? उसने कहा– जैसा आप कह रहे हैं, सब कुशल हैं। देवी कादम्बरी हाथ जोड़कर सिर पर लगाते हुए तुम्हें नमस्कार करती हैं। इस प्रकार कहती हुई पत्रलेखा को लेकर चन्द्रापीड ने महल में प्रवेश किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– गन्धर्वराजपुत्रीवार्ताश्रवणोत्सुकः = (गन्धर्वराज्ञः पुत्री तस्याः वार्ता तां श्रवणाय उत्सुकः यः सः)।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांशः केन विरचित पुस्तकात् उद्धृतः?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशः बाणभट्टेन विरचित 'चन्द्रापीडकथाः' (उत्तरार्द्ध भाग) उद्धृतः।

प्रश्न 2. 'चन्द्रापीडः कस्य कुशलम् अपृच्छत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः महाश्वेतायाश्च देव्या कादम्बर्याः कुशलम् अपृच्छत्।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः अपराह्णे कुत्र अयासीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः अपराह्णे निजमेव भवनम् अयासीत्।

प्रश्न 4. कया बिना न केवलम् भवन्तिनगरम् सकलमेव महीमण्डलम् शून्यम् अमन्यत्।
उत्तर– कादम्बर्या बिना न केवलम् अवन्तिनगरम् सकलमेव महीमण्डलम् शून्यम् अमन्यत्।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कस्याः आगमनं प्रत्यपालयत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः पत्रलेखायाः आगमनं प्रत्यपालयत्।

प्रश्न 6. पत्रलेखाम् आदाय कः आगच्छत्?
उत्तर– मेघनादः पत्रलेखाम् आदाय आगच्छत्।

प्रश्न 7. चन्द्रापीडः काम् आदाय मन्दिराभ्यान्तरं विवेश?
उत्तर– चन्द्रापीडः पत्रलेखाम् आदाय मन्दिराभ्यान्तरं विवेश।

प्रश्न 8. <u>''त्वाम् अर्चयति शेखरकृताञ्जलिना कादम्बरी'' इत्येवम् उक्तवतीम् पत्रलेखाम् आदाय, मन्दिराभ्यन्तरं विवेश।''</u> रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– अञ्जलि को शिरोभूषण बनाकर अर्थात् हाथ जोड़कर सिर पर रखती हुई देवी कादम्बरी आपकी पूजा (नमस्कार) करती है, इस प्रकार कहती हुई पत्रलेखा को लेकर (चन्द्रापीड) राजमहल के भीतर प्रवेश किये।

प्रश्न 9. ''त्वाम्'' में कौन-सी विभक्ति है?
उत्तर– ''त्वाम्'' में द्वितीया विभक्ति एकवचन है।

प्रश्न 10. ''स्मितेन'' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।
उत्तर– 'स्मितेन' का शाब्दिक अर्थ है- 'मन्दहास्य से' (मुस्कान से)।

➥ **उपविश्य च तत्र अप्राक्षीत्– ''पत्रलेखे! कथय, कथमसि स्थिता? कियन्ति वा दिनानि? कीदृशो वा देवी प्रसादः? का वा गोष्ठ्यः समभवन्? को वा अतिशयेन अस्मान् स्मरति?'' इति। इत्येवं पृष्टा व्यजिज्ञपत्– ''देव! श्रूयताम्– ततः खल्वागते देवे केयूरकेण सह प्रतिनिवृत्त्याहम् तथैव कुसुमशयनसमीपे समुपाविशम्। अतिष्ठं च सुखं नवनवान् अनुभवन्ती देवीप्रसादान्। अपराह्णे च मामेव अवलम्ब्य संचरन्ती प्रमदवनवेदिकाम् अध्यारोहत्। तस्यां च मणिस्थूणावष्टम्भा स्थिता। स्थित्वा च मुहूर्तमिव किमपि व्याहर्तुम् इच्छन्ती निःस्पन्दपक्ष्मणा चक्षुषा मुखं मे सुचिरं व्यलोकयत्। अथ मया विदिताभिप्रायया 'आज्ञापय' इति विज्ञापिते, लज्जाकलितगद्गदा, कथमपि व्याहाराभिमुखम् आत्मानम् अकरोत्। अब्रवीच्च माम्– ''पत्रलेखे दर्शनात् प्रभृति प्रियासि। न जाने केन कारणेन त्वयि विश्वसिति मे हृदयम्। अहं तावत् न संकल्पित पित्रा। न दत्ता मात्रा। नानुमोदिता गुरुभिः। बलात् अवलिप्तेन गुरुर्हणीयतां नीता कुमारेण चन्द्रापीडेन। कथय महतां किमयम् आचारः'' इति।**

शब्दार्थ– अप्राक्षीत् = पूछा। कथमसि स्थिता = कैसे रही हो। कियन्ति = कितने। कीदृशः = कैसी। देवीप्रसादः = देवी की कृपा। गोष्ठ्यः = बातचीत। समभवन् = हुई। अतिशयेन = अधिकता से। अस्मान् = हम लोगों को। स्मरति = याद करती है। पृष्टा = पूछी गई। व्यजिज्ञपत् = निवेदन किया। खल्वागते देवे = आप के आने पर। प्रतिनिवृत्याहम् = मैं लौटकर। कुसुमशयनसमीपे = फूल की सेज के पास। समुपाविशम् = बैठ गई। अतिष्ठन् = रहती हुई। नवनवान् = नए-नए। देवीप्रसादान् = देवी के अनुग्रह को। अनुभवन्ती = अनुभव करती हुई। मामेव अवलम्ब्य = मेरा ही सहारा लेकर। संचरन्ती = घूमती हुई। प्रमदवनवेदिकाम् = प्रमदवन की वेदी पर। अध्यारोहत् = बैठ गई। मणिस्थूणावष्टम्भा = मणि-खम्भे का सहारा लेकर। किमपि व्याहर्तुम् = कुछ कहने के लिए। इच्छन्ती = चाहती हुई। निःस्पन्दपक्ष्मणा चक्षुषा = निर्निमेष नेत्रों से। सुचिरम् = देर तक। व्यलोकयत् = देखा। विदिताभिप्रायः = आशय समझकर। आज्ञापय = आज्ञा दीजिए। विज्ञापिते = कहने पर। लज्जाकलितगद्गदा = लज्जा से गद्गद होने वाली। कथमपि = किसी प्रकार। व्याहाराभिमुखम् = बात करने के लिए तत्पर। अब्रवीच्च = और बोली। प्रियासि = प्रिय हो। त्वयि = तुम पर। विश्वसिति = विश्वास करता है। संकल्पिता = दी गई हूँ। नानुमोदिता = नहीं अनुमोदित की गई हूँ। बलात् = बलपूर्वक। अवलिप्तेन = गर्वित। गुरुर्हणीयताम् = गुरुजनों द्वारा निन्दनीय दशा को। नीता = ले आई गई हूँ। महताम् = बड़े लोगों का। किमयम् = क्या यह। आचारः = आचरण।

हिन्दी अनुवाद– वहाँ बैठकर चन्द्रापीड ने पूछा– पत्रलेखा! बताओ, वहाँ किस प्रकार रही? कितने दिन रही? तुम्हारे ऊपर देवी की कैसी कृपा रही? कौन-कौन-सी बातें हुईं। मुझे कौन अधिक याद करता है। उसके ऐसा पूछने पर पत्रलेखा ने निवेदन किया– राजकुमार! सुनिए, आपके चले आने पर मैं केयूरक के साथ लौटकर उसी प्रकार फूल की शैय्या के पास बैठ गई। वहाँ रहते हुए मैंने देवी की नई-नई कृपाओं का अनुभव किया। दोपहर के बाद मेरा ही सहारा लेकर घूमती हुई कादम्बरी प्रमदवन की वेदी पर चढ़ गयीं और वहीं मणिखम्भे का सहारा लेकर बैठ गयीं। थोड़ी देर बैठने के बाद कुछ कहने की इच्छा से वह मेरे मुख की ओर देर तक एकटक देखती रहीं। मैंने उनका आशय समझकर कहा– आज्ञा दीजिए। मेरे ऐसा कहने पर लज्जा के कारण गद्गद होकर किसी प्रकार बातचीत के लिए उन्मुख हुईं और मुझसे बोलीं– पत्रलेखे, मैंने जब से तुम्हें देखा है तभी से तुम मेरे लिए प्रिय बन गई हो। न जाने क्यों मेरे हृदय को तुम पर अधिक विश्वास है। मुझे न तो पिता-माता ने संकल्प किया, न गुरुजनों ने उसका अनुमोदन ही किया। किन्तु राजकुमार ने गर्वित होकर बलपूर्वक मुझे गुरुजनों द्वारा निन्दनीय दशा में पहुँचा दिया। बताओ क्या महापुरुषों का यही आचरण है?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कथमसि = कथम् + असि। खल्वागते = खलु + आगते। अध्यारोहत = अधि + आरोहत्। विदिताभिप्रायः = विदितः अभिप्रायः यया तया।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'अतिष्ठं च सुखं नवनवान् अनुभवन्ती देवीप्रसादान्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– देवी (कादम्बरी) नये-नये अनुग्रहों का अनुभव करती हुई सुखपूर्वक वहाँ रही।

प्रश्न 3. कः अप्राक्षीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः अप्राक्षीत्।

प्रश्न 4. का प्रमदवनवेदिकाम् अध्यारोहत्?

उत्तर– कादम्बरी प्रमदवनवेदिकाम् अध्यारोहत्।

प्रश्न 5. लज्जाकलितगद्गदा का आसीत्?

उत्तर– कादम्बरी लज्जाकलितगद्गदा आसीत्।

➥ **अहं तु अविदितवृत्तान्ततया भीतेव सविषादं विज्ञापितवती– ''देवि! श्रोतुम् इच्छामि। आज्ञापय किं कृतम् देवेन चन्द्रापीडेन? केन वा खलु अविनयेन खेदितम् देव्याः कुमुदकोमलं मनः?'' इत्येवम् अभिहिता पुनरवदत्– ''आवेदयामि ते। अवहिता शृणु। स्वप्नेषु प्रतिदिवसम् आगत्यागत्य मनोहरान् मदनलेखान् प्रेषयति। उपवनेषु एकाकिन्याः मे परिष्वङ्गम् आचरति। शीतलैः मुखमारुतैः कपोलौ वीजयति। मन्मथमूढमानसश्च, कथय,**

हे पत्रलेखे! केन प्रकारेण निषिध्यते!'' इति।

शब्दार्थ– अविदितवृत्तान्ततया = अनजान होने के कारण। भीतेव = डरी हुई-सी। सविषादं = दुःख के साथ। विज्ञापितवती = निवेदन किया। श्रोतुम् इच्छामि = सुनना चाहती हूँ। आज्ञापय = बताइए। किं कृतम् = क्या किया। अविनयेन = उद्दण्डता से। खेदितम् = दुःखी किया गया। कुमुदकोमलम् = कुमुद पुष्प के समान कोमल। अभिहिता = कही गई। पुनरवदत् = फिर कहा। अवहिता शृणु = सावधान होकर सुनो। आवेदयामि = बताती हूँ। स्वप्नेषु = सपनों में। आगत्यागत्य = आ-आकर। मदनलेखान् = काम सम्बन्धी लेखों को। प्रेषयति = भेजते हैं। एकाकिन्या = अकेली का। परिष्वङ्गम् आचरति = आलिंगन करते हैं। शीतलैः मुखमारुतैः = शीतल साँसों से। कपोलौ वीजयति = कपोलों पर हवा करते हैं। मन्मथमूढमानसः = कामवासना से मूढ़ मनवाले। निषिध्यते = रोका जाये।

हिन्दी अनुवाद– मैंने अनजान-सी डरी हुई बनकर दुःख के साथ कहा– देवी! बताइए, राजकुमार ने क्या किया है। मैं सुनना चाहती हूँ। उनकी किस धृष्टता ने आपके हृदय को दुःखी बना दिया है। मेरे ऐसा कहने पर वह फिर बोलीं– मैं तुम्हें बताती हूँ– ध्यान से सुनो। वह सपनों में प्रतिदिन आ-आकर कामपूर्ण पत्र भेजते हैं, उपवन में मुझ अकेली का आलिंगन करते हैं। मेरे कपोलों पर अपने मुख की ठंडी साँसों के फूँक मारते हैं। पत्रलेखे! कामवासना से मूढ़ बने हुए उनके मन को मैं कैसे मना करूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अविदितवृत्तान्ततया = अविदितः वृत्तान्त तस्य भाव तया। आगत्यागत्य = आगत्या + आगत्य। मन्मथमूढमानसः = मन्मथेन मूढः मानसः यस्य सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'केन वा खलु अविनयेन खेदितम् देव्याः कुमुदकोमलं मनः?' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– किस अविनम्रता (उदण्डता) से कुमुद पुष्प के समान कोमल देवी (कादम्बरी) के मन को खिन्न कर डाला।

प्रश्न 3. का अविदितवृत्तान्ततया भीतेव सविषादं विज्ञापितवती?

उत्तर– पत्रलेखा अविदितवृत्तान्ततया भीतेव सविषादं विज्ञापितवती।

प्रश्न 4. कस्याः कुमुदकोमलं मनः खेदितम्?

उत्तर– देव्याः कादम्बर्याः कुमुदकोमलं मनः खेदितम्।

प्रश्न 5. कः स्वप्नेषु प्रतिदिवसम् आगत्य मनोहरान् मदलेखान् प्रेषयति?

उत्तर– चन्द्रापीडः स्वप्नेषु प्रतिदिवसम् आगत्य मनोहरम् मदलेखान् प्रेषयति।

➥ **ताम् एवं वादिनीम् आकर्ण्य, प्रहर्षनिर्भरा, अहो चन्द्रपीडम् उद्दिश्य आकृष्टा खलु इयं मकरकेतुना इति विचिन्त्य विहस्य अब्रवम्– ''देवि! यद्येवम् उत्सृज कोपम्। प्रसीद। नार्हसि कामापराधैः देवं दूषयितुम्। अनाराधितप्रसन्नेन कुसुमशरेण भगवता ते वरः दत्तः। का चात्र गुरुजनवक्तव्यता! कति वा कथयामि ते, याः स्वयं वृतवत्यः पतीन्। यदि च नैवम् अनर्थक एव तर्हि धर्मशास्त्रोपदिष्टः स्वयंवरविधिः तत् प्रसीद। संदिश प्रेषय माम्। यामि। आनयामि ते हृदयदयितम्'' इत्येवं वादिनीं माम् पुनरवदत्– ''पत्रलेखे! हृदयात् अव्यतिरिक्तासि। जानामि ते गरीयसीं प्रीतिम्। न खलु प्रियम् इति ब्रवीमि। त्वामेव पश्यन्ती, संधारयामि जीवितम्। तथापि यद्ययं ते ग्रहः, तत् साधय समीहितम्'' इत्यभिधाय मां व्यसर्जयत्।'' इति। चन्द्रापीडस्तु तथा विज्ञप्तः पत्रलेखया धीरप्रकतिरपि नितरां पर्याकुलोऽभवत्।**

देवि! यद्येवम् .... हृदयदयितम्। (2020 ZO)

शब्दार्थ– एवं = इस प्रकार। वादिनीम् = कहनेवाली। आकर्ण्य = सुनकर। प्रहर्षनिर्भरा = आनन्दित होकर। उद्दिश्य = लक्ष्य करके। आकृष्टा = आकर्षित कर दी गई है। मकरकेतुना = कामदेव द्वारा। विचिन्त्य = विचार करके। विहस्य = हँसकर। अब्रवम् = कहा। यद्येवम् = यदि ऐसा है। उत्सृज कोपम् = कोध छोड़िये। नार्हसि = उचित नहीं, कामापराधैः = काम के दोषों से। देवं दूषयितुम् = देव को दोष देना। प्रसीद = प्रसन्न हो जाओ। अनाराधितप्रसन्नेन = बिना आराधना किए ही प्रसन्न होने वाले। कुसुमशरेण = कामदेव द्वारा। वरःदत्तः = वरदान दिया है। गुरुजनवक्तव्यता = गुरुजनों के कहने की बात। कति वा = कितनी। वृतवत्यः वरण किया है। पतीन् = पतियों को। यदि च नैवम् = यदि ऐसा नहीं तो। धर्मशास्त्रोपदिष्टः = धर्मशास्त्रों में बताया गया। स्वयंवरविधिः = स्वयम्बर का नियम। अनर्थक एव = व्यर्थ है। संदिश = संदेश दो। प्रेषय माम् = मुझे भेजो। यामि = जाती हूँ।

आनयामि = ले आती हूँ। हृदयदयितम् = प्राणप्रिय को। वादिनीम् = कहने वाली की। पुनरवदत् = फिर कहा। हृदयात् = हृदय से। अव्यतिरिक्तासि = अभिन्न हो। गरीयसीम् = बहुत भारी। न खलु प्रियम् = यह अच्छा नहीं है। इति ब्रवीमि = यही कहती हूँ। पश्यन्ती = देखती हुई। धरयामि जीवितम् = प्राण धारण किये हूँ। ग्रहः = आग्रह। साधय समीहितम् = इच्छा पूरी करो। व्यसर्जयत् = मुझे विदा किया। विज्ञप्तः = कहे जाने पर। धीरप्रकृतिरपि = स्वभावतः धैर्यशाली होते हुए भी। नितराम् = अत्यन्त। पर्याकुलः = व्याकुल।

हिन्दी अनुवाद– कादम्बरी की ऐसी बातें सुनकर मैं अत्यधिक हर्षित हो गई और मैंने समझ लिया कि कामदेव ने इसे चन्द्रापीड की ओर आकर्षित कर दिया है। ऐसा सोचकर मैंने कहा– देवि, यदि ऐसी बात है तो क्रोध छोड़िए। कामदेव के दोषों के लिए राजकुमार को दोष देना उचित नहीं है। बिना आराधना के ही प्रसन्न होने वाले कामदेव ने तुम्हें यह वरदान दिया है। इसमें गुरुजनों के कहने की क्या बात है? मैं कितनी कुमारियों को बताऊँ जिन्होंने स्वयं अपने पतियों को वरण किया है। यदि ऐसा नहीं है तो धर्मशास्त्रों में बताई गई स्वयंवर की विधि ही व्यर्थ है। इसलिए प्रसन्न हो जाइए। मुझे संदेश देकर भेजिए। मैं जाकर तुम्हारे प्राणप्रिय को ले आती हूँ। इस प्रकार कहने वाली मुझसे उसने फिर कहा– ''पत्रलेखे, तुम मेरे हृदय से अभिन्न हो। तुम्हारे गहरे प्रेम को जानती हूँ। मैं इतना ही कहती हूँ कि तुम्हें भेजना अच्छा नहीं है क्योंकि तुम्हीं को देखकर मैं अपना प्राण धारण किये हूँ। फिर भी तुम्हारा आग्रह है तो जाओ अपनी इच्छा पूरी करो। ऐसा कहकर मुझे विदा किया। पत्रलेखा के ऐसा कहने पर चन्द्रापीड स्वभाव से धैर्यशाली होते हुए भी अत्यन्त व्यग्र हो गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– यद्येवम् = यदि + एवम्। नाहसि = न + अर्हसि। नैवम् = न + एवम्। पुनरवदत् = पुनः + अवदत्। धीरप्रकृतिरपि = धीरप्रकृतिः + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक बाणभट्ट हैं।
प्रश्न 2. ''अनाराधितप्रसन्नेन कुसुमशरेण भगवता ते वरः दत्तः।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– आराधना के बिना ही प्रसन्न भगवान कामदेव ने आपको वरदान दिया है।
प्रश्न 3. कादम्बर्याः वाणीम् आकर्ण्य, प्रहर्षनिर्भरा का आसीत्?
उत्तर– पत्रलेखा कादम्बर्याः वाणीम् आकर्ण्य, प्रहर्षनिर्भरा आसीत्।
प्रश्न 4. केन वरः दत्तः?
उत्तर– कुसुमशरेण भगवता वरः दत्तः।
प्रश्न 5. का हृदयात् अव्यतिरिक्तासि?
उत्तर– पत्रलेखा हृदयात् अव्यतिरिक्तासि।
प्रश्न 6. 'नार्हसि कामापराधैः देवं दूषयितुं' यहाँ 'देवं' पद किसको सूचित है?
उत्तर– 'देव' पद राजकुमार चन्द्रापीड को सूचित है।
प्रश्न 7. 'स्वयंवरविधिः कुत्र उपदिष्टः?
उत्तर– स्वयंवरविधिः धर्मशास्त्रोप दिष्टः।

➥ **अत्रान्तरे प्रविश्य प्रतीहारी व्यज्ञापयत्– युवराज! देवी विलासवती समादिशति, ''श्रुतं मया पृष्ठतः स्थिता पत्रलेखा पुनः परागता'' इति। तवापि कापि महती वेला वर्तते दृष्टस्य, तत् अनया सहित एव आगच्छ'' इति। चन्द्रापीडस्तु तत् आकर्ण्य, चेतस्यकरोत्– 'अहो संदेहदोलाधिरूढं मे जीवितम्। एवम् अम्बा निमेषमपि माम् अपश्यन्तो दुःखमास्ते। एवम् आज्ञापितम् आगमनाय मे निष्कारणवत्सलया देव्या कादम्बर्या। बलवान् जननीस्नेहः। गरीयान् गन्धर्वराजसुतानुरागः। दुस्त्यजा जन्मभूमिः। परिग्राह्या कादम्बरी। कालातिपातासहं मे मनः। विप्रकृष्टमन्तरं हेमकूटविन्ध्याचलयोः इति इत्येवं चिन्तयन्नेव प्रतीहार्या उपदिश्यमानमार्गः जननीसमीपम् आगत्। तत्रैव च सोत्कण्ठं दिवसम् अनयत्।**

शब्दार्थ– अत्रान्तरे = इसी बीच। प्रविश्य = प्रवेश करके। व्यज्ञापयत् = निवेदन किया। समादिशति = आज्ञा देती है। श्रुतं मया = मैंने सुना है। पृष्ठतः स्थिता = पीछे ठहरी हुई। परागता = लौट आई है। तवापि = तुम्हें भी। कापि महती बेला = बहुत देर। अनया सहितः = इसके साथ। आगच्छ = आओ। चेतस्यकरोत् = मन में विचार किया। सन्देहदोलाधिरूढम् = सन्देह- रूपी झूले पर सवार। जीवितम् = जीवन। अम्बा = माता। निमेषमपि = क्षण मात्र भी। माम् अपश्यन्ती = मुझे बिना देखे। दुखमास्ते =

दुःखी हो जाती हैं। आज्ञापितम् = आदेश दिया है। आगमनाय = आने के लिए। निष्कारणवत्सलया = निःस्वार्थ अनुराग करने वाली। जननीस्नेहः = माता का प्रेम। गरीयान् = भारी। गन्धर्वराजसुतानुरागः = गन्धर्वराजपुत्री कादम्बरी का प्रेम। दुस्त्याजा = कठिनाई से छोड़ने योग्य। परिग्राह्या = ग्रहण करने योग्य। कालातिपातासहम् = विलम्ब को न सहन करने वाला। विप्रकृष्टमन्तरम् = बहुत अधिक दूरी। चिन्तयन्नेव = सोचता हुआ। उपदिश्यमानमार्गः = बताया गया है मार्ग जिसका वह। अगात् = आया। सोत्कण्ठम् = उत्सुकता के साथ। दिवसम् अनयत् = दिन बिताया।

हिन्दी अनुवाद– इसी बीच प्रतीहारी ने भीतर आकर निवेदन किया कि युवराज! देवी विलासवती ने आज्ञा दी है कि "मैंने सुना है कि पीछे रुक जाने वाली पत्रलेखा अब आ गई है, तुम्हें भी देखे बहुत समय हो गया है। इसलिए उसके साथ ही आ जाओ।" चन्द्रापीड ने यह सुनकर विचार किया– मेरा मन सन्देह के झूले पर झूल रहा है, माताजी एक क्षण भी मुझे देखे बिना दुःखी हो जाती हैं, अकारण अनुराग रखने वाली कादम्बरी ने मुझे आने का सन्देश दिया है। माता का स्नेह बलवान् होता है। देवी कादम्बरी का अनुराग भी महान् है। जन्मभूमि को छोड़ना कठिन है। कादम्बरी को ग्रहण करना अनिवार्य है। हेमकूट और विन्ध्याचल की दूरी भी बहुत है। इस प्रकार विचार करता हुआ चन्द्रापीड प्रतीहारी द्वारा बताये गये मार्ग से माता के पास आया। वहाँ पर उसने बड़ी उत्कण्ठा से दिन व्यतीत किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अत्रान्तरे = अत्र + अन्तरे। तवापि = तव + अपि। निमेषमपि = निमेषम् + अपि। चेतस्यकरोत् = (चेतसि + अकरोत्)। कालातिपातासहम् = काल + अतिपात + असहम्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'बलवान् जननीस्नेहः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– माता का स्नेह बलवान होता है।

प्रश्न 3. अत्रान्तरे प्रविश्य का व्यज्ञापयत्?

उत्तर– अत्रान्तरे प्रविश्य प्रतिहारी व्यज्ञापयत्।

प्रश्न 4. "श्रुतं मया पृष्ठतः स्थिता पत्रलेखा पुनः परागता" इति। कस्याः उक्तिः?

उत्तर– विलासवत्याः उक्तिः।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कया उपदिश्यमानमार्गः जननीसमीपम् आगत्?

उत्तर– प्रतिहार्या उपदिश्यमानमार्गः जननीसमीपम् आगत्।

➥ **एवमेव रात्रौ दिवा च अकृतनिर्वृत्तिः आयास्यमानोऽपि मनसिजेन मर्यादावसात् आत्मानं स्तम्भयन्, कथं कथमपि कतिपयेष्वतिक्रान्तेषु, एकदा निर्गत्य बहिर्नगर्याः, शिप्रातटानि अनुसरन्, अतित्वरया आगच्छतः दूरादेव अतिबहून् तुरङ्गमान् अद्राक्षीत्। दृष्ट्वा च समुत्पन्नकुतूहलः तेषां परिज्ञानाय पुरुषमन्यतमं प्राहिणोत्। आत्मनापि ऊरुदध्नेन पयसा उत्तीर्य शिप्राम् भगवतः कार्तिकेयस्य आयतने तत्प्रतिवार्ताम् प्रतिपालयन् अतिष्ठत्।**

शब्दार्थ– एवमेव = इसी प्रकार। रात्रौ दिवा = रात दिन। अकृतनिर्वृत्तिः = शान्ति न प्राप्त करता हुआ, अशान्त चित्त। आयास्यमानोऽपि = दुःखी किये जाने पर भी। मनसिजेन = काम के द्वारा। मर्यादावसात् = मर्यादा के कारण। आत्मानं = अपने को। स्तम्भयन् = रोकता हुआ। कतिपयेषु = कुछ। अतिक्रान्तेषु = बीतने पर। एकदा = एक बार। निर्गत्य = निकलकर। बहिर्नगर्याः = नगरी के बाहर। शिप्रातटानि = क्षिप्रा नदी के किनारों का। अनुसरन् = अनुसरण करता हुआ। अतित्वरया = बड़ी शीघ्रता से, बड़े वेग से। आगच्छतः = आते हुए। दूरादेव = दूर ही से। समुत्पन्नकुतूहलः = उत्सुकता आने से। परिज्ञानाय = जानने के लिए। अन्यतमम् = दूसरे। प्राहिणोत् = भेजा। ऊरुदध्नेन = जाँघ तक गहरे। पयसा = जल से। उत्तीर्य = पार करके। आयतने = मन्दिर में। तत्प्रतिवार्ताम् = उसके उत्तर की। प्रतिपालयन् = प्रतीक्षा करता हुआ। अतिष्ठत् = बैठा रहा।

हिन्दी अनुवाद– इसी प्रकार रात-दिन अशान्त हृदय तथा काम द्वारा पीड़ित चन्द्रापीड अपने आपको मर्यादा के कारण रोकता हुआ कुछ दिन बीतने पर एक बार शिप्रा के किनारे पर घूम रहा था कि उसी समय उसने अत्यन्त वेग से आते हुए बहुत से घोड़ों को देखा। उसे देखकर उत्सुक होकर उसने उन्हें जानने के लिए एक दूसरे पुरुष को भेजा। वह स्वयं जाँघ तक गहरे जल को पार करके कार्तिकेय के मन्दिर में ठहरकर उनके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– एवमेव = एवम् + एव आयास्यमानोऽपि = आयास्मानः + अपि। बहिर्नगर्याः = बहिः + नगर्याः। समुत्पन्नकुतूहलः = समुत्पन्नः कुतूहलः यस्मिन् सः।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और लेखक का नाम 'बाणभट्ट' है।
प्रश्न 2. 'अतित्वरया आगच्छतः दूरादेव अतिबहून् तुरङ्गमान् अद्राक्षीत्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– अत्यन्त तीव्रगति से दूर से आते हुए बहुत से घोड़ों को देखा।
प्रश्न 3. कः शिप्रातटानि अनुसरति।
उत्तर– चन्द्रापीडः शिप्रातटानि अनुसरति।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडः परिज्ञानाय कं प्राहिणोत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः परिज्ञानाय पुरुषमन्यतमं प्राहिणोत्।
प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कुतः अतिष्ठत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः भगवान कार्तिकेयस्य आयतने अतिष्ठत्।

➥ **तत्रस्थ एव दूरादेव अवतीर्य तुरङ्गमात् आपतन्तं विषादशून्येन मुखेन कष्टाम् अवस्थाम् अनक्षरम् आवेदयन्तम् केयूरकम् अद्राक्षीत्। दृष्ट्वा च दर्शितप्रीतिः 'एहि एहि' इति आहूय दूरप्रसारिताभ्यां दोर्भ्यां पर्यष्वजत तम्। अपसृत्य पुनः कृतनमस्कारे तस्मिन्, तेन सह स्वभवनम् अयासीत्। तत्र निर्वर्तिताशेषदिवसकरणीयः पत्रलेखाद्वितीयः केयूरकम् आहूय अब्रवीत्– ''केयूरक! कथय, देव्याः कादम्बर्याः महाश्वेतायाश्च सन्देशम्'' इति।** (2020 ZR)

शब्दार्थ– तत्रस्थ एव = वहीं स्थित। अवतीर्य = उतरकर। तुरङ्गमात् = घोड़े से। आपतन्तम् = आते हुए। विषादशून्येन = दुःखपूर्ण। अनक्षरम् = बिना बोले। कष्टाम् अवस्थाम् = कष्ट की दशा को। आहूय = कहकर। दूरप्रसारिताभ्याम् = दूर ही से फैलायी गई। दोर्भ्याम् = भुजाओं से। पर्यष्वजत् = आलिंगन किया। उपसृत्य = पास जाकर। कृतनमस्कारे = नमस्कार करने पर। अयासीत् = आया। निर्वर्तिताशेषदिवसकरणीयः = दिन के सभी कृत्यों को पूरा करके। पत्रलेखा द्वितीयः = पत्रलेखा के साथ। आहूय = बुलाकर। कथय = कहो।

हिन्दी अनुवाद– वहीं स्थित चन्द्रापीड ने दूर ही से घोड़े से उतरकर आते हुए केयूरक को देखा जो बिना बोले ही अपने उदास मुख से कष्ट की दशा बता रहा था। उसे देखकर प्रेम प्रकट करते हुए चन्द्रापीड ने आओ आओ कहते हुए दूर ही से फैली हुई अपनी बाहों में लेकर उसका आलिंगन किया और उसके समीप आकर फिर नमस्कार करने पर वह उसके साथ अपने महल में आया। वहीं पत्रलेखा के साथ दिन के सभी कृत्यों को पूरा करके चन्द्रापीड ने केयूरक को बुलाकर कहा– केयूरक! बताओ देवी कादम्बरी और महाश्वेता ने क्या संदेश दिया है?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– निर्वर्तिताशेषदिवसकरणीयः = निर्वर्तित + अशेषदिवसकरणीयः।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
अथवा अस्य गद्यांशस्य लेखकः कः?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. 'निर्वर्तिताशेषदिवसकरणीयः पत्रलेखाद्वितीयः केयूरकम् आहूय अब्रवीत्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– सभी कृत्यों को सम्पन्न करके पत्रलेखा के साथ केयूरक को बुलाकर बोला।
प्रश्न 3. चन्द्रापीडः तुरङ्मात् अवतीर्य आपतन्तं कम् अद्राक्षीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः तुरङ्मात् अवतीर्य आपतन्तं केयूरकम् अद्राक्षीत्।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडः केन सह स्वभवनम् अयासीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः केयूरकेन सह स्वभवनम् अयासीत्।
प्रश्न 5. चन्द्रापीडः केयूरकम् आहूय किम् अब्रवीत्?
उत्तर– केयूरक! कथय, कादम्बर्याः महाश्वेतायाश्च संदेशम्।''

➥ **केयूरकः पुरः सप्रश्रयम् उपविश्य अब्रवीत्– ''देव! किं विज्ञापयामि। नास्ति मयि संदेशलवोऽपि देव्याः कादम्बर्याः महाश्वेतायाः वा। यदैव पत्रलेखां मेघनादाय समर्प्य, प्रतिनिवृत्य मया अयम् देवस्य उज्जयिनीगमनवृत्तान्तः निवेदितः तदैव ऊर्ध्वम् विलोक्य, दीर्घम् उष्णं च निःश्वस्य सनिर्वेदम् उत्थाय महाश्वेता पुनः तपसे स्वमेव आश्रमम् अभजत। देव्यपि कादम्बरी झटिति द्रुघणेनेव अभिहता निवारिताशेषपरिजनप्रवेशा, शयनीये निपत्य, उत्तरीयवाससा उत्तमाङ्गम् अवगुण्ठ्य, सकलमेव तं दिवसम् अस्थात्।''**

शब्दार्थ– पुरः = सामने। सप्रश्रयम् = विनम्रता के साथ। उपविश्य = बैठकर। अब्रवीत् = कहा। विज्ञापयामि = कहता हूँ। संदेशलवोऽपि = थोड़ा भी सन्देश। समर्प्य = सौंपकर। प्रतिनिवृत्य = लौटकर। उज्जयिनीगमनवृत्तान्तः = उज्जयिनी जाने का समाचार। निवेदतिः = सुनाया। ऊर्ध्वम् विलोक्य = ऊपर देखकर। दीर्घम् उष्णं च = लम्बी और गरम। निःश्वस्य = साँस लेकर। सनिर्वेदम् = उदासीनता के साथ। उत्थाय = उठकर। तपसे = तप के लिए। अभजत = आ गई। झटिति = तुरन्त। द्रुघणेनेव = हथौड़े से। अभिहता = मारी हुई-सी। निवारिताशेषपरिजनप्रवेशा = सभीपरिजनों का प्रवेश रोक देने वाली। शयनीये = विस्तर पर, निपत्य = गिरकर उत्तरीयवाससा = आँचल से। उत्तमांगम् = सिर को। अवगुण्ठ्य = लपेटकर। अस्थात् = पड़ी रही।

हिन्दी अनुवाद– केयूरक ने नम्रता के साथ सामने बैठकर कहा, '' देव क्या कहूँ? देवी महाश्वेता तथा कादम्बरी का कुछ भी सन्देश मेरे पास नहीं है। जब पत्रलेखा को मेघनाद को सौंपकर लौटकर मैंने आपके उज्जयिनी आने का समाचार सुनाया तो ऊपर देखकर तथा लम्बी और गरम साँस लेकर अत्यन्त उदासीनता के साथ उठकर महाश्वेता फिर तप करने के लिए अपने आश्रम में चली गयीं। देवी कादम्बरी भी तुरन्त हथौड़े की चोट खाई हुई-सी सभी परिजनों का भीतर आना रोककर बिस्तर पर गिर पड़ीं और आँचल से सिर लपेट कर सारा दिन पड़ी रहीं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– संदेशलवोऽपि = संदेशलवः + अपि। द्रुघणेनेव = द्रुघणेन + एव। निवारिताशेषपरिजनप्रवेशा = निवारितः अशेषजनानाम् प्रवेशः येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'नास्ति मयि संदेशलवोऽपि देव्याः कादम्बर्याः महाश्वेतायाः वा।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– देवी कादम्बरी अथवा महाश्वेता का कुछ भी संदेश मेरे पास नहीं है।

प्रश्न 3. कः अब्रवीत् – नास्ति मयि संदेशलवोऽपि देव्याः कादम्बर्याः महाश्वेतायाः वा?
उत्तर– केयूरकः अब्रवीत् – नास्ति मयि संदेशलवोऽपि देव्याः कादम्बर्याः महाश्वेतायाः वा।

प्रश्न 4. पत्रलेखां कस्मै समर्पिता?
उत्तर– पत्रलेखां मेघनादाय समर्पिता।

प्रश्न 5. महाश्वेता पुनः कुत्र अगच्छत्?
उत्तर– महाश्वेता पुनः आश्रमम् अगच्छत्।

➥ **परेद्युश्च प्रातरेव उपसृतं माम् ''ध्रियमाणेष्वेव भवत्सु अहम् ईदृशीम् अवस्थाम् अनुभवामि'' इति उपालंभमानेव पर्याकुलया दृष्ट्या सुचिरम् विलोकितवती। तथा दृष्टश्च तया दुःखितया देव्या, आदिष्टमेव गमनाय आत्मानं मन्यमानः, अहम् अनिवेद्यैव देव्यै देवपादमूलम् उपागतोऽस्मि। देव! भवतः प्रथमागमनसमय एव आरूढवान् मकरकेतनः ताम्। इदानीं तु महान्तम् आयासम् अनुभवति त्वदर्थे। कादम्बरी इदानीं तु महान्तम् आयासम् अनुभवति त्वदर्थे कादम्बरी। तत् धैर्यम् अवलम्ब्य, गमनाय यत्नः क्रियताम्'' इति। इत्यावेदयन्तं केयूरकं चन्द्रापीडः प्रत्युवाच– ''केयूरक, सर्वमेवैतत् पत्रलेखया मय्याख्यातम्। अधुना दिवसक्रमगम्ये अध्वनि किं करोमि। तथापि देवीं संभावयितुं प्रयतामहे'' इति वदन् आदिदेश विश्रान्तये केयूरकम्।**

शब्दार्थ– परेद्युः = दूसरे दिन। उपसृतं = पास गए हुए। माम् = मुझको। ध्रियमाणेसु = जीवित रहते हुए। भवत्सु = आप लोगों के। ईदृशीम् = ऐसी। अनुभवानि = अनुभव करती हूँ। उपालम्भमानेव = उलाहना देती हुई सी। पर्याकुलया = व्याकुल। दृष्ट्या = दृष्टि से। सुचिरम् = देर तक। विलोकितवती = देखा। तथा दृष्टश्च = उस प्रकार देखते हुए। आदिष्टमेव = आदेश दिया है। गमनाय = जाने के लिए। मन्यमानः = मानते हुए। अनिवेद्यैव = बिना निवेदन किए ही, बिना बताये ही। देवपादमूलम् = आपके

चरणों के पास। उपगातोऽस्मि = आया हूँ। प्रथमागमनसमय एव = प्रथम आने के समय ही। आरूढवान् = सवार हो गया था। मकरकेतनः = कामदेव। इदानीं = इस समय। महान्तम् = बहुत कष्ट। अनुभवति = सह रही हैं। त्वदर्थे = तुम्हारे लिए। अवलम्ब्य = धारण करके। इत्यावेदन्तम् = ऐसा कहने वाले। मय्याख्यातम् = मुझे बताया है। दिवसक्रमगम्ये = कई दिनों में चलने योग्य। अध्वनि = मार्ग होने पर। संभावयितुम् = सम्मान करने के लिए। प्रयतामहे = प्रयत्न करूँगा। वदन् = कहते हुए। आदिदेश = आदेश दिया। विश्रान्तये = विश्राम करने के लिए।

हिन्दी अनुवाद– दूसरे दिन प्रातःकाल जब मैं उसके पास गया तब उसने कहा कि आप लोगों के जीवित रहते मैं इस दशा में पड़ी हूँ? इस प्रकार उलाहना-सा देते हुए उसने व्याकुल दृष्टि से मेरी ओर देखा। इस प्रकार दुःखी दृष्टि से देखकर उसने मुझे आपके पास आने का आदेश दिया है। ऐसा ही समझकर मैं उसे बिना बताए आप के चरणों में आया हूँ। देव! आपके प्रथम आगमन के समय ही उस पर काम सवार हो गया था। इस समय तो वह आपके लिए बहुत कष्ट का अनुभव कर रही है। अतः धैर्य धारण करके वहाँ चलने का प्रयत्न कीजिए। इस प्रकार कहने वाले केयूरक से चन्द्रापीड ने कहा–केयूरक! पत्रलेखा ने यह सभी मुझे बताया है। कई दिनों में तै होने वाले मार्ग के कारण इस समय मैं क्या करूँ? फिर भी देवी को सम्मानित करने का प्रयत्न करूँगा। इस प्रकार कहते हुए चन्द्रापीड ने केयूरक को विश्राम करने का आदेश दिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– उपालम्भमानेव = उपालम्भमान + एव। दृष्टश्च = दृष्टः + च। आदिष्टमेव = आदिष्टम् + एव। अनिवेद्यैव = अनिवेद्य + एव। उपगतोऽस्मि = उपगतः + अस्मि त्वदर्थे = त्वत् + अर्थे।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'तत् धैर्यम् अवलम्ब्य, गमनाय यत्नः क्रियताम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– अतएव धैर्य धारण करके वहाँ चलने का प्रयत्न करें।

प्रश्न 3. केयूरकः परेद्युः कस्याः समीपम् अगच्छत्?

उत्तर– केयूरकः परेद्युः कादम्बर्याः समीपम् अगच्छत्।

प्रश्न 4. "ध्रियमाणेष्वेव भवत्सु अहम् ईदृशीम् अवस्थाम् अनुभवामि" कस्या उक्तिः?

उत्तर– कादम्बर्याः उक्तिः।

प्रश्न 5. उपालंभमानेव पर्याकुलया दृष्ट्या सुचिरम् विलोकितवती का?

उत्तर– कादम्बरी पर्याकुलया दृष्ट्या सुचिरम् विलोकितवती।

➥ **अत्रान्तरे भगवान् तिग्मदीधितिः संजहार करसहस्त्रम्। उदयगिरिशिखरम् आरूढे भगवति चन्द्रमसि, गमनम् आत्मनः समुद्दिश्य एवं चिन्तयामास– 'तातेन खलु स्वभुजात् अवरोप्य मय्येव राज्यभारः समारोपितः। तम् अनाख्याय पदमपि निर्गन्तुं न शक्यते। स्कन्धावारोऽपि मे अद्यापि न परापतति। किं कारणं व्यपदिश्य आत्मानं मोचयामि। कथं वा मुञ्चतु मां तातः अम्बा वा। सुहृत्साध्येऽस्मिन् अर्थे किं करोमि एकाकी। वैशम्पायनोऽपि असंनिहितः पार्श्वे मे।' इत्येवं चिन्तयत एवास्य सा क्षपा क्षयम् अगात्।**

अथवा उदयगिरिशिखरम् आरूढे .... क्षयम् अगात्। (2019 DE)

शब्दार्थ– तिग्मदीधितिः = सूर्य ने। संजहार = समेट लिया। करसहस्त्रम् = हजारों किरणों को। उदयगिरिशिखरम् = उदयाचल पर। आरूढे = स्थित होने पर। गमनम् = जाने को। आत्मनः = अपने। समुद्दिश्य = लक्ष्य करके। चिन्तयामास = विचार किया। तातेन = पिता द्वारा। स्वभुजात् = अपनी भुजाओं से। अवरोप्य = उतार कर। मय्येव = मुझ पर ही। राज्यभारः = राज्य का भार। समारोपितः = रख दिया है। अनाख्याय = बिना कहे। पदमपि = एक कदम भी। निर्गन्तुं न शक्यते = निकल नहीं सकता। स्कन्धावारोऽपि = सेना शिविर भी। अद्यापि = आज तक भी। न परापतति = लौटा नहीं है। व्यपदिश्य = बहाना करके। मोचयामि = छुटकारा लूँ। मुञ्चतु = छोड़े। सुहृत्साध्ये = मित्र द्वारा सिद्ध होने वाले। अस्मिन् अर्थे = इस विषय में। एकाकी = अकेला। असंनिहितः = उपस्थित नहीं है। क्षपा = रात्रि। क्षयम् अगात् = बीत गई।

हिन्दी अनुवाद– इसी बीच सूर्य ने अपनी किरणें समेट लीं। चन्द्रोदय हो जाने पर अपने जाने के विषय में लक्ष्य करके

चन्द्रापीड सोचने लगा– पिता ने अपनी भुजाओं से उतारकर राज्य का भार मेरे ऊपर डाल दिया है। उन्हें बिना बताए एक कदम भी आगे नहीं जा सकता। सेना भी अभी तक लौटकर नहीं आयी। कौन सा बहाना बनाकर यहाँ से छुटकारा लूँ। माता-पिता मुझे कैसे छोड़ेंगे। मित्र द्वारा सिद्ध होने वाले इस कार्य में अकेले क्या करूँ। वैशम्पायन भी इस समय मेरे पास नहीं है। इस प्रकार विचार करते हुए ही वह रात बीत गई।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अत्रान्तरे = अत्र + अन्तरे। स्कन्धावारोऽपि = स्कन्धावारः + अपि। अद्यापि =अद्य + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस मूलग्रन्थ से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' से उद्धृत है।

प्रश्न 2. कम् उद्दिश्य चन्द्रापीडः किं चिन्तयामास?
उत्तर– चन्द्रापीडः आत्मनः उद्दिश्य एवं चिन्तयामास–'तातेन खलु स्वभुजात् अवरोप्य मय्येव राज्यभारः समारोपितः।'

प्रश्न 3. 'किं कारणं व्यपदिश्य आत्मानं मोचयामि।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– कौन-सा कारण बताकर (बहाना बनाकर) अपने को छुड़ाऊँ।

प्रश्न 4. 'तातेन' में कौन-सी विभक्ति है?
उत्तर– 'तातेन' में तृतीया विभक्ति एकवचन है।

प्रश्न 5. 'अवरोप्य' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।
उत्तर– 'अवरोप्य' का शाब्दिक अर्थ है 'उतारकर'।

➥ **प्रातरेव किंवदन्ती शुश्राव– यथा किल 'दशपुरं यावत् परागतः स्कन्धावारः– इति। तां च श्रुत्वा प्रहृष्टचेताः केयूरकम् अब्रवीत्–''केयूरक! करतलवर्तिनीं सिद्धिम् अवधारय। प्राप्तः वैशम्पायनः'' इति।**

शब्दार्थ– प्रातरेव = प्रातःकाल ही। किंवदन्तीं = जनश्रुति। शुश्राव = सुनी। परागतः = लौट आया है। स्कन्धावारः = सेना शिविर। प्रहृष्टचेताः = प्रसन्नचित्त। करतलवर्तिनीम् = हथेली पर आई हुई। सिद्धिम् = सफलता को। अवधारय = समझो। प्राप्तः = आ गया है।

हिन्दी अनुवाद– प्रातःकाल ही चन्द्रापीड ने लोगों द्वारा कहते हुए सुना कि सेना शिविर दशपुर नगर तक लौट आयी है। यह सुनकर प्रसन्नचित्त उसने केयूरक से कहा– केयूरक! अब सफलता को हाथ में आई हुई समझो। वैशम्पायन आ गया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– प्रहृष्टचेताः = प्रहृष्टं चेतः यस्य सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''केयूरक! करतलवर्तिनीं सिद्धिम् अवधारय।'' रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
उत्तर– केयूरक! अब सफलता को हाथ में आई हुई समझो।

प्रश्न 3. कः प्रातरेव किंवदन्ती शुश्राव?
उत्तर– चन्द्रापीडः प्रातरेव किंवदन्ती शुश्राव।

प्रश्न 4. स्कन्धवारः कुत्र यावत् परागतः?
उत्तर– स्कन्धवारः दशपुरं यावत् परागतः।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः किम् अब्रवीत्?
उत्तर– केयूरक! करतलवर्तिनीम् सिद्धिम् अवधारय। प्राप्तः वैशम्पायनः।

➥ **स तु तदाकर्ण्य, ''देव! किमपरं मया अत्र स्थितेन साधनीयम्। अकालक्षमा देव्याः कादम्बर्याः शरीरावस्था। सर्वो हि प्रत्याशया धार्यते। तत् देवागमनोत्सवम् आवेदयितुम् इदानीमेव गमनानुज्ञया प्रसादं क्रियमाणम् इच्छामि'' इति व्यजिज्ञपत्। एवं विज्ञापिते केयूरकेण, परितुष्टः चन्द्रापीडः प्रत्युवाच– ''साधु चिन्तितम्। कस्य**

वा अपरस्य ईदृशी देशकालज्ञता। गम्यतां देव्याः प्राणसंधारणाय। मदागमनप्रत्ययार्थं च पत्रलेखा त्वयैव सह यातु देवीपादमूलम्''। इत्युक्त्वा मेघनादम् आहूय आदिदेश– ''मेघनाद! यस्याम् भूमौ पत्रलेखानयनाय पूर्वं मया त्वं स्थापितः तां भूमिं यावत् पत्रलेखाम् आदाय केयूरकेण सह अग्रतः गच्छ। अहमपि वैशम्पायनम् आलोक्य अनुपदमेव ते तुरङ्गमैः परागतोऽस्मि'' इति।

शब्दार्थ– तदाकर्ण्य = यह सुनकर। किमपरम् = क्या दूसरा। अत्र स्थितेन = यहाँ रहने वाले। साधनीयम् = करने योग्य है। अकालक्षमा = समय के विलम्ब को न सहन कर सकने वाली। शरीरावस्था = शरीर की दशा। प्रत्याशया = आशा के सहारे। देवागमनोत्सवम् = देव के आने के हर्ष को। आवेदयितुम् = कहने के लिए। इदानीमेव = इसी समय ही। गमनानुज्ञया = जाने के आदेश से। व्यजिज्ञपत् = निवेदन किया। परितुष्टः = प्रसन्न। साधु चिन्तितम् = अच्छा सोचा। अपरस्य = दूसरे को। ईदृशी = ऐसी। देशकालज्ञता = देश और काल का ज्ञान। प्राणसंधारणाय = प्राणों की रक्षा के लिए। मदागमनप्रत्ययार्थम् = मेरे आने का विश्वास दिलाने के लिए। देवीपादमूलम् = देवी कादम्बरी के चरणों में। आहूय = बुलाकर। आदिदेश = आज्ञा दी। यस्याम् भूमौ = जिस स्थान पर। पत्रलेखागमनाय = पत्रलेखा को लाने के लिए। स्थापित = ठहराया था। अग्रतः = आगे। अनुपदम् = पीछे। परागतोऽस्मि = लौट रहा हूँ।

हिन्दी अनुवाद– यह सुनकर केयूरक ने कहा– देव, अब मुझे यहाँ रहकर और क्या करना है? देवी कादम्बरी की अवस्था विलम्ब सहन करने योग्य नहीं है। सभी लोग आशा ही के सहारे जीवित रहते हैं, इसलिए आपके आने के उत्सव की सूचना देने के लिए मैं इसी समय जाने के आदेश की कृपा चाहता हूँ। केयूरक के इस प्रकार निवेदन करने पर प्रसन्न होकर चन्द्रापीड ने कहा– बहुत अच्छा विचार किया। इस प्रकार देश-काल का ज्ञान और किसे हो सकता है? देवी कादम्बरी के प्राणों की रक्षा के लिए जाओ। मेरे आने का विश्वास दिलाने के लिए तुम्हारे साथ ही पत्रलेखा भी देवी कादम्बरी के पास जायेगी। ऐसा कहकर उसने मेघनाद को बुलाकर आदेश दिया– मेघनाद मैंने तुम्हें जिस स्थान पर पत्रलेखा को लाने के लिए ठहराया था, तुम वहाँ तक पत्रलेखा को लेकर केयूरक के साथ आगे-आगे चलो, मैं भी तुम्हारे पीछे ही वैशम्पायन को देखकर घोड़े पर सवार होकर आ रहा हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तदाकर्ण्य = तत् + आकर्ण्य। देवागमनोत्सवम् = देवः + आगमनः + उत्सवम्। इदानीमेव = इदानीम् + एव। परागतोऽस्मि = परागतः + अस्मि।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'सर्वो हि प्रत्याशया धार्यते।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– प्रायः सभी लोग आशा के सहारे ही (अपना) जीवन धारण करते हैं।

प्रश्न 3. कस्याः शरीरावस्था अकालक्षमा आसीत्?
उत्तर– देव्याः कादम्बर्याः शरीरावस्था अकालक्षमा आसीत्।

प्रश्न 4. के प्रत्याशया धार्यते?
उत्तर– सर्वो जनाः हि प्रत्याशया धार्यते।

प्रश्न 5. कस्याः प्राणसंधारणाय गम्यताम्?
उत्तर– देव्या कादम्बर्याः प्राणसंधारणाय गम्यताम्।

➥ **अथ च पत्रलेखाम् आहूय ''पत्रलेखे! त्वयापि यान्त्या अध्वनि न मद्विरहपीडा भावनीया। न शरीरसंस्कारे अनादरः करणीयः। न आहारवेला अतिक्रमणीया। न येन केनचित् अज्ञातेन पथा यातव्यम्। मम जीवितमपि तवैव हस्ते वर्तते। तत् नियतं त्वया आत्मा यत्नेन परिरक्षणीयः''। इत्युक्त्वा केयूरकं पुनः तदवधानदानाय संविधाय ''महाश्वेताश्रमं यावत् त्वयैव सहानया मन्नयनाय आगन्तव्यम्'' इत्यादिश्य व्यसर्जयत्।**

(2017 NH, 19 DE, DF)

शब्दार्थ– अथ = इसके बाद। आहूय = बुलाकर। यान्त्या = जाने वाली। अध्वनि = मार्ग में। मद्विरहपीडा = मेरे विरह का कष्ट। भावनीया = अनुभव करना। शरीरसंस्कारे = शरीर की शुद्धि में। न अनादरः करणीयः = सावधानी करना। आहारवेला = भोजन का समय। अतिक्रमणीया = बिताना। येनकेचित् = जिस किसी। अज्ञातेन पथा = अनजान रास्ते से। यातव्यम् = जाना। जीवितमपि = जीवन भी। तवैव हस्ते = तुम्हारे ही हाथ में। वर्तते = है। नियत = निश्चित रूप से। तदवधानदानाय = उसकी ओर

ध्यान देने के लिए। संविधाय = आदेश देकर। त्वयैव सहानया = तुम्हारे ही साथ। मन्नयनाय = मुझे ले चलने के लिए। इत्यादिश्य = ऐसा आदेश देकर। व्यसर्जयत् = विदा किया।

हिन्दी अनुवाद– इसके बाद पत्रलेखा को बुलाकर चन्द्रापीड ने कहा– पत्रलेखे, तुम मार्ग में जाते हुए मेरे विरह के कष्ट का अनुभव मत करना, शरीर शुद्धि में असावधानी मत करना, भोजन का समय मत बिताना, किसी अनजान रास्ते से मत जाना। मेरा जीवन तुम्हारे ही हाथ में है। इसलिए निश्चित रूप से तुम अपनी रक्षा करना। ऐसा कहकर केयूरक को उसकी ओर ध्यान रखने का आदेश दिया। फिर उसने कहा कि महाश्वेता के आश्रम तक मुझे लेने के लिए तुम्हारे साथ पत्रलेखा भी आएगी। ऐसा कहकर चन्द्रापीड ने उसे विदा किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– मद्विरहपीड़ा = मत् + विरहपीड़ा। तदवधानदानाय = तत् + अवधानदानाय। इत्यादिश्य = इति + आदिश्य।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. चन्द्रापीडः पत्रलेखाम् आहूय किम् अकथयत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः पत्रलेखाम् आहूय अकथयत्–''पत्रलेखे! त्वयापि यान्त्या अध्वनि न मद्विरहपीडा भावनीया। न शरीरसंस्कारे अनादरः करणीयः। न आहारवेला अतिक्रमणीया। न येन केनचित् अज्ञातेन पथा यातव्यम्। मम जीवितमपि तवैव हस्ते वर्तते। तत् नियतं त्वया आत्मा यत्नेन परिरक्षणीयः''।

प्रश्न 3. ''महाश्वेताश्रमं यावत् त्वयैव सहानया मन्नयनाय आगन्तव्यम्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– महाश्वेता के आश्रम तक मुझे लेने के लिए तुम्हारे साथ पत्रलेखा भी आयेगी।

प्रश्न 4. चन्द्रापीडः केयूरकं किम् आदिश्य व्यसर्जयत्?

उत्तर– ''महाश्वेताश्रमं यावत् त्वयैव सहानया मन्नयनाय आगन्तव्यम्'' चन्द्रापीडः इत्यादिश्य व्यसर्जयत्।

प्रश्न 5. ''अध्वनि'' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

उत्तर– अध्वनि का शाब्दिक अर्थ है– 'मार्ग में'।

➥ **निर्गतायां केयूरकेण सह पत्रलेखायाम्, पितुः पादमूलं गत्वा शुकनासमुखेन वैशम्पायनप्रत्युद्गमनाय आत्मानं मोचयित्वा, जननीभवने निर्वर्तितशरीरस्थितिः तं दिवसं यामिन्याः यामद्वयं च सुहृद्दर्शनौत्सुक्येन जाग्रदेव नीत्वा अपररात्रवेलाम् इन्द्रायुधम् आरुह्य, सुबहुना तुरङ्गमबलेन अनुगम्यमानः, नगर्याः निर्गत्य, शिप्राम् उत्तीर्य, दशपुरगामिना मार्गेण प्रावर्तत गन्तुम्। तावत्यैव अपररात्रवेलया योजनत्रितयम् अलङ्घयत्।**

(2017 NH)

शब्दार्थ– निर्गतायां = निकलने पर। पितुः पादमूलं = पिता के पास। शुकनासमुखेन = शुकनास से कहलवाकर। प्रत्युद्गमनाय = स्वागत के लिए। आत्मानं मोचयित्वा = अपने को छुड़ाकर। जननीभवने = माता के मकान में। निर्वर्तितशरीरस्थितिः = शरीरक्रिया अर्थात् स्नान, भोजन आदि करके। यामिन्याः = रात के। यामद्वयम् = दो पहर। सुहृद्दर्शनौत्सुक्येन = मित्रदर्शन की उत्सुकता से। जाग्रदेव = जागते ही। नीत्वा = बिताकर। अपररात्रवेलाम् = रात के तीसरे पहर में। तुरंगमबलेन = बहुत से घुड़सवारों द्वारा। नगर्याः निर्गत्य = नगरी से निकलकर। प्रावर्तत गन्तुं = चल दिया। योजनत्रितयम् = तीन योजन अर्थात् 12 कोस। अलङ्घयत् = पार कर लिया।

हिन्दी अनुवाद– केयूरक के साथ पत्रलेखा के चले जाने पर चन्द्रापीड ने पिता के पास जाकर शुकनास द्वारा वैशम्पायन के स्वागत के लिए आदेश पाकर माता के महल में स्नान-भोजन आदि किया और मित्र को देखने की उत्सुकता में उस दिन और रात के दो पहर को जागते ही बिता दिया। इसके पश्चात् शेष रात्रि में इन्द्रायुध नामक घोड़े पर सवार होकर बहुत से घुड़सवारों के साथ नगर से बाहर निकलकर शिप्रा नदी को पार किया और दशपुर जाने वाले रास्ते से चल दिया। इसी शेष रात्रि में ही उसने बारह कोस का रास्ता तय कर लिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– प्रत्युद्गमनाय = प्रति + उद्गमनाय। निर्वर्तितशरीर स्थितिः = निर्वर्तिता शरीरस्य स्थितिः येन सा।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक का नाम 'बाणभट्ट' है।
प्रश्न 2. 'दशपुरगामिना मार्गेण प्रावर्तत गन्तुम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– "दशपुर" की ओर जाने वाले रास्ते से चलना प्रारम्भ कर दिये।
प्रश्न 3. पत्रलेखा केन सह अगच्छत्?
उत्तर– पत्रलेखा केयूरकेण सह अगच्छत्।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडः कस्याः भवने स्नानादिक्रियाम् अकरोत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः जननीभवने स्नानादिक्रियाम् अकरोत्।
प्रश्न 5. चन्द्रापीडः केन मार्गेण प्रावर्तत गन्तुम्?
उत्तर– चन्द्रापीडः दशपुरगामिना मार्गेण प्रावर्तत गन्तुम्।

➥ **अथ च उदयगिरिशिखरम् आरूढे भगवति सप्तसप्तौ अग्रतः अर्धगव्यूतिमात्र एव आयातं स्कन्धावारम् अद्राक्षीत्। जवविशेषग्राहिणा इन्द्रायुधेन सत्वरम् आसाद्य, स्कन्धावारं प्रविश्य, 'क्व वैशम्पायनः' इत्यपृच्छत्। ततः ते स्कन्धावारवर्तिनः सर्वे जनाः सममेव अस्मिंस्तरुतले अवतरतु तावत् देवः, ततः यथावस्थितं विज्ञापयामः" इति न्यवेदयन्। चन्द्रापीडस्तु तेन कष्टतरेण वचसा अन्तःशल्य इव भूत्वा पुनः तान् अप्राक्षीत्– "किं वृत्तम् अस्य, येनासौ नागतः कः एकाकिनम् उत्सृज्य, आयाताः भवन्तः?" इति।** (2019 DA)

शब्दार्थ– सप्तसप्तौ = सूर्य। आरूढे = चढ़ने पर। अग्रतः = आगे से। अर्धगव्यूतिमात्र एव = दो कोस आगे आई हुई। जवविशेषग्राहिणा = विशेष वेग से चलने वाले। सत्वरम् = शीघ्र ही। आसाद्य = पहुँचकर। क्व = कहाँ। स्कन्धावारवर्तिनः = सेना शिविर में स्थित। सममेव = साथ ही। अवतरतु = उतर जायें। यथावस्थितम् = जो हुआ। विज्ञापयामः = बता रहे हैं। न्यवेदयन् = निवेदन किया। कष्टतरेण = अधिक कष्ट देने वाले। वचसा = वाणी से। अन्तःशल्य इव = हृदय में चुभे हुए कील-सा। वृत्तम् = समाचार। नागतः = नहीं आया। उत्सृज्य = छोड़कर।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् सूर्योदय होने पर राजकुमार चन्द्रापीड ने दो कोस ही आगे आई हुई अपनी सेना को देखा। उसने वेग से चलने वाले इन्द्रायुध के द्वारा शीघ्र ही सेना में पहुँचकर कहा–वैशम्पायन कहाँ है? इसके बाद सेना में रहने वाले सभी लोगों ने एक साथ ही कहा कि देव! इस वृक्ष के नीचे उतर जाइये। फिर जैसी घटना हुई है उसका निवेदन करेंगे। इस कष्ट देने वाली वाणी से उसके हृदय में कील-सा चुभ गया और उनसे फिर उसने पूछा– उसको क्या हो गया जिससे वह नहीं आया। अथवा कहाँ रह गया? उसे अकेले छोड़कर आप लोग क्यों चले आये?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– यथावस्थितम् = यथा + अवस्थितम्। नागतः = न + आगतः।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' (उत्तरार्द्धभाग) से उद्धृत है।
प्रश्न 2. "उदयगिरिशिखरम्' आरूढे भगवति सप्तसप्तौ" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– उदयाचल पर भगवान सूर्य के आरूढ़ (चढ़ने) होने पर।
प्रश्न 3. चन्द्रापीडः अर्धगव्यूतिमात्र एव आयातं कम् अद्राक्षीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः अर्धगव्यूतिमात्र एव आयातं स्कन्धवारम् अद्राक्षीत्।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडः स्कन्धवारं प्रविश्य किम् अपृच्छत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः जवविशेषग्राहिणा इन्द्रायुधेन आसाद्य, स्कन्धवारं प्रविश्य 'क्व वैशम्पायनः' इत्यपृच्छत्?
प्रश्न 5. सर्वे जनाः किं न्यवेदयत्?
उत्तर– सर्वे जनाः सममेव अस्मिंस्तरुतले अवतरतु तावत् देवः, ततः यथावस्थितं विज्ञापयामः।

प्रश्न 6. 'इन्द्रायुधेन' में कौन-सी विभक्ति है?
उत्तर– 'इन्द्रायुधेन' में तृतीया विभक्ति है। यह तृतीया विभक्ति के एकवचन का रूप है।
प्रश्न 7. 'अन्तः शल्य इव भूत्वा' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।
उत्तर– 'अन्तः शल्य इव भूत्वा' का शाब्दिक अर्थ है– हृदय में चुभे हुए कील के सदृश।

➥ **ते च एवं पृष्टाः व्यज्ञापयन्–''देव! श्रूयतां यथा वृत्तम्– 'पृष्ठतः स्कन्धावारम् अनुपालयद्भिः शनैः शनैः वैशम्पायनेन सह भविद्भरागन्तव्यम्' इत्यादिश्य गतवति देवे, तस्मिन् दिवसे न दत्तमेव प्रयाणं स्कन्धावारेण। अन्यस्मिन् अहनि आहतायां प्रयाणभेर्यां प्रातरेव अस्मान् वैशम्पायनोऽभ्यधात्– 'अतिपुण्यं हि अच्छोदाख्यं सरः पुराणे श्रूयते। तत् अस्मिन् स्नात्वा प्रणम्य च अस्यैव तीरभाजि सिद्धायतने भगवन्तं भवानीपतिं व्रजामः' इत्यभिधाय चरणाभ्यामेव अच्छोदसरस्तीरम् अयासीत्। तत्र च अतिरम्यतया सर्वतः दत्तदृष्टिः संचरन् अतिरमणीयं शीतलाभ्यन्तरशिलातलं तटलतामण्डपम् अद्राक्षीत्। अतिचिरान्तरितदर्शनं सुहृदमिव तं विस्मृतनिमेषेण चक्षुषा विलोकयन् समुपविश्य भूमौ किमपि अन्तरात्मनि स्मरन्निव तूष्णीम् अधोमुखः तस्थौ।**

शब्दार्थ– ते = उन सब सैनिकों ने। एवं पृष्टाः = इस प्रकार पूछने पर। व्यज्ञापयन् = निवेदन किये। यथावृत्तम् = जैसा हुआ। पृष्ठतः = पीछे। अनुपालयद्भिः = रक्षा करते हुए। भवद्भिरागन्तव्यम् = आप लोग आइयेगा। इत्यादिश्य = ऐसा आदेश देकर। न दत्तमेव प्रयाणम् = प्रस्थान नहीं किया।। अन्यस्मिन् = दूसरे। अहनि = दिन। आहतायाम् = बजने पर। प्रयाणभेर्याम् = कूच का नगाड़ा। अस्माद् = हम लोगों को। अभ्यधात् = कहा। तीरभाजि = किनारे पर स्थित। सिद्धायतने = मन्दिर में। व्रजामः = चलेंगे। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर। चरणाभ्याम् एव = पैदल ही। अयासीत् = आए। अतिरम्यतया = अत्यधिक सुन्दरता के कारण। सर्वतः = चारों ओर। दत्तदृष्टिः = देखते हुए। संचरन् = घूमते हुए। शीतलाभ्यन्तरशिलातलम् = बीच में शीतल शिला वाले। तटलतामण्डपम् = किनारे की लता के मण्डप को। अद्राक्षीत् = देखा। अतिचिरान्तरितदर्शनम् = बहुत दिन के बाद देखे गये। सुहृदमिव = मित्र के समान। विस्मृतनिमेषेणचक्षुषा = निर्निमेष नेत्रों से। विलोकयन् = देखते हुए। समुपविश्य भूमौ = पृथ्वी पर बैठकर। अन्तरात्मनि स्मरन् इव = हृदय में स्मरण करते हुये सा। तुष्णीम् = चुपचाप। अधोमुखः तस्थौ = नीचे मुख करके बैठ गया।

हिन्दी अनुवाद– उन सब सैनिकों ने चन्द्रापीड के इस प्रकार पूछने पर निवेदन किया– राजकुमार! जो कुछ हुआ उसे सुनिये। 'सेना शिविर की रक्षा करते हुए आप लोग पीछे-पीछे धीरे-धीरे आइएगा,' आपके इस प्रकार आदेश देकर चले जाने के बाद उस दिन सेना ने प्रस्थान नहीं किया। दूसरे दिन कूच का नगाड़ा बजने पर प्रातःकाल ही वैशम्पायन ने हम लोगों से कहा कि पुराणों में ऐसा सुना गया है कि अच्छोद तालाब अत्यन्त पुण्यकर है। अतः उसमें स्नान करके तथा उसके किनारे स्थित मन्दिर में भगवान् शिव को प्रणाम करके चलेंगे। ऐसा कहकर वह पैदल ही अच्छोद के किनारे आए। वहाँ उन्होंने अत्यन्त रमणीय एक लतामण्डप देखा जिसके भीतर एक शीतल शिला थी। बहुत दिन के पश्चात् दिखाई पड़ने वाले मित्र के समान उस लतामण्डप को निर्निमेष नेत्रों से देखते हुए वे पृथ्वी पर बैठ गये और मन ही मन किसी बात का स्मरण करते हुए मुँह को नीचे किये वहीं चुपचाप बैठे रहे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– भवद्भिरागन्तव्यम् = भवद्भिः + आगन्तव्यम्। इत्यादिश्य = इति + आदिश्य। दत्तमेव = दत्तम् + एव। इत्यभिधाय = इति + अभिधाय। सुहृदमिव = सुहृदम् + इव।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. 'अतिपुण्यं हि अच्छोदाख्यं सरः पुराणे श्रूयते।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– पुराणों में ऐसा सुना जाता है कि अच्छोद नाम का सरोवर अत्यन्त पुण्य स्थान है।
प्रश्न 3. चन्द्रापीडेन के व्यज्ञापयन्?
उत्तर– स्कन्धवारवर्तिनः सर्वे जनाः व्यज्ञापयन्।
प्रश्न 4. चन्द्रापीडः किम् आदिदेश?
उत्तर– 'वैशम्पायनेन सह भविदभरागन्तव्यम्' इत्यादिदेश।
प्रश्न 5. अच्छोदाख्यं सरः कीदृशी अस्ति?
उत्तर– अतिपुण्यं हि अच्छोदाख्यं सरः अस्ति।

➥ **तथा अवस्थितं तम् अवलोक्य, जातचिन्ताः वयम् एवम् अवदाम। 'दृष्टा दर्शनीयानाम् अवधिः एषा भूमिः। तत् उत्तिष्ठ। निर्वर्तय स्नानविधिम्। प्रयाणाभिमुखः सकलः स्कन्धावरः त्वां प्रतिपालयन् आस्ते' इति। स तु एवम् उक्तोऽपि अस्माभिः अश्रुतास्मदीयालाक इव न किञ्चिदपि प्रत्युत्तरम् अददात्। तमेव केवलं लतामण्डपं अनिमेषपक्ष्मणा चक्षुषा विलोकितवान्। पुनः पुनश्चास्माभिः आगमनाय अनुरुध्यमानः परिच्छेदनिष्ठुरम् अस्मान् आह स्म– "मया तु न यातव्यम् अस्मात् प्रदेशात्। गच्छन्तु भवन्तः स्कन्धावारम् आदाय" इति।**

शब्दार्थ– तथा अवस्थितम् = उस प्रकार बैठे हुए। तम् अवलोक्य = उसे देखकर। जातचिन्ताः = चिंतित होकर। अवदाम = कहा। दृष्टा = देख लिया। दर्शनीयानाम् अवधिः = सुन्दरता की सीमा। उत्तिष्ठ = उठो। निर्वर्तय = पूरी करो। स्नानविधिम् = स्नान की क्रिया। प्रयाणाभिमुखः = प्रस्थान के लिए तैयार। प्रतिपालयन् आस्ते = प्रतीक्षा कर रहा है। अस्माभिः = हम लोगों द्वारा। अश्रुतास्मदीयालाप इव = हमारी बातों को न सुनते हुए के समान। किंचिदपि = कुछ भी। प्रत्युत्तरम् = हमारी बात का जवाब। अददात् = दिया। अनिमेषपक्ष्मणा = निर्निमेष। विलोकितवान् = देखता रहा। आगमनाय = आने के लिए। अनुरुध्यमानः = अनुरोध करने पर। परिच्छेदनिष्ठुरम् = निर्णय करने में निष्ठुर। आह स्म = कहा। यातव्यम् = जाना चाहिए। गच्छन्तु = जाइये। आदाय = लेकर।

हिन्दी अनुवाद– उसे इस प्रकार बैठे हुए देखकर हम लोगों ने चिन्तित होकर कहा कि–सुन्दरता की चरम सीमा इस भूमि को देख चुके, अब उठो और स्नानादि करो। प्रस्थान के लिए तैयार सारी सेना तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। हम लोगों के ऐसा कहने पर भी मानो हमारी बातों को न सुनते हुए उसने कोई उत्तर न दिया। केवल उसी लतामण्डप को निर्निमेष दृष्टि से देखता रहा। आने के लिए हम लोगों द्वारा बार-बार अनुरोध करने पर अत्यन्त निष्ठुर होकर उसने हम लोगों से कहा– "मैं इस स्थान से नहीं जाऊँगा। आप लोग सेना लेकर जाइये।"

व्याकरणात्मक टिप्पणी– जातचिन्ता = जाता चिन्ता येषाम् ते। प्रयाणभिमुखः = प्रयाण + अभिमुखः। अश्रुतास्मदीयालाप = अश्रुत + अस्मदीय + आलापः। किंचिदपि = किंचित् + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।**
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. **"दृष्टा दर्शनीयानाम् अवधिः एषा भूमिः।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– द्रष्टव्यता की पराकाष्ठा इस भूमि को (आपने) देख लिया।
प्रश्न 3. **के जातचिन्ताः बभूव?**
उत्तर– स्कन्धवारवर्तिनः सर्वे जनाः जातचिन्ताः बभूव।
प्रश्न 4. **कः तमेव केवलं लतामण्डपं अनिमेषपक्ष्मणा चक्षुषा विलोकितवान्?**
उत्तर– वैशम्पायनः तमेव केवलं लतामण्डपं अनिमेषपक्ष्मणा चक्षुषा विलोकितवान्?
प्रश्न 5. **'मया तु न यातव्यम् अस्मात् प्रदेशात्' केनोक्तः?**
उत्तर– वैशम्पायनेनोक्तः – 'मया तु न यातव्यम् अस्मात् प्रदेशात्।'

➥ **इत्युक्तवन्तं च तम् अकस्मादेव किंचिदस्य वैराग्यकारणम् उत्पन्नम् इति आशंक्य सानुनयम् आगमनाय पुनः पुनः प्रतिबोध्य, तादृशासंबद्धानुष्ठानेन जातपीडाः निष्ठुरमपि अभिहितवन्तः वयम्। स तु "किमहम् एतावदपि न वेद्मि, यत् गमनाय मां भवन्तः प्रबोधयन्ति। अपि च, चन्द्रापीडेन विना क्षणमपि अहम् अन्यत्र न पारयामि स्थातुम्। तथापि किं करोमि? अनेनैव क्षणेन सर्वत्र विगलितं मे प्रभुत्वम्।**

शब्दार्थ– इत्युक्तवन्तं = ऐसा कहने वाले को। अकस्मादेव = अचानक ही। वैराग्यकारणम् = उदासीनता का कारण। आशंक्य = आशंका करके। सानुनयम् = विनती के साथ। प्रतिबोध्य = समझाकर। तादृशासंबद्धानुष्ठानेन = उस प्रकार के अनुचित कार्य से। जातपीडाः = दुःखी होकर। निष्ठुरमपि = कठोर बातें। अभिहितवन्तः = कहीं। एतावदपि = यह भी। न वेद्मि = नहीं जानता हूँ। न पारयामि स्थातुं = नहीं रह सकता हूँ। अनेनैव क्षणेन = इसी क्षण से। विगलितम् = नष्ट हो गई। प्रभुत्वम् = शक्ति।

हिन्दी अनुवाद– इस प्रकार कहने वाले वैशम्पायन के प्रति हम लोगों के मन में यह सन्देह हुआ कि यहाँ शायद इसके वैराग्य का कोई कारण उपस्थित हो गया है। इसलिए अनुनय-विनय के साथ आने के लिए हम लोगों ने उसे बहुत समझाया और उसके उस प्रकार के कार्य से दुःखी होकर उसे कुछ कठोर बातें भी कहीं। इस पर उसने कहा–क्या मैं इतना भी नहीं जानता हूँ कि

चलने के लिए आप लोग मुझे समझा रहे हैं। मैं चन्द्रापीड के बिना दूसरी जगह एक क्षण भी नहीं रह सकता फिर भी मैं क्या करूँ? इस समय मैं अत्यन्त विवश हो गया हूँ।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अकस्मादेव = अकस्मात् + एव। तादृशासंबद्धानुष्ठानेन = तादृश + असंबद्ध + अनुष्ठानेन। निष्ठुरमपि = निष्ठुरम् + अपि। एतावदपि = एतावत् + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'तादृशासंबद्धानुष्ठानेन जातपीडाः निष्ठुरमपि अभिहितवन्तः वयम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– उस प्रकार के अनुचित कार्य से दुःखी होकर हमने उन्हें कठोर बातें कहीं।

प्रश्न 3. कस्य हृदये अकस्मादेव वैराग्यकारणम् उत्पन्नम्।

उत्तर वैशम्पायनस्य हृदये अकस्मादेव वैराग्यकारणम् उत्पन्नम्।

प्रश्न 4. केन विना क्षणमपि अहम् अन्यत्र न पारयामि स्थातुम्?

उत्तर– चन्द्रापीडेन विना क्षणमपि अहम् अन्यत्र न पारयामि स्थातुम्।

प्रश्न 5. कस्य विगलितं प्रभुत्वम्?

उत्तर– वैशम्पायनस्य विगलितं प्रभुत्वम्।

➥ **स्मरदिव किमपि मनो नान्यत्र प्रवर्तते। निगलिताविव अन्यत्र पदमपि दातुं न चरणौ उत्सहेते। तत् अलं निर्बन्धेन, गच्छन्तु भवन्तुः'' इति उक्त्वा तेषु तेषु तरुतलेषु लतागहनेषु सरस्तीरेषु किमपि नष्टमिव अन्विष्यन् बभ्राम। वयमपि तत्प्रतिबोधनप्रत्याशया दिनत्रयं स्थित्वा, किमेतदिति विस्मितान्तरात्मानः निष्प्रत्याशाः सुकृतशम्बलसंविधानम् तत्परिकरम् तत्र स्थापयित्वा परागताः वयम्'' इति।**

शब्दार्थ– स्मरदिव = याद करता हुआ सा। नान्यत्र प्रवर्तते = दूसरी जगह नहीं जा रहा है। निगलिताविव = बेड़ी पड़े हुए से। पदमपि दातुम् = एक पग रखने के लिए भी। निबन्धेन = हठ से। तेषु तेषु = उन उन। किमपि नष्टमिव = कुछ खोया हुआ सा। अन्विष्यन् = खोजते हुए। बभ्राम = घूमने लगा। तत्प्रतिबोधनप्रत्याशया = उसे समझाने की आशा से। किमेतदिति = यह क्या है? विस्मितान्तरात्मनः = चकित हृदय वाले। निष्प्रत्याशाः = निराश हो जाने वाले। सुकृतसम्बलसंविधानम् = भोजनादि की अच्छी व्यवस्था करने वाले। तत्परिकरम् = उसके सेवकों को। तत्र स्थापयित्वा = वहीं छोड़कर। परागताः = लौट गये।

हिन्दी अनुवाद– किसी बात का स्मरण करते हुए मेरा मन दूसरी जगह जा ही नहीं पा रहा है। बेड़ियों से जकड़े हुए मेरे पैर इस जगह को छोड़कर एक पग भी आगे बढ़ ही नहीं पा रहे हैं। अतः आप लोग जाइए, हठ करना व्यर्थ है। इस प्रकार कहकर वह उन वृक्षों के नीचे घनी लताओं में, तालाब के किनारों पर किसी खोई हुई वस्तु को ढूँढ़ता हुआ-सा घूमने लगा। उसे समझाने की आशा में हम लोग वहाँ तीन दिन ठहरे रहे। उसके इस व्यवहार से चकित और निराश होकर हम लोग भोजनादि की अच्छी व्यवस्था करके तथा सेवकों को वहीं छोड़कर लौट आये हैं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– निगलिताविव = निगलितौ + इव। विस्मितान्तरात्मनः = विस्मतः अन्तर्रात्मा येषाम् ते। तत्परिकरम् = तत् + परिकरम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''लतागहनेषु सरस्तीरेषु किमपि नष्टमिव अन्विष्यन् बभ्राम।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– घनी लताओं में, तालाब के किनारों पर किसी खोई हुई वस्तु को ढूँढ़ते हुए की तरह भ्रमण करते रहे।

प्रश्न 3. कस्य मनः नान्यत्र प्रवर्तते?

उत्तर– वैशम्पायनस्य मनः नान्यत्र प्रवर्तते।

प्रश्न 4. कस्य चरणौ निगलिताविव आसीत्?

उत्तर– वैशम्पायनस्य चरणौ निगलिताविव आसीत्।

प्रश्न 5. कः सरस्तीरेषु किमपि नष्टमिव अन्विषयन् बभ्राम?

उत्तर– वैशम्पायनः सरस्तीरेषु किमपि नष्टमिव अन्विषयन् बभ्राम।

➥ **चन्द्रापीडस्तु स्वप्नेऽपि अनुत्प्रेक्षणीयम् वैशम्पायनवृत्तान्तम् आकर्ण्य, युगपत् उद्वेगविस्मयाभ्याम् आक्रान्तहृदयो बभूव। 'किं पुनः ईदृशस्य वैराग्यस्य कारणं भवेत्' इति बहुधा विचिन्त्य, 'प्रकारान्तरेण गमनम् उत्पादयता कादम्बरीसमीपगमनोपायचिन्तापर्याकुलमतेः उपकृतमेव वैशम्पायनवृत्तान्तेन' इति निश्चित्य, तत्कालकृतं वैशम्पायनवियोगदुःखम् परिणामसुखम् औषधमिव बहु मन्यमानः परापतितवान् उज्जयिनीम्। तत्र कृच्छ्रेण मात्रा पित्रा च विसर्जितः शुकनासं मनोरमां च प्रणम्य अग्रतः ढौकितमपि कृतापसर्पणम् अनाविष्कृतगमनोत्साहम् इन्द्रायुधम् आरुह्य, रयेणैव निरगान्नगर्याः।**

शब्दार्थ– स्वप्नेऽपि = स्वप्न में भी। अनुत्प्रेक्षणीयम् = अकल्पनीय। वृत्तान्तम् = समाचार। आकर्ण्य = सुनकर। युगपत् = एक साथ ही। उद्वेगविस्मयाभ्याम् = उद्वेग और आश्चर्य से। आक्रान्तहृदयो = दुःखी हृदय। ईदृशस्य = इस प्रकार के। बहुधा विचिन्त्य = बहुत तरह से सोचकर। प्रकारान्तरेण = दूसरे प्रकार से। गमनम् उत्पादयता = जाना उत्पन्न करने वाले अर्थात् जाने का कारण होने से। कादम्बरीसमीपगमनोपायचिन्तापर्याकुलमतेः = कादम्बरी के पास जाने के उपाय की चिन्ता में व्यग्र। वैशम्पायनवृत्तान्तेन = वैशम्पायन के समाचार से। वैशम्पायनवियोगदुःखम् = वैशम्पायन के वियोग दुःख को। परिणामसुखम् = अन्त में सुख देनेवाले। औषधमिव = दवा के समान। बहुमन्यमान = लाभ मानते हुए। परापतितवान् = लौट आया। कृच्छ्रेण = कठिनाई से। विसर्जितः = विदा पाकर। ढौकितमपि = कसे हुए। कृतापसर्पणम् = हट जाने वाले। अनाविष्कृतगमनोत्साहम् = जाने के उत्साह से रहित। आरुह्य = चढ़कर। रयेणैव = वेग से। निरगान्नगर्याः = निरगात् + नगर्याः) नगर से निकल पड़ा।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड का हृदय स्वप्न में कल्पना न करने योग्य वैशम्पायन की दशा सुनकर एक साथ ही व्याकुलता और आश्चर्य से भर उठा। उसने बहुत सोचा कि उसके वैराग्य का क्या कारण हो सकता है? कादम्बरी के पास जाने के उपाय की चिन्ता में लगा हुआ चन्द्रापीड प्रकारान्तर से वैशम्पायन के वृत्तान्त को वहाँ जाने का कारण समझ बहुत प्रसन्न हुआ और वैशम्पायन के वियोग-दुःख को औषधि के समान अन्त में सुखदायी जानकर उज्जयिनी लौट आया। वहाँ बड़ी कठिनाई से माता-पिता द्वारा विदा लेकर शुकनास और मनोरमा को प्रणाम करके पहले ही से जीन कसे हुए किन्तु चलने के लिए अनिच्छुक इन्द्रायुध पर सवार होकर नगर से वेगपूर्वक निकल पड़ा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– आक्रान्तहृदयः = आक्रान्तः हृदयः यस्य सः। निरगान्नगर्याः = निरगात् + नगर्याः। रयेणैव = रयेण + एव।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'किं पुनः ईदृशस्य वैराग्यस्य कारणं भवेत्!' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– इस प्रकार की उदासीनता का कारण क्या हो सकता है?

प्रश्न 3. कस्य वृत्तान्तम् आकर्ण्य चन्द्रापीडस्य हृदयं युगपद् उद्वेगविस्मयाश्याम् आक्रान्तो बभूव?

उत्तर– वैशम्पायनवृत्तान्तम् आकर्ण्य चन्द्रापीडस्य हृदयं युगपद् उद्वेगविस्मयाभ्याम् आक्रान्तो बभूव।

प्रश्न 4. वैशम्पायनवृत्तान्तम् आकर्ण्य कस्य आक्रान्तहृदयो बभूव?

उत्तर– वैशम्पायनवृत्तान्तम् आकर्ण्य चन्द्रापीडस्य आक्रान्तहृदयो बभूव।

प्रश्न 5. कादम्बरीसमीपगमनोपायचिन्तापर्याकुलमतेः कः आसीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः कादम्बरीसमीपगमनोपायचिन्तापर्याकुलमतेः आसीत्।

➥ **निर्गत्य च उत्ताम्यता हृदयेन किमपि किमपि चिन्तयन्, दिवा रात्रौ च अवहत्। एवं वहतोऽप्यस्य दवीयस्तया अध्वनः अर्धपथ एव आशुगमनविघ्नकारी बभूव जलदकालः। तादृशेऽपि प्रावृट्काले कलामपि अकृतपरिलम्बः**

धाराहतिविकूणिताक्षेण अपचीयमानबलजवोत्साहेन वाजिसैन्येन अनुगम्यमानः तदेव अच्छोदम् आससाद। तत्र चतुर्ष्वपि पार्श्वेषु तुरगगत एवं विचिन्वन् समन्तात् बभ्राम। भ्राम्यंश्च यदा न क्वचिदपि किञ्चित् अवस्थानचिह्नमपि नोपलक्षितवान् तदा महाश्वेता कदाचिदस्य वृत्तान्तस्य अभिज्ञा भवेदिति विचिन्त्य तदाश्रमम् उपजगाम।

शब्दार्थ– निर्गत्य = निकलकर। उत्ताम्यता = संतप्त। चिन्तयन् = सोचता हुआ। दिवा रात्रौ = दिन-रात। अवहत् = सवार होकर चलता रहा। एवं वहतोप्यस्य = इस प्रकार चलते हुए भी। दवीयस्तया = बहुत दूरी होने से। अध्वनः अर्धपथ एव = आधे रास्ते में ही। आशुगमनविघ्नकारी = शीघ्र गमन में विघ्न उपस्थित करने वाला। जलदकालः = वर्षा ऋतु। प्रावृट् काले = वर्षा ऋतु में। कलामपि = क्षणमात्र भी। अकृतपरिलम्बः = बिना विलम्ब किये। धाराहतिविकूणिताक्षेण = वर्षा की बौछारों द्वारा बन्द नेत्र से। अपचीयमानबलजवोत्साहेन = बल, वेग तथा उत्साह के कम होने पर। वाजिसैन्येन = घुड़सवारों द्वारा। आससाद = पहुँचा। चतुर्ष्वपि पार्श्वेषु = चारों किनारों पर। भ्राम्यन् = घूमते हुए। अवस्थानचिह्नमपि = ठहरने की निशानी भी। नोपलक्षितवान् = नहीं देखा। अभिज्ञा = जानकर। उपजगाम = चला गया।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड नगर से निकलकर संतप्त हृदय से विभिन्न विचार करते हुए रात-दिन घोड़े पर बैठकर चलता रहा। इस प्रकार चलते रहने पर भी दूरी अधिक होने के कारण शीघ्र चलने में बाधा डालने वाली वर्षा ऋतु आ गई। ऐसी वर्षा से भी क्षणमात्र का विलम्ब किये बिना ही वर्षा की बौछार से बन्द आँखों तथा बल, वेग और उत्साह से रहित होते हुए भी घुड़सवारों को पीछे लिये चन्द्रापीड उसी अच्छोद तालाब पर पहुँचा। घोड़े पर बैठे हुए ही तालाब के चारों किनारे सभी जगह ढूँढ़ते हुए वह घूमने लगा किन्तु जब उसने कहीं भी कोई ठहरने का चिह्न नहीं पाया तो यह सोचकर कि शायद महाश्वेता इस समाचार को जानती हो उसके आश्रम में चला गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– दिवारात्री = दिवा च रात्रिः च। वहतोप्यस्य = वहतः + अपि + अस्य। दवीयस्तया = दवीयः + तया। कलामपि = कलाम् + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. "तत्र चतुर्ष्वपि पार्श्वेषु तुरगगत एवं विचिन्वन् समन्तात् बभ्राम!" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– वहाँ सरोवर के चारों किनारों पर घोड़े पर सवार रहकर ही सभी जगह ढूँढ़ते हुए चारों ओर घूमने लगे।

प्रश्न 3. कः उत्ताम्यता हृदयेन चिन्तयन् दिवारात्रौ च अवहत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः उत्ताम्यता हृदयेन चिन्तयन् दिवारात्रौच अवहत्।

प्रश्न 4. कः आच्छोदम् आससाद।

उत्तर– चन्द्रापीडः आच्छोदम् आससाद।

प्रश्न 5. चन्द्रापीडः कुत्र आससाद?

उत्तर– चन्द्रापीडः आच्छोदम् आससाद।

➥ **प्रविश्य च गुहाद्वार एव धवलशिलातले समुपविष्टाम् अधोमुखीम् कथमपि तरलिकया विधृतशरीराम् महाश्वेताम् अपश्यत्। दृष्ट्वा च किमेतदिति तरलिकाम् अपृच्छत्। अथ महाश्वेतैव प्रत्यवादीत्–'महाभाग! श्रूयताम्–केयूरकात् भवद्गमनम् आकर्ण्य, विदीर्णमानसा समुत्पन्नानेक गुणवैराग्या पुनः कष्टतरतपश्चरणाय यावत् अत्रैवाहम् आयाता, तावदत्र महाभागस्यैव तुल्याकृतिं ब्राह्मणयुवानम् अपश्यम्। स तु माम् उपसृत्य अदृष्टपूर्वोऽपि प्रत्यभिजानन्निव सुचिरम् आलोक्य अब्रवीत्– "वरतनु, सर्वो जनो जगति वयसः सदृशम् आचरति। तव पुनः विसदृशानुष्ठाने कोऽयं प्रयत्नः? यदियं मालतीमालेव कण्ठप्रणयैकयोग्या तनुः अनुचितेन अनेन तपःकरणक्लेशेन ग्लानिम् उपनीयते" इति।** (2018 BE)

शब्दार्थ– गुहाद्वार = गुफा के द्वार पर ही। धबलशिलातले = उज्ज्वल चट्टान के ऊपर। समुपविष्टाम् = बैठी हुई। अधोमुखीम् = मुख नीचा किये हुए। विधृतशरीराम् = (विधृतं शरीरम् यस्याः सा ताम्) जिसका शरीर कड़ा पड़ गया है। प्रत्यवादीत् = कहा। भवद्गमनम् = आपका जाना। आकर्ण्य = सुनकर। विदीर्णमानसा = फटे हुए हृदय वाली। समुत्पन्नानेकगुणवैराग्या = अनेक प्रकार

से विरक्त होकर। कष्टतरतपश्चरणाय = कठिन तप करने के लिए। आयाता = आयी महाभागस्यैव = आप की ही। तुल्याकृतिम् = समान आकृति वाले। ब्राह्मणयुवानम् = ब्राह्मण युवक को। अपश्यम् = देखा। माम् उपसृत्य = मेरे पास आकर। अदृष्टपूर्वोऽपि = पहले कभी न देखने पर भी। प्रत्यभिजानन्निव = पहचानता हुआ सा। सुचिरम् आलोक्य = भलीभाँति देखकर। सर्वो जनः = सभी लोग। वयसः सदृशम् = आयु के अनुसार। आचरति = कार्य करते हैं। विसदृशानुष्ठाने = विपरीत कार्य में। मालतीमालेव = मालती माला के समान। कण्ठप्रणयैकयोग्या = गले लगाने योग्य। तनुः = शरीर को। तपःकरणक्लेशेन = तपस्या के कष्ट से। ग्लानिम् उपनीयते = क्षीणता को पहुँचाया जा रहा है।

हिन्दी अनुवाद– चन्द्रापीड ने महाश्वेता के आश्रम में प्रवेश करके गुफा के द्वार पर ही एक उज्ज्वल शिला पर नीचे मुख करके तरलिका का सहारा लेकर बैठी हुई महाश्वेता को देखा और तरलिका से पूछा कि यह क्या हुआ? इसके पश्चात् महाश्वेता ने ही उत्तर दिया, महाभाग! सुनिये– केयूरक के मुख से आपके जाने का समाचार सुनकर दुःखी हृदय से विरक्त होकर मैं फिर कठिन तप करने के लिए इसी जगह चली आयी। यहीं मैंने आप जैसी ही आकृति वाले एक ब्राह्मण युवक को देखा। वह मेरे पास आकर यद्यपि उसने मुझे पहले कभी नहीं देखा था फिर भी मुझे पहचानता हुआ बड़ी देर तक देखता रहा और बोला– सुन्दरी, संसार में सभी लोग अपनी अवस्था के अनुसार काम करते हैं, फिर उसके विपरीत कार्य में क्यों लगी हो? मालती की माला के समान गले लगाने योग्य इस शरीर को अनुचित तपस्या के कष्ट से क्षीण क्यों कर रही हो?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अधोमुखीम् = अधः + मुखीम्। विधृतशरीराम् = विधृतं शरीरम् यस्याः सा ताम्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. 'सर्वो जनो जगति वयसः सदृशम् आचरति।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– सभी लोग (अपनी) आयु के अनुरूप आचरण करते हैं।
प्रश्न 3. धवलशिलातले का समुपविष्टाम् आसीत्?
उत्तर– धवलशिलातले महाश्वेता समुपविष्टाम् आसीत्।
प्रश्न 4. गुहाद्वारं प्रविश्य चन्द्रापीडः काम् अपश्यत्?
उत्तर– गुहाद्वारं प्रविश्य चन्द्रापीडः महाश्वेताम् अपश्यत्।
प्रश्न 5. महाश्वेता कम् अपश्यत्?
उत्तर– चन्द्रापीडस्यैव तुल्याकृतिं ब्राह्मण युवानम् अपश्यत्।

➥ **अहं तु तं वदन्तमपि किंचिदपि अपृष्ट्वा अन्यतः अगच्छम्। गत्वा च तरलिकाम् आहूय अब्रवम्– ''तरलिके! योऽयं युवा कोऽपि ब्राह्मणाकृतिः, अस्य अवलोकयतः वदतश्च अन्य एव अभिप्रायः मया उपलक्षितः। तत् निवार्यतामयम् यथा पुनरत्र नागच्छति। अथ निवारितोऽप्यागमिष्यति, तदा अवश्यमेव अस्य अभद्रकं भविष्यति'' इति। स तु निवार्यमाणोऽपि नात्याक्षीदेव अनुबन्धनम्।** (2020 ZO)

शब्दार्थ– वदन्तमपि = बोलने वाले को। किंचदपि = कुछ भी। अपृष्ट्वा = बिना पूछे। अन्यतः = दूसरी जगह। अगच्छम् = चली गई। आहूय = बुलाकर। अब्रवम् = कहा। अवलोकयतः = देखने। वदतः = बोलने। अन्य एव अभिप्रायः = दूसरा ही मतलब। उपलक्षितः = देखा गया है। निवार्यताम् = रोका। निवारितोऽप्यागमिष्यति = रोकने पर भी आयेगा। अभद्रकम् = बुरी, अकल्याण। निवार्यमाणोऽपि = रोकने पर भी। नात्याक्षीदेव = नहीं छोड़ा। अनुबन्धनम् = आग्रह।

हिन्दी अनुवाद– महाश्वेता ने चन्द्रापीड से कहा कि इस प्रकार कहने वाले उस ब्राह्मण से बिना कुछ पूछे ही मैं वहाँ से दूसरी जगह चली गयी और तरलिका को बुलाकर कहा कि यह जो ब्राह्मणों जैसा नवयुवक है, उसके देखने और बोलने का दूसरा ही अभिप्राय दिखाई देता है, इसलिए इसे रोको जिससे फिर वह वहाँ न आवे। अगर मना करने पर भी आवेगा तो उसका बड़ा अकल्याण होगा। किन्तु मना करने पर भी उसने अपना आग्रह नहीं छोड़ा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– वन्दतमपि = वन्दतम् + अपि। किंचिदपि = किंचित् + अपि। निवारितोऽप्यागमिष्यति = निवारितः + अपि + आगमिष्यति। निवार्यमाणोऽपि = निवार्यमाणः + अपि। नात्याक्षीदेव = न + अत्याक्षीत् + एव।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''तरलिके! योऽयं युवा कोऽपि ब्राह्मणाकृतिः, अस्य अवलोकयतः वदतश्च अन्य एव अभिप्रायः मया उपलक्षितः।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– तरलिके! जो ब्राह्मण के समान आकृतिवाला युवक आया था उसके देखने तथा बोलने का दूसरा ही अभिप्राय मुझे प्रतीत होता है।

प्रश्न 3. का किंचिदपि अपृष्ट्वा अन्यतः अगच्छत्?

उत्तर– महाश्वेता किंचिदपि अपृष्ट्वा अन्यतः अगच्छत्।

प्रश्न 4. महाश्वेता काम् आहूय अब्रवीत्।

उत्तर– महाश्वेता तरलिकाम् आहूय अब्रवीत्।

प्रश्न 5. कः निवार्यमाणोऽपि नात्याक्षीदेव अनुबन्धम्?

उत्तर– वैशम्पायनः निवार्यमाणोऽपि नात्याक्षीदेव अनुबन्धम्।

प्रश्न 6. 'युवा कोऽपि ब्राह्मणाकृतिः' किसके लिए प्रयुक्त है?

उत्तर– यह उक्ति वैशम्पायन के लिए प्रयुक्त है।

➥ **अतीतेषु केषुचित् दिवसेषु, एकदा गाढायां यामिन्याम् सः माम् उपसृत्य अब्रवीत्– ''चन्द्रमुखि! हन्तुम् उद्यतः माम् अयं कुसुमसायकः। तत् शरणम् आगतोऽस्मि। रक्ष माम् आत्मप्रदानेन'' इति। अहं तु तदाकर्ण्य, क्रोधावेगरूक्षाक्षरम् अवदम्– ''आः पाप! कथम् एवं वदतः माम्, उत्तमाङ्गे न निपतितं वज्रम्। अवशीर्णा वा न सहस्त्रधा जिह्वा'' इत्युक्त्वा चन्द्राभिमुखी भूत्वा– ''भगवन् लोकपाल! यदि मया देवस्य पुण्डरीकस्य दर्शनात् प्रभति, मनसापि अपरः पुनाम न चिन्तितः, तदा अयम् अलीककामी अनिरूपितस्थानास्थानवादी शुकवत् प्रलपन् शुकजातौ पततु'' इति अवदम्। स च मे वचसोऽस्यानन्तरमेव छिन्नमूलः तरुरिव छितौ अपतत्। अथ कृताक्रन्दात् तत्परिजनात् 'महाभागस्यैव मित्रम् असौ' इति श्रुतिवती।**

शब्दार्थ– अतीतेषु = बीतने पर। केषुचित् दिवसेषु = कुछ दिन। गाढायां यामिन्याम् = आधी रात में। उपसृत्य = आकर। हन्तुम् उद्यतः = मारने के लिए तैयार है। कुसुमसायकः = कामदेव। आत्मप्रदानेन = अपने को देकर। तदाकर्ण्य = यह सुनकर। क्रोधावेगरूक्षाक्षरम् = क्रोध के आवेग में कठोर वाणी में। उत्तमांगे = सिर पर। निपतितम् = गिरा। अवशीर्णा = कट गई। सहस्त्रधा = हजारों टुकड़े। चन्द्राभिमुखी भूत्वा = चन्द्रमा की ओर मुख करके। अपरः पुमान् = अन्य पुरुष। अलीककामी = असत्य ही काम का नाम लेने वाला। अनिरूपितस्थानास्थानवादी = कहाँ बोलना चाहिए कहाँ नहीं बोलना चाहिए, इसका निरूपण किये बिना बोलने वाले। शुकवत् प्रलपन् = सुग्गे की तरह बोलने वाला। शुकजातौ = सुग्गे की योनि में। क्षितौ = पृथ्वी पर। अपतत् = गिर पड़ा। कृताक्रन्दात् = विलाप करने वाले। तत्परिजनात् = उसके सेवकों से। श्रुतवती = सुना।

हिन्दी अनुवाद– कुछ दिन बीतने पर एक बार आधी रात को उसने मेरे पास आकर कहा– चन्द्रमुखी, यह कामदेव मुझे मार डालने के लिए तत्पर है। इसलिए मैं शरण में आया हूँ। तुम अपने को देकर मेरी रक्षा करो। मैंने यह सुनकर कठोर वाणी में कहा– अरे पापी! मुझसे इस प्रकार कहते हुए तुम्हारे सिर पर वज्र क्यों नहीं गिर पड़ा। तुम्हारी जीभ हजारों टुकड़े क्यों नहीं हो गई। ऐसा कहकर मैंने चन्द्रमा की ओर मुँह करके कहा– हे लोकपाल! यदि मैंने देव पुण्डरीक को देखने के समय से अब तक किसी परपुरुष के बारे में न सोचा हो तो यह व्यर्थ ही काम की दुहाई देने वाला भली-बुरी जगह का विचार किये बिना सुग्गे की तरह बोलने वाला, सुग्गे की योनि में चला जाय। वह मेरे इस प्रकार कहते ही कटे हुए जड़ वाले पेड़ की तरह पृथ्वी पर गिर पड़ा। इसके पश्चात् विलाप करने वाले उसके सेवकों से मैंने सुना कि वह आप का ही मित्र है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– हन्तुम् = हन् + तुमुन् प्रत्यय। तदाकर्ण्य = तत् + आकर्ण्य। क्रोधावेगरूक्षाक्षरम् = क्रोध + आवेगरूक्ष + अक्षरम्। तत्परिजनात् = तत् + परिजनात्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'चन्द्रमुखि! हन्तुम् उद्यतः माम् अयं कुसुमसायकः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– चन्द्रमुखि! यह कामदेव मुझे मारने के लिए तत्पर है।

प्रश्न 3. कः गाढायां यामिन्याम् माम् उपसृत्य अब्रवीत्?

उत्तर– वैशम्पायनः गाढायां यामिन्याम् माम् उपसृत्य अब्रवीत्।

प्रश्न 4. क्रोधावेगरूक्षाक्षरं का अवदत्?

उत्तर– महाश्वेता क्रोधावेगरूक्षाक्षरम् अवदत्।

प्रश्न 5. छिन्नमूलः तरुरिव छितौ कः अपतत्?

उत्तर– वैशम्पायनः छिन्नमूलः तरुरिव छितौ अपतत्।

➥ **चन्द्रापीडस्य तु तत् आकर्ण्य स्वभावसरसं हृदयम् अस्फुटत्। अथ तरलिका महाश्वेतायाः शरीरम् उत्सृज्य ससंभ्रमं प्रतिपन्नचन्द्रापीडशरीरा "हा देव चन्द्राकृते, चन्द्रपीड, कादम्बरीप्रिय! क्वेदानीं गम्यते" इत्यार्तनादं मुमोच। परिजनाश्च "आः पापे दुष्टतापसि! किमिदं त्वया कृतम्? तारापीडस्य कुलमुत्सादितम्। अनाथीकृताः प्रजाः। हा देव चन्द्रापीड! परित्यज्य सर्वान् एकाकी क्व प्रस्थितोऽसि?" इति करुणम् आचुक्रुशुः।**

शब्दार्थ– तत् आकर्ण्य = यह सुनकर। स्वभावसरसम् = स्वभाव से ही कोमल। अस्फुटत् = फट गया। उत्सृज्य = छोड़कर। ससंभ्रमम् = शीघ्रता के साथ। प्रतिपन्न चन्द्रापीडशरीरा = चन्द्रापीड के शरीर को पकड़कर। क्वेदानीम् = इस समय कहाँ। मुमोच = छोड़ा। कुलमुत्सादितम् = वंश को नष्ट कर दिया। आचुक्रुशुः = विलाप किये।

हिन्दी अनुवाद– यह सुनकर स्वभाव से ही कोमल चन्द्रापीड का हृदय विदीर्ण हो गया। तरलिका ने महाश्वेता के शरीर को छोड़कर शीघ्रता के साथ चन्द्रापीड के शरीर को पकड़ लिया और "हे देव, चन्द्रमा जैसे सुन्दर कादम्बरी के प्रिय, चन्द्रापीड! आप इस समय कहाँ जा रहे हैं"– इस प्रकार कहकर करुण विलाप करने लगी। चन्द्रापीड के सेवक भी अरी दुष्ट तपस्विनी, तुमने यह क्या किया? तारापीड के वंश को नष्ट कर दिया, प्रजा को अनाथ कर दिया, हाय चन्द्रापीड सबको छोड़कर तुम अकेले कहाँ जा रहे हो? इस प्रकार कहकर करुण विलाप करने लगे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– स्वभावसरसम् = स्वभावात् + सरसम्। क्वेदानीम् = क्व + इदानीम्। कुलमुत्सादितम् = कुलम् + उत्सा।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. "हा देव चन्द्रापीड! परित्यज्य सर्वान् एकाकी क्व प्रस्थितोऽसि?" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– हे देव चन्द्रापीड! सबका परित्याग करके आप अकेले कहाँ चल पड़े?

प्रश्न 3. कस्य हृदयम् अस्फुटत्?

उत्तर– चन्द्रापीडस्य हृदयम् अस्फुटत्।

प्रश्न 4. तरलिका महाश्वेतायाः शरीरम् उत्सृज्य कस्य शरीरम् अगृह्णात्?

उत्तर– तरलिका महाश्वेतायाः शरीरम् उत्सृज्य चन्द्रापीडस्य शरीरम् अगृह्णात्।

प्रश्न 5. चन्द्राकृते कः आसीत्?

उत्तर– चन्द्रापीडः चन्द्राकृते आसीत्।

➥ **अत्रान्तरे पत्रलेखानिवेदितचन्द्रापीडागमना कादम्बरी महाश्वेतादर्शनं व्याजीकृत्य, पत्रलेखाकरावलम्बिनी मदलेखया सह तत्रैव आजगाम। तत्र च तत्क्षणोन्मुक्तजीवितं चन्द्रापीडं दृष्ट्वा 'हा हा किमिदम्' इति अधोमुखी धरातलम् उपयान्ती मदलेखया अधार्यत्। चिरात् लब्धसंज्ञा कादम्बरी महाश्वेतां कण्ठे गृहीत्वा अवादीत्– "प्रियसखि! तवास्ति काचन प्रत्याशा। मम पुनः हताशायाः सापि नास्ति। तत आमन्त्रये प्रियसखीम् पुनः जन्मान्तरसमागमाय। अहं पुनः इममात्मानं देवस्य कण्ठलग्ना विभावसौ निर्वापयामि" इत्यभिधानैव चन्द्रापीडचरणौ कराभ्याम् उपक्षिप्य अङ्केन धृतवती।** (2020 ZU)

अत्रान्तरे पत्रलिखानिवेदित .... सापि नास्ति। (2020 ZQ)

शब्दार्थ– अत्रान्तरे = इसी बीच। पत्रलेखानिवेदितचन्द्रापीडागमना = पत्रलेखा ने निवेदन किया है चन्द्रापीड का आना जिससे वह। व्याजीकृत्य = बहाना करके। पत्रलेखाकरावलम्बिनी = पत्रलेखा का हाथ पकड़े हुए। तत्क्षणोन्मुक्तजीवितम् = उसी समय के

मरे हुए। अधोमुखी = नीचे मुँह किये। धरातलम् उपयान्ती = पृथ्वी पर गिरती हुई। अधार्यत् = पकड़ ली गई। चिरात् = बड़ी देर के बाद। लब्धसंज्ञा = होश में आकर। प्रत्याशा = जीने की आशा। आमन्त्रये = निमन्त्रित करती हूँ। जन्मान्तरसमागमाय = दूसरे जन्म में मिलने के लिए। कण्ठलग्ना = गले लगी हुई। विभावसौ = अग्नि में। निर्वापयामि = समर्पित करती हूँ। इत्यभिदधानैव = इस प्रकार कहती हुई। कराभ्याम् = हाथों से। उपक्षिप्य = उठाकर। अङ्केन धृतवती = गोद में रख लिया।

हिन्दी अनुवाद– इसी बीच पत्रलेखा द्वारा चन्द्रापीड के आने का समाचार पाकर कादम्बरी महाश्वेता को देखने का बहाना बनाकर पत्रलेखा का हाथ पकड़े हुए मदलेखा के साथ वहाँ आई, वहाँ उसने तत्काल ही के मरे चन्द्रापीड को देखा, उसे देखते ही वह मुँह के बल पृथ्वी पर गिरने लगी कि मदलेखा ने उसे पकड़ लिया। बहुत देर के बाद होश आने पर कादम्बरी ने महाश्वेता को गले लगाकर कहा– सखि, तुम्हें तो (अपने प्रिय के जीवित होने की) कुछ आशा है किन्तु मुझ निराश को तो वह भी नहीं है। अतः मैं दूसरे जन्म में मिलने के लिए अपनी प्रिय सखी तुमको निमन्त्रित करती हूँ। मैं अपने आपको चन्द्रापीड के गले लगाकर अग्नि को समर्पित कर दूँगी (चन्द्रापीड के साथ सती हो जाऊँगी)। इस प्रकार कहती हुई उसने चन्द्रापीड के पैरों को उठाकर अपनी गोद में रख लिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अत्रान्तरे = अत्र + अन्तरे। पत्रलेखानिवेदितचन्द्रापीडागमना = पत्रलेखया निवेदितम् चन्द्रापीडस्य आगमनम् यस्यै सा। पत्रलेखाकरावलम्बिनी = पत्रलेखाकर + अवलम्बिनी। तत्क्षणोन्मुक्तजीवितम् = तत् + क्षण + उन्मुक्तजीवितम्।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. "प्रियसखि! तवास्ति काचन प्रत्याशा। मम पुनः हताशायाः सापि नास्ति।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– हे प्रियसखि! तुम्हारे हृदय में कुछ आशा है, किन्तु मुझ निराश को तो वैसी आशा भी नहीं है।

प्रश्न 3. कादम्बरी कया सह आजगाम?

उत्तर– कादम्बरी मदलेखया सह आजगाम।

प्रश्न 4. कादम्बरी तत्क्षणोन्मुक्तजीवितं कम् अपश्यत्?

उत्तर– कादम्बरी तत्क्षणोन्मुक्तजीवितं चन्द्रापीडम् अपशयत्।

प्रश्न 5. अधोमुखी धरातलम् उपयान्ती कादम्बरी कया अधार्यत्?

उत्तर– अधोमुखी धरातलम् उपयान्ती कादम्बरी मदलेखया अधार्यत्।

➥ **अथ तत्करस्पर्शेन उच्छ्वसत इव चन्द्रापीडदेहात् झटिति अव्यक्तरूपं चन्द्रधवलं ज्योतिः उज्जगाम। अनन्तरं च अन्तरिक्षे क्षरन्तीव अमृतम् अशरीरिणी वाक् अश्रूयत– "वत्से महाश्वेते! पुनरपि त्वं मयैव समाश्वासयितव्या वर्तसे। तत् ते पुण्डरीकशरीरम् मल्लोके मत्तेजसा आप्याय्यमानम् अविनाशि भूयः त्वत्समागमाय तिष्ठत्येव। इदम् अपरं मत्तेजोमयं स्वतः एव अविनाशि विशेषतः अमुना कादम्बरीकरस्पर्शेन आप्याय्यमानम् चन्द्रापीडशरीरम् अन्तरात्मना कृतशरीरान्तरसक्रान्तेः योगिन इव शरीरम् अत्रैव भवत्योः प्रत्ययार्थम् आस्ताम् यत्नतः परिपालनीयम् आसमागमप्राप्तेः" इति।**

शब्दार्थ– तत्करस्पर्शेन = उसके हाथ के स्पर्श से। उच्छ्वसतः इव = साँस लेते हुए से। झटिति = सहसा। चन्द्रधवलं = चन्द्रमा के समान उज्ज्वल। उज्जगाम = निकली। अनन्तरम् = इसके बाद। अन्तरिक्षे = आकाश में। क्षरन्तीव अमृतम् = अमृत की वर्षा सी करती हुई। अशरीरिणी वाक् = आकाशवाणी। अश्रूयत = सुनी। समाश्वासयितव्या वर्तसे = धैर्य दिलाने के योग्य हो। मत्तेजसा = मेरे तेज से। आप्याय्यमानम् = सिंचित होकर। अविनाशि = नाश रहित होकर। त्वत्समागमाय = तुम्हारे मिलने के लिए। मत्तेजोमयम् = मेरे तेज से पूर्ण। अन्तरात्मना = अन्तरात्मा से। कृतशरीरान्तरसंक्रान्तेः = दूसरे शरीर में चले जाने वाले। योगिनः इव = योगी के समान। भवत्योः तुम दोनों के। प्रत्ययार्थम् = विश्वास के लिए। आशापक्षयात् = शाप के नष्ट होने के समय तक। आस्ताम् = रहे। आसमागमप्राप्तेः = मिलन होने के समय तक।

हिन्दी अनुवाद– उसके हाथ के स्पर्श से साँस लेते हुए से चन्द्रापीड के शरीर से चन्द्रमा जैसी उज्ज्वल ज्योति निकलकर

ऊपर चली गयी और अमृत वर्षा करती हुई आकाशवाणी सुनाई पड़ी– महाश्वेते, मैं तुम्हें फिर आश्वासन दे रहा हूँ। पुण्डरीक का शरीर मेरे लोक में मेरे तेज से सिंचित होकर फिर तुमसे मिलने के लिए पड़ा है। यह दूसरा मेरे तेज से पूर्ण, नाश-रहित और कादम्बरी के हाथों के स्पर्श से सिंचित अपनी आत्मा से दूसरे शरीर में चले जाने वाले योगी के शरीर के समान चन्द्रापीड का शरीर यहीं तुम दोनों के विश्वास के लिए शाप नष्ट होने के समय तक रहेगा। अतः मिलन होने तक उसकी रक्षा करना।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तत्करस्पर्शेन = तत् + कर + स्पर्शेन। अन्तरात्मना = अन्तः + आत्मना। प्रत्ययार्थम् = प्रत्यय + अर्थम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।**

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **"तत्करस्पर्शेन उच्छ्वसत इव चन्द्रापीडदेहात् झटिति अव्यक्तरूपं चन्द्रधवलं ज्योतिः उज्जगाम।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**

उत्तर– उसके हाथ के स्पर्श से साँस लेते हुए से चन्द्रापीड के शरीर से चन्द्रमा के समान उज्ज्वल ज्योति निकलकर ऊपर चली गयी।

प्रश्न 3. **कस्याः करस्पर्शेन चन्द्रापीडदेहात् अव्यक्तरूपं चन्द्रधवलं ज्योतिः उज्जगाम?**

उत्तर– कादम्बरीकरस्पर्शेन चन्द्रापीडदेहात् अव्यक्तरूपं चन्द्रधवलं ज्योतिः उज्जगाम।

प्रश्न 4. **कस्य देहात् अव्यक्तरूपं चन्द्रधवलं ज्योतिः उज्जगाम?**

उत्तर– चन्द्रापीडदेहात् अव्यक्तरूपं चन्द्रधवलं ज्योतिः उज्जगाम।

प्रश्न 5. **क्षरन्तीव अमृतम् अशरीरिणी वाक् का अश्रूयत्?**

उत्तर– क्षरन्तीव अमृतम् अशरीरिणी वाक् महाश्वेता अश्रूयत्।

➥ **पत्रलेखा मुहूर्तमिव निश्चेतना सती तस्य ज्योतिषः स्पर्शेन लब्धसंज्ञा उत्थाय आविष्टेव वेगात् धावित्वा, परिवर्धकहस्तात् इन्द्रायुधम् आच्छिद्य, तनैव सह आत्मानम् अच्छोदसरसि अक्षिपत्। तयोः निमज्जनसमयानन्तरमेव, तस्मात् सरस्सलिलात् शिरसि जटाकलापम् उद्वहन् उद्विग्नाकृतिः तापसकुमारः सहसैव उदतिष्ठत्। उत्थाय च दूरत एव विलोकयन्तीम् महाश्वेताम् उपसृत्य बभाषे– "गन्धर्वराजपुत्रि! जन्मान्तरात् आगतोऽपि प्रत्यभिज्ञायतेऽयं जनः, न वा?" इति। सा त्वेवं पृष्टा शोकानन्दमध्यवर्तिनी ससंभ्रमम् उत्थाय कृतप्रणामा प्रत्यवादीत्- "भगवन् कपिञ्जल! नाहम् एवंविधा अपुण्यवती, या भवन्तमपि न प्रत्यभिजानामि। तत् कथय 'केनासौ उत्क्षिप्य नीतः? किं वा तव उपजातम्, येन एतावता कालेन वार्तापि न दत्ता। कुतो वा त्वम् एकाकी देवेन विना समायातः" इति।**

शब्दार्थ– मुहूर्तमिव = थोड़ी देर। निश्चेतना सती = चेतना रहित-सी होती हुई। ज्योतिषः स्पर्शेन = ज्योति के स्पर्श से। लब्धसंज्ञा = होश में आकर। उत्थाय = उठकर। आविष्टा इव = भूत के वश में हुई सी। वेगात् धावित्वा = वेग से दौड़कर। परिवर्धकहस्तात् = साईस के हाथ से। आच्छिद्य = छीनकर। अक्षिपत् = फेक दिया। तयोः = उन दोनों के। निमज्जनसमयानन्तरम् एव = डूबने के बाद ही। सरस्सलिलात् = तालाब के जल से। शिरसि = सिर पर। जटाकलापम् उद्वहन् = जटाएँ धारण किये हुए। उद्विग्नाकृतिः = घबड़ाया हुआ। उदतिष्ठत् = निकला। विलोकन्तीम् = देखने वाली। बभाषे = बोला। जन्मान्तरात् = दूसरे जन्म से। प्रत्यभिज्ञायते = पहचाना जाता है। शोकानन्दमध्यवर्तिनी = शोक और आनन्द के बीच स्थित। ससम्भ्रमम् = झटके के साथ। एवं विधा = इस प्रकार। अपुण्यवती = पापिनी। नीतः = ले गया। तव उपजातम् = तुम्हारा हुआ। वार्तापि = समाचार। समायातः = आए।

हिन्दी अनुवाद– पत्रलेखा क्षण भर चेतनाहीन-सी होकर फिर उस प्रकाश से होश में आकार भूत-प्रेत से ग्रसित जैसी दौड़कर साईस के हाथ से इन्द्रायुध को छीनकर उसी के साथ अच्छोद तालाब में कूद पड़ी। उन दोनों के डूबने के बाद ही उस तालाब के जल से सिर पर जटाएँ धारण किये घबड़ाया हुआ सा एक तपस्वी कुमार निकला। वह निकलकर दूर ही से देखने वाली महाश्वेता के पास आकर बोला– हे गन्धर्वराज की पुत्री, दूसरे जन्म से आये हुए इस व्यक्ति को आप पहचान रही हैं या नहीं? उसके ऐसा पूछने पर शोक और आनन्द के बीच स्थित महाश्वेता ने झटके से उठकर उसे प्रणाम करके कहा– भगवान् कपिंजल मैं इतनी पापिनी नहीं हूँ जो आपको नहीं पहचानूँ। इसलिए बताइये उन्हें कौन उठाकर ले गया? आपको क्या हुआ जो इतने दिन तक समाचार भी नहीं दिया। आप देव पुण्डरीक के बिना अकेले ही क्यों आये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– मुहूर्तमिव = मुहूर्तम् + इव। निश्चेतना = निः + चेतना। परिवर्धकहस्तात् = परिवर्धकस्य हस्तात्। सरस्सलिलात् = सरः + सलिलात्। उद्विग्नाकृतिः = उद्विग्न + आकृतिः। जन्मान्तरात् = जन्म + अन्तरात्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. तापसकुमारः कः आसीत्।

उत्तर– तापसकुमारः भगवन् कपिञ्जलः आसीत्।

प्रश्न 3. 'गन्धर्वराजपुत्रि! जन्मान्तरात् आगतोऽपि प्रत्यभिज्ञायतेऽयं जनः, न वा?' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– हे गन्धर्वराजपुत्रि! दूसरे जन्म से आये इस व्यक्ति को आप पहचानती हैं या नहीं?

प्रश्न 4. का अच्छोदसरसि अक्षिपत्?

उत्तर– पत्रलेखा अच्छोदसरसि अक्षिपत्।

प्रश्न 5. पत्रलेखा केन सह अच्छोदसरसि अक्षिपत्?

उत्तर– पत्रलेखा इन्द्रायुधेन सह अच्छोदसरसि अक्षिपत्।

➥ **स तु प्रत्यवादीत् – 'गन्धर्वराजपुत्रि! श्रूयताम्– अहं हि कृतार्तप्रलापामपि त्वाम् एकाकिनीम् उत्सृज्य, तं पुरुषम् अनुबध्नन् जनेव उदपतम्। स तु मे प्रतिवचनम् अदत्वैव अतिक्रम्य तारागणम् चन्द्रलोकम् अगच्छत्। तत्र च महोदयाख्यायां सभायाम् इन्दुकान्तमये महति पर्यङ्के तत् पुण्डरीकशरीरं स्थापयित्वा, माम् अवादीत्– कपिञ्जल! जानीहि मा चन्द्रमसम्। अहं खलु अनेन ते प्रियवयस्येन कामापधात् जीवितम् उत्सृजता निरपराधः संशप्तः– ''दुरात्मन् इन्दुहतक ! यथाहं त्वया करैः संताप्य प्राणैः वियोजितः, तथा त्वमपि भारतेवर्षेऽस्मिन् जन्मनि जन्मन्येव उत्पन्नानुरागः असंप्राप्तसमागमसुखः तीव्रतरां हृदयवेदनाम् अनुभूय जीवितम् उत्स्त्रक्षयसि'' इति। अहं तु, 'किमनेन अगणितात्मदोषेन निरागाः शप्तोऽस्मि' इत्युत्पन्नकोपः 'त्वमपि मत्तुल्यसुखदुःख एव भविष्यसि' इति प्रतिशापम् अस्मै प्रायच्छम्।**

शब्दार्थ– प्रत्यवादीत् = उत्तर दिया। कृतार्तप्रलापामपि = दुःख के साथ रोने वाली। एकाकिनीम् = अकेली को। उत्सृज्य = छोड़कर। अनुबन्धनन् = पीछा करता हुआ। उदपतम् = ऊपर चला गया। जवेन = वेग से। प्रतिवचनम् = उत्तर। अदत्वैव = दिये बिना ही। अतिक्रम्य = पार करके। महोदयाख्यायाम् = महोदय नाम की। महति पर्यङ्के = बहुत बड़ी शैय्या पर। स्थापयित्वा = रखकर। अवादीत् = कहा। जानीहि = समझो। चन्द्रमसम् = चन्द्रमा। प्रियवयस्येन = प्रिय मित्र ने। कामापराधात् = काम के दोष से। जीवितम् उत्सृजता = जीवन त्याग करने वाले। संशप्त = शाप दिया गया। करै संताप्य = किरणों से जलाकर। प्राणैः वियोजितः = प्राणों से अलग किया गया। जन्मनि जन्मनि = कई जन्मों में। उत्पन्नानुरागः = प्रेम हो जाने पर। असम्प्राप्तसमागमसुखः = मिलन का सुख पाये बिना। तीव्रतराम् = कठिन। हृदयवेदनाम् = हृदय की पीड़ा। अनुभूय = अनुभव करके। जीवितम् = जीवन को। उत्स्त्रक्ष्यसि = छोड़ोगे। अगणितात्मदोषेण = अपना दोष न देखने वाले। निरागाः = निरपराध। शप्तोस्मि = शाप दिया गया हूँ। उत्पन्नकोपः = क्रोधः आ जाने से। प्रतिशापम = शाप के बदले शाप, प्रायच्छम् = दिया।

हिन्दी अनुवाद– कपिंजल ने कहा– गन्धर्वराज पुत्रि महाश्वेते! सुनो– मैं दुःख के साथ रोती हुई आपको अकेली छोड़कर उस पुरुष का पीछा करते हुए वेग से ऊपर चलता गया। वह मेरी बातों का उत्तर दिये बिना ही तारों को पार करके चन्द्रलोक में चला गया। वहाँ महोदय नाम की सभा में इन्दुकान्तमणि की बहुत बड़ी शैय्या पर पुण्डरीक के शरीर को रखकर उसने मुझसे कहा–कपिंजल तुम मुझे चन्द्रमा समझो। तुम्हारे इस मित्र ने कामदोष से अपने प्राणों का परित्याग करते समय मुझे शाप दिया कि पापी चन्द्रमा तुमने अपनी किरणों से मुझे मार डाला है, अतः तुम भी इस भारतवर्ष में दो जन्म लेकर प्रेम उत्पन्न होने पर बिना समागम-सुख पाये हृदय की कठिन पीड़ा का अनुभव करके प्राणों का परित्याग करोगे। मुझे क्रोध आ गया और मैंने भी उसे शाप के बदले शाप दे दिया कि तुम्हें भी मेरे ही समान सुख-दुःख होगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कृतार्तप्रलापामपि = कृतःआर्तप्रलापः यया ताम्। अदत्वैव = अदत्व + एव। महोदयाख्यायाम् = महोदय + आख्याम्। उत्पन्नानुरागः = उत्पन्न + अनुरागः।

।। प्रश्नोत्तरः ।।

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. 'त्वमपि मत्तुल्यसुखदुःख एव भविष्यसि।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– तुम्हें भी मेरे ही तरह सुख-दुःख होगा।
प्रश्न 3. कः प्रत्यवादीत्?
उत्तर– कपिञ्जलः प्रत्यवादीत्।
प्रश्न 4. कः तं पुरुषं अनुबध्नन् जवेन उदपतम्?
उत्तर– कपिञ्जलः तं पुरुषं अनुबध्नन् जवेन उदपतम्।
प्रश्न 5. कस्य प्रतिवचनम् अदत्वैव चन्द्रलोकम् अगच्छत्?
उत्तर– कपिञ्जल्य प्रतिवचनम् अदत्वैव चन्द्रलोकम् आगच्छत्।

➥ **अपगतामर्षः विमृशन् महाश्वेताव्यतिकरमस्य अधिगतवानस्मि– ''वत्सा हि महाश्वेता, मन्मयूखसंभवात् अप्सरःकुलात् लब्धजन्मनि गौर्याम् उत्पन्ना। तया चायं भर्ता स्वयं वृतः। अनेन च स्वयं कृतादेव दोषात् मया सह मर्त्यलोके वरद्वयम् अवश्यम् उत्पत्तव्यम्। अन्यथा जन्मनि जन्मनि इत्येषा वीप्सा न चरितार्था भवति। तत् यावदयं शापदोषात् अपैति तावत् अस्य शरीस्य मा विनाशः भूत् इति मया इदम् उत्क्षिप्य समानीतम्। वत्सा च महाश्वेता समाश्वासिता। अधुना त्वं गत्वा एनं वृत्तान्तम् श्वेतकेतवे निवेदय। महाप्रभावोऽसौ कदाचित् अत्र प्रतिक्रियां कांचित् करोति'' इत्युक्त्वा मां व्यसर्जयत्।**

शब्दार्थ– अपगतामर्ष = जिसका क्रोध दूर हो गया। विमृशन् = विचार करते हुए। महाश्वेताव्यतिकरम् = महाश्वेता का सम्बन्ध। मन्मूखसम्भवात् = मेरी किरणों से उत्पन्न। अप्सरसः कुलात् = अप्सराओं के कुल से। लब्धजन्मनि = जन्म लेने वाली। स्वयं वृत्तः = स्वयं वरण कर लिया है। कृतादेव दोषात् = स्वयं किये दोषों से। वारद्वयम् = दो बार। उत्पतव्यम् = उत्पन्न होगा। इत्येषा वीप्सा = यह दो बार कहना। चरितार्था = सफल। शापदोषात् = शाप दोष से। अपैति = मुक्त होता है। मा विनाशः भूतः = विनाश न होवे। उत्क्षिप्य = उठकर। आनीतम् = लाया हूँ। समाश्वासिता = आश्वासन दी गई है। अधुना = अब गत्वा = जाकर। श्वेतकेतवे = श्वेतकेतु को। निवेदय = बताओ। महाप्रभावोऽसौ = वह महान् प्रभाव वाले। कदाचित् = शायद। प्रतिक्रियाम् = उपाय। कांचित् = कोई। व्यसर्जयत् = भेजा।

हिन्दी अनुवाद– क्रोध दूर हो जाने पर मैंने विचार किया कि महाश्वेता के साथ इसके सम्बन्ध को जान गया हूँ। पुत्री महाश्वेता मेरी किरणों से उत्पन्न अप्सराओं के कुल में जन्म लेने वाली गौरी से उत्पन्न हुई है। उसने इसे स्वयं पति रूप में वरण किया है। वह स्वयं अपने पापों से मेरे साथ मृत्युलोक में दो बार उत्पन्न होगा। नहीं तो जन्म-जन्म दो बार कहना चरितार्थ नहीं होगा। इसलिए शाप से मुक्त होने के समय तक इसका शरीर नष्ट न हो जाय, इसलिए मैं इसे उठाकर लाया हूँ। पुत्री महाश्वेता को भी आश्वासन दे दिया है। इस समय तुम जाकर यह समाचार श्वेतकेतु को सुनाओ। वह अत्यन्त प्रभावशाली हैं। सम्भवतः इसका कोई उपाय करें। ऐसा कहकर उन्होंने मुझे विदा दिया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अपगतामर्षः = अपगतः अमर्षः यस्य सः। मन्मयूखसम्भवात् = मन् + मयूखसम्भवात्। गत्वा = गम् +क्त्वा।

।। प्रश्नोत्तरः ।।

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. ''वत्सा हि महाश्वेता, मन्मयूखसंभवात् अप्सरः कुलात् लब्धजन्मनि गौर्याम् उत्पन्ना।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– पुत्री महाश्वेता मेरी किरणों से उत्पन्न अप्सराओं के कुल में जन्म लेने वाली गौरी से उत्पन्न हुई है।

प्रश्न 3. अपगतामर्षः कः?

उत्तर– अपगतामर्षः कपिञ्जलः।

प्रश्न 4. कः महाश्वेताव्यतिकरमस्य अधिगतवानस्ति?

उत्तर– कपिञ्जलः महाश्वेताव्यतिकरमस्य अधिगतवानस्ति।

प्रश्न 5. अप्सरःकुलात् लब्धजन्मनि गौर्यान् उत्पन्न का?

उत्तर– महाश्वेता अप्सरः कुलात् लब्धजन्मनि गौर्यान् उत्पन्ना।

➡ **अहं तु विना वयस्येन शोकावेगान्धः गीर्वाणवर्त्मनि प्रधावन् अतिक्रोधनं वैमानिकम् एकम् अलंघयम्। स तु दहन्निव निरीक्ष्य अब्रवीत्– ''दुरात्मन्! यदेवम् अतिविस्तीर्ण गगनमार्गे त्वया अहं तुरङ्गमेणेव उल्लंघितः, तस्मात् तुरङ्गम एव भूत्वा मर्त्यलोके अवतर'' इति। अहं तु तं कृताञ्जलिः अवदम्– 'भगवन्! वयस्यशोकान्धेन त्वं मया उल्लङ्घितः, नावज्ञया। तत्प्रसीद। उपसंहार शापम् इमम्'' इति। स तु मां पुनः अवादीत्– ''यन्मयोक्तं तत् नान्यथा भवितुमर्हति। तदेतत् ते करोमि। कियन्तमपि कालं यस्य वाहनताम् उपयास्यसि, तस्यैव अवसाने स्नात्वा विगतशापः भविष्यसि'' इति।**

शब्दार्थ– वयस्येन = मित्र के। शोकावेगान्धः = शोक के कारण अन्धा। गीर्वाणवर्त्मनि = आकाश मार्ग में। प्रधावन् = दौड़ते हुए। अतिक्रोधनम् = अत्यन्त क्रोधी। वैमानिकम् = विमान पर चढ़े देवता को। अलंघयम् = उल्लंघन किया। दहन् = जलता हुआ। निरीक्ष्य = देखकर। अति विस्तीर्ण = अत्यन्त चौड़े। तुरंगमेणेव = घोड़े की तरह। उल्लंघितः = उल्लंघन किया गया। भूत्वा = होकर। अवतर = उतरो। कृतांजलिः = हाथ जोड़कर। अवदम् = कहा। नावज्ञया = अपमान से नहीं। तत्प्रसीद = अतः कृपा करो। उपसंहर = हटाओ। नान्यथा = व्यर्थ नहीं। भवतुमर्हति = हो सकता। वाहनताम् उपयास्यसि = सवारी बनोगे। अवसाने = अन्त होने पर। विगतशापः = शाप रहित।

हिन्दी अनुवाद– मैंने मित्र के बिना शोक के आवेग में अंधा होकर आकाश मार्ग में दौड़ते हुए एक विमान पर बैठे देवता का उल्लंघन कर दिया जिससे वह जलता हुआ सा मेरी ओर देखकर बोला– दुष्ट, इतने चौड़े आकाशमार्ग के होते हुए भी तुमने घोड़े की तरह मेरा उल्लंघन किया है। इसलिए घोड़ा बनकर मृत्युलोक में जाओ। मैंने हाथ जोड़कर कहा– भगवन्! मित्र शोक में अन्धा होकर आपका उल्लंघन किया है, आपका अपमान करने के लिए नहीं। अतः कृपा करें शाप को दूर कीजिए। उसने फिर मुझसे कहा– मैंने जो कहा है व्यर्थ नहीं हो सकता। तुम्हारे लिए मैं इतना करता हूँ कि तुम बहुत समय तक जिसकी सवारी में रहोगे उसके मर जाने पर स्नान करके पापरहित हो जाओगे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– शोकावेगान्धः = शोक + आवेग + अन्धः। तुरंगमेणेव = तुरंगमेण + एव। भूत्वा = भू + क्त्वा। कृतांजलिः = कृत + अंजलिः। नावज्ञया = न + अवज्ञया। नान्यथा = न + अन्यथा।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''भगवन्! वयस्यशोकान्धेन त्वं मया उल्लङ्घितः।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– भगवान्! मित्र के शोक से अन्धा होकर मैंने आपका उल्लङ्घन किया है।

प्रश्न 3. कः बिना वयस्येन शोकावेगान्धः बभूव?

उत्तर– कपिञ्जल बिना वयस्येन शोकावेगान्धः बभूव।

प्रश्न 4. कः गीर्वाणवर्त्मनि प्रधावन् अतिक्रोधनं वैमानिकम् एकम् अलंघयत्।

उत्तर– कपिञ्जल गीर्वाणवर्त्मनि प्रधावन् अतिक्रोधनं वैमानिकम् एकम् अलंघयत्।

प्रश्न 5. कः तं कृताञ्जलिः अवदत्?

उत्तर– कपिञ्जलः तं कृताञ्जलिः अवदत्।

➡ **एवमुक्तस्तु तमहम् अवदम्– ''भगवन्! यद्येवम् ततः विज्ञापयामि। तेनापि मत्प्रियवयस्येन पुण्डरीकेण चन्द्रमसा सह शापदोषात् मर्त्यलोक एव उत्पत्तव्यम्। तत् एतावन्तमपि भगवान् प्रसादं करोतु मे दिव्येन चक्षुषा अवलोक्य,**

यथा– तुरङ्गमत्वेऽपि मत्प्रियवयस्येन सह अवियोगेन कालः यायात्'' इति।

शब्दार्थ– अवदम् = कहा। विज्ञापयामि = निवेदन करता हूँ। मत्प्रियवयस्येन = मेरे प्रिय मित्र से। चन्द्रमसा सह = चन्द्रमा के साथ। उत्पत्तव्यम् = उत्पन्न होगा। एतावन्तमपि = इतना भी। प्रसादं करोतु = कृपा करो। अवियोगेन = बिना वियोग के ही। कालः यायात् = समय बीते।

हिन्दी अनुवाद– मैंने शाप देनेवाले उस देवता से कहा कि भगवन् यदि ऐसा है तो आपसे निवेदन करता हूँ, मेरा प्रिय मित्र पुण्डरीक भी शाप के कारण चन्द्रमा के साथ मृत्युलोक में उत्पन्न होगा। अतः दिव्य नेत्रों से देखकर आप यह भी कृपा करें कि घोड़ा होने पर भी मित्र के साथ ही रहकर मेरा समय बीते।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– मत्प्रियवयस्येन = मत् + प्रियवयस्येन। एतावन्तमपि = एतावन्तम् + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'तुरङ्गमत्वेऽपि मत्प्रियवयस्येन सह अवियोगेन कालः यायात्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– अश्व होने पर भी मित्र के साथ ही रहकर मेरा समय बीते।

प्रश्न 3. कपिञ्जलः कम् अवदत्?

उत्तर कपिञ्जलः वैमानिकम् अवदत्।

प्रश्न 4. मत्प्रियवयस्येन पुण्डरीकेण केन सह शापदोषात् मर्त्यलोक एव उत्पत्तव्यम्?

उत्तर– मत्प्रियवयस्येन पुण्डरीकेण चन्द्रमसा सह शापदोषात् मर्त्यलोक एव उत्पत्तव्यम्।

प्रश्न 5. तुरङ्मत्वेऽपि केन सह अवियोगेन कालः यायात्?

उत्तर– तुरङ्मत्वेऽपि प्रियवयस्येन सह अवियोगेन कालः यायात्।

➥ **स तु एवम् उक्तः मुहूर्तमिव ध्यात्वा पुनः माम् अवादीत्– 'उज्जयिन्याम् अपत्यहेतोः तपस्यतः तारापीडनाम्नः राज्ञः चन्द्रमसा तनयत्वम् उपगन्तव्यम्। वयस्येनापि ते पुण्डरीकेण तन्मन्त्रिण एव शुकनासस्य। त्वमपि तस्य चन्द्रात्मनः राजपुत्रस्य वाहनताम् उपयास्यसि'' इति। अहं तु तद्वचनानन्तरमेव अधः स्थिते महोदधौ न्यपतम्। तस्माच्च तुरङ्गीभूयैव उदतिष्ठम्। संज्ञा तु मे तुरङ्गमत्वेऽपिम त्यपगता इति। येन अयं मया अस्यैवार्थस्य कृते किन्नरमिथुनानुसारी भूमिम् एताम् आनीतः देवश्चन्द्रमसोऽवतारः चन्द्रापीडः। योऽप्यसौ प्राक्तनानुरागसंस्कारात् अभिलषन् अजानत्या त्वया शापाग्निना निर्दग्धः स मे वयस्यस्य पुण्डरीकस्यावतारः'' इति।**

शब्दार्थ– उक्तः = कहे जाने पर। मुहूर्तमिव ध्यात्वा = थोड़ी देर तक ध्यान करके। माम् मुझको। अवादीत् = कहा। अपत्यहेतोः = सन्तान के लिए। तपस्यतः = तप करने वाले। तनयत्वम् = पुत्रत्व। उपगन्तव्यम् = प्राप्त होगा। वयस्येनापि = मित्र भी। वाहनताम् उपयास्यसि = सवारी बनोगे। तद्वचनानन्तरमेव = उसके कहने के बाद ही। अधः स्थिते = नीचे स्थित। महोदधौ = समुद्र में। न्यपतम् = गिरा। तस्माच्च = और उससे। तुरंगीभूय = घोड़ा बनकर। उदतिष्ठम् = निकला। संज्ञा = चेतना। न व्यपगता = नहीं गई। अस्यैवार्थस्य कृते = इसी काम के लिए। किन्नरमिथुनानुसारी = किन्नर घोड़े का पीछा करने वाले। भूमिम् एताम् = इस भूमि को। आनीतः = लाया गया। देवश्चन्द्रमसोऽवतारः = देव चन्द्रमा का अवतार। प्राक्तनानुरागसंस्कारात् = पूर्व प्रेम के संस्कार से। अभिलशन् = चाहते हुये। अजानन्त्या = न जानने वाली। शापाग्निना निर्दग्धः = शाप की अग्नि से जलाया गया है।

हिन्दी अनुवाद– मेरे ऐसा कहने पर उसने थोड़ी देर ध्यान करके फिर मुझसे कहा– उज्जयिनी में सन्तान के लिए तप करने वाले तारापीड नाम के राजा का पुत्र चन्द्रमा होगा और तुम्हारा मित्र पुण्डरीक उसके मन्त्री शुकनास का पुत्र होगा। तुम उसी चन्द्रमा के अवतार राजपुत्र चन्द्रापीड के वाहन बनोगे। मैं उसके यह कहने के साथ ही नीचे स्थित समुद्र में गिर पड़ा और घोड़ा होकर निकला। घोड़ा होने पर भी मुझे पूर्व जन्म की चेतना नहीं गई थी। इसी कार्य के लिए किन्नरों का पीछा करने वाले चन्द्रमा के अवतार चन्द्रापीड को मैं इस स्थान पर ले आया था। पूर्व जन्म के प्रेम के संस्कार के कारण तुम्हारी कामना करने वाला यह अनजान में जो तुम्हारे द्वारा शाप की अग्नि में जला डाला गया है वह मेरे मित्र पुण्डरीक का ही अवतार था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– मुहूर्तमिव = मुहूर्तम् + इव। वयस्येनापि = वयस्येन + अपि। तद्वचनानन्तरमेव = तत् + वचन + अन्तरम् + एव। तस्माच्च = तस्मात् + च। देवश्चन्द्रमसोऽवतारः = देवः + चन्द्रमसः + अवतारः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'त्वमपि तस्य चन्द्रात्मनः राजपुत्रस्य वाहनताम् उपयास्यसि।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– तुम भी उसी चन्द्रमा के अवतार राजपुत्र चन्द्रापीड के वाहन बनोगे।

प्रश्न 3. तारापीडः कः आसीत्?

उत्तर– तारापीडः उज्जयिन्यां राज्ञः आसीत्।

प्रश्न 4. चन्द्रमा कस्य तनयं भविता?

उत्तर– चन्द्रमा राज्ञतारापीडस्य तनयं भविता।

प्रश्न 5. पुण्डरीकः कस्य तनयं भविता?

उत्तर– पुण्डरीकः शुकनासस्य तनयं भविता।

➥ **एतत् श्रुत्वा "हा देव पुण्डरीक! जन्मान्तरेऽपि अविस्मृतमदनुराग! लोकान्तरगतस्यापि ते अहमेव राक्षसी विनाशायोपजाता" इत्युन्मुक्तार्तनादा महाश्वेताम् कपिञ्जलः पुनरवादीत्–"गन्धर्वराजपुत्रि! कस्तवात्र दोष? यथा च शापदोषात् इदमुपनतम् भवत्योः द्वयोरपि दुःखम् तथा मया कथितमेव। चन्द्रमसोऽपि भारती भवतीभ्यां श्रुतैव। भवत्या अङ्गीकृतं तपः तदेव अनुबध्यताम्" इति।**

शब्दार्थ– जन्मान्तरे अपि = दूसरे जन्म में भी। अविस्मृतमदनुरागः = मेरे प्रेम को न भूलने वाले। लोकान्तरगतस्यापि = दूसरे लोक में जाने पर भी। विनाशायोपजाता = विनाश के लिए उत्पन्न हुई। उन्मुक्तार्तनादाम् = चिल्लाकर रोने वाली। कस्तवात्र = इसमें तुम्हारा कौन। शापदोषात् = शाप के दोष से। इदमुपनत् = यह हुआ है। भवत्योः द्वयोरपि = आप दोनों को। भारती = वाणी। भवतीभ्याम् = आप दोनों। अनुबध्यताम् = निर्वाह कीजिए।

हिन्दी अनुवाद– यह सुनकर, हा देव पुण्डरीक! दूसरे जन्म में भी मेरे प्रेम को न भूलने वाले, दूसरे लोक में चले जाने वाले, आपके विनाश के लिए ही मुझ राक्षसी का जन्म हुआ। इस प्रकार चिल्लाकर रोने वाली महाश्वेता से कपिंजल ने फिर कहा– गन्धर्वराजपुत्री, इसमें तुम्हारा दोष ही क्या है? शाप के कारण जिस प्रकार आप दोनों को यह दुःख मिला है उसे मैंने कहा है। चन्द्रमा की वाणी आप लोगों ने सुनी ही है। आपने जिस तप को स्वीकार किया है उसका निर्वाह कीजिए।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अविस्मृतमत् + अनुरागः। कस्तवात्र = कः + तव + अत्र। उन्मुक्तार्तनादाम् = उन्मुक्ते + आर्तनादाम्। द्वयोरपि = द्वयोः + अपि।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. "जन्मान्तरेऽपि अविस्मृतमदनुराग! लोकान्तरगतस्यापि ते अहमेव राक्षसी विनाशायोपजाता।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– दूसरे जन्म में भी मेरे प्रेम को न भूलने वाले, दूसरे लोक में चले जाने वाले आप के विनाश के लिए ही मुझ राक्षसी का जन्म हुआ।

प्रश्न 3. "हा देव पुण्डरीक! जन्मान्तरेऽपि अविस्मृतमदनुराग!" कस्याः उक्तिः?

उत्तर– महाश्वेतायाः उक्तिः।

प्रश्न 4. कया अङ्गीकृतं तपः?

उत्तर– महाश्वेतया अङ्गीकृतं तपः।

प्रश्न 5. कस्य अनुबध्यताम्?

उत्तर– "भवत्या अङ्गीकृतं तपः तदेव अनुबध्यताम्।"

➥ **अथ कादम्बरी कपिञ्जलम् अप्राक्षीत्–''भगवन्! पत्रलेखया त्वया च अस्मिन् सरसि जलप्रवेशः कृतः। तत् किम् तस्याः संवृत्तम्? इत्यावेदनेन प्रसादं करोतु भवान्'' इति। स तु प्रत्यवादीत्–''राजपुत्रि! सलिलपातानन्तरम् न कश्चिदपि तद्वृत्तान्तः मया ज्ञातः। तत् अधुना क्व चन्द्रापीडस्य जन्म? क्व वैशम्पायनस्य? किं वास्याः पत्रलेखायाः वृत्तम्? सर्वस्यास्य वृत्तान्तस्य अवगमनाय भगवतः श्वेतकेतोः पादमूले गमिष्यामि'' इत्यभिदधान एव गगनम् उदपतत्।**

शब्दार्थ– अप्राक्षीत् = पूछा। जलप्रवेशः कृतः = जल में प्रवेश किया। तस्याः = उसका। संवृत्तम् = हुआ। आवेदनेन = बताकर। सलिलपातानन्तरम् = जल में प्रवेश करने के बाद। तद्वृत्तान्तः = उसका समाचार। अवगमनाय = जानने के लिए। इत्यभिदधानः एव = ऐसा कहते हुए। उदपतत् = उड़ गया।

हिन्दी अनुवाद– इसके बाद कादम्बरी ने कपिंजल से पूछा– भगवन्! पत्रलेखा और आपने इस तालाब के जल में प्रवेश किया। फिर उसका (पत्रलेखा का) क्या हुआ? यह मुझे बताने की कृपा करें। उसने उत्तर दिया– राजपुत्रि! जल में प्रवेश करने के बाद उसका कोई भी समाचार मैं न जान सका। इस समय चन्द्रापीड का जन्म कहाँ हुआ है? वैशम्पायन का जन्म कहाँ हुआ है? पत्रलेखा की क्या दशा है? इन सभी वृत्तान्तों को जानने के लिए मैं भगवान् श्वेतकेतु के पास जा रहा हूँ। ऐसा कहते हुए वह आकाश में उड़ गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– सलिलपातानन्तरम् = सलिलपात् + अनन्तरम्। तद्वृत्तान्तः = तत् + वृत्तान्तः। इत्यभिदधानः = इति + अभिदधानः।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. ''तत् अधुना क्व चन्द्रापीडस्य जन्म?'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– इस समय चन्द्रापीड का जन्म कहाँ हुआ है।
प्रश्न 3. कादम्बरी किम् अप्राक्षीत्?
उत्तर– कादम्बरी कपिञ्जलम् अप्राक्षीत्।
प्रश्न 4. कः भगवतः श्वेतकेतोः पादमूले जगाम?
उत्तर– कपिञ्जलः भगवतः श्वेतकेतोः पादमूले जगाम।
प्रश्न 5. कः गगनम् उदपतत्?
उत्तर– कपिञ्जलः गगनम् उदपतत्।

➥ **अथ कादम्बरी तां निर्विकारवदनाम् चन्द्रापीडतनुम् कस्मिंश्चित् शिलातले स्थापयित्वा स्नानशुचिः भूत्वा देवतोचिताम् अपचितिं संपाद्य, निराहारा दिवसम् अनयत्। यथैव दिवसम् तथैव मेघोपरोधभीमाम् क्षपामपि समुपविष्टैव क्षपितवती। अन्येद्युश्च महाश्वेतया उपनीतानि फलानि तया सहैव उपभुक्तवती। अथ च मदलेखाम् अवादीत्- ''प्रियसखि! देवस्य शरीरम् इदम् उपचरन्तीभिः अस्माभिः आशापक्षयात् अत्र स्थातव्यम्। तत् इमम् अत्यद्भुतं वृत्तान्तम् तातस्य अम्बायाश्च गत्वा निवेदय। यथा माम् एवंविधाम् आगत्य न पश्यतः तथा करिष्यसि''। इत्यभिधाय ताम् व्यसर्जयत्। गत्वा आगतया च तया, ''प्रियसखि! सिद्धं ते अभिवाञ्छितम्। एवं सन्दिष्टम् तातेन अम्बया च– शापावसाने जामात्रा सहैव आनन्दवाष्पनिर्भरम् आननम् ते द्रक्ष्यावः'' इति आवेदिते निर्वृतेन अन्तरात्मना अतिष्ठत्।**

अथ कादम्बरी .... गत्वा निवेदय। (2020 ZR)

शब्दार्थ– निर्विकारवदनाम् = शान्तमुखवाले। चन्द्रापीडतनुम् = चन्द्रापीड के शरीर को। स्थापयित्वा = रखकर। स्नानशुचिः = स्नान से पवित्र। देवोचिताम् = देवता के योग्य। अपचितिम् = पूजा। संपाद्य = करके। निराहारः = बिना भोजन के ही। अनयत् = बिताया। मेघोपरोधभीमाम् = बादलों के व्याप्त हो जाने से भयंकर। क्षपाम् = रात को। समुपविष्टैव = बैठी ही। क्षपितवती = बिता दिया। उपचरन्तीभिः = सेवा करती हुई। आशापक्षयात् = शाप के नष्ट होने तक। स्थातव्यम् = रहना चाहिए। अत्यद्भुतं वृत्तान्तम् = अति अद्भुत समाचार को। अम्बायाः = माता को। निवेदय = बताओ। एवम् विधाम् = इस प्रकार की। इत्यभिधाय = ऐसा कहकर।

व्यसर्जयत् = विदा किया। जामात्रा सहैव = दामाद के साथ ही। आनन्दवाष्पनिर्भरम् = आनन्द के आँसुओं से पूर्ण। आननम् ते = तुम्हारा मुख। द्रक्ष्यावः = देखेंगे। आवेदिते = ऐसा कहने पर। निर्वृतेन अन्तरात्मना = निश्चिन्त हृदय से। अतिष्ठित् = रहने लगी।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् कादम्बरी ने शान्त मुखवाले चन्द्रापीड के शरीर को किसी शिला पर रखकर स्नान से पवित्र हो देवोचित पूजा करके बिना कुछ खाये-पीये उस दिन को बिता दिया और जिस प्रकार दिन बिताया उसी प्रकार बादलों के घिर आने से भयंकर रात को भी बैठे ही बैठे बिता दिया। दूसरे दिन महाश्वेता द्वारा लाये गये फलों को उसी के साथ खाया। इसके बाद मदलेखा से कहा– देव चन्द्रापीड के शरीर की सेवा करती हुई हम लोगों को शाप का अन्त होने के समय तक यहाँ रहना चाहिए। इसलिए इस अद्भुत वृत्तान्त को तुम पिता और माता के पास जाकर बतला दो और ऐसा प्रयत्न करो कि वह लोग मुझे यहाँ आकर इस स्थिति में न देखें। ऐसा कहकर उसे भेज दिया। वहाँ जाकर लौटने के पश्चात् मदलेखा ने कहा कि प्रिय सखि, तुम्हारा मनोरथ सफल हुआ। पिता ने यह सन्देश दिया है कि शाप के अन्त में दामाद के साथ आनन्दाश्रुपूर्ण तुम्हारे मुख को देखेंगे। उसके ऐसा कहने पर कादम्बरी निश्चिन्त मन से वहाँ रहने लगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– निर्विकारवदनाम् = निर्विकारं वदनम् यस्याः ताम्। स्नानशुचिः = स्नानेन शुचिः। मेघोपरोधभीमाम् = मेघानाम् उपरोधेन भीमा ताम्। अत्यद्भुतं = अति + अद्भुतं। इत्यभिधाय = इति + अभिधाय।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. उपर्युक्त गद्यांश किस मूल ग्रन्थ से उद्धृत है?

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश बाणभट्ट कृत कादम्बरी कथा से उद्धृत है।

प्रश्न 3. 'प्रियसखि! देवस्य शरीरम् इदम् उपचरन्तीभिः अस्माभिः आशापक्षयात् अत्र स्थातव्यम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– प्रियसखि! देव के शरीर की सेवा करती हुई हम लोगों को शाप के अन्त होने के समय तक यहाँ रहना चाहिए।

प्रश्न 4. कादम्बरी चन्द्रापीडतनुं कुत्र स्थापितवती?

उत्तर– कादम्बरी चन्द्रापीडतनुं कस्मिंश्चित् शिलातले स्थापितवती।

प्रश्न 5. कादम्बरी कथं दिवसम् अनयत्?

उत्तर– कादम्बरी निराहार दिवसम् अनयत्।

प्रश्न 6. कादम्बरी अन्येद्युः कया उपनीतानि फलानि उपभुक्तवती?

उत्तर– कादम्बरी अन्येद्युः महाश्वेतया उपनीतानि फलानि उपभुक्तवती।

➡ **अत्रान्तरे चन्द्रापीडः चिरयति इति उत्ताम्यता तारापीडेन वार्ताहराः प्रहिताः। ते च कादम्बरीतुखात् सर्वं वृत्तान्तम् अधिगम्य प्रतिनिवृत्य तारापीडाय राज्ञे यथादृष्टं यथाश्रुतं च सर्वम् निवेदयामासुः। श्रुत्वा च विस्मयेन कुतूहलेन शोकेन चाविष्टम् तारापीडं शुकनासः प्रोवाच– "देव! विचित्रेऽस्मिन् संसारे किं किं संभाव्यते। सर्वम् आगमप्रामाण्यात् अभ्युपगतमेव। मुद्राबन्धनात् ध्यानाद्वा विषप्रसुप्तस्य उत्थापनम्। अयस्कान्तस्य चायस्समाकर्षणम्। वैदिकैः अवदिकैर्वा मन्त्रैः कर्मसु सिद्धिः। आगमेषु च पुराणरामायणभारतादिषु बहुप्रकाराः शापवार्ताः श्रूयन्ते। तद्यथा-नहुषस्य राजर्षेः अगस्त्यशापात् अजगरता सौदासस्य वसिष्ठसुतशापात् मानुषादत्वम्। ययातेः असुरगुरुशापात् तारुण्य एव जरसा भङ्गः। त्रिशंकोः पितृशापात् चाण्डालभाव इति।**

शब्दार्थ– अत्रान्तरे = इसी बीच। चिरयति = विलम्ब करता है। उत्ताम्यता = संतप्त हृदय वाले। वार्ताहराः = समाचार ले जाने वाले। प्रहिताः = भेजे। कादम्बरीमुखात् = कादम्बरी के मुँह से। अधिगम्य = जानकर। प्रतिनिवृत्य = लौटकर। यथादृष्टन् = जैसा देखा। यथाश्रुतम् = जैसा सुना। निवेदयामासुः = निवेदन किये। आविष्टम् = पूर्ण होकर। संभाव्यते = हो सकता है। आगमप्रमाणात् = शास्त्रों के प्रमाण से। अभ्युपगतमेव = स्वीकृत है / मानी गई है। मुद्राबन्धात् ध्यानाद्वा = ध्यान व पूजा की मुद्राओं से। विषप्रसुप्तस्य = विष से सोये हुए। उत्थापनम् = उठाना, जगाना। अयस्कान्तस्य = चुम्बक लोहा। अयस्समाकर्षणम् = लोहे का खींचना। अवैदिकैः = लौकिक। कर्मसु = कर्मों में। श्रूयन्ते = सुनी जाती हैं। अजगरता = अजगर बनना। मानुषादत्वम् = मनुष्य का भोजन करने वाला (नर-भक्षी)। असुरगुरुशापात् = शुक्र के शाप से। तारुण्ये एव = जवानी में ही। जरसा भंगः = बुढ़ापा से बूढ़ा होना। चाण्डालभावः = चाण्डाल बनना।

हिन्दी अनुवाद– इसी बीच चन्द्रापीड को अधिक देर करने पर दुःखी होकर तारापीड ने उसके पास सन्देशवाहकों को भेजा। उन्होंने कादम्बरी के मुख से सारी बातें जानकर लौट करके राजा तारापीड को सुनायी। यह सुनकर आश्चर्य और कुतूहल तथा शोक से पूर्ण राजा तारापीड से मंत्री शुकनास ने कहा– राजन्, इस विचित्र संसार में क्या-क्या नहीं हो सकता? शास्त्रों के प्रमाण के अनुसार सभी कुछ हुआ है। मुद्राओं तथा ध्यान द्वारा विष से अचेत होश में आये हैं। वैदिक या लौकिक मन्त्रों से कार्य की सिद्धि हुई है। वेदों, पुराणों, रामायण, महाभारत आदि में बहुत प्रकार के शाप की कथायें सुनी जाती हैं। जैसे अगस्त्य के शाप से राजा नहुष का अजगर बनना, वशिष्ठपुत्र के शाप से सौदास का नरभक्षी होना, शुक्र के शाप से ययाति का जवानी में ही बुढ़ापे से टेढ़ा होना, पिता के शाप से त्रिशंकु का चांडाल बनना आदि।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– अत्रान्तरे = अत्र + अन्तरे। अभ्युपगतमेव = अभि + उपगतम् + एव। अयस्समाकर्षणम् = अयस् + समाकर्षणम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''देव! विचित्रेऽस्मिन् संसारे किं किं संभाव्यते।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– महाराज! इस विचित्र संसार में क्या-क्या नहीं हो सकता है?

प्रश्न 3. उत्ताम्यता तारापीडेन कस्याः समीपे वार्ताहराः प्रतिहताः?

उत्तर– चन्द्रापीडस्य समीपे वार्ताहराः प्रतिहताः।

प्रश्न 4. सर्वहराः कस्याः मुखात् सर्वं वृत्तान्तं ज्ञातः?

उत्तर– सर्वहराः कादम्बरीमुखात् सर्वं वृत्तान्तं ज्ञातः।

प्रश्न 5. शुकनासः किं प्रोवाच?

उत्तर– शुकनासः प्रोवाच–''देव! विचित्रेऽस्मिन् संसारे किं किं संभाव्यते।''

➥ **श्रूयते च स्वर्गलोकनिवासी महाभिषः भूमौ शान्तनुः उत्पन्नः गङ्गायाम् वसूनाम् अष्टानाम् उत्पत्तिः। तिष्ठन्तु तावदन्ये। अयमादिदेवः भगवान् अज एव जमदग्नेः आत्मजाताम् उपगतः, पुनश्चतुर्धा आत्मानं विभज्य राजर्षेः दशरथस्य तथैव मथुरायां वसुदेवस्य। तन्मनुष्येषु देवानाम् उत्पत्तिः नैवासंभाविनी। अपि च, गर्भारम्भसंभवे देव्या वदने विशन् चन्द्रमा एव दृष्टः। तथा ममापि स्वप्ने पुण्डरीकस्य दर्शनम् समुपजातम्। विनष्टयोः तयोः कथं पुनः जीवितप्रतिलम्भः इत्यत्रापि अमृतमेव कारणम् आवेदितम्। तच्च चन्द्रमसि विद्यते। तत् अस्मिन् वस्तुनि न मनागपि शोकः कार्यः'' इत्युक्तवति शुकनाशे सशोक एव राजा सद्य एव गमनसंविधानम् अकरायत्।**

(2019 CZ)

शब्दार्थ– महाभिषः = महाभिष नाम का राजा। वसूनाम् अष्टानाम् = आठ वसुओं का। तिष्ठन्तु तावदन्ये = दूसरों की बात छोड़िये। अयमादिदेवः = यह आदि देवता। अज = ब्रह्मा। आत्मजताम् उपगतः = पुत्र रूप में उत्पन्न हुए। चतुर्धा = चार भाग में। विभज्य = बाँटकर। नैवासंभाविनी = असम्भव नहीं है। देव्याः वदने = देवी के मुख में। विशन् = प्रवेश करते हुए। पुण्डरीकस्य = श्वेतकमल का। समुपजातम् = हुआ। जीवितप्रतिलम्भः = पुनः जीवित होना। आवेदितम् = बताया गया है। चन्द्रमसि = चन्द्रमा में। मनागपि = थोड़ी भी। वस्तुनि = विषय में। उक्तवति = कहने पर। सद्यः = शीघ्र ही। संविधानम् = जाने की तैयारी। अकारयत् = कराया।

हिन्दी अनुवाद– ऐसा सुना जाता है कि स्वर्गवासी महाभिष नाम के राजा पृथ्वी पर शान्तनु हुए थे। उन्हीं द्वारा गंगा से आठ वसुओं का जन्म हुआ था। दूसरों की बात छोड़िए, यह आदि देवता ब्रह्मा भी जमदग्नि के पुत्र बने थे। इसी प्रकार अपने को चार भागों में बाँटकर दशरथ के पुत्र तथा मथुरा में वसुदेव के पुत्र हुए थे। अतः मनुष्यों में देवताओं की उत्पत्ति असम्भव नहीं है। इसके अतिरिक्त गर्भ के आरम्भ के समय आपने देवी के मुख में चन्द्रमा को प्रवेश करते हुए देखा था और मैंने स्वप्न में पुण्डरीक का दर्शन किया था। नष्ट हुए उन दोनों को फिर से जीवन मिलने का कारण अमृत बताया गया है, वह चन्द्रमा विद्यमान है। इसलिए इस विषय में आप कुछ भी शोक न करें। शुकनास के ऐसा कहने पर शोक के साथ राजा शीघ्र ही प्रस्थान की तैयारी करने लगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तावदन्ये = तावत् + अन्ये। अयमादिदेवः = अयम् + आदिदेवः। नैवासंभाविनी = न + एव + संभाविनी।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. 'तन्मनुष्येषु देवानाम् उत्पत्तिः नैवासंभाविनी।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– मनुष्यों में देवताओं का उत्पन्न होना असम्भव नहीं है।
प्रश्न 3. कस्य नाम्नः राज्ञः भूमौ शान्तनुः उत्पन्नः?
उत्तर– स्वर्गलोकनिवासी महाभिषः नाम्नः राज्ञः भूमौ शान्तनुः उत्पन्नः।
प्रश्न 4. कः जमदग्नेः आत्मजातम् उपगतः?
उत्तर– आदिदेव भगवान अज जमदग्नेः आत्मजातम् उपगतः।
प्रश्न 5. कस्याम् अष्टानाम् वसुनाम् उत्पत्तिः?
उत्तर– गङ्गायाम् अष्टानाम् वसुनाम् उत्पत्तिः।
प्रश्न 6. गर्भारम्भसंभवे कया वदने विशन् चन्द्रमा एव दृष्टः?
उत्तर– गर्भारम्भसंभवे देव्या वदने विशन् चन्द्रमा एव दृष्टः।
प्रश्न 7. कः स्वप्ने पुण्डरीकस्य दर्शनम् उपजातम्?
उत्तर– शुकनासः स्वप्ने पुण्डरीकस्य दर्शनम् उपजातम्।

➥ **अथ उत्ताम्यता हृदयेन राजा सततम् अविच्छिन्नैः प्रयाणकैः आससाद महाश्वेताश्रमम् । अथ सहसैव तत् चन्द्रापीडगुरुजनागमनम् आकर्ण्य, धावित्वा ह्रिया महाश्वेता गुहाभ्यन्तरमविशत्। चित्ररथतनयापि लज्जावनम्रमुखी प्रतिपत्तिमूढा परवत्येव मदलेखया यथाक्रमम् अकारयत वन्दनं गुरूणाम्। नरपतिस्तु अनतिक्रमणीया नियतिरिति कृत्वा संनिहितान्यपि परित्यज्य सर्वसुखानि तपस्विजनोचिताः क्रियाः कुर्वन् सपरिवारः समं देव्या शुकनासेन च तत्रैव अतिष्ठत्।**

शब्दार्थ– उत्ताम्यता हृदयेन = सन्तप्त हृदय से। सततम् = निरन्तर। अविच्छिनैः प्रयाणकैः = लगातार प्रस्थानों से। महाश्वेताश्रमम् = महाश्वेता के आश्रम को। आससाद = पहुँचा। चन्द्रापीडगुरुजनागमनम् = चन्द्रापीड के गुरुजनों का आगमन। आकर्ण्य = सुनकर। धावित्वा = दौड़कर। हिया = लज्जा से। गुहाभ्यन्तरम् = गुफा के बीच। चित्ररथतनयापि = चित्ररथ की पुत्री कादम्बरी भी। लज्जावनम्रमुखी = लज्जा से सिर झुकाकर। प्रतिपत्तिमूढ़ा = कर्त्तव्यज्ञान से रहित। परवत्येव = पराधीन-सी। मदलेखया = मदलेखा द्वारा। अकारयत = कराया। अनतिक्रमणीया = अनुल्लंघनीय। नियतिः = भाग्य। सन्निहितान्यपि = समीप में ही उपस्थित। सर्वसुखानि = सारे सुख को। तपस्विजनोचिताः = तपस्वी लोगों के योग्य। क्रियाः कुर्वन् = कार्य करते हुए। समम् देव्या = देवी के साथ।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् दुःखी हृदय से राजा निरन्तर बिना विश्राम के चलते हुए महाश्वेता के आश्रम में पहुँचे। अकस्मात् चन्द्रापीड के गुरुजनों (माता-पिता) का आना सुनकर महाश्वेता लज्जा के कारण दौड़कर गुफा के भीतर चली गई। कादम्बरी ने भी लज्जा से सिर झुकाकर तत्कालोचित कर्त्तव्यज्ञान से रहित पराधीन-सी होकर मदलेखा द्वारा क्रमशः गुरुजनों की वन्दना कराई। भाग्य को अनुल्लंघनीय जानकर राजा भी सभी सुलभ सुखों को छोड़कर तपस्वियों के योग्य क्रियायें करते हुए सपरिवार देवी विलासवती तथा शुकनास के साथ वहीं रहने लगे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– चन्द्रापीडगुरुजनागमनम् = चन्द्रापीडस्य गुरुजनानाम् आगमनम्। गुहाभ्यन्तरम् = गुहा + अभि + अन्तरम्। चित्ररथतनयापि = चित्ररथस्य + तनया + अपि। परवत्येव = परवत्य + एव।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. ''अथ उत्ताम्यता हृदयेन राजा सततम् अविच्छिन्नैः प्रयाणकैः आससाद महाश्वेताश्रमम्।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– इसके पश्चात् दुःखी हृदय से राजा निरन्तर विश्राम रहित यात्रा से महाश्वेता के आश्रम में पहुँचे।

प्रश्न 3. राजा तारापीडः कुत्र आससाद?

उत्तर– राजा तारापीडः महाश्वेताश्रमम् आससाद।

प्रश्न 4. के चन्द्रापीडगुरुजनागमनम् अशृणोत्?

उत्तर– महाश्वेता चन्द्रापीडगुरुजनागमनम् अशृणोत्।

प्रश्न 5. का धावित्वा ह्रिया गुहाभ्यान्तरमविशत्?

उत्तर– महाश्वेता धावित्वा ह्रिया गुहाभ्यन्तरमविशत्।

➥ **एवं कथयित्वा भगवान जाबालिः स्मितं कृत्वा हारीतप्रमुखान् सर्वान् अवादीत् ''दृष्टं कथारसस्य चित्ताक्षेपसामर्थ्यम्। यत् कथयितुं प्रवृत्तोऽस्मि तत् परित्यज्यैव कथारसात् अतिदूरम् अतिक्रान्तोऽस्मि। यः स कामोपहतचेताः स्वयं कृतादेव अविनयात् दिव्यलोकतः परिभ्रश्य, मर्त्यलोके वैशम्पायननामा शुकनाससूनुः अभवत्, स एवैष पुनः स्वयंकृतेन अविनयेन अस्यां शुकजातौ पतितः'' इति। एवं वदत्येव भगवति जाबालौ सुप्तप्रबुद्धस्येव मे पूर्वजन्मोपार्जिताः सर्वाः विद्याः जिह्वाग्रे अभवन्। मनुजस्येव चेयं विस्पष्टा भारती समुत्पन्ना। मनुष्यशरीरात् ऋते सर्वमन्यत् महाश्वेतानुरागादिकम् उपगतम्। अथ भगवान् जाबालिः ''अहो प्रभातप्राया रजनी'' इत्युक्त्वा गोष्ठीं भङ्क्त्वा उदतिष्ठत्।** (2017 NG)

शब्दार्थ– स्मितं कृत्वा = मुसकराकर। अवादीत् = कहा। कथारसस्य = कथा से रस के। चित्ताक्षेपसामर्थ्यम् = मन को खींच लेने की शक्ति। दृष्टम् = देखा। यत् कथयितुम् = जो कहने के लिए। प्रवृत्तोऽस्मि = लगा हुआ हूँ। अतिक्रान्तोऽस्मि = चला आया हूँ। कामोपहतचेताः = काम से नष्ट ज्ञान वाला। कृतादेव = किये हुए। अविनयात् = पाप से। दिव्यलोकतः = देवता के लोक से। परिभ्रश्य = भ्रष्ट होकर। शुकनाससूनुः = शुकनास का पुत्र। शुकजातौ = सुग्गे की योनि में। एवं वदत्येव = ऐसा कहते ही। सुप्तप्रबुद्धस्येव = सोकर जगे हुए के समान। पूर्वजन्मोपार्जिताः = पूर्व जन्म में प्राप्त की गई। जिह्वाग्रे अभवन् = याद हो गयी। मनुजस्येव = मनुष्य के समान। विस्पष्टा भारती = स्पष्ट वाणी। मनुष्यशरीरात् ऋते = मानव शरीर छोड़कर। सर्वमन्यत् = और सब। उपगतम् = याद हो गई। गोष्ठी भङ्क्त्वा = गोष्ठी भंग करके। उदतिष्ठत् = उठे।

हिन्दी अनुवाद– इस प्रकार कहकर भगवान् जाबालि ने मुसकराकर हारीत इत्यादि सभी श्रोताओं से कहा– मन को हरण कर लेने वाली कथा के रस की शक्ति आप लोगों ने देख ली। मैं जो कह रहा था उसे छोड़कर कथारस में बहुत दूर तक चला गया हूँ। कामवासना से नष्टज्ञान वह अपने ही किये पापों के कारण स्वर्गलोक से भ्रष्ट होकर मृत्युलोक में शुकनास का पुत्र वैशम्पायन हुआ था और वही फिर अपने ही पापों से इस सुग्गे की योनि में आया है। भगवान् जाबालि के ऐसा कहते ही सोकर जगे हुए के समान मेरे पूर्वजन्म की सारी विद्यायें याद हो गयीं। मनुष्य के समान यह चेष्टा और वाणी भी उत्पन्न हो गई। मनुष्य शरीर को छोड़कर महाश्वेता का अनुराग आदि सब प्राप्त हो गया। अरे प्रातःकाल हो गया। ऐसा कहकर गोष्ठी भंग करके भगवान् जाबालि उठ खड़े हुए।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कृत्वा = कृ + क्त्वा। प्रवृत्तोऽस्मि् = प्रवृत्तः + अस्मि। कामोपहतचेताः = कामेन उपहतः चेतः यस्य सः। वदत्येव = वदति + एव। जिह्वाग्रे = जिह्वा + अग्रे। मनुजस्येव = मनुजस्य + एव।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. ''मनुजस्येव चेयं विस्पष्टा भारती समुत्पन्ना।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– मनुष्य की तरह ही विशेष रूप से स्पष्ट वाणी भी उत्पन्न हो गई।

प्रश्न 3. हारीतः कः आसीत्?

उत्तर– हारीतः जाबालि मुनेः पुत्रः आसीत्।

प्रश्न 4. मर्त्यलोके शुकनासस्य पुत्रः कः अभवत्?

उत्तर– मर्त्यलोके शुकनासस्य पुत्रः वैशम्पायनः अभवत्।

प्रश्न 5. कः स्वयंकृते अविनयेन शुकजातौ पतितः?

उत्तर– वैशम्पायनः स्वयंकृते अविनयेन शुकजातौ पतितः।

➥ **उत्थिते जाबालौ समस्तैव सा परिषत् यथास्थानं जगाम। हारीतस्तु माम् आत्मपर्णशालां नीत्वा स्वशयनीयैकदेशे स्थापयित्वा प्रभातिकक्रियाकरणाय निर्ययौ। अथ कपिञ्जलः मम पितुः श्वेतकेतोः पादमूलात् आगत्य हारीतेन प्रवेशितः करद्वयेन उत्क्षिप्य माम् भूयसा मन्युवेगेन अरोदीत्। अहं तु तम् अवदम्– ''सखे कपिञ्जल! धन्योऽसि बालोऽपि त्वं न स्पृष्ट एव अमीभिः संसारदोषैः। उपविश्य तावत् कथय यथावृत्तम्। अपि कुशलं तातस्य। मद्वृत्तान्तम् आकर्ण्य किमुक्तवान्? कुपितो वा न वा'' इति। स त्वेवम् आख्यातवान्–सखे! कुशलं तातस्य, अयं च अस्मद्वृत्तान्तः प्रथमतरमेव तातेन दिव्येन चक्षुषा दृष्टः। दृष्ट्वा च प्रतिक्रियायै कर्म प्रारब्धम्।**

शब्दार्थ– उत्थिते = उठने पर। समस्तैव = सारी। सा परिषत् = वह सभा। जगाम = चली गई। आत्मपर्णशालाम् = अपनी झोपड़ी में। नीत्वा = ले जाकर। स्वशयनीयैकदेशे = अपने सोने की जगह के एक किनारे। प्राभातिक = प्रातःकाल की। करणाय = करने के लिए। निर्ययौ = चले गये। पादमूलात् = चरणों के पास से। आगत्य = आकर। उत्क्षिप्य = उठाकर। भूयसा = अत्यधिक। मन्युवेगेन = दुःख के वेग से। अरोदीत् = रोया। अमीभिः = इन। संसारदोषैः = सांसारिक वासनाओं से। उपविश्य = बैठकर। यथावृत्तम् = जो हुआ। आख्यातवान् = कहा। अस्मद्वृत्तान्तः = हम लोगों का समाचार। प्रथमतरमेव = पहले ही। तातेन = पिता द्वारा। चक्षुषा = नेत्रों द्वारा। प्रतिक्रियायै = उसकी शान्ति के उपाय के लिए। प्रारब्धम् = प्रारम्भ किया।

हिन्दी अनुवाद– जाबालि के उठ जाने पर सारी सभा यथास्थान चली गई। हारीत मुझे अपनी कुटिया में लाकर अपने बिछौने के एक किनारे रखकर प्रातःकालीन क्रियाओं को करने के लिए चले गये। इसके बाद कपिंजल ने मेरे पिता श्वेतकेतु के पास से लौटकर हारीत के साथ कुटिया में आकर दोनों हाथों से मुझे उठा लिया और वह अत्यन्त दुःख के साथ रोने लगा। मैंने उससे कहा– मित्र कपिंजल, तुम धन्य हो, बचपन से ही तुम इन सांसारिक वासनाओं से अछूते रहे हो, बैठकर सारा समाचार सुनाओ, पिता कुशल से हैं न? मेरा समाचार सुनकर उन्होंने क्या कहा? क्रुद्ध हुए अथवा नहीं? उसने मुझसे इस प्रकार कहा–पिताजी कुशल से हैं। पिताजी ने दिव्य दृष्टि से इस समाचार को पहले ही जान लिया था और उसी के लिए कार्य भी आरम्भ कर दिया था।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– समस्तैव = समस्ते + एव। स्वशयनीयैकदेशे = स्वशयनीये + एकदेशे। अस्मद्वृत्तान्तः = अस्मत् + वृत्तान्तः। प्रथमतरमेव = प्रथमतरम् + एव।

‖ प्रश्नोत्तरः ‖

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. '<u>धन्योऽसि बालोऽपि त्वं न स्पृष्ट एव अमीभिः संसारदोषैः।</u>' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– तुम धन्य हो, बालक होकर भी तुम इन सांसारिक दोषों से अछूते हो।

प्रश्न 3. उत्थिते जाबालौ समस्तैव सा परिषत् कुत्र जगाम?

उत्तर– उत्थिते जाबालौ समस्तैव सा परिषत् यथास्थं जगाम।

प्रश्न 4. हारीतः शुकं कुत्र अनैषीत्?

उत्तर– हारीतः शुकं पर्णशालाम् अनैषीत्।

प्रश्न 5. श्वेतकेतुः कः आसीत्?

उत्तर– श्वेतकेतुः वैशम्पायनस्य पिता आसीत्।

प्रश्न 6. कपिञ्जलः कुतः प्रत्यागत्?

उत्तर– कपिञ्जलः मम पितुः श्वेतकेतोः पादमूलात् प्रत्यागत्।

➥ **समारब्धे एव कर्मणि तुरगभावात् विमुक्तः गतोऽस्मि तस्य पादमूलम्। गत्वा च भयात् अनपसर्पन्तं माम् आहूय आज्ञापितवान्– 'वत्स कपिञ्जल! परित्यज्यतां स्वदोषशङ्का। बलवती हि भवितव्यता। शुकजातौ इदानीं सुहृत् ते पतितः। तत् गत्वापि तम् अद्य नैवं वेत्सि। नाप्यसौ त्वां वेत्ति। मया तु वत्सस्य कृते समारब्धम् आयुष्करं कर्म। अधुना सिद्धप्रायमेवेदम्। तत् अत्रैव तावत् स्थीयताम्' इति। अद्य च प्रातरेव आहूय माम् आज्ञापितवान्– ''वत्स कपिञ्जल! महामुनेः जाबालेः आश्रमं सुहृत् ते प्राप्तः। जन्मान्तरस्मरणं चास्योपजातम्। तत् गच्छ संप्रति तं द्रष्टुम्। मदीयया च आशिषा अनुगृह्य वक्तव्योऽसौ–'वत्स! यावदिदं कर्म परिसमाप्यते तावत् त्वया अस्मिन्नेव**

जाबालेराश्रमे स्थातव्यम्' इति। इत्युक्त्वा कपिञ्जलः क्षणमिव स्थित्वा 'सखे व्रजामि' इत्युक्त्वा अन्तरिक्षम् अतिक्रम्य क्वापि अदर्शनम् अगात्।

शब्दार्थ– तुरगभावात् = घोड़े की योनि से। अनपसर्पन्तम् = पास न जाने वाले। आहूय = बुलाकर। आज्ञापितवान् = आज्ञा दी। परित्यज्यताम् = छोड़ो। भवितव्यता = होनहार। शुकजातौ = सुग्गे की योनि में। इदानीम् = इस समय। जन्मान्तरस्मरणम् = दूसरे जन्म की याद। सम्प्रति = इस समय। मदीयया = मेरे। आशिषा = आशीर्वाद द्वारा। परिसमाप्यते = समाप्त होता है। अन्तरिक्षम् = आकाश को। अतिक्रम्य = लांघकर। क्वापि = कहीं। अदर्शनम् अगात् = लुप्त हो गया।

हिन्दी अनुवाद– कार्य के आरम्भ होने पर मैं घोड़े की योनि से मुक्त होकर उनके चरणों में पहुँचा था। मैं वहाँ जाकर मारे डर के उनके पास नहीं जा रहा था, फिर भी उन्होंने मुझे बुलाकर कहा– पुत्र कपिंजल! अपने अपराध की शंका छोड़ दो। होनहार बलवान है। इस समय तुम्हारा मित्र सुग्गे की योनि में पड़ा है। इसलिए तुम आज जानकर भी उसे न जान सकोगे। न वह तुम्हें जान सकेगा। मैंने पुत्र के जीवन के लिए कर्म आरंभ किया है। अब वह सिद्ध होने के निकट है। इसीलिए तब तक यहीं ठहरो। आज प्रातःकाल ही उन्होंने मुझे बुलाकर कहा कि पुत्र कपिंजल! महामुनि जाबालि के आश्रम में तुम्हारा मित्र है। उसे अब देखने जाओ और मेरा आशीर्वाद कहकर उससे कहना कि जब तक यह कर्म समाप्त नहीं हो जाता तब तक वह उसी जाबालि के आश्रम में ही रहे। ऐसा कहकर कपिंजल थोड़ी देर तक रुका और मित्र मैं जा रहा हूँ ऐसा कहकर आकाश में लुप्त हो गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– गतोऽस्मि = गतः + अस्मि। गत्वापि = गत्वा + अपि। नाप्यसौ = न + अपि + असौ। अत्रैव = अत्र + एव। चास्योपजातम् = च + अस्य + उपजातम्। यावदिदं = यावत् + इदं। अस्मिन्नेव = अस्मिन् + एव। इत्युक्त्वा = इति + उक्त्वा।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'बलवती हि भवितव्यता।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– होनहार निश्चय ही बलवान है।

प्रश्न 3. कः तुरगभावात् विमुक्तं बभूव?
उत्तर– कपिञ्जलः तुरगभावात् विमुक्तं बभूव।

प्रश्न 4. कपिञ्जलः तुरगभावात् विमुक्तः कस्य पादमूलम् अगमत्?
उत्तर– कपिञ्जलः तुरगभावात् विमुक्तः श्वेतकेतोः पादमूलम् अगमत्।

प्रश्न 5. 'बलवती हि भवितव्यता' इति कस्योक्तिः?
उत्तर– 'बलवती हि भवितव्यता' इति श्वेतकेतोः उक्तिः।

➥ **गते च तस्मिन्, हारीतेन प्रतिदिनम् आहारादिभिः उपचारैः संवर्ध्यमानः संजातपक्षोऽभवम् उत्पन्नोत्पतनसामर्थ्यश्च 'गमनक्षमस्तु संवृत्तोस्मि। नास्ति चन्द्रापीडोत्पत्तिपरिज्ञानम्। महाश्वेता पुनः सैवास्ते। भवतु, तत्रैव गत्वा तिष्ठामि' इति निश्चित्य एकदा प्रातर्विहारनिग्रत एव उत्तरां ककुभं गृहीत्वा अवहम्। अनभ्यस्तगमनतया स्तोकमेव गत्वा शिथिलितपक्षतिः कस्यचित् सरस्तीरतरुनिकुञ्जस्योपरि आत्मानम् अमुञ्चम्। ततश्च अध्वश्रमसुलभविनिद्राम् अगच्छम्। चिरादिव लब्धप्रबोधः बद्धम् आत्मानम् अपश्यम्। अग्रतश्च कालपुरुषमिव परुषं पुरुषम् अद्राक्षम्। आलोक्य च तम् आत्मनः उपरि निष्प्रत्याश एव अपृच्छम्– ''भद्र! कस्त्वम्? किमर्थं वा त्वया बद्धोऽस्मि?'' इति।**

शब्दार्थ– गते च तस्मिन् = उसके चले जाने पर। आहारादिभिः = भोजन आदि से। उपचारैः = सेवा से। संवर्ध्यमानः = बड़ा होकर। संजातपक्षः = पंखोंवाला। अभवम् = हुआ। उत्पन्नोत्पतनसामर्थ्यश्च = उड़ने योग्य। गमनक्षमः = जाने में समर्थ। चन्द्रापीडोत्पत्तिपरिज्ञानम् = चन्द्रापीड के उत्पन्न होने का ज्ञान। प्रातर्विहारनिर्गतः एव = प्रातःकाल विहार के लिए निकलकर। उत्तरां ककुभम् = उत्तर दिशा। अनभ्यस्तगमनतया = चलने का अभ्यास न होने के कारण। स्तोकमेव = थोड़ा ही। शिथिलितपक्षतिः = पंखों के शिथिल होने से। सरस्तीरतरुनिकुंजस्योपरि = तालाब के वृक्ष के कुंज के ऊपर। अमुञ्चम् = छोड़ दिया। अध्वश्रमसुलभविनिद्राम् = मार्ग की थकान के कारण नींद को। लब्धप्रबोधः = जागकर। बद्धम् = बँधा हुआ। कालपुरुषमिव = यमराज के समान। परुषम् = कठोर। अद्राक्षम् = देखा। निष्प्रत्याश एव = निराश होकर।

हिन्दी अनुवाद– उसके चले जाने पर हारीत के द्वारा प्रतिदिन भोजनादि सेवाओं को पाकर मैं बड़ा हुआ और मुझे पंख निकल आये। मुझमें उड़ने की शक्ति आ गई और मैं जाने योग्य हो गया। मुझे चन्द्रापीड की उत्पत्ति का ज्ञान नहीं था किन्तु महाश्वेता यहीं पर है तो वहीं चलकर रहूँ। ऐसा निश्चय करके प्रातःकाल विहार के लिए वहाँ से निकलकर उत्तर दिशा की ओर उड़ने लगा। उड़ने का अभ्यास न होने के कारण थोड़ी दूर ही जाने पर मेरे पंख शिथिल हो गये। इसीलिए मैं तालाब के किनारे वृक्ष के ऊपर बैठ गया। इसके बाद रास्ते की थकान के कारण मुझे नींद आ गई। बड़ी देर के बाद जब मैं जगा तो अपने को बँधा हुआ देखा और सामने यमराज के समान एक कठोर पुरुष को भी देखा। उसे देखकर निराश होकर उससे पूछा– भद्र तुम कौन हो? तुमने मुझे किसलिये बाँधा है?

व्याकरणात्मक टिप्पणी– उत्पन्नोत्पतनसामर्थ्यश्च = उत्पन्नः उत्पतनस्य सामर्थ्यः यस्मिन् स। सरस्तीरतरुनिकुंजस्योपरि = सरः तीरतरोः निकुंजस्योपरि। कालपुरुषमिव = कालपुरुषम् + इव।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. "चिरादिव लब्धप्रबोधः बद्धम् आत्मानम् अपश्यम्।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– बड़ी देर के बाद जब मैं जागा तो अपने को बँधा हुआ देखा।

प्रश्न 3. केन प्रतिदिनम् आहारादिभिः उपचारैः संवर्ध्यमानः बभूव?
उत्तर– हारीतेन प्रतिदिनम् आहारादिभिः उपचारैः संवर्ध्यमानः बभूव।

प्रश्न 4. कं चन्द्रापीडोत्पत्तिपरिज्ञानं नास्ति?
उत्तर– शुकं चन्द्रापीडोत्पत्तिपरिज्ञानं नास्ति।

प्रश्न 5. कः प्रातर्विहारनिग्रत एव उत्तरां ककुभं गृहीत्वा अवहम्?
उत्तर– शुकः प्रातर्विहारनिग्रत एव उत्तरां ककुभं गृहीत्वा अवहम्।

➥ **स माम् उक्तवान्– "महात्मन्! अहं खलु जात्या चाण्डालः। मम खलु स्वामी पक्कणाधिपतिः इतः नातिदूरे कृतावस्थानः। तस्य दुहिता प्रथमे वयसि वर्तते। तस्याः त्वं केनापि दुरात्मना कथितः। तया च कौतुकात् त्वद्ग्रहणाय बहवः मादृशाः समादिष्टाः। तत् अद्य पुण्यैः मया आसादितोऽसि। तत्प्रा। तदहं तत्पादमूलं त्वां प्रापयामि। बन्धे मोक्षे वा सा प्रभवति" इति। अहं तु तत् श्रुत्वा चेतस्यकरवम्– "अहो मे मन्दपुण्यस्य दारुणः कर्मणां विपाकः। येन मया जगत्त्रय नमस्यस्य भगवतः श्वेतकेतोः स्वहस्तसंवर्धितेन भूत्वा, अधुना पक्कणमपि प्रवेष्टव्यम्। चाण्डालैः सह एकत्र स्थातव्यम्। चाण्डालबालजनस्य क्रीडनीयकेन भवितव्यम्। जरन्मातङ्गाङ्नाकरोपनीतैः कवलैः आत्मा पोषणीयः" इत्येतान्यन्यानि च चेतसा विलपन्तं माम् आदाय स चाण्डालः सर्वपापानाम् आवासभूतम् अतिभयंकरसंनिवशं पक्कणं प्रविश्य, तस्यै चाण्डालदारिकायै दर्शितवान्।**

शब्दार्थ– जात्या = जाति से। पक्कणाधिपतिः = चाण्डालों की बस्ती का मालिक। इतः = यहाँ से। नातिदूरः = समीप ही में। कृतावस्थानः = ठहरा हुआ। त्वद्ग्रहणाय = तुम्हें पकड़ने के लिए। बहवः = बहुत से। मादृशाः = मेरे जैसे लोगों। समादिष्टाः = आज्ञा पाये हैं। तत्पादमूलम् = उसके पास। आसादिताऽसि = पाये गये हो। प्रापयामि = पहुँचा देता हूँ। चेतस्यकरवम् = मन में विचार किया। मे मन्दपुण्य = मुझ पापी का। जगत्त्रयनमस्यस्य = तीनों लोकों के पूज्य। स्वहस्तसंवर्धितेन भूत्वा = स्वयं अपने हाथ से पाले-पोसे जाकर। स्थातव्यम् = रहना पड़ेगा। क्रीडनीयकेन = खिलौना। जरन्मातङ्गाङ्गनाकरोपनीतैः = बूढ़े चांडालों की पत्नियों के हाथों से लाये गये। चेतसा = हृदय से। आवासभूतम् = निवास स्थान। अतिभयंकरसन्निवशम् = अत्यंत भयंकर स्थान। प्रविश्य = प्रवेश करके। चाण्डालदारिकायैः = चाण्डाल कन्या को। दर्शितवान् = दिखाया।

हिन्दी अनुवाद– उसने मुझसे कहा– महात्मन् मैं जाति से चांडाल हूँ। मेरा स्वामी चांडाल की बस्ती का मालिक समीप में ही रहता है। उसकी कन्या नवयुवती है। उससे किसी दुष्ट ने तुम्हारे विषय में कहा था। उसने तुम्हें पकड़ने के लिए मेरे जैसे बहुत लोगों को आदेश दिया है। आज बड़े पुण्य से मैंने तुम्हें पा लिया है। इसलिए मैं तुम्हें उसके पास पहुँचा दूँगा। तुम्हें बाँधने या छोड़ देने में वही समर्थ है। मैंने यह सुनकर विचार किया कि मुझ अभागे के कर्मों का ही यह बुरा फल मिल रहा है, जिससे मैं तीनों लोक

में वन्दनीय भगवान् श्वेतकेतु के हाथों से पाला-पोसा हुआ होकर भी इस समय चाण्डालों की बस्ती में जाऊँगा चाण्डालों के साथ एक ही जगह रहूँगा। चाण्डाल बालकों का खिलौना बनूँगा। बूढ़ी चाण्डालिनों के हाथ से लाये गये भोजन से अपनी आत्मा का पालन करूँगा। इस प्रकार से तथा और अनेक प्रकार से विलाप करने वाले मुझको लेकर उस चाण्डाल ने सभी प्रकार के पापों की निवास भूमि अत्यन्त भयंकर चाण्डालों की बस्ती में आकर उस चाण्डाल कन्या को दिखाया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– कृतावस्थानः = कृत + अवस्थानः। चेतस्यकरवम् = चेतसि + अकरवम्।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. 'अहो मे मन्दपुण्यस्य दारुणः कर्मणां विपाकः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– अहो मुझ मन्दपुण्य (अभागे) के कठोर कर्मों का फल है।

प्रश्न 3. चाण्डालः केन अकथयत्–महात्मन्! अहं खलु जात्याः चाण्डालः?

उत्तर– चाण्डालः शुकेन अकथयत्–महात्मन्! अहं खलु जात्याः चाण्डालः।

प्रश्न 4. कस्य दुहिता प्रथमे वयसि वर्तते?

उत्तर– चाण्डालस्य स्वामी दुहिता प्रथमे वयसि वर्तते।

प्रश्न 5. कस्यै दर्शितवान्?

उत्तर– चाण्डालदारिकायै दर्शितवान्।

➥ **सा तु प्रहृष्टवदना स्वकरयुगेन आदाय माम् 'आः पुत्रक! प्राप्तोऽसि इत्यभिदधानैव मनाक् उद्घाटितद्वारे दारुपञ्जरे माम् आक्षिप्य अर्गलितद्वारा 'अत्रैव निर्वृतः तिष्ठ' इत्यभिधाय तूष्णीम् अस्थात्। अहं तु तथा संरुद्ध चेतस्यकरवम्– 'अहो महासंकटे पतितोऽस्मि। सर्व एवायम् अनियतेन्द्रियत्वस्य दोषः। तत् सर्वेन्द्रियाण्येव नियमयामि' इति निश्चित्य मौनग्रहणम् अकार्षम्। अथ च तया स्वपाणिनोपनीतेषु फलपानीयादिषु क्षुत्पिपासोपशमाय अशनक्रियाम् अङ्गीकृतवान् अस्मि।** (2020 ZS)

शब्दार्थ– प्रहृष्टवदना = प्रसन्न मुखवाली। स्वकरयुगेन = अपने दोनों हाथों से। आदाय माम् = मुझे लेकर। प्राप्तोऽसि = मिल गये। इत्यभिदधानैव = इस प्रकार कहती हुई। मानक् = थोड़ा सा। उद्घाटितद्वारे = खुले हुए द्वार वाले। दारुपंजरे = काठ के पिजड़े में। आक्षिप्य = डालकर। अर्गलितद्वारा = दरवाजा बन्द करके। निर्वृतः = निश्चिन्त होकर। तूष्णीम् = चुप। अस्थात् = बैठ गई। संरुद्ध = पिंजड़े में बन्द होकर। चेतस्यकरवम् = मन में विचार किया। अनियतेन्द्रियत्वस्य = इन्द्रियों के असंयम का। सर्वेन्द्रियाणि = सारी इन्द्रियों को। नियमयामि = संयमित करूँ। अकार्षम् = किया। स्वपाणिनोपनीतेषु = अपने हाथ से लाये गये। क्षुत्पिपासोपशमाय = भूख-प्यास की शांति के लिये। अशनक्रियाम् = भोजन करना। अंगीकृतवान् अस्मि = स्वीकार किया।

हिन्दी अनुवाद– उसने प्रसन्न मुख हो दोनों हाथों से मुझे लेकर कहा कि पुत्र तुम मिल गये और इस प्रकार कहकर पिंजड़े के द्वार को थोड़ा सा खोलकर उसमें मुझे डाल दिया और "यहीं निश्चिन्त होकर रहो" ऐसा कहकर वह चुप होकर बैठ गई, मैं इस प्रकार पिंजड़े में बन्द हो जाने पर विचार करने लगा– अब तो मैं बहुत बड़े संकट में पड़ गया हूँ, यह सब मेरी इन्द्रियों के असंयम का दोष है। अतः मैं अपनी इन्द्रियों को वश में करता हूँ। ऐसा निश्चय करके मैंने मौन व्रत ग्रहण कर लिया। इसके पश्चात् उसके हाथों से लाये गये फल-पानी आदि से भूख-प्यास दूर करने के लिए मैंने भोजन करना स्वीकार किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– प्रहृष्टवदना = प्रहृष्टं वदनं यस्याः सा। स्वकरयुगेन = स्वस्य करयुगम् तेन। इत्यभिदधानैव = इति + अभिधाना + एव। उद्घाटितद्वारे = उद्घाटितं द्वारं यस्य तस्मिन्। चेतस्यकरवम् = चेतसि + अकरवम्। स्वपाणिनोपनीतेषु = स्वस्य पाणिना उपनीतः तेषु।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. 'सर्व एवायम् अनियतेन्द्रियत्वस्य दोषः।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– यह सब मेरी इन्द्रियों के असंयम का दोष है।
प्रश्न 3. का स्वकरयुगेन आदाय माम् अकथयत्, आः पुत्रकः प्राप्तोऽसि?
उत्तर– चाण्डाल कन्या स्वकरयुगेन आदाय माम् अकथयत्, आः पुत्रकः! प्राप्तोऽसि।
प्रश्न 4. दारुपंजरे कम् अक्षिपत्?
उत्तर– दारुपञ्जरे शुकम् अक्षिपत्।
प्रश्न 5. मौनग्रहणम् अकार्षत् कः?
उत्तर– शुकः मौनग्रहणम् अकार्षत्।

➥ **एवम् अतिक्रामति काले, एकदा प्रभातायां यामिन्याम् उन्मीलितलोचनः अद्राक्षमस्मिन् कनकपञ्जरे स्थितम् आत्मानम्। सापि चाण्डालदारिका देवेनापि दृष्टैव। सकलमेव च तं पक्कणम् अमरपुरसदृशम् अलोक्य, किमेतदिति प्रष्टुकामं माम् आदाय झटिति देवपादमूलम् आयाता। तत् केयम्? किमर्थं वाहं बद्धः? किमर्थम् इह आनीतः? इत्यत्र अहमपि देव इव अनपगतकुतूहल एव'' इति।**

शब्दार्थ– अतिक्रामति काले = समय बीतने पर। यायिन्याम् = रात में। उन्मीलितलोचनः = आँखें खोलकर। कनकपञ्जरे = सोने के पिंजड़े में। चाण्डालदारिका = चाण्डाल-कन्या। आयाता = आई। प्रष्टुकामम् = पूछने की इच्छा वाले। आदाय = लेकर। झटिति = तुरन्त। आनीतः = लाया गया हूँ। अनपगतकुतूहलः = जिसका कुतूहल दूर न हुआ हो।

हिन्दी अनुवाद– इस प्रकार कुछ समय बीतने पर एक बार रात बीत जाने पर प्रातःकाल मैंने आँखें खुलने पर अपने को इस सोने के पिंजड़े में देखा। उस चाण्डालकन्या को महाराज ने देखा ही है। चांडालों की उस सारी बस्ती को देवताओं की नगरी के समान देखकर मैं यह पूछना चाहता था कि यह क्या है कि इस समय वह तुरन्त मुझे लेकर आपके पास आई। इसलिए वह कौन है? किसलिए मुझे बाँधा है? यहाँ क्यों ले आई? इस विषय में आप ही के समान मेरी भी उत्सुकता दूर नहीं हुई है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– उन्मीलितलोचनः = उन्मीलितं लोचनं येन सः। कनकपञ्जरे = कनकस्य पञ्जरे। अनपगत कुतूहलः = न अपगतः कुतूहलःयस्य स।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. 'अहमपि देव इव अनपगतकुतूहल एव।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– आप ही के समान मेरी भी उत्सुकता दूर नहीं हुई है।
प्रश्न 3. शुकः आत्मानं कुत्र स्थितम् अद्राक्षत्?
उत्तर– शुकः आत्मानं कनकपञ्जरे स्थितम् अद्राक्षत्।
प्रश्न 4. सकलमेव चाण्डालानां पक्कणं कस्य सदृशम् आसीत्?
उत्तर– सकलमेव चाण्डालानां पक्कणम् अमरपुरसदृशम् आसीत्।
प्रश्न 5. का माम् आदाय देवपादमूलम् आयाता।
उत्तर– चाण्डालकन्या माम् आदाय देवपादमूलम् आयाता।

➥ **राजा तु तत् श्रुत्वा, समुपजातभ्यधिककुतूहलः तदाह्वानाय प्रतीहारीम् आदिदेश। न चिरादेव प्रविश्य सा पुरस्तात् ऊर्ध्वस्थितैव बभाषे– ''भुवनभूषण, रोहिणीपते, कादम्बरीलोचनानन्दकरः, सर्वस्त्वयास्य दुर्मतेः आत्मनश्च पूर्वजन्मवृत्तान्तः श्रुत एव। अहमस्य दुरात्मनः जननी। तथा पितुः आज्ञाम् उल्लङ्घ्य वधूसमीपं प्रस्थितम् एनम् दिव्येन चक्षुषा दृष्ट्वा अस्य पित्रा अहम् आदिष्टास्मि। अयं ते तनयः कदाचित् अस्या अपि तिर्यग्जातेः अधस्तात् पतति। तद्यावदिदं कर्म न परिसमाप्यते, तावदेनं मर्त्यलोके एव बद्ध्वा धारय। तदस्य विनयायेदं विनिर्मितं मया।**

सर्वमधुना तत्कर्म परिसमाप्तम्। शापावसानसमयो वर्तते। शापावसाने च युवयोः सममेव सुखेन भवितव्यम् इति त्वत्समीपमानीतो मयायम्। अत्रापि यच्चाण्डालजातिः ख्यापिता तत् लोकसंपर्कपरिहाराय। तत् अनुभवतं संप्रति द्वावपि सममेव जन्मजरादिदुःखबहुले तनू परित्यज्य इष्टजनसमागमसुखम्'' इत्यभिदधानैव सा गगनम् उदपतत्। (2020 ZT)

शब्दार्थ– समुपजाताभ्यधिकुतूहलः = और अधिक उत्सुक होकर। तदाह्वानाय = उसको बुलाने के लिए। आदिदेश = आज्ञा दी। न चिरादेव = शीघ्र ही। पुरस्तात् = सामने। ऊर्ध्वस्थिता = ऊपर ही खड़े। भुवनभूषण = हे संसार की शोभा। रोहिणीपते = रोहिणी के स्वामी। कादम्बरीलोचनानन्दकरः = कादम्बरी के नेत्रों को आनन्दित करने वाले। सर्वस्त्वयास्य = तुमने इसके सभी। दुर्मतेः = दुष्ट। आत्मनः = अपना। पूर्वजन्मवृत्तान्तः = पूर्वजन्म का हाल। श्रुतः एव = सुना ही। दुरात्मनः = दुष्ट का। जननी = माता। पितुः आज्ञाम् = पिता की आज्ञा की आज्ञा को। वधूसमीपम् = वधू (महाश्वेता) के पास। प्रस्थितम् = जाने वाले। दिव्येन चक्षुषा = दिव्य नेत्रों से। आदिष्टास्मि = आज्ञा पाई हूँ। तनयः = पुत्र। तिर्यग्जातेः = पक्षी की योनि से। अधस्तात् = नीचे। परिसमाप्यते = समाप्त हो जाता है। मर्त्यलोके = मनुष्य लोक में। बद्ध्वा = बाँधकर। धारय = रक्खो। विनयाय = शिक्षा देने के लिए। इदं विनिर्मितं मया = मैंने यह सब रचा है। शापावसानसमयः = शाप के अन्त का समय। युवयोः = तुम दोनों। सममेव = साथ ही। त्वत्समीपमानीतः = तुम्हारे पास लाई हूँ। यच्चांडालजातिः = चांडाल की जाति। स्थापितः = प्रसिद्ध की है। लोकसंपर्कपरिहाराय = लोगों का संपर्क दूर रखने के लिए। जन्मजरादिदुःखबहुले = जन्म और बुढ़ापे के दुःख से भरे। तनू = शरीर। इष्टजनसमागमसुखम् = प्रिय लोगों के मिलने का सुख। अभिदधाना = कहती हुई। गगनम् उदपतत् = आकाश में उड़ गई।

हिन्दी अनुवाद– राजा ने यह सुनकर और भी अधिक उत्सुक होकर उसे (चांडाल कन्या को) बुलाने के लिए प्रतीहारी को आदेश दिया। वह शीघ्र ही आकर सामने ऊपर ही स्थित होकर बोली– संसार की शोभा, रोहिणी के स्वामी, कादम्बरी को आनन्दित करनेवाले आपने इस दुष्ट और अपने पूर्वजन्म का वृत्तान्त सुना ही है। मैं इस दुष्ट की माता हूँ। इसके पिता ने अपने दिव्य नेत्रों से इसको पिता की आज्ञा का उल्लंघन करके बहू के पास जाते देखकर मुझे आज्ञा दी कि तुम्हारा यह पुत्र कहीं पक्षी योनि से भी नीचे न गिर पड़े इसलिए जब तक यह अनुष्ठान समाप्त नहीं होता तब तक तुम इसे मृत्यु लोक में बाँधकर रखो। अतः मैंने इसे शिक्षा देने के लिए ही यह सब काम किया है। अब वह कर्म पूरा हो चुका है। शाप का समय समाप्त हो गया है। शाप के अन्त हो जाने पर तुम दोनों साथ ही सुखी होगे। इसीलिए मैं इसको तुम्हारे पास ले आई हूँ। यहाँ मैंने लोगों के सम्पर्क से दूर रहने के लिए ही अपनी जाति चांडाल बताई थी। इसीलिए अब तुम दोनों साथ ही जन्म और बुढ़ापे आदि के दुःख से भरे शरीर का परित्याग करके प्रियजनों के समागम का सुख भोगो। ऐसा कहती हुई वह आकाश में उड़ गई।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– समुपजाताभ्यधिकुतूहलः = समुपजातः अभ्यधिकः कुतूहलः यस्य स। तदाह्वानाय = ताम् आह्वानाय। भुवनभूषणम् = भुवनस्य भूषणः तत्सम्बुद्धौ। कादम्बरीलोचनान्दकरः = कादम्बर्याः लोचनयोः आनन्दकरः। सर्वस्त्वयास्य = सर्व + त्वया + अस्य। शापावसानसमयः = शापस्य अवसानसमयः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।**
अथवा **अस्य गद्यांशस्य प्रणेताकः?**
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. **'सर्वमधुना तत्कर्म परिसमाप्तम्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– अब यह सभी कर्म पूरा हो चुका है।

प्रश्न 3. **समुपजातभ्यधिककुतूहलः कः आसीत्?**
उत्तर– राजा शूद्रकः समुपजातभ्यधिककुतूहलः आसीत्।

प्रश्न 4. **अस्य दुरात्मनः जननी का असीत्?**
उत्तर– चाण्डाल कन्या अस्य दुरात्मनः जननी आसीत्।

प्रश्न 5. **कः पितुः आज्ञाम् उल्लङ्घनम् अकरोत्?**
उत्तर– वैशम्पायनः पितुः आज्ञाम् उल्लङ्घनम् अकरोत्।

➥ **अथ राज्ञः तद्वचनम् आकर्ण्य, संस्मृतजन्मान्तरस्य मकरकेतुः जीवितापहरणाय पदं चकार। तामेव कादम्बरीमभिध्यायतः विमुक्तसर्वान्यक्रियस्य सद्यः काष्ठीभूतम् तस्य शरीरम् परां कोटिमधिरूढः कामानलो ददाह। एवमेव महाश्वेतोत्कण्ठया राज्ञ तुल्यावस्थस्य पुण्डरीकात्मनो वैशम्पायनस्य च।**

शब्दार्थ– संस्मृतजन्मानन्तरस्य = पूर्वजन्म का स्मरण करने वाले। राज्ञः = राजा का। मकरकेतुः = कामदेव। जीवितापहरणाय = जीवन का हरण करने के लिए। पदं चकार = सामना किया। कादम्बरीमभिध्यायतः = कादम्बरी का ध्यान करने वाले। विमुक्तसर्वान्यक्रियस्य = और सभी काम छोड़ देने वाले। काष्ठीभूतम् = लकड़ी बना हुआ। परां कोटिमधिरूढः = चरम सीमा पर पहुँचा हुआ। कामानलः = कामरूपी अग्नि। दहाद = जलाया। महाश्वेतोत्कण्ठया = महाश्वेता की उत्कंठा से। राज्ञा तुल्यावस्थस्य = राजा की ही अवस्था वाले। पुण्डरीकात्मनः = पुण्डरीक के स्वरूप।

हिन्दी अनुवाद– इस प्रकार उसकी वाणी सुनकर पूर्वजन्म का वृत्तान्त याद आ जाने वाले उस राजा के प्राणों का हरण करने के लिए कामदेव आ पहुँचा। कादम्बरी के ध्यान में लगे तथा सभी क्रियाओं से रहित रहने वाले लकड़ी बने शरीर को कामाग्नि जलाने लगी। इसी प्रकार राजा ही की समान अवस्था वाले महाश्वेता की उत्कंठा में लगे पुण्डरीक के स्वरूप वैशम्पायन का शरीर भी कामाग्नि में जलने लगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– संस्मृतजन्मान्तरस्य = संस्मृतः जन्मान्तर येन तस्य। कादम्बरीमभिध्यायतः = कादम्बर्याः अभिध्यायतः। पुण्डरीकात्मनः = पुण्डरीकस्य आत्मनः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।

प्रश्न 2. "कादम्बरीमभिध्यायतः विमुक्तसर्वान्यक्रियस्य सद्यः काष्ठीभूतम् तस्य शरीरम् परां कोटिमधिरूढः कामानलो ददाह।" रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– कादम्बरी के ध्यान में लगे तथा सभी क्रियाओं से रहित रहने वाले लकड़ी बने शरीर को कामाग्नि जलाने लगी।

प्रश्न 3. राज्ञः जीवितापहरणाय कः पदं चकार?

उत्तर– राज्ञः जीवितापहरणाय मकरकेतुः पदं चकार।

प्रश्न 4. महाश्वेतोत्कण्ठया राज्ञः तुल्यावस्थस्य पुण्डरीकात्मनो कस्य शरीरोऽपि कामानलो ददाह?

उत्तर– महाश्वेतोत्कण्ठया राज्ञः तुल्यावस्थस्य पुण्डरीकात्मनो वैशम्पायनस्य शरीरोऽपि कामानलो ददाह।

➥ **तस्मिन्नेव चान्तरे दक्षिणानिलं प्रवर्तयन् मन्मथोल्लासकारी परावर्तत सुरभिमासः। तेन च पर्याकुलितहृदया कादम्बरी सायाह्ने स्नात्वा निर्वर्तितकामदेवपूजा चन्द्रापीडम् सुरभिशीतलैः स्नपयित्वाम्भोभिः विलिप्य हरिचन्दनेन पुष्पैः अलंकृत्य भावार्द्रया दृशा सुचिरम् आलोक्य निर्भरं कण्ठे जग्राह। तेन कादम्बरीकण्ठग्रहेण, चन्द्रापीडतस्य कण्ठस्थानं पुनर्जीवितं प्रत्यपद्यत। सद्य एव उच्छ्वसितं हृदयम्। उन्मीलच्चक्षुः एवं च सुप्तप्रतिबुद्ध इव प्रत्यापन्नसर्वाङ्गचेष्टः चन्द्रापीडः कादम्बरीं दोर्भ्याम् आबध्नन् अवादीत्–"भीरु ! परित्यज्यतां भयम्।**

(2019 DB)

शब्दार्थ– तस्मिन्नेव चान्तरे = इसी बची। दक्षिणानिलम् = दक्षिणी वायु को। प्रवर्तयन् = चलाता हुआ। मन्मथोल्लासकारी = कामदेव के हर्ष को बढ़ाने वाला। सुरभिमासः = चैत्रमास वसन्त ऋतु। पर्याकुलितहृदया = बेचैन मन वाली। परावर्तत = आया। सायाह्ने = संध्याकाल। निर्वर्तितकामदेवपूजा = कामदेव की पूजा समाप्त करके। सुरभिशीतलैः = सुगन्धित और ठण्डे। अम्भोभिः = जल से। स्नपयित्वा = स्नान कराके। विलिप्य = लेप करके। हरिचन्दनेन = मलयागिरि चन्दन। अलंकृत्य = सजाकर। भावार्द्रया = भावपूर्ण। दृशा = नेत्रों से। सुचिरम् = देर तक। आलोक्य = देखकर। निर्भरम् = भावावेश के साथ। कंठे जग्राह = गले लगा लिया। कादम्बरीकंठग्रहणेन = कादम्बरी के गले लगाने से। कंठस्थानम् = गले का भाग। पुनरुज्जीवितं प्रत्यपद्यत् = फिर से जी उठा। सद्यः एव = शीघ्र ही। उच्छ्वसितं हृदयम् = हृदय से साँस आने-जाने लगी। उन्मीलितचक्षुः = आँखें खुल गईं। सुप्तप्रबुद्धं इव = सोकर उठे हुए। प्रत्यापन्नसर्वांगचेष्टः = सभी अंगों की चेष्टा को प्राप्त कर लेने वाला। दोर्भ्याम् = दोनों भुजाओं से। आबध्नन् = बाँधते हुए। अवादीत् = कहा। भीरु = भयभीत।

हिन्दी अनुवाद– उसी बीच कामदेव को आनन्दित करने वाला चैत्रमास (बसंत ऋतु) दक्षिणी वायु को चलाता हुआ आ गया। जिससे बेचैन होकर सायंकाल कादम्बरी ने स्नान किया, कामदेव की पूजा की और चन्द्रापीड को सुगन्धित तथा शीतल जल से नहलाकर मलयागिरि चन्दन का लेप किया तथा फूलों से सजाकर भावपूर्ण नेत्रों से देर तक देखकर भावावेश में उसे गले लगा लिया। कादम्बरी के गले लगाने से चन्द्रापीड के शरीर में प्राण का संचार हो गया। शीघ्र ही शरीर में साँसें आने-जाने लगीं और सोकर जागे हुए के समान उसके सभी अंगों में चेष्टा होने लगी। और उसने अपनी दोनों भुजाओं से कादम्बरी को जकड़ते हुए कहा– भयभीत मत बनों।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– पर्याकुलितहृदया = पर्याकुलित हृदयं यस्या या। निर्वर्तितकामदेवपूजा = निर्वर्तितः कामदेवस्य पूजा यया सा। प्रत्यापन्नसर्वांगचेष्टा = प्रत्यापन्ना सर्वांगानाम् चेष्टा येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश 'चन्द्रापीडकथा' (उत्तरार्द्ध भाग) से उद्धृत है।

प्रश्न 2. चन्द्रापीडः कां दोर्भ्याम् आबध्नन् अवादीत्?
उत्तर– चन्द्रापीडः कादम्बरीं दोर्भ्याम् आबध्नन् अवादीत् ।

प्रश्न 3. 'कण्ठग्रहेण' में कौन-सी विभक्ति है?
उत्तर– 'कण्ठग्रहेण' में तृतीया विभक्ति है। 'कण्ठग्रहेण' तृतीया विभक्ति के एकवचन का रूप है।

प्रश्न 4. 'उन्मीलच्चक्षुः' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।
उत्तर– 'उन्मीलच्चक्षुः' का शाब्दिक अर्थ है– आँखें खुली हुई।

प्रश्न 5. "मन्मथोल्लासकारी परावर्तत सुरभिमासः।" रेखांकित अंश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।
उत्तर– कामदेव के उल्लास को बढ़ाने वाला बसन्त का महीना आ गया।

➥ **प्रत्युज्जीवितोऽस्मि तवैव अमुना कण्ठग्रहेण। त्वं खलु अमृतसंभवात् अप्सरसां कुलात् उत्पन्ना। अद्य स मे व्यपगतः शापः। परित्यक्ता सा शूद्रकाख्या तनुः। अपि च–प्रियसख्या अपि ते महाश्वेतायाः प्रियतमो मयैव सह विगतशापः संवृत्तः" अभिदधत्येव चन्द्रापीडशरीरान्तरितवपुषि चन्द्रमसि, तथैव कष्ठेन एकावलीम् धारयन् अम्बरतलात् अवतरन् अदृश्यत कपिञ्जलकरावलम्बी समुत्सृष्टशुकशरीरः पुण्डरीकः। चन्द्रापीडस्तु तं कण्ठे गृहीत्वा अब्रवीत्–"सखे पुण्डरीक, प्राग्जन्मसंबन्धात् जामातासि। अनन्तरजन्माहितेन सौहृदेन मया सह वर्तितव्यं भवता" इति।** (2017 NI, 18 BE, 19 DC)

शब्दार्थ– प्रत्युज्जीवितोऽस्मि = फिर से जीवित हो गया हूँ। अमृतसंभवात् = अमृत से उत्पन्न होने वाले। अप्सरसाम् कुलात् = अप्सराओं के कुल से। मे = मेरा। व्यपगतः = दूर हो गया। शूद्रकाख्या तनुः = शूद्रक नाम का शरीर। विगतशापः संवृत्तः = शाप रहित हो गया है। अभिदधत्येव = कहते ही। चन्द्रापीडशरीरान्तरतिवपुषि = चन्द्रापीड के शरीर में छिपे हुए शरीर वाले। चन्द्रमसि = चन्द्रमा। अम्बरतलात् = आकाश से। अवतरन् = उतरने हुए। अदृश्यत् = दिखाई पड़ा। कपिंजलकरावलम्बी = कपिंजल का हाथ पकड़े हुए। समुत्सृष्टशुकशरीरः = सुग्गे का शरीर छोड़ने वाले। प्राग्जन्मसंबन्धात् = पूर्वजन्म के सम्बन्ध से। जामाताऽसि = दामाद हो। अनन्तरजन्माहितेन = उसके बाद के जन्म में किये हुए। सौहृदेन = मित्रता से। वर्तितव्यम् = रहना चाहिए।

हिन्दी अनुवाद– तुम्हारे इस गले लगाने से मैं जीवित हो गया हूँ। तुम अमृत से उत्पन्न अप्सराओं के कुल से उत्पन्न हो। आज मेरा शाप दूर हो गया। मैंने शूद्रक का शरीर छोड़ दिया। तुम्हारी प्रिय सखी महाश्वेता का प्रियतम भी मेरे ही साथ शाप से मुक्त हो गया है। चन्द्रापीड के शरीर में छिपे हुए चन्द्रमा (चन्द्रापीड चन्द्रमा का ही अवतार था) के इस प्रकार कहते ही सुग्गे का शरीर छोड़ देने वाले कपिंजल का हाथ पकड़े हुए, गले में एकावली धारण किये हुए पुण्डरीक आकाश से उतरता हुआ दिखाई दिया। चन्द्रापीड ने उसे गले लगाकर कहा– मित्र पुण्डरीक, पूर्वजन्म के सम्बन्ध से तुम मेरे दामाद हो और दूसरे जन्म में होने वाले मित्रता के कारण अब मित्र बनकर रहो।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– चन्द्रापीडशरीरान्तरतिवपुषि = चन्द्रापीडस्य शरीरे अन्तरितम् वपुः यस्य तस्मिन्। समुत्सृष्टशुकशरीरः = समुत्सृष्टम् शुकस्य शरीरम् येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. अस्य गद्यांशस्य प्रणेता कः?

उत्तर– अस्य गद्यांशस्य प्रणेता 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. कः विगतशापः सवृत्तः?

उत्तर– महाश्वेतायाः प्रियतमो (पुण्डरीकः) विगतशापः संवृत्तः।

प्रश्न 3. '<u>प्रत्युज्जीवितोऽस्मि तवैव अमुना कण्ठग्रहेण।</u>' रेखांकित अंश का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

उत्तर– तुम्हारे इस आलिंगन से मैं पुनः जीवित हो गया हूँ।

प्रश्न 4. ''विगतशापः'' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

उत्तर– विगतशापः का शाब्दिक अर्थ है- 'शापरहित'।

प्रश्न 5. 'गृहीत्वा' में कौन-सा प्रत्यय है?

उत्तर– 'गृहीत्वा' में 'क्त्वा' प्रत्यय है।

➥ **अथ मदलेखा धावमाना निर्गत्य मृत्युञ्जयजपव्य ग्रस्य तारापीडस्य विलासवत्याश्च पादयोः पतित्वा ''देव! दिष्ट्या वर्धसे– प्रत्युज्जीवितः युवराजः समं वैशम्पायनेन'' इत्युच्चैर्जगाद। राजा तु तत् श्रुत्वा हर्षपरवशः विलासवत्या शुकनासेन च सह तत्रैव आगच्छत्। चन्द्रापीडस्तु पितरम् आलोक्य चरणयोः अपतत्। स तु सत्वरापसृतः तथा प्रणतम् उन्नमय्य तम् तारापीडोऽभ्यधात्–''पुत्र यद्यपि पिता अहं तव शापदोषात् संजातः, तथापि जगद्वन्दनीयः लोकपालः त्वम्। मय्यपि नमस्यो योंऽशः सोऽपि मया त्वय्येव संक्रामितः। तत् उभयधापि त्वमेव नमस्कार्यः'' इत्युक्त्वा प्रतीपमस्य पादयोः अपतत्। विलासवती तु तं पुनः शिरसि पुनर्ललाटे पुनश्च कपोलयोः चुम्बित्वा गाढतरम् आलिलिङ्ग। उनमुक्तश्च मात्रा उपसृत्य पुनः पुनः कृतनमस्कारः शुकनासं प्रणनाम। आशीस्सहस्राभिर्वर्धितश्च तेन आत्मनोपसृत्य यथानुक्रमं पित्रोः शुकनासस्य मनोरमायाश्च 'एष वो वैशम्पायनः' इति पुण्डारीकम् अदर्शयत्।**

शब्दार्थ– धावमाना = दौड़ती हुई। निर्गत्य = निकल कर। मृत्युंजयजपव्य = मृत्युंजय मंत्र का जाप करने में लगे हुए। दिष्ट्या = भाग्य से। प्रत्युज्जीवितः = फिर से जी उठे। उच्चैर्जगाद = जोर से बोली। हर्षपरवशः = हर्ष के अधीन। सत्वरापसृतः = शीघ्र ही हटकर। प्रणतम् = प्रणाम करते हुए। उन्नमय्य = ऊपर उठाकर। अभ्यधात् = कहा। शापदोषात् = शाप के दोष से। संजातः = हुआ। मय्यपि = मुझमें भी। नमस्यः = नमस्कार करने योग्य। योंऽशः = जो अंश है। त्वय्येव = तुममें ही। संक्रामितः = डाल दिया है। उभयधापि = दोनों प्रकार से। नमस्कार्यः = नमस्कार करने योग्य हो। प्रतीपम् = उल्टे। शिरसि = सिर पर। गाढतरम् = अत्यन्त प्रेम के साथ। अलिलिंग = आलिंगन किया। उन्मुक्तश्च = और छूटकर। उपसृत्य = जाकर। कृतनमस्कारः = नमस्कार करके। प्रणनाम = प्रणाम किया। आशीस्सहस्राभिर्वर्धितश्च = हजारों आशीर्वाद से वृद्धि को प्राप्त होने वाले। वः = तुम लोगों का।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् मदलेखा दौड़ती हुई वहाँ से निकलकर मृत्युंजयमंत्र जपने में लगे हुए तारापीड और विलासवती के पैरों पर गिर कर जोर से बोली– राजन्, भाग्य से युवराज चन्द्रापीड वैशम्पायन के साथ ही फिर जीवित हो उठे हैं। राजा यह सुनकर हर्ष से व्यग्र हो उठे और विलासवती तथा शुकनास के साथ वहाँ आये। चन्द्रापीड पिता को देखकर उनके पैरों पर गिर पड़ा किन्तु तारापीड शीघ्रता से हट कर झुकते हुए चन्द्रापीड को उठाकर बोले–पुत्र, यद्यपि शापदोष से मैं तुम्हारा पिता बना किन्तु तुम जगद्वन्दनीय लोकपाल हो, मुझमें जो वन्दनीय अंश था उसे भी तुम्हीं में आरोपित कर दिया है। इस प्रकार दोनों तरह से तुम्हीं प्रणम्य हो। ऐसा कहकर उलटे उसके ही (चन्द्रापीड के) पैरों पर गिर पड़े। विलासवती ने बार-बार शिर, ललाट और कपोल का चुम्बन करके चन्द्रापीड को अत्यन्त प्रेम के साथ भुजाओं में बाँध लिया। माता से छूटकर शुकनास के पास जाकर उसने उन्हें बार-बार प्रणाम किया। हजारों आशीर्वादों से वृद्धि को प्राप्त होने वाले चन्द्रापीड ने स्वयं माता-पिता शुकनास और मनोरमा के पास जाकर– यही तुम लोगों का वैशम्पायन है– ऐसा कहकर पुण्डरीक को दिखाया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– प्रत्युज्जीवितः प्रत्युत्+जीवितः। उच्चैर्जगाद = उच्चैः+जगाद। सत्वरापसृतः = सत्वर+अपसृतः। इत्युक्त्वा = इति+उक्त्वा। पुनर्ललाटे = पुनः+ललाटे।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।
प्रश्न 2. ''प्रत्युज्जीवितः युवराजः समं वैशम्पायनेन।'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– वैशम्पायन के साथ युवराज (चन्द्रापीड) पुनः जीवित हो गये हैं।
प्रश्न 3. मृत्युञ्जयजपव्यग्रस्य तारापीडस्य विलासवत्याश्च समीपौ का आगता?
उत्तर– मृत्युञ्जयजपव्यग्रस्य तारापीडस्य विलासवत्याश्च समीपौ मदलेखा आगता।
प्रश्न 4. मदलेखा कस्य पादयोः अपतत्?
उत्तर– मदलेखा तारापीडस्य विलासवत्याश्च पादयोः अपतत्।
प्रश्न 5. राजा तारापीडः केन सह आगच्छत्?
उत्तर– राजा तारापीडः विलासवत्या शुकनासेन च सह आगच्छत्।

➥ **तस्मिन्नैव च प्रस्तावे समुपसृत्य कपिञ्जलः शुकनासम् अब्रवीत् –एवं संदिष्टम् आर्यस्य भगवता श्वेतकेतुना ''अयं खलु पुंडरीकः संवर्धित एव केवलं मया। आत्मजः पुनस्तव। अस्यापि भवत्स्वेव लग्नः स्नेहः। तत् वैशम्पायन एवायम् इत्यवगत्य अविनयेभ्यः निवारणीयः। परोऽयम् इति कृत्वा नोपेक्षणीयः'' इति। शुकनासश्च तथेति प्रत्यग्रहीत्।**

शब्दार्थ– तस्मिन्नेव प्रस्तावे = उस बातचीत के समय ही। समुपसृत्य = पास जाकर। संदिष्टम् = सन्देश दिया है। संवर्धितः = बड़ा किया गया है। आत्मजः = पुत्र। अविनयेभ्यः = उद्दण्ड कार्यों से। निवारणीयः = रोकने योग्य है। परोऽयम् = यह दूसरा है। नोपेक्षणीयः = उपेक्षा योग्य नहीं है। प्रत्यग्रहीत् = स्वीकार किया।

हिन्दी अनुवाद– उसी वार्तालाप के समय कपिंजल ने शुकनास के पास आकार कहा कि भगवान् श्वेतकेतु ने आपको सन्देश दिया है कि पुण्डरीक को तो मैंने केवल पाल-पोस कर बड़ा ही किया है, पुत्र तो यह आपका ही है। ऐसा जानकर इसे उद्दण्डतापूर्ण कार्यों से सर्वथा रोकिएगा। यह दूसरा है– ऐसा जानकर इसकी उपेक्षा न कीजिएगा। शुकनास ने ''ऐसा ही होगा'' कहकर स्वीकार किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– तस्मिन्नेव = तस्मिन्। परोऽयम् = परः+अयम्। नोपेक्षणीयः = न+उपेक्षणीयः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक का नाम 'बाणभट्ट' है।
प्रश्न 2. 'अयं खलु पुण्डरीकः संवर्धित एव केवलं मया।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।
उत्तर– इस पुण्डरीक का मैंने केवल पालन-पोषण करके ही बड़ा किया है।
प्रश्न 3. भगवान् श्वेतकेतुः कम् संदिष्टम्?
उत्तर– भगवान् श्वेतकेतुः शुकनासं संदिष्टम्।
प्रश्न 4. ''अयं खलु पुण्डरीकः संवर्धित एव केवलं मया, आत्मजः पुनस्तव।'' केनोक्तः?
उत्तर– भगवता श्वेतकेतुना उक्तः –''अयं खलु पुण्डरीकः संवर्धित एव केवलं मया, आत्मजः पुनस्तव।''
प्रश्न 5. शुकनासः कं प्रत्यग्रहीत?
उत्तर– शुकनासः पुण्डरीकं प्रत्यग्रहीत्।

➥ **अथं केयूरकेण विदितवृत्तान्तौ चित्ररथहंसौ मदिरागौरीभ्यां समं तत्रैवाजग्मतुः। आगतयोश्च तयोः तारापीडशुकनासाभ्यां सम्बन्धकोचितकथया सहस्त्रगुण इव महोत्सवः प्रावर्तत। अथ ते सर्वेऽपि हेमकूटं गत्वा दंपत्योः उभयोरपि विवाहक्रियाः यथाविधि निरवर्तयन्। चित्ररथः कादम्बर्या सह समग्रमेव स्वं राज्यं चन्द्रापीडाय**

न्यवेदयत्। पुण्डरीकायापि समं महाश्वेतया निजपदं हंसः। कादम्बरी तु हृदयवल्लभलाभेऽपि विषण्णमुखी चन्द्रापीडम् अप्राक्षीत् – '' आर्यपुत्र! सर्वे खलुः वयं मृताः प्रत्युज्जीविताः पुनः संघटिताश्चय। सा पुनः वराकी पत्रलेखा अस्माकं मध्ये न दृश्यते। न विद्मः किम् तस्याः वृत्तम्?'' इति। स तु प्रत्यवादीत्–''सा हि रोहिणी शप्तं माम् उपश्रुत्य 'कथं त्वम् एकाकी मर्त्यलोकनिवासदुःखम् अनुभवसि?' इत्यभिधाय, निवार्यमाणापि मया मत्परिचर्यायै मर्त्यलोके जन्माग्रहीत्। इतश्च जन्मान्तरं गच्छता मया पुनः आत्मलोकं विसर्जिता इति। तत्र पुनः तां द्रक्ष्यसि'' इति।

शब्दार्थ– विदितवृत्तान्तौ = समाचार पाकर। चित्ररथहंसौ = चित्ररथ और हंस। मंदिरागौरीभ्यां समम् = मदिरा और गौरी के साथ। तत्रैवाजग्मतुः = वहीं आए। आगतयोश्च तयोः = उन दोनों के आने पर। सम्बन्धकोचितकथया = सम्बन्ध की बातचीत से। सहस्त्रगुण इव = हजार गुना जैसा। महोत्सवः = महान उत्सव। प्रावर्तत = हुआ। निरवर्तयन् = पूरा किया। न्यवेदयत् = दे दिया। हृदयवल्लभलाभेऽपि = प्राणप्रिय के मिलने पर भी। विषण्णमुखी = उदास मुख होकर। अप्राक्षीत् = पूछी। संघटिताश्च = और मिल गये। वराकी = बेचारी। न विद्मः = नहीं जानती हूँ। वृत्तम् = समाचार। उपश्रुत्य = सुनकर। निवार्यमाणापि = रोकने पर भी। मत्परिचर्यायै = मेरी सेवा के लिए। जन्माग्रहीत् = जन्म लिया था। आत्मलोकं = अपने लोक को, विसर्जिता = भेज दिया।

हिन्दी अनुवाद– इसके पश्चात् केयूरक द्वारा समाचार पाकर चित्ररथ और हंस मदिरा तथा गौरी के साथ वहीं आये। उन दोनों के आने पर तारापीड और शुकनास के साथ विवाह सम्बन्ध की बातचीत से हजार गुना महोत्सव हुआ। वे सभी हेमकूट पर जाकर दोनों दम्पतियों का विधिपूर्वक विवाह सम्पन्न किये। चित्ररथ ने कादम्बरी के साथ अपना सारा राज्य चन्द्रापीड को दे दिया। हंस ने भी महाश्वेता के साथ पुण्डरीक को अपना देश दे दिया। कादम्बरी अपने प्राणप्रिय को पाकर भी उदास मुख होकर चन्द्रापीड से बोली– आर्यपुत्र, हम सभी लोग मरे, फिर जीवित हुए और मिले भी, किन्तु वह बेचारी पत्रलेखा हम लोगों के बीच नहीं दिखाई देती, उसका क्या हाल है? नहीं जानती हूँ। उसने कहा– वह रोहिणी थी। मुझे शाप में पड़ा सुनकर –तुम कैसे अकेले मृत्युलोक के दुःखों को भोगोगे– ऐसा कहकर मेरे मना करने पर भी मेरी सेवा के लिए मृत्युलोक में जन्म ली थी। इस दूसरे जन्म में आने पर मैंने फिर उसे अपने लोक को भेज दिया है। वहाँ तुम उसे देखोगी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– विदितवृत्तान्तौ = विदित वृन्तान्तः याभ्याम् तौ। चित्ररथहंसौ = चित्ररथः च हंसः च। तत्रैवाजग्मतुः = तत्र+एव+आजग्मतुः। निवार्यमाणापि = निवार्यमाण+अपि।

|| प्रश्नोत्तरः ||

प्रश्न 1. प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं लेखकञ्च नाम लिखत।

उत्तर– प्रस्तुत गद्यांशस्य पुस्तकं नाम 'चन्द्रापीडकथा' अस्य लेखकः च 'बाणभट्टः' अस्ति।

प्रश्न 2. ''<u>आर्यपुत्र! सर्वे खलुः वयं मृताः प्रत्युज्जीविताः पुनः संघटिताश्चय।</u>'' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

उत्तर– आर्यपुत्र ! हम सभी मरकर पुनः जीवित हुए और परस्पर (आपस में) मिल भी गये।

प्रश्न 3. केयूरकेण विदितवृत्तान्तौ चित्ररथहंसौ केन समं आजग्मतुः?

उत्तर– केयूरकेण विदितवृत्तान्तौ चित्ररथहंसौ मदिरागौरीभ्यां समं आजग्मतुः।

प्रश्न 4. चित्ररथः कादम्बर्या सह समग्रमेव स्वं राज्यं कस्मै न्यवेदयत्?

उत्तर– चित्ररथः कादम्बर्या सह समग्रमेव स्वं राज्यं चन्द्रापीडाय न्यवेदयत्।

प्रश्न 5. पत्रलेखा का आसीत्?

उत्तर– पत्रलेखा रोहिणी आसीत्।

➥ **एवं च चन्द्रापीडः तत्र दशरात्रं स्थित्वा परितुष्टहृदयाभ्यां श्वशुराभ्यां विसर्जितः पितुः पादमूलम् आजगाम। आगत्य च पुण्डरीके समारोपितराज्यभारः, कदाचित् उज्जयिन्याम्, कदाचित् हेमकूटे, कदाचित् चन्द्रलोके, कदाचित् अपरेष्वपि रम्यतरेषु स्थानेषु निवसन् सुखम् अनुबभूव। एवं चन्द्रापीडः, कादम्बरी, पुण्डरीकः, महाश्वेता, इत्येते सर्वेऽपि परस्पराावियोगेन परां कोटिम् आनन्दस्य अध्यगच्छन्।**

शब्दार्थ– दशरात्रम् = दस रात्रि। परितुष्टहृदयाभ्याम् = सन्तुष्ट हृदय वाले। श्वशुराभ्याम् = सास तथा ससुर से। विसर्जितः = विदा होकर। पितुः पादमूलम् = पिता के चरणों के पास। आजगाम = आ गया। समारोपितराज्यभारः = राज्य का भार सौंपकर। अपरेष्वपि = दूसरे। रम्यतरेषु = रमणीय। परस्परावियोगेन = परस्पर वियोग रहित होकर। परां कोटिम् = चरम सीमा को। अध्यगच्छन् = पहुँचे।

हिन्दी अनुवाद– इस प्रकार चन्द्रापीड वहाँ दस रात रहकर सन्तुष्ट हृदय वाले सास-ससुर से विदा होकर पिता के पास आ गया। वह पुण्डरीक के ऊपर राज्यभार सौंपकर कभी उज्जयिनी, कभी हेमकूट, कभी चन्द्रलोक, कभी दूसरे रमणीय स्थानों में निवास करता हुआ सुख भोगने लगा। इस प्रकार चन्द्रापीड और कादम्बरी तथा पुण्डरीक और महाश्वेता ये सभी वियोग रहित होकर आनन्द की चरम सीमा पर पहुँच गये।

व्याकरणात्मक टिप्पणी– दशरात्रम् = दशणां रात्रीणां समाहारः। समारोपितराज्यभारः = समारोपितः राज्यस्य भारः येन सः।

॥ प्रश्नोत्तरः ॥

प्रश्न 1. **उपर्युक्त गद्यांश की पुस्तक और लेखक का नाम लिखिए।**
उत्तर– प्रस्तुत गद्यांश की पुस्तक का नाम 'चन्द्रापीडकथा' और इसके लेखक 'बाणभट्ट' हैं।
प्रश्न 2. **'सर्वेऽपि परस्परावियोगेन परां कोटिम् आनन्दस्य अध्यगच्छन्।' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।**
उत्तर– ये सभी वियोग रहित होकर आनन्द की चरम सीमा पर पहुँच गये।
प्रश्न 3. **चन्द्रापीडः कियन्तः रात्रं अतिष्ठत्?**
उत्तर– चन्द्रापीडः दशरात्रं अतिष्ठत्।
प्रश्न 4. **चन्द्रापीडः श्वशुराभ्यां विसर्जितः कुत्र आजगाम?**
उत्तर– चन्द्रापीडः श्वशुराभ्यां विसर्जितः पितुः पादमूलम् आजगाम।
प्रश्न 5. **के परस्परवियोगेन परां कोटिम् आनन्दस्य अध्यगच्छन्?**
उत्तर– चन्द्रापीडः, कादम्बरी, पुण्डरीकः, महाश्वेता, इत्येते सर्वेऽपि परस्परवियोगेन परां कोटिम् आनन्दस्य अध्यगच्छन्।

अनन्ताचार्यनामासौ नल्लानभिजनः सुधीः।
जग्रन्थ बाणभट्टस्य वाक्यैरेव कथामिमाम्॥
इति चन्द्रापीडकथा
सम्पूर्णा।

●●

➡ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. शुकनासः कस्य मंत्री आसीत्?
उत्तर— शुकनासः राज्ञः तारापीडस्य मंत्री आसीत्।

प्रश्न 2. विलासवती कस्य महिषि आसीत्?
उत्तर— विलासवती राज्ञः तारापीडस्य महिषी आसीत्।

प्रश्न 3. चन्द्रापीडः कस्य पुत्रः आसीत्?
उत्तर— चन्द्रापीडः विलासवत्याः तारापीडस्य च पुत्रः आसीत्।

प्रश्न 4. कः स्वप्ने विलासवत्याः वदने प्रविशन्तं शशिनम् अद्राक्षीत्?
उत्तर— राजा तारापीडः स्वप्ने विलासवत्याः वदने प्रविशन्तं शशिनम् अद्राक्षीत्।

प्रश्न 5. भगवन्तं जाबालिं शुकः कुत्र अपश्यत्?
उत्तर— भगवन्तं जाबालिं शुकः रक्ताशोकतरोः अधःछायायाम् अपश्यत्।

प्रश्न 6. कस्मात् कारणात् हारीतः शुक-शिशुं स्वाश्रमं आनीतवान्?
उत्तर— शाल्मलीवृक्षस्य तवस्विदुरारोहत्वात् शुकशिशुम् स्वाश्रमम् हारीतः आनीतवान्।

प्रश्न 7. हारीतः कस्यः पुत्रः आसीत्?
उत्तर— हारीतः जाबालेः महर्षेः पुत्रः आसीत्।

प्रश्न 8. वैशम्पायनः शुकः कस्मिन् वृक्षे अवसत्?
उत्तर— वैशम्पायनः शुकः शाल्मली वृक्षे अवसत्।

प्रश्न 9. कः मुनिः पम्पाभिधानस्य सरसः नातिदूरवर्तिनि तपोवने प्रतिवसति स्म?
उत्तर— जाबालिः नाम मुनिः पम्पाभिधानस्य सरसः नातिदूरवर्तिनि तपोवने प्रतिवसति स्म।

प्रश्न 10. शुकशावकान् कः पादपम् आरुह्य क्षितौ अपातयत्?
उत्तर— शुकशावकान् जीर्णः शबरः पादपम् आरुह्य क्षितौ अपातयत्।

प्रश्न 11. मातंगः कः आसीत्?
उत्तर— मातंगः शबर सेनापतिः आसीत्।

प्रश्न 12. उज्जयिनी कुत्र अस्ति?
उत्तर— उज्जयिनी अवन्तिदेशे अस्ति।

प्रश्न 13. जीर्णः शाल्मली वृक्षः कुत्र आसीत्?
उत्तर— पम्पाभिधानस्य सरसः पश्चिमे तीरे जीर्णः शाल्मलीवृक्षः आसीत्।

प्रश्न 14. आश्रमस्य नातिदूरे कः आसीत्।
उत्तर— आश्रमस्य नातिदूरे पम्पाभिधानं सरः आसीत्।

प्रश्न 15. विदिशा कस्य राजधानी आसीत्?
उत्तर— विदिशा शूद्रकस्य राजधानी आसीत्।

प्रश्न 16. सकलभूतलरत्नभूतः कः आसीत्?
उत्तर— सकलभूतलरत्नभूतः वैशम्पायनो नाम शुकः आसीत्।

प्रश्न 17. कः कृतजयशब्द राजानम् उद्दिश्य आर्याम् छन्दः पपाठ?
उत्तर— वैशम्पायनो शुकः कृतजयशब्द राजानाम् उद्दिश्य आर्याम् छन्दः पपाठ।

प्रश्न 18. शूद्रकस्य समीपं पञ्जरस्थं शुकमादाय का आगता?
उत्तर— चाण्डाल-कन्या पञ्जरस्थं शुकमादाय शूद्रकसमीपं आगता।

प्रश्न 19. का शूद्रकस्य पुरः पञ्जरं निधाय अपससार?
उत्तर— चाण्डालकन्या शूद्रकस्य पुरः पञ्जरं निधाय अपससार।

प्रश्न 20. शुकस्य किम् नाम आसीत्?
उत्तर— शुकस्य "वैशम्पायनः" इति नाम आसीत्।

प्रश्न 21. केषाम् धर्मः अनाथपरिपालनम् अस्ति?
उत्तर— अनाथपरिपालनम् तपस्विसदृशानाम् जनानाम् धर्मः अस्ति।

प्रश्न 22. शुक-शकुनिकुलानि कुत्र प्रतिवसन्ति स्म?
उत्तर— शुक-शकुनिकुलानि शाल्मली वृक्षे प्रतिवसन्ति स्म।

प्रश्न 23. दण्डकारण्यः कुत्र आसीत्?
उत्तर— दण्डकारण्यःविन्ध्याटव्याम् आसीत्।

प्रश्न 24. किम् नाम्न्या सरितया आश्रमपदम् परिगतम् आसीत्?
उत्तर— गोदावर्या सरितया आश्रमपदम् परिगतम् आसीत्।

प्रश्न 25. शुकः कोलाहलध्वनिम् आकर्ण्य कुत्र अविशत्?
उत्तर— शुकः कोलाहलध्वनिम् आकर्ण्य स्वपितुः पक्षपुटान्तरम् अविशत्।

प्रश्न 26. महाश्वेता कस्मिन् अनुरक्ता आसीत्?
उत्तर— महाश्वेता पुण्डरीके अनुरक्ता आसीत्।

प्रश्न 27. कादम्बरी कस्मिन् अनुरक्ता आसीत्?
उत्तर— कादम्बरी चन्द्रापीडे अनुरक्ता आसीत्।

प्रश्न 28. का शूद्रकस्य राजधानी आसीत्?
उत्तर— विदिशा शूद्रकस्य राजधानी आसीत्।

प्रश्न 29. शूद्रकः कस्य अवतारः आसीत्?
उत्तर— शूद्रकः चन्द्रापीडस्य अवतारः आसीत्।

प्रश्न 30. कौ चन्द्रापीडस्य माता पितरौ आस्ताम्?
उत्तर— चद्रापीडस्य माता विलासवती पिता च तारापीडः आस्ताम्।

प्रश्न 31. चन्द्रापीडस्य बालमित्रं कः आसीत्?
उत्तर— चन्द्रापीडस्य बालमित्रं वैशम्पायनः आसीत्।

प्रश्न 32. कः विद्यामन्दिरम् चन्द्रापीडम् आनेतुं अगच्छत्?
उत्तर— बलाधिकृतः बलाहकः चन्द्रापीडम् आनेतुं विद्यामन्दिरम् अगच्छत्।

प्रश्न 33. पत्रलेखा का आसीत्?
उत्तर— चन्द्रपत्नी रोहिण्याः अवतारः पत्रलेखा चन्द्रापीडस्य च ताम्बूलकरंकवाहिनी आसीत्।

प्रश्न 34. चन्द्रापीडः कस्य अवतारः आसीत्?
उत्तर— चन्द्रापीडः चन्द्रस्य अवतारः आसीत्।

प्रश्न 35. किं नाम चन्द्रापीडस्य अश्वस्य आसीत्?
उत्तर— इन्द्रायुधः चन्द्रापीडस्य अश्वस्य नाम आसीत्।

प्रश्न 36. कस्य अवतारः इन्द्रायुधः आसीत्?
उत्तर— कपिंजलस्य अवतारः इन्द्रायुधः आसीत्।

➠ बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. का समुत्थाय महाश्वेतां स्नेह निर्भरं कण्ठे जग्राह?
(क) चन्द्रापीडः (ख) कादम्बरी (ग) वैशम्पायनः (घ) तरलिका
उत्तर–(ख) कादम्बरी।

2. कस्योक्तिः 'एष च दर्शनात् प्रभृति मे निष्कारण बन्धुतां गतः।'
(क) पत्रलेखा (ख) मदलेखा (ग) महाश्वेता (घ) कादम्बर्याः
उत्तर–(ग) महाश्वेता।

3. का कादम्बरीम् अनामयं पप्रच्छ? (2019 DB, DC)
(क) महाश्वेता (ख) पत्रलेखा (ग) पुण्डरीकः (घ) तारापीडः
उत्तर–(क) महाश्वेता।

4. का कादम्बरीम् अभाषत– 'अयम् अभिनवागतः चन्द्रापीडः आराधनीयः।'
(क) मदलेखा (ख) महाश्वेता (ग) केयूरकः (घ) तरलिका
उत्तर–(ख) महाश्वेता।

5. ''सखि, लज्जेऽहम् अनुपजात परिचयाप्रागल्भ्येनानेन।'' कस्योक्तिः? (2020 ZP)
(क) महाश्वेता (ख) तरलिका (ग) मदलेखा (घ) कादम्बर्याः
उत्तर–(घ) कादम्बर्याः।

6. कः केयूरकेण उपदिश्यमानमार्गः मणिमन्दिरम् अगात्?
(क) पुण्डरीकः (ख) कपिंजलः (ग) चन्द्रापीडः (घ) वैशम्पायनः
उत्तर– (ग) चन्द्रापीडः।

7. गन्धर्वराजपुत्री का आसीत्? (2017 NG, NH, 18 BD, 19 DC, DD, DE, 20 ZO, ZQ, ZS)
(क) तरलिका (ख) मदलेखा (ग) पत्रलेखा (घ) कादम्बरी
उत्तर–(घ) कादम्बरी।

8. 'परित्यक्तः कुलकन्यकानां क्रमः' कस्योक्तिः? (2017 NG)
(क) महाश्वेतया (ख) कादम्बर्या (ग) पत्रलेखया (घ) मदलेखया
उत्तर–(ख) कादम्बर्या।

9. कः अचिन्तयत् 'किमनेन वृथैव मनसा खेदितेन?
(क) तारापीडः (ख) शुकनासः (ग) चन्द्रापीडः (घ) कपिंजलः
उत्तर–(ग) चन्द्रापीडः।

10. 'उत्तरावकाशम् अपहरन्त्या कृतं वचसि कौशलम्' कस्योक्तिः?
(क) चन्द्रापीडस्य (ख) पुण्डरीकस्य (ग) तारापीडस्य (घ) केयूरकस्य
उत्तर–(क) चन्द्रापीडस्य।

11. कादम्बरीं समुपसृत्य, तस्यामेव सुधावेदिकायां विन्यस्तम् आसानं भेजे–
(क) चन्द्रापीडः (ख) कपिंजलः (ग) पुण्डरीकः (घ) वैशम्पायनः
उत्तर–(क) चन्द्रापीडः।

12. 'युवयोः दूरस्थितयोरपि कमलिनीकमलाबान्धवयोरिव स्थिरेयं प्रीतिः आप्रलयात्। कस्योक्तिः?
(क) चन्द्रापीडस्य (ख) शुकनासस्य (ग) महाश्वेतायाः (घ) तरलिकायाः
उत्तर–(ग) महाश्वेतायाः।

13. 'बहुभाषिणः न श्रद्दधाति लोकः' कस्योक्तिः? (2019 DE, 20 ZP)
(क) चन्द्रापीडस्य (ख) केयूरकस्य (ग) शुकनासस्य (घ) कपिंजलस्य
उत्तर–(क) चन्द्रापीडस्य।

14. काम्वर्जम् अशेषः कन्यकाजनः चन्द्रापीडं व्रजन्तम् आबहिस्तोरणात् अनुवव्राज?
(क) कादम्बरीम् (ख) महाश्वेताम् (ग) तरलिकाम् (घ) मदलेखाम्
उत्तर–(क) कादम्बरीम्।

15. ''केयूरक! कथय, कच्चित् कुशलिनी ससखीजना देवी कादम्बरी भगवती महाश्वेता च।'' कः पप्रच्छ?
(क) चन्द्रापीडः (ख) तारापीडः (ग) शुकनासः (घ) कपिंजलः
उत्तर–(क) चन्द्रापीडः।

16. कस्य सन्देशः-धन्या खलु ते येषां न गतोऽपि चक्षुषोर्विषयम्?
(क) महाश्वेता (ख) तरलिका (ग) मदलेखा (घ) केयूरकः
उत्तर–(क) महाश्वेता।

17. महाश्वेता कस्मिन् अनुरक्ता आसीत्? (2018 BD, BE, 19 CZ, DB, 20 ZQ, ZS)
(क) पुण्डरीके (ख) चन्द्रापीडे (ग) वैशम्पायने (घ) शूद्रके
उत्तर–(क) पुण्डरीके।

18. शुकनासपुत्रः वैशम्पायनः कस्य अवतारः आसीत्? (2017 NI)
अथवा वैशम्पायनः कस्य अवतारः आसीत्? (2017 NH)
(क) पुण्डरीकस्य (ख) शूद्रकस्य (ग) चन्द्रापीडस्य (घ) कपिंजलस्य
उत्तर–(क) पुण्डरीकस्य।

19. कस्याः माता गौरी पिता च हंस आस्ताम्?
(क) महाश्वेतायाः (ख) कादम्बर्या (ग) मदलेखायाः (घ) पत्रलेखायाः
उत्तर–(क) महाश्वेतायाः।

20. चन्द्रापीडस्य अश्वस्य नाम आसीत्–
अथवा चन्द्रापीडस्य अश्वस्य नाम किम् ? (2020 ZR)
(क) चक्रायुधः (ख) इन्द्रायुधः (ग) वज्रायुधः (घ) शक्तियुधः
उत्तर–(ख) इन्द्रायुधः।

21. ''अहो मानषीषु पक्षपातः प्रजापतेः'' इति का चिन्तायां बभूव?
(क) मदलेखा (ख) पत्रलेखा (ग) कादम्बरी (घ) महाश्वेता
उत्तर–(ग) कादम्बरी।

22. कः अपृच्छत्– ''देवि! जानामि कामरतिं निमित्तीकृत्य प्रवृत्तोऽयं व्याधिः।''
(क) चन्द्रापीडः (ख) पुण्डरीकः (ग) कपिंजल (घ) तारापीडः
उत्तर–(क) चन्द्रापीडः।

23. ''मृणालिन्याः किसलयमपि हुताशनायते'' कस्योक्तिः?
(क) मदलेखा (ख) पत्रलेखा (ग) तरलिका (घ) महाश्वेता
उत्तर–(क) मदलेखा।

24. का अब्रवीत्– ''पत्रलेखे दर्शनात् प्रभृति प्रियासि।''
(क) महाश्वेता (ख) कादम्बरी (ग) मदलेखा (घ) तरलिका
उत्तर–(ख) कादम्बरी।

25. कस्योक्ति– 'आज्ञापय किं कृतं देवेन चन्द्रापीडेन'?
(क) कादम्बरी (ख) पत्रलेखा (ग) मदलेखा (घ) महाश्वेता
उत्तर–(ख) पत्रलेखा।

26. का अवदत्– 'उपवनेषु एकाकिन्याः मे परिष्वङ्गम् आचरति।'
(क) पत्रलेखा (ख) मदलेखा (ग) महाश्वेता (घ) कादम्बरी
उत्तर–(घ) कादम्बरी।

27. ''मन्मथमूढमानसश्च, कथय, हे पत्रलेखे! केन प्रकारेण निषिध्यते।'' केन कथितम्?
(क) कादम्बरी (ख) महाश्वेता (ग) तरलिका (घ) मदलेखा
उत्तर–(क) कादम्बरी।

28. ''अनाराधित प्रसन्नेन कुशुमशरेण भगवता ते वरः दत्तः।'' कस्योक्तिः?
(क) तरलिका (ख) मदलेखा (ग) पत्रलेखा (घ) महाश्वेता
उत्तर–(ग) पत्रलेखा।

29. कः चेतस्यकरोत्– 'अहो संदेहदोलाधिरूढं मे जीवितम्।
(क) चन्द्रापीडः (ख) वैशम्पायनः (ग) केयूरकः (घ) कपिञ्जलः
उत्तर–(क) चन्द्रापीडः।

30. 'बलवान् जननीस्नेहः।' कस्योक्तिः? (2019 CZ, 20 ZO)
(क) तारापीडः (ख) शुकनासः (ग) श्वेतकेतुः (घ) चन्द्रापीडः
उत्तर–(घ) चन्द्रापीड।

31. प्रहृष्टचेताः कः अब्रवीत्– ''केयूरक! करतलवर्तिनीं सिद्धिम् अवधारय''?
(क) शुकनासः (ख) तारापीडः (ग) कपिञ्जलः (घ) चन्द्रापीडः
उत्तर–(घ) चन्द्रापीडः।

32. ''सर्वो हि प्रत्याशया धार्यते।'' कस्योक्तिः? (2020 ZT)
(क) श्वेतकेतु (ख) शुकनास (ग) जाबालि (घ) केयूरक
उत्तर–(घ) केयूरक।

33. मदलेखा कस्याः चरणौ प्रक्षालितवती? (2017 NC)
(क) चन्द्रापीडस्य (ख) महाश्वेतायाः (ग) पत्रलेखायाः (घ) विलासवत्याः
उत्तर–(क) चन्द्रापीडस्य।

34. चन्द्रापीडाय का ताम्बूलं ददौ? (2017 NC)
(क) पत्रलेखा (ख) मदलेखा (ग) कादम्बरी (घ) महाश्वेता
उत्तर–(ग) कादम्बरी।

35. ''आनीतो मम विप्रलम्भकः चन्द्रापीडः'' इति कस्याः कथनम्? (2017 ND)
(क) कादम्बर्याः (ख) महाश्वेतायाः (ग) मदलेखायाः (घ) पत्रलेखायाः
उत्तर–(क) कादम्बर्याः।

36. ''अदर्शनमुपगते भगवति गभास्तिमालिनि'' इत्यस्मिन् वाक्ये कस्य वर्णनमस्ति? (2017 ND)
(क) इन्द्रस्य (ख) सूर्यस्य (ग) यमस्य (घ) कुबेरस्य
उत्तर—(ख) सूर्यस्य।

37. जाबालि महर्षेः कः पुत्रः आसीत्? (2017 NF)
(क) शुकनासः (ख) हारीतः (ग) वैशम्पायनः
उत्तर—(ख) हारीतः।

38. विदिशा कस्य राजधानी आसीत्? (2017 NF)
(क) चन्द्रापीडस्य (ख) तारापीडस्य (ग) शूद्रकस्य (घ) शुकनासस्य
उत्तर—(ग) शूद्रकस्य।

39. केयूरकेण उत्सङ्गे गृहीतचरणयुगलः कः चिन्तां विवेश? (2018 BC)
(क) विलासवती (ख) तारापीडः (ग) पुण्डरीकः (घ) चन्द्रापीडः
उत्तर—(घ) चन्द्रापीडः।

40. अम्बरतलात् अवतरन् समुत्सृष्टशुकशरीरः कः आसीत्? (2018 BC)
(क) केयूरकः (ख) पुण्डरीकः (ग) चन्द्रापीडः (घ) तारापीडः
उत्तर—(ख) पुण्डरीकः।

41. ''एष च दर्शनात् प्रभृति मे निष्कारण वन्धुतां गतः।'' कस्योक्तिः? (2018 BE, 19 DA)
(क) पत्रलेखा (ख) मदलेखा (ग) महाश्वेता (घ) कादम्बर्याः
उत्तर—(ग) महाश्वेता।

42. कादम्बरी कस्मिन् अनुरक्ता असीत्? (2019 DD, 20 ZU)
(क) पुण्डरीके (ख) शूद्रके (ग) वैशम्पायने (घ) चन्द्रापीडे
उत्तर—(घ) चन्द्रापीडे।

43. कादम्बरी कः आसीत्? (2019 DF, 20 ZT)
(क) चन्द्रापीडस्य प्रेयसी (ख) केयूरकस्य पुत्री (ग) पत्रलेखायाः भगिनी
उत्तर—(क) चन्द्रापीडस्य प्रेयसी।

44. चन्द्रापीडस्य माता कः आसीत्? (2019 DF)
(क) मदलेखा (ख) पत्रलेखा (ग) विलासवती
उत्तर—(ग) विलासवती।

45. हरीतः कस्य पुत्रः आसीत्? (2020 ZR)
(क) महर्षिजाबलिः (ख) विश्वामित्रस्य (ग) अगस्त्यस्य (घ) वशिष्ठस्य
उत्तर—(क) महर्षिजाबलिः।

46. शुकनासः कस्य मंत्री आसीत्? (2020 ZU)
(क) हारीतस्य (ख) चन्द्रापीडस्य (ग) तारापीडस्य (घ) पुण्डरीकस्य
उत्तर—(ग) तारापीडस्य।

खण्ड - 'ख' (पद्य)

महाकविकालिदासप्रणीतम्

रघुवंश-महाकाव्यम्

(द्वितीयः सर्गः)

महाकवि कालिदास : एक संक्षिप्त परिचय

(2017 NF, NI, 18 BD, BE, 19 DA, DD)

जीवन-वृत्त एवं जन्म-स्थान—महाकवि कालिदास के जीवन-वृत्त के विषय में कोई भी प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध नहीं है। उन्होंने अपने ग्रन्थों में, महाकवि बाण के तुल्य, अपने जीवन के विषय में कोई सामग्री नहीं दी है, अतः अन्तःसाक्ष्य का अभाव है। परवर्ती काव्यों, महाकाव्यों या नाटकों में भी कहीं कालिदास के जीवन के विषय में कोई उल्लेख नहीं है, अतः बहिःसाक्ष्य का भी प्रायः अभाव है। केवल कुछ किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं, जिनके आधार पर कालिदास के जीवन पर कुछ प्रकाश पड़ता है।

कालिदास के जन्म-स्थान के विषय में भी पर्याप्त मतभेद है। कश्मीर के विद्वान् उनको कश्मीरी सिद्ध करते हैं, बंगाल के विद्वान् बंगाली और उज्जैन के विद्वान् उज्जयिनी-निवासी। 'मेघदूत' में कालिदास ने उज्जयिनी के प्रति विशेष आग्रह और आदर-भाव प्रदर्शित किया है, इससे ज्ञात होता है कि वे उज्जयिनी के निवासी थे या अधिक समय तक उज्जयिनी में रहे। 'मेघदूत' में उज्जयिनी नगरी के सौन्दर्य, शिप्रा नदी और महाकाल के मन्दिर का विशेष वर्णन मिलता है। विद्वानों का कहना है कि ये राजा विक्रमादित्य के नवरत्नों में से थे। विक्रमादित्य के निम्नलिखित नवरत्न कहे जाते हैं :

धन्वन्तरिक्षपणकामरसिंहशंकुवेतालभट्टघटखर्परकालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेःसभायां रत्नानि वै वररुचिर्नवविक्रमस्य॥

इनके विषय में एक मत यह भी है कि ये उज्जयिनी के राजा भोज के सभासद थे। एक कथा के अनुसार उनका सम्बन्ध श्रीलङ्का के राजा कुमारदास (500 ई.) से बताया जाता है। इनके विषय में अनेक किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं, किन्तु जो किंवदन्ती अधिक चल पड़ी है, उसके अनुसार पहले ये बड़े ही मूर्ख थे। एक बार किसी राजा की कन्या ने जिसका नाम विद्योत्तमा कहा जाता है, प्रतिज्ञा की कि जो विद्वान् शास्त्रार्थ में उसे हरा देगा उसी से वह अपना विवाह करेगी। उसने अनेक उद्भट विद्वानों को हराया जिससे पण्डित-समाज को अपमानित होना पड़ा, अतः उन्होंने एक ऐसा मूर्ख खोज निकाला जो उसी डाल को काट रहा था जिस पर वह बैठा था। उन्होंने उसे ले जाकर राजकुमारी के समक्ष प्रस्तुत किया और कहा कि आज पण्डित महाशय का मौन व्रत है, अतः ये संकेत द्वारा शास्त्रार्थ करेंगे। विद्योत्तमा ने इसे स्वीकार कर लिया। शास्त्रार्थ शुरू हुआ, राजकुमारी ने एक उँगली दिखायी। उसके उत्तर में मूर्ख ने दो उँगलियाँ दिखायीं। फिर राजकुमारी ने पाँच उँगलियाँ दिखायीं तो उस मूर्ख ने उत्तर में मुट्ठी दिखायी। उनके प्रश्नोत्तर का जो भी अर्थ रहा हो, किन्तु राजकुमारी ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली और उस मूर्ख पण्डित से उसका विवाह हो गया।

ऐसा कहा जाता है कि विवाह के बाद एक दिन मूर्ख कालिदास अशुद्ध शब्दों का उच्चारण कर गये, जिससे उनकी धर्मपत्नी ने मूर्ख कहकर उनका बड़ा अपमान किया। इस अपमान से पीड़ित होकर वे घर से बाहर निकल गये और अपना प्राण त्यागने के

लिए सरस्वती कुण्ड में कूद पड़े, किन्तु इनकी मृत्यु नहीं हुई। उन्होंने काली देवी की उपासना की और सरस्वती जी ने उनको वरदान दिया, जिसके फलस्वरूप कालिदास इतने प्रकाण्ड विद्वान् हुए।

विद्वान् हो जाने के बाद जब वे घर लौटे तो अपनी पत्नी से कहा 'अनावृतकपाटं द्वारं देहि।' पत्नी ने उनकी आवाज पहचानकर उत्तर दिया– 'अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः।' कहा जाता है कि कालिदास ने इनमें से तीन शब्दों को लेकर तीन काव्य-ग्रन्थ रचे। 'अस्ति' से कुमारसम्भव की रचना की जिसका प्रारम्भ 'अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः' आदि श्लोक से होता है। 'कश्चित्' से मेघदूत का निर्माण किया– 'कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः' और 'वाग्' शब्द से रघुवंश की रचना की– 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ, वागर्थप्रतिपत्तये।'

कालिदास के ग्रन्थों से ज्ञात होता है कि वह जन्म से ब्राह्मण थे और शिवभक्त थे, किन्तु अन्य देवताओं का भी आदर करते थे। मेघदूत और रघुवंश इस बात के परिचायक हैं कि उन्होंने भारतवर्ष का विस्तृत भ्रमण किया था। यही कारण है कि उनका भौगोलिक वर्णन बड़ा ही सुन्दर और स्वाभाविक है। उन्हें राजसी जीवन और राज-परिवारों का पूर्ण ज्ञान था। उन्होंने दरिद्रता आदि का वर्णन नहीं किया, जिससे मालूम होता है कि उनका जीवन बड़ा सुखमय और शान्त था। उन्होंने गीता, रामायण, महाभारत, वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, दर्शन, ज्योतिष, आयुर्वेद, संगीत, व्याकरण, छन्दःशास्त्र और काव्यशास्त्रादि का गम्भीर अध्ययन किया था, ऐसा उनके ग्रन्थों से विदित होता है।

कालिदास की रचनाएँ– कालिदास की सात रचनाएँ प्रसिद्ध हैं–

➥ नाटक

(1) मालविकाग्निमित्र– यह पाँच अङ्कों का नाटक है, जिसमें विदिशा के राजा अग्निमित्र तथा मालवदेश की राजकुमारी मालविका का प्रेम और उनके विवाह का वर्णन है।

(2) विक्रमोर्वशीय– यह भी पाँच अङ्कों का नाटक है। इसमें राजा पुरूरवा तथा उर्वशी का प्रेम और उनके विवाह की कथा वर्णित है।

(3) अभिज्ञानशाकुन्तल– यह कालिदास का विश्वविख्यात नाटक है, जिसमें आठ अङ्कों में दुष्यन्त और शकुन्तला के विवाह की कथा का वर्णन है।

➥ काव्य-ग्रन्थ

(4) कुमारसम्भव– यह सत्रह सर्गों का महाकाव्य है जिसमें शिव-पार्वती के विवाह, कुमार स्वामिकार्तिकेय का जन्म तथा कुमार द्वारा तारकासुर के वध की कथा है, किन्तु यह अधूरा ही उपलब्ध होता है।

(5) रघुवंश– यह उन्नीस सर्गों का महाकाव्य है। इसमें भगवान् रामचन्द्र जी के पूर्वज महाराज रघु के जन्म से लेकर उनके बाद के सभी राजाओं की कथा है।

➥ गीतिकाव्य या खण्डकाव्य

(6) ऋतुसंहार–कालिदास की प्रथम काव्यकृति है। इसमें छहों ऋतुओं का बड़ा ही मनोरम वर्णन है।

(7) मेघदूत– यह एक खण्डकाव्य है। इसमें एक वियोगी यक्ष का अपनी विरहिणी पत्नी के पास बादल द्वारा सन्देश भेजने का बड़ा ही सुन्दर वर्णन है।

कालिदास का समय–कालिदास के समय के विषय में प्रामाणिक सामग्री का नितान्त अभाव है। कालिदास ने स्वयं या उनके समकालीन किसी भी लेखक ने उनके विषय में कुछ भी नहीं लिखा है। उनके समय के विषय में जो मत प्रस्तुत किये गये हैं, वे अनुमान पर आधारित हैं। कालिदास के समय के विषय में केवल एक तथ्य अकाट्य माना जाता रहा है, वह है कालिदास का विक्रमादित्य के नवरत्नों में होना।

विक्रमादित्य का समय विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न कालों में निर्धारित कर कालिदास का स्थिति-काल छठी शताब्दी ईसवी से लेकर प्रथम शताब्दी ईसवी पूर्व तक दोलायमान कर रखा है। उनके स्थिति-काल के विषय में निम्न मत प्रस्तुत किये गये हैं–

(1) चतुर्थ–पञ्चम शताब्दी ई. या गुप्तकालीन मत

(2) द्वितीय शताब्दी ई. पू. का मत

(3) षष्ठ शताब्दी ई. का मत

(4) प्रथम शताब्दी ई. पू. का मत

इनमें से प्रथम शताब्दी ई. पू. का मत ही युक्तियुक्त है, जिसका उपपादन अन्य मतों का निराकरण करते हुए किया गया है। संक्षेप में–

➥ (1) चतुर्थ-पञ्चम शताब्दी ई. या गुप्तकालीन मत

यूरोपीय विद्वानों ने गुप्त नरेशों के समुन्नत साम्राज्य-काल में कालिदास का होना माना है। कीथ महोदय इस मत के समर्थक हैं कि शकों को भारत से निकाल बाहर करनेवाले, विक्रमादित्य की उपाधि धारण करनेवाले तथा अपने पूर्व के मालव संवत् को विक्रम संवत् के नाम से प्रचलित करनेवाले द्वितीय गुप्त सम्राट् चन्द्रगुप्त (375–413 ई.) थे। उनके मतानुसार भारतीय इतिहास के इसी स्वर्णयुग में महाकवि कालिदास का होना पाया जाता है। इस मत के समर्थन में यह कहा जाता है कि कालिदास के 'कुमारसम्भव' नामक महाकाव्य की रचना सम्भवतः चन्द्रगुप्त के पुत्र कुमारगुप्त के जन्म को लक्ष्य में रखकर की गयी जान पड़ती है। कालिदास ने गुप् धातु का बार-बार प्रयोग किया है। हरिषेण कृत 'प्रयागवाली प्रशस्ति' में किये गये समुद्रगुप्त (336–375 ई.) के विजय-वर्णन में तथा 'रघुवंश' में वर्णित रघु के दिग्विजय में घटनाओं का बड़ा साम्य दिखायी पड़ता है। कालिदास के ग्रन्थों में वर्णित सुख-शान्ति का समृद्धिकाल गुप्तकाल का ही सूचक है।

➥ (2) द्वितीय शताब्दी ई. पू. का मत

डॉ. कुन्हन राजा कालिदास की स्थिति ई. पू. द्वितीय शती में मानते हैं। वे कहते हैं कि कालिदास शुंगवंशीय राजा अग्निमित्र के समकालीन थे और 'मालविकाग्निमित्र' नाटक के भरत-वाक्य में उन्होंने अग्निमित्र का उल्लेख भी किया है। डॉ. राजा ने अग्निमित्र की राजधानी विदिशा बतायी है, जिसका उल्लेख कालिदास ने 'मेघदूत' में किया है।

➥ (3) षष्ठ शताब्दी ई. का मत

डॉ. हार्नली का मत है कि छठी शताब्दी में मालवदेश के राजा यशोधर्मन ने हूणों को परास्त करके 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की थी। फर्गुसन महोदय के मतानुसार इस विजय के उपलक्ष्य में इसी विक्रमादित्य उपाधिधारी राजा यशोधर्मन ने विक्रम संवत् चलाया और प्राचीनता का पुट देने के लिए 600 वर्ष पूर्व से (57 ई. पू. से) प्रचलित किया।

कुछ लोगों का कहना है कि 'मेघदूत' में कालिदास ने दिङ्नाग और निचुल का नामोल्लेख किया है, अतः वह दिङ्नाग का समकालीन था। दिङ्नाग एक बौद्ध दार्शनिक था जो 400–450 ई. में हुआ था।

➥ (4) प्रथम शताब्दी ई. पू. का मत

भारत में यह बात लोक-प्रसिद्ध है कि महाराज विक्रमादित्य उज्जयिनी के राजा थे। उन्होंने शकों को परास्त कर अपनी विजय के उपलक्ष्य में 57 ई. पू. में विक्रमीय संवत् का प्रवर्तन किया। सोमदेवकृत 'कथासरित्सागर' में उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य का उल्लेख है। यह ग्रन्थ गुणाढ्य कृत बृहत्कथा पर आधारित है। गुणाढ्य का समय लगभग 78 ई. माना जाता है। 'कथासरित्सागर' का वृत्तान्त ऐतिहासिक और प्रामाणिक माना जा सकता है, क्योंकि उसके मूल लेखक गुणाढ्य विक्रमादित्य के समय के अत्यधिक समीप थे। 'कथासरित्सागर' में विक्रमादित्य के राज्याभिषेक का वर्णन है–

सोऽपि तद्विक्रमादित्यो राज्यमासाद्य पैतृकम्।
नभो भास्वानिवारेभे राजा प्रतपितुं क्रमात्॥

विक्रमादित्य संस्कृत भाषा का संरक्षक और उद्धारक था। वह कवियों का आश्रयदाता था, अतः वह कालिदास का आश्रयदाता रहा होगा।

कालिदास ने कितने ही अपाणिनीय प्रयोग किये हैं। इससे ज्ञात होता है कि कालिदास उस समय हुए थे, जब पाणिनीय व्याकरण पूर्णतया प्रतिष्ठित नहीं हुआ था। कालिदास की शैली से ज्ञात होता है कि उनके समय में संस्कृत बोलचाल की भाषा थी। पतञ्जलि (150 ई.पू.) के समय में संस्कृत बोलचाल की भाषा थी। यह महाभाष्य के सूत्र और वैयाकरण के शास्त्रार्थ से सिद्ध है। कालिदास का समय उनके समीप ही होना चाहिए।

प्रयाग के समीप भीटा ग्राम में एक मुद्रा प्राप्त हुई है। इसका समय ईसा से पूर्व प्रथम शती माना जाता है। इस मुद्रा पर वृक्षों को सींचती हुई दो कन्याओं तथा एक मृग का पीछा करते हुए एक राजा का चित्र अङ्कित किया गया है। विद्वानों का यह निश्चित

मत है कि यह चित्र कालिदास के सुप्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञानशाकुन्तल' के प्रथम अङ्क का है। इसलिए यह माना जाता है कि यह नाटक इससे (प्रथम शती ई. पू. से) पूर्व अवश्य लिखा गया होगा।

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर कालिदास का स्थिति-काल प्रथम शताब्दी ई. पू. प्रमाणित किया गया है।

कालिदास की शैली

(2017 NC, ND, NF, NG, NH, 18 BC, BD, BE, BG,
19 CZ, DA, DB, DC, DD, DE, DF, 20 ZO, ZQ, ZS, ZT)

कविता-कामिनी-कान्त कालिदास की शैली में कहीं उपमाओं का लालित्य है, तो कहीं अर्थान्तरन्यास का अर्थ-गाम्भीर्य, कहीं उत्प्रेक्षाओं की ऊँची उड़ान है, तो कहीं प्राञ्जल पदावली का सौकुमार्य; कहीं प्रसाद है तो कहीं माधुर्य; कहीं कलाप्रधान है, तो कहीं कल्पनाप्रधान। प्रकृति के साथ तादात्म्य की अनुभूति उनके काव्य-गौरव को अधिक समुन्नत करती है।

(क) भाषा—कालिदास की भाषा की प्रमुख विशेषता यह है कि वह सदा रसानुकूल होती है। प्रकरण, प्रसङ्ग, पात्र और वर्ण्य-विषय के अनुरूप शब्दावली की संरचना मिलती है। इस प्रकार के पद-माधुर्य के कारण उनके काव्यों में संगीतात्मकता और लयात्मकता का दर्शन होता है। उनकी भाषा सरस, सरल और मनोरम है। लम्बे समासों का प्रायः अभाव है। कालिदास का यह शब्दलाघव उनकी कलात्मक अभिरुचि का परिचायक है।

(ख) भावाभिव्यक्ति—कालिदास ललित भावों के कवि हैं। उनके काव्यों में कल्पना की ऊँची उड़ान, मनोभावों की मार्मिक अभिव्यक्ति और भाव-सौन्दर्य पग-पग पर परिलक्षित होता है।

(ग) रस—कालिदास मूलतः शृङ्गार रस के कवि हैं। वे सम्भोग और विप्रलम्भ दोनों प्रकार के शृङ्गार के वर्णन में सिद्धहस्त हैं। करुण रस के भी कतिपय वर्णन अत्यन्त मार्मिक हैं। वीर रस के प्रसङ्ग यद्यपि कम हैं, तथापि उनमें कालिदास की योग्यता किसी भी प्रकार न्यून नहीं है। अन्य रसों के वर्णन अत्यल्प हैं।

(घ) गुण और रीति—कालिदास रस-सिद्ध कवि हैं। उनकी लोकप्रियता का प्रधान कारण है उनकी प्रसादपूर्ण, लालित्ययुक्त और परिष्कृत शैली। उनके सभी ग्रन्थ वैदर्भी रीति में लिखे गये हैं। मधुर शब्द, ललित रचना, समासों का सर्वथा अभाव या छोटे समासयुक्त पदों का होना, यही वैदर्भी रीति है। कालिदास की शैली में प्रसाद, माधुर्य और ओज इन तीनों गुणों की सत्ता है।

(ङ) अलङ्कार—कालिदास के काव्यों में अलङ्कार-विधान अनायास सिद्ध है। पद-पद पर अनुप्रास, उपमा, रूपक, दीपक, अर्थान्तरन्यास और उत्प्रेक्षाओं के दर्शन होते हैं। यद्यपि यमक, अतिशयोक्ति, दीपक, व्यतिरेक, प्रतिवस्तूपमा, श्लेष, निदर्शना, एकावली, दृष्टान्त, विरोधाभास, परिणाम आदि अलङ्कारों के भी सुन्दर प्रयोग मिलते हैं। उपमा कालिदास का अत्यन्त प्रिय अलङ्कार है। उनकी उपमाएँ असाधारण और मनोरम होती हैं। उनकी विशेषता यह है कि उनमें लिङ्ग-साम्य, भाव-साम्य और रमणीयता का अनुपम समन्वय है—

पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन प्रत्युद्गता पार्थिवधर्मपत्न्या।
तदन्तरे सा विरराज धेनुर्दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या॥ (रघु0 2/20)

नन्दिनी गाय राजा दिलीप और रानी सुदक्षिणा के बीच वैसी शोभा पा रही है, जैसी दिन और रात के मध्य में होनेवाली रक्तवर्ण सन्ध्या।

अवाकिरन् बाललताः प्रसूनैराचारलाजैरिव पौरकन्याः॥ (2/10)

दिलीप के ऊपर बाललताओं ने फूलों की उसी प्रकार वर्षा की जैसे नगर की कन्याएँ मङ्गलार्थक धान के लावों की वर्षा करती हैं।

अर्थान्तरन्यास में कवि का व्यावहारिक ज्ञान उच्च रूप में प्रकट हुआ है। उनके अर्थान्तरन्यास सुभाषित के रूप में प्रचलित हो गये। कहा भी गया है—**अर्थान्तरस्य विन्यासे कालिदासो विशिष्यते।**

(च) वर्णन-वैचित्र्य—कालिदास के वर्णनों में वैचित्र्य और वैविध्य दोनों हैं। उन्होंने अन्तःप्रकृति और बाह्य प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण किया है। मनोभावों का विशद् वर्णन, प्रकृति का मानवीकरण, प्रकृति के साथ तादात्म्य की अनुभूति, वर्णनों में सजीवता और स्वाभाविकता, भावानुकूल पद-विन्यास, तात्त्विक वर्णनों के साथ व्यञ्जना वृत्ति का आश्रय, कला में कल्पना का संयोग और सरल भाषा में भावों की अभिव्यक्ति आदि गुण कालिदास के वर्णनों की विशेषताएँ हैं। सन्ध्याकाल में सूर्यास्त का कितना मनोरम वर्णन है—

सञ्चारपूतानि दिगन्तराणि कृत्वा दिनान्ते निलयाय गन्तुम्।
प्रचक्रमे पल्लवरागताम्रा प्रभा पतङ्गस्य मुनेश्च धेनुः॥ (रघु0 2/15)

छन्दोयोजना– महाकवि कालिदास छन्दों के प्रयोग में अति कुशल हैं। वे भावानुकूल छन्दों का प्रयोग करते हैं। करुण भावों को व्यक्त करने के लिए मन्दाक्रान्ता छन्द का प्रयोग तथा गहन एवं गम्भीर भावों को व्यक्त करने के लिए वे शार्दूलविक्रीडित छन्द का प्रयोग करते हैं।

रघुवंश और कुमारसम्भव के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कालिदास को छोटे छन्द अधिक प्रिय थे। बड़े छन्दों का प्रयोग सर्गान्त में किया गया है। छोटे छन्दों में भी अनुष्टुप् अतिप्रिय छन्द है।

कालिदास की सर्वतोमुखी प्रतिभा उन्हें विश्व-साहित्य में असाधारण स्थान प्रदान करती है। उन्होंने महाकाव्य, गीतिकाव्य तथा नाट्य-रचना सभी में अपनी प्रखर प्रतिभा का समान परिचय दिया है।

उपमा कालिदासस्य

(2019 DD, 20 ZP, ZU)

अनेक चमत्कारपूर्ण उपमाओं की उद्भावना कालिदास की कविता कामिनी की कोई सानी नहीं रखती है। वे उपमा के सम्राट् हैं। उनकी सभी उपमायें वचन और लिङ्ग का विचार कर यथार्थ एवं वैज्ञानिक धरातल पर लिखी गई प्रतीत होती हैं।

कालिदास ने केवल भौतिक पदार्थों को ही उपमान नहीं बनाया है, बल्कि वेदशास्त्र, दर्शन, स्मृति, व्याकरण आदि को भी उपमान बनाया है। सुदक्षिणा वन की ओर जाती हुई नन्दिनी का अनुगमन करती है। वह उस समय ऐसी लग रही है जैसे वेदों के पीछे स्मृतियाँ चलती हैं–

तस्याः खुरन्यासपवित्रपांसुम्, अपांसुलानां धुरि कीर्तनीया।
मार्गं मनुष्येश्वर धर्मपत्नी, श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत् ॥

स्वयंवर में आये हुए राजाओं का परिचय प्राप्त करती हुई इन्दुमती आगे बढ़ती जाती है। वह जिन राजाओं को छोड़कर आगे बढ़ती जाती थी, उन राजाओं की इच्छाओं का दमन होता जाता था—

संचारिणी दीपशिखेव रात्रौ, ये यं व्यतीयाय पतिंवरा सा।
नरेन्द्र मार्गाद् इव प्रपेदे, विवर्णभावः स स भूमिपालः॥

रघुवंश महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में जब महाराज दिलीप नन्दिनी को चराकर वापस लौटते हैं, तो सुदक्षिणा उनकी प्रतीक्षा करती हुई स्वागत हेतु खड़ी है। दोनों के मध्य नन्दिनी उसी प्रकार शोभा पा रही थी जिस प्रकार दिन और रात के बीच सन्ध्या–

पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन, प्रत्युद्गता पार्थिवधर्म पत्न्या।
तदन्तरे सा विरराज धेनुः, दिनक्षपामध्यगतेव सन्ध्या॥

निम्न श्लोक में उपमा लौकिक भाव-बोध में गहरी उतरती दिखाई देती है। सम्पूर्ण श्लोक में चारुत्व का केन्द्रबिन्दु उपमा प्रयोग ही है। कालिदास ने साहचर्य द्योतित करने के लिए 'छाया' को उपमान के रूप में लिया है—

स्थितः स्थितामुच्चलितः प्रयातां निषेदुषीमासनबन्ध धीरः।
जलाभिलाषी जलमाददानां छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत्॥

महाकवि कालिदास ने उपमाओं का चयन करने के लिए पौराणिक कथाओं का भी आश्रय लिया है। अमूर्त कल्पनाओं के सृजन में भी कवि को पर्याप्त सफलता प्राप्त हुई है। भोजन के लिए पारण के समय उपस्थित नन्दिनी सिंह को उस प्रकार तृप्ति प्रदान करनेवाली थी जैसे चन्द्रमा का अमृत राहु को सन्तोष प्रदान करता है–

तस्यालमेषा क्षुधितस्य तृप्त्यै, प्रतिष्टकाला परमेश्वरेण।
उपस्थिता शोणित पारणा मे, सुरद्विषः चान्द्रमसी सुधेव॥

इस प्रकार कहा जा सकता है कि महाकवि कालिदास को उपमा के क्षेत्र में अद्भुत सफलता प्राप्त हुई है।

●●

रघुवंश महाकाव्य : एक संक्षिप्त परिचय

महाकवि कालिदास द्वारा विरचित 'रघुवंश महाकाव्यम्' (द्वितीयः सर्गः) को पाठ्यक्रम में प्रमुखता से स्थान दिया गया है।

महाकवि कालिदास की सात रचनाओं में रघुवंश को लेकर कहा जाता है–

''क इह रघुकारे न रमते?।''

अर्थात् संसार में कौन ऐसा व्यक्ति होगा, जिसे रघुवंश को पढ़ने और सुनने में रमण अर्थात् सम्पूर्ण आनन्द की प्राप्ति नहीं होगी। सम्पूर्ण आनन्द किसी सम्पूर्ण और श्रेष्ठ रचना से ही प्राप्त हो सकता है।

इसी प्रकार से गीतिकाव्यों में मेघदूत को लक्ष्य कर कहा गया है–

''मेघे माघे गतं वयः।''

अर्थात् कालिदास के 'मेघदूत' को तथा माघ के 'शिशुपालवध' को पढ़ने और समझने में एक विद्वान् व्यक्ति की समस्त आयु बीत सकती है। आधा जीवन भी यदि एक मेघदूत में व्यतीत माना जाय तो स्वतः सिद्ध है कि यह गीतिकाव्य अत्युत्तम है।

एवमेव कहा जाता है कि जीवित मनुष्यों को भूलोक का आनन्द मिलता है। देवतागण भुवःलोक में सुख प्राप्त करते हैं और पुण्यात्माओं को स्वर्गलोक का परमानन्द प्राप्त होता है। परन्तु समीक्षक कहते हैं कि जीवित व्यक्ति भूः, भुवः और स्वः तीनों लोकों का आनन्द एक साथ और एक ही रचना से प्राप्त करना चाहे तो उसे केवल एक 'अभिज्ञानशाकुन्तल' का पठन, मनन, श्रवण, अधिग्रहण करना चाहिए–

''वासन्तं कुसुमं फलं च युगपत् ग्रीष्मस्य सर्वं च यत्,
यच्चानन्यमनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतमभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयो–
रैश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे शाकुन्तलं सेव्यताम्॥''

उपर्युक्त तीनों अतिश्रेष्ठ रचनाओं में भी महाकाव्य 'रघुवंश' के नाम की सार्थकता निम्नलिखित वाक्य से स्वतः स्पष्ट होती है–

''रघूणां वंशः वर्ण्यते यस्मिन् तत्काव्यम्।''

अर्थात् जिस महाकाव्य में रघु के वंश का अथवा रघुवंश के राजाओं का वर्णन किया गया है, उसका नाम रघुवंश है।

सम्पूर्ण रघुवंश महाकाव्य का कथानक 19 सर्गों में विभक्त है। सभी सर्गों की कुल श्लोक संख्या 1569 है। कथा के अनुसार प्रत्येक सर्ग का पृथक् से नाम भी रखा गया है। उदाहरण के लिए हमारे पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रथम सर्ग में 95 श्लोक हैं और इसका अभिधान है– 'वसिष्ठाश्रमाभिगमन' अर्थात् महर्षि वसिष्ठ के आश्रम की ओर गमन करना।

वैवस्वत मनु के वंशज राजा दिलीप और उनकी रानी सुदक्षिणा के कोई सन्तान नहीं हुई। दुःखी होकर वे दोनों कुलगुरु वसिष्ठ के आश्रम में गए। महर्षि वसिष्ठ ने कामधेनु की पुत्री नन्दिनी की सेवा करने का मार्ग सुझाया, ताकि अभीष्ट फल की प्राप्ति का वरदान पाया जा सके।

राजा दिलीप व रानी सुदक्षिणा ने इक्कीस दिनों तक नन्दिनी की सेवा की। बाईसवें दिन नन्दिनी ने राजा की प्रतिज्ञा व सेवा की परीक्षा ली। एक मायावी सिंह ने गाय को खाना चाहा। राजा ने गाय की रक्षा कर स्वयं को प्रस्तुत किया। विचलित न होते देखकर नन्दिनी प्रसन्न हुई और राजा को पुत्रप्राप्ति का वरदान दिया।

दिलीप व सुदक्षिणा के रघु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। बड़ा हुआ। उसका विवाह किया। युवराज बनाकर राजगद्दी सौंप दी। स्वयं दिलीप ने 100 अश्वमेध यज्ञ सम्पन्न किए। रघु को राजा बनाकर वन में चले गए।

रघु ने दिग्विजय यात्रा प्रारम्भ की। चारों दिशाओं में घूमता हुआ घोड़ा हिमालय पर पहुँचा। वहाँ विजयध्वज लहराकर अयोध्या लौटा। विश्वजित् नामक यज्ञ किया।

रघु के अज नामक पुत्र पैदा हुआ। बड़े होने पर अज विवाह के लिए विदर्भ के राजा भोज द्वारा आयोजित स्वयंवर में गए।

स्वयंवर में राजा भोज की बहन इन्दुमती ने सबको छोड़कर अज के गले में वरमाला डाली। राजा भोज ने प्रसन्नतापूर्वक अपनी बहन का विवाह अज से कर दिया। यहीं पर प्रदत्त एक उपमा के कारण 'दीपशिखा कालिदास' उपाधि प्रसिद्ध हुई।

अज इन्दुमती को लेकर राजधानी में पहुँचे। रघु ने अज का राज्याभिषेक किया और सारा भार उसे सौंपकर वन में चले गए।

अज और इन्दुमती के पुत्र दशरथ का जन्म हुआ। दुर्घटना में इन्दुमती की मृत्यु हो गई। अपनी पत्नी के वियोग में किया गया अज का विलाप सम्पूर्ण साहित्य में प्रसिद्ध है। दशरथ का राज्याभिषेक कर अज ने भी प्राण त्याग दिए।

दशरथ ने कौशल्यादि तीन रानियों से विवाह किया। तमसा नदी के तट पर भूलवश शब्दवेधी बाण से श्रवणकुमार का वध हो गया। उसके अन्धे माता-पिता ने दशरथ को शाप दिया।

सन्तानहीनता से परेशान दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ कराया। तीन रानियों से चार पुत्र पैदा हुए। कौशल्या के राम, सुमित्रा के लक्ष्मण व शत्रुघ्न और कैकयी के भरत।

विश्वामित्र यज्ञ व तपस्वियों की रक्षा के लिए राम व लक्ष्मण को मांग ले गए। मिथिलानरेश जनक द्वारा आयोजित स्वयंवर में राम ने शिवधनुष तोड़कर सीता का वरण किया। इसी तरह लक्ष्मण का उर्मिला से, भरत का माण्डवी से व शत्रुघ्न का श्रुतकीर्ति से विवाह हुआ।

राम के राज्याभिषेक की घोषणा से तिलमिलाकर कैकयी ने अपने वर मांगकर राम को चौदह वर्षों का वनवास और भरत को राजगद्दी दिलवा दी। पंचवटी में लक्ष्मण ने रावणभगिनी शूर्पणखा के नाक-कान काट लिए। रावण ने कुद्ध होकर सीता को चुरा लिया। हनुमान्जी ने सीता को खोजा। राम ने लंका पर चढ़ाई की। रावण को मारा। विभीषण को लंकाधिपति बनाया। स्वयं अयोध्या लौट आए।

पुष्पक विमान में आते समय सीता को पम्पासरोवर, पञ्चवटी, गोदावरी आदि स्थान दिखाए। अयोध्या के उपवन में ठहरे। भरत आकर उनसे मिले।

सीता के चरित्रविषयक सामाजिक कलंक के कारण राम ने सीता का निर्वासन कर दिया। लक्ष्मण गर्भवती सीता को वाल्मीकि के आश्रम में छोड़ आए।

वाल्मीकि आश्रम में सीता के लव और कुश नामक दो पुत्र हुए। बड़े हुए। लक्ष्मण के अंगद व चित्रकेतु, भरत के तक्ष व पुष्कल तथा शत्रुघ्न के शत्रुघाती व सुबाहु दो-दो पुत्र उत्पन्न हुए। सीता की प्रार्थना स्वीकार कर धरती फट गई। सीता धरती में समा गईं। राम भी अपने भाइयों के साथ स्वर्गारोहण कर गए।

शेष सातों भाइयों ने मिलकर कुश को अपने परिवार का मुखिया बनाया। कुश का नागकन्या कुमुद्वती से विवाह हुआ।

कुश व कुमुद्वती के पुत्र अतिथि ने चारों प्रकार की विद्यायें सीखीं। निषधराज की कन्या से अतिथि का विवाह हुआ। कुश की मृत्यु पर कुमुद्वती भी सती हो गई।

अतिथि के निषध और निषध के नल इत्यादि होते-होते रघुवंश में कुल 21 राजा क्रमशः उत्पन्न होकर राजगद्दी सम्भालते रहे। अन्तिम राजा अग्निवर्ण था।

भोगविलास में आकंठ डूबने के कारण अग्निवर्ण को क्षयरोग हो गया। उसका शरीर गल-गल कर पीला पड़ गया। अन्त में मर गया। उसकी गर्भवती रानी सिंहासन पर बैठी। मन्त्रियों की सलाह लेकर राजकाज करने लगी।

यही संक्षिप्त कथानक है, उस रघुवंश नामक महाकाव्य में विद्यमान 19 सर्गों का जिसमें सूर्यवंशी या इक्ष्वाकुवंशी राजाओं

की जीवनगाथा का क्रमशः वर्णन किया गया है। इन सभी 21 राजाओं में क्योंकि राजा रघु ने ही दिग्विजय की थी और अन्य किसी ने दसों दिशाओं को नहीं जीता था। अतः रघु ही प्रधान हुए और उनका तथा उनके वंश का वर्णन होने के कारण इस महाकाव्य का नाम 'रघुवंश' सर्वथा सार्थक सिद्ध हुआ।

कालिदास की विनम्रता– महान् लोगों की महानता का मूल कारण ही यह होता है कि सारा संसार उन्हें महान् मानता है परन्तु वे स्वयं अपने-आपको ऐसा नहीं मानते हैं। कालिदास भले ही विश्वकवि, कविकुलगुरु, कविकुलशिरोमणि, दीपशिखाकालिदास इत्यादि विशिष्ट उपाधियों से विभूषित किए गए हों परन्तु सूर्यवंश का वर्णन करने में वे अपने-आपको बहुत छोटा मानते हैं–

''क्व सूर्यप्रभवो वंशः, क्व चाल्पविषया मतिः।''

अर्थात् कहाँ तो सूर्य की परम्परा में वैवस्वत मनु का वंश और कहाँ अत्यल्प विषयों को जानने वाली मेरी छोटी-सी बुद्धि?

जिस वाक्य में दो अलग वस्तुओं के लिए दो बार 'क्व' शब्द का प्रयोग होता है, वहाँ पर उन दोनों विषयों में महदन्तर ज्ञात होता है। कालिदास स्वयं को सूर्यवंश के राजाओं का वर्णन करने में समर्थ नहीं मानते हैं और अपने इस प्रयास को उसी तरह का मानते हैं, जैसे कोई अल्पबुद्धि व्यक्ति लकड़ी की छोटी-सी नाव या डोंगी में बैठकर महासागर को तैरने का प्रयास करे।

कालिदास की बुद्धि उडुप है और सूर्यवंश महासागर है। परन्तु ऐसा होने पर भी प्रयास तो करना ही होता है। विशेषता भी इसी बात में है कि डोंगी से महासमुद्र को पार किया जाये। तभी तो वाहवाही मिलती है अन्यथा बड़े जहाज में बैठकर तो कोई भी समुद्र को पार कर सकता है। उसमें कौन-सी बड़ी बात है।

इसी बात का विस्तार करते हुए कालिदास दूसरा उदाहरण देते हैं और कहते हैं कि –

''मन्दः कवियशः प्रार्थी गमिष्याम्युपहास्यताम्।''

अर्थात् मैं मन्दमति होकर भी एक कवि के रूप में यश को प्राप्त करने की इच्छा रखता हूँ तो उसी प्रकार से उपहास का पात्र बनूँगा जिस प्रकार से वामनशरीरी व्यक्ति उपहासास्पद बन जाता है, जब वह किसी ऊँची डाली पर लगे फल को तोड़ने का प्रयास उछल-उछल कर करता है। लम्बे हाथों वाला भी जिसे आसानी से नहीं प्राप्त कर सकता, उसे बौना व्यक्ति उछलकर प्राप्त करने का प्रयास करे तो हँसी का पात्र तो बनेगा ही।

यहाँ पर वामनशरीरी और मन्दमति होकर भी महाकवि का यश प्राप्त करने का प्रयास करते हुए कालिदास वास्तव में महर्षि वाल्मीकि तथा महर्षि च्यवन की ओर संकेत करते हैं। ये दोनों ही महाशय कालिदास से पूर्ववर्ती हैं। दोनों ने सूर्यवंश में उत्पन्न राजाओं का यशोगान किया है। दोनों ने ही संसार में अपने इस कार्य के लिए महाकवि के रूप में ख्याति प्राप्त की है। स्वयं से पहले यदि कोई व्यक्ति सम्पूर्ण और बड़ी सफलता उसी क्षेत्र में प्राप्त कर चुका होता है तो परवर्ती व्यक्ति के मन में शंकायें और अधिक बढ़ जाती हैं। पूर्ववर्तियों से आगे निकलने की इच्छा तो मन में रहती है परन्तु सफलता को लेकर सन्देह और बढ़ जाता है।

मन में ऐसी और इतनी शंकाओं के होते हुए भी अपने द्वारा किए जा रहे प्रयास के कारण का उल्लेख करते हुए कालिदास कहते हैं कि यूँ देखा जाय तो मेरा मार्ग थोड़ा सरल ही है। मुझसे पूर्ववर्ती विद्वान् महाकवियों ने इस विषय को लेकर और सूर्यवंश का वर्णन कर मुख्य द्वार तो खोल ही रखा है। मुझे पहली बार बन्द दरवाजे को नहीं खोलना है। यह तो सभी जानते हैं कि खुले हुए दरवाजे से किसी भी भवन में प्रवेश करना आसान वैसे ही होता है जैसे किसी कठोरमणि में हीरे से यदि छेद कर दिया जाय तो उस छेद में धागे के लिए प्रवेश करना बहुत आसान हो जाता है। इसलिए जीवन में पथचयन को लेकर कभी सन्देह उत्पन्न होवे तो कहा जाता है–

''महाजनो येन गतः स पन्थाः।''

अर्थात् महान् जन जिस नीति या पद्धति को लेकर चले हों, उसी सिद्धान्तमय पथ पर अग्रसर हो जाना चाहिए। कालिदास ने भी यही किया है।

रघुवंशी राजाओं की विशेषताएँ

'रघुवंश' महाकाव्य के प्रारम्भ में मंगलाचरण और अपनी अल्पज्ञता को उपस्थित करने के बाद तथा पूर्ववर्ती महाकवियों के पदचिह्नों का अनुसरण करने का विचार प्रकट करते हुए कालिदास कहते हैं कि अब मैं उन रघुवंशी राजाओं का वर्णन करने जा रहा हूँ, जो आजन्म शुद्ध हैं। यहाँ पर आजन्म शुद्धि से तात्पर्य जन्म लेने के पश्चात् उन राजाओं का सभी प्रकार के संस्कारों से संस्कारित होने से है। क्योंकि जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, चूड़ाकर्म, उपनयन, वेदारम्भादि संस्कारों को यथासमय सम्पन्न करने पर ही जन्म की शुद्धि होती है। रघुवंशी राजाओं के गर्भाधान से लेकर अंत्येष्टि तक सभी संस्कार यथाविधि और यथा समय सम्पन्न किए जाते थे।

दूसरी विशेषता है– **'आफलोदयकर्मणाम्'** अर्थात् रघुवंशी राजा फल प्राप्ति हो जाने तक निरन्तर कर्म करते ही हैं। न तो किसी काम को हड़बड़ी में प्रारम्भ करते हैं और न ही विघ्नों के आ जाने पर कभी किसी काम को अधूरा छोड़ते हैं। ये राजा उत्तमगुणी हैं क्योंकि–

''न प्रारब्धमुत्तमगुणाः परित्यजन्ति''

अर्थात् श्रेष्ठगुणसम्पन्न व्यक्ति एक बार प्रारम्भ किए कार्य को पूरा करके ही विश्राम लेते हैं।

तीसरी विशेषता सूर्यवंशी राजाओं की यह है कि वे पृथ्वी के किसी एक छोटे भू-भाग पर राज नहीं करते अपितु समुद्र से लेकर समुद्र पर्यन्त फैली हुई सम्पूर्ण पृथ्वी पर उनका एकच्छत्र राज रहता है। यही कारण है कि वे चक्रवर्ती सम्राट की उपाधि से विभूषित होते हैं।

चौथी विशेषता के अनुसार प्रस्तुत वंश के राजाओं के रथ का मार्ग स्वर्ग तक जाता है।

'अनाकरथवर्त्मनाम्' कहने का यही तात्पर्य है कि इन राजाओं के सम्बन्ध केवल पृथ्वीलोक पर ही नहीं हैं अपितु स्वर्ग के अधिपति इन्द्र और अन्य देवताओं से भी इनके सहज सम्बन्ध हैं।

पाँचवीं विशेषता के अनुसार ये सभी राजा **यथाविधिहुताग्नि** हैं। अर्थात् वैदिक विधि-विधान के अनुसार देवताओं का पूजन, हवन, यज्ञादि सम्पन्न करते हैं। इससे उनके राज्य में सुखशान्ति व समृद्धि रहती है। कभी अनावृष्टि अथवा अतिवृष्टि जैसे प्राकृतिक प्रकोप उन्हें झेलने नहीं पड़ते हैं।

छठी विशेषता के अनुसार ये राजा **यथाकामार्चितार्थी** हैं अर्थात् अपने द्वार पर उचित कामना और प्रार्थना लेकर आए हुए याचकों को कभी निराश नहीं करते। उन्हें खाली हाथ नहीं लौटाते हैं। **'अतिथि देवो भव'** की भावना का समुचित रूप से पालन करते हैं।

सप्तम वैशिष्ट्य इन राजाओं का यथापराधदण्डी होना है अर्थात् प्रथमतः तो उनके राज्य में कोई अपराध करने की हिम्मत ही नहीं करता था। यदि कोई अपराध करता तो तत्काल उसे उचित मात्रा में दण्ड मिल जाता था। निरपराध को दण्ड नहीं भुगतना होता था। शासन का तीसरा स्तम्भ न्याय व्यवस्था समुचित थी।

आठवीं विशेषता उन राजाओं की यह है कि वे त्यागाय-संभृतार्थ हैं। अर्थात् केवल अपने ऐशो-आराम के लिए अथवा खजाने को भरने मात्र के लिए प्रजा से कर नहीं वसूलते हैं। अपितु व्यक्तिगत रूप से कर इकट्ठा करने के बाद वे प्रजा के हित के लिए सामाजिक और सामूहिक रूप से उसको व्यय कर देते हैं।

अग्रिम वैशिष्ट्य उन राजाओं के द्वारा सदैव सत्य ही बोला जाना है। **''सत्यं वद। धर्मं चर।''** इत्यादि उपनिषद्वाक्यों का वे पूर्णतया पालन करते हैं। सत्य बोलने का एक उत्तम तरीका है– मितभाषी होना अर्थात् कम से कम बोलना। क्योंकि आवश्यकता से अधिक बोलने वाले के झूठ बोलने की सम्भावना भी उतनी ही बढ़ जाती है।

दसवीं विशेषता सूर्यवंशी राजाओं की प्रजार्थ-गृहमेधी होना है। अर्थात् वे राजा वंशवृद्धि करने और सन्तानोत्पत्ति के लिए ही गृहस्थाश्रम का उपभोग करते हैं। केवल अपने इन्द्रियसुख के लिए ही विवाह नहीं करते। सन्तति वृद्धि के अतिरिक्त वे प्रायः तपस्वियों तथा संन्यासियों जैसा संयमित जीवन जीते हैं।

कालिदास इन मनुवंशी की अत्युत्तमजीवनवृत्ति का संक्षेप करते हुए कहते हैं–

''शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्॥''

अर्थात् शैशवकाल में वे पूर्णतया विद्यार्थी ही होते हैं। विद्या का अभ्यास करते हैं। अपने ज्ञान कोष को बढ़ाते हैं। युवावस्था में गृहस्थ धर्म को निभाने के लिए रूप, रस, गन्धादि सांसारिक विषयों का सेवन करते हैं। वृद्धावस्था में सम्राट होते हुए भी सब कुछ त्याग कर मुनियों के समान आचरण करते हैं। अन्त में योग के द्वारा अपने शरीर का त्याग स्वयं करते हैं अर्थात् किसी रोगादि के कारण उनकी मृत्यु नहीं होती। सूर्यवंशी राजाओं के चरित्र में इतनी सारी उत्तमोत्तम विशेषताओं का प्रतिपादन महाकवि द्वारा किया गया है।

रघुवंश में प्रकृति वर्णन

रघुवंश महाकाव्य के प्रथम सर्ग का भी नाम है–'वसिष्ठाश्रमाभिगमन' अर्थात् वसिष्ठ ऋषि के आश्रम की ओर जाना। अपनी सन्तानहीनता के निवारण तथा उपाय का मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए नायक-नायिका राजा दिलीप और रानी सुदक्षिणा वसिष्ठाश्रम की ओर प्रस्थान करते हैं।

जिस रथ पर आरूढ़ होकर राजा-रानी राजधानी से चले, वह दिखने में अत्यन्त मनोहर और आकार में बादल के समान विशाल था। रथ के पहियों में से गम्भीर ध्वनि सुनाई दे रही थी। महाकवि के शब्दों में–

''पावृषेण्यं पयोवाहं विद्युदैरावताविव।''

अर्थात् रथारूढ़ वे दोनों ऐसे लग रहे थे जैसे घनघोर वर्षाकाल में बादल पर चढ़कर ऐरावत और बिजली– दोनों एक साथ जा रहे हों। इसमें गौरवर्णा सुदक्षिणा विद्युत है। विशालकाय दिलीप ऐरावत हैं। उपमा की सटीकता दर्शनीय है।

प्रथम तो राजा आश्रम में जा रहे थे। द्वितीय उन्हें वहाँ कोई युद्ध नहीं लड़ना था। अतः सेना को उन्होंने साथ नहीं लिया। केवल निजी एकाध सेवक को ही साथ लिया। अधिक सेना ले जाने से आश्रम में विघ्न भी उत्पन्न हो सकते हैं।

राजा और रानी को चलते समय वन में ऐसी वायु स्पर्श करते हुए सुख प्रदान कर रही थी, जो शीतल तो थी ही और साथ ही साथ शाल वृक्षों की गोंद से सुगन्धित भी हो रही थी। सुखद पवन की दोनों विशेषतायें शीतलता व सुगन्धमयता इसमें विद्यमान हैं। वन में विद्यमान वृक्षों के पत्ते धीरे-धीरे लगातार हिल रहे थे।

रथ की मधुर आवाज को सुनकर मयूर अपना सिर ऊपर उठाते और बड़ी ही मीठी आवाज में केका करते थे। मोरों की केका को सुनना आनन्दप्रद था। वनक्षेत्र सामान्य रूप से शान्त होता है। उसमें किसी बाहरी तत्त्व के प्रवेश करने पर वन-निवासी प्राणियों का आकृष्ट होना स्वाभाविक है। रथ की आवाज को सुनकर मृगों के जोड़े बहुत उत्सुकता से राजा-रानी को देख रहे थे। मृगयुगल की आँखें नरयुगल की आँखों से अत्यन्त समानता रखती हैं।

नीले आकाश में उड़ते हुए सफेद सारस पक्षियों की एकताबद्ध लम्बी कतार ऐसी दिख रही थी, मानो किसी ने बन्दनवार की ऐसी माला उपस्थित कर दी हो, जिसको बाँधने के लिए दीवार या खम्बों की आवश्यकता नहीं होती।

''पवनस्यानुकूलत्वात्प्रार्थनासिद्धिशंसिनः।''

अर्थात् मन्द-मन्द चल रही पवन की अनुकूलता दिलीप और सुदक्षिणा के लिए मनोरथसिद्धि का संकेत दे रही थी। किसी भी कार्य को करने के लिए प्रस्थान करने पर प्राकृतिक रूप से शकुनाशकुन हुआ करते हैं। वायु का अनुरूप प्रवाह भी एक मंगल संकेत प्रदान कर रहा था। यही कारण है कि घोड़ों के खुरों से उड़ने वाली धूल दोनों के शरीर का स्पर्श भी नहीं कर पा रही थी।

तालाबों के अन्दर कमल के विभिन्न रंग-बिरंगे पुष्प खिले हुए थे। पानी के कारण शीतल और कमलों की सुगन्ध के कारण सुगन्धित पवन की अनुकूलता वस्तुतः प्रशंसनीय थी। जो ग्राम स्वयं राजा दिलीप ने यज्ञ करने के बाद दक्षिणा के रूप में पुरोहितों को दिए थे, उन ग्रामों में पहुँचने पर ग्रामीण अर्घ्य लेकर राजा-रानी के पास आते और बड़े मुक्त भाव से दोनों को कार्यसिद्धि के लिए मंगलमय शुभकामनायें और आशीर्वचन देते थे।

मार्ग में अनेक प्रकार के ऐसे वृक्ष विद्यमान थे, जिनके नाम दिलीप व सुदक्षिणा नहीं जानते थे। उनके नाम वे उन वृद्ध ग्रामीणों व ग्वालों से पूछ रहे थे, जो अपनी ओर से भेंट के रूप में हैयंगवीन अर्थात् एकदम ताजा मक्खन लेकर आते थे। अपने

घर में जो भी पदार्थ विद्यमान होवे, उसे स्नेहपूर्वक समर्पित कर देना गाँव वालों का सहज स्वभाव होता है।

दोनों में राजा दिलीप रानी सुदक्षिणा के लिए मार्गदर्शक का कार्य कर रहे थे। रानी जिन-जिन पदार्थों व वनस्पतियों के बारे में पूछती, राजा यथासम्भव उनका वर्णन करके रानी की जिज्ञासा को शान्त करते थे।

नितान्त श्वेत और शुद्धवेष को धारण करने वाले दिलीप और सुदक्षिणा जाते समय कैसे लग रहे थे, इस विषय में अतीव सुन्दर उपमा इस प्रकार से दी गई है–

''हिमनिर्मुक्तयोर्योगे, चित्राचन्द्रमसोरिव।''

अर्थात् घने कोहरे से मुक्त हो जाने पर चित्रा नक्षत्र और चन्द्रमा के समान ही वे दोनों शोभायमान हो रहे थे।

इस प्रकार से दिन भर यात्रा करके राजा दिलीप अपनी महारानी के साथ सायंकाल महर्षि वसिष्ठ के आश्रम में पहुँचे।

महर्षि वशिष्ठ का आश्रम

संसार में प्रत्येक स्थान विशेष की अपनी मूल विशेषतायें होती हैं। राजमहल से आश्रम का स्थान भिन्न होता है। प्रथम विशेषता के अनुसार आश्रम के कुलपति और तत्रस्थ तपस्वी स्वभाव से अत्यन्त शान्त तथा संयमी होते हैं। काम, क्रोधादि षड्विकार आश्रमवासियों के जीवन में प्रायः नहीं होते हैं। वे निश्छल और निष्कपट होते हैं।

विश्वकवि कालिदास महर्षि वसिष्ठ के पवित्र आश्रम का स्वरूप बताते हुए लिखते हैं–

''वनान्तरादुपावृत्तैः समित्कुशफलाहरैः।''

अर्थात् वहाँ रहने वाले तपस्वी वन-वनान्तरों से समिधायें, पुष्प, कुशायें, फलादि लेकर सायं आश्रम में लौटते हैं, तो यज्ञ के अग्निदेवता आगे बढ़कर उनका स्वागत उसी प्रकार से करते हैं, जिस प्रकार से अपनी सन्तानों के कार्यस्थल से वापस आने पर मातायें उनका हार्दिक स्वागत करती हैं। 'पूर्यमाण' विशेषण के प्रयोग से ज्ञात होता है कि तपस्वियों से आश्रम भरा रहता था।

आश्रम में चारों ओर पर्णकुटियाँ बनी हुई थीं। पर्णशालाओं के अन्दर ऋषियों की पत्नियाँ अपना-अपना सामान्य कार्य कर रही थीं और दरवाजे पर मृगों के यूथ इस आशा से बैठे हुए थे कि हमें अपना नीवार का भाग थोड़े समय बाद प्राप्त हो जायेगा। यहाँ मृगों और ऋषिपत्नियों के बीच में भी वही शाश्वत् सम्बन्ध है, जो परिवार में सन्तानों और माँ के बीच में होता है।

प्राकृतिक रूप से हरा-भरा वातावरण महर्षि वसिष्ठ के आश्रम की अन्यतम विशेषता है। चारों तरफ बड़े-बड़े पेड़ तो थे ही, परन्तु उन सभी के बीच-बीच में छोटे-छोटे पौधे भी विद्यमान थे। छोटे पौधों को पनपाने के लिए पानी पिलाने की जिम्मेदारी मुनिकन्याओं की थी–

''सेकान्ते मुनिकन्याभिस्तत्क्षणोज्झिवतवृक्षकम्।''

अर्थात् मुनिकन्याओं ने पौधों के चारों ओर मिट्टी के आलवाल बना रखे थे। वे उनमें धीरे से पानी भरती थीं और तत्काल वहाँ से दूर चली जाती थीं,ताकि उस पानी को पीकर अपनी प्यास बुझाने वाले पक्षी निर्भय होकर वहाँ पर आ सकें। उपर्युक्त पंक्ति में 'वृक्ष' शब्द से परे 'कन्' प्रत्यय का प्रयोग पौधों के अतिशय छोटा होने का भाव बताने के लिए है।

प्रातःकाल से लेकर अपराह्न तक मृग आश्रम में विद्यमान पर्णशालाओं के आँगन में बिखरे नीवार नामक धान को खाते थे। पेट भर कर वे वृक्षों की छाया में बैठ जाते थे और धीरे-धीरे रोमन्थ अर्थात् जुगाली का अभ्यास करते थे। रोमन्थ की क्रिया के द्वारा ही पशु अपने द्वारा एक साथ भक्षित भक्ष्य पदार्थ को पचाने का कार्य करते हैं।

''पुनानं पवनोद्धूतैः धूमैराहुतिगन्धिभिः'' इस वाक्य के द्वारा उस विशेषता को रेखांकित किया गया है, जो केवल आश्रम में ही मिलती है। गाँवों में भी चूल्हों से धुआँ निकलता है परन्तु वह न तो सुगन्धित होता है और न दूसरों को पवित्र करने में समर्थ। जबकि सायं आश्रम में हवन में से उठता हुआ सुगन्धित धुआँ दूसरों को पवित्र कर रहा था।

इस प्रकार से आश्रम में पहुँचने पर प्रजापालक, नीति निपुण तथा सर्वथा समर्थ राजा और रानी का सभ्य और जितेन्द्रिय मुनियों ने आगे बढ़कर हार्दिक अभिनन्दन और स्वागत किया।

●●

रघुवंश-महाकाव्यम्

(द्वितीयः सर्गः)

हिन्दी एवं संस्कृत व्याख्या

● **प्रसङ्ग –** सिंह की बातों से राजा पर होनेवाली प्रतिक्रिया का वर्णन है—

इति प्रगल्भं पुरुषाधिराजो
मृगाधिराजस्य वचो निशम्य
प्रत्याहतास्त्रो गिरिशप्रभावा-
दात्मन्यवज्ञां शिथिलीचकार ॥41॥ (संस्कृत व्याख्या–2020 ZS)

अन्वय–पुरुषाधिराजः मृगाधिराजस्य इति प्रगल्भं वचः निशम्य गिरिशप्रभावात् प्रत्याहतास्त्रः, आत्मनि अवज्ञां शिथिलीचकार।

हिन्दी व्याख्या – राजा दिलीप ने सिंह के इस धृष्टतापूर्ण वचन को सुनकर यह समझ लिया कि मेरे अस्त्र की गति महादेव जी के प्रभाव से रुक गयी है। ऐसा सोचकर उन्होंने अपने अपमान की भावना को कम कर दिया।

संस्कृत व्याख्या– पुरुषाधिराजः–मनुजाधिपतिः दिलीपः, **मृगाधिराजस्य–**सिंहस्य, **इति–**पूर्वोक्तं, **प्रगल्भं–**धृष्टं, **वचः–**वचनं, **निशम्य–**श्रुत्वा, **गिरिशप्रभावात्–**महादेवप्रतापात्, **प्रत्याहतास्त्रः–**प्रत्याहतं प्रतिबद्धम् अस्त्रम् आयुधं यस्य तादृशः, **आत्मनि–**स्वविषये, **अवज्ञाम्–**अपमानं, **शिथिलीचकार–**तत्याजेत्यर्थः।

संस्कृत भावार्थ– सिंहमुखाद् आत्मनः पराभवकारणम् श्रुत्वा 'ईश्वरप्रसादात् एवं पराभूतोऽस्मि न केनाप्यन्येन कारणेन' इति मत्वा तज्जन्यापमानं त्याजेति भावः।

शब्दार्थ – पुरुषाधिराजः – पुरुषों का राजा। **मृगाधिराजस्य** – सिंह का। **प्रगल्भम्** – अभिमानपूर्ण। **निशम्य** – सुनकर; श्रुत्वा। **गिरीशप्रभावात्** – महादेव के प्रभाव से। **प्रत्याहतास्त्रः** – विफल है अस्त्र जिसका। **आत्मनि अवज्ञाम्** – अपने अपमान को। **शिथिलीचकार** – कम कर दिया।

● **प्रसङ्ग –** राजा सिंह को उत्तर देने के लिए प्रस्तुत हुआ—

प्रत्यब्रवीच्चैनमिषुप्रयोगे
तत्पूर्वभङ्गे वितथप्रयत्नः।
जडीकृतस्त्र्यम्बकवीक्षणेन
वज्रं मुमुक्षन्निव वज्रपाणिः॥42॥ (संस्कृत व्याख्या–2019 DA)

अन्वय–तत्पूर्वभङ्गे इषुप्रयोगे वितथप्रयत्नः (अतएव) वज्रं मुमुक्षन् त्र्यम्बकवीक्षणेन जडीकृतः वज्रपाणिः इव (स्थितोनृपः) एनं प्रत्यब्रवीत् च।

हिन्दी व्याख्या – उसी प्रथम विफलता में बाण चलाने में निष्फल प्रयत्न राजा दिलीप, जिसकी स्थिति शिव जी के देखने से वज्र-प्रहार करने की इच्छावाले जड़ीभूत इन्द्र के समान है, ने सिंह को उत्तर दिया।

संस्कृत व्याख्या– तत्पूर्वभङ्गे–सः पूर्वोक्तः एव पूर्वः प्रथमः भङ्गः प्रतिबन्धः यस्य तस्मिन्, **इषुप्रयोगे–**इषोः बाणस्य प्रयोगे प्रक्षेपे, **वितथप्रयत्नः–**विफलप्रयासः (अतएव), **वज्रं–**कुलिशं, **मुमुक्षन्–**मोक्तुमिच्छन्, **त्र्यम्बकवीक्षणेन–**त्र्यम्बकस्य शिवस्य वीक्षणेन दृष्ट्या, **जडीकृतः–**निष्पदीकृतः, **वज्रपाणिः–**इन्द्रः, **इव–**यथा, **(स्थितो नृपः) एनं–**सिंह, **प्रत्यब्रवीत् च–**प्रत्युवाच च।।

संस्कृत भावार्थ– तत्प्रथमभङ्गे शरप्रयोगे विफलप्रयासः त्रिनेत्रवीक्षणेन निष्पन्दीकृतः शक्र इव स्थितः नृपः एनम् सिंहम् प्रत्यवोचत् इति भावः।

शब्दार्थ – तत्पूर्वभङ्गे – उसी प्रथम विफलता में। **इषुप्रयोगे** – बाण चलाने में। **वितथप्रयत्नः** –विफल प्रयास। **मुमुक्षन्** – छोड़ने की इच्छा करनेवाला। **वज्रपाणिः** – इन्द्र। **त्र्यम्बकवीक्षणेन** – शङ्कर के देखने से। **जडीकृतः** - निश्चल कर दिया गया है जो वह। शिव जी के देखने से इन्द्र की गति अवरुद्ध हो गयी। वह बिल्कुल निश्चल हो गये और वज्र न चला सके।

जडीकृतः–इसमें महाभारत की एक कथा है। एक बार राक्षसों से दुःखी देवताओं ने शङ्कर जी से जाकर अपनी विपत्ति कही। शिव जी ने राक्षसों का नाश किया और उनके नगरों को जला दिया। उसी समय भगवती दुर्गा भी गोद में एक सुन्दर बालक लेकर वहाँ आ गयी। इन्द्र ने उस बालक को मारने के लिए वज्र उठाया परन्तु जब बालक ने उनकी ओर देखा तो इन्द्र जड़वत् हो गये। शिव जी ने दुर्गा को प्रसन्न करने के लिए बालक का रूप धारण किया था।

● **प्रसङ्ग** – राजा ने सिंह से कहा—

संरुद्धचेष्टस्य मृगेन्द्र कामं
हास्यं वचस्तद्यदहं विवक्षुः।
अन्तर्गतं प्राणभृतां हि वेद
सर्वं भवान्भावमतोऽभिधास्ये ।।43।। (संस्कृत व्याख्या–2019 DB)

अन्वय–हे मृगेन्द्र! संरुद्धचेष्टस्य मम तत वचः कामं हास्यम् अस्ति यद् वचः अहम् विवक्षुः अस्मि, हि भवान् प्राणभृताम् अन्तर्गतम् सर्वं भावं वेद अतः अभिधास्ये।

हिन्दी व्याख्या – हे सिंह ! मेरी चेष्टा व्यर्थ हो गयी है इसलिए जो बात मैं कहना चाहता हूँ वह परिहास करने योग्य है, तथापि आप सभी जीवों के भीतर की बात जानते हैं। अतः मैं (अपनी बात) कहूँगा।

संस्कृत व्याख्या– मृगेन्द्र–सिंह !, **संरुद्धचेष्टस्य–**संरुद्धा प्रतिबद्धा चेष्टा व्यापारः यस्य तस्य, **मम–**दिलीपस्य, **तत्–**अग्रे वक्ष्यमाणं, **वचः–**वचनं, **कामं–**पार्यप्तं, **हास्यं–**परिहसनीयम्, **अस्ति–**विद्यते, **यद्–**वचः, **अहं, विवक्षुः–**वक्तुमिच्छुः-अस्मि, **हि–**यतः-भवान्-त्वं, **प्राणभृतां–**प्राणिनाम्, **अन्तर्गतं–**हृद्गतं, **सर्वं–**सकलं, **भावम्–**अभिप्रायं, **वेद–**जानाति, **अतः–**अस्माद्धेतोः, **अभिधास्ये–**कथयिष्यामि।

संस्कृत भावार्थ– हे सिंह! यद्वचोऽहं वक्तुमिच्छामि तद्वचः प्रतिबद्धव्यापारस्य मे कामं परिहसनीयम् परन्तु यतो भवान् प्राणधारिणाम् मनोगतम् सर्वं भावं वेत्ति अतोऽहम् कथयिष्यामीति सरलार्थः।

शब्दार्थ – संरुद्धचेष्टस्य – रुके हुए व्यापारवाले। **तद्वचः** – वह बात। **कामम्** – अवश्य। **हास्यम्** – हँसी के योग्य। **विवक्षुः** – कहना चाहता हूँ। **हि** – चूँकि। **प्राणभृताम्** – प्राणियों के। **अन्तर्गतम्** – भीतर का। **वेद** – जानते हो। **अभिधास्ये** – कहूँगा।

● **प्रसङ्ग** – राजा दिलीप सिंह से कहते हैं—

मान्यः स मे स्थावरजङ्गमानां
सर्गस्थितिप्रत्यवहारहेतुः।
गुरोरपीदं धनमाहिताग्ने- (हिन्दी व्याख्या–2020 ZQ, ZT)
र्नश्यत्पुरस्तादनुपेक्षणीयम् ।।44।। (संस्कृत व्याख्या–2019 DB)

अन्वय–स्थावरजङ्गमानां सर्गस्थितिप्रत्यवहारहेतुः स मे मान्यः पुरस्तात् नश्यत् आहिताग्नेः गुरोः इदम् धनम् अपि अनुपेक्षणीयम्।

हिन्दी व्याख्या – स्थावर जङ्गम के रचनेवाले, नाश करनेवाले व पालन करनेवाले, वह (महादेव जी) मेरे पूज्य हैं, तथापि अग्निहोत्र करनेवाले गुरु वशिष्ठ का सामने नष्ट होता हुआ यह गोरूपधन भी उपेक्षा करने योग्य नहीं है। अर्थात् इसकी भी रक्षा करनी चाहिए।

संस्कृत व्याख्या– स्थावरजङ्गमानां–स्थावराणां वृक्षादीनां जङ्गमानां मनुष्यादीनां चराचराणामिति यावत्, **सर्गस्थितिप्रत्यवहारहेतुः–**सर्गः सृष्टिः स्थितिः पालनंप्रत्यवहारः संहारः, तेषां हेतुः, कारणं, **सः–**शिवः, **मे–**मम, **मान्यः–**पूज्यः, **पुरस्तात्–**अग्रे, **नश्यत्–**नाशं गच्छत्, **आहिताग्नेः** कृताग्न्याधानस्य अग्निहोत्रिणः, **गुरोः–**वशिष्ठस्य, **इदं–** दृश्यमानं, **धनं–** गोरूपम्, अपि, अनुपेक्षणीयम्।

संस्कृत भावार्थ—चराचरस्य जगतः सृष्टिस्थितिसंहारकारी स भगवान् शिवः मे पूज्यः अतएव तस्याज्ञा सर्वथाऽनुल्लङ्घनीया तथा च गुरोरपि नश्चदिदं गोरूपधनं नोपेक्षणार्हमस्ति।

शब्दार्थ – स्थावरजङ्गमानाम् – अचर और चर (चल) पदार्थों का। **सर्गस्थितिप्रत्यवहारहेतुः** – उत्पत्ति, पालन तथा नाश का कारण। **सः** – शिव। **मे** – मेरा। **मान्यः** – पूज्य। **पुरस्तात्** – सामने। **नश्यत्**– नष्ट होता हुआ। **इदम् धनम्** – यह गाय रूपी धन। **आहिताग्नेः** – अग्निहोत्र करनेवाले का। **अनुपेक्षणीयम्**– उपेक्षा करने योग्य नहीं है।

● **प्रसङ्ग** – सिंह की क्षुधा-शान्ति और गाय की रक्षा का प्रकार बताते हुए दिलीप निवेदन करते हैं–

स त्वं मदीयेन शरीरवृत्तिं
देहेन निर्वर्तयितुं प्रसीद।
दिनावसानोत्सुकबालवत्सा (हिन्दी व्याख्या–2019 CZ, DC, DD, DF, 20 ZP, ZS)
विसृज्यतां धेनुरियं महर्षेः॥45॥ (संस्कृत व्याख्या–2019 DE, 20 ZO)

अन्वय—स त्वम् मदीयेन देहेन शरीरवृत्तिम् निर्वर्तयितुम् प्रसीद दिनावसानोत्सुकबालवत्सा इयम् महर्षेः धेनुः विसृज्यताम्।

हिन्दी व्याख्या – वह तुम मेरे शरीर से अपनी क्षुधा शान्त करने की कृपा करो अर्थात् गाय के बदले मुझे खा लो, दिन के अन्त में (अपनी माता के लिए) उत्सुक बछड़ेवाली महर्षि की इस गाय को छोड़ दो।

संस्कृत व्याख्या– सः–अङ्कागतसत्त्ववृत्तिः, **त्वं**–सिंहः, **मदीयेन**–मामकेन, **देहेन**–शरीरेण, **शरीरवृत्तिं**–देहजीवनं क्षुधाशान्तिं वा, **निर्वर्तयितुं**–निष्पादयितुं, **प्रसीद**–अनुगृहाण, **दिनावसानोत्सुकबालवत्सा**–दिनस्य दिवसस्य अवसाने अन्ते उत्सुकः उत्कण्ठितः बालः शिशुरूपः वत्सः अर्भकः यस्याः तादृशी, **इयं**–दृश्यमाना, **महर्षेः**–वशिष्ठस्य, **धेनुः**–गौः, **विसृज्यतां**–त्यज्यताम्।

संस्कृत भावार्थ– त्वम् मदीयेन शरीरेण क्षुधाशान्तिं कृत्वा मयि प्रसीद इमां धेनुम् मुञ्च, यतोऽस्याः वत्सः आश्रमे बद्धः बुभुक्षितः आस्ते।

शब्दार्थ – सः त्वम् – वह तुम पास में आये हुए जानवरों को खाकर निर्वाह करनेवाले। **मदीयेन देहेन** – मेरे शरीर से। **शरीरवृत्तिम्** – जीवन निर्वाह। **निर्वर्तयितुम्** – सम्पादित करने के लिए। **प्रसीद** – कृपा करो। **दिनावसानोत्सुकबाल-वत्सा** – दिन के अन्त में जिसका छोटा बछड़ा उत्सुक होगा कि मेरी माँ आ रही है। **विसृज्यताम्** – छोड़ दो। राजा के कहने का यह अर्थ था कि मुझे तो गाय के बदले खा लो और गाय को छोड़ दो, क्योंकि उसका बछड़ा दिन भर के बाद अपनी माता को देखने के लिए उत्सुक होगा।

● **प्रसङ्ग** – सिंह राजा को उत्तर देने के लिए प्रस्तुत होता है—

अथान्धकारं गिरिगह्वराणां
दंष्ट्रामयूखैः शकलानि कुर्वन् ।
भूयः स भूतेश्वरपार्श्ववर्ती
किञ्चिद्विहस्यार्थपतिं बभाषे ॥46॥

अन्वय—अथ भूतेश्वरपार्श्ववर्ती सः गिरिगह्वराणाम् अन्धकारं दंष्ट्रामयूखैः शकलानि कुर्वन् किञ्चिद् विहस्य अर्थपतिं भूयः, बभाषे।

हिन्दी व्याख्या – महादेव का अनुचर वह सिंह पर्वत की गुफाओं का अन्धकार दाँतों की किरणों से छिन्न-भिन्न करता हुआ कुछ हँसकर राजा से पुनः बोला।

संस्कृत व्याख्या– अथ–तत्पश्चात्, **भूतेश्वरपार्श्ववर्ती**–भूतेश्वरस्य शिवस्य पार्श्ववर्ती अनुचरः, **सः**–सिंहः, **गिरिगह्वराणां**–गिरेः-पर्वतस्य गह्वराणां गुहानाम्, **अन्धकारं**–ध्वान्तं, **दंष्ट्रामयूखैः**–दंष्ट्राणां कठोरदन्तानां मयूखैः किरणैः, **शकलानि**– खण्डानि, **कुर्वन्**–विदधत्, **किञ्चित्**–ईषत्, **विहस्य**–हसित्वा, **अर्थपतिं**–राजानं, **भूयः**–पुनः, **बभाषे**–उक्तवान्।

संस्कृत भावार्थ– गवार्थे स्वतनुं परित्यक्तुमुद्यतं नृपं दृष्ट्वा सिंहः पुनरपि किञ्चित् विहस्य तं प्रत्युवाच। तस्य कथनकाले दन्तेभ्यः महती द्युतिः समुत्पन्ना या पर्वतगुहायाः सकलम् अन्धकारम् खण्डशः कृतवती।

शब्दार्थ – अथ – राजा के कहने के बाद। **भूतेश्वरपार्श्ववर्ती** – शिव जी का अनुचर। **गिरिगह्वराणाम्** – पर्वत की गुफाओं

का। पर्वतकन्दराणाम्। **दंष्ट्रामयूखैः** – दाँतों की किरणों से। **शकलानि** – टुकड़े-टकड़े। **किञ्चित्** – थोड़ा। **विहस्य** – हँसकर। **अर्थपतिं** – राजा से। **बभाषे** – बोला।

● **प्रसङ्ग**–सिंह राजा से कहता है–

एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वं
नवं वयः कान्तमिदं वपुश्च।
अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्
विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम् ।।47।। (हिन्दी व्याख्या–2019 DA. 0 ZO)

(संस्कृत व्याख्या– 2011 HR, HV, 19 CZ, DC, DE, DF, 20 ZQ, ZT, ZU)

अन्वय–एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वं नवं वयः इदं कान्तं वपुः, एतत्सर्वं बहु अल्पस्य हेतोः हातुम् इच्छन् त्वं विचारमूढः मे प्रतिभासि।

हिन्दी व्याख्या –एकच्छत्र संसार का राज्य, नवीन युवावस्था और यह सुन्दर शरीर इन सब (बहुतों) को आप थोड़ी-सी बात के वास्ते छोड़ना चाहते हैं, अतः आप कार्याकार्य के विषय में मुझे मूर्ख मालूम पड़ते हैं।

संस्कृत व्याख्या– एकातपत्रम्–अद्वितीयच्छत्रं, **जगतः**–संसारस्य, **प्रभुत्वं**–स्वामित्वं, **नवं**–नवीनं, **वयः**–अवस्था, **इदं**–दृश्यमानं, **कान्तं**–कमनीयं, **वपुः**–शरीरम् (एतत्सर्वं), **बहु**–अधिकम्, **अल्पस्य**–तुच्छस्य, **हेतोः**–कारणात्, **हातुं**–त्यक्तुम्, **इच्छन्**–वाञ्छन्, **त्वं**–भवान्, **विचारमूढः**–विचारेकार्याकार्यविमर्शे मूढः मूर्खः, **मे**–मम, **प्रतिभासि**–प्रतीयसे।

संस्कृत भावार्थ– राजन् ! एकच्छत्रं जगतः स्वामित्वं यौवनं सुन्दरं शरीरं च अल्पप्रयोजनात् त्यक्तुमभिलषन् त्वं मम मूर्खः प्रतीयसे।

शब्दार्थ – एकातपत्रम् – एकच्छत्र। **प्रभुत्वम्** – राज्य। **नवं वयः** – नयी अवस्था। **कान्तं वपुः** – सुन्दर शरीर। **अल्पस्य हेतोः** – थोड़े के लिए। **बहु** – बहुत-सी वस्तु। **हातुम्** – छोड़ने के लिए। **इच्छन्** – इच्छा करते हुए। **विचारमूढ**–विचारशून्य। **प्रतिभासि** – मालूम पड़ते हो। सिंह के कहने का भाव यह है कि कहाँ तो एकच्छत्र संसार का राज्य, नयी युवा अवस्था, सुन्दर शरीर और कहाँ एक मामूली गाय। दोनों में अन्तर है। गाय एक तुच्छ वस्तु है और उस गाय के वास्ते राज्य का व शरीर का त्याग करना बड़ी मूर्खता है।

● **प्रसङ्ग** –सिंह राजा को समझा रहा है–

भूतानुकम्पा तव चेदियं गौ-
रेका भवेत्स्वस्तिमती त्वदन्ते।
जीवन्पुनः शश्वदुपप्लवेभ्यः (हिन्दी व्याख्या–2019 DB)
प्रजाः प्रजानाथ ! पितेव पासि।।48।। (संस्कृत व्याख्या–2019 DD, 20 ZO)

अन्वय–तव भूतानुकम्पा चेत् तर्हि त्वदन्ते सति इयम् एका गौः स्वस्तिमती भवेत् प्रजानाथ जीवन पुनः पिता इव प्रजाः उपप्लवेभ्यः शश्वत् पासि।

हिन्दी व्याख्या –हे राजन्, यदि आप में जीवों के ऊपर दया है तो आपके मरने पर केवल यही अकेली गाय जीवित रह सकती है और यदि आप जीते रहेंगे तो निरन्तर पिता के समान विपत्तियों से प्रजा की रक्षा करते रहेंगे।

संस्कृत व्याख्या– तव–भवतः, **भूतानुकम्पा**–प्राणिदया, **चेत्**–यदि, **तर्हि**–तदा, **त्वदन्ते**–तव मृत्यौ (सति), **इयम्**–एषा, **एका**–केवला, **गौः**–धेनुः, **स्वस्तिमती**–कल्याणवती, **भवेत्**–स्यात्, **प्रजानाथ!**–जनाधिपते!, **जीवन्**–श्वसन्, **पुनः**–भूयः, **पिता इव**–जनक इव, **प्रजाः**–जनान्, **उपप्लवेभ्यः**–उत्पातेभ्यः, **शश्वत्**–निरन्तरं, **पासि**–रक्षसि।

संस्कृत भावार्थ– यदि त्वं प्राणिषु दलालुत्वात् अमुं धेनुं रक्षयितुम् स्वदेहदानं कर्तुमुद्यतोऽसि तर्हि तन्नोचितम् यतः तव मरणानन्तरम् केवला इयमेका धेनुः कुशलिनी भविष्यति किन्तु जीवति त्वयि सकलाः प्रजाः क्षेमयुक्ताः भविष्यति।

शब्दार्थ –भूतानुकम्पा – जीवों पर दया। **त्वदन्ते** – तुम्हारे मरने पर। **स्वस्तिमती** – सुरक्षित। **जीवन्**– जीवित रहते हुए। **शश्वत्** – निरन्तर। **उपप्लवेभ्यः** – विपत्तियों से।

● **प्रसङ्ग –** यहाँ भी सिंह गाय के बदले अपना शरीर न देने के लिए राजा को समझा रहा है–

अथैकधेनोरपराधचण्डाद्
गुरोः कृशानुप्रतिमाद्बिभेषि।
शक्योऽस्य मन्युर्भवता विनेतुम्
गाः कोटिशः स्पर्शयता घटोघ्नीः ॥49॥

अन्वय–अथ एकधेनोः अपराधचण्डात् कृशानुप्रतिमात् गुरोः विभेषि अस्य मन्युः घटोघ्नीः कोटिशः गाः स्पर्शयता भवता विनेतुं शक्यः।

हिन्दी व्याख्या – केवल एक ही गायवाले अपराध होने से अत्यन्त क्रुद्ध हुए अग्नि के तुल्य अपने गुरु वशिष्ठ से यदि आप डरते हैं तो घड़े के समान स्तनवाली करोड़ों गायें उन्हें देकर आप उनके क्रोध को दूर कर सकते हैं।

संस्कृत व्याख्या– अथ–पक्षान्तरे, **एकधेनोः–**एकैव धेनुः गौः यस्य तस्मात्, **अपराधचण्डात्–**अपराधे गवोपेक्षालक्षणे आगसि चण्डात् अतिकोपनात्, **कृशानुप्रतिमात्–**कृशानुः अग्निः प्रतिमा उपमा यस्य तस्मात् गुरोः, **विभेषि–**त्रस्यसि, **अस्य–**गुरोः, **मन्युः–**क्रोधः, **घटोघ्नीः–**कुम्भसदृशापीनाः, **कोटिशः–**असंख्याः, **गाः–**धेनुः, **स्पर्शयता–**ददता, **भवता–**त्वया, **विनेतुं–**अपनेतुं, **शक्यः–**योग्यः।

संस्कृत भावार्थ– हे राजन् ! यदि नन्दिनीनाशरूपापराधेनातिक्रुद्धस्य गुरोः भयं करोषि तर्हि कोटिशः पयस्विनीः गाः दत्त्वा त्वं तस्य क्रोधशान्तिं कर्त्तुं शक्नोषि।

शब्दार्थ – एकधेनोः - एक ही गाय के जिसके। **अपराधचण्डात्** - अपराध होने पर अति क्रोध करनेवाला। **कृशानुप्रतिमात्** - अग्नि के समान। **विभेषि** - डरते हो। **मन्युः** - क्रोध। **कोटिशः** - करोड़ों। **घटोघ्नीः** - घड़े के समान स्तनवाली अर्थात् खूब दूध देनेवाली। **स्पर्शयता** - देते हुए। **मन्युः विनेतुम् शक्यः** - क्रोध दूर किया जा सकता है। आप अन्य करोड़ो दूध देनेवाली गायें देकर गुरु का क्रोध शान्त कर सकते हैं।

● **प्रसङ्ग –** अन्त में सिंह राजा से कहता है–

तद्रक्ष कल्याणपरम्पराणां
भोक्तारमुर्जस्वलमात्मदेहम् ।
महीतलस्पर्शनमात्रभिन्न-
मृद्धं हि राज्यं पदमैन्द्रमाहुः ॥50॥ (2011 HU)

अन्वय–तत् कल्याणपरम्पराणाम् भोक्तारम् ऊर्ज्वस्वलम् आत्मदेहं रक्ष, हि ऋद्धं राज्यम् महीतलस्पर्शनमात्रभिन्नम् ऐन्द्रम् पदम् आहुः।

हिन्दी व्याख्या – इस कारण हे राजन्, अनेक सुखों के भोग करनेवाले और बलवान् अपने इस शरीर की रक्षा करो, क्योंकि विद्वान् लोग समृद्धिशाली राज्य को केवल पृथ्वी का स्पर्श करने मात्र से भिन्न इन्द्र का पद कहते हैं।

संस्कृत व्याख्या– तत्–तस्मात्, **कल्याणपरम्पराणां–**कल्याणानां मङ्गलानां परम्पराः सन्तानानि तासां, **भोक्तारम्–**अनुभवितारम्, **ऊर्जस्वलम्–**बलवन्तम्, **आत्मदेहं–**स्वशरीरं, **रक्ष–**पालय, **हि–**यतः, **ऋद्धं–**समृद्धं, **राज्यं–**राजकीयप्रभुत्वं, **महीतलस्पर्शनमात्रभिन्नम्–**भूतलसम्बन्धमात्रेण विसदृशम्, **ऐन्द्रम्–**इन्द्रसम्बन्धि, **पदं–**स्थानम्, **आहुः–**कथयन्ति।

संस्कृत भावार्थ– हे राजन् ! अनेकसुखानाम् भोक्तारम् बलवन्तं स्वदेहं रक्ष, यतः विद्वांसः कथयन्ति यत् समृद्धं राज्यं स्वर्गान्न भिद्यते। अर्थात् तव राज्यं स्वर्गसदृशमस्ति।

शब्दार्थ – कल्याणपरम्पराणाम् - अनेक कल्याणों का। **भोक्तारम्** - भोगनेवाला। **ऊर्जस्वलम्** - बलवान्। **ऋद्धम्** - समृद्धिशाली। **ऐन्द्रं पदम् आहुः** - इन्द्र का पद कहते हैं। **महीतलस्पर्शनमात्रभिन्नम्** - भूतल के सम्बन्ध मात्र से भिन्न। अर्थात् राजा के समृद्ध राज्य में तथा इन्द्रपद में केवल यही भेद है कि इन्द्रपद स्वर्ग (आकाश) में है और राजा का राज्य पृथ्वी पर है।

● **प्रसङ्ग –** अपनी प्रतिध्वनि द्वारा पर्वत ने भी सिंह के कथन का मानो समर्थन किया–

एतावदुक्त्वा विरते मृगेन्द्रे
प्रतिस्वनेनास्य गुहागतेन।

शिलोच्चयोऽपि क्षितिपालमुच्चैः
प्रीत्या तमेवार्थमभाषतेव॥51॥ (हिन्दी व्याख्या–2019 DE)

अन्वय–मृगेन्द्रे एतावत् उक्त्वा विरते (सति) शिलोच्चयः अपि अस्य गुहागतेन प्रतिस्वनेन उच्चैः क्षितिपालम् प्रीत्या तम् एव अर्थम् अभाषत इव।

हिन्दी व्याख्या – सिंह के इतना कहकर चुप हो जाने पर गुफा में पहुँची हुई उसकी प्रतिध्वनि द्वारा पर्वत भी प्रेम से मानो उसी बात को राजा दिलीप से जोर से कहने लगा।

संस्कृत व्याख्या– मृगेन्द्रे–सिंहे, **एतावत्**–पूर्वोक्तम्, **उक्त्वा**–कथयित्वा, **विरते**– निवृत्ते (सति), **शिलोच्चयः**–पर्वतः अपि, **अस्य**–सिंहस्य, **गुहागतेन**–गह्वरव्याप्तेन, **प्रतिस्वनेन**–प्रतिध्वनिना, **उच्चैः**–तारस्वरेण, **क्षितिपालम्**–भूपालम्, **प्रीत्या**–प्रेम्णा, **तम् एव**–सिंहोक्तमेव, **अर्थम्**–अभिधेयम्, **अभाषत इव**–अकथयत् इव।

संस्कृत भावार्थ– एतावत् उक्त्वा सिंहः विरराम। तस्मिन् काले तस्य वाक्यस्य प्रतिध्वनिः गुहामध्ये बभूव। तदेदानीं प्रतिभाति स्म यत् पर्वतोऽपि उच्चैः प्रेम्णा च तत्प्रतिध्वनिमिषेण सिंहस्यैव कथनं समर्थयति।

शब्दार्थ – **एतावत्** - इतना। **उक्त्वा** - कहने पर। **मृगेन्द्रे विरते** - सिंह के चुप हो जाने पर। **शिलोच्चयः** - पर्वत। **गुहागतेन** - गुफा में गया हुआ। **प्रतिस्वनेन** - गूँज से। **उच्चैः** - जोर से। यह अव्यय है। **क्षितिपालम्** - राजा से। **तमेव अर्थम् अभाषत इव** -उसी बात को मानो दुहराया। सिंह के शब्द की आवाज गुफा में गूँजने लगी और उस समय ऐसा मालूम पड़ने लगा मानो पर्वत भी वही बात कह रहा है जो सिंह कहता है।

● **प्रसङ्ग** – राजा दिलीप पुनः सिंह को उत्तर देने के लिए प्रस्तुत हुए–

निशम्य देवानुचरस्य वाचं
मनुष्यदेवः पुनरप्युवाच।
धेन्वा तदध्यासितकातराक्ष्या (हिन्दी व्याख्या–2020 ZR, ZT)
निरीक्ष्यमाणः सुतरां दयालुः॥52॥ (संस्कृत व्याख्या–2019 DB, 20 ZP)

अन्वय–देवानुचरस्य वाचम् निशम्य मनुष्यदेवः तदध्यासितकातराक्ष्या धेन्वा निरीक्ष्यमाणः सुतरां दयालुः पुनः उवाच।

हिन्दी अनुवाद –शङ्कर जी के नौकर (सिंह) की वाणी सुनकर मनुष्यों के राजा (दिलीप) जो सिंह के आक्रमण के कारण कातर नेत्रवाली गाय को देखे जा रहे थे तथा जो अत्यन्त दयालु थे, फिर भी बोले।

संस्कृत व्याख्या– देवानुचरस्य–शिवसेवकस्य, **वाचं**–वाणीं, **निशम्य**–श्रुत्वा, **मनुष्यदेवः**–राजा, **तदध्यासितकातराक्ष्या**–तेन सिंहेन यद् अध्यासितम् आक्रमणं तेन कातरे भीते अक्षिणी नेत्रे यस्याः तया, **धेन्वा**–गवा, **निरीक्ष्यमाणः**–अवलोक्यमानः, **सुतरां**–नितरां, **दयालुः**–दयार्द्रः (सन्), **पुनरपि**–भूयोऽपि, **उवाच**–उक्तवान्।

संस्कृत भावार्थ– सिंहस्याक्रमणेन सा धेनुः अत्यन्तं भीता बभूव राजानं कातर-दृष्ट्या अपश्यत् च। राजाऽपि दयार्द्रचित्तः सन् सिंहस्य वचनं श्रुत्वा पुनरपि तमवोचत्।

शब्दार्थ –**देवानुचरस्य** - शिव जी के अनुचर की। **मनुष्यदेवः** - राजा। **तदध्यासितकातराक्ष्या** - उस (सिंह) के आक्रमण से कातर नेत्रवाली गाय। **निरीक्ष्यमाणः** - देखा जाता हुआ। **सुतराम्** - अत्यन्त। यह अव्यय है।

● **प्रसङ्ग** – राजा दिलीप सिंह से बोले–

क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः
क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः।
राज्येन किं तद्विपरीतवृत्तेः
प्राणैरुपक्रोशमलीमसैर्वा ॥53॥ (हिन्दी व्याख्या–2011 HW, 19 DD, 20 ZU)
(संस्कृत व्याख्या–2020 ZR)

अन्वय–उदग्रः क्षत्रस्य शब्दः क्षतात् त्रायते इति 'व्युत्पत्या' भुवनेषु रूढः किल तद्विपरीतवृत्तेः राज्येन किम् उपक्रोशमलीमसैः वा प्राणैः (किम्)।

हिन्दी अनुवाद – संसार में प्रसिद्ध है कि श्रेष्ठ क्षत्र शब्द का अर्थ है 'क्षत' अर्थात् नाश से बचानेवाला क्षत्रिय कहलाता है।

अतः उस क्षत्र शब्द से विपरीत कर्म करनेवाले (अर्थात् नाश से न बचानेवाले) पुरुष के राज्य और अपकीर्ति से मलिन प्राण ये दोनों व्यर्थ हैं।

संस्कृत व्याख्या– उदग्रः–उन्नतः, **क्षत्त्रस्य**–क्षत्रवर्णस्य, **शब्दः**–वाचकः, **क्षतात्**–नाशात्, **त्रायते**–रक्षति, इति हेतोः, **भुवनेषु**–लोकेषु, **रूढः**–प्रसिद्धः, **किल**–खलु, **तद्विपरीतवृत्तेः**–तस्मात् क्षत्रशब्दात् विपरीता विरुद्धा वृत्तिः व्यापारः यस्य तस्य (जनस्य), राज्येन, **किम्**–न किमपि प्रयोजनमस्तीति भावः, **वा**–अथवा, **उपक्रोशमलीमसैः**–उपक्रोशः लोकनिन्दा तेन मलीमसैः मलिनैः, **प्राणैः**–असुभिः (किम्-न किमपि प्रयोजनमिति भावः)।

संस्कृत भावार्थ– लोके विपत्तिमग्नस्य रक्षक एव यथार्थः क्षत्रियः अतः स्वधर्माचरणरहितस्य तस्य जीवनम् राज्यादिकम् च धिक्कारभाजनतया व्यर्थ भवति। यः नाशात् प्रजाः रक्षितुं न समर्थः तस्य राज्यं व्यर्थम्।

शब्दार्थ – उदग्रः - प्रसिद्ध। **क्षतात्** - नाश से। **त्रायते** - बचाता है। **रूढः** - प्रसिद्ध है। **तद्विपरीतवृत्तेः**- उस शब्द के अर्थ के विपरीत कार्यवाले का अर्थात् जो विपत्तियों से (प्रजा की) रक्षा न कर सके (उसके)। **राज्येन किम्** - राज्य से क्या। **उपक्रोशमलीमसैः** - निन्दा से मैले। निन्दनीय। **प्राणैः किम्** - प्राणों से क्या लाभ। राजा के कहने का मतलब है कि क्षत्रिय वही है जो विपत्तियों से लोगों की रक्षा करे। और यदि मैं विपत्ति से इस गाय की रक्षा नहीं कर सकता तो मेरा जीना व मेरा राज्य दोनों व्यर्थ हैं।

● **प्रसङ्ग –** दिलीप सिंह से कहते हैं कि बिना इस गाय के मुनि का क्रोध शान्त न होगा–

कथं नु शक्योऽनुनयो महर्षे-
र्विश्राणनाच्चान्यपयस्विनीनाम्।
इमामनूनां सुरभेरवेहि
रुद्रौजसा तु प्रहृतं त्वयास्याम् ।।54।। (संस्कृत व्याख्या–2019 DC)

अन्वय–अन्यपयस्विनीनाम् विश्राणनात् महर्षेः अनुनयः कथम् शक्यः इमाम् सुरभेः अनूनाम् अवेहि अस्यां त्वया रुद्रौजसा प्रहृतम्।

हिन्दी व्याख्या – महर्षि वशिष्ठ के क्रोध की शान्ति दूसरी दूध देनेवाली गायों को देने से किस प्रकार हो सकती है। इसको कामधेनु से कम न समझो। इस पर तुम्हारे द्वारा आक्रमण शङ्कर भगवान् की कृपा से हुआ है।

संस्कृत व्याख्या– अन्यपयस्विनीनाम्–अन्यासाम् इतरासाम् पयस्विनीनां धेनूनां, **विश्राणनात्**–वितरणात्, **महर्षेः**–वशिष्ठस्य, **अनुनयः**–क्रोधापनयः, **कथं नु**–केन प्रकारेण नु, **शक्यः**–कर्तुं योग्यः, **इमां**–गां,, **सुरभेः**–कामधेनोः, **अनूनाम्**–अन्यूनाम्, **अवेहि**–जानीहि, **अस्यां**–गवि, **त्वया**–सिंहेन, **तु, रुद्रौजसा**–शङ्करतेजसा, **प्रहृतम्**–प्रहारः कृतः।

संस्कृत भावार्थ– अन्यासां दोग्ध्रीणाम् गवां प्रदानात् मुनेः क्रोधशान्तिः न भविष्यति यतः इयम् साधारणा धेनुः नास्ति इयम् कामधेनुतुल्या अस्ति। अस्याः परिभवो शिवस्य तेजसा अभवत् न तु तव सामर्थ्येनेति भावः।

शब्दार्थ – अन्यपयस्विनीनाम् - दूसरी दूध देनेवाली गायों के। **विश्राणनात्** - दान देने से। **अनुनयः**- क्रोध की शान्ति। **कथम् शक्यः** - कैसे हो सकती है। **इमाम्** - इस गाय को। **सुरभेः** - कामधेनु से। **अनूनाम्** - कम नहीं। **अवेहि** - जानो। **अस्याम्** - इस पर। **त्वया प्रहृतम्** - तुम्हारे द्वारा किया गया आक्रमण। **रुद्रौजसा** - शङ्कर के प्रताप से। राजा ने यह बात श्लोक नम्बर 49 के उत्तर में कही। जब सिंह ने यह कहा कि करोड़ों अन्य दूध देनेवाली गायों को देकर गुरु का क्रोध शान्त कर सकते हैं तब राजा उत्तर में कह रहा है कि यह मामूली गाय नहीं है। यह कामधेनु से किसी प्रकार कम नहीं है तो गुरु का क्रोध अन्य गायों के देने से कैसे शान्त हो सकता है। यदि कोई यह कहे कि मामूली गाय नहीं है तो सिंह का आक्रमण कैसे हुआ, जिसका उत्तर है कि शङ्कर जी के तेज से यह आक्रमण हुआ न कि सिंह के तेज से।

● **प्रसङ्ग –** राजा दिलीप अपने पूर्व प्रस्तुत प्रस्ताव को दुहराते हुए कहते हैं–

सेयं स्वदेहार्पणनिष्क्रयेण
न्याय्या मया मोचयितुं भवत्तः।
न पारणा स्याद्विहता तवैवं (हिन्दी व्याख्या– 2019 DC, 20 ZR)
भवेदलुप्तश्च मुनेः क्रियार्थः।।55।। (संस्कृत व्याख्या– 2020 ZP, ZT)

अन्वय–सा इयं मया स्वदेहार्पणनिष्क्रयेण भवत्तः मोचयितुं न्याय्या एवं 'सति' तव पारणा विहता न स्याद् मुनेः क्रियाऽर्थः च अलुप्तः भवेत्।

हिन्दी व्याख्या – इसलिए यह उचित है कि इसके बदले में मैं अपना शरीर देकर इसको तुमसे छुड़ाऊँ ऐसा करने से तुम्हारी पारणा भी भङ्ग न होगी और महर्षि वशिष्ठ का होमादि रूप प्रयोजन भी नष्ट न होगा।

संस्कृत व्याख्या– सा–पूर्वोक्ता, **इयम्–**एषा, **मया–**दिलीपेन, **स्वदेहार्पणनिष्क्रयेण–**स्वस्य देहः निजशरीर तस्य अर्पणं दानं तदेव निष्क्रयः मूल्यं तेन, **भवत्तः–**त्वत्तः, **मोचयितुं–**त्याजयितुं, **न्याय्या–**उचिता, **एवम्–**इत्थं (सति), **तव–**ते, **पारणा–**व्रतान्तभोजनं, **विहता–**नष्टा, **न स्यात्–**न भवेत्, **मुनेः–**वशिष्ठस्य, **क्रियार्थः–**होमादिकं, च, **अलुप्तः–**अनष्टः, **भवेत्–**स्यात्।

संस्कृत भावार्थ– सेयं मया स्वशरीरदानविनिमयेन भवत्तो मोचयितुं योग्या अस्ति। एवं कृते सति तव चिरकालाद् बुभुक्षितस्य व्रतान्तभोजनं नष्टं न भवेत् तथा वशिष्ठस्य होमादिक्रियारूपं प्रयोजनमपि लुप्तं न भविष्यति।

शब्दार्थ –स्वदेहार्पणनिष्क्रयेण - बदले में अपना शरीर देकर। **भवत्तः** - तुमसे। **मोचयितुम् न्याय्या** - छुड़ाने (बचाने) योग्य है। मुझे उचित है कि अपना शरीर इसके बदले में देकर इस गाय को तुमसे बचाऊँ। **एवं तव पारणा** - इस प्रकार से तुम्हारी पारणा (व्रत के अन्त का भोजन) नष्ट न होगी। **विहता** - नष्ट। **क्रियार्थ** - होमादिक रूपी प्रयोजन। **अलुप्तः स्यात्** - नष्ट न होगा।

● **प्रसङ्ग –** अपने पक्ष के समर्थन में राजा सिंह को ही प्रमाण रूप में प्रस्तुत करता है–

भवानपीदं परवानवैति
महान् हि यत्नस्तव देवदारौ।
स्थातुं नियोक्तुर्नहि शक्यमग्रे
विनाश्य रक्ष्यं स्वयमक्षतेन ॥56॥

अन्वय–परवान् भवान् अपि इदम् अवैति हि देवदारौ तव महान् यत्नः रक्ष्यम् (वस्तु) विनाश्य स्वयम् अक्षतेन (सता) नियोक्तुः अग्रे स्थातुम् नहि शक्यम्।

हिन्दी व्याख्या – पराधीन आप यह जानते हैं, क्योंकि आप भी देवदारु की रक्षा बड़े परिश्रम से करते हैं। रक्षा करने योग्य वस्तु का नाश करके स्वयं कुशलपूर्वक (नौकर) स्वामी के सामने उपस्थित होने में समर्थ नहीं हो सकता (अर्थात् सामने नहीं ठहर सकता)।

संस्कृत व्याख्या– परवान्–पराधीनः, **भवानपि–**त्वमपि, **इदं–**वक्ष्यमाणम्, **अवैति–**जानाति, **हि–**यतः, **देवदारौ–**तन्नामके वृक्षे, **तव–**भवतः, **महान्–**भूयान्, **यत्नः–**आयासः, **रक्ष्यं–**रक्षणीयं (वस्तु), **विनाश्य–**विनाशं गमयित्वा, **स्वयम्–**आत्मना, **अक्षतेन–** व्रणरहितेन, (सता) **नियोक्तुः–**स्वामिनः, **अग्रे–**पुरतः, **स्थातुं–**वस्तुं, **नहि शक्यम्–**न योग्यम्।

संस्कृत भावार्थ– किञ्च निजभर्त्तुः अधीनस्थो भवानपि जानाति, यतः भवान् इमं देवदारुम् महता यत्नेन रक्षति। रक्षार्थं समर्पितं वस्तु नाशयित्वा स्वयं च स्वस्थशरीरः सन् भृत्यः कथं स्वामिनः सम्मुखे स्वमुखं दर्शयितुं शक्नोति?

शब्दार्थ – परवान् - पराधीन। **अवैति** - जानते हो। **देवदारौ तव महान् यत्नः** - देवदारु में आपका बड़ा परिश्रम है। **रक्ष्यम्** - रक्षा करने योग्य, जो वस्तु रक्षा के लिए सौंपी गयी है। **विनाश्य** - नाश करके। **स्वयम् अक्षतेन** - स्वयं कुशल रहकर। **नियोक्तुः** - स्वामी के। **स्थातुं नहि शक्यम्** - खड़ा नहीं हो सकता। नौकर स्वयं कुशल रहे, चोट न खाये और रक्षा में सौंपी हुई वस्तु को गँवा दे तो वह नौकर मालिक के सामने खड़ा होने की हिम्मत नहीं कर सकता। क्योंकि उसका चोट न खाना इस बात को प्रकट करता है कि नौकर ने उस वस्तु को बचाने का प्रयत्न नहीं किया।

● **प्रसङ्ग –** राजा को अपने यश की चिन्ता अधिक है, शरीर की नहीं–

किमप्यहिंस्यस्तव चेन्मतोऽहं
यशःशरीरे भव मे दयालुः।
एकान्तविध्वंसिषु मद्विधानां
पिण्डेष्वनास्था खलु भौतिकेषु ॥57॥

अन्वय–किमपि अहं तव अहिंस्यः मतः (अस्मि) चेत् (तर्हिं त्वं) मे यशःशरीरे दयालुः भव। मद्विधानाम् एकान्तविध्वंसिषु भौतिकेषु पिण्डेषु अनास्था खलु भवति।

हिन्दी व्याख्या – और यदि तुम्हारी समझ में मैं अवध्य हूँ तो तुम मेरे यश रूपी शरीर पर दया करो। क्योंकि हमारे ऐसे लोग अवश्य नष्ट होनेवाले पाँच भूतों से बने हुए शरीर से प्रेम नहीं रखते।

संस्कृत व्याख्या– किमपि–किंवा, **अहं**–दिलीपः, **तव**–ते, **अहिंस्यः**–अवध्यः, **मतः**–अभीष्टः (अस्मि), **चेत्**–यदि, (तर्हि त्वं) **मे**–मम, **यशःशरीरे**–कीर्तितनौ, **दयालुः**–कृपालुः, **भव**–भवेः, **मद्विधानां**–मादृशानां (पुरुषाणाम्), **एकान्तविध्वंसिषु**–अनिवार्यरूपेण विनाशशीलेषु, **भौतिकेषु**–पृथिव्यादिभूतविकारेषु, **पिण्डेषु**–शरीरेषु, **अनास्था**–अनपेक्षा, **खलु**–निश्चयेन, **भवति**–जायते।

संस्कृत भावार्थ– किञ्च यदि अहं केनचित् कारणेन अवध्यः अस्मि तर्हि मे यशःशरीरे दयालुः भूत्वा तदेव त्रायस्व। रक्तमांसास्थिनिर्मितशरीरापेक्षयाऽहं स्वकीर्तिरूपं शरीरं बहुतरमादरणीयम्मन्ये। पञ्चभूतनिर्मितमिदं शरीरमवश्यं नङ्क्ष्यति परन्तु यशः तु चिरकालं स्थास्यति। कीर्तिः यस्य स जीवति।

शब्दार्थ – किमपि - यदि। **अहं तव अहिंस्यः** - (यदि) मैं तुम्हारे द्वारा मारे जाने योग्य नहीं हूँ। **यशःशरीरे** - यशरूपी शरीर में। **दयालुः भव** - दया करो। भाव यह है कि मुझे खाकर मेरे यश की रक्षा करो। **मद्विधानाम्** - मुझ ऐसे लोगों का। **एकान्तविध्वंसिषु** - अवश्य नष्ट होनेवाले शरीर में। **भौतिकेषु** - पाँच पदार्थों का बना हुआ (क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर)। **पिण्डेषु** - शरीर में। **अनास्था** - प्रेम का अभाव। राजा का कहना है कि हम ऐसे लोगों को, जो कीर्ति को ज्यादा पसन्द करते हैं, यह अवश्य नाशवान् पञ्चभूतनिर्मित शरीर प्रिय नहीं है। अतः मुझे खाकर मेरे यश की रक्षा करो।

● **प्रसङ्ग –** दिलीप अपनी प्रार्थना का उपसंहार करते हैं–

सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहु-
वृत्तः स नौ सङ्गतयोर्वनान्ते।
तद्भूतनाथानुग! नार्हसि त्वं
सम्बन्धिनो मे प्रणयं विहन्तुम् ।।58।।

अन्वय–सम्बन्धम् आभाषणपूर्वम् आहुः सः वनान्ते सङ्गतयोः नौ वृत्तः तद् भूतनाथानुग त्वं सम्बन्धिनः मे प्रणयं विहन्तुं न अर्हसि।

हिन्दी व्याख्या – सम्बन्ध तो बातचीत से उत्पन्न हुआ करते हैं (अर्थात् जब बातचीत हो जाय तभी सम्बन्ध हो जाता है) वह तो वन में मिले हुए हम दोनों का हो गया है। इस कारण हे शिव जी के अनुचर! मुझ सम्बन्धी की प्रार्थना को आप अस्वीकार न करें।

संस्कृत व्याख्या– सम्बन्धं–सख्यम्, **आभाषणपूर्वम्**–आभाषण आलापः पूर्वम् अग्रे (कारणं) यस्य तादृशम्, **आहुः**–कथयन्ति, **सः**–सम्बन्धः, **वनान्ते**–काननप्रान्ते, **सङ्गतयोः**–मिलितयोः, **नौ**–आवयोः, **वृत्तः**–जातः, **तत्**–तस्मात्, **भूतनाथानुग**–हे शिवानुचर, **त्वं**–भवान्, **सम्बन्धिनः**–मित्रस्य, **मे**–मम, **प्रणयं**–याच्नां, **विहन्तुं**–नाशयितुं, **न अर्हसि**–न योग्योऽसि।

संस्कृत भावार्थ– यत् परस्परालापजन्यं सख्यं भवति तत् आवयोः कानने मिलितयोः जातम्, अतएव अहम् तव मित्रम् अस्मि। तस्मात्कारणात् मित्रस्य मम प्रार्थना भवता न अस्वीकार्या।

शब्दार्थ – आभाषणपूर्वम् - आपस की बातचीत ही से जो होता है। **सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः**- कहते हैं कि वार्त्तालाप से ही सम्बन्ध होता है। जब तक बात नहीं होती तब तक मैत्री नहीं होती। **स नौ वनान्ते सङ्गतयाः**- वह (सम्बन्ध) हम दोनों का वन में मिलने से हो गया। **वृत्तः** - हो गया। **भूतनाथानुग** - शङ्कर जी के अनुचर (सम्बोधन)। **मे सम्बन्धिनः** -मुझ सम्बन्धी का। **प्रणयम्** - प्रार्थना को। **विहन्तुम् नार्हसि** - अस्वीकार मत करो। मैं तुम्हारा मित्र हो गया हूँ, अतः मेरी प्रार्थना को अस्वीकार मत करो।

● **प्रसङ्ग –** सिंह ने राजा की प्रार्थना मान ली और राजा ने अपना शरीर उसे समर्पित कर दिया।

तथेति गामुक्तवते दिलीपः
सद्यः प्रतिष्टम्भविमुक्तबाहुः।
स न्यस्तशस्त्रो हरये स्वदेह-
मुपानयत् पिण्डमिवामिषस्य ।।59।। (हिन्दी व्याख्या–2019 DE)

अन्वय–तथा इति गाम् उक्तवते हरये सद्यः प्रतिष्टम्भविमुक्तबाहुः सः न्यस्तशस्त्रः (सन्) स्वदेहम् आमिषस्य पिण्डम् इव उपानयत्।

हिन्दी व्याख्या –ज्योंही सिंह ने कहा कि 'ऐसा ही हो' त्योंही राजा की भुजा बन्धन-मुक्त हो गयी और उन्होंने शस्त्र को त्यागकर अपने शरीर को मांस के पिण्ड के समान सिंह को अर्पण कर दिया।

संस्कृत व्याख्या–तथा–एवमस्तु, **इति–**इत्थं, **गां–**वाणीम्, **उक्तवते–**कथितवते, **हरये–**सिंहाय, **सद्यः–**तत्क्षणमेव, **प्रतिष्टम्भविमुक्तबाहुः–**प्रतिष्टम्भात् प्रतिबन्धात् विमुक्तः विसृष्टः बाहु भुजः यस्य तादृशः, **सः–**दिलीपः, **नयस्तशस्त्रः–**परित्यक्तायुधः (सन्), **स्वदेहं–**निजशरीरम्, **आमिषस्य–**मांसस्य, **पिण्डम् इव–**कवलम् इव, **उपानयत्–**समर्पितवान्।

संस्कृत भावार्थ–यथा भवान् ब्रवीति तथैव भविष्यति इति कथयित्वा प्रार्थनामङ्गीकुर्वते सिंहाय दिलीपः परित्यक्तायुधः सन् निजदेहम् समर्पितवान्।

शब्दार्थ – तथा इति - ऐसा ही हो। **गाम्** - वाणी। **उक्तवते** - कह चुके हुए (सिंह के लिए)। **सद्यः** - तुरन्त। **प्रतिष्टम्भविमुक्तबाहुः** - रुकावट से छूट गया है बाहु जिसका वह (दिलीप)। **न्यस्तशस्त्रः** - शस्त्र त्यागकर। **अमिषस्य** - मांस के । **उपानयत्** - समर्पण कर दिया।

● **प्रसङ्ग –**गाय की रक्षा करनेवाले राजा दिलीप के ऊपर विद्याधरों ने पुष्पवर्षा की–

तस्मिन् क्षणे पालयितुः प्रजाना-
मुत्पश्यतः सिंहनिपातमुग्रम्।
अवाङ्मुखस्योपरि पुष्पवृष्टिः
पपात विद्याधरहस्तमुक्ता ॥60॥ (संस्कृत व्याख्या–2019 DF, 20 ZR)
(हिन्दी व्याख्या– 2019 DA, 20 ZQ)

अन्वय–तस्मिन् क्षणे उग्रम् सिंहनिपातम् उत्पश्यतः अवाङ्मुखस्य प्रजानाम् पालयितुः उपरि विद्याधरहस्तमुक्ता पुष्पवृष्टिः पपात।

हिन्दी व्याख्या – उस समय नीचे मुँह करके भयंकर सिंह के आक्रमण की प्रतीक्षा करने लगा। इतने में विद्याधरों द्वारा राजा के ऊपर फूलों की वर्षा की जाने लगी।

संस्कृत व्याख्या– तस्मिन्, क्षणे–काले, **उग्रं–**भयानकं, **सिंहनिपातम्–**सिंहस्य मृगेन्द्रस्य निपातम् आक्रमणम्, **उत्पश्यतः–**उत्प्रेक्षमाणस्य, **अवाङ्मुखस्य–**अधोमुखस्य, **प्रजानां–**जनानां, **पालयितुः–**रक्षकस्य, **उपरि–**उपरिष्टात्, **विद्याधरहस्तमुक्ता–**विद्याधराणां देवयोनिविशेषाणां हस्तैः करैः मुक्ता विसृष्टा, **पुष्पवृष्टिः–**पुष्पाणां कुसुमानां वृष्टिः, **पपात–**अपतत्।

संस्कृत भावार्थ– तदा सिंहाय स्वशरीरं समर्प्य मुखमधः कृत्वा रौद्रं सिंहनिपतनम् मनसि विचारयतः दिलीपस्योपरि विद्याधराः आकाशात् पुष्पवृष्टिम् अकुर्वन्।

शब्दार्थ – तस्मिन् क्षणे - उस समय। (जब राजा ने अपना शरीर अर्पण कर दिया)। **उग्रम्** - भयानक। **सिंहनिपातम्** - सिंह का आक्रमण। **उत्पश्यतः** - प्रतीक्षा करते हुए। जब राजा यह प्रतीक्षा कर रहा था कि अब सिंह मेरे ऊपर आक्रमण करेगा। **अवाङ्मुखस्य** - नीचे मुख किये हुए। **प्रजानाम् पालयितुः** - प्रजाओं के पालन करनेवाले राजा। **विद्याधरहस्तमुक्ता** - विद्याधरों के हाथ से छोड़ी गयी। विद्याधर एक प्रकार की देवताओं की योनि है, जैसे– किन्नर, यक्ष, गन्धर्व आदि। **पुष्पवृष्टिः** - फूलों की वर्षा। **पपात** - हुई (गिरी)। प्राचीन काल में किसी के लोकोत्तर असाधारण कार्य पर देवगण हर्ष से पुष्पवृष्टि करते थे। यहाँ राजा दिलीप का स्वशरीरदान ऐसा ही कार्य हुआ, जिससे विद्याधरों ने उस पर पुष्प-वर्षा की।

● **प्रसङ्ग –**नन्दिनी के कहने से राजा दिलीप उठे–

उत्तिष्ठ वत्सेत्यमृतायमानं
वचो निशम्योत्थितमुत्थितः सन्।
ददर्श राजा जननीमिव स्वां
गामग्रतः प्रस्त्रविणीं न सिंहम् ॥61॥

अन्वय–हे वत्स! उत्तिष्ठ इति अमृतायमानम् उत्थितम् वचः निशम्य उत्थितः सन् राजा अग्रतः प्रस्रविणीं गाम् स्वाम् जननीमिव

ददर्श सिंहं न ददर्श।

हिन्दी व्याख्या –'हे पुत्र! उठो' इस प्रकार का अमृतमय वचन सुनकर राजा उठा, परन्तु अपने सामने माता के समान उस दुधारी गाय को देखा, सिंह को नहीं। (अर्थात् सिंह अदृश्य हो गया था)।

संस्कृत व्याख्या– वत्स–पुत्र !, **उत्तिष्ठ–**उत्थितो भव, **इति–**इत्यम्, **अमृतायमानं–**सुधासमम्, **उत्थितम्–**उत्पन्नं, **वचः–**वचन, **निशम्य–**श्रुत्वा, **उत्थितः–**ऊर्ध्वावस्थितः (सन्), **राजा–**नृपः, **अग्रतः–**पुरतः, **प्रस्नविणीं–**स्नवत्क्षीरां, **गां–**धेनुं, **स्वां–**निजां, **जननीमिव–**मातरमिव, **ददर्श** अवलोकितवान्, **सिंहं–**केसरिणं, **न,** (ददर्श)**।**

संस्कृत भावार्थ– हे पुत्र ! उत्तिष्ठ इति अमृततुल्यं वचनं निशम्य यावद्दिलीपः उत्थितः सन् पश्यति तावदग्रे स्थितां स्नवत्क्षीरां निजाम् जननीमिव नन्दिनीमेव अपश्यत् न तु सिंहम्।

शब्दार्थ –अमृतायमानम् - अमृत के समान। **उत्थितम्** - पैदा हुआ। **निशम्य** - सुनकर। **उत्थितः सन्** - उठकर (राजा ने)। **प्रस्नविणीम्** - उत्तम दूध देनेवाली को। **स्वाम् जननीमिव** - अपनी माता के तुल्य।

● **प्रसङ्ग –** नन्दिनी सिंह का रहस्य बताती है–

तं विस्मितं धेनुरुवाच साधो
मायां मयोद्भाव्य परीक्षितोऽसि।
ऋषिप्रभावान्मयि नान्तकोऽपि
प्रभुः प्रहर्तुं किमुतान्यहिंस्राः॥62॥ (संस्कृत व्याख्या–2019 CZ)

अन्वय–विस्मितं तं धेनुः उवाच साधो मया मायाम् उद्भाव्य त्वम् परीक्षितः असि। ऋषिप्रभावात् मयि अन्तकोऽपि प्रहर्तुं न प्रभुः अन्यहिंस्राः किमुत।

हिन्दी व्याख्या – आश्चर्य से युक्त उस राजा से गाय बोली कि हे सज्जन! मैंने माया पैदाकर तुम्हारी परीक्षा ली थी। महर्षि वशिष्ठ जी की कृपा से यमराज भी मेरे ऊपर प्रहार नहीं कर सकता, दूसरे हिंसक पशुओं की बात ही क्या है?

संस्कृत व्याख्या– विस्मितम्–आश्चर्यितं, **तं–**राजानं, **धेनुः–**गौः, **उवाच–**उक्तवती, **साधो–**परकार्यसाधक!, **मया–**नन्दिन्या, **मायां–**निरुपादानिकां प्रतीतिमात्रां सृष्टिम्, **उद्भाव्य–**उत्पाद्य, **त्वं–**दिलीपः, **परीक्षितः–**परीक्षया, असि। **ऋषिप्रभावात्–**वशिष्ठसामर्थ्यात्, मयि, **अन्तकोऽपि–**यमराजोऽपि, **प्रहर्तुं–**प्रहारं कर्तुं, **न प्रभुः–**न समर्थः, **अन्यहिंस्राः–**इतरधातुकाः (व्याघ्रादयः), **किमुत–**तेषां का कथा ते न प्रभव इत्यर्थः।

संस्कृत भावार्थ– इदमद्भुतं वृत्तं दृष्ट्वा राजा आश्चर्यचकितः वभूव। तं विस्मितं दृष्ट्वा नन्दिनी उवाच-वत्स अहम् मायामयं सिंहम् उत्पाद्य तव भक्तेः परीक्षां कृतवती। महर्षिप्रभावात् यमराजोऽपि मामाक्रमितुं न शक्नोति अन्येषां हिंस्रपशूनाम् का शक्तिः।

शब्दार्थ –विस्मितम् - आश्चर्य में पड़े हुए। **मया** - मुझसे। **साधो** - हे परोपकारी। **उद्भाव्य** - पैदाकर। **परीक्षितः असि** - परीक्षित किये गये हो। मैंने माया का सिंह बनाकर इस बात की परीक्षा ली है कि मुझमें तुम्हारी कितनी भक्ति है। **ऋषिप्रभावात्** - मुनि के प्रभाव से। **अन्तकः** - यमराज। **प्रहर्तुं न समर्थः** - प्रहार करने में समर्थ नहीं हो सकता; आक्रमण नहीं कर सकता। **किमुत** - बात ही क्या है। **अन्यहिंस्रा** - दूसरे हिंसक जीव।

● **प्रसङ्ग –** नन्दिनी राजा से वर माँगने को कहती है–

भक्त्या गुरौ मय्यनुकम्पया च
प्रीतास्मि ते पुत्र! वरं वृणीष्व।
न केवलानां पयसां प्रसूति-
मवेहि मां कामदुधां प्रसन्नाम् ।।63॥ (संस्कृत व्याख्या– 2020 ZQ)
(हिन्दी व्याख्या– 2010 CB, 19 CZ, DF)

अन्वय–पुत्र ! गुरौ भक्तया मयि अनुकम्पया च ते प्रीता अस्मि वरं वृणीष्व मां केवलानां पयसाम् प्रसूति न अवेहि प्रसन्नां (मां) कामदुधाम् (अवेहि)।

हिन्दी व्याख्या – हे पुत्र! मेरे ऊपर दया करने से तथा गुरु वशिष्ठ में तुम्हारी भक्ति के कारण मैं प्रसन्न हूँ। वरदान माँगो! मुझे केवल दूध ही देनेवाली न समझो बल्कि प्रसन्न होने पर मुझे अभिलाषाओं को पूरी करनेवाली समझो।

संस्कृत व्याख्या– पुत्र–वत्स !, **गुरौ–**वशिष्ठे, **भक्तया–**श्रद्धया, **मयि–**नन्दिन्याम्, **अनुकम्पया–**दयया, च, **ते–**तव, **प्रीता–**प्रसन्ना, अस्मि, **वरं–**वरणीयमर्थं, **वृणीष्व–** याचस्व, **मां–**नन्दिनीं, **केवलानाम्–**एकमात्राणां, **पयसां–**दुग्धानाम्, **प्रसूति–**दात्रीं, **न अवेहि–**न जानीहि, **प्रसन्नां–**प्रीतां, **(मां) कामदुधां–**मनोरथपूरयित्रीं कामधेनुम्, अवेहि।

संस्कृत भावार्थ– हे पुत्र ! त्वया गुरौ भक्तिः दर्शिता मयि दया च कृता। अतः तवोपरि अहं प्रसन्ना अस्मि अतः त्वम् वरं याचस्व। अहम् केवलं दुग्धमेव न ददामि अपितु प्रसन्ना सती भक्तानाम् मनोरथानाम् पूर्त्ति कर्त्तुं शक्नोमि।

शब्दार्थ – गुरौ भक्तया - गुरु में भक्ति होने के कारण। **मयि अनुकम्पया** - मुझमें दया करने से। **प्रीता अस्मि** - प्रसन्न हूँ। **वृणीष्व** - माँगो। **केवलानां पयसां** - केवल दूध ही देनेवाली। **कामदुधाम्** - मनोरथों को देनेवाली। **प्रसन्नाम्** - प्रसन्न होने पर। मैं लोगों के मनोरथों को भी पूरा कर सकती हूँ। इसलिए हे पुत्र! मुझसे वरदान माँगो।

● **प्रसङ्ग–**राजा नन्दिनी से वर माँगता है–

ततः समानीय स मानितार्थी
हस्तौ स्वहस्तार्जितवीरशब्दः।
वंशस्य कर्तारमनन्तकीर्तिं
सुदक्षिणायां तनयं ययाचे ॥64॥ (संस्कृत व्याख्या–2019 DD)

अन्वय–ततः स्वहस्तार्जितवीरशब्दः मानितार्थी सः हस्तौ समानीय अनन्तकीर्तिं वंशस्य कर्तारं तनयं सुदक्षिणायाम् ययाचे।

हिन्दी व्याख्या – उसके बाद याचकों का मान रखनेवाले और अपने बाहुबल से 'वीर' पदवी को प्राप्त करनेवाले राजा दिलीप ने दोनों हाथों को जोड़कर वंश को चलानेवाले तथा अनन्त कीर्तिवाले पुत्र के 'सुदक्षिणा' में होने की प्रार्थना की। अर्थात् यह वरदान माँगा कि सुदक्षिणा के गर्भ से अनन्तकीर्तिशाली तथा वंश को चलानेवाला एक पुत्र पैदा हो।

संस्कृत व्याख्या– ततः–तदनन्तरम्, **स्वहस्तार्जितवीरशब्दः–**स्वहस्ताभ्यां निजकराभ्याम् अर्जितः प्राप्तः वीरशब्दः वीरेत्यभिधा येन तादृशः, **मानितार्थी–**मानिताः सन्तोषिताः अर्थिनः याचकाः येन तादृशः, **सः–**दिलीपः, **हस्तौ–**करौ, **समानीय–**सन्धाय, **अनन्तकीर्तिं–**स्थिरयशसं, **वंशस्य–**कुलस्य, **कर्तारं–**प्रवर्तयितारम्, **तनयम्–**पुत्रम्, **ययाचे–**अयाचत।

संस्कृत भावार्थ– ततः समानितयाचकः स्वभुजार्जितवीरशब्दः दिलीपः अञ्जलिं बद्ध्वा कुलस्य प्रवर्तयितारम् अनन्तकीर्तिम् पुत्रं सुदक्षिणां ययाचे।

शब्दार्थ –ततः - तब। **स्वहस्तार्जितवीरशब्दः** - अपने हाथों से (पराक्रम से) वीर पदवी को प्राप्त करनेवाला। **मानितार्थी** - याचकों की इच्छाओं को पूरा करनेवाला। **समानीय** - अञ्जलिबद्ध होकर। **अनन्तकीर्तिम्** - अनन्त कीर्तिवाले को। **वंशस्य कर्त्तारम्** - वंश को चलानेवाले। **तनयं सुदक्षिणायां ययाचे** - सुदक्षिणा के गर्भ से पुत्र (होने का वरदान) माँगा। ऐसा पुत्र जो अनन्त यशवाला हो और वंश को चलानेवाला हो।

● **प्रसङ्ग –** नन्दिनी वरदान देकर दूध पीने के लिए राजा से कहती है–

सन्तानकामाय तथेति कामं
राज्ञे प्रतिश्रुत्य पयस्विनी सा।
दुग्ध्वा पयः पत्रपुटे मदीयं
पुत्रोपभुङ्क्ष्वेति तमादिदेश ॥65॥ (हिन्दी व्याख्या– 2020 ZP)

अन्वय–सा पयस्विनी सन्तानकामाय राज्ञे तथा इति कामं प्रतिश्रुत्य "हे पुत्र ! मदीयं पयः पत्रपुटे दुग्ध्वा उपभुङ्क्ष्व" इति तम् आदिदेश।

हिन्दी व्याख्या –उस उत्तम दूधवाली गाय ने पुत्र चाहनेवाले उस राजा दिलीप को 'ऐसा ही हो' वरदान देने की प्रतिज्ञा करके यह आज्ञा दी कि "हे पुत्र, मेरे दूध को दोने में दुहकर पी लो।"

संस्कृत व्याख्या– सा, **पयस्विनी–**प्रशस्तदुग्धवती नन्दिनी, **सन्तानकामाय–**अपत्यार्थिने, **राज्ञे–**दिलीपाय, **तथा इति–**एवमेव भविष्यति इति, **कामं–**वरं, **प्रतिश्रुत्य–**प्रतिज्ञाय, **पुत्र–**वत्स!, **मदीयं–**मामकीनं, **पयः–**दुग्धं, **पत्रपुटे–**पर्णनिर्मिते पात्रे, दुग्ध्वा, **उपभुङ्क्ष्व–**पिब, इति, **तं–**राजानम्, **आदिदेश–**आज्ञापयामास।

संस्कृत भावार्थ– सा नन्दिनी पुत्रकामाय तस्मै दिलीपाय तथास्तु इति प्रतिज्ञाय पुनः इदम् अकथयत् "हे वत्स! मम दुग्धम्

पर्णपात्रे दुग्ध्वा पिब'' इति भावार्थः।

शब्दार्थ – पयस्विनी - दुधारू गाय। **सन्तानकामाय** - सन्तान की इच्छा रखनेवाले। **तथा इति** - ऐसा ही हो। **कामम्** - वरदान। **प्रतिश्रुत्य** - प्रतिज्ञा करके। **तथेति** - ऐसा ही हो (यह वरदान देने का वचन देकर)। **मदीयं पयः** - मेरा दूध। **पत्रपुटे** - दोने में। **दुग्ध्वा** - दुहकर। **उपभुङ्क्ष्व** - पिओ।

● **प्रसङ्ग –** राजा दिलीप नन्दिनी से निवेदन करते हैं–

वत्सस्य होमार्थविधेश्च शेष-
मृषेरनुज्ञामधिगम्य मातः।
ऊधस्यमिच्छामि तवोपभोक्तुं
षष्ठांशमुर्व्या इव रक्षितायाः॥66॥ (हिन्दी व्याख्या– 2020 ZO)

अन्वय–हे मातः! वत्सस्य होमार्थविधेश्च शेषं तव ऊधस्यं रक्षितायाः उर्व्याः पष्ठांशम् इव ऋषेः अनुज्ञाम् अधिगम्य उपभोक्तुम् इच्छामि।

हिन्दी व्याख्या –हे माता! बछड़े के पी लेने पर तथा होमादिक क्रिया से बचे हुए तेरे दूध को, (अपने द्वारा) रक्षित पृथ्वी के छठवें भाग के समान, ऋषि वशिष्ठ की आज्ञा पाकर पीना चाहता हूँ।

संस्कृत व्याख्या– मातः–जननि !, **वत्सस्य–**तर्णकस्य, **होमार्थविधेश्च–**होमः हवनम् एव अर्थः प्रयोजनं तस्य विधिः अनुष्ठानं तस्य च, **शेषम्–**अवशिष्टं वत्सपीतहोमप्रयुक्ताविशिष्टमित्यर्थः, **तव–**भवत्याः, **ऊधस्यं–**क्षीरं, **रक्षितायाः–**पालितायाः, **उर्व्याः–**पृथिव्याः, **पष्ठांशं–**षण्णां पूरणः षष्ठः स चासौ अंशः भागस्तम्, **इव–**यथा, **ऋषेः–**मुनेः, **अनुज्ञाम्–**आज्ञाम्, **अधिगम्य–**प्राप्य, **उपभोक्तुम्–**पातुम्, **इच्छामि–**वाञ्छामि।

संस्कृत भावार्थ– तदा नृपः कथयति हे मातः! वत्सपानस्य शेषभूतम् अग्निहोमावशिष्टं च तव पयः पृथिव्याः षष्ठभागमिव गुरोराज्ञां प्राप्य पातुमिच्छामि।

शब्दार्थ – वत्सस्य शेषम् - बछड़े के पीने से बचा हुआ। **होमार्थविधेः च शेषम्**- होमादिक अनुष्ठान करने से बचा हुआ। **ऊधस्यम्** - दूध। **उपभोक्तुम्** - पीना। **ऋषेः अनुज्ञाम् अधिगम्य** - मुनि की आज्ञा पाकर। **उर्व्याः** - पृथ्वी के। **रक्षितायाः** - पालन की गयी। **षष्ठांशम्** - छठा भाग। राजा पृथ्वी की रक्षा करता है इसी से वह उपज का छठा भाग कर के रूप में लेता है। इसीलिए दिलीप कहते हैं कि जिस प्रकार राजा पृथ्वी का छठा भाग कर के रूप में लेता है उसी प्रकार बछड़े के पीने से तथा होमादिक कार्य करने से बचे हुए दूध को पीना चाहता हूँ। मैं सब न पीऊँगा और जो भी पीऊँगा वह वशिष्ठ मुनि की आज्ञा से पीऊँगा।

● **प्रसङ्ग –** राजा के निवेदन से नन्दिनी अत्यधिक प्रसन्न होती है–

इत्थं क्षितीशेन वशिष्ठधेनु-
र्विज्ञापिता प्रीततरा बभूव।
तदन्विता हैमवताच्च कुक्षेः
प्रत्याययावाश्रममश्रमेण॥67॥ (संस्कृत व्याख्या–2019 DA)

अन्वय–इत्थं क्षितीशेन विज्ञापिता वशिष्ठधेनुः प्रीततरा बभूव तदन्विता हेमवतात् कुक्षेः अश्रमेण आश्रमम् प्रत्याययौ च।

हिन्दी व्याख्या – इस प्रकार राजा दिलीप से प्रार्थना की जाने पर वशिष्ठ मुनि की गाय अत्यन्त खुश हुई और उस (दिलीप) के साथ हिमालय की गुफा से बिना परिश्रम के (थकावट के बिना) आश्रम लौटी।

संस्कृत व्याख्या– इत्थम्–अनेन प्रकारेण, **क्षितीशेन–**राज्ञा, **विज्ञापिता–**निवेदिता, **वशिष्ठधेनुः–**नन्दिनी, **प्रीततरा–**प्रसन्नतरा, **बभूव–**जाता, **तदन्विता–**तेन राज्ञा अन्विता युक्ता, **हैमवतात्–**हिमालयसम्बन्धिनः, **कुक्षेः–**गुहायाः, **अश्रमेण–**अनायासेन, **आश्रमं–**वशिष्ठाश्रमं, **प्रत्याययौ च–**प्रत्याजगाम च।

संस्कृत भावार्थ– एवं दिलीपेन प्रार्थिता वशिष्ठस्य गौः भृशं सन्तुष्टा बभूव पश्चात्तेन च अनुगम्यमाना नगेन्द्रकन्दरातः सुखेन आश्रमम् आजगामेति भावः।

शब्दार्थ – इत्थं - इस प्रकार से। यह अव्यय है। **क्षितीशेन** - राजा से। **विज्ञापिता** - कही जाने पर। **प्रीततरा** - बहुत प्रसन्न। **तदन्विता** - उसके साथ। **हैमवतात्** - हिमालय की। **कुक्षेः** - गुफा से। **अश्रमेण**- बिना परिश्रम के। **प्रत्याययौ** - लौटी।

● **प्रसङ्ग** –राजा ने गुरु वशिष्ठ तथा रानी सुदक्षिणा से नन्दिनी की प्रसन्नता बतायी–

तस्याः प्रसन्नेन्दुमुखः प्रसादं
गुरुर्नृपाणा गुरवे निवेद्य।
प्रहर्षचिह्नानुमितं प्रियायै
शशंस वाचा पुनरुक्तयेव ॥68॥

अन्वय–प्रसन्नेन्दुमुखः नृपाणां गुरुः प्रहर्षचिह्नानुमितं तस्याः प्रसादं पुनरुक्तया इव वाचा गुरवे निवेद्य पश्चात् प्रियायै शशंस।

हिन्दी व्याख्या– निर्मल चन्द्रमा के समान शुभ्र कान्तिवाले राजाओं के स्वामी दिलीप ने उसकी (नन्दिनी की) प्रसन्नता पहले अपने गुरु से कहकर फिर अपनी स्त्री से कही। (नन्दिनी की वर प्रदान रूपी प्रसन्नता) राजा की प्रसन्नता के द्योतक मुख की लालिमा आदि चिह्नों से ही प्रकट हो रही थी, अतः मानो राजा ने उस बात को गुरु से दुबारा कहा।

संस्कृत व्याख्या– **प्रसन्नेन्दुमुखः**–निर्मलचन्द्राननः, **नृपाणां**–राज्ञां, **गुरुः**–श्रेष्ठः (दिलीपः), **प्रहर्षचिह्नानुमितं**–प्रहर्षस्य प्रसन्नतायाः चिह्नानि लक्षणानि तैः अनुमितम् ऊहितम्, **तस्याः**–नन्दिन्याः, **प्रसादम्**–अनुग्रहम्, **पुनरुक्तया इव**–पुनःकथितया इव, **वाचा**–वाण्या, **गुरवे**–वशिष्ठाय, **निवेद्य**–विज्ञाप्य, **पश्चात्**–अनन्तरं, **प्रियायै**–सुदक्षिणायै, **शशंस**–कथयामास।

संस्कृत भावार्थ– प्रसन्नचन्द्राननः महीपतीनां गुरुः दिलीपः यदा गुरुसमीपमागतस्तदा वशिष्ठेन मुखरागादिभिः तस्याः धेनोः अनुग्रहो ज्ञातः पश्चात् राजा गुरवे विज्ञाप्य सुदक्षिणायै वृत्त कथितवान्।

शब्दार्थ –**प्रसन्नेन्दुमुखः** - निर्मल चन्द्रमा की तरह मुखवाला। **नृपाणां गुरुः** - राजाओं का स्वामी अथवा राजाओं में श्रेष्ठ। **प्रहर्षचिह्नानुमितम्** - प्रसन्नता के लक्षणों जैसे मुख की लालिमा, मुख पर मुसकान आदि से जाना गया। **तस्याः प्रसादम्** - उसकी (नन्दिनी की) वर प्रदान रूपी कृपा। **पुनरुक्तया वाचा इव** - मानो दुहराकर कहा हो। **गुरवे निवेद्य** - गुरु से कहकर। **प्रियायै शशंस** - सुदक्षिणा से कहा। राजा के मुँह पर प्रसन्नता के लक्षण थे। गुरु वशिष्ठ तो राजा की मुखाकृति से समझ ही गये थे कि नन्दिनी इन पर प्रसन्न है फिर भी राजा ने शब्दों द्वारा मानो वह बात दुहरायी।

● **प्रसङ्ग** – गुरु वशिष्ठ की आज्ञा से राजा ने नन्दिनी का दूध पिया–

स नन्दिनीस्तन्यमनिन्दितात्मा
सद्वत्सलो वत्सहुतावशेषम्।
पपौ वशिष्ठेन कृताभ्यनुज्ञः
शुभ्रं यशो मूर्त्तमिवातितृष्णः॥69॥

अन्वय–अनिन्दितात्मा सद्वत्सलः स वशिष्ठेन कृताभ्यनुज्ञः अतितृष्णः इव वत्सहुतावशेषं नन्दिनीस्तन्यं मूर्त्तं शुभ्रं यश इव पपौ।

हिन्दी व्याख्या –पवित्र आचरणवाले सज्जनों के प्रेमी राजा दिलीप ने वशिष्ठ की आज्ञा पाकर बछड़े के पीने से तथा अग्निहोत्र से बचे हुए नन्दिनी के दूध को अत्यन्त प्यासे की तरह मूर्तिमान् पवित्र यश के समान पिया।

संस्कृत व्याख्या– **अनिन्दितात्मा**–अनिन्दितः अगर्हितः आत्मा स्वभावो यस्य तादृशः, **सद्वत्सलः**–सत्सु सज्जनेषु वत्सलः प्रेमवान्, **सः**–दिलीपः, **वशिष्ठेन**–गुरुणा, **कृताभ्यनुज्ञः**–आज्ञप्तः, **अतितृष्णः इव**–अतिशयपिपासितः इव, **वत्सहुतावशेषं**–तर्णकहवनयोरवशिष्ट, **नन्दिनीस्तन्यं**–नन्दिनीदुग्धं, **मूर्त्तं**–सशरीरं, **शुभ्रं**–निर्मलं, **यश इव**–कीर्तिमिव, **पपौ**–पीतवान्।

संस्कृत भावार्थ– पवित्रात्मा साधुवत्सलः नृपः वशिष्ठस्याज्ञामवाप्य वत्सपीतस्य हवनस्य चावशिष्टम् धेनोर्दुग्धं मूर्तिमत् शुभ्रं यश इव पपाविति भावः।

शब्दार्थ – **अनिन्दितात्मा** - अच्छे स्वभाववाला। **सद्वत्सलः** - सज्जनो से प्रेम करनेवाला। **कृताभ्यनुज्ञः** - जिसको आज्ञा दे दी गयी है। **अतितृष्णः इव** - अत्यन्त प्यासे के समान। **वत्सहुतावशेषम्** - बछड़े के पीने से तथा होम करने से बचा हुआ।। **नन्दिनीस्तन्यं** - नन्दिनी के दूध को। **मूर्त्तम्** - मूर्तिमान्। **शुभ्रम्** - उज्ज्वल। **यशः इव पपौ** - यश के समान पिया। राजा ने अत्यन्त प्यासे के समान उस दूध को पिया मानो साक्षात् उज्ज्वल यश का पान कर रहा हो।

● **प्रसङ्ग** – गो-सेवा व्रत के समाप्त हो जाने पर वशिष्ठ जी ने राजा और रानी को विदा कर दिया–

प्रातर्यथोक्तव्रतपारणान्ते
प्रास्थानिकं स्वस्त्ययनं प्रयुज्य।

तौ दम्पती स्वां प्रति राजधानीम्
प्रस्थापयामास वशी वशिष्ठः॥70॥ (हिन्दी व्याख्या– 20 20 ZU)

अन्वय–वशी वशिष्ठः प्रातः यथोक्तव्रतपारणान्ते प्रास्थानिकं स्वस्त्ययनं प्रयुज्य तौ दम्पती स्वां राजधानीं प्रति प्रस्थापयामास।

हिन्दी व्याख्या –जितेन्द्रिय महर्षि वशिष्ठ ने सवेरे गो-सेवारूप व्रत का पारण कर लेने के बाद प्रस्थानकालोचित स्वस्त्ययन करके उन दोनों स्त्री-पुरुष (सुदक्षिणा और दिलीप) को उनकी राजधानी की ओर भेजा।

संस्कृत व्याख्या– वशी–जितेन्द्रियः, वशिष्ठः, **प्रातः–**प्रभाते, **यथोक्तव्रतपारणान्ते–**यथोक्तस्य व्रतस्य गोसेवारूपस्य अङ्गभूता या पारणा व्रतान्तभोजनादिकं तस्याः अन्ते समाप्तौ, **प्रास्थानिकं–**प्रस्थानकालोचितं, **स्वस्त्ययनं–**शुभावहमाशीर्वादं, **प्रयुज्य–**दत्त्वा, **तौ–**पूर्वोक्तौ, **दम्पती–**जायापती, सुदक्षिणा–दिलीपौ, **स्वां–**निजां, **राजधानीम्–**अयोध्याम्, प्रति, **प्रस्थापयामास–**विसर्जयामास।

संस्कृत भावार्थ– गुरुः प्रातः यथोक्तस्य गोसेवारूपव्रतस्य पारणान्ते यात्रासम्बन्धि कल्याणयुक्तमाशीर्वचनं विधाय स्वां पुरीम् अयोध्यां प्रति प्रस्थापयामास।

शब्दार्थ –वशी - इन्द्रियों को वश में करनेवाला। **यथोक्तव्रतपारणान्ते** - गो-सेवा रूप व्रत की पारणा करके। **प्रास्थानिकम्** - प्रस्थान के समय उचित। **स्वस्त्ययनम्** - शुभ-सूचक आशीर्वाद। **प्रयुज्य** - देकर। **दम्पती** - राजा-रानी। **प्रस्थापयामास** - भेजा। **राजधानीम्-**राजधानी।

● **प्रसङ्ग –**गुरु वशिष्ठ से आशीर्वाद प्राप्त करके राजा ने प्रस्थान किया–

प्रदक्षिणीकृत्य हुतं हुताश-
मनन्तरं भर्तुररुन्धतीं च।
धेनुं सवत्सां च नृपः प्रतस्थे
सन्मङ्गलोदग्रतरप्रभावः ॥71॥ (संस्कृत व्याख्या– 2020 ZS)

अन्वय–नृपः हुतं हुताशं भर्तुः अनन्तरम् अरुन्धतीं च सवत्सां धेनुं प्रदक्षिणीकृत्य सन्मङ्गलोदग्रतरप्रभावः सन् प्रतस्थे।

हिन्दी व्याख्या – राजा ने आहुति दिये हुए अग्नि की, वशिष्ठ की, उसके बाद (वशिष्ठ-पत्नी) अरुन्धती की तथा बछड़े सहित नन्दिनी की प्रदक्षिणा करके अच्छे मङ्गलों से अधिक तेजवान् होकर प्रस्थान किया।

संस्कृत व्याख्या– नृपः–राजा, **हुतं–**तर्पितं, **हुताशम्–**अग्निम्, **भर्तुः–**पत्युः वशिष्ठस्य, **अनन्तरं–**पश्चात्, **अरुन्धतीं–**वशिष्ठभार्यां, **च–**पुनः, **सवत्सां–**वत्सेन सहितां, **धेनुं–**गां नन्दिनीं, **प्रदक्षिणीकृत्य–**परिक्रम्य, **सन्मङ्गलोदग्रतरप्रभावः–**सन्मङ्गलानि शुभमङ्गलमयकार्याणि तैः उदग्रतरः उच्चतरः प्रभवः प्रतापः सामर्थ्यं वा यस्य तादृशः (सन्), **प्रतस्थे–**प्रस्थानं कृतवान्।

संस्कृत भावार्थ–नरेन्द्रः तं हुताग्निं वशिष्ठस्य परिक्रमानन्तरम् अरुन्धतीम् मुनिपत्नीं च सवत्सांगां च परिक्रम्य यात्रासम्बन्धिस्वस्तिवाचनमङ्गलाचारैः उदग्रतरप्रतापः निजराजधानीम्प्रति जगाम इति भावार्थः।

शब्दार्थ – हुतम् - जिसका हवन हो गया है। **हुताशम्** - अग्नि को। अर्थात् हवनादिक कार्य करने से तृप्त अग्नि को। **प्रदक्षिणीकृत्य** - प्रदक्षिणा करके। **सवत्साम्** - बछड़े समेत। **सन्मङ्गलोदग्रतरप्रभावः** - अच्छे मङ्गलों से जिसका तेज बढ़ गया है। प्रस्थान करते समय राजा ने जो हवनादि कार्य किया इससे उनका तेज और बढ़ गया।

● **प्रसङ्ग –** राजधानी की ओर वापस लौटते हुए मार्ग में राज-दम्पती के चलने का वर्णन है–

श्रोत्राभिरामध्वनिना रथेन
स धर्मपत्नीसहितः सहिष्णुः।
ययावनुद्घातसुखेन मार्गं
स्वेनेव पूर्णेन मनोरथेन॥72॥ (हिन्दी व्याख्या– 2020 ZS)

अन्वय–धर्मपत्नीसहितः सहिष्णुः सः श्रोत्राभिरामध्वनिना अनुद्घातसुखेन रथेन स्वेन पूर्णेन मनोरथेन इव मार्गं ययौ।

हिन्दी व्याख्या –जब अपनी धर्मपत्नी सुदक्षिणा के साथ (व्रतादि सम्बन्धी दुःखों को) सहन करनेवाले राजा दिलीप कानों को आनन्द देनेवाली ध्वनि से युक्त तथा रास्ते में ऊँचे-नीचे पत्थरों की ठोकर लगने से जिसमें उछाल नहीं होती थी अतएव सुखप्रद रथ पर चढ़कर चले तो ऐसा मालूम होता था मानो वह अपने सफलीभूत मनोरथ पर चढ़कर जा रहे हों।

संस्कृत व्याख्या– धर्मपत्नीसहितः–धर्मपत्न्या सुदक्षिणया सहितः युक्तः, **सहिष्णुः**–सहनशीलः, **सः**–दिलीप, **श्रोत्राभिरामध्वनिना**–श्रोत्रयोः कर्णयोः अभिरामः आनन्दप्रदः ध्वनिः शब्दो यस्य तेन, **अनुद्घातसुखेन**–प्रतिघातरहितसुखदायकेन, **रथेन**–स्यन्दनेन, **स्वेन**–निजेन, **पूर्णेन**–सफलेन, **मनोरथेन**–अभिलाषेण, **इव**–यथा, **मार्गम्**–पन्थानं, **ययौ**–जगाम।

संस्कृत भावार्थ– व्रतादिकष्टसहनशीलः स नृपः सुदक्षिणासहितः श्रवणसुखकरशब्देन पाषाणकण्टकादिप्रतिघात-रहितेनानन्ददायकेन रथेन मार्गमलङ्घयत्। मन्ये असौ पूर्णम् अव्याहतम् मनोरथमारुह्य ययाविति भावः।

शब्दार्थ – धर्मपत्नीसहितः - अपनी स्त्री के साथ। **सहिष्णुः** - सहन करनेवाला, व्रतादिक दुःखों को सहन करनेवाला। **श्रोत्राभिरामध्वनिना** - कानों को सुख देनेवाले शब्द के द्वारा (रथपक्ष में)। मनोरथ के पूरे होने की बात कानों में पड़ी तो वह अत्यन्त आनन्ददायक प्रतीत हुई (मनोरथ पक्ष में)। **अनुद्घातसुखेन** - ठोकरें न लगने के कारण सुखकर। मनोरथ पूर्णरूप से (सन्तान-प्राप्ति रूपी) जो विघ्न था उसके दूर होने के कारण वह सुखदायक था। **स्वेन पूर्णेन मनोरथेन** - अपने पूर्ण हुए मनोरथ पर मानो चढ़कर गये। ऐसा प्रतीत होता था कि रथ पर चढ़कर नहीं गये बल्कि अपने सफलीभूत मनोरथ पर चढ़कर गये।

● **प्रसङ्ग** –प्रजा ने बड़ी उत्सुकता से राजा का दर्शन किया–

तमाहितौत्सुक्यमदर्शनेन
प्रजाः प्रजार्थव्रतकर्शिताङ्गम्।
नेत्रैः पपुस्तृप्तिमनाप्नुवद्भि-
र्नवोदयं नाथमिवोषधीनाम्॥73॥

अन्वय–अदर्शनेन आहितौत्सुक्यम् प्रजार्थव्रतकर्शिताङ्गम् नवोदयं प्रजाः तृप्तिम् अनाप्नुवद्भिः नेत्रैः ओषधीनां नाथम् इव तं पपुः।

हिन्दी व्याख्या – (बहुत दिनों से) न देखने के कारण प्रजा के लोग राजा को देखने के लिए उत्सुक हो रहे थे, अतः सन्तान-प्राप्ति के लिए व्रत करने के कारण क्षीणकाय उस राजा को नवोदित चन्द्रमा के समान लोगों ने अपने नेत्रों से पी-सा लिया फिर भी उनके नेत्र तृप्त न हुए।

संस्कृत व्याख्या– अदर्शनेन–अनवलोकनेन, **आहितौत्सुक्यम्**–आहितं जनितम् औत्सुक्यम् औत्कण्ठ्यं, येन तादृशं, **प्रजार्थव्रतकर्शिताङ्गम्**–प्रजार्थं सन्तानार्थं यद् व्रतं गोसेवारूपं तेन कर्शितं कृशीकृतम् अङ्गं शरीरं येन यस्य वा तादृशं, **नवोदयं**–नवीनाविर्भावं, **प्रजाः**–जनाः **तृप्तिं**–सन्तोषम्, **अनाप्नुवद्भिः**–अलभमानैः, **नेत्रैः**–नयनैः, **ओषधीनां नाथं**–चन्द्रम्, इव तद्वत्, **तं**–दिलीपं, **पपुः**–अपिबन् ददृशुरित्यर्थः।

संस्कृत भावार्थ–प्रवासहेतुना अनवलोकनेन प्राप्तौत्कण्ठ्यं पुत्रार्थेन व्रतेन क्षीणकायं तं नृपं जनाः पिपासितैः नेत्रैः ओषधीनाम् पतिं चन्द्रम् इव पपुरिति भावः।

शब्दार्थ – अदर्शनेन - न देखने के कारण। राजा बहुत दिनों तक गाय की सेवा के सम्बन्ध में राजधानी से बाहर था, अतः प्रजा ने उसे बहुत दिनों से नहीं देखा था। **आहितौत्सुक्यम्** - जिसने (देखने की) उत्कण्ठा हृदय में पैदा कर दी है। (यह चन्द्रमा और राजा दोनों का विशेषण है)। **प्रजार्थव्रतकर्शिताङ्गम्** - सन्तान के लिए किये गये व्रत के द्वारा जिसने अपने अङ्गों को कृश कर लिया है ऐसे को। (यह भी चन्द्रमा और राजा दोनों का विशेषण है)। राजा पक्ष में इसका अर्थ होगा - सन्तान के वास्ते किये गये व्रत से क्षीण शरीरवाले को। चन्द्रमा के पक्ष में - संसार के कल्याण के लिए चन्द्रमा अपनी कलाओं का दान देवताओं को देता है, अतः वह भी क्षीण हो जाता है। **नवोदयम्** - नवीन उदय-वाले को। यह दोनों का विशेषण है। चन्द्रपक्ष में - नये उदय हुए को। शुक्लपक्ष में जब चन्द्रमा उदय होता है तो उसे बड़ी उत्सुकता से लोग देखते हैं। राजा पक्ष में - जो राजधानी में फिर से लौटकर आया हो। **ओषधीनां नाथम्** - चन्द्रमा को, चन्द्रमा को ओषधियों का पति कहते हैं, क्योंकि उसकी किरण से अमृत वर्षा होती है और उससे पेड़-पौधे जीवित होते हैं। **तृप्तिम्** - सन्तोष। **अनाप्नुवद्भिः** न पाते हुए। यद्यपि वे राजा को बार-बार देखते थे फिर भी वे तृप्त नहीं थे। **पपुः** - पिया, बड़े प्रेम से देखा।

● **प्रसङ्ग** –नागरिक अभिनन्दन के बाद राजा दिलीप ने पुनः राज्य-भार सँभाल लिया–

पुरन्दरश्रीः पुरमुत्पताकं
प्रविश्य पौरैरभिनन्द्यमानः।

भुजे भुजङ्गेन्द्रसमानसारे
भूयः स भूमेर्धुरमाससञ्ज ॥74॥ (संस्कृत व्याख्या– 2020 ZU)

अन्वय–पुरन्दरश्रीः सः पौरैः अभिनन्द्यमानः उत्पताकम् पुरं प्रविश्य भुजङ्गेन्द्रसमानसारे भुजे भूयः भूमेः धुरम् आससञ्ज।

हिन्दी व्याख्या –इन्द्र के समान कान्तिवाले राजा दिलीप पुरवासियों से अभिनन्दित किये जाते हुए अयोध्या नगर में जहाँ पर पताकाएँ फहरा रही थीं, प्रविष्ट हुए और सर्पराज वासुकि के समान बल धारण करनेवाली अपनीं भुजाओं पर उन्होंने फिर से पृथ्वी का भार धारण किया।

संस्कृत व्याख्या–पुरन्दरश्रीः–इन्द्रशोभः, **सः–**दिलीपः, **पौरैः–**नागरिकैः, **अभिनन्द्यमानः–**प्रशस्यमानः, **उत्पताकम्–**उच्छ्रितध्वजं, **पुरं–**नगरं, **प्रविश्य–**अन्तर्गम्य, **भुजङ्गेन्द्रसमानसारे–**भुजङ्गाः सर्पाः तेषाम् इन्द्रः राजा वासुकिरिति यावत् तेन समानः सदृशः सारः बलं यस्य तस्मिन्, **भुजे–**बाहौ, **भूयः–**पुनः, **भूमेः–**पृथिव्याः, **धुरं–**भारम्, **आससञ्ज–**धारयामास।

संस्कृत भावार्थ–शक्रतुल्यलक्ष्मीकं स राजा प्रजाभिः अभिनन्द्यमानः उच्छ्रितध्वजं पुरं प्रविश्य सर्पराजतुल्यबले भुजे भूमेः भारम् पुनः स्थापितवान् अर्थात् राज्यभारम् अग्रहीत्।

शब्दार्थ –पुरन्दरश्रीः - इन्द्र के समान शोभावाला। **उत्पताकम्** - जहाँ पर पताकाएँ फहरा रही थीं। **अभिनन्द्यमानः** - स्वागत किया जाता हुआ। **पौरैः** - नगरवासियों ने। **पुरं प्रविष्य** - नगर में प्रवेशकर। **भुजङ्गेन्द्रसमानसारे** - सर्पराज के समान बलशाली भुजा पर (में)। **भूमेः धुरम्** - पृथ्वी के भार को। **भूयः आससञ्ज** - फिर से धारण किया। फिर से राज्यभार ग्रहण किया।

● **प्रसङ्ग –**रानी सुदक्षिणा के गर्भ-धारण करने का वर्णन है–

अथ नयनसमुत्थं ज्योतिरत्रेरिव द्यौः
सुरसरिदिव तेजो वह्निनिष्ठ्यूतमैशम्।
नरपतिकुलभूत्यै गर्भमाधत्त राज्ञी
गुरुभिरभिनिविष्टं लोकपालानुभावैः॥75॥

अन्वय–अथ अत्रेः नयनसमुत्थं ज्योतिः द्यौः इव वह्निनिष्ठ्यूतम् ऐशम् तेजः सुरसरित् इव नरपतिकुलभूत्यै राज्ञी गुरुभिः लोकपालानुभावैः अभिनिविष्टम् गर्भम् आधत्त।

हिन्दी व्याख्या –अत्रिमुनि के नेत्रों से उत्पन्न ज्योति (चन्द्रमा) को आकाश के समान और अग्नि द्वारा त्याग किये रुद्र-तेज को गङ्गा जी के समान लोकपालों के महाप्रताप से परिपूर्ण गर्भ को रानी ने दिलीप के वंश के ऐश्वर्य को बढ़ाने के लिए धारण किया।

संस्कृत व्याख्या– अथ–कियत्कालानन्तरम्, **अत्रेः–**तन्नामकस्य महर्षेः, **नयनसमुत्थं–**नेत्रोत्पन्नं, **ज्योतिः–**तेजः, **द्यौ–**आकाशः, **इव–**यथा, वह्निनिष्ठ्यूतं-वह्निना अग्निना निष्ठ्यूतं निक्षिप्तम्, **ऐशम्–**शैवं, **तेजः–**स्कन्दम्, **सुरसरित् इव–**गङ्गा इव, **नरपतिकुलभूत्यै–**राजकुलसमृद्ध्यै, **राज्ञी–**सुदक्षिणा, **गुरुभिः–**महद्भिः, **लोकपालानुभावैः–**लोकपालानाम् इन्द्रादिदेवानाम् अनुभावाः तेजांसि तैः, **अभिनिविष्टम्–**अनुप्रविष्टं, **गर्भम्–**भ्रूणम्, **आधत्त–**धृतवती।

संस्कृत भावार्थ–यथा द्यौः अत्रेः मुनेः नेत्रोत्पन्नं सोमं धृतवती यथा गङ्गा हुताशनं प्रक्षिप्तम् स्कन्दस्योत्पादकं शैवं तेजः दधार तथैव सुदक्षिणा दिलीपकुलप्रतिष्ठायै महद्भिरष्टलोकपालानां तेजोभिरनुप्रविष्टं गर्भं धृतवतीति भावार्थः।

शब्दार्थ –अत्रेः - अत्रि मुनि को। **नयनसमुत्थम्** - आँखों से उत्पन्न। **ज्योतिः** - तेज अर्थात् चन्द्रमा। हरिवंश महापुराण में यह कथा है - एक समय अत्रि मुनि ध्यानावस्थित थे। उसी समय उनके नेत्रों से जलबिन्दु गिरे, जिनसे दसों दिशाएँ चमक उठीं। तत्पश्चात् उस जल को दिशाओं ने गर्भ रूप में धारण किया परन्तु वे इसे धारण न कर सकीं और वह बाहर निकलकर आकाश में व्याप्त हो गया। वही अन्त में लोकानन्ददायक चन्द्रमा हो गया। **वह्निनिष्ठ्यूतम्** - आग में फेंका हुआ। **सुरसरित्** - गङ्गा। देवतागण तारकासुर से बड़े पीड़ित हुए और उन्होंने जाकर शङ्कर भगवान् से प्रार्थना की। देवताओं की प्रार्थना सुनकर शङ्कर जी ने अपना तेज अग्नि को दिया। अग्नि ने वह तेज गङ्गा जी को धारण करने के लिए कहा। गङ्गा जी ने उस तेज को धारण किया और उसी से स्कन्द (स्वामिकार्तिकेय) की उत्पत्ति हुई। **नरपतिकुलभूत्यै** - नरपति (राजा दिलीप) के वंश की वृद्धि के लिए। **लोकपालानुभावैः** - लोकपालों के तेज से। **अभिनिविष्टम्** - परिपूर्ण। **आधत्त** - धारण किया।

●●

➡ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कस्य कीदृशं वचो निशम्य पुरुषाधिराजः आत्मन्यवज्ञां शिथिलीचकार?
उत्तर— मृगाधिराजस्य प्रगल्भं वचो निशम्य पुरुषाधिराजः आत्मन्यवज्ञां शिथिलीचकार।

प्रश्न 2. राजा दिलीपः क इव इषुप्रयोगे वितथप्रयत्नः सञ्जातः?
उत्तर— राजा दिलीपो वज्रपाणिः (इन्द्रः) इव इषुप्रयोगे वितथप्रयत्नः सञ्जातः।

प्रश्न 3. सिंहः प्राणभृतामन्तर्गतं सर्वं कस्माद् वेद?
उत्तर— सिंहोऽष्टमूर्तेः शिवस्य किङ्करभावात् प्राणभृतामन्तर्गतं सर्वं वेद।

प्रश्न 4. भगवानष्टमूर्तिः कीदृशोऽस्ति?
उत्तर— भगवानष्टमूर्तिः स्थावरजङ्गमानां सर्गस्थितिप्रत्यवहारहेतुरस्ति।

प्रश्न 5. 'स त्वं मदीयेन शरीरवृत्तिं, देहेन निर्वर्तयितुं प्रसीद' इति कस्य कं प्रत्युक्तिः?
उत्तर— 'स त्वं मदीयेन शरीरवृत्तिं, देहेन निर्वर्तयितुं प्रसीद' इति दिलीपस्य सिंहं प्रत्युक्तिः।

प्रश्न 6. सिंहो गिरिगह्वराणाम् अन्धकारं कैः शकलानि अकरोत्?
उत्तर— सिंहो गिरिगह्वराणाम् अन्धकारं दंष्ट्रामयूखैः शकलानि अकरोत्।

प्रश्न 7. राजा दिलीपः किं कुर्वन् विचारमूढः प्रतिभाति?
उत्तर— राजा दिलीपोऽल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन् विचारमूढः प्रतिभाति।

प्रश्न 8. गुरोर्मन्युः काः स्पर्शयता विनेतुं शक्यः?
उत्तर— गुरोर्मन्युर्घटोघ्नीः कोटिशो गाः स्पर्शयता विनेतुं शक्यः।

प्रश्न 9. विद्वांसः ऋद्धं राज्यं किमाहुः?
उत्तर— विद्वांसः ऋद्धं राज्यं महीतलस्पर्शमात्रभिन्नमैन्द्रं पदमाहुः।

प्रश्न 10. मनुष्यदेवः कया निरीक्ष्यमाणः पुनरप्युवाच?
उत्तर— मनुष्यदेवः तदध्यासितकातराक्ष्या धेन्वा निरीक्ष्यमाणः पुनरप्युवाच।

प्रश्न 11. क्षत्त्रस्य वाचकः शब्दः कस्मिन्नर्थे रूढः?
उत्तर— क्षत्त्रस्य वाचकः शब्दः 'य क्षतात् त्रायते स क्षत्त्रः' रूढः।

प्रश्न 12. सिंहेन नन्दिन्यां केन प्रहृतम्?
उत्तर— सिंहेन नन्दिन्यां रुद्रौजसा प्रहृतम्।

प्रश्न 13. नन्दिनी गौः राज्ञा केन प्रकारेण सिंहात् मोचयितुं न्याय्या?
उत्तर— नन्दिनी गौः राज्ञा स्वदेहार्पणनिष्क्रयेण सिंहात् मोचयितुं न्याय्या।

प्रश्न 14. रक्ष्यं विनाश्य स्वयम् अक्षतेन कस्य अग्रे स्थातुं न हि शक्यम्?
उत्तर— रक्ष्यं विनाश्य स्वयम् अक्षतेन् नियोक्तुः अग्रे स्थातुं न हि शक्यम्।

प्रश्न 15. भौतिकाः पिण्डाः कीदृशाः भवन्ति?
उत्तर— भौतिकाः पिण्डाः एकान्तविध्वंसिनो भवन्ति।

प्रश्न 16. सम्बन्धं किम्पूर्वमाहुः?
उत्तर— सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः।

प्रश्न 17. वनान्ते सङ्गतयोः कयोः सम्बन्धः संवृत्तः?
उत्तर— वनान्ते सङ्गतयोः सिंह-दिलीपयोः सम्बन्धः संवृत्तः।

प्रश्न 18. राजा स्वदेहं सिंहाय किमिव उपानयत्?
उत्तर— राजा न्यस्तशस्त्रः स्वदेहं सिंहाय आमिषस्य पिण्डमिव उपानयत्।

प्रश्न 19. विद्याधरहस्तमुक्ता पुष्पवृष्टिः कुत्र पपात्?
उत्तर– विद्याधरहस्तमुक्ता पुष्पवृष्टिः अवाङ्मुखस्य दिलीपस्योपरि पपात्।

प्रश्न 20. विस्मितं दिलीपं धेनुः किम् उवाच?
उत्तर– विस्मितं दिलीपं धेनुः 'साधो मायाम् उद्भाव्य मया परीक्षितोऽस्ति' इत्युवाच।

प्रश्न 21. दिलीपः सुदक्षिणायां कीदृशं तनयं ययाचे?
उत्तर– दिलीपः सुदक्षिणायां वंशस्य कर्तारम् अनन्तकीर्तिं तनयं ययाचे।

प्रश्न 22. पयस्विनी दिलीपं किम् आदिदेश?
उत्तर– पयस्विनी दिलीपं 'पुत्र मदीयं पयः पत्रपुटे दुग्ध्वा उपभुङ्क्ष्व' इत्यादिदेश।

प्रश्न 23. राजा दिलीपः नन्दिन्या ऊधस्यं (दुग्धं) कस्य अनुज्ञाम् अधिगम्य उपभोक्तुम् इच्छति?
उत्तर– राजा दिलीपः नन्दिन्या ऊधस्यं (दुग्धं) ऋषेः अनुज्ञाम् अधिगम्य उपभोक्तुम् इच्छति।

प्रश्न 24. नृपाणां गुरुः गुरवे निवेद्य प्रियायै कं शशंस?
उत्तर– नृपाणां गुरुः गुरवे निवेद्य प्रियायै नन्दिन्याः प्रसादं शशंस।

प्रश्न 25. दिलीपः कीदृशं नन्दिनीस्तन्यं पपौ?
उत्तर– दिलीपः वत्सहुतावशेषं शुभ्रं मूर्तं यश इव नन्दिनीस्तन्यं पपौ।

प्रश्न 26. स्कन्दस्य मातुः हेमकुम्भस्तननिःसृतानां पयसां रसज्ञः कः?
उत्तर– स्कन्दस्य मातुः हेमकुम्भस्तननिःसृतानां पयसां रसज्ञो देवदारुरस्ति।

प्रश्न 27. देवदारोः त्वक् केन उन्मथिता?
उत्तर– देवदारोः त्वक् वन्यद्विपेन उन्मथिता।

प्रश्न 28. अद्रेस्तनया कीदृशं सेनान्यमिवैनं देवदारुं शुशोच?
उत्तर– अद्रेस्तनया असुरास्त्रैरालीढं सेनान्यमिवैनं देवदारुं शुशोच।

प्रश्न 29. अद्रिकुक्षौ केन कः किमर्थं व्यापारितः?
उत्तर– अद्रिकुक्षौ शूलभृता सिंहो वनद्विपानां त्रासार्थं व्यापारितः।

प्रश्न 30. नन्दिनी सिंहस्य तृप्त्यै कस्य केवोपस्थिता?
उत्तर– नन्दिनी सिंहस्य तृप्त्यै सुरद्विषः चान्द्रमसी सुधेवोपस्थिता।

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–

1. नन्दिनी सेवा कृता–
(i) दिलीपेन (ii) अजेन (iii) दशरथेन (iv) रामेण **उत्तर–** (i) दिलीपेन।

2. कः राजा नन्दिनी सिषेवे? (2020 ZP)
(i) अजः (ii) दिलीपः (iii) रघुः (iv) दशरथः **उत्तर–** (ii) दिलीपः।

3. नन्दिनी कस्य गौः आसीत्? (2019 CZ, 20 ZU)
***अथवा* नन्दिनी कस्य धेनुः अस्ति?** (2019 DA, 20 ZO)
(i) दिलीपस्य (ii) रघोः (iii) वशिष्ठस्य (iv) दशरथस्य **उत्तर–** (iii) वशिष्ठस्य।

4. नन्दिनी का आसीत्? (2020 ZP, ZQ)
(i) धेनुः (ii) कामधेनुः (iii) पशुः (iv) देवी **उत्तर–** (ii) कामधेनुः।

5. (कामधेनुः) नन्दिनी कस्य ऋषे धेनुः आसीत्? (2010 CC, 11 HS, HT)
(i) विश्वामित्रस्य (ii) वशिष्ठस्य (iii) दिलीपस्य (iv) कण्वस्य
उत्तर– (ii) वशिष्ठस्य

6. दिलीपस्य पत्न्याः नाम किं आसीत्? (2020 ZR)
(i) मालती (ii) वसुमती (iii) सुदक्षिणा (iv) दमयन्ती
उत्तर– (iii) सुदक्षिणा।

7. ''प्रयुक्तमप्यश्रमितो वृथा स्यात्'' इयं कस्योक्तिः? (2019 CZ)
(i) रघोः (ii) सिंहस्य (iii) दिलीपस्य (iv) दशरथस्य
उत्तर– (ii) सिंहस्य।

8. 'एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वम्' इति कं प्रयुक्तम्?
(i) रघुम् (ii) दिलीपम् (iii) वशिष्ठम् (iv) अजम् **उत्तर–** (ii) दिलीपम्।

9. सौरभेयीं कः जुगोप?
(i) दशरथः (ii) अजः (iii) दिलीपः (iv) रघुः **उत्तर–** (iii) दिलीपः।

10. दिलीपः नन्दिनी सेवायाम् किं तत्परोऽभूत्?
(i) स्वान्तःसुखाय (ii) लोकहिताय (iii) धनार्जनाय (iv) पुत्रलाभाय **उत्तर–** (iv) पुत्रलाभाय।

11. वशिष्ठ धेनोः आराधन तत्परः कः अभूत्?
(i) अजः (ii) रघुः (iii) दशरथः (iv) दिलीपः **उत्तर–** (iv) दिलीपः।

12. दिलीपस्य दयिता का आसीत्? (2020 ZO, ZS)
(i) वसुमती (ii) सुदक्षिणा (iii) सुलक्षणा (iv) सुभद्रा **उत्तर–** (ii) सुदक्षिणा।

13. वशिष्ठः कस्य गुरुः आसीत्? (2020 ZT)
(i) रामस्य (ii) दशरथस्य (iii) लक्ष्मणस्य (iv) सुमन्त्रस्य **उत्तर–** (ii) दशरथस्य।

14. दिलीपः नन्दिन्या सेवायां तत्परोऽभूत्?
(i) स्वान्तःसुखाय (ii) लोकाराधनाय (iii) सन्तानकामाय (iv) गुरोराज्ञानुपालनाय
उत्तर– (iv) गुरोराज्ञानुपालनाय।

15. महाकवि कालिदास का 'रघुवंश क्या है?
(i) नाटक (ii) गद्यकाव्य (iii) महाकाव्य (iv) खण्डकाव्य **उत्तर–** (iii) महाकाव्य।

16. उपमा प्रयोग के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं?
(i) भारवि (ii) श्री हर्ष (iii) कालिदास (iv) दण्डी **उत्तर–** (iii) कालिदास।

17. महाकवि कालिदास की रचनाएँ हैं? (2020 ZR)
(i) छह (ii) तीन (iii) सात (iv) पाँच **उत्तर–** (iii) सात।

18. दिनक्षपामध्यगता का इव धेनुः विरराज?
(i) रात्रिः (ii) सन्ध्या (iii) प्रातः (iv) मध्याह्न। **उत्तर–** (ii) सन्ध्या।

19. किमर्थं दिलीपः नन्दिनीम् सेवत?
(i) राज्याय (ii) धनाय (iii) स्वान्तःसुखाय (iv) सन्तानाय **उत्तर–** (iv) सन्तानाय।

20. द्वाविंशे दिवसे नन्दिनी कुत्र प्रविष्टा? (2010 CB)
(i) गृहे (ii) गुहायाम् (iii) प्रासादे (iv) गोशालायाम्
उत्तर– (ii) गुहायाम्।

21. नन्दिनी का आसीत्?
(i) धेनुः (ii) अजा (iii) महिषी (iv) सेविका
उत्तर– (i) धेनुः।

22. दिलीपः कदा ऋषेः धेनुं वनाय मुमोच? (2020 ZT)
(i) रात्रिकाले (ii) सायंकाले (iii) मध्याह्नकाले (iv) प्रभाते
उत्तर– (iv) प्रभाते।

23. दिलीपस्य परीक्षार्थं नन्दिनी कुत्र प्रविष्टा? (2019 DA)
(i) गृहे (ii) आश्रमे (iii) गिरिगुहायाम् (iv) उपवने
उत्तर– (iii) गिरिगुहायाम्।

24. दिलीपः कस्य आश्रमम् अगच्छत्? (2019 DF)
(i) कण्वस्य (ii) विश्वामित्रस्य (iii) वशिष्ठस्य (iv) अगस्त्यस्य
उत्तर– (iii) वशिष्ठस्य।

25. दिलीपः कस्याः समाराधनतत्परोऽभूत्? (2010 BY, 11 HV, HW)
(i) सुदक्षिणायाः (ii) गुरुपत्न्याः (iii) नन्दिन्याः (iv) पार्वत्याः
उत्तर– (iii) नन्दिन्याः।

26. पयस्विनी कम् आदिदेश? (2019 DB)
(i) रघुम् (ii) अजम् (iii) दिलीपम् (iv) जनकम्
उत्तर– (iii) दिलीपम्।

27. राजा कां ददर्श? (2019 DB)
(i) नन्दिनीम् (ii) सिंहम् (iii) गोपालकम् (iv) सुदक्षिणाम्
उत्तर– (ii) सिंहम्।

28. प्रतिष्टम्भविमुक्तबाहुः कः? (2019 DC)
(i) रघुः (ii) जनकः (iii) दिलीपः (iv) अजः
उत्तर– (iii) दिलीपः।

29. कान्तवपुः कः? (2019 DC)
(i) रघुः (ii) अजः (iii) दिलीपः (iv) जनकः
उत्तर– (iii) दिलीपः।

30. विचारमूढः कः? (2019 DD, DE, 20 ZQ, ZS)
(i) दिलीपः (ii) रघुः (iii) अजः (iv) जनकः
उत्तर– (i) दिलीपः।

31. दिनावसानोत्सुक बाल वत्सा का? (2019 DD, DE, 20 ZU)
(i) धेनुः (ii) नन्दिनी (iii) कामधेनुः (iv) जननी
उत्तर– (i) धेनुः।

32. इक्ष्वाकुवंशे समुत्पन्नः बभूव– (2019 DF)
(i) दिलीपः (ii) अजः (iii) रघु (iv) सर्वे
उत्तर– (iv) सर्वे।

खण्ड - 'ग' (नाटक)

महाकविकालिदासविरचितम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(चतुर्थोऽङ्कः)

[(आकाशे) रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः ... इत्यादि]

महाकवि कालिदास

कालिदास का जीवन-परिचय एवं समय

(2017 NF, 19 CZ, DC, DD, DF, 20ZT)

नोट–कालिदास का जीवन-परिचय, रचनाएँ एवं समय पुस्तक के द्वितीय भाग 'रघुवंशमहाकाव्यम्' में देखें।

कालिदास की नाट्य-कला

(2008EO,EQ,ER,ET,11HQ,HS,HT,HV,HW,14 CL,CM,CN,CO, 16 TH, TI, TG, 17 NG, NH, 18 BC, BD)

कालिदास प्रत्येक वस्तु का चित्र नेत्रों के सामने उपस्थित करने में सक्षम हैं। वे मानव हृदय की कोमल भावनाओं, उसकी उत्सुकता, विह्वलता और भावावेशों का अत्यन्त सुन्दर वर्णन करते हैं। उनका प्रकृति-वर्णन केवल मनोरञ्जन का साधन मात्र नहीं है, वह मनुष्य को शिक्षा भी प्रदान करता है। कालिदास ने चरित्र-चित्रण और वस्तुओं के सजीव वर्णन में कुशलता दिखायी है।

घटना-संयोजन– 'अभिज्ञानशाकुन्तल' में घटनाओं का संयोजन पूर्णरूप से स्वाभाविक है, साथ ही उसमें असाधारण सौष्ठव भी विद्यमान है। प्रत्येक घटना सार्थक है, अतः कथानक के विकास में पूरी तरह सहायक है। फलतः नाटक की गति स्वाभाविक और अविच्छिन्न है। जैसे– राजा का शकुन्तला से गान्धर्व-विवाह, दुर्वासा का शाप, दुष्यन्त का अपने नाम की अँगूठी देना, दुर्वासा द्वारा उसी अँगूठी को दिखाने पर शाप-मोचन आदि सभी घटनाएँ सुसम्बद्ध हैं।

घटनाओं की सार्थकता– 'अभिज्ञानशाकुन्तल' की प्रत्येक घटना सार्थक है और किसी विशेष उद्देश्य से रखी गयी है। जैसे–दुर्वासा के शाप से दुष्यन्त का शकुन्तला को भूलना, अँगूठी खोना, पुनः अँगूठी का मिलना, शकुन्तला-दुष्यन्त का मिलन, कण्व का शकुन्तला की विपत्ति दूर करने के लिए सोमतीर्थ जाना आदि।

वर्णनों की स्वाभाविकता व सजीवता– कालिदास का प्रत्येक वर्णन स्वाभाविक होने के साथ-साथ सजीव भी है।

वे आँखों के सामने साक्षात् चित्र-सा उपस्थित कर देते हैं। जैसे–चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई का वर्णन, शकुन्तला के द्वारा लता, मृगशावक, सखियों, पिता आदि से विदाई लेना, कण्व का पुत्री के वियोग से अधीर होना, कण्व के द्वारा शकुन्तला को पतिगृह के लिए यथोचित उपदेश देना आदि सभी घटनाएँ स्वतः आँखों के सामने उपस्थित-सी हो जाती हैं।

रचना-कौशल– महाभारत के एक नीरस कथानक को कालिदास ने अपने रचना-कौशल से 'अभिज्ञानशाकुन्तल' नामक एक सरस सुविख्यात नाटक में परिवर्तित कर दिया है।

घटनाओं की ध्वन्यात्मकता– कालिदास की रचनाओं में वर्णन और घटनाएँ संकेतात्मक होती हैं। वे भावी घटनाओं की ओर संकेत करती हैं। शाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में ही सूत्रधार के द्वारा कालिदास यह संकेत देते हैं कि नाटक में भूलना महत्त्वपूर्ण है। दुष्यन्त का शकुन्तला को भूलना, शकुन्तला का दुर्वासा के सत्कार को भूलना, भूल से अँगूठी का खो जाना आदि महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं। चतुर्थ अङ्क में प्रभात-वर्णन 'यात्येकतोऽस्तशिखरं' (4/2) के द्वारा सुख-दुःख के क्रम को अनिवार्य बताया गया है, जो सूचित करता है कि शकुन्तला पर आयी विपत्ति टल जायगी।

चरित्र-चित्रण–कालिदास चरित्र-चित्रण में सिद्धहस्त हैं। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के पात्र समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि हैं। उसके प्रत्येक पात्र का अपना विशिष्ट व्यक्तित्व है, जैसे– दुर्वासा अत्यन्त क्रोधी, शकुन्तला लज्जाशील, अनसूया शान्त व विवेकशील एवं प्रियंवदा हास्य-प्रिय है।

पात्रों के अनुकूल भाषा–कालिदास के प्रत्येक पात्र अपनी स्थिति के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग करते हैं। प्रियंवदा और अनसूया सखीजनोचित हास-परिहास करती हैं। कण्व पिता के समान शकुन्तला का अभिनन्दन करते हैं– **सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता।**

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में रस-निरूपण– शाकुन्तल शृङ्गार रस प्रधान नाटक है। इसमें सम्भोग शृङ्गार अङ्गी रस है और विप्रलम्भ शृङ्गार है। करुण, वीर, अद्भुत, हास्य, भयानक, वत्सल, शान्त ये अङ्ग रस हैं। यद्यपि शाकुन्तल में विप्रलम्भ शृङ्गार का विस्तार है तथापि नाटक सुखान्त है। अन्त में दुष्यन्त-शकुन्तला का मिलन है, अतः शाकुन्तलम् शृङ्गार प्रधान नाटक है।

कालिदास का काव्य-सौन्दर्य–शाकुन्तलम् में कालिदास ने कई ऐसे प्रसङ्ग उपस्थित किये हैं जो भावों की दृष्टि से अत्यन्त मार्मिक हैं। इनमें कालिदास की कल्पना-शक्ति व नाट्य-कुशलता का विशेष परिचय प्राप्त होता है। जैसे– चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई।

कालिदास का प्रकृति-प्रेम–कालिदास प्रकृति को सजीव और मानवीय भावनाओं से ओत-प्रोत मानते हैं। शकुन्तला वृक्षों को भाई और लताओं को बहन की तरह मानती है और उनकी सेवा करती है। इस प्रकृति-प्रेम से अभिभूत होकर शकुन्तला को पति-गृह जाने के समय वृक्ष और लताएँ वस्त्राभूषण तथा अन्य प्रसाधन उपहार आशीर्वादस्वरूप प्रदान करते हैं।

भाषा एवं शैली–कालिदास की लोकप्रियता का कारण उनकी सरल, परिष्कृत और प्रसाद गुण युक्त शैली है। कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं और वैदर्भी की प्रमुख विशेषता है–मधुर शब्द, ललित रचना, समासों का सर्वथा अभाव या छोटे समासों का होना। इनकी रचनाओं में प्रसाद-माधुर्य गुणों का प्राधान्य है, ओज गुण कम मात्रा में मिलता है।

भाषा सरल, सरस व मनोरम है। उनका शब्दकोश अगाध है। इसी कारण भाषा में असाधारण मनोरमता व प्रवाह है। कालिदास की शैली संक्षिप्त और ध्वन्यात्मक है। वह सुन्दर भावों को सुन्दर भाषा में प्रकट करते हैं। कालिदास ने कथोपकथन में पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है।

अलङ्कार–कालिदास ने शाकुन्तलम् में प्रायः सभी प्रचलित अलङ्कारों का प्रयोग किया है। प्रमुख रूप से उपमा, उत्प्रेक्षा, स्वभावोक्ति, तुल्ययोगिता, समासोक्ति, व्यतिरेक, अर्थान्तरन्यास आदि। कालिदास अपनी उपमाओं के लिए विश्व-विख्यात हैं।

कालिदास संस्कृत साहित्याकाश के देदीप्यमान नक्षत्र हैं। उनकी कविता साक्षात् त्रिवेणी है। उसमें कवित्व गङ्गा की धारा है, भाव तथा कल्पनाएँ यमुना की धारा हैं, कला ज्ञान नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिमा सरस्वती की शुभ्र धारा है।

संस्कृत नाटकों की विशेषताएँ

(2017 NO)

संस्कृत नाटकों के अध्ययन से तथा उनकी यूनानी नाटकों से तुलना करने से कतिपय विशेषताएँ ज्ञात होती हैं। ये विशेषताएँ मुख्यतया कथा, कथावस्तु-संयोजन, आकार, पात्र-संख्या, रस-परिपाक, उद्देश्य, नाट्यशाला-निर्माण आदि की दृष्टि से हैं। विशेष उल्लेखनीय विशेषताएँ निम्न हैं–

(1) सुखान्तता–भारतीय नाटकों में यद्यपि मध्य में सुख और दुःख दोनों का सम्मिश्रण है, तथापि सभी नाटक सुखान्त ही होते हैं। उरुभंग आदि को भी दुःखान्त न समझकर सुखान्त ही समझना चाहिए, क्योंकि भारतीय परम्परा के अनुसार पापी का वध भी सुखकर होता है। इसलिए ऐसे नाटक सुखान्त ही समझने चाहिए।

(2) रमणीय कल्पना–भारतीय नाटक स्वरूपतः रमणीय-कल्पना-प्रधान होते हैं। इनमें शृंगार और वीर-रस के रोचक उपाख्यान मुख्यतः होते हैं।

(3) कथावस्तु प्रचलित, ऐतिहासिक या कथा-ग्रन्थों पर आधारित–संस्कृत के नाटक मुख्यतया रामायण, महाभारत, पुराण, बृहत्कथा आदि के कथानकों पर आश्रित हैं।

(4) अन्वितित्रय का अभाव–यूनानी नाटकों में काल, स्थान तथा गति की अन्विति पर बहुत बल दिया गया है, परन्तु संस्कृत नाटकों में इस अन्वितित्रय की सर्वथा उपेक्षा की गई है।

(5) सहगान का अभाव–यूनानी नाटकों में सहगान का बहुत प्रचलन है, परन्तु संस्कृत नाटकों में इसका अत्यन्त अभाव है।

(6) रूपक और उपरूपकों के भेद–संस्कृत नाट्यशास्त्र में रूपकों के 10 भेद तथा उपरूपकों के 18 भेद माने गये हैं। इनके स्वरूप, अंक-सख्या, पात्र आदि के विषय में गंभीर विवेचन किया गया है। अतएव भारतीय नाट्यशास्त्र अत्यन्त जटिल हो गया है। इस प्रकार का विभाजन और विवेचन आदि यूनानी नाटकों में नहीं है।

(7) गद्य-पद्य का मिश्रण–संस्कृत नाटकों में कथोपकथन के लिए गद्य का प्रयोग किया जाता है। रोचकता, प्रकृति-वर्णन, नीति-शिक्षा, सुभाषित आदि के लिए पद्यों का प्रयोग किया जाता है, इस प्रकार गद्य और पद्य का समन्वय रहता है।

(8) संस्कृत के साथ प्राकृतों का प्रयोग–संस्कृत-नाटकों में प्रथम श्रेणी तथा मध्यम श्रेणी के पुरुष पात्र संस्कृत भाषा का प्रयोग करते हैं। सभी स्त्री-पात्र और अधम श्रेणी के पात्र प्राकृत में बोलते हैं। प्राकृत-पद्यों की रचना मुख्यतया महाराष्ट्रीय प्राकृत में होती थी। प्राकृतों में विशेष रूप से महाराष्ट्री, शौरसेनी और मागधी का प्रयोग हुआ है। सभी कोटि के पात्र संस्कृत समझते थे, किन्तु अपने सामाजिक स्तर के अनुसार संस्कृत या प्राकृत बोलते थे।

(9) कथा-प्रवाह पर बल नहीं–यूनानी नाटकों के तुल्य संस्कृत नाटकों में कथा-प्रवाह की तीव्रता नहीं है और गति पर इतना बल भी नहीं दिया गया है।

(10) नाटकों की रचना-विधि–संस्कृत-नाटकों की रचना की एक विशेष विधि है। पूरा नाटक कई अंकों में विभक्त होता है। नान्दी-पाठ से प्रारम्भ, सूत्रधार द्वारा स्थापना, स्थापना या प्रस्तावना में कवि-परिचय, संक्षेप या कथानक को जोड़ने के लिए विष्कम्भक और प्रवेशक का प्रयोग, भरत-वाक्य से समाप्ति आदि संस्कृत-नाटकों की रचना-विधि की विशेषताएँ हैं।

(11) विदूषक की कल्पना–यूनानी नाटकों में Clown या Fool नाम का पात्र केवल मनोरंजन या हास्य के लिए होता है, परन्तु संस्कृत-नाटकों में विदूषक हास्य के साथ ही कथानक की प्रगति में सहायक होता है और यथावसर नायक को परामर्श आदि देता है।

(12) नाटकों में अभिनय-संकेत–संस्कृत-नाटकों में अभिनय-सम्बन्धी संकेत यथास्थान सूक्ष्मता के साथ दिये जाते हैं। जैसे–प्रकाशम्, स्वगतम्, अपवारितम्, जनान्तिकम्, आकाशे, सरोषम्, विहस्य, ससंभ्रमम्। शाकुन्तल अंक 3 में–इति मुखमस्याः समुन्नमयितुमिच्छति। शकुन्तला परिहरति नाट्येन, ऐसे संकेतों से अभिनेता को अभिनय में पूरी सुविधा होती है।

(13) अर्थ-प्रकृतियाँ आदि–संस्कृत-नाटकों में 5 अर्थ-प्रकृतियों, 5 अवस्थाओं और 5 सन्धियों का प्रयोग होता है।

(14) नाटक का आकार–यूनानी नाटकों की अपेक्षा संस्कृत-नाटकों का रूप बहुत बड़ा होता है। यह इस उदाहरण से जाना जा सकता है कि शूद्रक का मृच्छकटिक आकार में ऐस्काइलस के प्रत्येक नाटक से तिगुना है।

(15) पात्र-संख्या अनियत–संस्कृत-नाटकों में पात्रों की संख्या का निर्धारण नहीं है। लौकिक, दिव्य और अदिव्य सभी प्रकार के पात्र होते हैं। यूनानी नाटकों में पात्रों की संख्या बहुत कम होती है।

(16) पात्र समूह-विशेष के प्रतिनिधि–संस्कृत-नाटक व्यक्ति-विशेष के प्रतिनिधि न होकर समूह-विशेष का प्रतिनिधित्व करते हैं। जैसे–शकुन्तला स्त्री-विशेष का प्रतिनिधित्व करती है।

(17) रस-विशेष का परिपाक–संस्कृत-नाटकों में अंगी रूप से शृंगार, वीर या करुण रस का परिपाक लक्ष्य होता है। यूनानी नाटकों में इसका अभाव है।

(18) अनुचित प्रदर्शनों पर रोक–संस्कृत-नाटकों में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि अनुचित, अशिष्ट, असभ्य और अशुभ दृश्य रंगमंच पर न दिखाए जायँ। जैसे–चुम्बन, आलिंगन, संभोग, युद्ध, मृत्यु, भोजन, शापदान आदि।

(19) लक्ष्य-शान्ति और अनौद्धत्य–संस्कृत-नाटकों का लक्ष्य है–शान्ति और अनुद्धतता की स्थापना तथा सुख-समृद्धि की कामना।

(20) लोक-मनोरंजन–संस्कृत-नाटकों का उद्देश्य है–लोक-मनोरंजन। अतः नाटक सुखान्त ही हों, इस बात पर बल दिया गया है।

(21) आदर्श-प्रधान एवं नैतिक–संस्कृत-नाटकों का उद्देश्य है–मनोरंजन के साथ ही स्वस्थ नैतिकता एवं उच्च आदर्शों का जन-मानस में संचार करना।

(22) नाट्यशाला का आकार–संस्कृत-नाटकों के प्रदर्शन के लिए जिन नाट्यशालाओं का प्रयोग होता था, वे वर्गाकार, आयताकार या त्रिभुजाकार होती थीं।

(23) प्रदर्शन के अवसर–संस्कृत-नाटकों के प्रदर्शन विशेष अवसर पर ही किये जाते थे। जैसे–पर्व, उत्सव, पुत्र-जन्म, राजतिलक, विवाह, गृहप्रवेश आदि।

(24) प्रकृति-वर्णन और प्रकृति-तादात्म्य–संस्कृत-नाटकों में प्रकृति-वर्णन को महत्त्व दिया गया है। साथ ही नाटककार प्रकृति के साथ तादात्म्य का सुन्दर निरूपण करते हैं।

(25) एकांकी नाटकों का प्रचलन–भास आदि के नाटकों से ज्ञात होता है कि संस्कृत में एकांकी नाटकों का पर्याप्त प्रचलन था। भास के नाटकों में 5 एकांकी नाटक हैं।

●●

अभिज्ञानशाकुन्तलम् : चतुर्थ अङ्क का सारांश

(2011 HU, 12 EH, 16 TD, DR, 17 NF, NI, 18 BD, BE)

फूल चुनती हुई प्रियंवदा और अनसूया के आपसी वार्त्तालाप से चतुर्थ अङ्क का प्रारम्भ होता है। अनसूया प्रियंवदा से कहती है कि राजा दुष्यन्त ने शकुन्तला से गान्धर्व विवाह कर लिया है, परन्तु मेरे हृदय में शान्ति नहीं है। आज ही वह राजर्षि यज्ञ की समाप्ति पर ऋषियों से विदा लेकर अपने नगर को चला जायगा। वहाँ जाकर इस शकुन्तला का स्मरण करेगा या नहीं? पर्णशाला में दुष्यन्त के ध्यान में मग्न शकुन्तला बैठी हुई थी। इसी बीच दुर्वासा ऋषि का अतिथि रूप में आश्रम में आगमन होता है। अतिथि-सत्कार प्राप्त न होने पर क्रुद्ध दुर्वासा शकुन्तला को शाप देते हैं कि जिसका स्मरण करती हुई तू मुझ–जैसे तपस्वी का आतिथ्य नहीं कर रही है, वह याद दिलाने पर भी तुझे स्मरण नहीं करेगा। प्रियंवदा के अनुनय-विनय से प्रसन्न होकर दुर्वासा शापमुक्त होने का उपाय बताते हैं कि यदि वह उसके पहचान का आभूषण दिखा देगी तो शाप समाप्त हो जायगा। अनसूया और प्रियंवदा शाप की बात न शकुन्तला को बताती हैं और न अन्य किसी भी व्यक्ति को, क्योंकि वे समझ रही थीं कि दुष्यन्त की नामाङ्कित अँगूठी शकुन्तला के पास है। वह उसे दिखला देगी तो शाप स्वतः समाप्त हो जायगा। शाप की बात बताने से सभी अकारण चिन्तित हो जायँगे।

सोमतीर्थ यात्रा से लौटे महर्षि कण्व को आकाशवाणी से ज्ञात हुआ कि शकुन्तला का गान्धर्व विवाह राजा दुष्यन्त के साथ हो गया है और वह गर्भिणी भी है। कण्व शकुन्तला के इस कृत्य का अभिनन्दन करते हैं। दुर्वासा के शाप के प्रभाव से शकुन्तला को बुलाने के लिए राजर्षि दुष्यन्त ने किसी भी व्यक्ति को नहीं भेजा। शकुन्तला को पतिगृह भेजने के लिए कण्व प्रबन्ध करते हैं। शकुन्तला की विदाई की तैयारी होती है। वनवृक्षों द्वारा शकुन्तला के लिए रेशमी वस्त्र, पैरों पर लगाने के लिए अलक्त (महावर) तथा विभिन्न अङ्गों में पहनने योग्य आभूषण प्रदान किये जाते हैं। उन्हें लेकर तापस कुमार नारद आता है और उन्हें गौतमी को देता है कि इनसे शकुन्तला को अलङ्कृत कीजिये। प्रियंवदा और अनसूया शकुन्तला को सुसज्जित करती हैं। इसी बीच में हस्तिनापुर जानेवाले ऋषि शार्ङ्गरव आदि बुलाये जाते हैं। ऋषि कण्व शकुन्तला की विदा के समय उसके वियोग में करुण रस से ओतप्रोत हो जाते हैं। शकुन्तला अपनी सखियों और सहचरी मृगियों आदि से विदा लेती है। महर्षि कण्व शकुन्तला को लेकर जा रहे ऋषिकुमारों के द्वारा राजा दुष्यन्त के लिए सन्देश भेजते हैं कि आप अपने उच्च कुल के अनुसार शकुन्तला की स्नेह प्रवृत्ति पर विचारकर अपनी अन्य पत्नियों के सदृश इससे व्यवहार करें। महर्षि कण्व सामान्य गृहस्थ पिता के समान पतिगृह जाती हुई पुत्री को व्यावहारिक उपदेश देते हैं कि पतिगृह पहुँचने पर सास-ससुर की सेवा, परिजनों के प्रति सहृदयता, पति के प्रति कभी भी विरुद्ध आचरण न करना, अहंकार न करना आदि कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए। कण्व से विदा लेते हुए शकुन्तला पूछती है कि मैं कब इस आश्रम का पुनः दर्शन करूँगी? कण्व आशीर्वाद देते हुए कहते हैं कि दुष्यन्त से उत्पन्न पुत्र को राज्यभार सौंपकर अपने पति के साथ इस आश्रम में शान्ति लाभ के लिए पुनः आओगी। तत्पश्चात् गौतमी और ऋषिकुमारों के साथ शकुन्तला पतिगृह के लिए प्रस्थान करती है। दोनों सखियाँ शकुन्तला से रहित सूने आश्रम में प्रवेश करती हैं। कण्व पुत्री को पति के घर भेजकर हार्दिक प्रसन्नता व सन्तोष का अनुभव करते हुए कहते हैं–

अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥

●●

प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

चतुर्थ अङ्क का नाट्य-सौन्दर्य एवं वैशिष्ट्य

(2012 EJ, 14 CP CR, 17 NC, ND, 18 BC, 19 DB, 20 ZS)

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला के पतिगृह गमन का वर्णन है। शकुन्तला आश्रम में बैठी है। वह दुष्यन्त के ध्यान में लीन है। दुर्वासा ऋषि आते हैं। शकुन्तला को उनके आने का पता ही नहीं चलता। क्रुद्ध होकर दुर्वासा शाप देकर चल देते हैं–"जिनके ध्यान में लीन होकर तुम द्वार पर आये अतिथि को भी नहीं देख रही हो, वह तुम्हें बार-बार याद दिलाने पर भी पहचानेगा नहीं।" बाद में प्रियंवदा के मनाने पर वह इतनी छूट दे देते हैं कि "अभिज्ञान देखने पर उसे याद आ जायगी।" यात्रा से लौटे आश्रम के कुलपति काश्यप को समाधिमग्न दशा में शकुन्तला और दुष्यन्त के प्रणय, गान्धर्व विवाह तथा शकुन्तला के गर्भवती होने का पता चल जाता है। वे शकुन्तला को पतिगृह भेजने की तैयारी करते हैं। शकुन्तला की विदाई के समय केवल कण्व ही नहीं, बल्कि तपोवन के सभी देवता, वृक्ष, पक्षी, पशु भी दुःखी हैं। शकुन्तला आश्रम के वृक्षों को जल पिलाकर ही स्वयं पीती थी, कभी कलियों को नहीं तोड़ती थी, वृक्षों में नयी बहार आने पर वह उत्सव मनाती थी। अतः कोयल का मधुर ध्वनि से विदा देना, हिरणों का तृण-परित्याग करना, मयूर का नृत्य त्यागना एवं वनस्पतियों द्वारा अश्रु-रूप में पत्रत्याग करना स्वाभाविक ही है। वस्तुतः पूरा आश्रम विदाईजनित शोक से करुणाप्लावित है।

शकुन्तला अपनी सखियों और सहचरी मृगियों आदि से विदा लेती है। महर्षि कण्व सामान्य गृहस्थ पिता की भाँति पतिगृह जाती हुई पुत्री को व्यावहारिक उपदेश देते हैं। अन्ततः शकुन्तला विदा हो जाती है। विद्वानों का मानना है कि काव्यों में नाटक सबसे अधिक रमणीय है। नाटकों में अभिज्ञानशाकुन्तलम् और अभिज्ञानशाकुन्तलम् में भी चतुर्थ अङ्क सबसे अधिक रमणीय है। चतुर्थ अङ्क में भी चार श्लोक सबसे अधिक प्रिय माने गये हैं–

"काव्येषु नाटकं रम्यं, तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि चतुर्थोऽङ्कस्तत्र श्लोकचतुष्टयम्॥"

शकुन्तला का चरित्र-चित्रण

(2011 HR,HS,HT,12 EG,14 CM,CP,CQ,CR, 16 TF, TI, TG, 17 ND, NF. NG, NI, 18 BC, BD, BE, BG)

शकुन्तला अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका है। वह ऋषि कण्व की पालिता-पुत्री है। उसके वास्तविक जननी-जनक मेनका और विश्वामित्र हैं। शकुन्तला का चरित्र एक आदर्श भारतीय नारी का चरित्र है। उसके चरित्र में अनेक ऐसे गुण हैं, जो उसे नाटक का एक प्रभावशाली पात्र बनाने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

(1) अनुपम सुन्दरी–शकुन्तला अत्यन्त सुन्दर है। उसके प्राकृतिक सौन्दर्य को बाह्य शृङ्गार की आवश्यकता नहीं है–

"इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी।"

राजा दुष्यन्त उसके अलौकिक रूप-सौन्दर्य को देखकर उस पर मुग्ध हो जाते हैं और उसके सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं–

"अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्॥"

(2) शालीनता— शकुन्तला में शालीनता कूट-कूटकर भरी है। वह सुशीला और लज्जाशीला है। राजा दुष्यन्त के सान्निध्य की आकाङ्क्षिणी होते हुए भी जब उसे ऐसा अवसर प्राप्त होता है, तो वह राजा से कहती है—

''मुञ्च तावन्मां भूयोऽपि सखीजनमनुमानयिष्ये।''

(3) पति-प्रेम— शकुन्तला अपने पति राजा दुष्यन्त से अत्यन्त प्रेम करती है, वह उनके वियोग में इतनी व्याकुल हो जाती है कि आश्रम में आये हुए ऋषि दुर्वासा का अतिथि-सत्कार नहीं करती है और उनके शाप की भागी बनती है–

''विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा, तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्, कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥''

(4) प्रकृति-प्रेम— शकुन्तला को पेड़-पौधों, लता-कुञ्जों, पशु-पक्षियों से विशेष अनुराग है। आश्रम से विदा होते समय वह आश्रम के वृक्षों, लताओं के साथ हरिणियों आदि से भी विदाई लेती है– **अवैमि ते तस्यां सोदर्यास्नेहम्।**

(5) पितृ-प्रेम— अपने पिता ऋषि कश्यप के लिए उसके हृदय में अत्यधिक प्रेम एवं श्रद्धा है। अतएव पतिगृह जाते समय वह अपने पिता से बार-बार मिलती है और कहती है–

''कथमिदानीं तातस्याङ्कात् परिभ्रष्टमलयतटोन्मूलिता चन्दनलतेव देशान्तरे जीवितं धारयिष्यामि।''

(6) सखी-प्रेम— शकुन्तला एक सच्ची सखी है। वह अपनी सखियों प्रियंवदा एवं अनुसूया से विशेष अनुराग रखती है। आश्रम से विदा के समय सखियों से विदा होने का उसे अपार दुःख होता है। वह ऐसा अनुभव करती है कि सखियों के बिना उसका शृङ्गार दुर्लभ हो जायगा–

''इदमपि बहु मन्तव्यम्। दुर्लभमिदानीं मे सखीमण्डनं भविष्यति॥''

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि कालिदास को शकुन्तला के रूप में एक आदर्श भारतीय नारी के प्रेममयी रूप का चित्रण करने में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

अनसूया का चरित्र-चित्रण

(2012 EK, EE, EJ, 14 CN CP, 16 TC, TD, TF, TH, 17 ND, NF, 18 BC, BE)

अनसूया शकुन्तला की प्राण-प्यारी सखी है। वह शकुन्तला से हार्दिक प्रेम करती है और उसे प्रसन्न रखने के लिए सतत प्रयत्नशील रहती है। अनसूया के व्यक्तित्व में हमें निम्न विशेषताएँ देखने को मिलती हैं–

(1) गम्भीर स्वभाव— अनसूया गम्भीर स्वभाव की है, उसमें प्रौढ़ता और परिपक्वता अधिक है। ऋषि दुर्वासा के शाप को सुनकर जब प्रियंवदा घबड़ा जाती है, तो अनसूया ही उसे ऋषि दुर्वासा को मनाकर शाप की समाप्ति का उपाय जानने के लिए प्रेरित करती है।

(2) स्वल्पभाषिणी— अनसूया कम बोलती है, हँसी-मजाक की बातों में उसकी विशेष रुचि नहीं है, वह अकेले में स्वयं से अधिक बातें करती है। पर्याप्त ऊहापोह करके ही वह किसी बात का उत्तर देती है।

(3) शङ्कालु प्रकृति— अनसूया शङ्कालु प्रकृति की है, वह सहसा किसी बात पर विश्वास नहीं करती है, दुष्यन्त और शकुन्तला के गान्धर्व विवाह को लेकर उसका मन आशङ्कित है। उसे इस बात की चिन्ता रहती है कि हस्तिनापुर जाकर दुष्यन्त, शकुन्तला को याद भी करेगा कि नहीं– **इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।**

(4) दूरदर्शिनी— अनसूया दूरदर्शिनी है। प्रियंवदा भयभीत है कि ऋषि कण्व शकुन्तला के गान्धर्व विवाह पर कैसी प्रतिक्रिया करेंगे, परन्तु अनसूया उसे आश्वस्त करती है कि ऋषि इसका अनुमोदन करेंगे।

(5) शकुन्तला की शुभचिन्तक— अनसूया शकुन्तला की हितैषिणी है। ऋषि दुर्वासा के शाप से वह बहुत दुःखी हो जाती है और प्रियंवदा से कहती है कि शाप का वृत्तान्त हम दोनों के बीच रहे। वह शकुन्तला की प्रसन्नता के लिए हर समय चिन्तित रहती है। शकुन्तला की विदाई के समय के लिए अनसूया न जाने कब से केसर की माला सँजोकर रखती है।

वस्तुतः कवि कालिदास ने अनसूया का चरित्र शकुन्तला की एक भावुक सखी के रूप में चित्रित किया है जिसके व्यक्तित्व में संवेदना, सहानुभूति, लज्जाशीलता, गम्भीरता एवं बुद्धिमत्ता आदि गुण समाहित हैं।

प्रियंवदा का चरित्र-चित्रण

(2011 HS, HV, HW, 12 EH, 14 CR, 17 NC, ND, NG, 18 BC,BE, BG)

प्रियंवदा नाटक की नायिका शकुन्तला की प्रिय सखी है। वह आयु में शकुन्तला के बराबर है और उसी के समान रूपवती है। वह शकुन्तला की हितैषिणी है और उसे सदैव प्रसन्न देखना चाहती है। उसके चरित्र की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

(1) विनोदशीला–प्रियंवदा विनोदप्रिय स्वभाववाली है। शकुन्तला को केसर वृक्ष के पास खड़ा देखकर वह कहती है, तुम्हारे संयोग से यह वृक्ष ऐसा लग रहा है, जैसे लता का संयोग पा गया हो।

(2) आश्वस्त स्वभाव–प्रियंवदा आश्वस्त स्वभाववाली है। जब अनसूया का मन इस बात से आशङ्कित होता है कि हस्तिनापुर जाकर राजा दुष्यन्त शकुन्तला को याद करेंगे कि नहीं, तब प्रियंवदा उसे आश्वस्त करते हुए कहती है–**''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति।''**

(3) वाक्चातुर्य–शकुन्तला को ऋषि दुर्वासा के शाप से मुक्त कराने हेतु वह अपने वाक्चातुर्य से ऋषि दुर्वासा को प्रसन्न करती है और उनसे शाप की समाप्ति का उपाय ज्ञात करती है–

अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति।

(4) शकुन्तला की हितैषिणी–प्रियंवदा शकुन्तला से निःस्वार्थ प्रेम करती है और उसे बहन के समान मानती है। वह शकुन्तला के प्रत्येक मनोरथ को पूर्ण करने के लिए प्रयत्नशील रहती है। ऋषि दुर्वासा से शाप की समाप्ति का उपाय वही ज्ञात करती है। शकुन्तला की विदाई के समय वह सहर्ष गोरोचन, तीर्थमृत्तिका, दूर्वाकिसलय आदि माङ्गलिक अङ्गराग एकत्र करती है और उसे राजा की दी हुई अँगूठी सँभालकर रखने की सलाह देती है—

यदि नाम स राजा प्रत्यभिज्ञानमन्थरो भवेत्, ततस्तस्य
इदमात्मनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं दर्शय।

संक्षेप में प्रियंवदा शकुन्तला की परम स्निग्ध सखी है, जो उसके सुख में सुखी और दुःख में दुःखी रहती है। वह व्यावहारिक शिष्टाचार, नम्रता एवं वाक्पटुता में कुशल है।

कण्व (काश्यप) का चरित्र-चित्रण

(2011 HQ, HT, HU, 12 EF, EG, EI, 14 CL, CO, CQ, 16 TC, TD, TI, TG, 17 NC, NI, 18 BC, BD, BG, 20 ZR)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ऋषि कण्व आश्रम के पूज्य कुलपति हैं। उनका दूसरा नाम ऋषि काश्यप भी है। उन्होंने नाटक की नायिका शकुन्तला का पितृ-रूप में लालन-पालन किया था। वे कालदर्शी ऋषि और वात्सल्य से परिपूर्ण पिता हैं। उनके चरित्र का अध्ययन निम्न रूपों में किया जा सकता है–

(1) पुत्री-प्रेम–शकुन्तला ऋषि कण्व की पालिता पुत्री थी, परन्तु उसके लिए उनका पितृ-हृदय स्नेह से कूट-कूटकर भरा था। शकुन्तला की विदाई का विचार आते ही उनका हृदय उत्कण्ठायुक्त हो उठता है, गला रुँध जाता है और दृष्टि चिन्ता से जड़ हो जाती है–

''यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया,
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।''

वह स्वयं से पूछते हैं कि मेरा दुःख कैसे दूर हो सकता है–

''शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम्।
उटजद्वारविरूढं नीवारबलिं विलोकयतः॥''

(2) कठोर तपस्वी–ऋषि कण्व का तपोबल अनुपम है, उनका शरीर तपस्या के कारण दुर्बल हो चुका है। शकुन्तला की विदाई के समय अत्यन्त शोकाकुल होते हुए भी उन्हें अपने तपोऽनुष्ठान का ध्यान रहता है और वे उसके अन्तराल को सहन न कर

पाने के कारण शकुन्तला से शीघ्र जाने को कहते हैं–

"वत्से, उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम्।"

(3) सिद्ध पुरुष—ऋषि कण्व सिद्ध पुरुष थे, उन्हें भूत-भविष्य सभी का ज्ञान था। तभी तो यज्ञ के समय आकाशवाणी द्वारा ही उन्हें शकुन्तला के गर्भवती होने की सूचना मिलती है। उनके प्रभाव के कारण ही शकुन्तला की विदाई के समय वृक्ष-वन देवता उसे वस्त्राभूषण आदि प्रसाधन सामग्री प्रदान करते हैं।

(4) लोक-व्यवहार में पारङ्गत—यद्यपि वे ऋषि हैं तथापि लौकिक व्यवहार को भली-भाँति जानते हैं। विदाई के समय शकुन्तला को दिया गया उनका गृहस्थाश्रम-सम्बन्धी उपदेश स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। वे शकुन्तला से कहते हैं–

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
भर्त्तुर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्तेवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः॥

(5) उदात्त व्यक्तित्व—ऋषि कण्व दुष्यन्त के साथ सम्पन्न शकुन्तला के गान्धर्व विवाह के औचित्य को जिस सहजता से स्वीकार करते हैं, वह उनके उदात्त व्यक्तित्व का द्योतक है।

वस्तुतः कण्व का जीवन गङ्गा के प्रवाह की भाँति पावन, हिम की भाँति उज्ज्वल, सागर की भाँति विस्तृत और त्रिवेणी की तरह सरल और स्निग्ध है।

दुष्यन्त का चरित्र-चित्रण

(2011 HR, 12 EJ, 16 TH, 17 NC, 18 BD, 19 DE, 20 ZO, ZR)

महाराजा दुष्यन्त हस्तिनापुर के राजा हैं। वह सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट और युवा हैं। उनके सौन्दर्य को देखकर शकुन्तला प्रथम बार में ही आकृष्ट हो जाती है। उनके चरित्र की निम्न प्रमुख विशेषताएँ हैं–

(1) बुद्धिमान्—दुष्यन्त के चरित्र में बुद्धिमत्ता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वह शकुन्तला के रूप से आकृष्ट होने के बाद विवाह करने की तभी सोचता है, जब उसे यह पता चल जाता है कि वह ब्राह्मण की कन्या नहीं है।

(2) मातृभक्त—द्वितीय अङ्क में जब करभक उसकी माता का सन्देश लेकर आता है कि "आज से चौथे दिन मेरे उपवास की पारणा होगी उस समय तुम यहाँ अवश्य उपस्थित रहना" तो वह विवेक से तपस्वियों का भी उल्लंघन नहीं करना चाहता और माता की आज्ञा का पालन भी करना चाहता है।

(3) कलामर्मज्ञ—संगीत और चित्रकला के साथ-साथ दुष्यन्त युद्धकला में भी निपुण है। पञ्चम अङ्क में हंसपदिका की गीति पर उसकी 'अहो, रागपरिवाहिणी गीतिः' यह टिप्पणी उसकी संगीतज्ञता की द्योतक है। वह शकुन्तला का चित्र बनाकर अपनी चित्रकला-पारङ्गतता की सिद्धि करता है। उसकी युद्धकला का पता तब चलता है, जब इन्द्र उसे दानवों से युद्ध करने के लिए स्वर्ग बुलाते हैं।

(4) सहृदय—दुष्यन्त ऋषि-मुनियों का सच्चे मन से सम्मान करनेवाला है। वह आश्रम के मृगों एवं पशु-पक्षियों पर शर-सन्धान नहीं करता है, आश्रम में विनम्र भाव से प्रवेश करता है और आश्रम में किसी प्रकार की विघ्न-बाधा नहीं डालता।

(5) कुशल शासक—वह सफल शासक है, प्रजापालक है, कर्त्तव्यनिष्ठ है, शूरवीर तथा पराक्रमशील है। वह आश्रम में बाधा उपस्थित करनेवालों से आश्रम की सुरक्षा करता है।

(6) सच्चा प्रेमी—राजा दुष्यन्त एक आदर्श प्रेमी है। प्रेम के क्षेत्र में उसका नाम आज भी अमर है। ऋषि शाप से मुक्त होने पर वह अपने परिचय, प्रणय एवं गन्धर्व-विवाह, शकुन्तला एवं उसकी सन्तति सबकी रक्षा करता है तथा अपने वचन का पालन करने का पूरा प्रयास करता है।

(7) नायक—राजा दुष्यन्त अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का नायक है। उसमें नायकत्व सम्बन्धी सभी विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। उसका व्यक्तित्व भी प्रभावशाली है।

महर्षि दुर्वासा का चरित्र-चित्रण

(2011 HU, 12 EI)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में महाकवि कालिदास ने जिन तीन महर्षियों को पात्र के रूप में लिया है, वे हैं—कण्व, दुर्वासा और मारीच। महर्षि दुर्वासा का उपयोग उन्होंने शकुन्तला को शाप देने और फिर शापमुक्त होने का उपाय बताने में किया है। उनके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) क्रोधी– दुर्वासा बहुत क्रोधी हैं। प्रियंवदा उन्हें लौटाकर आश्रम में लाना चाहती है, किन्तु वे नहीं आते। प्रियंवदा उन्हें 'प्रकृतिवक्र' कहती है, वे किसी के अनुनय-विनय पर ध्यान नहीं देते–'प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति।' प्रियंवदा के शब्दों में वे सुलभकोप महर्षि हैं–'एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः।' उनके व्यक्तित्व में कोप अग्नि की तरह है–'कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।' वह जैसे शाप देने के अभ्यस्त हैं। वे इस बात की चिन्ता नहीं करते हैं कि मैं किसे शाप दे रहा हूँ। उन्होंने शकुन्तला को ऐसा कठोर शाप दिया है जिसकी काट उनके ही पास है।

(2) अतिथि– कण्व के अतिथि के रूप में दुर्वासा की उपस्थिति हुई है। उनके 'अयमहं भोः।' वाक्य को अनसूया अतिथि की आवाज के रूप में ही लेती है। – 'सखि! अतिथीनामिव निवेदितम्।' वे अपनी उपेक्षा से शकुन्तला को अतिथि का तिरस्कार करनेवाली ही समझते हैं–'आः, अतिथिपरिभाविनि।' क्योंकि वे अतिथि हैं, अतः पूजा के लिए अर्ह हैं।

(3) अहङ्कारी – दुर्वासा के व्यक्तित्व में अहंकार साफ झलकता है। वे आश्रम में आते ही जिस स्वर में 'अयमहं भोः' कहते हैं, उससे लगता है कि वे अपेक्षा रखते हैं कि इतना कह देने से ही लोग उन्हें पहचान लेंगे। अपने अहंकार की रक्षा के लिए वे शीघ्र क्रोधित हो जाते हैं।

गौतमी का चरित्र-चित्रण

(2011 HQ, 12 EE, 14 CN, 17 NC, 18 BG)

गौतमी अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की महत्त्वपूर्ण पात्र है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(1) वात्सल्यमयी– गौतमी में वात्सल्य और भावुकता का स्पष्ट रूप दिखायी देता है। जब शारद्वत आदि उसे आगे कर आश्रम के लिए प्रस्थान करते हैं, तब राजदरबार में शकुन्तला पर उसे तरस आती है और वह शार्ङ्गरव से कहती है–"वत्स शार्ङ्गरव, देखो, रोती हुई शकुन्तला हमारे पीछे-पीछे आ रही है। पति के कठोर हो जाने पर यह करे भी तो क्या करे?"

(2) सामाजिक परम्पराओं की जानकार– गौतमी शब्दशास्त्र की जानकार तो है ही, लोकव्यवहार और शिष्टाचार भी खूब जानती है। जब वनदेवियाँ शकुन्तला के लिए मङ्गलकामना करती हैं, तब वही शकुन्तला को इन्हें प्रणाम करने का निर्देश करती है– "जाते, ज्ञातिजनस्निग्धाभिरनुज्ञातगमनाऽसि तपोवनदेवताभिः। प्रणम भगवतीः।" पाँचवें अङ्क में गौतमी दुष्यन्त को समझाती है कि शकुन्तला का विवाह तुम्हारी सहमति से ही हुआ है। जब राजा दुष्यन्त यह पूछता है क्या मेरा इनसे अर्थात् शकुन्तला से विवाह हुआ है? तब गौतमी ही शकुन्तला का घूँघट हटाकर उसे राजा को दिखाती है, ताकि वह उसे स्वयं देख ले।

(3) सहृदया– गौतमी शकुन्तला की शुभचिन्तक मानी जाती है। शिष्य उसी के हाथों शान्त्युदक भिजवाता है। वही ज्वरग्रस्त शकुन्तला पर दर्भोदक का प्रयोग कर उसे विश्वास दिलाती है कि इससे तुम ठीक हो जाओगी। वह कण्व की आदेशपालिका भी है। कण्व उसे पुकारकर ही कहते हैं कि शकुन्तला को पतिगृह ले जाने के लिए शार्ङ्गरव आदि को आदेश दो।

(4) जिज्ञासु– शकुन्तला की विदाई के समय आशीर्वाद देती तापसियों के साथ वह भी उपस्थित है। उनके चले जाने के पश्चात् गौतम और नारद दो ऋषिकुमार अलङ्कार लेकर उपस्थित होते हैं, जिन्हें देखकर सबके साथ गौतमी भी आश्चर्यचकित हो जाती है और दो प्रश्न करके अपनी जिज्ञासा व्यक्त करती है–'वत्स नारद, कुत एतत्।' 'किं मानसी सिद्धिः।'

विदूषक का चरित्र-चित्रण

(2017 NF)

संस्कृत नाटकों में विदूषक भी एक महत्त्वपूर्ण पात्र होता है। यद्यपि कथावस्तु के संगठन में उसकी विशेष उपयोगिता नहीं होती,

तथापि नायक के प्रेम-तथ्यों में सहायता प्रदान करने तथा दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए विदूषक का होना नितान्त आवश्यक माना जाता है। साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ के अनुसार विदूषक स्वामिभक्त, मनोविनोद में निपुण, कुपित नायिकाओं के मान का भञ्जक एवं सच्चरित्र होता है। उसका नाम कुसुम, वसन्त आदि से सम्बद्ध रहता है और वह अपने विकृत वेश, अटपटे वाक्यों एवं ऊटपटांग कार्यों के द्वारा हास्य का वातावरण प्रस्तुत करता है। वह नायक का विश्वासपात्र होता है। कालिदास के सभी नाटकों में मुख्यतया विनोद का पात्र विदूषक ही होता है। अभिज्ञानशाकुन्तल में विदूषक का नाम माढव्य है। सर्वप्रथम वह द्वितीय अंक में मिलता है। वह अपने प्रथम दर्शन में ही अपनी अकर्मण्यता, भीरुता और भोजनप्रियता का परिचय देता है।

महाकवि कालिदास ने अपने तीनों रूपकों में नायक के सहायक के रूप में विदूषक का प्रयोग किया है। उनके रूपकों में उसकी निजी विशेषता है। सभी नाटकों के विदूषक प्राकृत भाषा में वार्तालाप करते हैं। वे जाति के ब्राह्मण होते हुए भी प्रायः अनपढ़ एवं मूर्ख होते हैं। विदूषक इतना पेटू एवं भोजनप्रिय है कि जब षष्ठ अंक में शकुन्तला के वियोग में व्यथित राजा अपनी अँगूठी को उपालम्भ देता है तो उस गम्भीर अवसर पर भी उसे बुभुक्षा प्रताड़ित करती है–'कथं बुभुक्षया खादितव्योऽस्मि।' राजा दुष्यन्त जब उससे शकुन्तला-विषयक प्रणय-व्यापार में सहायक बनने की इच्छा प्रकट करता है तो विदूषक 'किं मोदकखादिकायाम्' कहकर अपनी पेट पूजा-पटुता का ही प्रकाशन करता है। वह स्वभाव से अत्यन्त भीरु एवं डरपोक है। राक्षसों के भय से वह शकुन्तला को देखने नहीं जाता है। राक्षसों की बात सुनते ही इसके प्राण फड़फड़ाने लगते हैं। राजा के पूछने पर वह भीरु स्वभाव में उत्तर देता है–'प्रथमं सपरीवाहमासीत् साम्प्रतं राक्षसवृत्तान्तेन बिन्दुरपि नावशेषितः।'

विदूषक राजा का वाचाल मित्र है। राजा अपनी गोपनीय बातें भी उससे बतलाता है और अवसर के अनुकूल उससे सहायता लेता है। पंचम अंक में हंसपदिका को सान्त्वना देने के लिए वह विदूषक को ही भेजता है। विदूषक मुँहफट है। किसी के साथ कुछ भी बोलने में यह संकोच नहीं करता है। हँसी में कही हुई इसकी बात का कोई बुरा भी नहीं मानता है। यह ऊपर से बेवकूफ बनता है, किन्तु वास्तव में भीतर से बहुत चतुर है। नाटक के द्वितीय अंक में जब राजा इसके साथ एकान्तवार्ता करने के लिए सभी सेवकों को हटा देता है, तब वह शीघ्र ही राजा के उद्देश्य को समझकर कहता है–'कृतं भवता सम्प्रति निर्मक्षिकम्।' कालिदास का विदूषक हास्यकारी ही नहीं है अपितु वह मनोरंजन के अतिरिक्त अन्य भूमिकाओं का भी निर्वाह अच्छी तरह करता है। इस प्रकार शाकुन्तलम् का विदूषक संस्कृत नाट्य साहित्य में अद्वितीय है। यह विनोदप्रिय है तथा विनोद करने में कुशल है। वह उदरपरायण है, भीरु है, डरपोक है, वाचाल है, सरल स्वभाव का है। फिर भी कालिदास के हाथों में उसका व्यक्तित्व स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आया है। वह 'हास्यकरः विदूषकः' की अपेक्षा कुछ अधिक ही है।

शार्ङ्गरव का चरित्र-चित्रण

(2017 ND, NG)

काश्यप का शिष्य–शार्ङ्गरव काश्यप का शिष्य है। इसकी चर्चा चतुर्थ और पंचम अंक में आई है। शकुन्तला को जो लोग हस्तिनापुर लेकर गये हैं, उनमें शार्ङ्गरव भी एक है। नेपथ्य से कहा गया है–''गौतमि! आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः शकुन्तलानयनाय।''

शकुन्तला में बहिन की बुद्धि–शार्ङ्गरव शकुन्तला में बहिन की बुद्धि रखता है। काश्यप कहते हैं–''भगिन्यास्ते मार्गमादेशय''। यह शकुन्तला को आदर के साथ पुकारता है–'इत इत्यो भवती'।

लोकशास्त्र का ज्ञाता–शार्ङ्गरव को लोक और शास्त्र की परम्पराओं का ज्ञान है। वह जानता है कि स्निग्ध-जन के साथ कहाँ तक जाना चाहिए और विदा होती पुत्री को सन्देश भी देना चाहिए। वह काश्यप से कहता है–''भगवन्! ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीर्थम्। अत्र सन्दिश्य प्रतिगन्तुमर्हमि।''

काश्यप का विश्वासपात्र–शार्ङ्गरव काश्यप का विश्वासपात्र है, इसीलिए वे दुष्यन्त के लिए अपना सन्देश उसके द्वारा ही भेजते हैं–''शार्ङ्गरव! इति त्वया मद्वचनात् स राजा शकुन्तलां पुरस्कृत्य वक्तव्यः।''

वाक्प्रवीण–शार्ङ्गरव की भाषा बड़ी प्रभावी है। सूक्तियाँ फूट-फूटकर निकलती दिखाई देती हैं। 'न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम' या 'औदकान्त स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः' सूक्तियों का वक्ता शार्ङ्गरव ही है।

समय की समझ–शार्ङ्गरव समय का बहुत ध्यान रखता है। वही शकुन्तला को सूचित करता है कि सूर्य दूसरे पहर में आ गया है अतः शीघ्र चलना चाहिए–''युगान्तरमारूढः सविता। त्वरतामत्र भवती।''

संक्षेप में छोटा पात्र होने पर भी शार्ङ्गरव एक बहुमुखी चरित्र का धनी है।

शारद्वत का चरित्र-चित्रण

(2017 ND)

काश्यप का शिष्य–काश्यप कण्व के शिष्यों में एक शारद्वत भी है। अभिज्ञानशाकुन्तल के चौथे और पाँचवें अंक में इसकी चर्चा आती है। गौतमी और शार्ङ्गरव के साथ शारद्वत भी शकुन्तला को लेकर हस्तिनापुर गया था। प्रियंवदा की उक्ति है–''एते खलु हस्तिनापुरगामिनः ऋषयः शब्दाय्यन्ते।''

शार्ङ्गरव का साथी–वस्तुतः चतुर्थ अंक में शारद्वत का स्पष्ट उल्लेख नहीं हुआ है, किन्तु पंचम अंक से पता चलता है कि शार्ङ्गरव के साथ वह भी हस्तिनापुर गया था। वह भी शार्ङ्गरव के समान एक मुनि है–'ततः प्रविशन्ति गौतमीसहिताः शकुन्तलां पुरस्कृत्य मुनयः'। राजदरबार में पहुँचकर शार्ङ्गरव शारद्वत से ही अपनी बात कहता है–''शारद्वत! जनाकीर्णं मन्ये हुतवहपरीतं गृहमिव।''

एकान्तप्रिय–शारद्वत नित्य ही तपोवन में रहने का अभ्यासी है, इसीलिए उसे हस्तिनापुर में प्रवेश करना अटपटा सा लगता है। वह कहता है–

अभ्यक्तमिव स्नातः शुचिरशुचिमिव प्रबुद्ध इव सुप्तम्।
बद्धमिव स्वैरगतिर्जनमिह सुखसङ्गिनमवैमि॥

तर्कशील–शारद्वत विवेकी मुनि है। जब राजा दुष्यन्त शकुन्तला को स्वीकार नहीं करता, तब शार्ङ्गरव उसे तरह-तरह से समझाता है किन्तु उसके तर्क व्यर्थ जाते हैं। ऐसे समय शारद्वत की न्यायिक एवं सतर्क सूझ-बूझ काम करती है। वह कहता है–''शार्ङ्गरव! विरमत्वमिदानीम्। शकुन्तले! वक्तव्यमुक्तमस्माभिः। सोऽयमत्रभवानेवमाह। दीयतामस्मै प्रत्ययप्रतिवचनम्।''

कर्मज्ञ–शारद्वत परिस्थितियों को सँभालने का प्रयास करता है। राजसभा में उत्तरप्रत्युत्तर बढ़ता देखकर वह अपना निर्णय सुनाता है, अब उत्तर-प्रत्युत्तर का कोई लाभ नहीं। वह शार्ङ्गरव से कहता है कि हमने गुरुजी के आदेश का पालन कर लिया है। अब हम लौटते हैं। वह राजा से भी कहता है–

तदेखा भवतः कान्ता त्यज वैनां गृहाण वा।
उपपन्ना हि दारेषु प्रभुता सर्वतोमुखी॥

संक्षेप में शारद्वत शार्ङ्गरव की अपेक्षा अधिक सुलझा हुआ, मितभाषी और विवेकशील है।

●●

महाकविकालिदासविरचितम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

चतुर्थोऽङ्कः (आकाशे) रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः .... इत्यादि)

अन्वय , शब्दार्थ एवं व्याख्या

(आकाशे)

रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः सरोभि-
श्छायाद्रुमैर्नियमितार्कमयूखतापः।
भूयात् कुशेशयरजोमृदुरेणुरस्याः
शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः॥11॥

(2010 BY, 12 EG, EI, 13 BI, 14 CR, 16 TF, 18 BD,BE, 20 ZT)

(सर्वे सविस्मयमाकर्णयन्ति।)

(आकाश में)

इसका मार्ग कमल-लताओं से हरे-भरे, तालाबों से मनोहर मध्य भागवाला, छायादार वृक्षों से कम किये गये सूर्य की किरणों के तापवाला, कमलों के पराग से कोमल धूलिवाला तथा शान्त और अनुकूल वायु से युक्त एवं कल्याणमय हो।।11।।

(सभी लोग आश्चर्य के साथ सुनते हैं।)

अन्वय— अस्याः, पन्थाः, कमलिनीहरितैः, सरोभिः, रम्यान्तरः; छायाद्रुमैः, नियमितार्कमयूखतापः, कुशेशयरजोमृदुरेणुः, च, शान्तानुकूलपवनः, च, शिवः, भूयात्।।11।।

शब्दार्थ— अस्याः = इस (शकुन्तला) का, पन्थाः = मार्ग, कमलिनीहरितैः = कमललताओं से हरे-भरे, सरोभिः = तालाबों से, रम्यान्तरः = मनोहर मध्यवाला (हो), छायाद्रुमैः = छायादार वृक्षों से, नियमितार्कमयूखतापः = कम किया गया सूर्य की किरणों के तापवाला (हो), कुशेशरजोमृदुरेणुः = कमलों के पराग से कोमल धूलिवाला, च = तथा, शान्तानुकूल पवनः = शान्त और अनुकूल वायु से युक्त, च = एवम्, शिवः = कल्याणमय, भूयात् = हो।।11।।

विशेष— कुशेशयरजोमृदुरेणुः— इसके दो अर्थ बतलाये गये हैं–(क) कमलों के पराग से कोमल धूलिवाला और (ख) कमलों के पराग के तुल्य कोमल धूलिवाला। इसका आशय यह है कि मार्ग में कमलों से भरपूर तालाब मिलें तथा हवा से उड़ाया हुआ उनका पराग इतना अधिक हो कि मार्ग की धूल कोमल हो जाय।

परिकर एवं तुल्ययोगिता अलङ्कार, वसन्ततिलका छन्द।

गौतमी - जाते, ज्ञातिजनस्निग्धाभिरनुज्ञातगमनाऽसि तपोवनदेवताभिः। प्रणम भगवतीः।

शकुन्तला - (सप्रणामं परिक्रम्य। जनान्तिकम्) हला प्रियंवदे, आर्यपुत्रदर्शनोत्सुकाया अप्याश्रमपदं परित्यजन्त्या दुःखेन मे चरणौ पुरतः प्रवर्तेते।

प्रियंवदा - न केवलं तपोवनविरहकातरा सख्येव। त्वयोपस्थितवियोगस्य तपोवनस्यापि तावत् समवस्था दृश्यते।

गौतमी— पुत्री, बान्धवजनों की स्त्रियों की तरह स्नेह करनेवाली तपोवन की देवियों के द्वारा तुझे जाने की अनुमति मिल गयी है। (तो) पूज्य इन देवियों को प्रणाम करो।

शकुन्तला - (प्रणाम करती हुई चारों ओर घूमकर, हाथ से ओट करके दूसरी ओर) सखि प्रियंवदा, आर्यपुत्र (पतिदेव) के दर्शन के लिए उत्कण्ठा होने पर भी आश्रम-भूमि को छोड़ते हुए मेरे पैर दुःख के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

प्रियंवदा– न केवल तू ही तपोवन के वियोग से दुःखी है, तुम्हारी विदाई का समय उपस्थित होने के कारण तपोवन की भी तुम्हारे समान अवस्था दिखलायी पड़ रही है।

शब्दार्थ– ज्ञातिजनस्निग्धाभिः = बान्धवजनों की स्त्रियों की तरह स्नेह करनेवाली, तपोवनदेवताभिः = तपोवन की देवियों के द्वारा, आर्यपुत्रदर्शनोत्सुकायाः = आर्यपुत्र (पतिदेव) के दर्शन के लिए उत्कण्ठित, पुरतः = आगे की ओर, तपोवनविरहकातरा = तपोवन के विरह से दुःखी, समवस्था = समान ही अवस्था, दृश्यते = दिखलायी पड़ रही है।

उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः ॥12॥

(हिन्दी अनुवाद– 2012 EH, 13 BE, 16 TH, 17 ND, 19 DC, DD, 20 ZQ)

हरिणियों ने कुश के ग्रास को उगल दिया है; मयूरों ने नाचना छोड़ दिया है; लताओं ने पीले पत्तों को गिराया है; (इस प्रकार ये) मानो आँसुओं को गिरा रही हैं।।12।।

अन्वय–मृग्यः, उद्गलितदर्भकवलाः, मयूराः, परित्यक्तनर्तनाः, लताः, अपसृतपाण्डुपत्राः, (इत्थम् एताः) अश्रूणि, मुञ्चन्ति, इव।

शब्दार्थ– मृग्यः = हरिणियों ने, उद्गलितदर्भकवलाः = कुश के ग्रास को उगल दिया है, मयूराः = मयूरों ने, परित्यक्तनर्तनाः = नाचना छोड़ दिया है, लताः = लताओं ने, अपसृतपाण्डुपत्राः = पीले पत्तों को गिराया है, (इत्थम् = इस प्रकार, एताः = ये), अश्रूणि = आँसुओं को, मुञ्चन्ति = छोड़ रही हैं, इव = मानो।।12।।

उत्प्रेक्षा, समासोक्ति अलङ्कार, आर्या छन्द।

शकुन्तला– (स्मृत्वा) तात, लताभगिनीं वनज्योत्स्नां तावदामन्त्रयिष्ये।

काश्यपः– अवैमि ते तस्यां सोदर्यास्नेहम्। इयं तावद् दक्षिणेन।

शकुन्तला– (उपेत्य लतामालिङ्ग्य) वनज्योत्स्ने, चूतसंगताऽपि मां प्रत्यालिङ्गेतोगताभिः शाखाबाहुभिः। अद्यप्रभृति दूरपरिवर्तिनी ते खलु भविष्यामि।

शकुन्तला– (स्मरण करके) पिता जी, अब लता-बहन वनज्योत्स्ना से विदाई लूँगी।

काश्यप– मैं जानता हूँ, उस पर तुम्हारा सगी बहन का-सा प्रेम है। तो यह (वनज्योत्स्ना) दाहिनी ओर है।

शकुन्तला– (पास में जाकर तथा लता का आलिङ्गन करके) हे वनज्योत्स्ना, आम से लिपटी हुई भी तुम इधर फैली हुई शाखारूपी बाहुओं से मेरा आलिङ्गन करो। आज से मैं तुमसे दूर हो जाऊँगी।

शब्दार्थ– स्मृत्वा = स्मरण करके, आमन्त्रयिष्ये = विदाई लूँगी, सोदर्यास्नेहम् = सगी बहन का=सा प्रेम, दक्षिणेन = दाहिनी ओर, उपेत्य = पास में जाकर, चूतसङ्गता = आम से लिपटी हुई, इतोगताभिः = इधर फैली हुई, शाखाबाहुभिः = शाखारूपी बाहुओं से, अद्यप्रभृति = आज से, दूरपरिवर्तिनी = दूर स्थित।

काश्यपः –

सङ्कल्पितं प्रथममेव मया तवार्थे
भर्तारमात्मसदृशं सुकृतैर्गता त्वम्।
चूतेन संश्रितवती नवमालिकेय-
मस्यामहं त्वयि च सम्प्रति वीतचिन्तः॥13॥ (2013 BH, 17 NC, 18 BC, 19 DB, 20 ZS)

इतः पन्थानं प्रतिपद्यस्व।

काश्यप– मेरे द्वारा तुम्हारे लिये पहले से ही सोचे गये अपने सदृश पति को तुम भाग्य से पा गयी हो। यह नवमालिका भी

आम्र वृक्ष से मिल गयी है। इस समय मैं इसके और तुम्हारे विषय में चिन्ता से मुक्त हो गया हूँ।।13।।

यहाँ से प्रस्थान करो।

अन्वय–मया, तवार्थे, प्रथमम्, एव, सङ्कल्पितम्, आत्मसदृशम्, भर्तारम्, त्वम्, सुकृतैः, गता, इयम्, नवमालिका, चूतेन, संश्रितवती, सम्प्रति, अहम्, अस्याम्, च, त्वयि, वीतचिन्तः।।13।।

शब्दार्थ– मया = मेरे द्वारा, तवार्थे = तुम्हारे लिये, प्रथमम् = पहले से, एव= ही, सङ्कल्पितम् = सोचे गये, आत्मसदृशम् = अपने सदृश, भर्तारम् = पति को, त्वम् = तुम, सुकृतैः = भाग्य से, गता= पा गयी हो, इयम् = यह, नवमालिका = नेवारी, चूतेन = आम्रवृक्ष से, संश्रितवती = मिल गयी है, सम्प्रति = इस समय, अहम् = मैं, अस्याम् = इसके विषय में, च = और, त्वयि = तुम्हारे विषय में, वीतचिन्तः = चिन्ता से मुक्त हो गया हूँ।।13।।

समासोक्ति तुल्ययोगिता, काव्यलिङ्ग अलङ्कार। वसन्ततिलका छन्द।

विशेष– सङ्कल्पितम् - शकुन्तला अपने जमाने की अनुपम सुन्दरी थी। नव यौवन ने उसके सौन्दर्य को और बढ़ा दिया है। कण्व ने उसके सौन्दर्य को स्नेहिल नेत्रों से देखकर सोचा - 'इसे इसके योग्य व्यक्ति को दूँगा।' आज उन्हें विदित हुआ है कि शकुन्तला ने दुष्यन्त के साथ गान्धर्व विवाह कर लिया है। अब वे निश्चिन्त हो गये हैं, क्योंकि दुष्यन्त योग्य व्यक्तियों में प्रथम है।

शकुन्तला – (सख्यौ प्रति) हला, एषा द्वयोर्युवयोर्हस्ते निक्षेपः।

सख्यौ – अयं जनः कस्य हस्ते समर्पितः।(इति बाष्पं विहरतः।)

काश्यपः – अनसूये, अलं रुदित्वा। ननु भवतीभ्यामेव स्थरीकर्त्तव्या शकुन्तला।(सर्वे परिक्रामन्ति।)

शकुन्तला – तात, एषोटजपर्यन्तचारिणी गर्भमन्थरा मृगवधूर्यदाऽनघप्रसवा भवति, तदा मह्यं कमपि प्रियनिवेदयितृकं विसर्जयिष्यथ। (2013 BC, 14 CQ)

काश्यपः – नेदं विस्मरिष्यामः।

शकुन्तला – (गतिभङ्गं रूपयित्वा) को नु खल्वेष निवसने मे सज्जते।(इति परावर्तते।)

शकुन्तला– (दोनों सखियों से) सखियों! यह (लता) तुम दोनों के हाथ में (मेरी) धरोहर है।

दोनों सखियाँ– यह जन किसके हाथ में समर्पित किया गया है? (हम दोनों को किसके हाथ में सौंप रही हो। (ऐसा कहकर दोनों आँसू बहाती हैं।)

काश्यप – अनसूया, रोओ मत। अरे, आप दोनों को ही शकुन्तला को ढाँढ़स बँधाना चाहिए। (सभी चारों ओर घूमते हैं।)

शकुन्तला– पिता जी, कुटी के पास विचरण करनेवाली, गर्भ के भार के कारण धीमी गतिवाली यह हरिणी जब निर्विघ्न रूप से बच्चा पैदा करेगी, तब इस शुभ समाचार की सूचना देनेवाले किसी व्यक्ति को मेरे पास भेजियेगा।

काश्यप– (हम) यह नहीं भूलेंगे।

शकुन्तला– (गति में बाधा का अभिनय करके) अरे, यह कौन मेरे वस्त्र में लिपट रहा है? (ऐसा कहकर पीछे की ओर मुड़ती है।)

शब्दार्थ– निक्षेपः = धरोहर, ट्रस्ट, समर्पितः = समर्पित किया गया। विहरतः = बहाती है, उटजपर्यन्तचारिणी = कुटी के पास विचरण करनेवाली, गर्भमन्थरा = गर्भ के भार के कारण धीमी गतिवाली, मृगवधूः = हरिणी, अनघप्रसवा = निर्विघ्न बच्चा पैदा की हुई, प्रियनिवेदयितृकम् = शुभ समाचार की सूचना देनेवाले को, गतिभङ्गम् = गति में बाधा का, रूपयित्वा = अभिनय करके, निवसने = वस्त्र में, सज्जते = लिपट रहा है।

विशेष– निक्षेपः – धरोहर को 'निक्षेप' कहा जाता है। जब कोई व्यक्ति अपने स्थान से बाहर जाने लगता है, तो वह अपनी बहुमूल्य वस्तुओं को किसी विश्वस्त प्रिय व्यक्ति के पास सुरक्षा के लिए, तब तक के लिए, रख देता है, जब तक कि वह वापस न आ जाय। धरोहर जिस रूप में रखी जाती है, उसी रूप में वह लौटायी जाती है।

काश्यपः - वत्से,

यस्य त्वया व्रणविरोपणमिङ्गुदीनां

तैलं न्यषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे।
श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति
सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते॥14॥

(2011 HV, 12 EF, 13 BF, 16 TI, 17 NF, NG, NH, 18 BG, 19 DA)

काश्यप - पुत्री,

जिसके कुशों की नोक से बिंधे हुए मुख में तुम्हारे द्वारा घाव को भरनेवाला इङ्गुदी (हिंगोट) का तेल लगाया गया था, वही यह साँवाँ की मुट्ठियों को खिलाकर बड़ा किया गया तथा पुत्र की तरह माना गया हरिण तुम्हारे मार्ग को नहीं छोड़ रहा है।।14।।

अन्वय–यस्य, कुशसूचिविद्धे, मुखे, त्वया, व्रणविरोपणम्, इङ्गुदीनाम्, तैलम्, न्यषिच्यत, सः, अयम्, श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितकः, पुत्रकृतकः, मृगः, ते, पदवीम्, न, जहाति।।14।।

शब्दार्थ– यस्य = जिसके, कुशसूचिविद्धे = कुशों की नोंक से बिंधे हुए, मुखे = मुख में, त्वया = तुम्हारे द्वारा, व्रणविरोपणम् = घाव को भरनेवाला, इङ्गुदीनाम् = इङ्गुदी का, तैलम् = तेल, न्यषिच्यत = लगाया गया था; सः = वही, अयम् = यह, श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितकः = साँवाँ की मुट्ठियों (को खिलाकर) बड़ा किया गया, पुत्रकृतकः = पुत्र की तरह माना गया, मृगः = हरिण, ते = तुम्हारे, पदवीम् = मार्ग को, न = नहीं, जहाति = छोड़ रहा है।

विशेष– व्रणविरोपणम् - लोकभाषा में इङ्गुदी को 'एँगुआ' या हिंगोट कहते हैं। यह महीन पत्तों का काँटेदार मध्यम कद का वृक्ष होता है। इसके फलों को तोड़कर बीज निकाला जाता है। पहले लोग इन्हीं बीजों को पीसकर तेल निकालते थे। इसका तेल घावों के लिए अत्यन्त लाभकारी होता है।

श्यामाक- इसे सामान्य बोलचाल की भाषा में साँवाँ कहते हैं।

स्वभावोक्ति अलङ्कार। वसन्ततिलका छन्द।

शकुन्तला - वत्स, किं सहवासपरित्यागिनीं मामनुसरसि। अचिरप्रसूतया जनन्या बिना वर्धित एव। इदानीमपि मया विरहितं त्वां तातश्चिन्तयिष्यति। निवर्तस्व तावत् (इति रुदती प्रस्थिता।) (2017 NI)

शकुन्तला– पुत्र, मेरे साथ को छोड़कर जानेवाली का पीछा क्यों कर रहे हो? प्रसव करके तत्काल मरी हुई माता के बिना (भी) तुम पाले ही गये हो। अब भी मेरे द्वारा छोड़े गये तुम्हें पिता जी पालेंगे ही। तो लौट जाओ। (ऐसा कहकर रोती हुई प्रस्थान करती है।)

शब्दार्थः – वत्स = बेटा, सहवासपरित्यागिनीम् = साथ को छोड़कर जानेवाला, अचिरप्रसूतया = तत्काल प्रसव की हुई, विरहितम् = रहित, चिन्तयिष्यति = चिन्ता करेंगे, पालेंगे, रुदती = रोती हुई।

विशेष– अचिरप्रसूता – जिस मृग को उद्देश्य करके शकुन्तला यह बात कह रही है, उसकी माँ उसे पैदा करते ही मर गयी थी। शकुन्तला ने उसे मुट्ठी-मुट्ठी साँवाँ आदि खिलाकर पाला था। उसे स्वल्प भी कष्ट नहीं होने पाया था। इसी बात की ओर यहाँ संकेत है।

काश्यपः –

उत्पक्ष्मणोर्नयनयोरुपरुद्धवृत्तिं
बाष्पं कुरु स्थिरतया विरतानुबन्धम्।
अस्मिन्नलक्षितनतोन्नतभूमिभागे
मार्गे पदानि खलु ते विषमीभवन्ति॥15॥

काश्यप– ऊपर उठी हुई बरौनियों से युक्त नेत्रों के व्यापार (देखने की शक्ति) को रोकनेवाले आँसू को धैर्यपूर्वक रोको, क्योंकि नहीं दिखलायी पड़ रहे ऊँचे-नीचे भू-भागवाले इस मार्ग में, तुम्हारे पैर लड़खड़ा रहे हैं।।15।।

अन्वय–उत्पक्ष्मणोः, नयनयोः, उपरुद्धवृत्तिम्, बाष्पम्, स्थिरतया, विरतानुबन्धम्, कुरु, खलु, अलक्षितनतोन्नतभूमिभागे, अस्मिन्, मार्गे, ते, पदानि, विषमीभवन्ति।।15।।

शब्दार्थ – उत्पक्ष्मणोः = ऊपर उठी हुई बरौनियों से युक्त, नयनयोः = नेत्रों के, उपरुद्धवृत्तिम् = व्यापार को अवरुद्ध करनेवाले, वाष्पम् = आँसू को, स्थिरतया = धैर्यपूर्वक, विरतानुबन्धम् = विरत प्रवाहवाला, अवरुद्ध, कुरु = करो, खलु = क्योंकि, अलक्षितनतोन्नतभूमिभागे = नहीं दिखलायी पड़ रहा है ऊँचा-नीचा भू-भाग जिसमें ऐसे, न दिखलायी पड़ रहे ऊँचे - नीचे भू -भागवाले, अस्मिन् = इस, मार्गे = मार्ग में, ते = तुम्हारे, पदानि = पैर, विषमीभवन्ति = लड़खड़ा रहे हैं, ऊँचे=नीचे हो रहे हैं।।15।।

विशेष – उत्पक्ष्मणोः – आँखों की शोभा का प्राण हैं बड़ी-बड़ी ऊपर उठी हुई बरौनियाँ। सर्वाङ्गसुन्दरी शकुन्तला की आँखें ऊपर उठी हुई बड़ी-बड़ी बरौनियों से अलङ्कृत हैं।

अलक्षित0 - ठीक से बिना देखे चलने के कारण पैर लड़खड़ा रहे थे। यही कारण है कि कण्व आँखों को साफ करके ठीक से देखकर चलने की सलाह दे रहे हैं। यात्रा के समय पैरों का लड़खड़ाना शुभ नहीं माना जाता।

काव्यलिङ्ग अलङ्कार, वसन्ततिलका छन्द।

शार्ङ्गरवः – भगवन्, ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्य इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम्। अत्र संदिश्य प्रतिगन्तुमर्हति।

काश्यपः – तेन हीमां क्षीरवृक्षच्छायामाश्रयामः।

(सर्वे परिक्रम्य स्थिताः।)

काश्यपः– (आत्मगतम्) किं नु खलु तत्रभवतो दुष्यन्तस्य युक्तरूपमस्माभिः संदेष्टव्यम्। (इति चिन्तयति।)

शकुन्तला –(जनान्तिकम्) हला, पश्य। नलिनीपत्रान्तरितमपि सहचरमपश्यन्त्यातुरा चक्रवाक्यारटति, दुष्करमहं करोमीति।

शार्ङ्गरव – भगवन् (यात्रा के समय) जलाशय तक प्रिय व्यक्ति के साथ जाना चाहिए- ऐसा सुना जाता है। तो यह सरोवर का तट है। यहाँ (हमें अपना) सन्देश देकर आप लौट सकते हैं।

काश्यप – तो हम सब इस वट वृक्ष की छाया में एकत्रित हो जायँ।

(सभी लोग घूमकर खड़े हो जाते हैं।)

काश्यप – (अपने-आप) आदरणीय दुष्यन्त के योग्य हमें क्या सन्देश भेजना चाहिए। (इस प्रकार सोचने लगते हैं।)

शकुन्तला– (हाथ से आड़ करके दूसरी ओर) सखि, देखो। कमल-लता के पत्ते की आड़ में स्थित भी अपने साथी को न देख सकने से दुःखी चकवी चिल्ला रही है– 'मैं दुष्कर कार्य कर रही हूँ' – ऐसा मेरा अनुमान है।

शब्दार्थ– ओदकान्तम् = जलाशय तक, स्निग्धः = प्रिय व्यक्ति, अनुगन्तव्यः = अनुगमन करना चाहिए, पहुँचाना चाहिए, सरस्तीरम् = सरोवर का तट है, संदिश्य = सन्देश देकर, प्रतिगन्तुम् = लौटने में, अर्हति = योग्य हैं, क्षीरवृक्षच्छायाम् = दुधारू वृक्ष की छाया का, वट वृक्ष की छाया का, आत्मगतम् = अपने-आप, युक्तरूपम् = अनुरूप, अनुकूल, योग्य, नलिनीपत्रान्तरितम् = कमल-लता के पत्ते की आड़ में स्थित, सहचरम् = साथी को, वस्तुतः जीवनसाथी को, आतुरा = दुःखी, आरटति = चिल्ला रही है।

विशेष– ओदकान्तम्– स्मृतियों के अनुसार जब कोई अपना व्यक्ति बाहर जाने लगे तो घर के लोगों को चाहिए कि वे जलाशय अथवा किसी दुधारू वृक्ष तक उसे पहुँचावें। यहाँ संयोग से दोनों ही उपस्थित हैं। आश्रम के व्यक्तियों को लौटने की सलाह दी जा रही है।

दुष्करम्– चकई और चकवा साथ-साथ विहार कर रहे थे। कमल के पत्तों से चकवा थोड़ी देर के लिए छिप गया। चकई विह्वल होकर चिल्लाने लगी। शकुन्तला का अनुमान है कि वह चिल्ला-चिल्लाकर यही कह रही है कि "प्रियतम से कुछ क्षणों के लिए बिछुड़कर जो मैं जीवित हूँ, वही बड़ा कठिन कार्य कर रही हूँ।" इस कथन से शकुन्तला का सङ्केत अपनी ओर भी है कि "मैं भी पति के वियोग में कठिनाई से जी रही हूँ।"

अनसूया - सखि, मैवं मन्त्रयस्व।

एषापि प्रियेण विना गमयति रजनीं विषाददीर्घतराम्।
गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति ॥16॥ (2020 ZP, ZT)

अनसूया—सखि, ऐसा मत कहो।

यह (चक्रवाकी) भी प्रिय के बिना दुःख के कारण विशाल रात्रि को व्यतीत करती है; (क्योंकि) आशा का बन्धन महान् वियोग के कष्ट को भी सहन करवाता है।।16।।

अन्वय—एषा, अपि, प्रियेण, विना, विषाददीर्घतराम्, रजनीम्, गमयति, आशाबन्धः, गुरु, अपि, विरहदुःखम् साहयति।।16।।

शब्दार्थ— एषा = यह, अपि = भी, प्रियेण = प्रिय के, विना = बिना, विषाददीर्घतराम् = दुःख के कारण विशाल (प्रतीत होनेवाली), रजनीम् = रात्रि को, गमयति = व्यतीत करती है, आशाबन्धः = आशा का बन्धन, गुरु = महान्, अपि = भी, विरहदुःखम् = वियोग के कष्ट को, सहयति = सहन करवाता है।।16।।

विशेष—विषाददीर्घतराम् — दुःख की अवस्था में रात्रि व्यतीत ही नहीं होती। सुरसा के मुख की भाँति वह बढ़ती ही जाती है।

आशाबन्धः— आशा बड़ी प्रबल होती है। इसके कारण व्यक्ति महान्-से-महान् कष्ट भी सहन कर लेता है।

अर्थान्तरन्यास अलङ्कार, आर्या छन्द।

काश्यपः— शार्ङ्गरव, इति त्वया मद्वचनात् स राजा शकुन्तलां पुरस्कृत्य वक्तव्यः।

शार्ङ्गरवः— आज्ञापयतु भवान्।

काश्यपः —

अस्मान् साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मन-
स्त्व्य्यस्याः कथमप्यबान्धवकृतां स्नेहप्रवृत्तिं च ताम्।
सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकमियं दारेषु दृश्या त्वया
भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद् वाच्यं वधूबन्धुभिः॥17॥ (2011 HU, 18 BD, 19 DC, 20 ZR)

काश्यप—शार्ङ्गरव, तुम शकुन्तला को आगे करके मेरी ओर से राजा से इस प्रकार कहना।

शार्ङ्गरव—आप आज्ञा दें। (कि क्या कहना है)

काश्यप—संयमरूपी धनवाले हम लोगों को तथा अपने ऊँचे कुल को और तुम्हारे ऊपर इस (शकुन्तला) के, किसी भी रूप में बन्धुओं के द्वारा न कराये गये, उस प्रेम-व्यापार को भी भली-भाँति विचारकर तुम्हारे द्वारा यह (शकुन्तला) स्त्रियों के मध्य समान गौरवपूर्वक देखी जानी चाहिए। इससे अधिक भाग्य के अधीन है, वह वस्तुतः वधू के भाई-बन्धुओं को नहीं कहना चाहिए।

शब्दार्थ—मद्वचनात् = मेरी ओर से, शकुन्तलां पुरस्कृत्य = शकुन्तला को आगे करके।

अन्वय—संयमधनान्, अस्मान्, च, आत्मनः, उच्चैः, कुलम्, त्वयि, अस्याः, कथमपि, अबान्धवकृताम्, ताम्, स्नेहप्रवृत्तिम्, च, साधु, विचिन्त्य, त्वया इयम्, दारेषु, सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकम्, दृश्या; अतः, परम्, भाग्यायत्तम्, तत्, खलु, वधूबन्धुभिः, न, वाच्यम्।।17।।

शब्दार्थ— संयमधनान् = संयमरूपी धनवाले, अस्मान् = हम लोगों को, च = तथा, आत्मनः = अपने, उच्चैः = ऊँचे, कुलम् = कुल को, त्वयि = तुम्हारे ऊपर, अस्याः = इस (शकुन्तला) के, कथमपि = किसी भी रूप में, अबान्धवकृताम् = बन्धुओं के द्वारा न किये गये, ताम् = उस, स्नेहप्रवृत्तिम् = प्रेम-व्यापार को, च = और, साधु = भली-भाँति, विचिन्त्य = विचारकर, त्वया = तुम्हारे द्वारा, इयम् = यह (शकुन्तला), दारेषु = स्त्रियों में, सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकम् = समान गौरव के साथ, एक समान सम्मानपूर्वक, दृश्या = देखी जानी चाहिए, समझी जानी चाहिए, अतः = इससे, परम् = अधिक, भाग्यायत्तम् = भाग्य के अधीन है, तत् = वह, खलु = वस्तुतः, वधूबन्धुभिः = वधू के भाई-बन्धुओं को, न = नहीं, वाच्यम् = कहना चाहिए।

विशेष—संयमधनान्— संयम-इन्द्रिय-निग्रह ही हम लोगों का धन है, अतः पुत्री की विदाई के अवसर पर हम भौतिक सम्पत्ति को देने में असमर्थ हैं।

उच्चैः कुलम्— अपने विश्व-विश्रुत कुल को यादकर ऐसा कार्य करना, जिससे शकुन्तला को किसी भी प्रकार का कष्ट न होने पाये, किसी तरह की अपकीर्ति न होने पाये।

स्नेहप्रवृत्तिम्— आपको यह स्मरणकर शकुन्तला पर अधिक ध्यान देना चाहिए कि मुझे इसने स्वयं, बिना दूसरे की प्रेरणा के ही, प्रेम किया है और मैंने भी इसे अपना प्रेम प्रदान किया है।

भाग्यायत्तम्—इससे आगे तो भाग्य के अधीन है कि वह कहाँ तक सफलता की श्रेणी पर पहुँचती है। उसके विषय में हम नहीं कहेंगे, क्योंकि हम कन्यापक्ष के हैं, अतः हमारा कहना पक्षपातपूर्ण समझा जायगा। तुम इस पर स्वयं विचारकर व्यवहार करना कि कन्या के सम्बन्धी उसकी सुख-शान्ति के लिए कैसा विचार रखते हैं।

अप्रस्तुत प्रशंसा अलङ्कार। शार्दूलविक्रीडित छन्द।

शार्ङ्गरवः — गृहीतः सन्देशः।

काश्यपः — वत्से, त्वमिदानीमनुशासनीयाऽसि। वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्।

शार्ङ्गरवः — न खुल धीमतां कश्चिदविषयो नाम।

शार्ङ्गरव— (आपका) सन्देश ग्रहण कर लिया गया (अर्थात् मैंने आपका सन्देश समझ लिया)।

काश्यप—बेटी, तुम अब शिक्षणीय हो (अर्थात् अब तुम्हें भी कुछ शिक्षा देनी है)। वनवासी होकर भी हम लोग लोक-व्यवहार को जाननेवाले हैं।

शार्ङ्गरव—वस्तुतः बुद्धिशालियों के लिए कुछ भी अज्ञात नहीं होता है।

शब्दार्थ— गृहीतः = ग्रहण कर लिया गया, समझ लिया गया। अनुशासनीया = शिक्षणीय हो, वनौकसः = वनवासी, लौकिकज्ञाः = लोक-व्यवहार को जाननेवाले, धीमताम् = बुद्धिशालियों के लिए, अविषयः = अज्ञात, अपरिचित।

विशेष— लौकिकज्ञाः— लोक-व्यवहार को जाननेवाले। कण्व के कहने का भाव यह है कि यद्यपि हम लोगों का जीवन वन में ही व्यतीत हो रहा है, फिर भी हम लोक-प्रचलित व्यवहारों को जानते हैं, अतः तुम्हारे लिये मेरे उपदेश निरर्थक न होकर सार्थक ही हैं।

काश्यपः — सा त्वमितः पतिकुलं प्राप्य —

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
भर्तुर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः॥18॥

(2011 HR, 12 EJ, 14 CQ, 17 NI, 19 CZ, 20 ZO)

कथं वा गौतमी मन्यते।

काश्यप—तुम यहाँ से पतिगृह पहुँचकर–

गुरुजनों की सेवा करना, पत्नियों के साथ प्रिय सखी का-सा व्यवहार करना, तिरस्कृत होकर भी क्रोधवश पति के विपरीत आचरण मत करना, सेवक-सेविकाओं पर पर्याप्त उदार रहना, भाग्य पर अभिमान मत करना, ऐसा व्यवहार करनेवाली युवतियाँ गृहलक्ष्मी के पद को प्राप्त करती हैं और इसके विपरीत आचरण करनेवाली (युवतियाँ) कुल के लिए दुःख का कारण बनती हैं।।18।।

अथवा गौतमी क्या मानती हैं?

अन्वय—गुरून्, शुश्रूषस्व, सपत्नीजने, प्रियसखीवृत्तिम्, कुरु, विप्रकृता, अपि, (त्वम्), रोषणतया, भर्तुः, प्रतीपम्, मा स्म गमः, परिजने, भूयिष्ठम्, दक्षिणा, भव; भाग्येषु, अनुत्सेकिनी, (भव), एवम्, युवतयः गृहिणीपदम्, यान्ति, वामाः, कुलस्य, आधयः, (भवन्ति)।।18।।

शब्दार्थ– गुरून् = गुरुजनों की, आदरणीय जनों की, शुश्रूषस्व = सेवा करना, सपत्नीजने = सपत्नियों के साथ, सौतों के साथ, प्रियसखीवृत्तिम् = प्रिय सखी का-सा बर्ताव, कुरु = करना, विप्रकृता = तिरस्कृत होकर, अपि = भी, (त्वम् = तुम), रोषणतया = क्रोधवश, भर्तुः = स्वामी के, पति के, प्रतीपम् = विपरीत, मा स्म गमः = मत जाना, आचरण मत करना, परिजने = सेवक-सेविकाओं पर, भूयिष्ठम् = पर्याप्त, दक्षिणा = उदार, भव = रहना, भाग्येषु = भाग्य पर, अनुत्सेकिनी = अभिमानरहित, एवम् = ऐसा व्यवहार करनेवाली, युवतयः = युवतियाँ, गृहिणीपदम् = गृहलक्ष्मी के पद को, यान्ति = प्राप्त करती हैं, वामाः = इसके विपरीत आचरण करनेवाली युवतियाँ, कुलस्य = कुल के लिए, आधयः = रोग।।18।।

गौतमी – एतवान् वधूजनस्योपदेशः। जाते, एतत् खलु सर्वमवधारय।
काश्यपः – वत्से, परिष्वजस्व मां सखीजनं च।
शकुन्तला – तात, इत एव किं प्रियंवदाऽनसूये सख्यौ निवर्तिष्येते।
काश्यपः – वत्से, इमे अपि प्रदेये। न युक्तमनयोस्तत्र गन्तुम्। त्वया सह गौतमी यास्यति।
शकुन्तला – (पितरमाश्लिष्य) कथमिदानीं तातस्याङ्कात् परिभ्रष्टा मलयतटोन्मूलिता चन्दनलतेव देशान्तरे जीवितं धारयिष्यामि। (2019 CZ)

गौतमी – इतना ही नववधुओं के लिए (पर्याप्त) उपदेश है। बेटी, यह सब अवश्य ही स्मरण रखना।

काश्यप – बेटी, मुझसे और अपनी सखियों से गले लग लो।

शकुन्तला – पिता जी, यहीं से क्या प्रियंवदा और अनसूया दोनों सखियाँ लौट जायँगी?

काश्यप – बेटी, ये दोनों भी विवाह करके देनी हैं। (अतः) इनका वहाँ (हस्तिनापुर में) जाना ठीक नहीं है। तुम्हारे साथ गौतमी जायगी।

शकुन्तला – (पिता से लिपटकर) पिता की गोद से बिछुड़ी हुई मैं अब, मलयाचल से उखाड़ी हुई चन्दन-लता की भाँति, दूसरे देश में कैसे जीवन को धारण करूँगी?

शब्दार्थ– प्रदेये = विवाह करके देनी हैं, युक्तम् = ठीक, तत्र = वहाँ हस्तिनापुर में, आश्लिष्य = लिपटकर, अङ्कात् = गोद से, परिभ्रष्टा = बिछुड़ी हुई, मलयतटोन्मूलिता = मलय पर्वत की उपत्यका (पर्वत के निचले भाग) से उखाड़ी हुई, जीवितम् = जीवन को।

विशेष–प्रदेये– इन दोनों को (प्रियंवदा और अनसूया) अभी विवाह करके इन्हें योग्य वर को देना बाकी है। कालिदास ने यहाँ बड़ी चतुरता से कण्व के मुख से अनसूया और प्रियंवदा को शकुन्तला के साथ जाने से रोकवा दिया है, यदि दोनों जातीं तो दुर्वासा के शाप की बात प्रकट हो जाती और उसका कुछ खास प्रभाव न पड़ता।

काश्यपः–वत्से, किमेवं कातराऽसि।

अभिजनवतो भर्तुः श्लाघ्ये स्थिता गृहिणीपदे
विभवगुरुभिः कृत्यैस्तस्य प्रतिक्षणमाकुला।
तनयमचिरात् प्राचीवार्कं प्रसूय च पावनं
मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि।।19।। (2016 DN, 20 ZO)

(शकुन्तला पितुः पादयोः पतति।)

काश्यप–बेटी, क्यों इस तरह दुःखी हो रही हो?

बेटी, तुम अतिकुलीन पति के प्रशंसनीय गृहिणी (महारानी) के पद पर स्थित होकर, उसके ऐश्वर्य के कारण महान् कार्यों से प्रतिक्षण व्यस्त (तुम) शीघ्र ही, पूरब दिशा जिस प्रकार (पावन) सूर्य को (उसी प्रकार) पवित्र पुत्र को पैदा करके, मेरे विरहजन्य शोक को भूल जाओगी।।19।।

(शकुन्तला पिता के चरणों पर गिरती है।)

अन्वय–वत्से, त्वम्, अभिजनवतः, भर्तुः, श्लाघ्ये, गृहिणीपदे, स्थिता, तस्य, विभवगुरुभिः, कृत्यैः, प्रतिक्षणम्, आकुला, (त्वम्), अचिरात्, प्राची, इव अर्कम्, पावनम्, तनयम्, प्रसूय, च, मम, विरहजाम्, शुचम्, न, गणयिष्यसि।।19।।

शब्दार्थ– वत्से = बेटी, त्वम् = तुम, अभिजनवतः = अतिकुलीन, सत्कुलोत्पन्न, भर्तुः = पति के, श्लाघ्ये = प्रशंसनीय, गृहिणीपदे = गृहस्वामिनी (महारानी) के पद पर, स्थिता = स्थित होकर, तस्य = उसके, विभवगुरुभिः = ऐश्वर्य के कारण महान्, कृत्यैः = कार्यों से, प्रतिक्षणम् = प्रतिक्षण, आकुला = व्यस्त, (त्वम् = तुम), अचिरात् = शीघ्र ही, प्राची = पूरब दिशा, अर्कम् = सूर्य की, इव = तरह, पावनम् = पवित्र, तनयम् = पुत्र को, प्रसूय = पैदा करके, मम = मेरे, विरहजाम् = विरहजन्य, शुचम् = शोक को, न = नहीं, गणयिष्यसि = गिनोगी, भूल जाओगी।।19।।

विशेष–अभिजनवतः - 'अभिजन' का अर्थ होता है - कुल। मतुप् प्रत्यय यहाँ प्रशंसा अर्थ में है, अतः इसका अर्थ होता है– प्रशस्त कुलवाले।

प्राचीअर्कम् इव–यहाँ यह उपमा विशेष अभिप्राय को प्रकाशित करती है। इसका भाव यह है कि जैसे पूरब दिशा अत्यन्त तेजस्वी, त्रिभुवनवन्द्य सूर्य को पैदा करती है, उसी प्रकार तुम भी अत्यन्त प्रतापी, यशस्वी और योद्धा अर्थात् वन्दनीय पुत्र को जन्म दोगी।

उपमा, काव्यलिङ्ग, समुच्चय अलङ्कार। हरिणी छन्द।

काश्यपः - यदिच्छामि ते तदस्तु।

शकुन्तला -(सख्यावुपेत्य) हला, द्वे अपि मां सममेव परिष्वजेथाम्।

सख्यौ - (तथा कृत्वा) सखि, यदि नाम स राजा प्रत्यभिज्ञानमन्थरो भवेत्, ततस्तस्मा इदमात्मनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं दर्शय।

शकुन्तला - अनेन सन्देहेन वामाकम्पिताऽस्मि।

सख्यौ - मा भैषीः। अतिस्नेहः पापशङ्की।

शार्ङ्गरवः - युगान्तरमारूढः सविता। त्वरतामत्रभवती।

शकुन्तला - (आश्रमाभिमुखी स्थित्वा) तात, कदा न भूयस्तपोवनं प्रेक्षिष्ये।

काश्यप–मैं तुम्हारे लिये जो चाहता हूँ, वह हो।

शकुन्तला–(दोनों सखियों के पास जाकर) सखियों, तुम दोनों भी एक साथ ही मेरा आलिङ्गन करो।

दोनों सखियाँ–(वैसा ही करके) सखि, सम्भवतः यदि वह राजा (तुम्हें) पहचानने में देर करे तो उसके अपने नाम से अङ्कित यह अँगूठी दिखला देना।

शकुन्तला–तुम लोगों के इस सन्देह से मैं घबड़ा गयी हूँ।

दोनों सखियाँ–डरो मत। अत्यधिक अनुराग अनिष्ट की आशङ्का करनेवाला होता है।

शार्ङ्गरव–सूर्य दूसरे पहर में चढ़ गया है, अतः आप शीघ्रता करें।

शकुन्तला–(आश्रम की ओर मुँह की हुई खड़ी होकर) पिता जी, अब मैं कब फिर तपोवन देखूँगी?

शब्दार्थ– प्रत्यभिज्ञानमन्थरः = पहचानने में शिथिल, पहचानने में देर करे, आत्मनामधेयाङ्कितम् = अपने नाम से अङ्कित, अङ्गुलीयकम् = अँगूठी, आकम्पिता = घबड़ा गयी, भैषीः = डरो, अतिस्नेहः = अत्यधिक अनुराग, पापशङ्की = अनिष्ट की आशङ्का करनेवाला, युगान्तरम् = दूसरे पहर में, आरूढः = चढ़ गया है, प्रेक्षिष्ये = देखूँगी।

विशेष–यदिच्छामि – यहाँ पर कण्व ने 'इच्छामि' कहा। मैं जो कुछ तुम्हारे लिये चाहता हूँ, वह सब पूरा हो। वे शकुन्तला के लिए जो कुछ चाहते हैं, वह आगे श्लोक 20 में स्पष्ट हुआ है।

प्रत्यभिज्ञानमन्थरः–पहचानने में शिथिल। 'प्रत्यभिज्ञान' शब्द काश्मीर शैवदर्शन का पारिभाषिक शब्द है। प्रत्यभिज्ञान उस ज्ञान को कहते हैं, जिसमें स्मृति और अनुभव (अर्थात् प्रत्यक्ष) दोनों ही निहित रहते हैं। इसका अर्थ है कि पहले देखी गयी किसी

वस्तु को फिर देखने पर स्मृति के द्वारा स्मरण करना तथा अनुभव या प्रत्यक्ष द्वारा प्रत्यक्ष देखना। यहाँ अनसूया और प्रियंवदा अप्रत्यक्ष रूप से शकुन्तला को वह उपाय बतलाती हैं, जिससे मुनि दुर्वासा का शाप समाप्त हो जाय।

युगान्तरम्—अर्थात् दूसरा पहर प्रारम्भ हो गया है। तीन घण्टे का एक युग होता है। चौबीस घण्टे में आठ युग होते हैं, चार दिन में तथा चार रात में। इसके अतिरिक्त दिन को चार भागों में विभक्त करने का एक और तरीका था। पूरे आकाश को सोलह हाथों में बाँट देते थे। चार हाथ के नापवाले आकाश को एक युग कहते थे।

काश्यपः – श्रूयताम् –

भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी
दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य।
भर्त्रा तदर्पितकुटुम्बभरेण सार्धं
शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्।।20।।

(2010 CD, 11 HS, 16 TD, 17 NC, NF, NG, NH, 18 BC, BG, 19 DA, DD, DF, 20 ZS)

काश्यप—सुनो–

बहुत दिनों तक चारों समुद्रों तक फैली हुई पृथिवी की सपत्नी (सौत) होकर तथा महारथी पुत्र दौष्यन्ति (भरत) को राज्य-सिंहासन पर बिठाकर और उसके ऊपर कुटुम्ब भार को सौंप देनेवाले पति के साथ शान्त इस आश्रम में फिर से (आकर) निवास करोगी।।20।।

अन्वय—चिराय, चतुरन्तमहीसपत्नी, भूत्वा; अप्रतिरथम्, तनयम्, दौष्यन्तिम्, निवेश्य, तदर्पितकुटुम्बभरेण, भर्त्रा, सार्धम्, शान्ते, अस्मिन्, आश्रमे, पुनः, पदम्, करिष्यसि।।20।।

शब्दार्थ— चिराय = बहुत दिनों तक, चतुरन्तमहीसपत्नी = चारों समुद्रों तक फैली हुई पृथिवी की सपत्नी (सौत), भूत्वा = होकर, अप्रतिरथम् = बेजोड़ महारथी, तनयम् = पुत्र, दौष्यन्तिम् = दौष्यन्ति को, भरत को, निवेश्य = राज्य-सिंहासन पर बिठाकर, तदर्पितकुटुम्बभरेण = उसके ऊपर कुटुम्ब के भार को सौंप देनेवाले, भर्त्रा = पति के, सार्धम् = साथ, शान्ते = शान्त, अस्मिन् = इस, आश्रमे = आश्रम में, पुनः = फिर से, पदम् = आश्रय, निवास, करिष्यसि = करोगी।।20।।

विशेष—महीसपत्नी—पृथिवी की सौत। राजा पृथिवी का पति कहा जाता है। दुष्यन्त पृथिवी-पति था। शकुन्तला उसकी पत्नी थी। इस प्रकार राजा पृथिवी और शकुन्तला दोनों का पति था, अतः शकुन्तला पृथिवी की सौत हुई। इससे राजा के समस्त भूमण्डल के शासक होने की बात सिद्ध होती है।

दौष्यन्तिम्—चूँकि दुष्यन्त का पुत्र अभी पैदा नहीं हुआ है, अतः उसका नामकरण न होने से उसे दौष्यन्ति कहा गया है। यहाँ भरत से अभिप्राय है।

तदर्पितकुटुम्बभरेण—प्राचीन परिपाटी के अनुसार जब पुत्र योग्य हो जाता है और राजा का चौथापन आ जाता था, तब वह पुत्र को सिंहासन पर बैठाकर स्वयं पत्नी के साथ वन में तपस्या करने चला जाता था। यही मनु आदि धर्मशास्त्रियों का विधान है।

माला दीपक अलङ्कार, वसन्ततिलका छन्द।

गौतमी – जाते, परिहीयते गमनवेला। निवर्तय पितरम्। अथवा चिरेणापि पुनः पुनरेषैवं मन्त्रयिष्यते। निवर्ततां भवान्।

काश्यपः – वत्से, उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम्।

शकुन्तला – (भूयः पितरमाश्लिष्य) तपश्चरणपीडितं तातशरीरम्। तन्माऽतिमात्रं मम कृत उत्कण्ठस्व।

गौतमी – बेटी, प्रस्थान का काल व्यतीत होता जा रहा है। (अतः) पिता जी को लौटाओ। अथवा बहुत देर तक भी बार-बार यह इसी प्रकार कहती रहेगी। आप लौटिये।

काश्यप – बेटी, तपस्या का अनुष्ठान रुक रहा है।

शकुन्तला – (पुनः पिता से लिपटकर) आपका शरीर तपस्या के आचरण से अतिकृश है, अतः (आप) मेरे लिये अत्यधिक दुःखी मत होइये।

शब्दार्थ– परिहीयते = व्यतीत होता जा रहा है, गमनवेला = प्रस्थान का काल, उपरुध्यते = रुक रहा है, तपश्चरणपीडितम् = तपस्या के आचरण से अतिकृश।

काश्यपः – (सनिःश्वासम्)

शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम्।
उटजद्वारविरूढं नीवारबलिं विलोकयतः ॥21॥ (2012 EE, 14 CN, 19 DB)

काश्यप–(लम्बी साँस छोड़ते हुए)

बेटी, तुम्हारे द्वारा पहले बनाये गये और (अब) कुटीर के द्वार पर उगे हुए तिन्नी धान के उपहार को देखते हुए मेरा शोक कैसे शान्त होगा?।।21।।

अन्वय–वत्से, त्वया, रचितपूर्वम्, उटजद्वारविरूढम्, नीवारबलिम्, विलोकयतः, मम, शोकः, कथम्, नु, शमम्, एष्यति।।21।।

शब्दार्थ– वत्से = बेटी, त्वया = तुम्हारे द्वारा, रचितपूर्वम् = पहले बनाये गये, उटजद्वारविरूढम् = कुटीर के द्वार पर उगे हुए, नीवारबलिम् = तिन्नी धान के उपहार को, विलोकयतः = देखते हुए, मम = मेरा, शोकः = शोक, कथम् = कैसे, नु = यह वितर्क का द्योतक अव्यय है, शमम् = शान्ति को, एष्यति = प्राप्त होगा?।।21।।

विशेष–रचितपूर्वम्....नीवारबलिम् – वर्षा प्रारम्भ होने पर मुनि-कन्याएँ तिन्नी धान को आस-पास के गड्ढों में बोती थीं। बोने के पूर्व वे अपने गृह-द्वार के दोनों तरफ गोबर का कुठिला (पात्र) बनाकर उसमें तिन्नी-धान भरती थीं। थोड़े समय के बाद यह धान उगकर लहलहा जाता था।

काव्यलिंङ्ग अलङ्कार तथा आर्या छन्द।

गच्छ। शिवास्ते पन्थानः सन्तु।

(निष्क्रान्ता शकुन्तला सहयायिनश्च।)

सख्यौ – (शकुन्तलां विलोक्य) हा धिक्, हा धिक्। अन्तर्हिता शकुन्तला वनराज्या।

काश्यपः – (सनिःश्वासम्) अनसूये, गतवती वां सहचारिणी निगृह्य शोकमनुगच्छतं मां प्रस्थितम्।

उभे – तात, शकुन्तलाविरहितं शून्यमिव तपोवनं कथं प्रविशावः। (2019 DE)

जाओ! तुम्हारा मार्ग मङ्गलमय हो।

(शकुन्तला और उसके साथ जानेवाले व्यक्ति निकल गये।)

दोनों सखियाँ– (शकुन्तला की ओर देखकर) हाय कष्ट है, हाय कष्ट है। शकुन्तला वन-पंक्ति से ओझल हो गयी।

काश्यप– (लम्बी साँस छोड़ते हुए) अनसूया, तुम लोगों की सखी चली गयी। शोक को रोककर चलनेवाले मेरे पीछे-पीछे आओ।

दोनों– पिता जी, शकुन्तला से विहीन, अतः सूने-से प्रतीत होनेवाले इस तपोवन में कैसे प्रवेश करें।

शब्दार्थ– शिवाः = कल्याणकारक, मङ्गलमय, पन्थानः = मार्ग, सहयायिनः = साथ जानेवाले, सहयात्री, अन्तर्हिता = ओझल हो गयी, वनराज्या = वन-पंक्ति से, सहचारिणी = सखी, साथी, निगृह्य = रोककर, शकुन्तलाविरहितम् = शकुन्तला से विहीन, शून्यम् = सूना।

विशेष– शून्यमिव - वस्तुतः प्रिय व्यक्ति के बिछुड़ने पर घर, गाँव, नगर तथा प्रदेश सब-कुछ सूना-सूना प्रतीत होता है। यह प्रत्येक व्यक्ति का सार्वकालिक अनुभव है।

काश्यपः – स्नेहप्रवृत्तिरेवंदर्शिनी। (सविमर्शं परिक्रम्य) हन्त भोः, शकुन्तलां पतिकुलं विसृज्य लब्धमिदानीं स्वास्थ्यम्। कुतः–

अर्थो हि कन्या परकीय एव
तामद्य संप्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं
प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥22॥

(हिन्दी अनुवाद– 2011 HT, 12 EK, 14 CO, 16 TC, TG, DR, 17 ND, 18 BE, 19 DE, DF)

काश्यप–स्नेह की प्रवृत्ति ऐसा ही देखती है अर्थात् प्रेम की अधिकता के कारण व्यक्ति ऐसा ही अनुभव करता है। (गम्भीरतापूर्वक सोचकर, चारों ओर घूमकर) अहा, शकुन्तला को पतिगृह (ससुराल) भेजकर अब मानसिक शान्ति प्राप्त हुई। क्योंकि–

कन्या वस्तुतः पराया ही धन है। आज उसे पति के घर भेजकर मेरा यह अन्तःकरण, धरोहर को वापस करनेवाले व्यक्ति की तरह, अत्यन्त प्रसन्न हो गया है।।22।।

अन्वय–कन्या, हि, परकीयः, एव, अर्थः, (अस्ति), अद्य, ताम्, परिग्रहीतुः, (पार्श्वे), संप्रेष्य, मम, अयम्, अन्तरात्मा, प्रत्यर्पितन्यासः, इव, प्रकामम्, विशदः, जातः।।22।।

शब्दार्थ– स्नेहप्रवृत्तिः = स्नेह का सञ्चार, सविमर्शम् = गम्भीरतापूर्वक सोचकर, स्वास्थ्यम् = स्वस्थता, मानसिक शान्ति, कन्या = अविवाहित लड़की, हि = वस्तुतः, परकीयः = पराया, एव = ही, अर्थः = धन, अद्य = आज, ताम् = उसे, परिग्रहीतुः = पति के, (पार्श्वे = पास), संप्रेष्य = भेजकर, मम = मेरा, अयम् = यह, अन्तरात्मा = अन्तःकरण, प्रत्यर्पितन्यासः = धरोहर को वापस करनेवाले व्यक्ति की, इव = तरह, प्रकामम् = अत्यन्त, विशदः = प्रसन्न, जातः = हो गया है।।22।।

विशेष–स्नेहप्रवृत्तिः–यदि आपका अपना घनिष्ठ व्यक्ति बहुत दिन तक साथ रहकर बिछुड़ा हो तो सारा वातावरण आपको सूना-सा लगेगा, किन्तु उसी समय यदि उस स्थान में कोई बाहरी व्यक्ति आ जाय तो उस (बाहरी व्यक्ति) को वह स्थान सूना नहीं लगेगा। इससे व्यक्त है कि स्नेह-व्यवहार ही इस प्रकार देखता है।

प्रत्यर्पितन्यासः पुत्री पिता के पास वस्तुतः धरोहर के रूप में ही रहती है। उसे योग्य व्यक्ति को देने पर ही पिता को शान्ति मिलती है।

उत्प्रेक्षा अलङ्कार तथा इन्द्रवज्रा छन्द है।

(इति निष्क्रान्ताः सर्वे।)
॥इति चतुर्थोऽङ्कः॥

(सब चले जाते हैं।)
।। चतुर्थ अङ्क समाप्त ।।

सूक्तिपरक वाक्यों की ससन्दर्भ हिन्दी व्याख्या

1. भाग्यायत्तमतः परं न खलु तद् वाच्यं वधू बन्धुभिः। (2011 HQ, 17 NG, NI, 18 BD, BG, 19 CZ, 20 ZQ, ZU)

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – महर्षि काश्यप दुष्यन्त के पास सन्देश भिजवाते हैं कि वे सामान्य रूप से शकुन्तला को अपनी रानियों में स्थान दें। इससे आगे वह कितना सम्मानपूर्वक पद प्राप्त करती है वह तो कन्या के भाग्य के अधीन है इस विषय में वधू के बन्धुओं को नहीं कहना चाहिए।

2. न खलु धीमतां कश्चिद्विषयो नाम। (2013 BF, BE, 14 CO, 16 DN, TG, 17 ND, NG, 20 ZT)

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – काश्यप ऋषि अपनी पुत्री शकुन्तला को पतिगृह गमन के समय उपदेश देते हुए कहते हैं– पुत्री! अब तुम्हें कुछ उपदेश देना है। यद्यपि हम लोग वन में रहते हैं, फिर भी हम लौकिक-व्यवहार को भी जानते हैं तब शार्ङ्गरव नामक शिष्य कहता है कि बुद्धिमानों के लिए तो सब कुछ ज्ञात होता है। आप तो बुद्धिमान् हैं और वह कौन-सी बातें हैं, जिसे भला आप न जानते हों।

3. यान्त्येवं गृहिणी पदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः। (2012 EE, EH, 14 CM, CN, CR, 16 TD, 17 ND, NF, 18 BG, 19 DA, DC, DE, DF, 20 ZO, ZQ, ZR, ZS)

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – महर्षि काश्यप शकुन्तला को उपदेश देते हुए कहते हैं कि पतिगृह में जाकर गुरुजनों की सेवा करना, अपनी सपत्नियों के साथ सखियों जैसा व्यवहार करना आदि। जो युवतियाँ ऐसा आचरण करती हैं, वे तो गृहस्वामिनी का पद प्राप्त कर लेती हैं परन्तु जो इसके विपरीत व्यवहार करती हैं, वे कुल को नष्ट करनेवाली होती हैं।

4. वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम्। (2019 DA, DB)

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – पतिगृह के लिए आश्रम से शकुन्तला विदा हो रही है। काश्यप ऋषि उसे गृहस्थ का उपदेश देना चाहते हैं। यह शंका हो सकती है कि वनवासी तपस्वी संसार की बातों को क्या जानें? इसीलिए काश्यप कहते हैं कि हम लोग वनवासी तपस्वी हैं फिर भी हम लोक-व्यवहार के जानकार हैं। उनका शिष्य शार्ङ्गरव उनके कथन का समर्थन करता है कि ऐसा कोई विषय नहीं जिसे बुद्धिमान् न जानते हों।

5. अपसृत पाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः। (2017 NF, 18 BE, 19 DA, DB, 20 ZT)

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – शकुन्तला के पतिगृह गमन के समय आश्रम में पशु-पक्षी और तरु-लता भी वियोगजन्य दुःख से पीड़ित हैं। हिरणी जो कुशा चर रही थी, अब कुशा का ग्रास उससे निगला नहीं जाता, बाहर निकला आ रहा है। मोर जो नृत्य कर रहे थे, उन्होंने नाचना छोड़ दिया है। लताओं से पीले पत्ते टूट कर गिर रहे हैं, मानो वे आँसू बहा रहे हैं।

6. अर्थो हि कन्या परकीय एव। (2010 BY, 11 HV, 16 TF, 17 NG, NH, 18 BD, 19CZ, DA, DB, DC, DD, 20 ZP, ZQ, ZS)

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – महर्षि कण्व मन में विचार करते हैं कि शकुन्तला को उसके पति के घर भेजकर मैं आज स्वस्थ अनुभव

कर रहा हूँ। क्योंकि कन्या धन तो दूसरे का ही होता है। आज उसे उसके पति के घर भेजकर मैं वैसे ही प्रसन्न हृदय हूँ, जैसे बहुत दिनों से अपने पास रखी हुई धरोहर को उसके स्वामी को सौंपकर मनुष्य प्रसन्न होता है।

7. गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति।

(2011 HR, HT, 12 EF, 13 BD, 16 TI, 17 ND, NH, NI, 18 BG, 20 ZO, ZR, ZT, ZU)

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – पति घर जाते समय चकवी-चकवा को अलग होकर व्याकुल होता देखकर दुःखी शकुन्तला से अनसूया कहती है कि हे सखि! ऐसा मत सोचो, अपने सहचर को कमलिनी के पत्ते तिरोहित देख चकवी चीखती है यह एक सीमा तक सच है, वह विरह पीड़ा में फँस जाती है, वह ठीक है लेकिन यह बिल्कुल सत्य है कि वह अपने प्रियतम के बिना दुःख से लम्बी रातों को केवल इस आशा में बिता देती है कि सुबह होगी, पुनर्मिलन होगा, यही आशा विरह दुःख को सहन कराती है।

8. अतिस्नेहः पापशङ्की। (2018 BD, BE, 19 DC, DD, DE, DF, 20 ZO, ZP, ZQ, ZT)

सन्दर्भ–प्रस्तुत सूक्ति 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क से अवतरित है। इसके रचयिता महाकवि कालिदास हैं। इस सूक्ति में पतिगृह-गमन से पूर्व शकुन्तला अपनी सहेलियों से विदा ले रही है। उसे दुर्वासा के शाप का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं है। दोनों सखियाँ जब शकुन्तला से कहती हैं कि यदि वह राजा तुम्हें पहचानने में देर करे तो उसे अँगूठी दिखा देना। यह सुनकर शकुन्तला अनिष्ट की आशङ्का से घबरा जाती है परन्तु दोनों सखियाँ उसे समझाती हुई कहती हैं–

हिन्दी व्याख्या–हे प्रिय सखि! शकुन्तला, डरो मत। स्नेह तो किसी अनिष्ट की आशङ्का व्यर्थ में ही करा देता है। हम जिससे स्नेह करते हैं, उसके विषय में हम हमेशा कुशलता भरी बातें ही सुनना चाहते हैं। समाचार न मिलने पर हम क्या-क्या सोच-विचार करते हैं, शङ्काएँ करते हैं, ये व्यर्थ की शङ्काएँ अतिस्नेह के कारण पैदा होती हैं। अतः तुम डरो मत कुछ नहीं होगा।

9. शान्तानुकूलपवनश्च शिवश्च पन्थाः। (2017 NC, NI, 18 BG, 19 DD, DE, DF, 20 ZT)

सन्दर्भ–यह सूक्ति कविकुलगुरु कालिदासविरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क से उद्धृत है।

हिन्दी व्याख्या–शकुन्तला के पतिगृह-गमन-काल में आशीर्वादात्मक ध्वनि सुनायी देती है कि ''जो बीच-बीच में कमलों से हरे-भरे तालाबों से रमणीय स्थानोंवाले, जिसमें छायादार वृक्षों द्वारा सूर्य की किरणों के ताप को नियन्त्रित किया जाय तथा जिसमें कमलों के पराग की कोमल धूलिवाली शान्त एवं अनुकूल वायु हो, वह मार्ग उसके लिए कल्याणकारी हो।''

10. ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तथः। (2014 CP, 17 NG, NF, NH, 20 ZR)

सन्दर्भ–प्रस्तुत सूक्ति महाकवि कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के चतुर्थ अङ्क से उद्धृत है।

हिन्दी व्याख्या–सूक्ति का अर्थ है–''जलाशय तक प्रिय व्यक्ति के साथ जाना चाहिए।'' शार्ङ्गरव महर्षि काश्यप (कण्व) से कहता है कि भगवन यात्रा के समय जलाशय तक प्रिय व्यक्ति के साथ जाना चाहिए–ऐसा सुना जाता है। स्मृतियों के अनुसार जब कोई अपना व्यक्ति बाहर जाने लगे तो घर के लोगों को चाहिए कि वे जलाशय अथवा किसी दुधारू वृक्ष तक उसे पहुँचायें। यहाँ संयोग से दोनों उपस्थित हैं। आश्रम के व्यक्तियों को लौटने की सलाह दी जा रही है।

11. सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते। (2017 NC, 18 BC, 19 CZ, 20 ZP, ZS)

सन्दर्भ–प्रस्तुत सूक्ति महाकवि कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के चतुर्थ अङ्क से उद्धृत है। यहाँ पर शकुन्तला एवं मृग के पुत्रवत् प्रेम का चित्रण किया गया है।

हिन्दी व्याख्या—शकुन्तला पूछती है कि यह मेरे वस्त्रों को कौन खींच रहा है? तब महर्षि कण्व कहते हैं कि यह मृग तुम्हारे वस्त्र को खींच रहा है, जिसे कि तुमने श्यामाक (साँवा) की मुट्ठियों से खिलाकर बड़ा किया था, जिसे तुम पुत्रतुल्य मानती हो और जिसके मुख के घावों पर इंगुदी का तेल लगाया करती थी अर्थात् मातृस्नेह के कारण यह मृग तुम्हें यहाँ से आगे बढ़ने से रोकना चाहता है। यहाँ पर एक ओर शकुन्तला का आश्रम के जीवों के प्रति प्रेम व्यक्त हुआ है तो दूसरी ओर वन्य जीवों का शकुन्तला के प्रति स्नेह प्रदर्शित किया गया है।

12. मार्गे पदानि खलु ते विषमी भवन्ति। (2017 NC, 18 BC, BE, 20 ZU)

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति महाकवि कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के चतुर्थ अङ्क से उद्धृत है। यहाँ पर शकुन्तला के विदाई के समय होने वाले कष्ट की मनःस्थिति का चित्रण किया गया है।

हिन्दी व्याख्या—शकुन्तला से काश्यप कहते हैं कि तुम्हारे नेत्रों की बरौनियाँ ऊपर उठी हुई हैं। जब उनमें अँसू आ जाते हैं तो उनकी दर्शन शक्ति रुक जाती है। अतः धैर्य धारण कर इन आँसुओं को रोको। तात्पर्य यह है कि अश्रुपतन से अमंगल न हो, इसलिए उनको रोकने के लिए तुमने अपने नेत्र लोमों को ऊपर उठा रखा है। परन्तु फिर भी लगातार रोने के कारण जो आँसू आ जाते हैं, उनसे तुम्हारे मार्ग देखने की शक्ति रुद्ध हो जाती है। अतः धैर्य धारण कर इन लगातार बहने वाले आँसुओं को रोक लो। केवल अमंगल वारणार्थ नेत्र लोमों को ऊपर उठा लेना पर्याप्त नहीं है। रोना बन्द किये बिना अश्रुप्रवाह बन्द न होगा। सारांश यह है कि धीरज धारण कर इन आँसुओं को पोछ डालो, रोना बन्द करो। क्योंकि इन आँसुओं के कारण तेरी उठी हुई बरौनियों वाली आँखें ठीक से मार्ग नहीं देख पा रही हैं। अतएव इस ऊबड़-खाबड़ भूमि भाग वाले मार्ग पर तुम्हारे पैर लड़खड़ा रहे हैं एवं उल्टे-सीधे पड़ रहे हैं।

13. अद्य प्रभृति दूरपरिवर्तिनी ते खलु भविष्यामि। (2017 ND, 19 DA)

सन्दर्भ—प्रस्तुत सूक्ति महाकवि कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक के चतुर्थ अङ्क से उद्धृत है। यहाँ पतिगृह गमनार्थ लता के आलिंगन का वर्णन है।

हिन्दी व्याख्या—शकुन्तला वनज्योत्स्ना के पास जाकर तथा लता का आलिंगन करती हुई कहती है कि हे वनज्योत्स्ना! आम्र वृक्ष से लिपटी हुई भी तुम इधर की ओर आयी हुई अपनी शाखा रूपी भुजाओं से गले मिलो। आज से मैं तुमसे दूर हो जाऊँगी। मैं पतिगृह के लिए विदा हो रही हूँ। मेरा पुनरागमन कब होगा, इसे मैं नहीं जानती हूँ।

➡ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. सख्यौ किं नाट्यन्त्यौ प्रविशतः?
उत्तर : सख्यौ कुसुमावचयं नाट्यन्त्यौ प्रविशतः।

प्रश्न 2. शकुन्तला केन विधिना निर्वृत्तकल्याणा संवृत्ता?
उत्तर : शकुन्तला गान्धर्वेण विधिना निर्वृत्तकल्याणा संवृत्ता।

प्रश्न 3. कीदृशी आकृतिः गुणविरोधिनो न भवति?
उत्तर : विशेषाकृतिः गुणविरोधिनो न भवति।

प्रश्न 4. कन्या कस्मै दातव्या?
उत्तर : गुणवते कन्या दातव्या।

प्रश्न 5. पितरः कदा कृतार्थाः भवन्ति?
उत्तर : पुत्र्यैः गुणवान् वरं दत्वा पितरः कृतार्थाः भवन्ति।

प्रश्न 6. शकुन्तला हृदयेन कुत्र स्थिता?
उत्तर : शकुन्तला हृदयेन राजा दुष्यन्तध्याने स्थिता।

प्रश्न 7. महर्षे दुर्वाससः आगमनकाले शकुन्तला कुत्र सन्निहितासीत्?
उत्तर : महर्षे दुर्वाससः आगमनकाले शकुन्तला उटजे सन्निहितासीत्।

प्रश्न 8. उटजस्थिता शकुन्तला केन शप्ता?
उत्तर : उटजस्थिता शकुन्तला दुर्वाससा शप्ता।

प्रश्न 9. नेपथ्ये 'अयमहं भो' इति को ब्रूते?
उत्तर : नेपथ्ये 'अयमहं भो' इति दुर्वासा ब्रूते।

प्रश्न 10. अद्य हृदयेन असन्निहता का अस्ति?
उत्तर : अद्य हृदयेन असन्निहता शकुन्तलाऽस्ति।

प्रश्न 11. शकुन्तला का आसीत्? (2016 TF)
उत्तर : शकुन्तला अतिथिपरिभाविनि आसीत्।

प्रश्न 12. आः अतिथिपरिभाविनि इति केन उक्तम्?
उत्तर : आः अतिथिपरिभाविनि इति दुर्वासा मुनिना उक्तम्।

प्रश्न 13. दुर्वासा प्रकृत्या कीदृशो महर्षिरासीत्? (2017 NI)
उत्तर : दुर्वासा प्रकृत्या सुलभकोपो महर्षिरासीत्।

प्रश्न 14. कस्मात् कारणात् दुर्वाससा शकुन्तला अभिशप्ता?
उत्तर : शकुन्तला दुर्वासायाः अतिथिसत्कारम् नाकरोत् अतः सः तां शप्तवान्।

प्रश्न 15. प्रकृतिवक्रः कः महर्षिः?
उत्तर : महर्षिः दुर्वासा प्रकृतिवक्रः।

प्रश्न 16. प्रियंवदया कः सानुक्रोशः कृतः?
उत्तर : प्रियंवदया दुर्वासा सानुक्रोशः कृतः।

प्रश्न 17. प्रियंवदयाः प्रार्थितः दुर्वासा शाप-निवारणाय कमुपायम् उक्तवान्?
उत्तर : दुर्वासा उक्तवान् यत् अभिज्ञान आभरण-दर्शनेन शापो निवर्तिष्यते।

प्रश्न 18. कस्य वचनम् अन्यथाभवितुं नार्हति?

उत्तर : दुर्वाससः वचनम् अन्यथाभवितुं नार्हति।

प्रश्न 19. शापः कथं निवर्तिष्यते?

उत्तर : शापोऽभिज्ञानभरणदर्शनेन निवर्तिष्यते।

प्रश्न 20 दुष्यन्तनामाङ्कितं किमाभरणम् शकुन्तला पार्श्वे आसीत्?

उत्तर : दुष्यन्तनामाङ्कितं अङ्गुलीयकं शकुन्तला पार्श्वे आसीत्।

प्रश्न 21. राजर्षिणा कीदृशम् अङ्गुलीयकं शकुन्तलायाः पिनद्धम्।

उत्तर : राजर्षिणा स्वनामधेयाङ्कितम् अङ्गुलीयकं शकुन्तलायाः पिनद्धम्।

प्रश्न 22. काश्यपेन शिष्यः किमर्थम् आदिष्टोऽस्ति?

उत्तर : काश्यपेन शिष्यः वेलोपलक्षणार्थम् आदिष्टोऽस्ति।

प्रश्न 23. शिष्यः गुरवे कां निवेदयति?

उत्तर : शिष्यः गुरवे उपस्थितां होमवेलां निवेदयति।

प्रश्न 24. राज्ञा दुष्यन्तेन शकुन्तलायां कीदृशम् आचरितम्?

उत्तर : राज्ञा दुष्यन्तेन शकुन्तलायां अनार्यम् आचरितम्।

प्रश्न 25. अनसूया कीदृशीं शकुन्तलां तातकाश्यपस्य निवेदयितुं न पारयति?

उत्तर : अनसूया दुष्यन्तपरिणीताम् आपन्नसत्त्वां शकुन्तलां तातकाश्यपस्य निवेदयितुं न पारयति।

प्रश्न 26. सुशिष्यदत्ता विद्येव का?

उत्तर : सुशिष्यदत्ता विद्येव शकुन्तला।

प्रश्न 27. का अशोचनीया संवृत्ता?

उत्तर : शकुन्तला अशोचनीया संवृत्ता।

प्रश्न 28. शकुन्तला विषये आकाशवाणी काश्यपं किमाह?

उत्तर : आकाशवाण्या शकुन्तला विषये काश्यपः उक्तः यत् ब्रह्मन्! स्वपुत्रीं शकुन्तलां दुष्यन्तस्य तेजोधारिणीं जानीहि।

प्रश्न 29. काश्यपेन किम् संकल्पितम्?

उत्तर : काश्यपेन संकल्पितम् यत् शकुन्तलां आत्म-सदृशं भर्तारं प्राप्तं कुर्यात्।

प्रश्न 30. भुवः भूतये शकुन्तला किं दधानाऽऽस्ते?

उत्तर : भुवः भूतये शकुन्तला दुष्यन्तेन आहितं तेजः दधानाऽऽस्ते।

प्रश्न 31. अग्निगर्भा शमीव का?

उत्तर : अग्निगर्भा शमीव शकुन्तला।

प्रश्न 32. शकुन्तलायाः आभरणोचितं रूपम् आश्रमसुलभैः प्रसाधनैः किं क्रियते?

उत्तर : शकुन्तलायाः आभरणोचितं रूपम् आश्रमसुलभैः प्रसाधनैः विप्रकार्यते।

प्रश्न 33. उपायनहस्तौ कौ प्रविशतः?

उत्तर : उपायनहस्तौ ऋषिकुमारौ प्रविशतः।

प्रश्न 34. किं विलोक्य सर्वे विस्मिताः?

उत्तर : अलङ्करणानि विलोक्य सर्वे विस्मिताः।

प्रश्न 35. अलङ्करणानि कुत्र प्राप्तानि?

उत्तर : अलङ्करणानि तात काश्यपप्रभावात् प्राप्तानि।

प्रश्न 36. पतिगृहगमनकाले शकुन्तलायै केन-केन के-के उपहाराः प्रदत्ताः?
उत्तर : पतिगृहगमनकाले शकुन्तलायै केनचित् वृक्षेण चन्द्रधवलं क्षौमं, केनचित् चरणरञ्जनार्थं लाक्षारसं दत्तं, वनदेवताभिश्च आभूषणानि दत्तानि।

प्रश्न 37. शकुन्तलायाः पतिगृहगमनं विचिन्त्य काश्यपस्य कीदृशी अवस्था अभवत्?
उत्तर : शकुन्तलायाः पतिगृहगमनं विचिन्त्य काश्यपस्य हृदयं उत्कण्ठितम् जातम्।

प्रश्न 38. का व्रीडां रूपयति?
उत्तर : शकुन्तला व्रीडां रूपयति।

प्रश्न 39. ऋषिकुमारकौ वनस्पतिसेवां कस्मै निवेदयतः?
उत्तर : ऋषिकुमारकौ वनस्पतिसेवां अभिषेकोत्तीर्णाय काश्यपाय निवेदयतः।

प्रश्न 40. शकुन्तलावियोगम् उत्प्रेक्ष्य काश्यपः किम्भूतो भवति?
उत्तर : शकुन्तलावियोगम् उत्प्रेक्ष्य काश्यपः स्तम्भिवाष्पवृत्तिकलुषो भवति।

प्रश्न 41. काश्यपः केन छन्दसा आशास्ते?
उत्तर : काश्यपः ऋक्छन्दसा आशास्ते।

प्रश्न 42. शकुन्तलां के पावयन्तु?
उत्तर : शकुन्तलां वैताना वह्नयः पावयन्तु।

प्रश्न 43. किम्भूताः वैतानाः वह्नयः शकुन्तलां पावयन्तु?
उत्तर : वेदीं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः, समिद्वन्तः प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः, हव्यगन्धैः दुरितम् अपघ्नन्तः वैतानाः वह्नयः शकुन्तलां पावयन्तु।

प्रश्न 44. केषु अपीतेषु शकुन्तला जलं पातुं न व्यवस्यति?
उत्तर : वनवृक्षेषु अपीतेषु शकुन्तला जलं पातुं न व्यवस्यति।

प्रश्न 45. वृक्षेषु अपीतेषु शकुन्तला किं कर्तुं न व्यवस्यति?
उत्तर : वृक्षेषु अपीतेषु शकुन्तला जलं पातुं न व्यवस्यति।

प्रश्न 46. वृक्षाणाम् आद्ये कुसुमप्रसूतिसमये शकुन्तलायाः किं भवति?
उत्तर : वृक्षाणाम् आद्ये कुसुमप्रसूतिसमये शकुन्तलायाः उत्सवः भवति।

प्रश्न 47. शकुन्तला कुत्र याति?
उत्तर : शकुन्तला पतिगृहं याति।

प्रश्न 48. शकुन्तला कैः अनुज्ञातम्?
उत्तर : शकुन्तला सन्निहितैः तपोवनतरुभिः अनुज्ञातम्।

प्रश्न 49. वनवासबन्धुभिः कैः शकुन्तला अनुमतगमना?
उत्तर : वनवासबन्धुभिः तरुभिः शकुन्तला अनुमतगमना।

प्रश्न 50. वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम् इति कस्योक्तिः? (2016 TD)
उत्तर : वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम् इति काश्यपस्योक्तिः।

प्रश्न 51. वनौकसोऽपि मुनयः कीदृशाः भवन्ति? (2016 TF)
उत्तर : वनौकसोऽपि मुनयः लौकिकज्ञा भवन्ति।

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए—

1. **शकुन्तलां शापं कः अददात्?**
(अथवा) शकुन्तलायै केन शापः दत्तः?
(अथवा) शकुन्तला केन शप्ताऽभूत्? (2012 EH, 14 CR)
(क) कण्वः (ख) गौतमी (ग) दुर्वासाः (घ) विश्वामित्रः
उत्तर— (ग) दुर्वासाः।

2. **'कोऽन्योहुतवहाद् दग्धुं प्रभवति' — यह कथन किसका है?**
(क) प्रियंवदा (ख) अनसूया (ग) गौतमी (घ) कण्व
उत्तर— (क) प्रियंवदा।

3. **अवसितमण्डना का आसीत्?**
(क) प्रियंवदा (ख) अनसूया (ग) शकुन्तला (घ) गौतमी
उत्तर— (ग) शकुन्तला।

4. **'उपस्थितां होमवेलां गुरवे निवेदयामि' यह वाक्य किसके द्वारा कहा गया है?**
(क) प्रियंवदा (ख) अनसूया (ग) गौतमी (घ) शिष्य **उत्तर—** (घ) शिष्य।

5. **प्रतिपेलवा का?**
(क) प्रियंवदा (ख) गौतमी (ग) शकुन्तला (घ) अनसूया
उत्तर— (ग) शकुन्तला।

6. **कन्या कीदृशोऽर्थः?**
(क) परकीयो (ख) स्वकीयो (ग) पितरौ (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर— (क) परकीयो।

7. **दुष्यन्तः कस्य राज्यस्य (कुत्रत्यः) राजा आसीत्?** (2011 HU, 12 EG, 13 BD)
(क) कोशलस्य (ख) विदर्भस्य (ग) मधुरायाः (घ) हस्तिनापुरस्य
उत्तर— (घ) हस्तिनापुरस्य।

8. **'शिवास्ते पन्थानः सन्तु' यह कथन किसका है?**
(क) गौतमी का (ख) काश्यप का (ग) प्रियंवदा का (घ) अनसूया का
उत्तर— (ख) काश्यप का।

9. **कालिदासस्य प्रसिद्धोऽलङ्कारोऽस्ति—**
(क) अर्थान्तरन्यासः (ख) श्लेषः (ग) उपमा (घ) रूपकम् **उत्तर—** (ग) उपमा।

10. **'गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया' इस उक्ति का वक्ता है—** (2019 DB)
अथवा 'गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया।' यह उक्ति किसकी है? (2020 ZR, ZT)
(क) दुष्यन्त (ख) नारद (ग) अनसूया (घ) शकुन्तला
उत्तर— (ग) अनसूया।

11. **'सौभाग्यदेवताऽर्चनीया' वाक्य आया है—**
(क) प्रियंवदा के लिए (ख) शकुन्तला के लिए (ग) अनसूया के लिए (घ) गौतमी के लिए
उत्तर— (ख) शकुन्तला के लिए।

12. **''एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः'' केन कथितम् इदं वाक्यम्?** (2011 HR, 12 EE, 14 CN)
(क) अनसूयया (ख) गौतम्या (ग) प्रियंवदया (घ) शकुन्तलया
उत्तर— (ग) प्रियंवदया।

13. **निम्नलिखित में से कौन-सी रचना कालिदास की है?** (2018 BE)
(क) उत्तररामचरितम् (ख) मृच्छकटिकम् (ग) मेघदूतम् (घ) प्रतिमानाटकम्
उत्तर— (ग) मेघदूतम्।

14. 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' वाक्य की वक्ता है–
(क) प्रियंवदा (ख) अनसूया (ग) गौतमी (घ) मैत्रेयी
उत्तर– (क) प्रियंवदा।

15. कस्मिन् समये शकुन्तलायाः उत्सवः भवति?
(क) कुसुम प्रसूति समये (ख) वर्षाकाले (ग) वसन्तागमने (घ) मृगीप्रसूति समये
उत्तर– (क) कुसुम प्रसूति समये।

16. चतुर्थे अंके कस्य रसस्य निष्पत्तिः अभवत् ?
(क) संयोग शृंगारस्य (ख) वियोग शृंगारस्य (ग) अद्भुत रसस्य (घ) हास्य रसस्य
उत्तर– (ख) वियोग शृंगारस्य।

17. 'सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता' वाक्य किसके लिए कहा गया है–
(क) गौतमी के लिए (ख) प्रियंवदा के लिए (ग) नारद के लिए (घ) शकुन्तला के लिए
उत्तर– (घ) शकुन्तला के लिए।

18. इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि' उक्ति है–
(क) कण्व की (ख) शिष्य की (ग) गौतमी की (घ) अनसूया की
उत्तर– (ख) शिष्य की।

19. प्रियंवदायाः सख्याः किन्नाम आसीत्?
(क) शकुन्तला (ख) अनसूया (ग) मैत्रेयी (घ) गार्गी
उत्तर– (क) शकुन्तला।

20. 'प्रकृतिवक्र' है–
अथवा 'प्रकृतिवक्र' कौन है? (2020 ZT, ZP)
(क) शारद्वत (ख) शार्ङ्गरव (ग) दुर्वासा (घ) नारद
उत्तर– (ग) दुर्वासा।

21. कः आसीत् सुलभकोपो महर्षिः? (2014 CO, 20 ZT)
(अथवा) सुलभकोपो महर्षिः कः आसीत्? (2017 NF)
(क) काश्यप (ख) कण्व (ग) नारद (घ) दुर्वासा
उत्तर– (घ) दुर्वासा।

22. काश्यप को शकुन्तला के विवाह की सूचना किसने दी है–
(क) प्रियंवदा ने (ख) गुरु ने (ग) अशरीरी छन्दोमयी वाणी ने (घ) नारद ने
उत्तर– (ग) अशरीरी छन्दोमयी वाणी ने।

23. पतिगृहं गच्छन्त्या शकुन्तलया सह का गच्छत्?
(अथवा) महर्षि कण्वेन पति गृहं गच्छन्त्या शकुन्तलया सह का प्रेषिता?
(अथवा) शकुन्तलया सह हस्तिनापुरं का गता?
(क) अनसूया (ख) प्रियंवदा (ग) गौतमी (घ) वृद्धतापसी
उत्तर– (ग) गौतमी।

24. कुसुम प्रसूति समये कस्याः उत्सव भवति स्म? (2018 BD)
(क) प्रियंवदायाः (ख) अनसूयायाः (ग) शकुन्तलायाः (घ) गौतम्याः
उत्तर– (ग) शकुन्तलायाः।

25. 'वत्से! वीरप्रसविनी भव' यह आशीर्वाद है–
(क) गौतमी का (ख) पहली तापसी का (ग) अनसूया का (घ) तीसरी तापसी का
उत्तर– (घ) तीसरी तापसी का।

26. तृतीय तापसी का आशीर्वाद है– (2019 DA)
(क) वत्से! सुखं लभस्व (ख) वत्से! भर्तुर्बहुमता भव (ग) वत्से! वीरप्रसविनी भव (घ) एतेषु न कश्चिदापि
उत्तर– (ख) वत्से! भर्तुर्बहुमता भव।

27. शकुन्तलासाकं राजकुलं का गता।
(अथवा) प्रस्थान काले शकुन्तलया सह गच्छति। (2019 DA)
(क) प्रियंवदा (ख) अनसूया (ग) गौतमी (घ) मेनका
उत्तर– (ग) गौतमी।

28. कस्याः प्रस्थानकौतुकं निवर्त्यताम्–
(क) शकुन्तलायाः (ख) अनसूयायाः (ग) प्रियंवदायाः (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (क) शकुन्तलायाः।

29. शकुन्तलां कोऽपालयत्? (2013 BI, 19 DA, 20 ZQ, ZS)
अथवा **शकुन्तला कस्य पालिता पुत्री आसीत्?** (2011 HQ, 12 EJ, 18 BE, 19 DF)
(क) वशिष्ठः (ख) अगस्त्यः (ग) विश्वामित्रः (घ) कण्वः
उत्तर– (घ) कण्वः।

30. संस्कृतमाश्रित्य पठति–
(क) शकुन्तला (ख) प्रियंवदा (ग) गौतमी (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (ख) प्रियंवदा।

31. ''पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं''–किसका कथन है?
(क) शकुन्तला (ख) प्रियंवदा (ग) अनसूया (घ) गौतमी
उत्तर– (ग) अनसूया।

32. 'शान्तानुकूल पवनश्च शिवश्च पन्थाः' किसका कथन है?
(क) वशिष्ठ का (ख) काश्यप का (ग) प्रियंवदा का (घ) दुष्यन्त का
उत्तर– उपर्युक्त किसी का नहीं। यह आकाशवाणी है।

33. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कविः (रचयिता) कः अस्ति? (2016 TH)
(क) राजशेखरः (ख) भवभूतिः (ग) भट्टनारायणः (घ) कालिदासः
उत्तर– (घ) कालिदासः।

34. शकुन्तलायाः निवसने सज्जते–
(क) वनज्योत्स्ना (ख) पुत्रकृतकः मृगः (ग) लता (घ) हरिणः
उत्तर– (ख) पुत्रकृतकः मृगः।

35. ''न खलु धीमतां कश्चिद् विषयो नाम''–किसका कथन है? (2013 BG, 20 ZU)
(क) शारद्वत (ख) विदूषक (ग) कण्व (घ) शाङ्र्गरव
उत्तर– (घ) शाङ्र्गरव।

36. गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति इति वचनं आह–
(क) काश्यपः (ख) गौतमी (ग) अनसूया (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (ग) अनसूया।

37. शकुन्तलायाः मातुः नाम आसीत्। (2011 HW, 13 BC)
(अथवा) शकुन्तलायाः जननी कास्ति? (2020 ZR)
(अथवा) शकुन्तलायाः माता का?
(क) मेनका (ख) सुमित्रा (ग) गार्गी (घ) उर्वशी
उत्तर– (क) मेनका।

38. शकुन्तलायाः दुष्यन्ते स्नेहप्रवृत्तिः अस्ति–
(क) बान्धवकृता (ख) अबान्धवकृता (ग) पूर्वजन्मकृता (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (ख) अबान्धवकृता।

39. वनौकसौऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम् इति वचनम् आह– (2016 TD)
(क) शारद्वतः (ख) काश्यपः (ग) शिष्यः (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (ख) काश्यपः।

40. दुष्यन्तः कः आसीत् ? (2014 CP, 16 TG)
(क) राजा (ख) मन्त्री (ग) तपस्वी (घ) कुलपतिः
उत्तर– (क) राजा।

41. 'तात! वन्दे' इति वचनम् आह–
(क) प्रियंवदा (ख) शकुन्तला (ग) अनसूया (घ) गौतमी
उत्तर– (ख) शकुन्तला।

42. 'ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः' इस वाक्य का वक्ता है–
(क) काश्यपः (ख) शार्ङ्गरव (ग) नारद (घ) गौतमी
उत्तर– (ख) शार्ङ्गरव।

43. 'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति' वाक्य कहा है–
(क) अनसूया ने (ख) प्रियंवदा ने (ग) शकुन्तला ने (घ) नारद ने
उत्तर– (क) अनसूया ने।

44. वैतानास्त्वां वह्नयः पावयन्तु-का वक्ता कौन है?
(क) शार्ङ्गरव (ख) गौतमी (ग) प्रियंवदा (घ) काश्यप
उत्तर– (घ) काश्यप।

45. काश्यपः कः आसीत्?
(क) मन्त्री (ख) तपस्वी (ग) राजा (घ) भृत्यः
उत्तर– (ख) तपस्वी।

46. किं शीलः तपस्विजनः?
(क) सुखशीलः (ख) दुखशीलः (ग) कर्मशीलः (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (ख) दुःखशीलः।

47. प्रियम्वदा कस्याः सखी आसीत् ? (2010 BY)
(क) दुष्यन्तस्य (ख) अनसूयायाः (ग) शकुन्तलायाः (घ) गौतम्याः
उत्तर– (ग) शकुन्तलायाः।

48. प्रियमण्डना का आसीत्?
(क) प्रियंवदा (ख) अनसूया (ग) शकुन्तला (घ) वनदेवता
उत्तर– (ग) शकुन्तला।

49. नवमालिका केन संश्रितवती?
(क) चूतेन (ख) पूतेन (ग) दूतेन (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (क) चूतेन।

50. दुष्यन्तः राजा आसीत् कस्य राजस्य? (2012 EG, 13 BD)
अथवा दुष्यन्तः कस्य देशस्य राजा आसीत्? (2020 ZO)
(क) वाराणसी नगरस्य (ख) मिथिला राजस्य (ग) हस्तिनापुरस्य (घ) कुरु प्रदेशस्य
उत्तर– (ग) हस्तिनापुरस्य।

51. व्रीडां रूपयति–
(क) गौतमी (ख) प्रियंवदा (ग) अनसूया (घ) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (घ) एतेषु न कश्चिदपि।

52. कालिदास के प्रमुख नाटक का नाम है–
(क) मालविकाग्निमित्रम् (ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(ग) उत्तररामचरितम् (घ) ऋतुसंहारम्
उत्तर– (ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम्।

53. 'विक्रमोर्वशीयम्' किसकी कृति है? (2019 CZ, 20 ZP)
***अथवा* 'विक्रमोर्वशीयम्' के रचयिता कौन हैं?** (2019 DF)
(क) कालिदास की (ख) भवभूति की (ग) शूद्रक की (घ) भास की
उत्तर– (क) कालिदास की।

54. 'मालविकाग्निमित्रम्' किसकी कृति है?
(अथवा) 'मालविकाग्निमित्रम्' के रचयिता कौन हैं? (2014 CN)
(क) भवभूति (ख) भास (ग) शूद्रक (घ) कालिदास
उत्तर– (घ) कालिदास।

55. शकुन्तला कस्य ऋषेः आश्रमे न्यवसत्? (2010 CC)
(क) विश्वामित्रस्य (ख) वशिष्ठस्य (ग) कण्वस्य (घ) दुर्वासामुनेः
उत्तर– (ग) कण्वस्य।

56. अभिज्ञानशाकुन्तले मुख्यः रसः कः? (2010 CD, 11 HS)
(अथवा) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य प्रधान रसः अस्ति। (2013 BF, 16 DN)
(क) करुण रसः (ख) शान्त रसः (ग) वीर रसः (घ) शृङ्गार रसः
उत्तर– (घ) शृङ्गार रस।

57. शकुन्तला अनन्यमानसा कं विचिन्तयन्ती आसीत्? (2011 HT, 14 CL)
(अथवा) कं विचिन्तयन्ती शकुन्तला ऋषिरागमनम् न अजायत्? (2013 BH)
(क) वशिष्ठम् (ख) कण्वम् (ग) दुष्यन्तम् (घ) कमपि तपोधनं
उत्तर– (ग) दुष्यन्तम्।

58. कन्या वस्तुतः कस्य धनम् आसीत्? (2012 EF, 13 BF)
(क) गुरोः (ख) मातृपित्रोः (ग) परकीयम् (घ) जन्मदातुः
उत्तर– (ग) परकीयम्।

59. कन्या कस्मै प्रतिपादनीया? (2012 EI)
(क) कदर्याय (ख) वीरपुरुषाय (ग) गुणवते (घ) मानिने
उत्तर– (ग) गुणवते।

60. नवैः तनयाविश्लेषदुःखैः के पीडयन्ते? (2014 CM)
(क) मातरः (ख) पितरः (ग) गुरुवः (घ) गृहिणः
उत्तर– (घ) गृहिणः।

61. शकुन्तलायाः जनकः कः आसीत्? (2014 CQ, 17 NI)
(क) कण्वः (ख) वसिष्ठः (ग) विश्वामित्रः (घ) भूरिश्रवा
उत्तर– (ग) विश्वामित्रः।

62. शकुन्तला कण्वस्य कीदृशी पुत्री आसीत्? (2017 NC)
(क) पालिता (ख) क्रीता (ग) औरसी (घ) निक्षिप्ता
उत्तर– (क) पालिता।

63. परित्यक्तनर्तनाः के? (2017 NC)
(क) मृगाः (ख) मयूराः (ग) शुकाः (घ) शशकाः
उत्तर– (ख) मयूराः।

64. शकुन्तलायाः गमेन मृगीभिः के परित्यक्ताः? (2017 ND)
(क) नर्तनानि (ख) दर्भकवलाः (ग) भ्रमणानि (घ) उत्पतनानि
उत्तर– (ख) दर्भकवलाः।

65. 'लताभगिनी' वनज्योत्स्नां तावदामंत्रयिष्ये।' इति कस्याः उक्तिः? (2017 ND)
(क) शकुन्तलायाः (ख) प्रियंवदायाः (ग) अनसूयायाः (घ) परिचारिकायाः
उत्तर– (क) शकुन्तलायाः।

66. शकुन्तलायाः पतिगृहगमनकाले कस्य हृदयम् उत्कण्ठितं जातम्? (2017 NF)
(क) कण्वस्य (ख) प्रियंवदायाः (ग) विदूषकस्य (घ) शारद्वतस्य
उत्तर– (क) कण्वस्य।

67. 'स्नेहप्रवृत्तिरेवंदर्शिनी' इति कस्योक्तिः? यह कथन किसका है? (2017 NG)
(क) गौतम्याः/गौतमी का (ख) काश्यपस्य/काश्यप का
(ग) अनसूयायाः/अनसूया का (घ) प्रियंवदायाः/प्रियंवदा का
उत्तर– (ख) काश्यपस्य/काश्यप का।

68. कन्या कस्मै दातव्या? (2017 NH)

(क) कुलवते कन्या दातव्या (ख) विद्यावते कन्या दातव्या
(ग) गुणवते कन्या दातव्या (घ) धनवते कन्या दातव्या

उत्तर– (क) कुलवते कन्या दातव्या।

69. दुष्यन्तः कस्य देशस्य राजा आसीत्? (2017 NH, 19 DE)

(क) हस्तिनापुरस्य राजा आसीत् (ख) कोशलस्य राजा आसीत्
(ग) पाटलिपुत्रस्य राजा आसीत् (घ) मथुरायाः राजा आसीत्

उत्तर– (क) हस्तिनापुरस्य राजा आसीत्।

70. भर्तारमालसदृशं सुकृतैर्गता त्वम्'' इति वाक्यं कस्याः विषये कथितम्? (2018 BC)

(क) शकुन्तलायाः (ख) अनसूयायाः (ग) प्रियंवदा (घ) गौतम्याः

उत्तर– (क) शकुन्तलायाः।

71. श्यामकमुष्टिपरिवर्धितकः पुत्रकृतः कः अस्ति? (2018 BC)

(क) धीवरः (ख) तरवः (ग) मृगः (घ) सिंहः

उत्तर– (ग) मृगः।

72. 'हला! एषा युवयोर्हस्ते निक्षेपः' इति कथनं कस्यास्ति? (2018 BG)

(क) दुष्यन्तस्य (ख) शकुन्तलायाः (ग) गौतम्याः (घ) प्रियंवदायाः

उत्तर– (ख) शकुन्तलायाः।

73. काश्यपः केन छन्दसा आशास्ते? (2018 BG)

(क) ऋक्छन्दसा (ख) यजुश्छन्दसा (ग) सामछन्दसा (घ) बिनाछन्दसा

उत्तर– (क) ऋक्छन्दसा।

74. दुर्वासा प्रकृत्या कीदृशी महर्षिरासीत्? (2019 CZ)

(क) क्षमाशीलः (ख) निर्लोभी (ग) सुलभकोपी (घ) अति विनयी

उत्तर– (ग) सुलभकोपी।

75. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना कालिदास की है? (2019 DB)

(क) उत्तररामचरितम् (ख) प्रतिमानाटकम् (ग) मृच्छकटिकम् (घ) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

उत्तर– (घ) अभिज्ञानशाकुन्तलम्।

76. अभिज्ञानशाकुन्तलम् किसकी रचना है? (2019 DC, DE)

(क) भवभूति (ख) भास (ग) शूद्रक (घ) कालिदास

उत्तर– (घ) कालिदास।

77. सुशिष्यदत्ता विद्येव का? (2019 DC)

(क) अनसूया (ख) शकुन्तला (ग) प्रियंवदा (घ) गौतमी

उत्तर– (ख) शकुन्तला।

78. 'रघुवंश महाकाव्यम्' किसकी कृति है? (2019 DD, 20 ZQ)

(क) भारवि (ख) भवभूति (ग) कालिदास (घ) अश्वघोष

उत्तर– (ग) कालिदास।

79. शकुन्तलां शापं कः अददात्? (2019 DD, 20 ZU)

(क) दुर्वासाः (ख) विश्वामित्रः (ग) कण्वः (घ) परशुरामः

उत्तर– (क) दुर्वासाः।

80. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना कालिदास की नहीं है? (2020 ZS)

(क) रघुवंश महाकाव्यम् (ख) उत्तररामचरितम् (ग) अभिज्ञान शाकुन्तलम् (घ) मेघदूतम्

उत्तर– (क) उत्तररामचरितम्।

खण्ड - 'घ'

निबन्ध

नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार इस प्रश्न के अन्तर्गत प्रश्न-पत्र में दिये गये किसी एक विषय पर 15 पंक्तियों में संस्कृत में निबन्ध लिखना होता है, जिसके लिए 10 अंक निर्धारित हैं। (अंक 10)

ऐसे लिखें निबन्ध

निबन्ध लिखना भी एक कला है। इसके लिए अनुवादों के नियमों को ध्यान में रखना आवश्यक है। सबसे अच्छा निबन्ध वह समझा जाता है, जो छात्र अपनी योग्यता से सोच-समझकर लिखता है। पुस्तक से रट कर निबन्ध लिखने पर अशुद्धियाँ भी हो जाती हैं और अंक भी कम मिलते हैं। इसलिए निबन्ध लिखने के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए–

1. जिस विषय पर निबन्ध लिखना हो, सबसे पहले उस विषय पर शान्त-चित्त से विचार करना चाहिए कि इस विषय में कौन-कौन-सी बातें रखी जानी हैं।

2. जब यह ध्यान में आ जाय कि इस विषय पर ये-ये बातें लिखनी हैं तब उन सब बातों को हिन्दी में लिख लेना चाहिए। लिखते समय वाक्य बहुत छोटे-छोटे और सरल होने चाहिए। निबन्ध लिखते समय कभी भी लम्बे और क्लिष्ट वाक्य मत लिखिए।

3. इसके बाद उन वाक्यों को क्रम से लगा लीजिए अर्थात् एक तरह की बात कहनेवाले वाक्यों को एक साथ रखिए फिर वाक्यों को इस दृष्टि से पढ़िए कि इनका अनुवाद संस्कृत में करना है। यदि किसी वाक्य के अनुवाद करने में कठिनाई हो रही है तो उस वाक्य को पलट कर ऐसा बना लीजिए जिसका शुद्ध अनुवाद आप कर सकें।

4. अपने विद्यालय, गाँव, पिता, अध्यापक आदि का नाम भी आप पलट दीजिए– यदि वह अनुवाद करने में कठिनाई पैदा कर रहा है। जैसे– मेरे विद्यालय का नाम हरचरन शिवचरन लाल शिक्षा मन्दिर इण्टर कालेज, जलेसर है। इस वाक्य को बदल कर इस प्रकार लिख लीजिए– 'मेरे विद्यालय का नाम आदर्श शिक्षा मन्दिर है। यह जलेसर में स्थित है।' आपके विद्यालय में उन्तीस अध्यापक हैं। आप उन्तीस की संस्कृत नहीं जानते हैं, तो अध्यापकों की संख्या घटा-बढ़ा कर ऐसी कर लीजिए, जिसकी संस्कृत आप आसानी से बना सकें। यदि आप संख्याओं की संस्कृत जानते ही नहीं, तो अंकों में भी लिख सकते हैं (जैसे– विंशतिः अध्यापकाः के स्थान पर 20 अध्यापकाः) फिर दूसरे वाक्य लिखिए। हमारा विद्यालय विशाल है। इसमें छात्र पढ़ते हैं। एक प्रधानाचार्य हैं। प्रधानाचार्य सज्जन हैं। कृष्णदत्त हमारे कक्षाध्यापक हैं। विद्यालय में एक उद्यान है। उसमें फूलों के पेड़ हैं। इसमें हम खेलते हैं इत्यादि। सीधे-सादे वाक्य लिखकर उनका संस्कृत में अनुवाद कर दीजिए। यह मत सोचिए कि हमारे विद्यालय में तो उद्यान नहीं है, हम कैसे लिखें? निबन्ध लिखते समय जो आपके यहाँ हैं, उससे कोई विशेष तात्पर्य नहीं है। देखना तो यह है कि आप संस्कृत में अपने विचार प्रकट कर सकते हैं अथवा नहीं।

5. प्रारम्भ में ऐसे सरल वाक्य बनाने में परेशानी होती है और वाक्य नहीं बन पाते; किन्तु कुछ दिन अभ्यास करने के उपरान्त वाक्य बनाना आ जाता है और उनका संस्कृत में अनुवाद करके बड़ी आसानी से चाहे जिस विषय पर आप निबन्ध लिख सकते हैं।

➡ (1) रक्षाबन्धन

[2014 CT]

भारतदेशे उत्सवानाम् प्राचुर्यं वर्तते। अत्र अनेके उत्सवाः प्रचलन्ति। यथा धार्मिकोत्सवाः, सामाजिकोत्सवाः, महापुरुषजन्मोत्सवाः, राष्ट्रियोत्सवाः च। एषु उत्सवेषु धार्मिकोत्सवाः महत्त्वपूर्णाः यतः भारतीयाः धर्मप्राणाः सन्ति। तेष्वपि रक्षाबन्धनोत्सवः विशेषेण महत्त्वपूर्णः अस्ति। अस्योत्सवस्य महत्त्वं सर्वं एव स्वीकुर्वन्ति।

अयं महोत्सवः श्रावणमासस्य पूर्णिमायां भवति। अयं समयः अति मनोरमम् भवति। भूमौ सर्वत्र हरीतिमा दृश्यते। वृक्षेषु कूजन्तः पक्षिणः श्रवणयोः मधु इव क्षरन्ति एवंविधे समये अयम् उत्सवः सर्वान् मोदयति। पुराणानुसारं सर्वप्रथमम् इन्द्रपत्न्या स्वपतेः इन्द्रस्य दानवेभ्यः रक्षणार्थम् तस्य हस्ते रक्षासूत्रं बद्धम्। ततः एवं अयमुत्सवः प्रवर्तितः। ततः अनेनैव रक्षासूत्रेणैव इन्द्रेण दानवेन्द्रो बलिः बद्धः।

भारतीयेतिहासे राजपुत्राणां समये राज्ञः स्वरक्षार्थम् एकं बलवतं राजानं निजभ्रातरं मत्वा तस्य हस्ते रक्षाबन्धनम् अकुर्वन्। पुरा अस्मिन्नेव दिने ऋषयः ब्राह्मणाश्च यजमानानां हस्तेषु रक्षासूत्रम् अबध्नन्। ते राजानः यजमानाश्च तेभ्यः प्रचुरं द्रव्यं यच्छन्ति स्म। अधुना तु ब्राह्माणाः सर्व एव न, अपितु केचिदेव, भिक्षुकाः भूत्वा अति स्वल्पधनार्थम् प्रतिगृहं गच्छन्ति–अयं महान् खेदजनकः विषयः।

अयमुत्सवः प्राधान्येन ब्राह्मणानाम् अस्ति किन्तु अधुना सर्ववर्णमानवाः इमम् उत्सवम् अभिनन्दन्ति। अस्मिन् दिने भगिन्यः अतीव प्रसन्ना दृश्यन्ते। प्रायेण अस्मिन् दिने भगिन्यः स्वपतिगृहात् भ्रातृगृहम् समागत्य भ्रातृणां हस्तेषु रक्षासूत्रं बध्नन्ति। भ्रातृभ्यश्च धनं वस्त्रादिकं लभन्ते। ब्राह्मणाश्च यजमानहस्तेषु रक्षाबन्धनम् विधाय दक्षिणा-द्रव्यम् आप्नुवन्ति।

अस्मिन् उत्सवे प्रतिगृहं घृतखण्डदुग्ध्युक्ताः सूत्रिकाः (सेवई) पच्यन्ते। धर्मप्राणाः जनाः तीर्थस्थानानि गत्वा दानं पुण्यञ्च कुर्वन्ति। नदीषु, सरोवरेषु च स्नानं कुर्वन्ति।

अयम् उत्सवः भारतीय संस्कृतेः उज्ज्वलतायाः एवं महत्तायाः सूचकोऽसि।

➡ (2) विजयादशमी (दशहरा)

[2017 NN]

भारतवर्षे अनेके विविधाश्च उत्सवाः प्रचलन्ति। यथा धार्मिकोत्सवाः, सामाजिकोत्सवाः, महापुरुषजन्मोत्सवाः राष्ट्रियोत्सवाश्च। एषूत्सवेषु धार्मिकोत्सवाः महत्त्वपूर्णाः। यतः भारतीयाःधर्मप्राणाः सन्ति। तेष्वपि विजयादशमी महोत्सवः विशेषेण महत्त्वपूर्णः अस्ति।

अयमुत्सवः आश्विनमासस्य शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ भवति। अस्मिन् समये वर्षर्तुः समाप्तिमुपयाति शरच्चागच्छति। मार्गाः अपङ्काः, सुखदं वातावरणम्, निर्मलम् आकाशं च सर्वमेव रुचिरं प्रतीयते। एवमनुश्रूयते यत् दशरथपुत्रेण श्रीरामचन्द्रेण अस्मिन्नेव दिने राक्षसराजरावणस्य विनाशाय लङ्कायाम् आक्रमणम् कृतम्। पुरा क्षत्रिया अस्मिन्नेव दिने शस्त्राणां पूजां विधाय युद्धार्थं प्रस्थानम् अकुर्वन्। इदमपि कथ्यते यत् महादेव्या भगवत्या काल्या अस्मिन्नेव दिने असुराणां विनाशः कृतः।

इममुत्सवम् प्राधान्येन क्षत्रियाः अभिनन्दन्ति। पुरा अस्मिन्नेव दिने राजगृहेषु महान् उत्सवः अभवत्। यद्यपि सम्प्रति राज्ञां नामशेषमेव जातं तत्र उत्सवः सम्पद्यते। क्षत्रियवर्णम् अन्तरेण अन्ये वर्णा अपि इममुत्सवं सोल्लासम् अभिनन्दन्ति। क्षत्रियाः ब्राह्मणाः वैश्याः शूद्राश्च सर्व एव अस्मिन् उत्सवे उल्लसन्ति।

अस्मिन् अवसरे समस्ते भारते ग्रामे-ग्रामे, नगरे-नगरे च रामलीलायाः प्रदर्शनं भवति। असंख्याः जनाः आबालवृद्धाः रामलीलोत्सवं द्रष्टुम् गच्छन्ति तत्र रावणवधं, तद्दहनं च दृष्ट्वा आमोदन्ते। अस्योत्सवस्य प्रधानः सन्देशः अस्ति यत् दशसु इन्द्रियेषु विजयः प्राप्तव्यः। यदि वयं स्वेन्द्रियाणि संयम्य रावणरूपम् अहंकारम् नक्ष्यामस्तु तदा वयं नूनं संसारे विजयं प्राप्स्यामः।

➡ (3) मित्रम् (सन्मित्रम्)

[2020 ZR]

मनुष्यः सामाजिकः प्राणी। समाजे एव तस्य सत्ता। न हि समाजं बिना स जीवितुं शक्नोति। सामाजिकजीवने मित्राणाम् आवश्यकता भवति। एकाकिनः कस्यापि कार्याणि न हि सिद्ध्यन्ति।

परं मित्रं कीदृशं भवेदिति विचारणीयम्। मित्रस्य निर्वाचने सावधानतायाः आवश्यकता भवति। संसारे अनेकानि मित्राणि मिलन्ति। स्वार्थं साधयितुम् एव तेषां मित्रता भवति। यावत्ते खादितुं स्वादु भोजनं पातुं, मधुरं पेयं च लभन्ते, तावत्तेषां मित्रता। आवश्यकतासमये ते दूरीतिष्ठन्ति। आपत्ति समये ते नालपन्ति। एतादृशैः मित्रैः न कोऽपि लाभः अपितु हानिर्भवति। सत्यमुक्तं केनापि कविना–

''परोक्षे कार्यहन्तारं प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्।
वर्जयेत् तादृशं मित्रं, विषकुम्भं पयोमुखम्॥''

सन्मित्रम् तु वस्तुतः ईश्वरीयं वरदानम्। येन सन्मित्रं प्राप्तं तस्य जीवनं सफलं जातम्। सन्मित्रं पापान्निवारयति। हिताय योजयते, मित्रस्य गोप्यं रहस्यं निगूहति, गुणान् प्रकटी करोति। आपत्तिकाले मित्रस्य साहाय्यं करोति। आवश्यकतासमये धनमपि ददाति। स स्वयं कष्टानि अनुभूयापि मित्रस्य रक्षां करोति। एतादृशं यस्य मित्रं, स तु भाग्यशाली भवति। एतदेव च सद्भिः सन्मित्रलक्षणम् उच्यते।

सन्मित्रं कार्यसिद्धेः द्वारं भवति। मित्रसाहाय्येनैव महान्ति कार्याणि सिध्यन्ति। विभीषण-सुग्रीवादि मित्र साहाय्येन रामः बलवतः राक्षसान् व्यनाशयत्। कृष्णस्य साहाय्येनैव चार्जुनः महाभारतं नाम युद्धं जिगाय, अतः मित्रं संसारस्य अमूल्यं रत्नं कथ्यते।

➡ (4) सत्संगतिः *अथवा* सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्

[2010 CJ, 11 ID, HX, 13 BJ, BN, 14 CS, CW, 15 DT, 17 NO, 19 DB, DD, DF]

सतां सद्भिःसंगः कथमपि हि पुण्येन भवति। [2016 TP]

सतां जनानां सङ्गतिः 'सत्सङ्गतिः' कथ्यते। सत्सङ्गतिः जनानां सर्वकार्य-साधिका इति सुनिश्चितम्। मानवः सामाजिकप्राणी विशेषः अतः समाजं बिना तस्य किमपि महत्त्वं न विद्यते। सत्संगत्या जनः समाजे समुन्नतं पदं प्राप्नोति। सुदामा श्रीकृष्णस्य सखा आसीत्। सुग्रीव–विभीषणादयो रामसङ्गात् श्रेयः प्राप्तुवन्। श्रीकृष्णस्य संगतिकारणेन एव सुदामा दारिद्र्यं परित्यज्य परमैश्वर्यशाली अभवत्।अजामिलोऽपि सतां सङ्गात् नारायणलोके जगाम। ऋषीणां संगत्या व्याधोऽपि ऋषिवाल्मीकिः अभवत्।

मानवः सज्जनैः सह सज्जनतां दुर्जनैः सह दुर्जनत्वम् च उपति। संगत्या विद्या वृद्धिर्भवति कीर्तिश्च वर्धते। दुर्जनानां संसर्गेण बुद्धिर्दूषिता भवति कीर्तिः नश्यति च। बालकः दुर्जनैः सह सङ्गतिः कदापि न कार्या। सज्जनानां मार्गमनुसरन् को नु समुन्नति शिखरं न परिचुम्बति। सत्संगत्या मूर्खोऽपि विद्यावैभवेन विभाति, दुर्जनोऽपि सज्जनतां सम्प्राप्नोति, कुमार्गाद् सद्मार्गे समायाति।

यदि जनः श्रेष्ठं भवितुमिच्छति, तदा सदा स सत्संगतिः कुर्यात्। दुष्टानां संगतिः सदा अनर्थकारिणी भवति। सत्संगतिः बुद्धेः मूर्खताम् हरति। सत्संगतिः वाचि सत्यम् सिञ्चति। सत्संगतिः मानोन्नतिं दिशति। सत्संगतिः पापम् अपाकरोति। सत्संगतिः चेतः प्रसादयति। सत्संगतिः दिक्षु कीर्तिं तनोति। केनापि कविनां सत्यमुक्तम्–

'जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं।
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति॥
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्॥'

अतः सत्संगतिः मानवस्य मनोवृत्तिं परिवर्तयति। अनया पापोऽपि धर्मनिष्ठाः भवति। नलिनीपत्रस्थिताः जलकणाः मौक्तिकीं द्युतिम् आवहन्ति।

➡ (5) विद्याधनं सर्वधनंप्रधानम् अन्य शीर्षक

[2011 IA, HX, 13 BJ, BM, 14 CX, CY, 17 NP, 19 CZ, DC, 20 ZQ, ZS]

किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या [2017 NL]

विद्याविहीनः पशुः [2013 BP, BL, TJ, 16 TJ]

विद्या ददाति विनयम् [2011 HZ]
विद्या महत्त्वम् [2010 CG, 13 BK]
विद्या अमृतमश्नुते [2017 NN]
विद्या धर्मेण शोभते [2010 CK]
विद्यायाः उपयोगिता
विद्या महिमा [2013 BO]
विद्या प्रभावः [2016 TP]

विद्यते सद् असद् ज्ञानं अनया सा विद्या कथ्यते। विद्या विनयं ददाति। विनयात् पात्रतां प्राप्यते पात्रत्वात् धनं प्राप्यते धनाद् धर्मं प्राप्यते तत्पश्चात् सुखं लभते। यदुक्तम् –

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनाद् धर्मस्ततः सुखम्॥

अन्यं धनं व्यये कृते नश्यति किन्तु विद्याधनं व्यये कृते वर्धते। विद्याधनं चौरोऽपि चोरयितुं न शक्नोति, नृपः अपहर्तुं न शक्नोति। अन्य सुवर्णादिकं धनं भ्रातृषु विभज्यते किन्तु विद्याधनं भ्रातृषु न विभज्यते। केन कविना सत्यमेव उक्तम् –

न चौरहार्यं न च राजहार्यं,
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धति एव नित्यम्,
विद्या धनं सर्वधनंप्रधानम्॥

विद्यया शोभा भवति। विद्ययैव मनुष्यः ज्ञानार्जनम् करोति। विद्या बुद्धेः मूर्खतां हरति। विद्या दिशासु कीर्तिम् प्रसारयति। विद्या विदेशगमने स्वबन्धुजनः भवति। अतएव विद्याविहीनः जनः पशुः भवति। विद्यासर्वस्य भूषणम् अस्ति। विद्या गुरूणां गुरुः। विद्या नराय धनं ददाति, यशः ददाति, सुखं ददाति, सम्मानं च ददाति। अन्यानि धनानि सञ्चयात् पुष्टतां वृद्धिं च यान्ति परञ्च विद्याधनं सञ्चयात् अदानात् वा नित्यं क्षयं याति। विद्यायाः कोशः अपूर्वः अद्भुतः च। विद्यया एव विदुषः नरस्य सर्वत्र सम्मानः भवति। विद्याप्रभावेण एव ऋषयः मुनयः विद्वान्सः कवयश्च अमराः जाताः।

विद्या कल्पलता इव सर्वकार्यसाधिका अस्ति। विद्या माता इव रक्षति, पिता इव हिते नियुङ्क्ते, कान्ता इव खेदम् अपनयति। विद्या सर्वसुखानां कारणम् अस्ति। विद्या लक्ष्मीं तनोति। विद्यया एव यशः वर्धते। राजा तु स्वदेशे पूज्यते, परन्तु विद्वान् सर्वत्र पूज्यते। विद्यायां देशस्यापि प्रतिबन्ध नास्ति। राजानोऽपि तस्याः पुरस्तात् नतमस्तकाः भवन्ति–

'स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।'

विद्या मानवाय यशः प्रददाति, सुखं सम्मानं च यच्छति। विद्यया शोभा भवति, विद्यया एव मानवः ज्ञानार्जनं करोति। मानवजीवने विद्या तु एका कल्पलता वर्तते। रूपयौवनसम्पन्नोऽपि विद्याविहीनः जनः न शोभते। राजसु विद्या एव पूज्यते धनं न पूज्यते।

विद्याविहीनः मानवः पशुतुल्यः भवति। मानवजीवने विद्याधनं श्रेष्ठं धनम् अस्ति। अतः सर्वे जनाः स्वपुत्र-पौत्रान् पुत्रीश्च सम्यग् रूपेण पाठयेयुः। वर्तमानसमये तु विद्यायाः अतीव आवश्यकता वर्तते। सत्यमेव उक्तम्—

'विद्याधनं सर्वधनं प्रधानम्।'

➡ (6) उद्योगः

[2008 EU, EZ, 19 DB]

अन्य शीर्षक

- **श्रमेणैव सिध्यन्ति कार्याणि**
- **उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः** [2017 NK, 18 BN]
- **श्रमस्य महत्त्वम्**
- **उद्योगः सर्वसाधनम्**

- **उद्यमः** [2011 ID, 13 BN]
- **उद्योगिनं पुरुषं सिंहम् उपैति लक्ष्मीः** [2011 ID, 14 CY]
- **उद्योग महत्त्वम्**

संसारे सर्व एव मानवाः सुखमयं जीवनम् कामयते। परञ्च इदं केचिदेव जानन्ति इह सुखमयं जीवनं कथं प्राप्यते? जीवनं सुखमयं विधातुं सुखं शान्तिश्च अपेक्षते। जीवनं पुरुषार्थेनैव चलति। अतः मानवः पुरुषार्थी, उद्यमी भवेत्। अकर्मणि कदापि प्रवृत्तिर्न विधेया।

मनुष्यस्य यदि कश्चिच्छत्रुरस्ति तत् तु आलस्यमेव वर्तते। उक्तञ्चापि—

''आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।''

आलस्यं नाम अनुद्योगः। उद्योगशीला एव जनाः सर्वदुखानि विहाय सुखानि समृद्धिं च अनुभवन्ति। उद्योगेन भाग्यमपि परिवर्तयितुं शक्यते। अनुद्योगेन वयं जगति कर्मं कर्तुमसमर्थाः। अनुद्योगः नरस्य शत्रुवर्तते।

उद्यमेनैव नरेण अनेकानि शान्तिकार्याणि कृतानि। उद्यमम् आश्रित्य एवं मनुष्येण रेलवायुयान विद्युत् परमाणुः इत्यादि विविध प्रकाराः आविष्काराः कृताः। अधुना मानवः उद्यमेनैव चन्द्रादि उपग्रहेषु गमनस्य प्रभृतिभिः असम्भवानि दुष्कराणि च कार्याणि सम्पादयति। कथितं च–

उद्योगशीला एव जनाः सर्वदुःखानि विहाय सुखानि समृद्धि च अनुभवन्ति। संसारे उद्योगस्य महन्महत्वं सर्वैः स्वीकृतमस्ति। उद्यमी मानवः एव आत्मपौरुषेण स्वाभीष्टसिद्धिम् अनायासेनैव लभते। उद्यमी जनः असम्भवमपि सम्भवं विधातुं शक्नोति। उक्तञ्चापि—

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

अतः सर्वैरप्युद्योगोऽवश्यमेव कर्तव्यः।

➨ (7) भारतीया संस्कृतिः

[2012 HF, 13 BK, 14 CV, 15 DT, 17 NN, 20 ZQ]

संस्करणं, परिष्करणं चेतसः आत्मनोः वा इति संस्कृतिः कथ्यते। संस्कृतिः मानव मनसोऽज्ञानं दूरी करोति। चित्तभयमपहरति, अविवेकान्धकारम् अपनयति, ज्ञानज्योतिप्रकाशयति, शान्तिमादधाति, कल्याणं विस्तारयति, ज्ञानं विकासयति च। किम्बहुना संस्कृति मानवस्य सर्वविधम् अकल्याणं दूरीकृत्य तस्मिन् कल्याणं आदधाति।

सर्वेषां राष्ट्राणां स्वकीया संस्कृतिः भवति। अस्माकं भारतराष्ट्रस्यापि स्वकीया संस्कृतिः अस्ति, या भारतीया संस्कृतिः कथ्यते। इयं संस्कृतिः विश्वस्य प्राचीनतमासु संस्कृतिषु प्रधानतमा अस्ति।

अस्यां संस्कृतौ धार्मिकभावनायाः प्रचुरता अस्ति। जीवनस्य प्रतिक्षेत्रे धर्मस्य विधानम् अस्ति। भोजन व्यापारे राजनीतौ व्यवहारै, पठने, शयने, किम्बहुना सर्वास्वपि जीवनचर्यासु धर्मस्यैव विधानं दृश्यते। अस्यां संस्कृतौ, सर्वत्र आध्यात्मिकत्वं दृश्यते। भौतिक लिप्सां त्यक्त्वा आत्मज्ञानं कृत्वा मोक्ष प्राप्तिः एष भारतीयानां परमं लक्ष्यम्।

भारतीया संस्कृतिः विश्वस्त न केवलं मनुष्येषु अपितु चराचरात्मकेषु प्राणिषु पदार्थेषु च एकस्यैव परमात्मनो विभूतिम् पश्यति। अतएव भारतीयाः ऋषयः कल्याणम् ऐच्छन्—

''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुखभाग् भवेत्॥''

➨ (8) संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

[2010 CH, 11 HX, 12 HG, HH, 13 BM, 14 CV, CW, CX, 16 TK, 17 NJ, NP, 19 DC, DD, 20 ZT, ZU]

अथवा, **संस्कृत भाषा**

अथवा, **संस्कृत शिक्षणस्य उपयोगिता**

अथवा, **संस्कृताध्ययनस्य महत्त्वम्** [2017 NK]
अथवा, **संस्कृतम् नाम दैवीवाक**
अथवा, **देवभाषा-महत्त्वम्** [2010 CG]
अथवा, **संस्कृत शिक्षायाः वर्तमान स्वरूपम्** [2012 HE]
अथवा, **देवभाषायाः वर्तमानं स्वरूपम्** [2017 NO]

संस्कृतभाषा विश्वस्य सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा, सर्वोत्कृष्ट-साहित्य समन्वित च अस्ति। इयमेव सर्वासाम् आर्यभाषाणाम् जननी मता। इयं भाषा वैदिक भाषातोः निःसृताऽस्ति। विद्यमानेषु निखिलेषु अपि साहित्येषु अस्याः भाषायाः साहित्यं सुविपुलं, सर्वश्रेष्ठं सुसम्पन्नञ्चास्ति। तत्र ग्रन्थानां संख्या पञ्चाशत सहस्राद् अपि अधिका वर्तते। वैदिके साहित्ये मन्त्रसंहितात्मक ऋग्वेदयजुर्वेदसामवेदाथर्ववेद-ब्राह्मणआरण्यकउपनिषत्सूत्रग्रन्थाः प्रातिशाख्यअनुक्रमणीग्रन्थाः समायान्ति। लौकिके साहित्ये रामायण-महाभारतपुराणस्मृतिदर्शनकाव्यग्रन्थादयः परिगणिताः भवन्ति। इदं समग्रमेव वाङ्मय अभ्युदय निःश्रेयस् मूलमभिमन्यते। अत्र आधुनिक भौतिक विज्ञानमपि बीजरूपेण विवेचितमस्ति। संसारस्य कस्याऽपि भाषायाः साहित्यं संस्कृतसाहित्यस्य साम्यं नैवाधिगच्छति। अतएव संस्कृतस्य गौरवम्, आचार्यवरोः दण्डी इत्थं सत्यमेव उक्तम्– 'संस्कृतं नाम दैवीवागन्वाख्याता महर्षिभिः'।

संस्कृत साहित्यं नवभिः रसैः विभूषितम्, रीतिगुणालंकारादिभिः समलङ्कृतञ्च अस्ति रसादिध्वनिः अस्यात्मा। वैज्ञानिकञ्च अस्याः व्याकरणं सुनिश्चितं कं सुधियं नो मोहयति। अत्र गद्ये पद्ये च लालित्यं भावबोध सामर्थ्यमद्वितीयमस्ति। चरित्रनिर्माणाय यादृशीं प्रेरणा संस्कृतसाहित्यं प्रददाति, तादृशीं प्रेरणाम् अन्यत्साहित्यं न ददाति।

अस्याः भाषायाः वैशिष्ट्मस्याः व्याकरणापि ज्ञायते। अस्य मूलं यद्यपि ब्राह्मणग्रन्थेषु प्रातिशाख्यग्रन्थेषु च द्रष्टुं शक्यते परन्तु महर्षेः पाणिनेः अष्टाध्यायी, अस्याः महर्षि पतञ्जलिप्रणीतं महाभाष्यं तथा कात्यायनकृताः वार्तिका संस्कृत व्याकरणस्य महनीयं महत्त्वं ख्यापयन्ति। व्याकरणज्ञानमन्तरेण कथमपि संस्कृतस्य स्वर्णिम ज्ञान खनौ प्रवेशः कर्तुं नो शक्यते। संस्कृतस्य नैकाभिः विशेषताभिः सार्द्धं वैशिष्ट्यद्वयं प्रामुख्यं धत्ते।

भारतमातुः स्वातन्त्र्यं गौरवमखण्डत्वञ्च संस्कृतेन एव वेदितुं सुरक्षितुञ्च शक्यन्ते। यत् इयं देववाणी सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा श्रेष्ठा च ज्ञानविज्ञानदृष्ट्या सुसमृद्धा अतएव विद्वद्भिः तत्तद्ग्रन्थानामंशैः अस्याः वैज्ञानिकत्वं सेद्धव्यम्, अन्यासां भाषाणां साहित्ये च तस्या एव अनुकरणं प्रदर्शनीयम्। तदैव आधुनिकः शिक्षितः जनः अनुभविष्यति, निश्चेष्यति च।

➡ (9) अनुशासन

[2010 CK, 11 IB]

अन्य शीर्षक

- **अनुशासन समस्या**
- **अनुशासनम् एव शिक्षायाः मुख्य लक्ष्यम्**
- **जीवने अनुशासनस्य महत्त्वम्** [2016TK]

पूर्व निश्चितानां नियमानां ज्येष्ठानाम् आज्ञायाश्च पालनमेव अनुशासनम् कथ्यते। अनु उपसर्ग पूर्वक 'शास्' धातोः 'ल्युट्' प्रत्यय करणेन अनुशासन शब्दः सिद्धयति। संयमः वा आत्मनियन्त्रणाम् एतस्य शाब्दिकः अर्थः। संसारस्य आधारः अनुशासनमेव वर्तते। दार्शनिकाः स्वीकुर्वन्ति यत् सत्वरजस्तमासि मिलित्वा जगत् रचयन्ति। प्रकृतौ सर्वे पदार्थाः अनुशासनबद्धा सन्ति। यथा सूर्यः अनुशासनेन संसारं प्रकाशयति। चन्द्रः नक्षत्राणि अनुशासनं पालयन्ति। अस्याः निखिलायां व्यवस्थायाम् अनुशासनं निहितमास्ते।

अद्य प्रायः विद्यार्थिनः अनुशासनहीनाः सञ्जाताः सन्ति। अयं महद्दुःखस्य विषयः अस्ति यत् भारतस्य प्रशासनेऽपि अनुशासनहीनता व्याप्तास्ति। अनुशासनेन हीनाः चरित्रेण भ्रष्टाः नेतारः भारतीयां राजनीतिम् अधोगतिं प्रति नयन्ति। पतितास्ते राजनीतिं दूषयन्तः भारतीयं जीवनं तिमिरेण आच्छादयन्ति। विधाता एवं सर्वथा रक्षिष्यति भारतम्। गुरुकुलेषु, विद्यालयेषु पाठशालासु चाव्यवस्थायां मूलकारणमनुशासनहीनतैव। न केवलं सामान्यव्यवहारे अनुशासनस्यमहत्त्वमपितु राज्यसञ्चालने, राष्ट्रसंचालने, चानुशासनगौरवमेव जागर्ति। सैनिकाः देशरक्षार्थं स्वात्मानं तृणवत्पातयन्ति न गणयन्ति दुःखपयोधि न स्मरन्ति प्रियशिशून् तत्रकारणमिदमेव यत्तेऽनुशासने स्थिताः सन्ति।

शिक्षायाः उद्देश्यम् जीवनस्य सर्व प्रकारेण उन्नतिकरम् अस्ति। उन्नतिः अनुशासनं बिना असम्भवः अतः अनुशासनं शिक्षायाः,

मुख्यम् लक्ष्यं कथ्यते अनुशासनेन बिना विद्यार्थिनः स्वगुरुणाम् आज्ञापालनं न करिष्यन्ति, अध्ययनं प्रति सावधानाः न भविष्यन्ति। अतस्ते शिक्षणकाले किमपि न ज्ञास्यन्ति। अतएव सत्यमुच्यते–अनुशासनम् एव शिक्षायाः मुख्यं लक्ष्यम्।

➠ (10) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

अन्य शीर्षक

- **देश सेवा**
- **देशभक्तिः**
- **स्वर्गादपि गरीयसी जन्मभूमि**

'जनयतीति जननी' इत्यन्वयार्थत्वात् जन्मदात्री एव जननी कथ्यते। जन्मनः भूमिरित्यर्थत्वात् जन्मग्रहणभूमिश्च जन्मभूमिर्भवति। उभे अपि जयायस्यौ इति हि अस्याः सूक्ते अर्थः स्वर्ग पावनः पूज्यः सुखप्रदश्चादि। त्रिष्वपि गुणेषु जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गुरुतरे भवतः इत्यत्र मनागपि सन्देहो नास्ति।

पावनत्वम् पावयति पवित्रता सम्पादयतीति पावनः कथ्यते। जननी हृदयः पुत्रं प्रति या स्नेहधारा प्रवहति स त्रैलोक्यपावनी गंगेव पुत्रहृदयं घृणाद्वेषादिदोषान् दूरीकृत्य पावयति इति तु आधुनिकः बालमनोविज्ञानाचार्यः सिद्धकृतम् मातृस्नेहहीनाः बालकाः प्रायेण जीवने अपराधिनः भवन्ति। अतः जननी स्वर्गादपि पावनतरा वर्तते।

जननी पुत्र पालने असंख्यान् क्लेशान् सहते स्वयं आर्द्रवस्त्रेषु शयित्वा स्वपुत्रं शुष्कवस्त्रेषु शाययति। स्वयं बुभुक्षिताऽपि सती पूर्व भोजयति अतः सा सर्वथा पूजनीयां सुखपदत्वम् मातुः' अङ्के यत् सुखं प्राप्यते, तत्सुखम् कुत्रापि न लभ्यते। पशु पक्षिणोऽपि मातुः अङ्के आनन्दातिरेकम् अनुभवन्ति, किम्पुनः मानवाः।

यथा जन्मदात्री जननी वन्दनीया तथैव जन्मभूमिरपि सर्वैः अभिनन्दनीया स्पृहणीया च जन्मभूमिं प्रति मानवस्य स्वाभाविकं प्रेम जन्मतः एव भवति। ये स्वजन्मभूमिं प्रति अनुरागं रक्षन्ति ते धन्या सन्ति। विरला एव पुरुषाः जन्मभूमिं प्रति अनुरागहीनाः भवन्ति। ईदृशाः जनाः कृतघ्नाः राक्षसाः वा भवेयुः। वेदेषु पुराणेषु जन्मभूमेरत्यन्तं महत्त्वं दृश्यते। देवानां जन्म भारत-भूमौ समभवत्। अतएव देवाः अपि तस्य महिमानं गायन्ति। स्वातन्त्र्य संग्रामे तु असंख्याः देशभक्ताः स्वमातृभूमिप्रेमणिश्च भारतभूम्या अवतारं गृहीतवन्तः। महाराज्ञी लक्ष्मीबाई, तात्यां टोपे, तिलक, मालवीय, पटेल, सुभाष, गान्धी, मोतीलाल, जवाहर, भगतसिंह, महाभागानां स्वदेशभक्तिं दर्शं दर्शं विस्मिताः व्याकुलाः सन्तः आंग्लाः भारतं विहाय स्वदेशं प्रति प्रस्थानमकुर्वन्। सखेदं लिख्यते यदद्य तु, भारतभूमे, कतिपयाः पुत्राः स्वमातरं स्वबन्धुरक्तेन रञ्जयन्ति। तेऽद्य निर्दोष जनानां कदनं कुर्वन्ति। ये पूर्वं रक्षकाः आसन् ते साम्प्रतं राक्षसायन्ते, असुरायन्ते च जन्मभूमिं विखण्डयितुं प्रयतन्ते।

ऋषीणां देश रामकृष्णयोः जन्मभूम्यां कीदृशीयं विडम्बना यद् भ्राता एव स्वभ्रातुः शत्रुः सञ्जातोऽस्ति, 'अतएव जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' इतीमां वाणीमुद्घोषयितारम् ऋषिवरं बाल्मीकिं वयं कथङ्कारं प्रसादयितुं शक्ष्यामः। तथापि स्वमनसि नैराश्यं नैवानेयम्। विपत्तिकाले धैर्यमवलम्बनीयम्। स्वमातरं जन्मभूमिं भारतवर्षं प्रति मनसा वाचा कर्मणा सद्भक्तिरेव आचरणीया।

➠ (11) सदाचारः

[2014 CU, 19 DB, 20 ZO, ZR, ZT]

अन्य शीर्षक

- **आचारः प्रथमो धर्मः** [2010 CI]
- **शीलं परं भूषणम्**
- **आचारः परमो धर्मः** [2010 CJ, 17 NL, 18 BN, 19 CZ, DA, DC, DE]

सत् आचरणमेव सदाचारः कथ्यते। यथा सत्पुरुषाः आचरन्ति तथैव आचरणमपि सदाचारः उच्यते। उत्तमजीवनस्य सर्वोत्तमं साधनं सदाचार एव अस्ति। सदाचारवान् नरः सुखं प्राप्नोति। स धार्मिको, बुद्धिमान् दीर्घायुश्च भवति। सदाचारस्य अन्याः बहवः गुणाः सन्ति। यथा माता पितरौ गुरूणां च आज्ञायाः पालनं वन्दनं च अहिंसा, परोपकारः, नम्रता, दयादयश्च। सत्यमेव उक्तम्

आचाराल्लभते ह्यायुराचारादीप्तिताः प्रजाः।
आचाराद्धनमक्षय्यमाचारो हन्त्यलक्षणम्॥

सामाजिकोत्थानाय सदाचारस्य महती आवश्यकता वर्तते। यः जनः सत्यं वदति, नित्यं माता-पितरौ अभिवादयति, गुरुजनानाम् आदरं करोति, परोपकारं च करोति, तस्य जनस्य आयुर्विद्यादि वद्धन्ते।

अभिवादनशीलस्य नृत्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्॥

मूर्खाणामेव जीवनं सदाचारविहीनं भवति। सोऽल्पायुः भवति तस्य सर्वत्र निरादरो भवति। आचारहीनः पुरुषः धर्महीनः पुण्यहीनश्च भवति। सदाचारेण नरस्य आदरो भवति। जगति तस्य प्रतिष्ठा भवति। अस्माकं देशे काले-काले बहवः सदाचारिणोऽभवन्। सदाचारेण श्रीरामचन्द्रः मर्यादा पुरुषोत्तमोऽभवत् राणासेतारादयोपि सदाचारिणः आसन्। सदाचारेण मानवः राष्ट्रस्य समाजस्य च कल्याणं कर्तुं शक्नोति। अतोऽस्माभिः सदाचारस्य पालनं कर्तव्यम् मनुनाप्युक्तम्–

सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान् नरः।
श्रद्दधानोऽनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति॥

➡ (12) अस्माकं विद्यालयः

[2012 HF, 13 BN, 14 CV, 19 CZ, 20 ZT, ZU]

अन्य शीर्षक

- **अस्माकं महाविद्यालयः** [2011 IA]
- **मम विद्यालयः**

मानवः स्वभावतः एव जिज्ञासुः वर्तते। जिज्ञासमाना एव मानवः किमपि कर्तुं समर्थाः। ज्ञान-पिपासां प्रशमयिमेव मानवैं विविधाः प्रयासाः कृताः। मानवप्रयासपरिणतिरेव विद्यालयानां संस्थापना। एतादृशानां प्रयासानामेव फलमस्ति मम विद्यालयः तत्र वयं ग्रामीणाः छात्रां विद्याध्ययनं कुर्मः। मम विद्यालयः नगरस्य पूर्वस्यां दिशि स्थितः, अयम् च नगरस्य श्रेष्ठः विद्यालयः अस्ति।

मम विद्यालये सप्तत्रिंशत् कक्षाः द्वेसहस्रे छात्राः च सन्ति। विद्यालये एकः विशालः कक्षः अस्ति, अस्मिन् कक्षे विद्यालयस्य विभिन्नोत्सवानाम् आयोजयन्ति। अस्माकं विद्यालयस्य विशालं सुन्दरं च भवनं दर्शकानां चेतांसि हरति। विज्ञान-कलादीनां पृथक्-पृथक् सुशोभनाः कक्षाः विद्यन्ते। मम विद्यालये एकः पुस्तकालयः अस्ति। अत्र एकः वाचनालयः, षड् प्रयोगशालाः च सन्ति। विद्यालयस्य मध्ये सुशोभनम् उपवनं, विशाल क्रीडाङ्गनं जलधारा यन्त्रम् च सन्ति। मम विद्यालये एकोनत्रिंशत् अध्यापकाः सन्ति।

मम विद्यालयस्य प्रधानाचार्यः पूज्यपाद; श्री यज्ञदत्तः विविध विषयेषु पारङ्गतः, परन्तु संस्कृत विषये तु तस्याधिकार एव। सः एकः व्यवहारकुशलशीलवान् विनयसम्पन्नः सफलवक्ता प्रधानाचार्यः अस्ति। मम विद्यालयस्य अध्यापकाः विविधविद्याप्रवीणाः सन्ति। सर्वे एव स्व-स्व विषये पारङ्गताः सन्ति। अत्र न केवलं पठनं-पाठनं च भवति, अपितु सदाचारस्य पाठोऽपि पाठ्यते, देशभक्तेः समाजसेवाः, च भावाः अपि छात्राः गृहण्न्ति।

अस्मिन् विद्यालये एन.सी.सी., बालचरशिक्षायाः अपि सुप्रबन्धोऽस्ति। ते छात्राः क्रीडनादि प्रतियोगितासु प्रथमं स्थानं प्राप्नुवन्ति, ते पुरस्कारादिकमपि लभन्ये। साम्प्रतम् अस्माकम् एतत् कर्त्तव्यमस्ति यत् वयं विद्यालयस्य कीर्ति सर्वतः प्रसारयितुं प्रयतेम।

➡ (13) सत्यमेव जयते नानृतम्

[2012 HG, 17 NP]

अन्य शीर्षक

- **न हि सत्यात्परोधर्मः**
- **सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितम्** (2017 NN)

मानवधर्मस्य सारभूतं तत्त्वम् इदं सत्यं किमस्ति? किमस्य स्वरूपमिति जिज्ञासायां भारतीयाः वैज्ञानिकाः ऋषयः कथयन्ति यद् आत्मनः स्वरूपमेव सत्यम्। अथवा ईश्वरस्य वा परमसत्तायाः स्वभाव एक सत्यम्। अथवा विविधरूपवत्यां प्रकृत्यां यः शाश्वतः वा सनातनः नियमः स एव सत्यम् वा ऋतमिति कथ्यते। ईश्वरः सत्येनैव जगतः निर्माणं करोति। अनेनैव इदं पालयति अन्ते सत्येन एव जगत् संहरति। इत्थं परमेश्वरस्य जगतः निर्माणपालनं संहारकार्येषु सत्यमेव सहायकं भवति। दयानन्देन सत्यमेव

कथितम् – 'सत्याचरणमेव धर्मः' जगतः प्रतिष्ठा सत्यम्। विधानं साधनं वा सत्यम् साध्यं सत्यम्।

प्रकृतिः अपि ईश्वरस्य सत्यविधानं पालयन्ती दृश्यते। सूर्यः, चन्द्रः, ग्रहनक्षत्रादयः सत्यमेव पालयन्ति। ते सत्यधर्मात् अणुमात्रमपि नैव विचलन्ति। नद्यः पर्वताश्च सर्वे सत्यपरायणाः सन्ति। सूर्यः प्राचीं दिशं विहाय कदापि अन्यास्यां दिशायां नो उदयते तस्येयं सत्यनिष्ठास्ति। गन्धवती पृथिवी कदापि रसवती न भवति। इदमेव तस्याः सत्याचरणम्।

भारतीय संस्कृतेः विशेषतासु सत्यं प्रथमं परिगण्यते। ततः परंशिवं सुन्दरञ्च अथवा अन्यानि तत्त्वानि समायान्ति। सत्यस्य पालने पूर्वं कष्टानि आगच्छन्ति। परन्तु यः धैर्येण तानि सहते सः परिणामे अमृतं लभते। हरिश्चन्द्रादयः सत्यं पालयन्तः व्यवहरन्तः च परमसत्यरूपं नारायणं साक्षात्कृतवन्तः।

किमधिकं सत्येन एव संसारः प्रचलति। सत्याभावे अस्य अस्तित्त्वं नश्यति सत्यस्य पालकाः कदापि पराजयं न लभन्ते। अतएव उक्तम् —

'सत्यमेव जयते नानृतम्'

➡ (14) विश्वशान्ति

संसारे न केवलं मनुष्याः अपितु सर्वे प्राणिनः शान्तिं कामयन्ते। कोऽपि दुःखं कष्टं वा नैव बाधति। अनेन स्पष्टं प्रतीयते यद् विश्वशान्तिभावना प्राणिषु स्वाभाविकी वर्तते। वेदाः भणन्ति — "मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे", "मा गृधः कस्यस्विद्धनम्"। सर्वेषामीश्वरप्रार्थनायां विश्वशान्तिकामना प्राप्यते।

भारतस्य सर्वे दार्शनिकाः विश्वशान्त्यर्थं प्रयतमानाः दृश्यन्ते। इमे चिरशान्ते उपायान् अनेकधा वदन्ति। यथा भगवतः बुद्धस्य वाणी विश्वशान्ति भावपूता प्राणिनां शान्त्यर्थमेव प्रवृत्ता सती दृश्यते। तीर्थङ्कराणां जैनमुनीनां सर्वे उद्योगाः एतदर्थमेव सम्भूताः। एवं सत्यपि विश्वशान्तिरवः नैव अनुश्रूयते। स्त्रीबालहत्यादिकं, बलात्कारः श्रूयन्तेऽहर्निशं दृश्यन्ते च समाचारपत्रेषु व्रायश; अवलोक्यन्ते इत्थमत्र संसारे विग्रहस्य वातावरणं प्रबलमास्तै। सः मनुष्यविनाशाय घातकानि अस्त्राणि निर्मिते प्रयुङ्क्ते च। अणुबम्ब-हाइड्रोजन बम्ब-आविष्कारैः एवंविधैः विश्वस्य वातावरणं संकटग्रस्तमशान्तिमयं वा सञ्जातम् अस्ति। अतएव अन्यानि राष्ट्राणि शान्त्यर्थं तृषितनेत्रैः भारतं प्रति अवलोकयन्ति। अतः मनुष्यतारक्षायै भारतीय मनुष्यैः गम्भीरतया चिन्तनीयम्। अस्मिन् भोगप्रधानं भौतिकवादे मानवजीवनस्य एकस्यैव पक्षस्य उन्नतिः भवति। परिपूर्णः विकासस्तु आध्यात्मिकीमुन्नतिं बिना न सम्भविष्यति। अतः चिरशान्त्यर्थम् आध्यात्मिकः विकासः कर्तव्यः। अनेन समग्रेऽपि विश्वे शान्तिः आगमिष्यति।

भारतेन स्वातन्त्र्यप्राप्तेः पश्चात् विश्वशान्तिदिशायां बहवः प्रयत्नाः विहिताः। भूतपूर्व प्रधानमन्त्रिणा जवाहर लाल नेहरू महोदयेन अनेक बारं संसारः युद्धविभीषिकातः संरक्षितः। भारतस्य वर्तमानशासनमपि घोषयति यत् अस्माभिः अणुशक्तिः मानवोपयोगिषु कार्येषु एव प्रयोज्या, मानवविनाशाय नैव विश्वशान्तेः प्रश्न, सम्पूर्णमानवतायाः प्रश्नः अस्ति। अतएव विश्वस्य समस्तैरेव मनुष्यैः अस्मिन् विषये भृशं चिन्तनीयम् तदनु आचरणीयम् भारतदेशः विषयेऽस्मिन् विशुद्धां भूमिकां निर्वोढुं शक्नोति चेत्सःभौतिकवादं प्रति आकर्षणं परित्यज्य आध्यात्मिकोन्नतिं स्वजीवनस्य परममुद्देश्यं निर्धारयेत्।

➡ (15) अस्माकं देशः

[2017 NP, 19 DE, 20 ZO, ZR, ZS]

अन्य शीर्षक

- **भारतवर्षम्**
- **महान् देशः**
- **भारत वैशिष्ट्यम्**
- **प्रियं भारतम्**
- **भारत राष्ट्रगौरवम्** [2010 CG]
- **विश्वगुरुः भारतदेशः** [2014 CV]

भारतम् अस्माकम् देशः अस्तिः। पर्वतानाम् राजा हिमालयः अस्य देशस्य प्रधानः पर्वतः अस्ति। सः अस्य उत्तरे मुकुटमणिरिव शोभते। रत्नाकरः सदा अस्य चरणौ प्रक्षालयति। ब्रह्मपुत्र गंगा-यमुना-सिन्धु-नर्मदा महानद्यादिनद्यः अस्य हृदयम् सिञ्चन्ति। अस्य प्राकृतिकी शोभा अनुपमा अस्ति। अत्र षण्णाम् सुन्दरः क्रमः अस्ति। चित्र विचित्रवर्णशाली सुगन्धपुष्पाणि बसन्ते संसारे अन्यत्र नास्ति। शरदृतोः दुग्ध धवला चन्द्रिका अन्यत्र कुत्रास्ति न।

अत्रत्य साहित्य दर्शनज्योतिषारायुर्वेदादीनि विश्वस्य प्राचीनतमानि साहित्यदर्शन-विज्ञानानि सन्ति। अत्रत्यऋग्वेदः विश्वस्य प्राचीनतमः लिखितग्रन्थः अस्ति। अत्रत्या संस्कृतिः विश्वस्य प्राचीनतमा संस्कृतिः अस्ति। वयमीदृशेसर्वश्रेष्ठ देशे जन्म लब्ध्वा धन्याः स्मः। इयं रमणीया भारतभूमिः धन्या। अस्या महिमा सर्वविदिता एव–

'धन्योऽयं भारत देशो धन्येयं सुरभारती।
तदुपासकाः वयं धन्याः अहो धन्यपरम्परा॥'

इयं खलु भारतभूमिः भगवतो नारायणस्य प्रियालीला स्थली बुद्ध-दयानन्द सदृशाः महात्मानः, कालिदास-भवभूति सदृशाः कवयश्च इमाम् एव भूमिं स्वजन्मना अलंचक्रुः। अस्मिन् देशे विविध-धर्मावलम्बिनः, विविध वेश-भूषा धारिणः, विविध भाषा भाषिणः जनाः वसन्ति। एतत् एव अस्माकं देशस्य महत् वैशिष्ट्यम् अस्ति।

''वसुधैव कुटुम्बकम्'' इत्यादि वेदोक्तवाक्यकदम्ब साफल्याय भगवता महात्मा बुद्धरूपेणावतारो गृहीतः। महात्मना बुद्धेनाखिले संसारे विश्वबन्धुत्वभावना प्रकटिता प्रेम व्यवहारश्च स्थापितः। अद्यापि जापान चीन-तिब्बतादि प्रदेशेषु बुद्ध ईश्वरवत् पूजितो विद्यते। गंगा-यमुना सरस्वति प्रभृतयः नद्यः स्वमधुर जलेन भारतवासिजनान् तर्पयन्ति हिमालयसदृशाः अगम्याः पर्वताः दुर्ग इव अत्र राजन्ते।

➡ (16) परोपकारः

[2011 IC, 13 BM, BL, 14 CU, 19 DB, DC, 20 ZT]

अन्य शीर्षक

- **परोपकाराय सतां विभूतयः** [2014 CY]
- **परोपकारस्य महत्त्वम्**
- **परोपकारः पुण्याय** [2010 CH]

परेषाम् उपकारमेव 'परोपकारः' इति कथ्यते। कतिपयाः पुरुषाः स्वार्थमेव सर्वप्रधानं गणयन्ति परेषां कृते किंचित् न कुर्वन्ति, परन्तु सर्वे एतादृशाः न सन्ति। केचन् महापुरुषाः परोपकारिणः भवन्ति। परोपकारमाचरतोऽप्यन्तःकरणे कश्चिदवर्णनीयः सन्तोषः समुत्पद्यते। परोपकारेणात्मा शान्तिं प्राप्नोति। सज्जनाः परोपकारेणैव प्रसन्नाः भवन्ति। परोपकारेणैव हृदयं पवित्रं सदयश्च भवति। परोपकारः हिन्दुसभ्यतायाः प्रधानमङ्गमस्ति। प्राचीनकालात् हिन्दुजातौ प्रसिद्धाः परोपकारशीला महानुभावाः अभवन्।

महान् परोपकारी दधीचिः आसीत्। स वृत्रासुर वधार्थं स्वअस्थीन्यपि अददात्। महाराजः शिवः कपोतरक्षार्थं स्वमासं श्येनाय प्रादात्। आधुनिकयुगे जवाहरलालनेहरूमहोदयः सर्वान् स्वार्थान् विहाय स्वदेशवासिनां हिताय प्रयत्नं कुर्वन् स्वजीवनमपि अमुञ्चत्। लोकोपकारः परोपकारिणां स्वभावसिद्धो धर्म इति। परोपकाराय दिनकरः तपति। नद्यो वहन्ति, मेघाः वर्षन्ति, चन्द्रो विराजते। परोपकारेणैव नूनं शरीरस्य शोभा भवति। कायक्लेशमनुभूयापि सन्तः करुणापराः परेषामुपकारमाचरन्ति। परोपकारिणः जना एव तडाग कूपादीन् खानयन्ति, उद्यानानि आरोपयन्ति, धर्मशालां पाठशालां च निर्मापयन्ति। अतः कथयितुं शक्यते यत् परोपकार भावनया एव अस्माकं, अस्माकं देशस्य वासिनाम् कल्याणं भवति। परोपकार भावनैव अस्माकं देशस्य च कल्याणः भवितुं शक्यते।

➡ (17) वर्षाकालः

अन्य शीर्षक

- **वर्षावर्णनम्**
- **वर्षर्तुः** [2016 TM, 18 BN]

विश्वे अनेकाः ऋतवः भवन्ति, किन्तु भारतवर्षे षड्ऋतवः प्रमुखाः भवन्ति। तेसां नामानि– बसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, शरद, हेमन्तः,

शिशिरः सन्ति। एषु ऋतुषु वर्षर्तेः अति महत्त्वम् अस्ति। यतोहि भारतदेशः एकः कृषिप्रधानदेशः अस्ति। भारतवर्षस्य कृषकाः वर्षर्तौ एव निर्भराः भवन्ति।

वर्षासु क्वचित् मेघाच्छन्नम् आकाशं घनान्धकारयुक्तं क्वचिच्चेत् मेघनिर्मुक्तं च प्रकाशितं सत् अतिमनोहरं प्रतीयते कृष्णाकाशे उड्डीयमाना बकपङ्क्तिः नयनयोः आकर्षिका भवति। आकाशे इन्द्रधनुषोः दृश्यं कस्य चित्तं न हरति। उपवनानां क्षेत्राणां शोभा तु अपूर्वा दृश्यते। सर्वत्र हरीतिमा विराजते। एतत् प्रतीयते यत् पृथिव्या हरिच्छाटिका धृता। जलपूर्णाः नद्यश्च मनोरमा भवन्ति क्षेत्रेषु भूमिं कर्षन्तः कृषकाः अतितरां मोदन्ते। सुवृष्ट्या मानवस्य जीवनं निर्विघ्नं प्रचलति। फल-पुष्प-लता-पादपादि वनस्पतयः सुप्रसन्नतामभिव्यञ्जयन्ति सायं समये गावः वनात् प्रतिनिवृत्य गोष्ठमुपगच्छन्ति। वृक्षशाखासु दोलानन्दममन्दमनुभवन्ति च। व्रजस्थमन्दिरेषु 'घटाच्छटादर्शनम्' सज्जया प्रारभ्यते। वर्षाकाले यथा सर्वे प्रसन्नतामनुभवन्ति तथैव वर्षाभावे हा हा शब्दः सर्वत्र श्रूयते, जीवनोपयोगिवस्तूनामभावो भवति, परस्परं शत्रुवदाचरन्ति जनाः। अतएव वर्षाऋतूनां राज्ञी कथ्यते।

➡ (18) पर्यावरण सुरक्षा [2014 CS, 17 NM]

अन्य शीर्षक

- **पर्यावरण समस्या** [2011 IB, 15 TO]
- **पर्यावरणम्**
- **पर्यावरणस्य महत्त्वम्** [2013 BP, 20 ZR]
- **पर्यावरणस्य संरक्षणोपायाः** [2010 CI, CK]
- **पर्यावरणस्य सुरक्षायाः महत्त्वम्**
- **पर्यावरण रक्षणम्** [2010 CH, CJ, 13 BL, 15 DU, DT]
- **पर्यावरण शुद्धिः**
- **पर्यावरण-संरक्षण आवश्यकता।** [2012 HH]
- **पर्यावरण-संरक्षणम्।** [2014 CT, CU, 17 NK, 18 BN, 19 DE, 20 ZP]
- **पर्यावरण-प्रदूषणम्।** [2019 DA, 20 ZS]

प्रकृत्या; तत्त्वजातं परितः आवृत्य संस्थितम्, अतः कारणात् तत्पर्यावरणं कथ्यते। कस्यपि देशस्य प्राकृतिक यद् वातावरणम्, तदैव तद् देशस्य पर्यावरणमुच्यते। मृत्स्ना-जलवायु-वनस्पति-खग-कीट-पतङ्ग जीवाणवः एते पर्यावरणस्य घटकाः सन्ति। सम्प्रति वैज्ञानिके युगे नवीनानाम् उद्योगानां विकासात् पर्यावरणम् असन्तुलित विकृतं च अभवत् । उद्योगशालाभ्यः निःसृतं दूषित जलं तत्परिवेषं दूषयति। दूषितं जलं प्रवहत् नद्याः जलमपि विकारयति। कोलाहलेनापि पर्यावरणे बहवो दोषाः समुत्पाद्यन्ते।

मानवः अविवेकेन सलिलासु नदीषु मूत्रादिकं मालिन्यम्, औद्योगिकं रासायनिकं जल शवान् च प्रवाहयति सर्वमेतत् अतिभीतिकर प्रदूषणं कुरुते, येन पेय जलं विषाक्तं भवति। परमाणु परीक्षणैः उद्योगशालायां तापैश्च महती ताप विकृतिः क्रियते। येन मानवः प्राणहराः दोषा प्रजायन्ते।

प्रदूषणं शोधयितुं शासनेन महान्तः प्रयासाः क्रियन्ते। वृक्षारोपणैः संरक्षणैश्च पर्यावरणं शुद्धः भवति। अस्माभिरपि पर्यावरणं शोधयितुं यथाशक्यं प्रयासः कर्त्तव्यः। पर्यावरणे शुद्धं जाते वयं सुखेन जीवितुं शक्नुमः।

➡ (19) आधुनिक समाजे नारीणां स्थितिः [2017 NJ]

भारतीय संस्कृतौ नारीणां समुन्नतं स्थानं सर्वैः स्वीक्रियते। अन्यासु संस्कृतिषु नारीणां एतादृशं स्थानं नासीत् यथा भारतीय संस्कृतौ नारीणां मिलति। "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" सर्वत्र भारतवर्षे व्यापकरूपेण हृदयेषु रमते। वेदानामाध्यात्मिकतायाः भावनायाः विस्तार उपनिषत्सु विद्यते। उपनिषत्सु वरिष्ठ मुनीनां चर्चा प्रसङ्गे कात्यायनी, मैत्रेयी, गार्गी, वाचक्नवी, अपाला प्रभृतीनां गूढ विषयसन्दर्भे समुल्लेखः प्रमाणयति यत् नारीणां कीदृशः स्थानं तत्समयेऽत्रदेशे आसीत्। तत्र युगे गुरुकुले नारीणां

विद्याऽध्ययनव्यवस्था आसीत्। जीवनावधि ब्रह्मचर्याश्रमव्यवस्थापि समुचितासीत्। तपस्विनीनां जीवनप्रसङ्गे पुराणेषु कथा बाहुल्यं विद्यते। नारीदत्तोपदेशानां महत्त्वमपि साहित्ये विशिष्टं स्थानं भजते।

धार्मिकेषु आयोजनेषु, सामाजिकेषु कार्येषु, राजनैतिक जीवनेषु नारीस्थान सर्वथासुरक्षितमद्यापि विद्यते। भ्राता स्वसुः पूजनं करोति देवीवत्। पिता कन्यादानं करोति ब्रह्मलोकं प्राप्यते। अन्येऽपि हिंसकाः नारी स्थानं सर्वथैवमन्यते किं पुनः साधवः। अतः भारतीय संस्कृतौ नारीणां परमोच्चस्थानं विद्यते।

➡ (20) विज्ञानस्य चमत्कारः [2019 DF]

अन्य शीर्षक

- **विज्ञानम्**

वर्तमान युगे विज्ञानेन समुन्नति शिखरं चुम्बितम्। अतः वर्तमान युगं वैज्ञानिकयुगम् इति अभिधीयते। पुरा यात्राकरणं, समाचारसम्प्रेषणं, समाचार-ज्ञानञ्च सुदुर्लभमेव आसीत्। परमिदानीं तु द्विचक्रयानेन, मोटर शकटि वायुयानेन च यात्रां कुर्मो वयम्। दूरभाष, 'बेतार का तार' दूर श्रवण इत्याख्य यन्त्रेण च स्वल्पेनैव समये दूरतोऽपि वार्ता प्राप्तेऽस्याभिः। शीघ्रगामी जलयानेन च समुद्रस्य वक्षस्थलं विदीर्णयन् शीघ्रमेव समुद्रयात्रापि कर्तुं सक्षमः मानवः। दूरदर्शकयंत्रेण-सुदूरस्थितानामपि पदार्थानां समीपे तु, दर्शनं विज्ञानस्यैवोपहारम्। वार्तासंप्रेषणस्य साधनमपि विज्ञानेन प्रदत्तमस्ति, वर्तमानकाले तु 'तार द्वारा' क्षणेषु समाचार; प्रेषितुं शक्यते। 'दूरभाष' साहाय्येन च एकदेशस्य मानवः अन्य देशीय जनैः सह वार्तां कर्तुं पार्यते। 'रेडियो' यन्त्रेण विभिन्न मनोरञ्जनस्य सामग्री तु प्राप्यत एव सहैव अनेक नवीन समाचाराणामपि परिज्ञानं भवति। चित्रपटेषु संचरन् नरनारीणां चित्रं मेवानां गर्जनं, प्रदेशस्य शस्यश्यामला भूमिः, बालभास्मरस्योदयः निशायाश्च कालिमा सदैव दर्शकानां मनांसि बलादेव सम्मोहयन्ति चित्तमनुरञ्जयन्ति च। अहो धन्यमिदं विज्ञानं येन प्रदत्तमेतादशाश्चर्यमयं पदार्थम्। मुद्रण यन्त्रस्य साहाय्येन पुस्तकानां मुद्रण-सौकर्येण विविधाध्ययन सामग्री जनैः सम्प्राप्यते। प्रतिदिनं समाचार पत्राणि मुद्रणयन्त्रेणैव मुद्रितानि भवन्ति।

चिकित्साक्षेत्रे तु विज्ञानस्य साफल्यं दृष्ट्वा आश्चर्यस्य सीमाऽपि लघुः भवति। अनेकेषां रोगाणाम् इदानीम् नामापि नास्ति। प्रायशःय सर्वेणमपि अंगानां परिवर्तन शल्य चिकित्सकैः क्रियते। एक्सरे साधनेन आन्तरिकाणामङ्गानां विकाराणां विषये परिज्ञानं चिकित्सकैः क्रियते। 'डायनामाइट' साधनेन विशालोपत्यकां खण्डाकारं करोति।

➡ (21) महात्मा गाँधी

अन्य शीर्षक

- **कश्चित् महापुरुषस्य वर्णनम्** [2017 NJ]

महात्मा गांधी भारतस्य स्वतन्त्रता-संग्रामस्य एकः कुशलः सेनापतिः आसीत्। सः जगतः जनेषु वन्दनीयेषु महापुरुषेषु अग्रगण्यः आसीत्। महात्मा गांधी एकः सदाचारशीलः सत्यनिष्ठः देशभक्तश्च महापुरुषः आसीत्। अयं समाजसुधारकोऽपि आसीत्। गान्धिमहाभागस्य जन्म सौराष्ट्र देशस्य पोरबन्दर नगरे एकोनसप्तयधिकाष्टादश शततमे ईस्वीयाब्दे अक्टूबरमासस्य द्वितारिकायां पुतलीबाईदेव्याः दक्षिणकुक्षिते अभवत्। अस्य पितुः नाम 'करमचन्द' गान्धी आसीत्।

अस्य सहधर्मिणी कस्तूरबाबाई आसीत्। राजकोटे भावनगरे च अनेन महात्मना शिक्षा प्राप्ता। अस्य पूर्णनाम मोहनदासः करमचन्दः गान्धी आसीत्। बाल्यकाले अयम् अतिनिपुणः छात्रः न आसीत्। सः वैरिस्टरी नाम्नी परीक्षां इंग्लैण्डदेशे समुत्तीर्य भारतं प्रत्यावर्तत। दक्षिणाफ्रीकादेशस्थ भारतीयानां दुर्दशादर्शनमात्रेण अस्य हृदयपरिवर्तनं जातं। तेषाम् उद्धारार्थं सत्याग्रहयुद्धः अहिंसात्मकः तत्राभवत्। भारतीय कांग्रेससभायां सम्मिलितो भूत्वा गान्धी महोदयः असहयोग आन्दोलनमपि अचालयत्। महात्मनः नेतृत्वे 1930 ईस्वीये कांग्रेसेन पूर्णस्वतन्त्रतायाः प्रस्तावः सर्वसम्मत्या स्वीकृतः। सन् 1947 वर्षे देशोऽयं स्वतन्त्रतां प्राप। अन्ततः अहिंसात्मकेन आन्दोलनेन एव सः भारतं परतन्त्रतापाशात् स्वतन्त्रम् अकरोत्।

➡ (22) महाकवि कालिदासः

[2011 IC, 12 HD, HJ, 13 BJ, 14 CX, 17 NO, 18 BN]

अन्य शीर्षक

- **संस्कृत श्रेष्ठः कविः** [2016 TK]
- **कोऽपि कविः**
- **कश्चित् प्रेयान् कविः** [2011 IB]
- **मम् प्रिय (प्रेयान्) कविः** [2016 TM, 20 ZO]
- **उपमा कालिदासस्य** [2010 CH, 17 NL]

कालिदासोऽस्माकं देशस्य राष्ट्रियः कविः आसीत्। भारतीयसंस्कृत्याः सभ्यतायाश्च प्रतीकःकालिदासः देशप्रसिद्धो महाकविरभूत्। आदौ कालिदासः महामूर्खः आसीत्। तस्य विद्योत्तमा नाम्नी विदुषी भार्यासीत्। पत्न्या अनादरेण दुःखितः कालिदासः कालिदेव्याः आराधनमकरोत्। अथ देव्याः वरं प्राप्य स महाकविरभूत्।

पुरा कवीनां गणना प्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदासः।
अद्यापि तत्तुल्यकवेरभावादनामिका सार्थवतीः बभूव॥

कालिदासस्य रचनासु संस्कृतकाव्यशैल्याश्चारुतमं रूपं विद्यते। रघुवंशकुमारसंभवौ महाकाव्ये स्तः। ऋतुसंहारः मेघदूतश्च गीतिकाव्ये। अभिज्ञानशाकुन्तलं, विक्रमोवर्शीयं मालविकाग्निमित्रं च त्रीणि नाटकानि सन्ति। पाश्चात्य महाकविगेटे महोदयः कालिदासस्य 'अभिज्ञान-शाकुन्तलम्' सर्वश्रेष्ठ नाटकेषु गण्यतेस्म। नाटकमिदं न केवलं संस्कृतनाटकेषु अपितु विश्वनाटकेषु सर्वोत्कृष्टं पदं भजते। सप्तांकमिदं नाटकं सहृदयैः नितरां पठ्यते, अभिनीयते स्मर्यते च।

कुमारसम्भवं महाकाव्यं कलादृष्ट्या कालिदासस्य मनोहरा सृष्टिरस्ति। रघुवंशोऽप्येकमुत्कृष्टं महाकाव्यम् तथा मेघदूतोऽप्यतिरमणीयं गीतिकाव्यमस्ति। कालिदासः शृङ्गाररसप्रधानकविस्तथा प्रकृत्याः प्रवीणपूजकः आसीत्। तस्य प्रकृतिवर्णने निरीक्षकस्य नवीनकल्पनायाः कमनीयता चास्ति। स स्त्रीसौन्दर्यस्य साम्यं प्रकृत्या सह अकरोत्।

कविकालिदासः स्वजीवनवृत्तविषये स्वनिर्मितेषु ग्रन्थेषु किंचिदपि न लिलेख परं सर्वत्र प्रसिद्धाभिराख्यायिकाभिः अस्य कवेर्नाम उज्जयिनी नगरीवास्तव्यविक्रमादित्येन सह सम्बद्धं विद्यते। उपमालङ्कारेणसह कालिदासस्य घनिष्ठः सम्बन्धः। अस्य रचनासु समासप्राचुर्यताभावः दीर्घसमासाभावश्च तथा सर्वा रचनाः प्रसाद गुणपूर्णाः स्पष्टाः सन्ति। उपमालंकारस्य सम्बन्धे तु इदं प्रसिद्धम्– 'उपमा कालिदासस्य'।

➡ (23) महाकविः बाणः

अन्य शीर्षक

- **वाणी बाणो बभूव हि**
- **मम प्रेयान् कविः**
- **बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्**
- **बाणभट्टः** [2017 NN]
- **बाणस्तु पञ्चाननः** [2019 DA, 20 ZQ]

बाणभट्टस्य पितुः नाम चित्रभानुः मातुश्च राज्यदेवी आसीत्। जननानन्तरमेव अयं मातृसुखविहीनोऽभवत्। दौर्भाग्येन उपनयन संस्कारानन्तरमेव अयं पितृविहीनोऽपि जातः। बाणस्य पार्श्वे पैतृकं प्रचुरं धनमासीत्। मित्राणिनैकविधस्वभावकानि आसन् विद्वांसः चौराः, नर्तकाः, नटाः, ऐन्द्रजालिकादयः सर्वे बाणप्रिया आसन्। कालान्तरे स्वगुणैर्विद्वत्तया च बाणः हर्षदेवस्य राजकविर्जातः। हर्षवर्धनस्तं 'वश्यवाणीकविचक्रवर्ती' उपाधिनाऽभूषयत्। बाणभट्टस्य जन्मभूमिः प्रीतिकूटसमीपे आसीत्। ऐतिहासिकैरस्य कालः 450-480 ईस्वीयाब्द; स्वीकृतः। 'हर्षचरितम्' बाणस्य प्रथमा गद्यकृतिरस्ति। कल्पनाप्रचुरायां अलंकारपूरितायां शैल्यां तात्कालिकसामाजिक व्यवस्था, राजनीतिकादर्शदशा दर्शनीयैव। पितृव्यभ्रात्रा श्यामलेन हर्षचरिते श्रवणेऽभिरुचिः प्रकटिता तदा

बाणभट्टेन तं श्रावयितुं हर्षचरितं विरचितम्। अस्मिन् ग्रन्थे बाणेन स्वकीयं जीवनवृत्तं काव्यसौष्ठवपूर्वकं व्यरचि। राज्ञो हर्षवर्धनस्य चरितम् तस्य वैभवम्, प्रभावम् च जीवनादिमरणान्तं व्यरचयत्।

कादम्बर्यामवान्तरकथानामाधिवयभवनेऽपि तस्याः नैसर्गिकविकासे नास्ति क्वचिदतिविरोधः। कादम्बरी मुख्या नायिका तस्याश्चर्चा ग्रन्थारम्भे न विद्यतेऽपि तु मध्ये कृता, अतः पाठकानामुत्तरोत्तरमुत्कण्ठा वर्धते। उपोद्घाते महाश्वेतायाः प्रणयकथा विद्यते, प्रारम्भे शूद्रकनृपतेः सभायामद्भुतेन शुकेन सह चाण्डालकन्यायाः प्रवेशः प्रदर्शितः।

'कादम्बरी' ग्रन्थस्य पात्राणि भूलोकतः स्वर्गलोकपर्यन्तं पर्यटन्ति। कथायां बाणवृत्तिस्तादृशी न रमते यादृशी— अप्रासंगिक वर्णनेषु तथापि तस्य पात्राणि व्यक्तित्वसहितानि सन्ति। शुकनासनामकमन्त्रिणश्चरित्रचित्रणम्, श्वेतवसनभूषितायाः, तपस्विकन्याः– महाश्वेतायाश्चरित्रचित्रणं कादम्बर्याश्चानुपमं स्वरूपवर्णनम् पाठकानां हृदये स्वप्रभावमङ्कयन्ति।

➡ (24) होलिकोत्सवः

[2011 IB, 13 BO, 15 DU, 16 TP, 19 DD]

अन्य शीर्षक

- **वसन्तोत्सवः** [2017 NO]
- **वसन्त-सुषमा** [2017 NM]

भारतवर्षे चतुर्षु प्रमुखतमेषु पर्वसु वा उत्सवेषु होलिकोत्सवः अथवा वसन्तोत्सवः हर्षेण जनमानसमान्दोलनयन्, उल्लासेन विह्वलयन्, प्रमोदेन नर्तयन्, शरीरेषु मनसु चाभिनवप्राणशक्तिं सञ्चारयन् प्रत्येकस्मिन् वर्षे फाल्गुनमासस्य पूर्णिमा तिथौ समागच्छति। भौगोलिकपरिस्थित्यनुसारं फाल्गुनमासः बसन्तर्तौ परिगण्यते। शिशिर ऋतोः शैत्याधिक्यानन्तरं समशीतोष्णवातावरणोपेतः फाल्गुनमासः समायाति मासेऽस्मिन् शैत्यस्य माधुर्यमनुभूयते। साम्प्रतं प्राकृतिक सौन्दर्यस्य प्राणिशरीरेषु नवाः प्राणाः सञ्चरन्ति। तेषु पल्लवाः सञ्जायन्ते। कवीनां कल्पना प्रखरा भवति। चित्रकाराणां तूलिका अभिनवचित्राणि रचयति। भगवता श्रीकृष्णेन तु गीतायाम् 'ऋतुनां कुसुमाकरः' इति उक्त्वा अस्य ऋतोः महत्त्वं प्रकटितम्। अतएव वसन्तः ऋतुराजः इति कथ्यते। वसन्तकाल एव मधुऋतुनाम्नाऽपि प्रसिद्धिं याति।

पौराणिकी मान्यताऽस्ति यत्प्रहलादः दैत्यराजस्य हिरण्यकशिपोः पुत्रः भगवतः विष्णोः परमभक्तः आसीत्। हिरण्यकशिपुः नितरां नास्तिकः पापिष्ठः, सर्वज्ञमानी, आत्मानमेव 'सर्वशक्तिमान्' इति अनुभवन् स्वपुत्रकृता भगवतः विष्णोः पूजामर्चनां कथमपि सोढुं नाशक्नोत्। तेन स्वपुत्रस्य हननार्थम् अनेके उपायाः कृताः, तथापि मृत्युः तमणुमात्रमपि न अस्पृशत्। अन्ते हिरण्यकशिपुः स्वस्वसारं होलिकामादिशत् यत्सा प्रह्लादं स्वाङ्केनिवेश्य अनले तिष्ठेत्। सः विश्वासमकरोत् यद् ब्रह्माणः वरप्रभावात् होलिका तु नैवः धक्ष्यति एवञ्च प्रह्लादः सर्वभावेन दग्धः भविष्यति, किन्तु भगवतः विष्णोः भक्ताय अनलः शीतलः अभवत् तथा होलिकादाहः जातः।

होलिकादाहस्य पश्चात् सर्वेजनाः होलिका स्थानं गच्छन्ति। होलिकां प्रणम्य परस्परं प्रेम्णा मिलन्ति, उरसा आलिङ्गन्ति च। प्रातः प्रतिपदायां प्रमोदोत्सवः समायोज्यते। परस्परं विविधाः रङ्गाः प्रक्षिप्यन्ते। सर्वथा भेदं विहाय स्त्रियः पुरुषान् नानावर्णैः रञ्जयन्ति। जनाः विजयामास्मिन् सेवन्ते, तदानीमुन्मत्ता इव प्रतीयन्ते। ब्रजस्य होलिकोत्सवः समग्रे एव भारते प्रसिद्धः। द्वितीयायां पुनः अभिनववसनैः परिधानैश्च विभूषिताः सन्तः स्वगृहेषु, प्रतिष्ठानेषु वा प्रमुखस्थलेषु अवतिष्ठन्ते। तत्र सर्वे वैरं विहाय मिलन्ति। अस्मिन् मिलनं नितरामावश्यकम्। वर्षाणां वैराणि दूरी भवन्ति तथा प्रेमपूर्ण व्यवहारे परिणमन्ति।

➡ (25) शरद् ऋतु

भारत देशः प्रकृतिकृपापात्रं वर्तते। अत्र प्रकृतिनटी सानन्दं रमते। भारतम् अलङ्कर्तुं षड्ऋतवः क्रमशः समायान्ति। सर्वे ऋतवः स्वं महत्त्वमधिकुर्वन्ति तेषु षड्ऋतुषु शरदृतुरपि एकः ऋतुरस्ति। ऋतुरयं मनोज्ञः, रमयः सुखदश्च वर्णितः। अयम् ऋतु आश्विनमासाद् आरम्भ आमासद्वयत् वर्तते।

अस्यारम्भे कासपुष्पाणां निर्मलता अतीव शोभते। नद्यः, तडागाः, सरोवराश्च निर्मलजलसनाथाः मनोहराः प्रतिभान्ति। मार्गाः

विपङ्का शोभन्ते। पक्वशालियुक्तानि क्षेत्राणि नेत्राणि आकर्षयन्ति। सपङ्कजाः सरोवराः अतीव राजन्ते। शरदः शोभा विलोक्य कवयः काव्यं सृजन्ति। अस्मिन् ऋतौ दिवसाः लघवः रजन्यश्च दीर्घाः भवन्ति। अत्र शाकानाम् फलानाञ्च आधिक्यं भवति। तानि स्वल्पमूल्येन उपलभ्यन्ते अतः निर्धनाः अपि तानि उपभोक्तुं शक्नुवन्ति। अयम् ऋतुः स्वास्थ्याय हितकरः भवति। कालिदासेन ऋतुरयमित्थं वर्णितः

शरदि कुसुमसङ्गाद् वायवो वान्ति शीताः।
विगतजलदवृन्दाः दिग्विभागा मनोज्ञा॥
विगतकलुषमभः क्षीणपङ्का धरित्री।
विमलकिरणचन्द्रव्योमतारा विचित्रम्॥

➡ (26) दीपावली

[2008 EU, 12 HE, 16 TM]

अन्य शीर्षक

- **दीपमालिका**
- **दीपोत्सवः** [2012 HH]

अस्माकं देशे भारतवर्षे बहवः उत्सवाः— धार्मिकाः, सामाजिकाः, राष्ट्रियाः केचिच्च महापुरुषजन्मोत्सवाः सन्ति। तेषु उत्सवेषु दीपावली-महोत्सवः, होलिकोत्सवः रक्षाबन्धनं, ईद, स्वतन्त्रता दिवसः गणतन्त्रदिवसः, गान्धीजयन्ती आदयः प्रमुखाः सन्ति। दीपमालिका हिन्दूनां एकतमः पवित्रतमः धार्मिक उत्सवः अस्ति।

कार्तिक मासस्य अमावस्यायां दीपावली महोत्सवः समायाति। भारते दीपावली— महोत्सवस्यैकं विशिष्टं महत्त्वम् विद्यते। सुप्रसिद्धेषु चतुः संख्याकेषु महोत्सवेषु वैश्य— वर्गस्यायं महोत्सव इति कथयन्ति जनाः। ब्राह्मणानां यथा श्रावणी पर्व, क्षत्रियाणां दशहरा पर्व, शूद्राणाम् होलिका पर्व, वैश्यानां तथैव दीपावली पर्व, किन्तु नेढं शास्त्रमर्यादायामवस्थितः सिद्धान्तः। दीपावल्याः कतिपय दिवसपूर्वमेव जनाः नगराणिग्रामाश्चालंकुर्वन्ति स्वच्छयन्ति च। गृहाणि सुधया धवली कुर्वन्ति, मनोहरैश्चित्रैरन्यैश्च भित्तिकादीन्यलंकुर्वन्ति। दीपावल्या महोत्सवः बलिराज्ये समभवत्। देव प्रार्थनया भगवता वामनावतारमाकलय्य बलिराज्यमङ्गी-कृतमासीत्। भविष्योत्तर पुराणे प्रमाणं विद्यते—

पुरा वामनरूपेण प्रार्थयित्वा धरामिमाम्।
ददावतिथिरिन्द्राय बलिं पाताल-वासिनम्॥

दीपमालिका महोत्सवे बालाः स्त्रियः युवकाः सर्वेऽपि प्रसन्नाः भवन्ति। दीपानां पङ्क्तयोऽपूर्वा कामपि शोभां दधते। मुम्बई प्रभृति वृहन्नगराणि च विद्युतोऽतिशयतेजसा देदीप्यमाना भवन्ति। अस्मिन् महामहनीये महोत्सवः एकः अपिस्थानं कृतवान्। केचन् मूर्खाः अस्मिन् दिने द्यूतक्रीडया अस्योत्सवस्य पवित्रतां दूषयन्ति स्वकीयं धनं विलोपयन्ति च। येऽत्रदिवसे द्यूतक्रीडया लक्ष्मीमधिगन्तुमीहन्ते ते कलङ्कभाजनानि सन्ति।

➡ (27) अहिंसा परमोधर्मः

[2010 CG, 11 IA, 13 BN, 14 CS, CT, CX, 16 TJ, 17 NJ, 19 DF]

'अहिंसा' आत्मनः सर्वोत्तमं साधनमस्ति। आत्मा परमात्मनोऽपररूपमस्ति। अतएव आत्मनः उन्नति दृष्ट्वा परमात्मा प्रसन्नतां प्राप्नोति उन्नतिं करोति। यदा समाजस्य सदस्याः अहिंसावादिनो भविष्यन्ति तत् समाजोऽपि उन्नति प्राप्स्यति। इदं सत्यं यत् अहिंसा परमोधर्मः। अधुना जगति हिंसायाः साम्राज्यमस्ति। युद्धादीनि आधुना मनोरञ्जनस्य साधनानि सन्ति। पशुहत्यापि भवति। वैदिक काले मनुष्याणां पशूनां च बलिप्रथा आसीत्। हिंसा त्रिविधा भवति–मनसा, वाचा, कर्मणा च। तिसृणां हिंसानां परित्यागोऽहिंसेति कथ्यते। अहिंसया नरः सुखमनुभवति निर्भयं च विचरति। प्रत्येक धर्म हिंसायाः निन्दा समुपलभ्यते। अहिंसा देव्यायाः शरणमुपागतेन महात्मगांधि-महाभागेन वैदेशिकपाशेन निगडिता स्वकीया भारत-भूमिः बन्धनमुक्ता कृता। भगवान् बुद्धोऽपि जनान् अहिंसायाः महत्त्वमवोचत्। 'तस्य पञ्चशील' सिद्धान्तेषु अहिंसायाः सर्वप्रथमं स्थानं वर्तते। महात्मा गान्धि महाभागस्तु स्वकीयं जीवनमेव

अहिंसायाः समाराधे समर्थितवान्। अहिंसायाः वलेन विश्वशान्तिः सम्भवः अहिंसाभावनया जनेषु विश्वबन्धुत्वोध्येनपारस्परिक विवादः शाम्यंति इत्थं मतभेद रहित प्रजासु सुखस्य साम्राज्यं भविष्यतीति निर्विवादः।

अहिंसोपासकः कलिंगाधिपतिः सम्राट् अशोकोऽपि प्रजासु अतीव प्रियो जातः स अहिंसायाः प्रचारोऽपि देशः विदेशे अकारयत्। अहिंसाऽस्माकं भारतीय संस्कृते परं महत्त्वपूर्णमेव वर्तते। अतः सत्यमेव उच्यते— **अहिंसा परमोधर्मः।**

➡ (28) छात्रजीवनम्

[2012 HF]

अन्य शीर्षक

- **विद्यार्थी जीवनम्**

ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्यं, वानप्रस्थ, संन्यासश्चेति चत्वारः आश्रमाः सन्ति। ब्रह्मचर्याश्रमे बालकाः गुरुं समीपं गत्वा विद्याया अध्ययनं कुर्वन्ति। स एव कालः विद्यार्थीजीवनम् कथ्यते। अस्मिन् आश्रमे छात्राः विद्याध्ययनं कुर्वन्ति स्म। विद्यार्थिजीवनम् अतिरमणीयं अस्ति। मानवजीवनस्य कोऽपि भागः तादृशो नास्ति, यो विद्यार्थिजीवनस्य साम्यं कुर्यात्। एतस्मिन् बाल्यजीवने लवणतैलयोः चिन्ता न भवति नापि स्वपालनपोषणयोः। अस्मिन् काले बालः चिन्तारहितं भवति।

अधुना विद्यार्थिजीवनम् शुल्कं दत्वा पठन्ति, परन्तु प्राचीनकाले विद्यार्थिनः गुरो सेवां कृत्वा एव पठन्तिस्म। वर्तमानकालस्य विद्यार्थिनं जीवनं बाह्याडम्बरपूर्णमस्ति। ते यथा कथञ्चि परीक्षां समुत्तीर्य कुत्राऽपि भृत्यपदं प्राप्य दग्धोदरपूर्णं भूत्वा स्वाध्ययनस्य कृतार्थतां मन्यन्ते। ते येषु शास्त्रेषु परीक्षां समुत्तरन्ति तद्विषयकं पर्याप्त ज्ञानमपि न सम्पादयन्ति। अर्थादिबोधम् उपेक्ष्य ग्रन्थाक्षराण्यव रटन्तस्ते वस्तुतः पुस्तककीटाः एव सन्ति। आधुनिक विद्यार्थिजीवने संशोधनं आवश्यकम् अस्ति। येन विद्यार्थिनः स्वकर्त्तव्य कृत्वा गुरुभक्ताः भवेयुः बाह्याडम्बरं च परित्यज्य दत्ताबधानाः विद्या पठेयुः। यदैव ते शरीरसुखं परित्यज्य विद्याध्ययनं च करिष्यन्ति तदैव विद्वांसः भविष्यन्ति। यतो हि सुखार्थिभिः विद्यादुष्प्राप्या तथा चोक्तम्–

सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतो सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्या विद्यार्थी वा त्यजेत् सुखम्॥

➡ (29) मम प्रियं पुस्तकम्

अन्य शीर्षक

- **कश्चिद् ग्रन्थः**
- **मदीयं प्रियपुस्तकम्**
- **रामायणं**

रामायणं लौकिक संस्कृत भाषानिबद्धम् आदिकाव्य इति कथ्यते। अस्य ग्रन्थस्य रचना आदिकविना वाल्मीकिना कृता। अस्मिन् महाकाव्ये भगवतो रामचन्द्रस्य चरितं वर्णितं वर्तते। अस्मिन् काव्ये सप्तकाण्डानि सन्ति। दशरथनन्दनो रामो मानवतायाः आदर्शभूतः। त्रेतायुगे जातस्य परमादर्शभूतस्य रघुवंशस्य विविधाः कथाः जनैः सावधानतया कथ्यन्ते श्रूयन्ते च। महर्षि वाल्मीकिना रघुवंश चूडामणेः श्रीराम भद्रस्य सर्वाः कथाः रामायणे विलिखिताः।

रामायणम् उपजीव्य लौकिक संस्कृति भाषान्तरे च बहुनां काव्यानां-दृश्य-काव्यानां च–रचना भूता। अत्र करुणरसः स्वाभाविकरूपेण मनोहरति। काव्य रसपानरसिकाः विलक्षण विचक्षणा उत्तममहाकाव्य निर्देशावसरे रामायणी कथां प्रथमाद्रियन्ते। न केवलं विविध रसालंकार गुण-छन्दसां प्रयोगचमत्कारेण अपितु रामादिलोकप्रसिद्धपात्राणाम् आदर्शभूत चरित्रचित्रकारणेन अस्याः कथायावैशिष्ट्यं विद्वद्भिः स्वीक्रियते। रामायणी कथायाः पात्रसृष्टि सजीवा व्यक्तित्व परिपूर्णा च दृश्यते। विश्वविश्रुतासु संस्कृतिषु 'भारतीय संस्कृति' सर्वदा एव स्वान्तर्निहित गौरवेण प्राथम्यं भजते, तस्याः संस्कृतेः स्रोतो-रूपेण रामायणी कथाया उल्लेखः कर्तुं शक्यते। रामायणग्रन्थे भावगाम्भीर्यं, भाषावैभवं, शैली-रमणीयकं, परिष्कृतिप्राचुर्यं काव्य विभूतिः च पदे-पदेऽवलोक्यते।

पित्रोराज्ञापालनम् भ्रातृप्रेमवैशिष्ट्यं पातिव्रतपरिपालनम् आपदि-धैर्यस्वीकरणं विदेशे नीतिव्यवहरणं च रामायणे विभिन्नकथासु परिपूरितं विद्यते।

➡ (30) सन्तोषः परमं सुखम्

अन्य शीर्षक

- **सन्तोष एव पुरुषस्य परमम् निधानम्**

अयमेव सर्वेषां सुखानां मूलमस्ति। सन्तोषः पुरुषस्य महद् धनं कथ्यते। सन्तोषरूपे धने प्राप्ते सति सर्वाणि धनानि प्राप्तानि भवन्ति। सन्तोषेण मानवाः सर्वसुखम् लभन्ते। सन्तोषेण एव मानवाः जीवने प्रसन्नाः भवन्ति। संतोषरहिताः जना अनन्तकोटिधनं प्राप्यापि सदा दुःखिता एव दृश्यन्ते। असंतोषिणां जीवनमशान्तियुक्तं दुःखमयं च भवति। सन्तोषेण विना पराभवं प्राप्नुवन्ति जनाः। सन्तोषः सर्वश्रेष्ठं धनम्। अस्मिन् लोके सन्तोषेण समं किमपि धनं नास्ति। स्वप्रयत्नानां फलस्वरूपं योऽत्र लब्ध्वा तृप्तिमनुभवति स संतोषी कथ्यते य लब्ध्वापि तृप्तिं न लभते सोऽसंतोषी भवति। संतोषिणां चेतांसि परेषां सम्पदम् विलोक्य मलिनानि नैव भवन्ति। अतएवोच्यते—

सर्वत्र संपदस्तस्य, संतुष्टं यस्य मानसम्।
उपानद्गूढ़वृपादस्य, ननु चर्मातेव भूः॥

वैभवसम्पन्नशीलाः अपि असन्तोषिणः सर्वदा दुःखं लभन्ते। यत्र सन्तोषिणः अर्थान् न अनुधावन्ति तत्र असन्तोषिणः न केवलं शारीरिकं कष्टं लभन्ते, अपितु मानसिकं कष्टमपि लभन्ते च। सन्तोषश्चिन्तामणिः इति मनीषिणः वदन्ति तत् शोभनं। जनाः सन्तोषेणादरं लभन्ते। सन्तोषस्यातीव महिमा अस्ति।

➡ (31) तीर्थराज प्रयागः

[2015 DT, 19 CZ, 20 ZP, ZU]

अन्य शीर्षक

- **प्रयागवर्णनम्** [2013 BM]
- **सतीर्थराजो जयति प्रयागः** [2011 HZ, 14 CW]

अस्मिन् देशे अनेकानि तीर्थस्थलानि सन्ति यथा— केदारनाथ-बद्रीनाथ-द्वारिका-जगन्नाथपुरी-रामेश्वर-हरिद्वार-काशी-प्रयाग-प्रभृतीनि प्रसिद्धानि तीर्थानि सन्ति। प्रयागः सर्वेषु तीर्थेषु श्रेष्ठः अस्ति अतएव प्रयागराजः तीर्थानां राजा कथ्यते। उत्तरप्रदेशराज्ये प्रयागस्य विशिष्टं स्थानमस्ति। अत्र ब्रह्मा श्रेष्ठं यागम् अकरोत् अतः अस्य नाम 'प्रयागः' अभवत्। प्राचीनकालेऽत्र बहवः अश्वमेधादयः यज्ञाः सम्पन्नाः अभवन्। इदं नगरं भारतवर्षस्य प्रमुखनगरेषु वर्तते। प्रयागस्य अपरं नाम 'इलाहाबाद' इति अकबरः स्वकीयस्य इलाही धर्मस्य अनुसारेण अकरोत्।

तीर्थराज प्रयागः गंगायमुनयोः संगमे स्थितः अस्ति। ऋषेः भरद्वाजस्य आश्रमः अपि अत्रैव अस्ति यत्र पुरा दशसहस्रमिताः विद्यार्थिनः अधीतिनः आसन्। प्रयागः विविध-विधानां प्रमुखं केन्द्रम् अस्ति। अत्र उच्चशिक्षायाः प्रधानकेन्द्रं प्रयागविश्वविद्यालयं वर्तते। अत्रैव उत्तरप्रदेशस्य राज्यस्य उच्चन्यायालयः, माध्यमिक शिक्षा-परिषद् राष्ट्रभाषा-हिन्दी-प्रचारे संलग्नं हिन्दी साहित्य सम्मेलनं प्रसिद्धम् आनन्दभवनं च विराजन्ते।

भारतस्य स्वतन्त्रतान्दोलनस्य इदं नगरं प्रधानकेन्द्रम् आसीत्। श्रीमोतीलालनेहरू, महामना मदनमोहनमालवीयः आजादोपनामकश्चन्द्रशेखरः, अन्ये च स्वतन्त्रतासंग्रामसैनिकाः अस्यामेव पावनभूमौ उषित्वा आन्दोलनस्य सञ्चालनम् अकुर्वन्। राष्ट्रनायकस्य पण्डित जवाहरलालस्य इयं क्रीडास्थली कर्मभूमिश्च। भारतवर्षस्य त्रयः प्रधानमन्त्रिणः अत्र जन्म अलभन्त। उद्योगव्यापार दृष्ट्या अपि प्रयागः उत्तरप्रदेशेषु पञ्चसु महानगरेषु एकतमोऽस्ति।

एवं गङ्गा-यमुना-सरस्वतीनां पवित्रसङ्गमे स्थितस्य भारतीयसंस्कृतेः केन्द्रस्य च महिमानं वर्णयन् महाकविः कालिदासः सत्यमेव अकथयत् —

समुद्रपत्न्योर्जलसन्निपाते पूतात्मनामत्र किलाभिषेकात्।
तत्त्वावबोधेन बिनापि भूयस्तनुत्यजां नास्ति शरीरबन्धः॥

➡ (32) आतंकवादः

[2011 IA, 20 ZU]

अन्य शीर्षक

- **भारतवर्ष आतंकवादः**
- **आतंकवादः समस्या समाधानश्च**
- **आतंकवादः देशस्य च अखण्डता**
- **आतंकवादभयम्**
- **आतंकवादोन्मूलनम्** [2016 TM]

हिंसात्मकाः गतिविधयः एव आतंकवादः इति कथ्यते। इमे गतिविधयः केन पुरुषेण समूहेन वा सत्तापक्षे बलपूर्वकं क्रियन्ते। ते येन-केन प्रकारेण स्व इच्छान् आपूरयितुं प्रयत्नं कुर्वन्ति। राजनीतिकशर्तान् स्वीकारयितुं उग्रवादिनः तेषां च संगठनाः हिंसायाः अपहरणां बम विस्फोटकानां च मार्गान् आश्रित्य प्रशासनं आनमितुं प्रयासं कुर्वन्ति। आतंकवादः राजनीतिकमहत्त्वाकांक्षाणां सुपरिणामः। भारतवर्षे पंजाब-कश्मीर-असम-अन्यश्च पूर्वोत्तराणां राज्यानां आतंकवादिनः स्वगतिविधयः कुर्वन्ति स्म।

अद्य विश्वस्य अनेकाः देशाः आतंकवादिभिः त्रायन्ते। श्रीलंकायां 'लिट्टे' इति नाम्ना प्रसिद्धा आतंकवादिनः स्वोद्देश्यं आपूरयितुं संलग्नाः तु रूस देशस्य चेचन्यायां आतंकवादिनः संलग्नाः। आतंकवादः न तु केवलं भारतस्येव समस्या अपितु संसारस्य अनेकाः देशाः अस्याः समस्यायाः ग्रसिताः सन्ति। 2001 ईस्वीये वर्षे सितम्बर मासस्य एकादशायां तारिकायां आतंकवादिनः अमेरिकादेशस्य ट्विनटावर्से पेंटागने च वायुयानेन विनाशं अकुर्वन्। आतकं परिसमाप्तुं अस्य मूलेषु प्रहारं कर्तव्यम्। आतंकवादिनां संगठनानाम् अर्थतन्त्रं समूलं नश्येत्। आतंकवादः सर्वदृष्टया निन्दनीयं त्याज्यम् अस्ति। गान्धि महोदयस्य अस्मिन् देशे आतंकवादं न कोऽपि स्थानम् अस्ति।

➡ (33) राष्ट्रभाषा हिन्दी *अथवा,* अस्माकं राष्ट्रभाषा

हिन्दी भाषा विविधभाषा बहुले भारते राष्ट्रभाषा पदं भजते। अस्य कारणं हिन्दी भाषायाः देवनागरीलिपिः तथा अस्याः सरलता अस्ति। देवनागरी लिपिः विश्वस्य सुसरला तथा वैज्ञानिकी लिपिः विद्यते। सरलतायाः दृष्ट्या कापि भाषाः अस्याः समतां नैवाधिगच्छति। पाश्चात्याः जनाः सहजतया इमां भाषाम् अध्येतुं शक्नुवन्ति। अद्य तु सर्वेषु एव देशेषु अस्याः अध्ययनं विधीयते।

अस्याः भाषायाः महाकवयः कबीर-सूर-तुलसी-जायसी-भूषण-बिहारी-प्रसाद-पन्त-महादेवी प्रभृतयाः मातुः भारत्याः वरदपुत्राः सन्ति। इमे न केवलं भारतस्य अपितु विश्वस्य मनीषिणामपि मनांसि मोहयन्ति। एभिः भारतीया संस्कृतिः हिन्दी भाषायामवतारिता। अद्य तुलसीदासं, सूरं, प्रसादम् अवबोद्धु पाश्चात्याः भारतभुवमागच्छन्ति। अद्य राजकीय कार्येषु हिन्दीभाषा भ्रशं प्रयुज्यते। किञ्चित्कालात्पूर्वं मौरिशसदेशे विश्व हिन्दी सम्मेलनं जातम्। तत्र विश्वस्य हिन्दी विद्वांसः अनुरागिणश्च समायाताः। सर्वैः हिन्दी प्रेमिभिः अस्याः भाषायाः प्रचाराय प्रसाराय च पुण्यः संकल्पः ग्रहीतः। तत्र भारतेन गम्भीरा भूमिका निर्व्यूढा। अस्माभिः सर्वैः हिन्दी प्रेमिभिः स्वमातृ-भाषायाः प्रचाराय प्रसाराय च सहयोगः प्रदातव्य।

भारतीयैः स्वराष्ट्रभाषायै एवं महत्त्वं देयम्। अद्य भारते कथ्यते कैश्चिज्जनैः यद् हिन्दी भाषा आन्तर्राष्ट्रीय व्यवहारार्थं नैव क्षमा, परन्तु तैरिदं स्मरणीयं यद् हिन्दी भाषा आन्तर्राष्ट्रीयव्यवहाराय समर्थाऽस्ति सर्वभावेन। यतः हिन्दी भाषायाः विद्वान्सः सर्वेषु एव देशेषु विद्यन्ते। महद्दुःखमद्य तु भारतीयः आंग्लभाषायाः ज्ञानद्वारा आत्मानं ख्यापयति, कृतकृत्यतामनुभवति। तस्य बुद्धौ भ्रमपूर्णः अयं विचारः रूढः सञ्जातोऽस्ति यद् हिन्दीभाषया जीवने कापि उन्नतिः प्राप्तुं न शक्यते।

➡ (34) वेदोऽखिलो धर्ममूलम् (2018 BK)

1. वेदोऽखिलो धर्ममूलम् इत्याह मनुः।
2. वेदः धर्मे प्रमाणम् — इति अस्य वाक्यस्य अर्थः भवति।
3. वेदाः चत्वारः सन्ति — ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, अथर्ववेदः, सामवेदः इति।
4. वेदः भारतीय धर्मसंहिता अस्ति।
5. वेदमूलाः स्मृत्यः अपि धर्मे प्रमाणम् इत्यत्र न कापि शङ्का कार्या।
6. येऽपि वेदमूला ग्रन्था उपनिषदादयः ते सर्वेऽपि धर्ममूलाः सन्ति।
7. वेदोनाम सर्वज्ञानमयः, सर्वेषां च धर्माणाम् आकारः।
8. महाभारते उक्तं यद् असौ एव धर्मः यो अन्यस्य धर्मस्य विरोधं न करोति।
9. धर्मम् अवलम्ब्य अथत्वे जनाः परस्परां घृणाम् उत्पादयन्ति।
10. सर्वेषु सम्प्रदायेषु मूलभूतः धर्मः तु एकः एव।
11. धारणाद् धर्मः प्रतिष्ठाम् आप्नोति।
12. अतएव 'मातृदेवोभव', 'पितृदेवोभव', 'आचार्यदेवोभव' इत्याद्यादेशाः धर्मव्यवस्थापकाः एव सन्ति।
13. सत्यं वद् धर्मं चर-इत्यादि वाक्य जनानां धर्ममूलत्वं अविरुद्धम् एव।
14. मनुना यः कश्चिद् अपि धर्मः प्रतिपादितः स सर्वोऽपि वेदे अभिहितः अस्ति।
15. धर्मस्य आडम्बराद् मुक्तिः नितराम् आवश्यकी।

➡ (35) विद्यालयस्य अनुशासनम्

1. अनुशासनं विना किमपि कार्यं कापि वा व्यवस्था सम्यक् न प्रचलति।
2. अनुशासनपराणां जनानां सर्वे सकारम्भाः सफलाः भवन्ति।
3. अनुशासनस्य पाठं प्रकृतिः प्रददाति।
4. सूर्यः सदैव अनुशासने तिष्ठति, अत एव यथा समयम् उदेति यथासमयं च अस्तमेति।
5. चन्द्रमाः अपि अनुशासने तिष्ठन् क्षीयते वर्धते च।
6. अस्माकं विद्यालयस्य अनुशासनं सर्वैः स्तूयते।
7. तत्र सर्वेऽपि अध्यापकाः अनुशासनपराः सन्ति अत एव छात्राः अपि अनुशासनप्रियाः सन्ति।
8. तत्र यः अनुशासनं न परिपालयति असौ दण्डयः भवति।
9. अनुशासनस्य पाठशाला, वस्तुतः, गृहम् एव भवति।
10. ये बालकाः गृहे अनुशासनव्रताः ते विद्यालये अपि अनुशासनव्रताः भवितुम् अर्हन्ति।
11. अस्माकं प्रधानाचार्यः ब्रूते–यः छात्रजीवने अनुशासनं पालयति तस्य सर्वम् अपि जीवनम् अनुशासनबद्धं भवति।
12. समुद्रः सर्वदा प्रकृतेः अनुशासने तिष्ठति अत एव असौ गंभीरः रत्नाकरः च कथ्यते।
13. अस्माकं विद्यालये एका अनुशासन परिषदः अस्ति।
14. समये-समये विद्यालयीयानुशासनस्य समीक्षा अपि भवति।

➡ (36) स्वतन्त्रता-दिवसः

अथवा, स्वातन्त्र्यफलम् [2013 BK]

ईसवीये 1947 तमे वर्षे अगस्तमासस्य पञ्चदशे दिवसे अस्माकं श्रेष्ठः देशः स्वतंत्राऽभूत्। अस्मिन्नेव दिवसे आंग्लशासकाः

शासनसूत्रम् अस्माकं देशस्य नेतृणां हस्तेषु समर्प्य स्वदेशं गताः। तस्मिन् दिनं वयं स्वतन्त्रताः अभूम? इदमेव तद् दिनम् आसीत्, यस्य कृते अस्माकं पूर्वजाः महतं बलिदानम् अकुर्वन्। बहवः कारागारेषु असह्यानि कष्टानि अन्वभवन्। अनेके यस्टिकाभिः प्रताड़िताः, अन्ये गुलिकाभिः हताः, अन्ये च बहवः शूलमारोप्य हताः। बहुना मूल्येन प्राप्ता स्वतन्त्रता सर्वेषां देशवासिनां कृते महत् उत्सवस्य विषयऽभवत्।

उपरिवर्णिते स्वतंत्रता दिवसे सर्वस्मिन् देशे महान् उत्सवः समजायत। प्रसन्ना भारतीयाः आनन्दमग्नाः हर्षेण उन्मत्ता आसन्। सर्वेषु राजकीय-कार्यालयेषु त्रिवर्णोध्वजः समुच्छ्रितः। सर्वत्र ग्रामेषु च स्थाने-स्थाने उत्सवाः अभवन्, मिष्ठान्नानां वितरणम्, नर्तनम्, गानं च यत्र-तत्र भवन्ति स्म। जनाः दीपावलीभिः गृहाणि प्रकाश्य स्वहर्षातिशयं सूचितवन्तः। नगराणां ग्रामाणां च विचित्रैव शोभासीत्।

स्वतंत्र भारतराष्ट्रस्य प्रथमः प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरूः राजधान्यां लोहितवर्णे दुर्गे त्रिवर्णध्वजम् उच्छ्रितं कृत्वा भारतीयस्वतन्त्रतायाः घोषणाम् अकरोत्। ततः प्रभृति अगस्तमासस्य पञ्चदशः दिवसः अस्माकं देशस्य महत् राष्ट्रियं पर्व सञ्जातम्, यत् प्रतिवर्ष ध्वजारोहणम् कृत्वा स्वतन्त्रता दिवसरूपेण सम्पूर्णे देशे सम्मानितं भवति।

आधुनिके तु समये प्रतिवर्षं स्वातन्त्र्योत्सवः सम्पूर्णे देशे भवति। प्रातः छात्राणां 'प्रभात फेरी' कार्यक्रमः भवति। ग्रामे-ग्रामे नगरे-नगरे सभानाम् आयोजनम् भवति। सभासु नेतृणां प्रेरणाप्रदानि भाषणानि भवन्ति।

➡ (37) हिमालयः

हिमालयः भारतस्य उत्तरस्यां दिशि स्थितः। संसारस्य पर्वतेषु उत्तुङ्गतमस्यास्य गिरेः उच्छ्रिताः शिखरमालाः सर्वदा एव हिमाच्छादिताः तिष्ठन्ति तस्मात् एव अयं हिमालयः कथ्यते। अस्य शिखराणि देशीयानां विदेशीयानां च आकर्षणकेन्द्राणि अपि वर्तन्ते। हिमालयात् एव गंगा-यमुना-शतद्रु-सरयु प्रभृतयः नद्यः निःसृत्य प्रवहन्ति। अस्य उपत्यकासु बहुप्रकाराणि फलानि उत्पद्यन्ते, नानाविधा खगमृगाश्च वसन्ति।

हिमालयस्य उपत्यकायां कश्मीरो नाम प्रदेशः विद्यते। अयं प्रदेशः स्वकीयेन प्राकृतिक सौन्दर्येण भूस्वर्गः कथ्यते। कश्मीर प्रदेशात् पूर्वस्यां दिशि किन्नरदेशः स्थितः अयमेव प्राचीनसाहित्ये 'देवभूमि' नाम्ना प्रसिद्ध आसीत्। हिमालयः अस्माकं देशस्य रक्षकः वर्तते। दीर्घकालं यावदसौ पर्वतः प्रहरीव स्थिते भारतस्य रक्षां अकरोत् किन्तु अद्यत्वे तु अस्य रक्षा भारतेन करणीया आपातिता, यतो हि अस्माकं प्रतिवेशी चीनदेशः कश्चिद् भूभागं स्वकीयं कृत्वा यदाकदा भारतीयसीम्न उल्लङ्घनं हिमालयस्य पारात् करोति। अनेक अस्माकं शूराः अस्यदिवानिशं दृढ़ तिष्ठन्तो रक्षन्ति। अतः कश्चिदपि शत्रुः एनम् उल्लंघ्य भारते नागन्तु शक्नोति। भारतवर्षस्य सुखं समृद्धिश्च हिमालयैव अधीना।

●●

c

खण्ड - 'ङ'

अलंकार

(अंक - 3)

(1) उपमा अलंकार

[2016 DT, TP, TK, TM, TJ, 17 NJ, NK, NL, NM, NN, NO, NP, 18 BK, BN, 19 CZ, DA, DB, DC, DD, DE, DF, 20 ZO, ZQ, ZR, ZS, ZT, ZT]

परिभाषा – उपमान और उपमेय के प्रस्फुट और मनोरम साम्य (सादृश्य) को उपमा कहते हैं। ''प्रस्फुट सुन्दरं साम्यम् उपमा।''

उदाहरण– वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।

स्पष्टीकरण – इस श्लोक में 'पार्वती-परमेश्वरौ' उपमेय है, 'वागर्थौ' उपमान है, 'सम्पृक्तौ' साधारण धर्म है और 'इव' उपमावाचक शब्द है। चूँकि यहाँ उपमान और उपमेय में सम्पृक्ति का सादृश्य दिखाया गया है, अतः यहाँ उपमा अलंकार है।

अन्य उदाहरण (1) स्वप्नेषु समरेऽपि त्वां विजयश्रीर्न मुंचति।
प्रभाव प्रभवं कान्तं स्वाधीन पतिका यथा।

यहाँ पर 'स्वाधीन पतिका' उपमान है, 'विजयश्री' उपमेय है, 'न मुञ्चति' साधारण धर्म है तथा 'यथा' उपमावाचक शब्द है। इस प्रकार यहाँ पूर्णोपमा है।

(2) मधुरः सुधावदधरः पल्लवतुल्योऽतिपेलवः पाणिः।
चकितमृगलोचनाभ्यां सदृशी चपले न लोचने तस्याः।।

'मधुरः सुधावद् अधरः' में 'अधर' उपमेय, 'सुधा' उपमान 'मधुरता' साधारण धर्म तथा 'वत्' वाचक शब्द है। 'पल्लवतुल्योऽतिपेलवः पाणिः' में 'पाणि' उपमेय, 'पल्लव' उपमान, 'अतिपेलवः' साधारण धर्म तथा 'तुल्यं' वाचक शब्द है। इसी प्रकार 'चकित मृगलोचनाभ्यां सदृशी चलपे च लोचने, में लोचन उपमेय, 'चकित मृग के लोचन' उपमान, 'चपलता' साधारण धर्म तथा 'सदृश' उपमा वाचक शब्द है। इस प्रकार यहाँ पूर्णोपमा अलंकार है।

(2) रूपक अलंकार

[2015 DU, 16 TO, TP, 17 NJ, NL, NM, NN, NO, NP, 18 BN, 19 CZ, DA, DB, DC, DD, DE, DF, 20 ZO, ZP, ZQ, ZR, ZS, ZT, ZT]

परिभाषा– जहाँ उपमेय और उपमान में अभेद प्रदर्शित किया जाय वहाँ रूपक अलंकार होता है। 'तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः।'

उदाहरण – पर्याप्तपुष्पस्तवकस्तनाभ्यः स्फुरत्प्रवालोष्ठमनोहराभ्यः।
लतावधूभ्यस्तरवोऽप्यवापुः विनम्रशाखाभुजबन्धनाति।।

स्पष्टीकरण – लताओं, पुष्पस्तवकों और किसलयों में अत्यन्त भिन्न पदार्थ वधू, उरोज और ओष्ठ का अभेद आरोप किया गया है, अतः यहाँ रूपक अलंकार है।

अन्य उदाहरण – किसलयकरैर्लतानां कर कमलैः कामिनां मनो जयति।
नलिनीनां कमलमुखैर्मुखन्दुभिर्योषितां मदनः।।

यहाँ उपमान और उपमेय में साभ्य दिखाते हुए किसलय में करत्व, कर में कमलत्व, कमल में मुखत्व और मुख में चन्द्रत्व का अभेद आरोप किया गया है, अतः यहाँ रूपक अलंकार है।

●●

खण्ड - 'च' (व्याकरण)

1 अनुवाद

(8 अंक)

एक भाषा को दूसरी भाषा में परिवर्तित करना अनुवाद कहलाता है। संस्कृत में वाक्यों के संगठन के लिए कोई निश्चित नियम नहीं है। जैसे – 'रामः गृहं गच्छति' वाक्य ठीक है तथा गृहं गच्छति रामः भी सही है, किन्तु सरलता के लिए क्रमशः कर्त्ता, कर्म और तब अन्त में क्रिया रखी जाती है। इसलिए किसी भी वाक्य का अनुवाद करते समय उसके कर्त्ता, कर्म और क्रिया तथा अन्य कारकों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

संस्कृत में कोई भी शब्द विभक्ति चिह्नरहित नहीं प्रयुक्त होता है तथा इसकी क्रियाओं में लिंग-भेद नहीं होता, तीनों लिंगों में क्रिया समान हो सकती है।

अनुवाद के नियम

(1) हिन्दी में एकवचन और बहुवचन ये दो ही वचन होते हैं, किन्तु संस्कृत में एकवचन, द्विवचन और बहुवचन– ये तीन वचन होते हैं।

(2) हिन्दी की तरह संस्कृत में भी कर्त्ता और क्रिया प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष), मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष के होते हैं।

(3) संस्कृत में तीन वचनों के कारण तीनों पुरुषों में प्रत्येक क्रिया के प्रत्येक काल में $3\times3=9$ रूप होते हैं। जैसे लिख, (लिखना), वर्तमान काल (लट् लकार) में लिखति, लिखतः, लिखन्ति, लिखसि, लिखथः, लिखथ, लिखामि, लिखावः, लिखामः, ये नौ रूप हैं।

(4) हिन्दी की तरह संस्कृत में भी कर्त्ता, कर्म, करण आदि सात कारक होते हैं, किन्तु उन्हें प्रथमा, द्वितीया, तृतीया आदि कहा जाता है। संस्कृत में कारकों को विभक्ति कहते हैं। नीचे की तालिका में उन्हें इस प्रकार देखा जा सकता है–

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथम	कर्त्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से, द्वारा (सहायता)
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए (को)
पंचमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, की, के, रा, री, रे
सप्तमी	अधिकरण	में, पर
सम्बोधन	सम्बोधन	हे, ओ, अरे, ए आदि।

(5) संस्कृत में तीनों पुरुषों में कर्त्ता के ये नौ रूप होते हैं–

पुरुष	एक वचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः (वह)	तौ (वे दोनों)	ते (वे सब, लोग)
मध्यम पुरुष	त्वम् (तू तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब लोग)
उत्तम पुरुष	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब, लोग)

ये नौ कर्त्ता के रूप में आते हैं। इन्हीं के आधार पर प्रत्येक काल की क्रिया के नौ रूपों का प्रयोग किया जाता है।

(6) कर्तृवाच्य वाक्य में क्रिया का प्रयोग कर्त्ता के अनुसार होता है अर्थात् कर्त्ता जिस पुरुष और जिस वचन का होगा, क्रिया भी उसी पुरुष और वचन में होगी। क्रिया जिस काल की हो, उसी काल का रूप लिखा जाता है। जैसे-वह जाता है–यहाँ कर्त्ता 'वह' (सः) प्रथम पुरुष एकवचन का है, अतः उसके अनुसार क्रिया प्रथम पुरुष एकवचन की होगी। 'जाता है' क्रिया वर्तमान काल (लट् लकार) की है। अतः 'गम्' धातु के 'लट्' लकार (वर्तमान काल) का रूप प्रयुक्त होगा, 'गम्' धातु के लट् लकार (वर्तमान काल) के प्रथम पुरुष एकवचन का रूप होता है–गच्छति। इसलिए अनुवाद होगा 'सः गच्छति' (वह जाता है)। इसी तरह अन्य वाक्यों को समझना चाहिए।

(7) संस्कृत में क्रिया के काल को व्यक्त करने के लिए निम्नलिखित लकारों का प्रयोग होता है–

1. वर्तमान काल-लट् लकार। 2. भूतकाल-लङ् लकार।
3. भविष्यत् काल-लृट् लकार। 4. आज्ञासूचक-लोट् लकार।
5. विधिसूचक-विधिलिङ् लकार।

वर्तमान, भूत, भविष्य आदि कालों को सूचित करने के लिए, प्रयुक्त लकारों का रूप इस प्रकार होता है– जैसे-पठ् (पढ़ना) लट्लकार (वर्तमानकाल)।

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

इसी प्रकार वद् (बोलना), रक्ष् (रक्षा करना), हस् (हंसना), खाद् (भोजन करना), नम् (प्रणाम करना), गम् (जाना), पच् (पकाना), आदि धातुओं के रूप होते हैं।

ऊपर बताये गये 9 कर्त्ता और प्रत्येक काल की क्रिया के 9 रूपों का प्रयोग इस प्रकार देखा जा सकता है–

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	सः पठति (वह पढ़ता है)	तौ पठतः (वे दोनों पढ़ते हैं)	ते पठन्ति (वे लोग, पढ़ते हैं)
मध्यम पुरुष	त्वं पठसि (तुम पढ़ते हो)	युवां पठथः (तुम दोनों पढ़ते हो)	यूयं पठथ (तुम सब लोग पढ़ते हो)
उत्तम पुरुष	अहं पठामि (मैं पढ़ता हूँ)	आवां पठावः (हम दोनों पढ़ते हैं)	वयं पठामः (हम सब लोग पढ़ते हैं)

(8) ऊपर कहे गये मध्यम पुरुष तथा उत्तम पुरुष के 6 कर्त्ताओं को छोड़कर शेष जितने कर्त्ता होते हैं उनके साथ प्रथम पुरुष की क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे छात्रः पठसि (छात्र पढ़ता है) कृष्णः पठति (कृष्ण पढ़ता है), बालकः पठन्ति (लड़के पढ़ते हैं), भवान् पठसि (आप पढ़ते हैं), कः पठति (कौन पढ़ता है), गजः गच्छति (हाथी जाता है) आदि।

इस प्रकार कर्त्ता और क्रिया को जोड़ा जाता है। इनके अतिरिक्त वाक्य में जितने शब्द आते हैं उनका प्रयोग उनके कारकों के अनुसार होता है।

(9) अनुवाद करते समय सबसे पहले वाक्य का कर्त्ता खोजना चाहिए। कर्तृवाच्य में क्रिया के पहले कौन लगाने से उत्तर में आनेवाली वस्तु 'कर्त्ता' होती है। फिर कर्त्ता यदि एकवचन हो तो प्रथमा विभक्ति के एकवचन का रूप, द्विवचन हो तो 'प्रथमा' के द्विवचन का रूप और बहुवचन हो तो प्रथमा के बहुवचन का रूप निश्चित करना चाहिए। इसके बाद कर्त्ता के पुरुष पर ध्यान देना चाहिए। कर्त्ता के पुरुष और वचन जान लेने पर क्रिया के काल का निश्चय करना चाहिए। इसके बाद क्रिया के उस काल के रूपों में से कर्त्ता के पुरुष तथा वचन वाला एक रूप छाँटकर लिख देना चाहिए। इसके बाद वाक्य के अन्य शब्दों के कारक तथा वचनों के अनुसार रूप भी यथास्थान लिख देना चाहिए।

(10) क्रिया का सामान्य रूप 'धातु' कहलाता है, यथा–गच्छति, पठसि, अपठत्, पठेत् आदि क्रियाओं में गच्छ, (गम्), पठ्, धातु हैं। ये सब धातु तीन प्रकार की होती हैं—परस्मैपद, आत्मनेपद तथा उभयपद। परस्मैपद धातुओं में तिप्, तस्, झि। सिप्, थस्, थ। मिप्, वस्, मस् प्रत्ययों का तथा आत्मनेपद धातुओं में त, आताम्, झ। थास्, आथाम्, ध्वम्, इट्, दहिङ्, महिङ्, प्रत्ययों

का प्रयोग होता है। विशेष नियमानुसार इन प्रत्ययों के स्वरूप में भी कुछ परिवर्तन होता है। भिन्न-भिन्न प्रत्ययों के जोड़ने से धातु के विविध रूप बनते हैं।

लकारों के आधार पर अनुवाद के नियम

1. लट् लकार (वर्तमान काल)

नियम 1. वर्तमान काल में कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है और उसी के अनुसार क्रिया प्रयुक्त होती है। यथा–

(1) श्याम पुस्तक पढ़ता है। श्यामः पुस्तकं पठति।
(2) सभी छात्र विद्यालय जाते हैं। सर्वे छात्राः विद्यालयं गच्छन्ति।
(3) तुम नगर कब जाते हो? त्वं नगरम् कदा गच्छसि?
(4) हम दोनों गर्म जल पीते हैं। आवाम् उष्णं जलं पिबावः।
(5) मैं विद्यालय क्यों जाता हूँ? अहं विद्यालयं किं गच्छामि?

नियम 2. जब वाक्य में दो कर्त्ता होते हैं और 'च' से जुड़े होते हैं तो क्रिया द्विवचन की होती है। यथा–

(1) राम और श्याम बाजार जाते हैं। रामः श्यामश्च आपणं गच्छतः।
(2) सीता और गीता खाना खाती हैं। सीता गीता च भोजनं खादतः।

नियम 3. जब वाक्य में दो कर्त्ता 'वा' (अथवा) से जुड़े होते हैं तो क्रिया द्विवचन की न होकर एकवचन की होती है। यथा–

राम अथवा मोहन बाजार जाता है। रामः मोहनः वा आपणं गच्छति।

नियम 4. यदि मध्यम पुरुष के साथ प्रथम पुरुष का कर्त्ता हो तो क्रिया मध्यम पुरुष द्विवचनान्त होती है और यदि एक से अधिक कर्त्ता हों तो क्रिया मध्यम पुरुष बहुवचनान्त होती है। यथा–

(1) तुम और श्याम जाते हो। त्वं श्यामः च गच्छथः।
(2) दिनेश और तुम दोनों जाते हो। दिनेशः युवां च गच्छथ।

इसी प्रकार यदि उत्तम पुरुष के कर्त्ता के साथ प्रथम पुरुष एवं मध्यम पुरुष के कर्त्ता हों तो क्रिया उत्तम पुरुष की वचनानुसार होगी। यथा–

(1) मैं और राम जाते हैं। अहं रामश्च गच्छावः।
(2) सुरेश, तुम और मैं जाते हैं। सुरेशः त्वं अहं च गच्छामः।
(3) मैं, तुम और वे सब पढ़ते हैं। अहं त्वं ते च पठामः।

नियम 5. यदि कई कर्त्ता 'वा' अथवा 'या' से जुड़े होते हैं, तो क्रिया अपने सबसे निकट कर्त्ता के पुरुष तथा वचन के अनुसार होती है— यथा

(1) सोहन अथवा तुम जाते हो। सोहनः त्वं वा गच्छसि।
(2) तुम अथवा मोहन जाते हो। त्वं मोहनः वा गच्छति।
(3) मैं अथवा तुम जाते हो। अहं त्वं वा गच्छसि।

नियम 6. संस्कृत में आप प्रथम पुरुष का कर्त्ता है। भवान् (आप) भवन्तौ (आप दोनों) भवन्तः (आप सब) प्रथम पुरुष पुँल्लिंग के कर्त्ता हैं, जबकि भवति (आप) भवत्यौ (आप दोनों) भवत्यः (आप सब) प्रथम पुरुष स्त्रीलिंग के कर्त्ता हैं। जैसे– आप सब जाते हैं = भवन्तः गच्छन्ति। आप सब जाती हैं = भवत्यः गच्छन्ति।

नियम 7. अव्यय या विकाररहित शब्दों के योग में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे – कृष्णः इति प्रसिद्धः। यहाँ पर इति अव्यय के कारण कृष्णः में प्रथमा विभक्ति है।

आदर्श वाक्य

1. त्वं पठसि – तुम पढ़ते हो, पढ़ती हो।
2. युवां पठथः – तुम दोनों पढ़ते हो, पढ़ती हो।

3. यूयं पठथ – तुम सब या तुम लोग पढ़ते हो, पढ़ती हो।
4. त्वं रामश्च गच्छथः – तुम और राम जाते हो।
5. युवां रामः हरिश्च गच्छथ – तुम, राम और हरि जाते हो।
6. यूयं महेशः सुरेशश्च गच्छथ – तुम लोग, महेश और सुरेश जाते हो।
7. रामः कृष्णाश्च पठतः – राम और कृष्ण पढ़ते हैं।

2. लङ् लकार (भूतकाल)

नियम 1. जो काम बीते हुए समय में हो चुका है, उस काल (समय) को भूतकाल कहते हैं। भूतकाल के लिए संस्कृत में लङ् लकार का प्रयोग होता है।

नियम 2. कभी-कभी वर्तमान काल के प्रथम पुरुष की क्रिया में 'स्म' जोड़कर भूतकाल व्यक्त किया जाता है। यह प्रायः 'था' के लिए प्रयुक्त होता है। जैसे – पठसि स्म = पढ़ रहा था। हसति स्म = हँसता था।

आदर्श वाक्य

1. छात्रः अगच्छत् - छात्र चला गया (पुंल्लिङ्ग)।
2. छात्रा अगच्छत् - छात्रा चली गयी (स्त्रीलिङ्ग)।
3. फलम् अपतत् - फल गिरा (नपुंसकलिङ्ग)।
4. सः अपश्यत् - उसने देखा (पुंल्लिङ्ग)।
5. यूयम् अपतत् - तुम लोग गिर गये

3. लृट्लकार (भविष्यत्काल)

नियम 1. जब कोई काम आगे आने वाले समय में होता है, तब वह भविष्य काल में होता है और भविष्यकाल में लृट्लकार का प्रयोग होता है? इसके रूप लट्लकार के समान होते हैं केवल 'ति' 'त' आदि प्रत्ययों के पहले 'स्य' जुड़ जाता है। जैसे– पठति-पठिष्यति।

आदर्श वाक्य

1. सः पठिष्यति - वह पढ़ेगा। (पुंल्लिङ्ग)।
2. सा पठिष्यति - वह पढ़ेगी। (स्त्रीलिङ्ग)।
3. फलं पतिष्यति - फल गिरेगा। (नपुंसकलिङ्ग)।
4. रामः श्यामश्च गमिष्यतः - राम और श्याम जायेंगे।
5. श्यामः हरिः, वा भक्षयिष्यति - श्याम या हरि खायेगा।

4. लोट्लकार (आज्ञार्थक)

नियम 1. लोट्लकार का प्रयोग आज्ञा, इच्छा, प्रार्थना, अनुमति आशीर्वाद आदि अर्थों में होता है।

नियम 2. प्रथम पुरुष में इस लकार का प्रयोग प्रायः इच्छा प्रार्थना अर्थ में होता है।

नियम 3. मध्यम पुरुष में इसका प्रयोग आज्ञा, आशीर्वाद अर्थ में होता है। कभी-कभी आज्ञा में 'तुम' कर्ता छिपा रहता है। ऐसी दशा में क्रिया छिपे हुए कर्त्ता के अनुसार मध्यम पुरुष की होती है।

नियम 4. उत्तम पुरुष में इसका प्रयोग इच्छा और प्रश्न अर्थ में होता है।

आदर्श वाक्य

1. सः लिखतु – वह लिखे (पुंल्लिङ्ग)।
2. सा पठतु – वह पढ़े (स्त्रीलिङ्ग)।

3. भवान् आगच्छत् – आप आयें (प्रार्थना)।
4. त्वं पठ – तुम पढ़ो (आज्ञा)।
5. चिरंजीवीभव – दीर्घायु हो (आशीर्वाद)।

5. विधिलिङ् (चाहिए के अर्थ में)

नियम 1. विधिवाक्य (जिसमें 'चाहिए' शब्द का प्रयोग होता है)। इच्छा प्रकट करना, अनुमति, प्रार्थना, सम्भावना, सामर्थ्य प्रकट करना इत्यादि अर्थों में तथा यदि के साथ विधिलिङ् का प्रयोग होता है।

विशेष – इन अर्थों में कहीं-कहीं लोट्लकार का भी प्रयोग किया जाता है। 'चाहिए' से युक्त वाक्यों में कर्त्ता में 'को' का चिह्न लगा रहता है उसे कर्म का चिह्न न समझना चाहिए।

आदर्श वाक्य

1. बालकः पठेत् – लड़के को पढ़ना चाहिए या लड़का पढ़े। (पुंल्लिङ्ग)
2. बालिका पठेत् – लड़की को पढ़ना चाहिए या लड़की पढ़े। (स्त्रीलिङ्ग)
3. बालकाः पठेयुः – लड़कों को पढ़ना चाहिए या लड़के पढ़े। (पुंल्लिङ्ग)
4. छात्रः तत्र पठेत् – छात्र वहाँ पढ़ें। (विधि)
5. बालकः किं कुर्यात् – लड़का क्या करें? (प्रश्न)

कारकों के आधार पर अनुवाद के नियम

1. कर्त्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

नियम 1. क्रिया करने वाले को कर्त्ता कहते हैं और कर्तृवाच्य के कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है। इसका चिह्न (पहचान) 'ने' है। यह कहीं-कहीं छिपा रहता है। जैसे– राम लिखता – रामः लिखति (कर्तृवाच्य) में 'ने' छिपा है और रामः प्रथमा विभक्ति का शब्द है।

नियम 2. संस्कृत में बिना विभक्ति लगाये शब्द निरर्थक होते हैं। अतः अर्थ बनाने के लिए संज्ञा शब्दों में प्रथमा विभक्ति आती है। जैसे रामः-राम। गजः-हाथी, शुकः-तोता आदि।

नियम 3. पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग बनाने के लिए भी प्रथमा विभक्ति आती है। जैसे–तटः (पुंल्लिङ्ग) तटी (स्त्रीलिङ्ग) तटम् (नपुंसकलिङ्ग)- किनारा आदि।

नियम 4. अव्ययों के साथ तथा केवल नाम के कथन में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे गांधी 'बापू' इति प्रसिद्धः अस्ति-गांधी बापू इस (नाम से) प्रसिद्ध हैं। नेहरू नाम एक एव महापुरुषः असीत् – नेहरू नाम के एक ही महापुरुष थे।

आदर्श वाक्य

1. बालकः बालिका च पठतः – लड़का और लड़की पढ़ रही है।
2. भानुः शशिः वा गच्छति – भानु या शशि जाता है।
3. शुकः एकः पक्षी अस्ति – तोता एक चिड़िया है।
4. इदम् एकं नगरम् अस्ति – यह एक नगर है।
5. इयम् एका नगरी अस्ति – यह एक नगरी है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. अशोक प्रियदर्शी इस नाम से प्रसिद्ध था। 2. राम और लक्ष्मण भाई थे। 3. गीता और रेखा चली गयीं। 4. सीता या रीता नहीं आवेगी। 5. यह एक सुन्दर उपवन हैं। 6. हम और तुम वहाँ कब चलेंगे। 7. सीता सती नारी थी। 8. वे लोग वहाँ जायें। 9. तुम्हें सदा हँसना चाहिए। 10. यह विशाल भवन है।

सहायक शब्द – इस नाम से-इति। भाई-भ्रातरौ।

2. कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)

नियम 1. किसी वाक्य में प्रयोग किये गये पदार्थों में से कर्त्ता जिसको सबसे अधिक चाहता है, उसे कर्म कहते हैं, अर्थात् जिस पर क्रिया का फल समाप्त होता है (पड़ता) है, उसे कर्म कहते हैं। कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे–बालकः वानरं ताडयति-लड़का बन्दर को मारता है। यहाँ 'ताडयति' क्रिया का फल वानर पर पड़ता है, अतः उसमें द्वितीया विभक्ति हुई है।

विशेष – क्रिया के पहले 'किसको' अथवा 'क्या' लगाने से जो उत्तर में आता है वह कर्म होता हैं। हिन्दी में 'कर्म' का चिह्न 'को' है। यह कहीं-कहीं छिपा भी रहता हैं। जैसे- रामः पुस्तकं पठति – राम पुस्तक पढ़ता है। यहाँ कर्म का चिह्न 'को' छिपा है। यहाँ वाक्य में 'क्या' लगाने से 'क्या' पढ़ता है उत्तर में 'पुस्तक' आती है, अतः उसमें द्वितीया विभक्ति होगी।

वाक्य में यदि कर्म एक होता है तो उसमें एकवचन, दो हों तो द्विवचन और दो से अधिक हों तो बहुवचन होता है। जैसे– अहं गणेशं नमामि-मैं गणेश को प्रणाम करता हूँ। 2. बालकः फलानि खादन्ति- लड़के फल खाते हैं आदि।

आदर्श वाक्य

1. बालकाः नाटकम् अपश्यन् – लड़कों ने नाटक देखा।
2. बालिकाः गीतं गायन्ति – लड़कियाँ गीत गाती हैं।
3. अहं सूर्यं पश्यामि – मैं सूर्य को देखता हूँ।
4. शिक्षकः छात्रान् ताडयति – अध्यापक छात्रों को पीटता है।
5. त्वं बालकौ कुत्र अपश्यः – तुमने दो लड़कों को कहाँ देखा।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. राम ने रावण को मारा था। 2. छात्र एक निबन्ध लिख रहे हैं। 3. हमने एक गीत गाया। 4. वे शिक्षक को प्रणाम करते हैं। 5. मैं एक कहानी कहूँगा। 6. वे लोग फल खायेंगे। 7. रमेश पुस्तकें लाता है। 8. वे चित्र देखेंगे। 9. हम दोनों ने एक पत्र लिखा। 10. मैंने दो गायों को देखा।

सहायक शब्द – मारा था = अहन्। लाता है = आनयति। गाया = अगायम्।

3. कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति उपपद के रूप में)

जब सामान्य नियम के स्थान पर किसी विशेष नियम के अनुसार कोई विभक्ति हो जाती है, तब उसे उपपद विभक्ति कहते हैं।

नियम 1. याच् (माँगना), पच् (पकाना), प्रच्छ् (पूछना), ब्रू (बोलना), नी (ले जाना), हृ (चुराना), आदि और इनके अर्थवाली अन्य धातुओं के योग में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे–

गुरुः छात्रं प्रश्नं पृच्छति– गुरु जी छात्र से प्रश्न पूछते हैं। यहाँ 'छात्र से' कर्म कारक नहीं है किन्तु इस विशेष नियम से 'छात्र' में द्वितीया विभक्ति हो गयी है।

नियम 2. गमानार्थक धातु के योग में (जहाँ जाया जाता है उसमें) द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे-बालकः गृहं गच्छति-लड़का घर में जाता है।

नियम 3. शी (सोना) स्था (ठहरना) तथा आस् (बैठना) धातु से पहले यदि 'अधि' उपसर्ग लगा हो तो इनके आधार में द्वितीया विभक्ति हो जाती है। जैसे- रामाः शिलाम् अधि रोते-राम शिला पर रोता है।

नियम 4. अभितः (सब तरफ) परितः-चारों तरफ। सर्वतः (सब तरफ) उभयतः (दोनों ओर), हा, धिक्, प्रति बिना आदि के योग में (इन शब्दों की जिससे निकटता प्रतीत होती है, उसमें द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे मम ग्रामं परितः अभितः सर्वतः वा वृक्षा सन्ति – मेरे गाँव के चारों ओर या सब तरफ पेड़ हैं।

आदर्श वाक्य

1. कपिः वृक्षम् आरोहति – बन्दर पेड़ पर चढ़ता है।
2. सिंहः वनम् अटति – सिंह वन में घूमता है।

3. राजा सिंहासनम् अधितिष्ठति – राजा सिंहासन पर स्थित है।
4. विद्यालयम् उभयतः एका नदी वहति – विद्यालय के दोनों ओर एक नदी बहती है।
5. व्याधः मृगं प्रति अपश्यत् – बहेलिये ने हिरन की ओर देखा।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. सड़क के दोनों ओर पेड़ हैं। 2. विद्यार्थी गुरु के चारों ओर बैठे हैं। 3. तुम्हारे प्रति कोई ध्यान करेगा। 4. लंका के चारों ओर समुद्र है। 5. अर्जुन रथ पर चढ़ते हैं। 6. लड़कियाँ कक्षा में प्रवेश करती हैं। 7. छात्र आसन पर बैठते हैं। 8. किसान गाँव में रहते हैं। 9. तुम्हें कक्षा में जाना चाहिए। 10. मेरे घर के चारों ओर पानी था।

सहायक शब्द – सड़क = राजमार्गम्, चढ़ता है = आरोहति, रहते हैं –अधिवसन्ति।

4. करण कारक (तृतीया विभक्ति)

नियम 1. जिसकी सहायता से कर्त्ता अपना कार्य पूरा करता है उसे करण कहते हैं। करण में तृतीया विभक्ति होती है। उसकी पहचान से या द्वारा है। जैसे – छात्रः मुखेन खादति– छात्र मुख से खाता है। यहाँ कर्ता छात्र मुख से अपना काम पूरा कर रहा है, अतः वह करण कारक है और उसमें तृतीया विभक्ति मुखेन हुई।

विशेष– आँख, कान, हाथ, पैर प्रत्येक आदमी के दो होते हैं। अतः जब एक के लिए इसका प्रयोग होता है, तब ये सदा द्विवचन में ही आते है। जैसे– **अहं नेत्राभ्यां पश्यामि –** मैं आँख से देखता हूँ।

जहाँ इनका प्रयोग एक से अधिक के लिए होता है, वहाँ इनमें द्विवचन और बहुवचन दोनों ही हो सकते हैं। जैसे– **वयं कर्णाभ्याम्** (द्विवचन) अथवा कर्णैः (बहुवचन) शृणुमः – हम लोग कान से सुनते हैं। यहाँ द्विवचन या बहुवचन दोनों हो सकता है।

आदर्श वाक्य

1. रामः बाणेन बालिम् अहन् – राम ने बाण से बालि को मारा।
2. यूयं स्व हस्ताभ्याम् (हस्तैः) कार्यं कुरुत – तुम लोग अपने हाथ से काम करो।
3. बालकः हस्ताभ्याम् लिखति – लड़का हाथ से लिखता है।
4. परिश्रमेण कार्यं सिद्ध्यति – मेहनत से काम सिद्ध होता है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. तुम लोग परिश्रम से पढ़ो। 2. किसान हल से खेत जोतते हैं। 3. हम लोग रोज गेंद से खेलते हैं। 4. वे पानी से पेड़ों को सींच रहे हैं। 5. लड़कियाँ स्वर से गाती हैं। 6. वे कान से कथा सुनते हैं। 7. लड़के पैरों से गेंद को मार रहे हैं। 8. परिश्रम से धन और धन से सुख होता है। 9. भीम ने गदा से दुर्योधन को मारा। 10. वह ध्यान से अपना पाठ याद करेगा।

सहायक शब्द – रोज = नित्यम्। गेंद से = कन्दुकेन। खेत = क्षेत्रम्। जोतते हैं = कर्षन्ति। सींचते हैं = सिञ्चन्ति। मार रहे हैं = ताडयन्ति। याद करेगा = स्मरिष्यति।

5. करण कारक (उपपद विभक्ति के रूप में)

नियम 1. साथ अर्थवाले 'सह समम्, साकम्' के योग में, (जिसके साथ काम किया जाता है उसमें), तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– **पिता पुत्रेण सह गच्छति**-पिता पुत्र के साथ जाता है।

नियम 2. जिस अंग के द्वारा शरीर में कोई विकार प्रतीत हो, उसमें तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– **सः कर्णेन बधिरः अस्ति–** वह कान का बहरा है।

नियम 3. पृथक् बिना नाना शब्दों के योग में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– **कलमेन बिना कथं लिखिष्यामि–** कलम के बिना मैं कैसे लिखूँगा।

आदर्श वाक्य

1. सः अध्यापकेन सह गृहं गमिष्यति – वह अध्यापक के साथ घर जायेगा।
2. अयं बालकःपादेन खञ्जः अस्ति – यह लड़का पैर का लँगड़ा है।
3. पुस्तकेन बिना अहं किं पठामि – पुस्तक के बिना मैं क्या पढ़ूँ?

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

1. मैं मोहन के साथ घर जाऊँगा। 2. दुष्टों के साथ विवाद मत करो। 3. राम के साथ लक्ष्मण भी वन गये। 4. सत्य बोलने से सम्मान होता है। 5. यह भिखारी आँख का अन्धा है। 6. हम लोग नाव से विहार करेंगे। 7. पत्नी के बिना घर सूना होता है। 8. विद्या के बिना बुद्धि नहीं होती है। 9. तुम लोगों को परिश्रम से पढ़ना चाहिए। 10. वह स्वभाव से दुष्ट है।

सहायक शब्दः – बोलने से = भाषणेन। भिखारी = भिक्षुकः। नाव से = नौकया। सूना = शून्यम्। पढ़ना चाहिए = पठत।

6. सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

नियम 1. जिसे कोई वस्तु दी जाती है या जिसके लिए कोई काम किया जाता है, उसे सम्प्रदान कहते हैं। सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है। इसका चिह्न (पहचान) के लिए अथवा 'को' हैं। जैसे–**राजा ब्राह्मणाय गां ददाति** राजा ब्राह्मण को गाय देता है। इस वाक्य में 'ब्राह्मण' को गाय देने का वर्णन है, अतः उसमें चतुर्थी विभक्ति हुई।

विशेषः– 'को' कर्मकारक (द्वितीया विभक्ति) का चिह्न है किन्तु सम्प्रदान कारक में भी 'को' का प्रयोग केवल देने के अर्थ में होता है। जैसे– **शिक्षकः छात्राय पुरस्कारं ददाति –** शिक्षक छात्र को इनाम देता है।

2. जब कोई वस्तु सदा के लिए दे दी जाती है तब वहाँ चतुर्थी विभक्ति होती है।

3. जहाँ कोई थोड़े समय के लिए दी जाती है और देनेवाले का उस पर से अधिकार समाप्त नहीं होता, वहाँ चतुर्थी विभक्ति नहीं होती, बल्कि षष्ठी विभक्ति होती हैं। जैसे – **सः रजकस्य वस्त्राणि ददाति–** वह धोबी को कपड़े देता है।

आदर्श वाक्य

1. राजा निर्धनाय वस्त्रं ददाति – राजा गरीब को कपड़ा देता है।
2. त्वं बालकाय फलम् आनय – तुम लड़के के लिए फल लाओ।
3. वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति – पेड़ परोपकार के लिए फलते हैं।
4. सः कस्मै भोजनं दास्यति – वह किसे भोजन देगा?

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

1. तुम मोहन को पुस्तक दो। 2. भूखे को भोजन देना चाहिए। 3. नौकर स्वामी के लिए फल लाता है। 4. किसान अन्न के लिए खेत सींचता है। 5. मन्त्री सैनिक को पुरस्कार देता है। 6. तुम मुझे अपनी पुस्तक दो। 7. पिता के लिए फल लाया। 8. वे प्यासे को पानी देंगे। 9. लोग ज्ञान के लिए अध्ययन करते हैं। 10. वे लोग धोबी को कपड़ा नहीं देंगे।

सहायक शब्द – भूखे को = बुभुक्षिताया। नौकर = सेवक। प्यासे को = पिपासिताय, तृषिताय। धोबी को = रजकस्य।

7. चतुर्थी विभक्ति (उपपद के रूप में)

नियम 1. 'रूच' धातु के योग में जिसे कोई चीज अच्छी लगती है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे– **बालकाय मिष्ठान्नं रोचते** – लड़के को मिठाई अच्छी लगती है।

नियम 2. क्रुध् (गुस्सा करना) द्रुह् (शत्रुता करना) ईर्ष्य् (डाह करना) असूय् (निन्दा करना) आदि धातुओं तथा इनकी समानार्थक धातुओं के योग में जिस पर क्रोध आदि किया जाता है, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे– **अध्यापकः छात्राय क्रुध्यति** – अध्यापक छात्र पर क्रोध करता है।

नियम 3. नमः स्वस्ति (कल्याण) स्वाहा, स्वधा, अलम (समर्थ, पर्याप्त) आदि के योग में जिसे नमस्कार आदि किया जाता है उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे– **रामाय नमः** –राम को नमस्कार है।

विशेष – जब 'नमः' के साथ कृ धातु का प्रयोग होता है, तब द्वितीया विभक्ति नहीं होती है। जैसे– **देवं नमस्करोमि –** देवता को नमस्कार करता हूँ।

1. बालकाय पठनं रोचते – लड़के को पढ़ना अच्छा लगता है।

2. रामः श्यामाय क्रुध्यति – राम श्याम पर क्रोध करता है।
3. कंसः कृष्णाय अद्रुह्यत् – कंस कृष्ण से द्रोह करता था।
4. छात्राः अध्यापकाय असूयन्ति – छात्र अध्यापक की निन्दा करता है।
5. श्री गणेशाय नमः – श्री गणेश जी को नमस्कार है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

1. दुष्ट सज्जनों से ईर्ष्या करते हैं। 2. तुम लड़कों से द्रोह करते हो। 3. कौरव पाण्डवों पर क्रोध करते थे। 4. इस समय छात्रों को पढ़ना अच्छा नहीं लगता। 5. सज्जनों को विवाद अच्छा नहीं लगता। 6. भगवान् शिव को नमस्कार है। 7. शाम को टहलना सबको अच्छा लगता है। 8. रावण राम से सदा द्रोह करता था। 9. तुम्हारा कल्याण हो। 10. छात्र अध्यापक को नमस्कार करते हैं।

सहायक शब्द – सज्जनों से = सज्जनेभ्यः। द्रोह करते हो = द्रुहयसि। पढ़ना = पठनम्,अध्ययनम्। अच्छा नहीं लगता = न रोचते। टहलना = भ्रमणम्। नमस्कार करते हैं = नमस्कुर्वन्ति।

8. अपादान कारक (पंचमी विभक्ति)

नियम – जिसमें किसी वस्तु का प्रत्यक्ष अथवा कल्पित रूप से अलग होना प्रकट होता है उसे अपादान कारक कहते हैं। अपादान में पंचमी विभक्ति होती है। इसकी पहचान (चिह्न) 'से' है। जैसे – **हरि अश्वासत् अपतत्**– हरि घोड़े से गिर पड़ा। इस वाक्य में 'घोड़े से' हरि अलग हो गया है, अतः अश्व में पंचमी विभक्ति हुई।

आदर्श वाक्य

1. मम हस्तात् पुस्तकम् अपतत् – मेरे हाथ से किताब गिर गयी।
2. छात्राः गृहात् आगच्छन्ति – छात्र घर से आते हैं।
3. अशोकः वृक्षात् अवतरति – अशोक पेड़ से उतरता है।
4. वृक्षात् पत्राणि पतन्ति – पेड़ से पत्तियाँ गिरती हैं।
5. कृपात् जलम् आनय – कुएँ से पानी लाओ।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. मैं घर से स्कूल जाऊँगा। 2. लड़का पेड़ से गिर पड़ा। 3. वे पुस्तकालय से पुस्तकें लाते हैं। 4. हम लोग बाजार से फल लायेंगे। 5. लड़कियाँ विद्यालय से घर जा रही हैं। 6. तुम लोग कक्षा से बाहर मत जाओ। 8. मैं तालाब से पानी लाऊँगी। 9. घुड़सवार घोड़े से गिर पड़ा। 10. तुम लोग जंगल से बाहर जाओ।

सहायक शब्द– लाते हैं = आयन्नि्। बाजार से = आपणात्। बाहर = बहिः। घुड़सवार = अश्वारोही।

9. अपादान कारक (उपपद विभक्ति के रूप में)

नियम 1. जिससे डरा जाता है या रक्षा की जाती है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे– **सः चौरात् विभेति –** वह चोर से डरता है। **पिता पुत्रं पापात् त्रायते–** पिता पुत्र को पाप से बचाता है।

नियम 2. जिससे कोई वस्तु हटायी जाती है उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे – गुरुः शिष्यं कुमार्गात् निवारयति– गुरु शिष्य को कुमार्ग से रोकता है।

नियम 3. जिससे नियमपूर्वक पढ़ा जाता है, उसमें पंचमी विभक्ति होती है। जैसे अहं गुरोः व्याकरणं पठामि। मैं गुरु जी से व्याकरण पढ़ता हूँ।

नियम 4. अन्य (सिवाय) दूर, इतर (दूसरा) ऋते (बिना) दिशावाचक तथा कालवाचक शब्दों के योग में पंचमी होती हैं। जैसे– **ग्रामात् पूर्व नदी बहति–** गाँव से पूर्व में नदी बहती है।

आदर्श वाक्य

1. जनाः सिंहात् बिभ्यति – लोग सिंह से डरते हैं।
2. त्वं चौरात् बालं रक्ष – तुम चोर से बालक को बचाओ।

3. कृषकाः क्षेत्रात् पशून् निवारयन्ति – किसान खेत से पशुओं को रोकते हैं।
4. बालकाः अध्यापकात् गणितं पठन्ति – लड़के अध्यापक से गणित पढ़ते हैं।
5. ज्ञानात् ऋते न मुक्तिः – ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती।
6. गंगा हिमालयात् प्रभवति – गंगा हिमालय से निकलती है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

1. आजकल विद्यार्थी अध्यापक से नहीं डरते हैं। 2. चूहे बिल्ली से डरते हैं। 3. तालाब में कमल पैदा होते हैं। 4. मैं अपने मित्र के साथ पढ़ता हूँ। 5. माली बाग से जानवरों को निकालता है। 6. चैत के पहले फागुन आता है। 7. कृष्ण के सिवाय मेरी रक्षा कौन करेगा? 8. मेरे गाँव से दूर एक पहाड़ है। 9. धन के बिना सुख नहीं होता है। 10. पेड़ों से पत्तियाँ उत्पन्न होती हैं।

सहायक शब्द – आजकल = इदानीम्। चूहे = मूषकाः। बिल्ली = मार्जार, डालः। पैदा होते हैं = प्रभवन्ति। आता है = आयाति। कृष्ण के सिवाय = कृष्णात् अन्यः।

10. सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)

नियम 1. जब किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द का दूसरे शब्द से सम्बन्ध प्रकट होता है, तब जिसका सम्बन्ध होता है उसमें षष्ठी विभक्ति होती है। इसकी पहचान का, की, के, रा, री, रे, ना, नी, ने है। जैसे– अभिमन्युः अर्जुनस्य पुत्रं आसीत्– अभिमन्यु अर्जुन पुत्र था। यहाँ अर्जुन तथा पुत्र में सम्बन्ध दिखाया गया है, अतः 'अर्जुन स्य' में षष्ठी विभक्ति हुई है।

नियम 2. समान (बराबर)। अर्थ रखने वाले तुल्य, सदृश, सम आदि के योग में जिससे तुलना की जाती है, उसमें षष्ठी या तृतीया विभक्ति होती है। जैसे– रामस्य रामेण वा समः कोऽपि नास्ति– राम के समान कोई भी नहीं है।

आदर्श वाक्य

1. कूपस्य जलं शीतलं भवति – कुएं का पानी ठंडा होता है।
2. रामस्य माता कौशल्या आसीत् – राम की माता कौशल्या थीं।
3. तव गृहं कुत्र अस्ति – तुम्हारा घर कहाँ है?
4. स्वस्थ वचनं पालय – अपने वचन का पालन करो।
5. सः अध्ययनस्य हेतोः काश्यां वसति – वह अध्ययन के हेतु काशी में रहता है।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

1. कंस कृष्ण का शत्रु था। 2. कालिदास संस्कृत के कवि हैं। 3. दुष्टों की संगति नहीं करनी चाहिए। 4. मैंने अपना सब धन दान कर दिया। 5. तुम्हारा भाई यहाँ कब आवेगा। 6. तुलसीदास रामायण के रचयिता थे। 7. भक्त ईश्वर का स्मरण करता है। 8. कर्ण के समान कोई न था। 9. नदी का पानी धीरे-धीरे बहता है। 10. उसका नाम सदा अमर है।

सहायक शब्द – धीरे-धीरे = शनैः-शनैः। अपना = स्वस्य।

11. अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

नियम 1. जिस स्थान या वस्तु में कोई कार्य होता है, उसे अधिकरण कहते हैं। अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। इसकी पहचान (चिह्न) 'में' या पर है। जैसे– अहं विद्यालये पठामि– मैं विद्यालय में पढ़ता हूँ। यहाँ पढ़ने का कार्य विद्यालय में हो रहा है, अतः विद्यालय में सप्तमी विभक्ति हुई है।

नियम 2. जिस के लिए स्नेह, आसक्ति एवं सम्मान प्रदर्शित किया जाता है, उसमें सप्तमी विभक्ति होती है।

नियम 3. समुदायवाचक शब्द में तथा जिस समय या स्थान में कोई काम किया जाता है उसमें सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे– **कविषु कालिदासः श्रेष्ठः आसीत्** – कवियों में कालिदास श्रेष्ठ थे। प्रथमे दिवसे सः आगमिष्यति– पहले दिन वह यहाँ आवेगा।

आदर्श वाक्य

1. सरोवरे कमलानि विकसन्ति – तालाब में कमल खिलते हैं।

2. वयं नद्यां स्नानं कुर्मः – हम लोग नदी स्नान करते हैं।
3. मम पिता मयि स्निहयति – मेरे पिता जी मुझ पर स्नेह रखते हैं।
4. गुरौ भक्तिः कुर्यात् – गुरु जी पर भक्ति रखनी चाहिए।
5. अस्मिन् समये वयं पठिष्यामः – इस समय हम लोग पढ़ेंगे।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

1. पेड़ों पर चिड़ियाँ बोलती हैं। 2. काशी में विश्वनाथ का मन्दिर है। 3. अध्यापक छात्रों पर स्नेह रखते हैं। 4. फूलों पर भौंरे गूँज रहे हैं। 5. कृष्ण का जन्म जेल में हुआ था। 6. मैं अपने भाइयों में बड़ा हूँ। 7. काव्यों में नाटक सुन्दर होता है। 8. आज मेरे घर में उत्सव होगा। 9. धर्म में प्रेम रखना चाहिए। 10. वह दूसरे दिन आवेगा।

सहायक शब्द – बोलती हैं = कूजन्ति। गूँज रहे हैं = गुञ्जन्ति। बड़ा = ज्येष्ठ। सुन्दर = रम्यम्। प्रेम = रतिः। रखना चाहिए = कुर्यात्।

12. सम्बोधन

नियम 1. जिसे पुकारा जाता है उसमें सम्बोधन होता है। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। इसका चिह्न है, अरे, ऐ, आदि हैं। ये चिह्न शब्द से पहले लगते हैं। जैसे– हे राम! भो बालक! हे राम, अरे लड़के आदि।

नियम 2. संस्कृत में सम्बोधन के एक वचन में रूप बदलता है, शेष में कर्त्ता कारक के समान होता है।

विशेष – सर्वनाम शब्दों में सम्बोधन नहीं होता है।

आदर्श वाक्य

1. भो पुत्र! त्वं कुत्र गच्छसि – अरे बेटा! तुम कहाँ जा रहे हो?
2. बालकाः प्रतिदिनं प्रातः उद्यानं भ्रमत – लड़कों प्रतिदिन सबेरे बगीचे में भ्रमण करो।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

1. छात्रो! परिश्रम से पढ़ो। 2. गुरुदेव! चित्र में क्या है? 3. हे राम मेरी रक्षा करो। 4. महर्षि! आप सब कुछ जानते हैं। 5. विद्यार्थियों! अपने आसन पर बैठ जाओ।

विभिन्न प्रयोगों के आधार पर अनुवाद के नियम

1. सर्वनामों का प्रयोग

1. **युष्माकं** गृहं कुत्र अस्ति? – तुम्हारा घर कहाँ है?
2. **तस्य** बालकस्य किं नाम अस्ति? – उस लड़के का नाम क्या है?
3. **यस्य** चित्ते दया भवति, सः साधुः भवति – जिसके चित्त में दया होती है, वह साधु होता है।
4. **तस्मै** बालकाय दुग्धं वितर – उस बालक के लिए दूध बाँटो।
5. **एतानि** पुस्तकानि मह्यं यच्छ – इन पुस्तकों को मुझे दो।
6. **तस्यां** नगर्या कः अवसत्? – उस नगरी में कौन रहता था?
7. **कस्मिंश्चिद्** नगरे एकः ब्राह्मणः वसति स्म – किसी नगर में एक ब्राह्मण रहता था।
8. **कस्यचिद्** नृपस्य हस्ती मरणासन्नः आसीत् – किसी राजा का हाथी मरणासन्न था।
9. **सः तस्मै** विप्राय धेनुं ददाति – वह उस ब्राह्मण के लिए गाय देता है।
10. **कस्यचित्** बालिकायै फलं यच्छ – किसी लड़की को फल दो।

नियम 1. युष्मद् (तू), अस्मद् (मैं), तद् (वह), एतद् (यह), इदम् (यह), अहम् (मैं), किम्, (कौन, किस) यद् (जो), सर्व (सब) आदि सर्वनाम हैं। इनके रूप पहले लिखे जा चुके हैं।

नियम 2. सर्वनामों का प्रयोग संज्ञाओं के स्थान पर होता है, अतः इनके कारक और वचन पहले कहे हुए नियमों के अनुसार

ही होते हैं। जैसे–

वाक्य 1 'तुम्हारा' में युष्मद् शब्द का षष्ठी बहुवचन होने से इसकी संस्कृत 'युष्माकम्' है। इसी प्रकार वाक्य 3 में 'यस्य' षष्ठी एकवचन है।

नियम 3. सर्वनामों का प्रयोग विशेषणों की भाँति भी होता है। जहाँ ये विशेषणों की तरह काम में आते हैं वहाँ इनके लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन अपने विशेष्य की तरह होते हैं। जैसे– वाक्य 2 में 'उस' सर्वनाम 'लड़के का' की विशेषता प्रकट कर रहा है। इसकी संस्कृत बालकस्य में पुंल्लिङ्ग की षष्ठी का एकवचन है, अतः 'उसकी' संस्कृत 'तद' का भी पुंल्लिङ्ग षष्ठी एकवचन का रूप 'तस्य' है।

इसी प्रकार वाक्य 5 में 'पुस्तकानि' के नपुंसकलिङ्ग द्वितीया बहुवचन होने के कारण 'इन' की संस्कृत 'एतत्' का नपुंसकलिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप 'एतानि' प्रयोग में लाया गया है।

इसी प्रकार वाक्य 6 में 'नगर्याम्' के स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन होने के कारण 'तस्याम्' भी 'तद्' का स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन का रूप प्रयोग में आया है।

नियम 4. किस की संस्कृत 'किम्' शब्द के रूपों में 'चित्' जोड़ने से बनती है, किन्तु ऐसे स्थान पर 'किम्' शब्द के विशेष्य से लिङ्ग, विभक्ति तथा वचन के अनुसार चलाकर 'चित्' जोड़ा जाता है और आवश्यकतानुसार सन्धि भी करनी पड़ती है। जैसे– वाक्य 7 में किसी 'नगरे' का विशेषण है। नगरे में नपुंसकलिङ्ग सप्तमी एकवचन है, अतः किम् शब्द का नपुंसकलिङ्ग एकवचन के रूप 'कस्मिन्' में 'चित्' जोड़कर सन्धि करने से 'कस्मिश्चिद्' रूप प्रयोग में आया है।

इसी प्रकार वाक्य 8 में 'नृपस्य' के पुंल्लिङ्ग षष्ठी एकवचन होने के कारण किम् के पुंल्लिङ्ग षष्ठी एकवचन का 'कस्य' में 'चित्त' जोड़कर ' कस्यचित्' का रूप प्रयोग में आया है।

इसी प्रकार वाक्य 10 में 'बालिकायै' के स्त्रीलिङ्ग चतुर्थी एकवचन होने के कारण 'कि' के स्त्रीलिंङ्ग चतुर्थी एकवचन का रूप, 'कस्यै' में 'चित्त' जोड़कर 'कस्यैचित्' रूप प्रयुक्त हुआ।

2. विशेषणों का प्रयोग

1. विशेषणों के विभक्ति, वचन और लिङ्ग अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं।

2. 'मुझ जैसा' और 'तुझ जैसा' आदि की संस्कृत बनाने के लिए इनके वाचक सर्वनाम शब्दों में 'दृश्' जोड़ दिया जाता है। इनके लिङ्ग, विभक्ति, वचन भी अपने विशेष्य के अनुसार प्रयोग किये जाते हैं।

आदर्श वाक्य

1. मैं सफेद घोड़ा देखता हूँ। – अहं श्वेतम् अश्वं पश्यामि।
2. यह जल पवित्र है। – एतत् जलं पवित्रम् अस्ति।
3. पथिक वृक्ष की शीतल छाया में बैठता है। – पथिकः वृक्षस्य शीतलायां छायाः तिष्ठति।
4. मैं गर्म जल से मुँह धोता हूँ। – अहम् उष्णेन जलेन मुखं प्रक्षालयामि।
5. वे निर्बल पुरुषों की रक्षा करते हैं। – ते निर्बलान् पुरुषान् रक्षन्ति।
6. भीम सबसे बलवान् थे। – भीमः बलवत्तमः आसीत्।
7. रमा एक श्रेष्ठ स्त्री है। – रमा एका श्रेष्ठा नारी आसीत्।
8. विपिन उत्तम छात्र है। – विपिनः उत्तमः छात्रः अस्ति।
9. वीर पुरुषों की प्रशंसा सब जगह होती है। – वीराणां पुरुषाणां प्रशंसा सर्वत्र भवति।
10. राम भरत से बड़े थे। – रामः भरतात् ज्येष्ठतरः आसीत्।

3. उपसर्ग युक्त धातुओं का प्रयोग

नियम 1. उपसर्ग धातु से पहले जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं जैसे– हृ (हर) धातु का अर्थ हरण करना, चुराना है, किन्तु इसके पहले **'वि'** उपसर्ग जुड़ जाने से विहरति (प्रथम पुरुष एकवचन) रूप बनता है। उसका विहार करता है घूमना है, हो जाता है।

नियम 2. लङ्लकार (भूतकाल) में धातु से पहले 'अ' जुड़ता है किन्तु यह 'आ' मूल धातु से पहले जुड़ता है, उपसर्ग से पहले नहीं। अतः भूतकाल के रूप से पहले उपसर्ग जोड़ कर सन्धि करके उपसर्ग युक्त क्रिया बनायी जाती है। जैसे– गम् धातु का भूतकाल (लङ्लकार) से रूप अगचत् होता है। उसके पहले उपसर्ग **'निर्'** जोड़ने से उसका रूप निर्गच्छत् (निकला) बनेगा इसी तरह अनु + अभवत् = अन्वभवत् (अनुभव किया) आदि होता है।

विशेष – इसका विस्तृत विवरण उपसर्ग अंश में पढ़िये। यहाँ अनुवाद में केवल उनका प्रयोग दिया गया है।

आदर्श वाक्य

1. सैनिकाः बाणैः शत्रून् प्रहरन्ति – सैनिक बाण से शत्रुओं को मारते रहे।
2. लक्ष्मणः रामम् अन्वगच्छत् – लक्ष्मण राम के पीछे गया।
3. बालकः गृहात् वहिः निर्गच्छत् – लड़का घर से बाहर निकला।
4. अहं प्रसन्नताम् अनुभविष्यामि – मैं प्रसन्नता का अनुभव करूँगा।

4. कृदन्त प्रयोग

क्त्वा तथा ल्यप् प्रत्यय (पूर्वकालिक क्रिया)

नियम 1. मुख्य क्रिया को करने से पहले जो काम किया जाता है, उसे पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। हिन्दी में ऐसी क्रिया के बाद में 'कर' या 'करके' जुड़े रहते हैं।

संस्कृत में इसे धातुओं के आगे क्त्वा (त्वा) प्रत्यय जोड़ कर बनाते हैं। जैसे – पठ् + क्त्वा = पठित्वा–पढ़कर आदि।

2. धातुओं से पूर्व निषेधार्थक 'अ' अथवा 'न' को छोड़कर यदि कोई उपसर्ग 'प्र, परा, अप, सम आदि) होता है, तो क्त्वा के स्थान में ल्यप् हो जाता है। ल्यप् में 'य' शेष रहता हैं। जैसे – उप + विश् + क्त्वा (ल्यप्)– उपविश्य – बैठकर।

3. क्त्वा प्रत्यय से युक्त शब्द अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते।

आदर्श वाक्य

1. बालकः पठित्वा गृहं गमिष्यति – लड़का पढ़कर घर जाएगा।
2. सः गुरुं प्रणम्य उपविशति – वह गुरु को प्रणाम कर बैठता है।
3. हस्तौ प्रक्षाल्य भोजनं कुर्यात् – हाथ धोकर भोजन करना चाहिए।
4. अहं कार्यम् अकृत्वा गृहं न गमिष्यामि – मैं काम किये बिना घर नहीं जाऊँगा।

तुमुन् प्रत्यय (उत्तरकालिक क्रिया)

नियम 1. 'के लिए' आदि द्वारा निमित्त या प्रयोजन सूचित करने के लिए धातु के आगे तुम् (तुमुन् प्रत्यय) का प्रयोग होता है। जैसे – दा + तुमुन् = दातुम् – देने के लिए। पठ् + तुमुन् = पठितुम् – पढ़ने के लिए, आदि।

नियम 2. तुमुन् (तुम) प्रत्यय से युक्त शब्द अव्यय होते हैं, अतः इनके रूप नहीं चलते।

नियम 3. तुमुन् प्रत्यय वहीं होता है, जहाँ दोनों क्रियाओं का कर्त्ता एक ही हो। भिन्न कर्त्ता होने पर तुमुन्, प्रत्यय नहीं होता।

नियम 4. यत् (यत्न करना) शक् (सकना) लभ् (पाना) विद् (जानना) इष् (इच्छा करना) आदि धातुओं के योग में 'तुमुन् प्रत्यय होता है। जैसे– सः गृहं गन्तुम् इच्छति–वह स्नातुं (स्नानाय) गच्छति– वह नहाने जाता है।

आदर्श वाक्य

1. बालकः लेखितुं यतते – लड़का लिखने का प्रयत्न करता है।
2. अहं गृहं गन्तुम् इच्छामि – मैं घर जाना चाहता हूँ।
3. अयं विद्यालयं गन्तुं समयः अस्ति – यह विद्यालय जाने का समय है।
4. सः पठितुं, पठनाय वा विद्यालयं गच्छति – वह पढ़ने के लिए स्कूल जाता है।

शतृ, शानच् प्रत्यय (वर्तमान कालिक कृदन्त)

नियम 1. हिन्दी के 'जाता हुआ, खाता हुआ, आदि अर्थों में परस्मैपदी धातुओं से' शतृ (अन्) और आत्मनेपदी धातुओं से शानच् (आन्) प्रत्यय होते हैं।

नियम 2. इन प्रत्ययों से बने शब्द विशेषणों की तरह प्रयुक्त होते हैं। अतः उनके लिङ्ग, वचन, विभक्ति अपने विशेष्य के अनुसार होते हैं।

विषय – शतृ और शानच् प्रत्ययों को विशेषणात्मक कृदन्त भी कहते हैं। ये भविष्यकाल की क्रिया के साथ भी लगते हैं।

आदर्श वाक्य

1. बालकः पठन् गच्छति – लड़का पढ़ता हुआ जा रहा है।
2. हसन्तीम् बालिकां पश्य – हँसती हुई लड़की को देखो।
3. वृक्षात् पतत् फलं पश्य – पेड़ से गिरते हुए फल को देखो।
4. शयानः पुरुषः तिष्ठति – सोता आदमी भी बैठा है।
5. अहं कम्पमानां बालिकाम् अपश्यम – मैंने काँपती हुई लड़की को देखा।

क्त और क्तवतु प्रत्यय (भूतकालिक कृदन्त)

नियम 1. भूतकाल में (काम के पूर्णतया समाप्त हो जाने पर) धातु से क्त और क्तवतु प्रत्यय होते हैं। इनमें 'क्त' में 'त' और 'क्तवतु' में 'तवत्' शेष रहता है।

नियम 2. 'क्त' प्रत्यय सकर्मक धातुओं से कर्मवाच्य में तथा अकर्मक धातुओं से भाववाच्य में होता है।

नियम 3. इन प्रत्ययों से बने शब्द विशेषण के समान प्रयुक्त होते हैं। अतः इनके लिङ्ग, वचन और विभक्ति आदि इनके विशेष्यों के अनुसार होते हैं।

नियम 4. क्त प्रत्ययान्त शब्दों के रूप अकारान्त शब्दों की तरह तीनों लिङ्गों में चलते हैं। जैसे– गतः त्युं। गता (स्त्री) गतम् (नपुं) आदि।

नियम 5. क्तवतु प्रत्यय भूतकाल में कर्तृवाच्य में प्रयुक्त होता है। इससे बने शब्दों के रूप में पुंल्लिङ्ग में 'भगवत्', स्त्रीलिङ्ग में ईकार जोड़कर 'नदी' और नपुंसकलिङ्ग 'जगत्' शब्द के समान होते हैं। जैसे– गतवान्, गतवन्तौ, गतवन्तः (पु0) गतवती, गतवत्यौ, गतवंत्यः (स्त्री) तथा गतवत् आदि नपुंसकलिङ्ग।

आदर्श वाक्य

1. रामेण रावणो हतः – राम ने रावण को मारा।
2. बालकेन पुस्तकं पठितम् – लड़के ने पुस्तक पढ़ा।
3. मया अद्य काशी दृष्टा – मैंने आज काशी देखी।
4. सः गतः अथवा तेन गतम् – वह गया।
5. रामः गृहं गतवान् – राम घर गया।

गत वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गये वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद

[2011]

1.	नदी के दोनों ओर आम के पेड़ हैं।	(IB, 19 DF)	नदीम् उभयतः आम्रवृक्षाः सन्ति।
2.	अध्यापक छात्र से प्रश्न पूछता है।	(IB)	अध्यापकः छात्रं प्रश्नं पृच्छति।
3.	रमेश मामा के साथ बाजार गया।	(IB)	रमेशः मातुलेन सह हाटम् अगच्छत्।
4.	देवदत्त स्वभाव से मधुर है।	(ID)	देवदत्तः स्वभावेन मधुरः अस्ति।
5.	पर्वत के दोनों ओर नदियाँ हैं।	(ID, 19 CZ)	पर्वतम् उभयतः नद्यः सन्ति।
6.	गायों में काली गाय बहुत दूध देनेवाली होती है।	(ID)	गवेषु कृष्णः धेनुः बहुक्षीराः भवन्ति।
7.	पिता पुत्र के साथ विद्यालय जाता है।	(HX)	पिता पुत्रेण सह विद्यालयं गच्छति।
8.	ग्राम के चारों ओर वन है।	(HX)	ग्रामं परितः वनम् अस्ति।
9.	भगवान वैकुण्ठ में रहते हैं।	(HX)	भगवान वैकुण्ठं अधिशेते।
10.	ग्राम के दोनों ओर नदी है।	(IC)	ग्रामं उभयतः नदी अस्ति।
11.	गुरु शिष्य के साथ पुस्तकालय जाता है।	(IC)	गुरुः शिष्येण सह पुस्तकालयं गच्छति।
12.	नदियों में गङ्गा सबसे अधिक पवित्र है।	(IC)	नदीषु गङ्गा सर्वासु पवित्रः अस्ति।
13.	गृहस्थ भिखारियों को धन देता है।	(IC)	गृहस्थः भिक्षुकेभ्यः धनं ददाति।
14.	मोहन राम के साथ विद्यालय जाता है।	(IA)	मोहनः रामेण सह विद्यालयं गच्छति।
15.	पिता पुत्र पर क्रोध करता है।	(IA, 19 DF)	पिता पुत्रवे क्रुध्यति।
16.	गङ्गा हिमालय से निकलती है।	(IA, 19 DE)	गङ्गा हिमालयात् निर्गच्छति।

[2012]

1.	मैं लिखता हूँ।	(HH)	अहं लिखामि।
2.	सुरेश आँख से काना है।	(HH)	सुरेशः अक्ष्णा काणः अस्ति।
3.	रमेश दौड़ता है।	(HH)	रमेशः धावति।
4.	हम दोनों कहाँ जाते हैं?	(HH)	आवां कुत्र गच्छावः?
5.	गाँव के समीप विद्यालय है।	(HH)	ग्रामं निकषा विद्यालयं अस्ति।
6.	हिमालय से नदी निकलती है।	(HH)	हिमालयात् नदी प्रभवति।
7.	गुरु शिष्य पर क्रोध करता है।	(HG)	गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।
8.	हमारे विद्यालय के दोनों ओर नदी है।	(HG)	अस्माकं विद्यालयं उभयतः नदी अस्ति।
9.	सीता राम के साथ वन में जाती है।	(HG)	सीता रामेण सह वनं गच्छति।
10.	हिमालय से गंगा निकलती है।	(HG)	हिमालयात् गङ्गा प्रभवति।
11.	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।	(HG, 19 DA, DC)	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
12.	सुरेश राम से पुस्तक माँगता है।	(HG)	सुरेशः रामं पुस्तकं याचते।
13.	देवदत्त स्वभाव से दयालु है।	(HJ)	देवदत्तः स्वभावेन दयालुः अस्ति।
14.	तीर्थों में प्रयाग श्रेष्ठ है।	(HJ)	तीर्थेषु प्रयागः श्रेष्ठः अस्ति।

[2013]

1.	ग्वाला गाय से दूध दुहता है।	(BM)	ग्वालः गां दुग्धं दोग्धि।
2.	गाँव के दोनों ओर जलाशय है।	(BM)	ग्रामं उभयतः जलाशयः अस्ति।
3.	गंगा और यमुना के बीच में प्रयाग है।	(BM)	गङ्गा यमुना च मध्ये प्रयागः अस्ति।
4.	महेश एक आँख से काना है।	(BM)	महेशः एकं अक्ष्णा काणः अस्ति।
5.	कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।	(BM)	कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।
6.	नदी एक कोस टेढ़ी-मेढ़ी है।	(BM)	एकं क्रोशं कुटिला नदी।
7.	राजा सिंहासन पर बैठता है।	(BM)	नृपः सिंहासने तिष्ठति।
8.	हमारे महाविद्यालय के दोनों ओर उद्यान हैं।	(BN)	अस्माकं महाविद्यालयं उभयतः उद्यानम् अस्ति।
9.	छात्रों में राम कुशल है।	(BN)	छात्रेषु रामः कुशलः।
10.	मुक्ति के लिए भक्त हरि को भजता है।	(BN)	मुक्ताय भक्तः हरिं भजति।
11.	तुम जल से मुख धोते हो।	(BN)	त्वं जलेन मुखं प्रक्षालयसि।
12.	विद्यालय के चारों ओर वन है।	(BJ)	विद्यालयं परितः वनं अस्ति।
13.	पेड़ से पत्ते गिरते हैं।	(BJ)	वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।
14.	माधव लेखनी से लिखता है।	(BJ)	माधवः लेखन्या लिखति।

[2014]

1.	गाँव के दोनों ओर वृक्ष हैं।	(CS, 19 DE)	ग्रामम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।
2.	राम ने रावण को बाण से मारा।	(CS, 19 DF)	रामः रावणं बाणेन अहनत्।
3.	मोहन पैर से लंगड़ा है।	(CS, 19 CZ)	मोहनः पादेन खञ्जः।
4.	देवदत्त को लड्डू अच्छे लगते हैं।	(CS)	देवदत्ताय मोदकं रोचते।
5.	घर के दोनों ओर बगीचा है।	(CT)	गृहम् उभयतः उद्यानम् अस्ति।
6.	बगीचे में सुन्दर पुष्प हैं।	(CT)	उद्यानेषु सुन्दरं पुष्पम् अस्ति।
7.	गणेशजी को लड्डू अच्छा लगता है।	(CT)	गणेशाय मोदकं रोचते।
8.	शिष्य गुरु से प्रश्न पूछता है।	(CU)	शिष्यः गुरुं प्रश्नं पृच्छति।
9.	वह जल से हाथ धोता है।	(CU)	सः जलेन हस्तं प्रक्षालयति।
10.	पिता पुत्र पर क्रोध करता है।	(CU)	पिता पुत्रवे क्रुध्यति।
11.	वह चोर से डरता है।	(CU)	सः चौरात् विभेति।
12.	भक्त हरि को भजता है।	(CV)	भक्तः हरिं भजति।
13.	वह महीने भर निरन्तर पढ़ता है।	(CV)	सः मासपर्यन्तं निरन्तरं पठति।
14.	राम श्याम के साथ जाता है।	(CV)	रामः श्यामेण सह गच्छति।
15.	बालक घोड़े से गिरता है।	(CV)	बालकः अश्वात् पतति।
16.	मन्दिर के चारों ओर पुष्प पादप है।	(CW)	मन्दिरं अभितः पुष्पाणि पादपानि सन्ति।
17.	विष्णु बलि से पृथ्वी माँगते हैं।	(CW)	विष्णु बलिं वसुधां यावते।
18.	देवदत्त दोनों नेत्रों से काना है।	(CW)	देवदत्तः नेत्राभ्यां काणः।
19.	हम दोनों माता-पिता के साथ बाजार गये।	(CW)	आवाम माता-पित्रेण सह आपणम् अगच्छताम्।
20.	लङ्का के चारों ओर समुद्र है।	(CX)	लङ्कां अभितः समुद्रः अस्ति।
21.	गाँव के निकट ही दो नदियाँ हैं।	(CX)	ग्रामं विकषा एव द्वौ नद्यौ स्तः।
22.	मित्रों के साथ पढ़ने जाओ।	(CX)	मित्रेण सह पठितुं गच्छ।
23.	विद्यालय के चारों ओर बाग है।	(CY)	विद्यालयं अभितः उद्यानम् अस्ति।
24.	वह घोड़े से गिर पड़ा।	(CY)	सः अश्वात् अपतत्।

[2015]

1. ग्वाला गाय से दूध दुहता है। (DT) ग्वाला गां दुग्धं दोग्धि।
2. देवदत्त चावलों से भात पकाता है। (DT) देवदत्तः तन्दुलान् ओदनं पचति।
3. मन्दिर के चारों ओर वाटिका है। (DT) मन्दिरं परितः वाटिका अस्ति।
4. वह मित्रों के साथ विद्यालय जाता है। (DT) सः मित्रेण सह विद्यालयं गच्छति।
5. दुर्योधन पाण्डवों पर क्रोध करता है। (DT) दुर्योधनः पाण्डवेभ्यः क्रुध्यति।
6. भीष्म वीरों में श्रेष्ठ थे। (DT) भीष्मः वीरेषु श्रेष्ठः आसीत्।
7. वह निर्धनों को धन देता है। (DT) सः निर्धनेभ्यः धनं ददाति।
8. विद्यालय के चारों ओर विशाल वृक्ष हैं। (DU, 19 DA) विद्यालयं परितः विशालवृक्षाः सन्ति।
9. सिद्धार्थ कलम से लिखता है। (DU) सिद्धार्थः लेखन्या लिखति।
10. गंगा हिमालय से निकलती हैं। (DU, 19 CZ) गंगा हिमालयात् निर्गच्छति।
11. तीर्थस्थलों में लोग भूमि पर सोते हैं। (DU) तीर्थस्थलेषु जनाः भूमे शयनं कुर्वन्ति।
12. कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं। (DU) कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।

[2016]

1. राजाओं में राम श्रेष्ठ हैं। (TM) नृपेषु रामः श्रेष्ठः।
2. छात्र अध्यापक से प्रश्न पूछता है। (TM) छात्रः अध्यापकं प्रश्नं पृच्छति।
3. भगवान् को नमस्कार। (TM) भगवते नमः।
4. नदी कोस भर टेढ़ी है। (TM) क्रोशं कुटिला नदी।
5. राधा चोरों से डरती है। (TM) राधा चौरात् विभेति।
6. मनुष्यों में परोपकारी ही प्रशंसनीय है। (TK) मानवेषु परोपकारी एव प्रशंसनीयः।
7. ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती। (TK) ज्ञानेन बिना मुक्तिः न भवति।
8. रमा पूजा के लिए फूल चुनती है। (TK) रमा पूजाय पुष्पं चिनोति।
9. मेरा मित्र कानों से बहरा है। (TK) मम मित्र कर्णाभ्यां बधिरः अस्ति।
10. छात्र अध्ययन के लिए विद्यालय जा रहे हैं। (TK) छात्राः अध्ययनस्य हेतोः विद्यालयं गच्छन्ति।
11. तालाब के दोनों ओर बहुत पेड़ हैं। (TO) तडागम् उभयतः बहवः वृक्षाः सन्ति।
12. हम लोग शाम को कुटी जाते हैं। (TO) वयं सायंकाले कुटीं गच्छामः।
13. सबेरे घूमना स्वास्थ्य के लिए हितकर है। (TO) प्रातःकालीन भ्रमणः स्वास्थ्याय हितकरः अस्ति।
14. हमारे शरीर में स्थित आलस्य हमारा परम शत्रु है। (TO) अस्माकं शरीरस्थितः आलस्य अस्माकं परमशत्रुः।
12. वह कभी-कभी घोड़े से गिर जाता है। (TO) सः यदा-कदा अश्वात् पतति।

[2017]

1. तीर्थराज प्रयाग एक प्रसिद्ध नगरी है। (NJ) तीर्थराज प्रयागः एकः प्रसिद्ध नगरी अस्ति।
2. विद्यालय के दोनों ओर गंगा नदी बहती है। (NJ) विद्यालयं उभयतः गङ्गा नदी बहति।
3. तुम लोग अपने हाथ से काम करो। (NJ) यूयं स्व हस्तेन कार्यं कुरुत।
4. राम के साथ लक्ष्मण भी वन गये। (NJ) रामेण सह लक्ष्मणोऽपि वनम् अगमत्।
5. पेड़ परोपकार के लिए फलते हैं। (NJ) वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति।
6. राम श्याम पर क्रोध करता है। (NJ) रामः श्यामाय क्रुध्यति।
7. ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती। (NJ, 19 DA) ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।
8. कुएँ का पानी ठण्डा होता है। (NJ, 19 CZ) कूपस्य जलं शीतलं भवति।

9.	वह अध्ययन के लिए छात्रावास में निवास करता है।	(NK)	सः अध्ययनस्य हेतोः छात्रावासे निवसति।
10.	विद्यालय के दोनों ओर सुन्दर उद्यान हैं।	(NK)	विद्यालयं उभयतः सुन्दराणि उद्यानानि सन्ति।
11.	सभी पक्षियों में मोर अधिक सुन्दर है।	(NK)	सर्वेषु पक्षिषु मयूरः सुन्दरतमः अस्ति।
12.	विद्या विनय से शोभित होती है।	(NK)	विद्या विनयेन शोभते।
13.	मेरा मित्र कान से बहरा है।	(NK)	मम मित्रः कर्णाभ्यां बधिरः अस्ति।
14.	छात्रों में गुरु के प्रति श्रद्धा होनी चाहिए।	(NK)	छात्रेषु गुरुं प्रति श्रद्धा भवेत्।
15.	संस्कृत के कवियों में कालिदास सर्वश्रेष्ठ हैं।	(NK)	संस्कृत-कविषु कालिदासः सर्वश्रेष्ठः अस्ति।
16.	मैं पिता के साथ बाजार जाता हूँ।	(NK)	अहं पित्रा सह आपणं गच्छामि।
17.	बालिका चावल से खीर पकाती है।	(NK)	बालिका तण्डुलान् पायसम् पचति।
18.	नारी के बिना धर्म कार्य अधूरे होते हैं।	(NK)	स्त्रीम्, स्त्रिया, स्त्रियाः विना धर्म कार्यं पूर्णं न भवति।
19.	ग्राम के चारों ओर वृक्ष हैं।	(NL)	ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति।
20.	राम कान से बहरा है।	(NL)	रामः कर्णाभ्यां बधिरः अस्ति।
21.	मैं अपनी माता से फल माँगता हूँ।	(NM)	अहं स्व मात्रा फलम् याचामि।
22.	हमारे संस्कृत शिक्षक स्वभाव से सरल हैं।	(NM)	अस्माकं संस्कृत शिक्षकः स्वभावेन सरलः अस्ति।
23.	प्रयाग में भरद्वाज मुनि क आश्रम है।	(NM)	प्रयागे भरद्वाज मुनिना आश्रमः अस्ति।
24.	सभी छात्र समय से विद्यालय जाते हैं।	(NO)	सर्वे छात्राः समयेन विद्यालयं गच्छन्ति।
25.	महात्मा को नमस्कार।	(NP)	महात्मनो नमः।

[2018]

1.	सूर्यास्त के समय सूर्य किस दिशा में होता है।	(BK)	सूर्यास्तस्य कालं सूर्यः कस्मिन् दिशे भवति?
2.	देवों को सामग्री अर्पित करो।	(BK)	देवानां सामग्रीम् अर्पितं कुरु।
3.	स्काउट्स कभी आग से नहीं डरते।	(BK)	स्काउट्स कदापि वह्निना न बिभेति।
4.	छात्रों के द्वारा गृह कार्य किया गया।	(BK)	छात्रैः गृहकार्यम् अकुर्वन्।
5.	विद्यालय के चारों ओर सड़क है।	(BN)	विद्यालयं परितः मार्गाः सन्ति।
6.	मेरे साथ मेरा मित्र विद्यालय जाता है।	(BN)	मया सह मम मित्रं विद्यालयं गच्छति।

[2019]

1.	गाँव के दोनों ओर नदी बहती है।	(DA)	ग्रामम् उभयतः नदीं बहति।
2.	दुष्यन्त के साथ शकुन्तला जाती है।	(DA)	दुष्यन्तेन सह शकुन्तला गच्छति।
3.	सभी देवताओं को नमस्कार है।	(DA)	सर्वेभ्यः देवताभ्यः नमः।
4.	देवदत्त अध्ययन के लिए शहर में रहता है।	(DA)	देवदत्तः अध्ययनाय शहरे निवसति।
5.	छात्र पैर से लंगड़ा है।	(DA)	छात्रः पादेन खञ्जः।
6.	राम श्याम के साथ घर जाता है।	(DB)	रामः श्यामेण सह गृहं गच्छति।
7.	विद्यालय के दोनों ओर वृक्ष हैं।	(DB)	विद्यालयम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।
8.	तुम लोग घर जाओ।	(DB)	त्वम् गृहं गच्छ।
9.	वह सिंह से डरता है।	(DB)	सः सिंहात् विभेत् ।
10.	मैं तुम्हारे साथ घर जाता हूँ।	(DC)	अहम् तया सह गृहं गच्छामि।
11.	घर के चारों ओर वृक्ष हैं।	(DC)	गृहं परितः वृक्षाः सन्ति।
12.	तुम लोग पत्र लिखोगे।	(DC)	यूयं पत्रं लेखिष्यथ।
13.	गाँव के चारों ओर तालाब है।	(DD)	ग्रामं परितः तडागः अस्ति।

14. गुरु को नमस्कार। (DD) गुरुवे नमः।
15. गणेश को लड्डू अच्छे लगते हैं। (DD) गणेशाय मोदकं रोचते।

[2020]

1. गाँव के समीप विद्यालय है। (ZU) ग्रामं निकषा विद्यालयम् अस्ति।
2. राम ने रावण को बाण से मारा। (ZU) रामः रावणं बाणेन अहनत्।
3. वह चोर से डरता है। (ZU) सः चौराद् विभेति।
4. वह मित्रो के साथ विद्यालय जाता है। (ZU) सः मित्रेण सह विद्यालयं गच्छति।
5. ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती है। (ZU) ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः।
6. मेरा मित्र कानों से बहरा है। (ZU) मम मित्रः कर्णाभ्यां बधिरः।
7. गुरु को नमस्कार है। (ZU) गुरवे नमः।

2 कारक तथा विभक्ति

(3 अंक)

'**क्रियान्वययित्वं कारकत्वम्**' क्रिया से जिसका सम्बन्ध हो, उसे कारक कहते हैं अर्थात् कारक उस वस्तु को कहा जाता है जिसका अन्वय साक्षात् या असाक्षात् रूप से, वाक्य की क्रिया से हो। यथा– ''वन से आकर राम ने सीता के लिए लंका में रावण को बाण से मारा था।''

इस वाक्य में क्रिया को सम्पादित करनेवाला 'राम' 'कर्त्ता' है। क्रिया का प्रभाव जिस पर पड़ता है वह 'कर्म' है। 'मारना' क्रिया का प्रभाव 'रावण' पर पड़ता है वह 'कर्म' है। क्रिया के साधन में अत्यधिक सहायक 'करण' कहलाता है, यहाँ 'बाण' करण है। सीता के लिए 'रावण' मारा गया, अतः 'सीता' 'सम्प्रदान', 'वन' 'अपादान', लंका में क्रिया पूर्ण हुई थी, अतः लंका 'अधिकरण' कारक है। इस वाक्य में वन, राम, सीता, लंका, रावण इन सभी शब्दों का मारना क्रिया के सम्पादन में साक्षात् या असाक्षात् रूप से उपयोग है, अतः ये सभी कारक कहे जायँगे। इस प्रकार क्रिया के सम्पादन में ये छह सम्बन्ध होते हैं, इन्हीं सम्बन्धों को प्रकट करने के लिए कारकों का प्रयोग होता है तथा इन्हीं अर्थों में प्रथमा आदि विभक्तियाँ प्रयुक्त होती हैं।

➠ कारक के चिह्न

विभक्ति	**कारक**	**चिह्न**
प्रथमा	कर्त्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पंचमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, की, के; रा, री, रे
सप्तमी	अधिकरण	में, पे, पर
प्रथमा	सम्बोधन	भो, हे, अरे

विभिन्न सूत्रों के आधार पर कारकों एवं विभक्तियों का ज्ञान

चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक)

नियम 1. कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् — कर्त्ता कर्म के द्वारा जिसे अभिप्रेत करता है अर्थात् कर्त्ता जिसे कुछ देता है या जिसके लिए कुछ करता है, वह सम्प्रदान कहलाता है।

नियम 2. चतुर्थी सम्प्रदाने — सम्प्रदान में चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा—

नृपः ब्राह्मणाय गां ददाति	राजा ब्राह्मण को गाय देता है।
बालकेभ्यः फलानि यच्छति	बालकों को फल देता है।
उपाध्यायाय गां ददाति	उपाध्याय के लिए गाय देता है।
ब्राह्मणाय भूमिम् ददाति	ब्राह्मण के लिए भूमि देता है।

नियम 3. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः — रुच् (अच्छा लगना, पसन्द आना) तथा इसी अर्थ की अन्य धातुओं के प्रयोग में जो अच्छी लगनेवाली वस्तु हो, उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती अर्थात् उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा—

हरये रोचते भक्तिः	हरि को भक्ति अच्छी लगती है।
सुरेशाय दुग्धं रोचते	सुरेश को दूध अच्छा लगता है।
मह्यं मोदकाः रोचन्ते	मुझे लड्डू पसन्द हैं।
मह्यं ओदनं रोचते	मुझे भात अच्छा लगता है।

नियम 4. क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रतिकोपः — क्रुध् (क्रोध करना), द्रुह् (द्रोह करना), ईर्ष्य् (ईर्ष्या करना), इन तीनों धातुओं तथा इन्हीं अर्थों की अन्य धातुओं के प्रयोग में भी जिसके प्रति क्रोध हो, उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है और उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा—

पिता पुत्राय क्रुध्यति	पिता पुत्र पर क्रोध करता है।
दुष्टाः सज्जनेभ्यः द्रुह्यन्ति	दुष्ट सज्जनों से द्रोह करते हैं।
देवः गोविन्दाय ईर्ष्यति	देव गोविन्द से ईर्ष्या करता है।
दैत्याः देवेभ्यः असूयन्ति	दैत्य देवों से जलते हैं।
सा मनोजाय क्रुध्यति।	वह मनोज पर क्रोध करती है।

नियम 5. स्पृहेरीप्सितः — स्पृह (चाह करना) धातु के प्रयोग में जिस वस्तु की चाह होती है, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा—

पुरुषेभ्यः स्पृहयति	पुरुषों की चाह करती है।
रमा पुष्पेभ्यः स्पृहयति	रमा फूलों की चाह करती है।
बालिकाः फलेभ्यः स्पृहयन्ति	बालिकाएँ फलों की चाह करती हैं।

नियम 6. नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधालंवषड्योगाच्च — नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलं, वषट्— इन शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है; यथा—

विष्णवे नमः	विष्णु के लिए नमस्कार।
गणेशाय नमः [2011 HZ]	गणेश के लिए नमस्कार।
शिवाय नमः	शिव को नमस्कार।
देवेभ्यो नमः	देवो को नमस्कार।
स्वस्ति तुभ्यम्	तेरा कल्याण हो।
इन्द्राय स्वाहा	इन्द्र के लिए स्वाहा।
पितृभ्यःस्वधा	पितरों को स्वधा।
दैत्येभ्यः हरिः अलम्	दैत्यों के लिए हरि पर्याप्त हैं।
अग्नये स्वाहा	अग्नि के लिए स्वाहा।

पंचमी विभक्ति (अपादान कारक)

नियम 1. ध्रुवमपायेऽपादानम् — अपाय (विश्लेष—अलग होना) अर्थ में जो ध्रुव हो, जिससे अलग हो, उसे 'अपादान' कहते हैं। 'वृक्ष से पत्ता गिरता है।' इस वाक्य में पत्ता वृक्ष से अलग होता है, अतः वृक्ष अपादान है।

नियम 2. अपादाने पंचमी — अपादान में पंचमी विभक्ति होती है; यथा—

स ग्रामाद् गच्छति	वह गाँव से जाता है।
वृक्षात् पत्राणि पतन्ति	वृक्ष से पत्ते गिरते हैं।

महेशः आसनाद् उत्तिष्ठति	महेश आसन से उठता है।
सर्वे विमानात् अवतरन्ति	सभी विमान से उतरते हैं।
हिमालयात् गंगा प्रभवति	हिमालय से गंगा निकलती है।
सोपानात् पतति	सीढ़ी से गिरता है।

नियम 3. जुगुप्सा-विराम प्रमादार्थानामुपसंख्याम् (वा0) — जुगुप्सा (घृणा), विराम (रुकना), प्रमाद (आलस्य) अर्थवाली धातुओं के प्रयोग में जिससे जुगुप्सा, विराम अथवा प्रमाद हो, उसमें पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है; यथा–

पापाज्जुगुप्सते	पाप से घृणा करता है।
स कार्याद्विरमति	वह कार्य से रुकता है।
स पठनात् प्रमाद्यति	वह पढ़ने से प्रमाद करता है।

नियम 4. भीत्रार्थानां भयहेतुः — भय और त्राण (रक्षा) अर्थवाली धातुओं के प्रयोग में भय के हेतु से पंचमी विभक्ति होती है; यथा–

सिंहात् पुत्रं रक्षति	शेर से पुत्र की रक्षा करता है।
माता पुत्रम् अग्नेः रक्षति	माता पुत्र की अग्नि से रक्षा करती है।
स पापात् त्रायते सुतम्	वह पाप से पुत्र का त्राण करता है।
वृकः सिंहात् बिभेति	भेड़िया सिंह से डरता है।
शिशुः सर्पात् बिभेति	बच्चा साँप से डरता है।
चौराद् बिभेति	चोर से डरता है।

नियम 5. आख्यातोपयोगे च — [2011 IB] जिससे नियमपूर्वक विद्या पढ़ी जाय या कुछ सीखा जाय, उसमें पंचमी विभक्ति होती है; यथा—

उपाध्यायाद् अधीते	उपाध्याय से पढ़ता है।
उमा माधवात् संगीतं शिक्षते	उमा माधव से संगीत सीखती है।
रविः शिक्षकात् संस्कृतं पठति	रवि शिक्षक से संस्कृत पढ़ता है।
सः गुरोः कर्मकाण्डं जानाति	वह गुरु से कर्मकाण्ड का ज्ञान करता है।

षष्ठी विभक्ति

नियम 1. षष्ठी शेषे — कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान तथा अधिकरण अर्थों के अतिरिक्त स्वस्वामिभाव, सामीप्य आदि सम्बन्धों को प्रकट करने हेतु षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है; यथा—

राज्ञः पुरुषः	राजा का पुरुष।
गंगायाः जलम्	गंगा का जल।
दशरथस्य पुत्रः	दशरथ का पुत्र।
पाञ्चालानां भूमिः	पाञ्चालों की भूमि।

नियम 2. षष्ठी हेतुप्रयोग—यदि किसी वस्तु की हेतुता प्रकट करनी हो और हेतु शब्द का साक्षात् प्रयोग हो तो उस वस्तु तथा हेतु शब्द दोनों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है; यथा—

स अन्नस्य हेतोः वसति	वह अन्न के कारण रहता है।
स धनस्य हेतोः सेवते	वह धन के हेतु सेवा करता है।
मोहनः गृहस्य हेतोः यतते	मोहन घर के हेतु यत्न करता है।
अध्ययनस्य हेतोः वसति	अध्ययन के कारण रहता है।

नियम 3. क्तस्य च वर्तमाने — वर्तमान अर्थ में होनेवाले 'क्त' प्रत्ययान्त शब्दों के योग में षष्ठी विभक्ति होती है; यथा—

राज्ञां पूजितः विद्वान् — वह विद्वान्, जो राजाओं द्वारा पूजा जाता है।
सर्वेषामादृतः गुरुः — वह गुरु, जिसका सब आदर करते हैं।

नियम 4. षष्ठी चानादरे—अनादर अर्थ प्रकट करने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है; यथा—

बालकानां चम्पकः चंचलः — बालकों में चम्पक चंचल है।
खगानां काकः धूर्तः — पक्षियों में कौआ धूर्त होता है।
पशूनां शृगालः मूर्खः — पशुओं में गीदड़ मूर्ख है।

सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)

नियम 1. आधारोऽधिकरणम् — आधार को 'अधिकरण' कहते हैं।

प्रत्येक वस्तु अथवा कार्य किसी-न-किसी काल में और किसी-न-किसी स्थान में होता है। यह काल या स्थान उस वस्तु या कार्य का आधार होता है; जैसे घर में, दिन में, भूमि पर (गृहे, दिने, भूमौ)।

नियम 2. कुशल तथा निपुण शब्दों के योग में सप्तमी-विभक्ति होती है। यथा—

सः शास्त्रे कुशलः अस्ति — वह शास्त्र में कुशल है।
शस्त्रे निपुणः — शस्त्र में निपुण।

नियम 3. सप्तम्यधिकरणे च — अधिकरण में सप्तमी-विभक्ति होती है; यथा—

वयं गृहे वसामः — हम घर में रहते हैं।
गंगायां निर्मलं जलम् अस्ति — गंगा में निर्मल जल है।
क्षेत्रेषु अन्नम् उत्पद्यते — खेतों में अन्न उत्पन्न होता है।
वनेषु सिंहाः वसन्ति — वनों में सिंह रहते हैं।

नियम 4. साध्वसाधुप्रयोगे च (वा.)— साधु और असाधु शब्दों के प्रयोग में सप्तमी विभक्ति होती है; यथा–

साधुः कृष्णः मातरि — कृष्ण माता के विषय में साधु है।
असाधुः कृष्णः मातुले — कृष्ण मामा के विषय में असाधु है।

नियम 5. यतश्च निर्धारणम्– यदि किन्हीं वस्तुओं या व्यक्तियों के समुदाय में से किसी एक वस्तु या व्यक्ति को किसी विशेषता के आधार पर सबसे उत्कृष्ट या निकृष्ट निश्चित किया जाय तो समुदाय की वस्तुओं अथवा व्यक्तियों में सप्तमी अथवा षष्ठी दोनों में से कोई विभक्ति होती है; यथा—

कविषु कालिदासः श्रेष्ठः — कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं।
बालकेषु रविः श्रेष्ठः — बालकों में रवि सबसे अच्छा है।

अथवा

बालकानां रविः श्रेष्ठः — छात्रों में रवि सबसे बड़ा है।

अथवा

छात्रेषु रविः ज्येष्ठः
नदीषु गंगा पवित्रतमा, — नदियों में सबसे पवित्र गंगा है।

अथवा

नदीनां गंगा पवित्रतमा।
पर्वतेषु हिमालयः उच्चतमः — पर्वतों में हिमालय सबसे ऊँचा है।

अथवा

पर्वतानां हिमालयः उच्चतमः।

गत वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर

[2011]

हरये रोचते भक्तिः।	(IC)	हरये	चतुर्थी	'रुच्यर्थानां प्रीयमाणः।
पापात् निवारयति।	(IC, 19 DA)	पापात्	पंचमी	ध्रुवमपायेऽपादानम्।
छात्राणां नचिकेता पटुतमः।	(IC)	क्षात्राणां	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्।
ग्रामम् अभितः नदी अस्ति।	(IA)	ग्रामम्	द्वितीया	अभितः, परितः, समया, निकषा हा प्रतियोगे द्वितीया।
कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।	(IA, HX, 17 NJ, 19 DB)	कविषु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्
गङ्गा हिमालयात् प्रभवति।	(IA)	हिमालयात्	पंचमी	भुवः प्रभवः
छात्र विद्यालयात् आयाति।	(HZ)	विद्यालयात्	पंचमी	अपादाने पंचमी
मासम् अधीते माणवकः।	(HZ)	मासम्	द्वितीया	कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे
शिरसा खल्वाटोऽयम्।	(HZ, IB, 19 DE)	शिरसा	तृतीया	येनांगविकारः
नृपः मूर्खाय क्रुध्यति।	(HX)	मूर्खाय	चतुर्थी	क्रुधद्रुहेर्ष्या....यं प्रतिकोपः।
वृक्षात् पत्रं पतति।	(HX)	वृक्षात्	पंचमी	अपादाने पंचमी
पयसा ओदनं भुङ्क्ते।	(IB)	ओदनं	द्वितीया	अकथितं च।
गोषु कृष्णा बहुक्षीरा।	(IB, 19 DD, DF)	गोषु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्।
लङ्कां परितः समुद्रोऽस्ति।	(ID)	लङ्कां	द्वितीया	अभितः परितः समया
तस्मै रोचन्त मोदकाः।	(ID)	तस्मै	चतुर्थी	रुच्यर्थानां प्रीयमाणः।
छात्रेषु मैत्रः पटुः।	(ID)	छात्रेषु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्।

[2012]

गां दोग्धि पयः।	(HD)	गां	द्वितीया	अकथितं च
पुत्रेण सहागतः पिता।	(HD)	पुत्रेण	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
हरये नमः।	(HD)	हरये	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा
वृक्षात् पत्राणि पतन्ति।	(HD, 17 NJ, 19 CZ, DB, DD, DF)	वृक्षात्	पंचमी	अपादाने पंचमी
मिष्ठान्नं सर्वेभ्यः रोचते।	(HF, 19 DE)	सर्वेभ्यः	चतुर्थी	रुच्यर्थानां प्रियमाणः
मोहनः अश्वात् पतति।	(HE)	अश्वात्	पंचमी	अपादाने पंचमी
प्रयागं प्रति जनानां श्रद्धा अस्ति।	(HE)	प्रयागं	द्वितीया	अभितः परितः प्रतियोगे द्वितीया
हरिं भजति।	(HF)	हरिं	द्वितीया	अकथितं च
अक्ष्णा काणः।	(HF)	अक्ष्णा	तृतीया	येनाङ्ग विकारः
सिंहाद् विभेति।	(HF)	सिंहाद्	पंचमी	भीत्रार्थानां भयहेतुः
गुरुः शिष्याय क्रुध्यति।	(HG)	शिष्याय	चतुर्थी	क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः
मोहनः पादेन खञ्जः।	(HG)	पादेन	तृतीया	येनाङ्गविकारः
कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।	(HG, 20ZP)	कविषु	सप्तमी	यतश्चनिर्धारणम्
सः कन्दुकेन सह क्रीडति।	(HH)	कन्दुकेन	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने

विप्राय धनं ददाति।	(HH)	विप्राय	चतुर्थी	चतुर्थीसम्प्रदाने
शिक्षकः शिष्याय क्रुध्यति।	(HH,19DE)	शिष्याय	चतुर्थी	क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः।
चौरात् त्रायते।	(HH)	चौरात्	पंचमी	भीत्रार्थानां भयहेतुः
हनुमते नमः।	(HJ)	हनुमते	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा
पापात् जुगुप्सते।	(HJ)	पापात्	पंचमी	जुगुप्सा विराम प्रमादार्थानाम् उपसंख्यानम्

[2013]

हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते।	(BJ,17NK)	वैकुण्ठम्	द्वितीया	स्थासां कर्म
शशिना सह कौमुदी राजते।	(BJ)	शशिना	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
नमः शम्भवे।	(BJ)	शम्भवे	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा...
कन्याम् अभिक्रुध्यति माता।	(BN)	कन्याम्	द्वितीया	अकथितं च
गृहं परितः वृक्षाम् शोभन्ते।	(BN)	गृहम्	द्वितीया	अभितः परितः समया...
नृपं क्षमां याचते।	(BL)	नृपम्	द्वितीया	अकथितं च।
श्यामः नेत्रेण काणः।	(BL)	नेत्रेण	तृतीया	येनांगविकारः...
ग्रामं परितः वनं अस्ति।	(BK)	ग्रामम्	द्वितीया	अभितः परितः ...
पुत्रेण सह आगतः पिता।	(BK,BP)	पुत्रेण	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
विष्णवे नमः।	(BK)	विष्णवे	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा...
प्रजाभ्यः स्वस्ति।	(BO)	प्रजाभ्यः	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा...
रावणः रथात् भूमौ पतति।	(BO)	रथात्	पंचमी	अपादाने पंचमी
ब्राह्मणाय धनं ददाति।	(BP)	ब्राह्मणाय	चतुर्थी	कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्
पुष्पेभ्यः स्पृह्यति।	(BP)	पुष्पेभ्यः	चतुर्थी	स्पृहेरीप्सितः
ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते।	(BM)	विषम्	द्वितीया	अकथितं च
मातुलेन सह आगतः।	(BM)	मातुलेन	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने

[2014]

सज्जनाः सदा पापात् जुगुप्सते।	(CS)	पापात्	पंचमी	जुगुप्सा–विराम प्रमादार्थानामुपसंख्यानम्
कविषु कालिदासः श्रेष्ठः।	(CS,20ZQ)	कविषु	सप्तमी	यतश्चनिर्धारणम्
साधु कृष्णो मातरि।	(CS)	मातरि	सप्तमी	साध्वसाधु प्रयोगे च
लुब्धकाः वृक्षम् आरोहन्ति।	(CS)	वृक्षम्	द्वितीया	
रामं विना सुखं नास्ति।	(CT)	रामं	द्वितीया	पृथग्विना नानाभिस्तृतीयान्यतरस्याम्
बालकाय मोदकं रोचते।	(CT)	बालकाय	चतुर्थी	रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
गुरुः शिष्येषु स्निह्यति।	(CT)	शिष्येषु	सप्तमी	
परितः कृष्णं गोपाः।	(CU)	कृष्णं	द्वितीया	अभितः परितः समया निकषा हा प्रति योगेऽपि
अक्ष्णा काणः।	(CU)	अक्ष्णा	तृतीया	येनाङ्गविकारः
प्रजाभ्यः स्वस्ति।	(CU)	प्रजाभ्यः	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधालंवषड्योगाच्च
उपाध्यायाद् अधीते।	(CU)	उपाध्यायाद्	पंचमी	आख्यतिपपोगे च
गोपः गां पयः दोग्धि।	(CV)	गां	द्वितीया	अकथितं च
अभितः कृष्णम्।	(CV)	कृष्णम्	द्वितीया	अभितः परितः समया निकषा हा प्रतियोगेऽपि
हरये रोचते भक्तिः।	(CV)	हरये	चतुर्थी	रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
पापात् जुगुप्सते।	(CV)	पापात्	पंचमी	जुगुप्सा विराम प्रमादार्थानामुपसंख्यानम्
विष्णवे नमः।	(CW)	विष्णवे	चतुर्थी	नमःस्वस्ति स्वाहा स्वधालंवषड्योगाच्च

पित्रा सह गतः।	(CW)	पित्रा	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रधाने
क्षीरनिधिं सुधां मथ्नाति।	(CW)	क्षीरनिधिं	द्वितीया	अकथितं च
गां दोग्धि पयः।	(CX)	गां	द्वितीया	अकथितं च
अध्ययनात् पराजयते।	(CX)	अध्ययनात्	पंचमी	
अधिवसति वैकुण्ठं हरिः।	(CX)	वैकुण्ठम्	द्वितीया	
रामेण बाणेन हतो बाली।	(CY)	बाणेन	तृतीया	कर्तृकरणयोस्तृतीया
दण्डेन घटः।	(CY)	दण्डेन	तृतीया	
अक्ष्णा काणः।	(CY)	अक्ष्णा	तृतीया	येनाङ्गविकारः

[2015]

गोपः गां पयः दोग्धि।	(DT)	गां	द्वितीया	दुह्याद्दण्डरुध
कृष्णं परितः गोपिका अतिष्ठन्।	(DT)	कृष्णं	द्वितीया	अभितः परितः समया
छात्रेषु गोविन्दः पटुतमः।	(DT)	छात्रेषु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्
गणेशाय मोदकाः रोचन्ते।	(DT)	गणेशाय	चतुर्थी	रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
अक्ष्णा काणः।	(DU)	अक्ष्णा	तृतीया	येनाङ्गविकारः
रावणः रथात् भूमौ पतति।	(DU)	रथात्	पंचमी	अपादाने पंचमी
क्रोशं कुटिला नदी।	(DU)	क्रोशं	द्वितीया	कालाध्वनोरत्यन्त संयोगे

[2016]

गृहम् परितः वृक्षाः शोभन्ते।	(TJ)	गृहम्	द्वितीया	अभितः परितः समया
गां दोग्धि पयः।	(TJ)	ग्राम्	द्वितीया	अकथितं च
अधिवसति वैकुण्ठं हरिः।	(TK)	वैकुण्ठम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
कुक्कुरः पादेन खञ्जः।	(TK)	पादेन	तृतीया	येनाङ्गविकारः
गवां कृष्णा बहुक्षीरा।	(TK)	गवां	षष्ठी	यतश्चनिर्धारणम्
रामः बाणेन रावणमवधीत।	(TM)	बाणेन	तृतीया	येनाङ्गविकारः
श्रीमते नमः।	(TM)	श्रीमते	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा
दिनेशः पादेन खञ्जः।	(TM)	पादेन	तृतीया	कर्तृकरणयोस्तृतीया
ग्रामं परितः वृक्षाः सन्ति।	(TO, 20ZP)	ग्रामम्	द्वितीया	अभितः परितः समया
रामः सीतया लक्ष्मणेन च सह। चित्रकूटं प्रति गच्छति।	(TP)	चित्रकूटम्	द्वितीया	अकथितं च
सः मन्दिरम् अधिशेते।	(TP)	मन्दिरम्	द्वितीया	स्थासां कर्म
जनाः राज्ञे करं ददति।	(TP)	राज्ञे	चतुर्थी	चतुर्थी सम्प्रदाने

[2017]

विद्यालयं परितः विशाल वृक्षाः सन्ति।	(NJ, 19DC, 20ZQ)	विद्यालयं	द्वितीया	अभितः परितः समया
सिद्धार्थः लेखन्या लिखति।	(NJ)	लेखन्या	तृतीया	कर्तृकरणयोस्तृतीया
शिशुः सर्पात् बिभेति।	(NK)	सर्पात्	पंचमी	भीत्रार्थानां भयहेतुः
कुक्कुरः पादेन खञ्जः।	(NK)	पादेन	तृतीया	येनाङ्गविकारः
देवदत्तः गां पयः दोग्धि।	(NL)	गां	द्वितीया	अकथितं च
जलेन मुखं प्रक्षालयति।	(NL)	जलेन	तृतीया	कर्तृकरणयोस्तृतीया

प्रजाभ्यः स्वस्ति।	(NL)	प्रजाभ्यः	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलं0
मोक्षे इच्छाऽस्ति।	(NL)	मोक्षे	सप्तमी	आधारोऽधिकरणम्, सप्तम्यधिकरणे च
अहं विद्यालयात् गृहं आगच्छामि।	(NM)	विद्यालयात्	पंचमी	ध्रुवमपायेऽपादानम् अपादाने पंचमी
छात्रेषु मृगाङ्क प्रवीणतमः अस्ति।	(NM)	छात्रेषु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्
याचकेभ्यः भोजनं अर्पय।	(NM)	याचकेभ्यः	चतुर्थी	चतुर्थी सम्प्रदाने
ब्राह्मणाय गां ददाति।	(NN)	ब्राह्मणाय	चतुर्थी	कर्मणामभिप्रैति स सम्प्रदानम्, चतुर्थी सम्प्रदाने
सः ग्रामात् आगच्छति।	(NN)	ग्रामात्	पंचमी	अपादाने पञ्चमी
सिंहः वने वसति।	(NN)	वने	सप्तमी	सप्तम्यधिकरणे च
इन्द्राय स्वाहा।	(NO)	इन्द्राय	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलं0
यात्री विमानात् अवतरति।	(NO)	विमानात्	पंचमी	अपादाने पञ्चमी
बालिकासु सुभद्रा श्रेष्ठा।	(NO)	बालिकासु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्
चौराद् बिभेति।	(NP)	चौराद्	पंचमी	भीत्रार्थानां भयहेतुः
गणेशाय नमः।	(NP, 20ZP)	गणेशाय	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा लं0
हरिः सिंहासनम् अध्यास्ते।	(NP)	सिंहासनम्	द्वितीया	अधिशीङ्स्थासां कर्म
काव्येषु नाटकं रम्यम्।	(NP)	काव्येषु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्

[2018]

अग्नये स्वाहा।	(BK)	अग्नये	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधाऽलंवषड्योगाच्य
विद्यालयात् गृहं आगच्छ।	(BK)	विद्यालयात्	पंचमी	अपादाने पञ्चमी
अध्ययनस्य हेतो अत्र वसामि।	(BK)	अध्ययनस्य	षष्ठी	षष्ठी हेतु प्रयोगे
रामः पुष्पेभ्यः स्पृह्यति।	(BN)	पुष्पेभ्यः	चतुर्थी	स्पृहेरीप्सितः
सर्वे विमानात् अवतरन्ति।	(BN)	विमानात्	पंचमी	अपादाने पञ्चमी
शिशुः सर्पात् बिभेति।	(BN, 19CD)	सर्पात्	पंचमी	भीत्रार्थानां भयहेतुः
नदीषु गंगा पवित्रतमा।	(BN)	नदीषु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्

[2019]

बालकाय पठनं रोचते।	(CZ)	बालकाय	चतुर्थी	रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
ग्रामं सर्वतः वृक्षाः सन्ति।	(CZ)	ग्रामं	द्वितीया	उभसर्वतसोः कार्याधिगुपर्यादिषु0
छात्रः अध्यापकाय द्रुह्यति।	(DA)	अध्यापकाय	चतुर्थी	क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः
गोषु नन्दिनी बहुक्षीरा।	(DA)	गोषु	सप्तमी	यतश्च निर्धारणम्
बलिं याचते वसुधाम्।	(DB)	बलिं	द्वितीया	अकथितं च
स्वामी सेवकाय क्रुध्यति।	(DC)	सेवकाय	चतुर्थी	क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः
नमो भगवते वासुदेवाय।	(DD, 20 ZO,ZS)	भगवते	चतुर्थी	नमः स्वस्ति स्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च
सः जलेन हस्तं प्रक्षालयति।	(DF)	नलेन	तृतीया	साधकतमं करणम्

[2020]

शिक्षकः शिष्याय पुस्तकं ददाति।	(ZO)	शिष्याय	चतुर्थी	कर्मणा ययभिप्रेति स सम्प्रदानम्
जलेन क्षेत्रं सिञ्चति।	(ZO)	जलेन	तृतीया	साधकतमं प्रीयमाणः
छात्राय पठनं रोचते।	(ZQ)	छात्राय	चतुर्थी	सच्यर्थानां प्रीयमाणः
बालकः विद्यालयं गच्छति।	(ZR)	विद्यालयं	द्वितीया	अकथितं च

रामः <u>बाणेन</u> बलिं हतवान्।	(ZR)	बाणेन	तृतीया	कर्तृकरणपोस्तृतीया
<u>नेत्रेण</u> काणः।	(ZR)	नेत्रेण	तृतीया	येनाङ्गविकारः
मिष्ठान्नं <u>सर्वेभ्यः</u> रोचते।	(ZS)	सर्वेभ्यः	चतुर्थी	सच्यर्थानां प्रीयमाणः
अहं <u>त्वचा</u> सह गमिष्यामि।	(ZT)	त्वया	तृतीया	सहयुक्तेऽप्रद्याने
गुरुः <u>छात्रं</u> प्रश्नं पृच्छति।	(ZU)	छात्रं	द्वितीया	अकथितं च
जनाः <u>सिंहात्</u> विभ्यति।	(ZU)	सिंहात्	पञ्चमी	भीत्रार्थानां भयहेतुः

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'बालिका भुवि तिष्ठति' इस वाक्य में भुवि पद में कौन-सी विभक्ति और वचन है?
(क) पञ्चमी, बहुवचन (ख) द्वितीया, एकवचन (ग) तृतीया, द्विवचन (घ) सप्तमी, एकवचन
उत्तर – (घ) सप्तमी, एकवचन।

2. 'शिष्याय स्वस्ति' इस वाक्य के 'शिष्याय' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) प्रथमा (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) सप्तमी
उत्तर – (ग) चतुर्थी।

3. 'पुष्पा पुष्पेभ्यः स्पृह्यति' इस वाक्य में पुष्पेभ्यः में कौन-सी विभक्ति एवं वचन है?
(क) चतुर्थी, एकवचन (ख) पञ्चमी, बहुवचन (ग) चतुर्थी, बहुवचन (घ) प्रथमा, द्विवचन
उत्तर – (ग) चतुर्थी, बहुवचन।

4. 'पुष्पेभ्यः स्पृह्यति' वाक्य में पुष्पेभ्यः में कौन-सी विभक्ति एवं वचन है? (2011 IC)
(क) सप्तमी, एकवचन (ख) द्वितीया, बहुवचन (ग) चतुर्थी, बहुवचन (घ) षष्ठी, बहुवचन
उत्तर – (ग) चतुर्थी, बहुवचन।

5. 'सञ्जनात्' यह पद सञ्जन शब्द के किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?
(क) प्रथमा, एकवचन (ख) द्वितीया, बहुवचन (ग) पञ्चमी, एकवचन (घ) चतुर्थी, द्विवचन
उत्तर – (ग) पञ्चमी, एकवचन।

6. 'धावतः' अश्वात् पतति' वाक्य में 'धावतः' पद में विभक्ति है–
(क) प्रथमा (ख) षष्ठी (ग) पञ्चमी (घ) चतुर्थी
उत्तर – (ग) पञ्चमी।

7. 'रामायणस्य कथा रम्या' इस वाक्य के रामायणस्य पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) पञ्चमी (घ) षष्ठी
उत्तर – (घ) षष्ठी।

8. 'नमः शिवाय' इस वाक्य के शिवाय पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) पंचमी (घ) षष्ठी
उत्तर – (ख) चतुर्थी।

9. 'सीतायाः रामः प्रियः आसीत्' इस वाक्य के 'सीतायाः' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) चतुर्थी (ख) पंचमी (ग) षष्ठी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) षष्ठी।

10. 'प्रकृति सिद्धमिदं हि महात्मनाम्' इस वाक्य के 'महात्मनाम्' पद में कौन-सी विभक्ति है? (2019 DE)
(क) सप्तमी (ख) चतुर्थी (ग) षष्ठी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) षष्ठी।

11. 'जीवेषु मानवाः श्रेष्ठाः' इस वाक्य के 'जीवेषु' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) तृतीया (ख) पञ्चमी (ग) चतुर्थी (घ) सप्तमी
उत्तर – (घ) सप्तमी।

12. 'राजा विप्रेभ्यः धनं ददाति' इस वाक्य में 'विप्रेभ्यः' पद में विभक्ति तथा वचन है–
(क) तृतीया बहुवचन (ख) पञ्चमी बहुवचन (ग) चतुर्थी बहुवचन (घ) षष्ठी बहुवचन
उत्तर – (ग) चतुर्थी बहुवचन।

13. प्रजाभ्यः स्वस्ति। यहाँ प्रजाभ्यः पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) द्वितीया (ख) चतुर्थी (ग) तृतीया (घ) पञ्चमी
उत्तर – (ख) चतुर्थी।

14. बलिः <u>याचकेभ्यः</u> सर्वस्वं ददाति। यहाँ 'याचकेभ्यः' इस रेखांकित पद में विभक्ति है–
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) पञ्चमी (घ) द्वितीया
उत्तर – (ख) चतुर्थी।

15. 'मह्यम् मोदकं रोचते' इस वाक्य में मह्यम् पद में चतुर्थी विभक्ति किस सूत्र से होती है?
(क) चतुर्थी सम्प्रदाने (ख) स्पृहेरीप्सितः
(ग) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः (घ) क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः
उत्तर – (ग) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः।

16. 'विष्णवे नमः'–इस वाक्य के 'विष्णवे' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) षष्ठी (ख) चतुर्थी (ग) तृतीया (घ) द्वितीया
उत्तर – (ख) चतुर्थी।

17. 'न किमपि असाध्यं श्रीमताम्'–इस वाक्य के 'श्रीमताम्' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) चतुर्थी (ख) पंचमी (ग) षष्ठी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) षष्ठी।

18. 'बालकः अश्वात् पतति'–इस वाक्य में 'अश्वात्' पद में विभक्ति, वचन है–
(क) तृतीया एकवचन (ख) द्वितीया द्विवचन (ग) पंचमी एकवचन (घ) षष्ठी बहुवचन
उत्तर – (ग) पंचमी एकवचन।

19. 'छात्रः अध्ययनस्य हेतोः वसति'–वाक्य में प्रयुक्त 'अध्ययनस्य' पद में विभक्ति तथा वचन है–
(क) तृतीया द्विवचन (ख) चतुर्थी बहुवचन (ग) षष्ठी एकवचन (घ) पंचमी एकवचन
उत्तर – (ग) षष्ठी एकवचन।

20. 'बालकः सर्पाद् विभेति' वाक्य में 'सर्पाद्' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) तृतीया (ख) पञ्चमी (ग) द्वितीया (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ख) पञ्चमी।

21. 'कवीनां कालिदासः श्रेष्ठः' इस वाक्य में 'कवीनां' पद में विभक्ति-वचन है–
(क) द्वितीया, बहुवचन (ख) षष्ठी, बहुवचन (ग) तृतीया, एकवचन (घ) पंचमी, द्विवचन
उत्तर – (ख) षष्ठी, बहुवचन।

22. 'हरये रोचते भक्तिः' इस वाक्य के 'हरये' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) चतुर्थी (ख) प्रथमा (ग) पंचमी (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (क) चतुर्थी।

23. 'कृष्णाय तुभ्यं नमः' इस वाक्य में 'कृष्णाय' पद में कौन-सी विभक्ति-वचन है?
(क) चतुर्थी, एकवचन (ख) चतुर्थी, द्विवचन (ग) चतुर्थी, बहुवचन (घ) तृतीया, एकवचन
उत्तर – (क) चतुर्थी, एकवचन।

24. 'गङ्गे! तव दर्शनात् मुक्तिः' इस वाक्य में 'दर्शनात्' पद में कौन-सी विभक्ति है? (2013 BN, 15 DU)
(क) सप्तमी (ख) पञ्चमी (ग) प्रथमा (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ख) पञ्चमी।

25. 'स्वस्ति भवते' वाक्य के 'भवते' पद में विभक्ति है–
(क) षष्ठी (ख) द्वितीया (ग) चतुर्थी (घ) तृतीया
उत्तर – (ग) चतुर्थी।

26. 'दुष्टः सज्जनाय द्रुह्यति' इस वाक्य में 'सज्जनाय' पद में कौन-सी विभक्ति है?
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी
उत्तर – (ग) चतुर्थी।

27. 'मातुः निलीयते कृष्णः' इस वाक्य में 'मातुः' पद में विभक्ति-वचन है–
(क) षष्ठी एकवचन (ख) पञ्चमी एकवचन (ग) चतुर्थी एकवचन (घ) सप्तमी एकवचन
उत्तर – (ख) पञ्चमी एकवचन।

28. शिशुः भुवि तिष्ठति वाक्य के 'भुवि' पद में विभक्ति और वचन है– (2010 CJ)
(क) द्वितीया, एक वचन (ख) तृतीया, द्विवचन
(ग) सप्तमी, एक वचन (घ) पञ्चमी, बहुवचन
उत्तर – (ग) सप्तमी, एकवचन।

29. 'यूपाय दारु' इस वाक्य में 'यूपाय' पद में कौन-सी विभक्ति है? (2010 CK)
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पंचमी
उत्तर – (ग) चतुर्थी।

30. 'नमो गुरुभ्यः' में 'गुरुभ्यः' पद में कौन-सी विभक्ति है? (2010 CH)
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) षष्ठी
उत्तर – (ग) चतुर्थी।

31. 'अग्नये स्वाहा' वाक्य के 'अग्नये' पद में कौन-सी विभक्ति है? (2010 CI, 20 ZQ)
(क) प्रथमा (ख) तृतीया (ग) पंचमी (घ) चतुर्थी
उत्तर – (घ) चतुर्थी।

32. 'गुरुः छात्राय क्रुध्यति।' वाक्य में 'छात्राय' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2011 (IA)]
(क) तृतीय (ख) चतुर्थी (ग) पंचमी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ख) चतुर्थी।

33. 'श्री गणेशाय नमः' वाक्य में 'गणेशाय' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2011 (HZ), 19 (CZ)]
(क) प्रथमा (ख) तृतीया (ग) पञ्चमी (घ) चतुर्थी
उत्तर– (घ) चतुर्थी।

34. 'मोक्षाय हरिं भजति' वाक्य में 'मोक्षाय' पद में विभक्ति है– [2011 (HX)]
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) पञ्चमी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ख) चतुर्थी।

35. 'विप्राय गां ददाति' वाक्य में 'विप्राय' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2011 (HX)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

36. 'क्षेत्रेभ्यः' गां 'वारयति' में 'क्षेत्रेभ्यः' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2011 (ID)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

37. 'सीतायै नमः' वाक्य में 'सीतायै' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2012 (HE)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

38. 'प्रजाभ्यः स्वस्ति' वाक्य में 'प्रजाभ्यः' पद में कौन-सी विभक्ति है?– [2012 (HF)]
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) पञ्चमी (घ) षष्ठी।
उत्तर– (ख) चतुर्थी।

39. 'सोमाय स्वाहा' वाक्य में 'सोमाय' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2012 (HG)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पंचमी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

40. 'कविषु कालिदासः श्रेष्ठः' वाक्य में 'कविषु' में कौन-सी विभक्ति है? [2012 (HH)]
(क) प्रथमा (ख) चतुर्थी (ग) पंचमी (घ) सप्तमी
उत्तर– (घ) सप्तमी।

41. 'शत्रुभ्यः क्रुध्यति वीरः' वाक्य में 'शत्रुभ्यः' पद में विभक्ति है? [2012 (HJ)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

42. 'कर्त्तव्यौ भातृषु स्नेहः' वाक्य में 'भातृषु' पद में विभक्ति है– [2012 (HI)]
(क) चतुर्थी विभक्ति (ख) पञ्चमी विभक्ति (ग) सप्तमी विभक्ति (घ) तृतीया विभक्ति
उत्तर– (ग) सप्तमी विभक्ति।

43. 'हरये भक्तिः रोचते' में 'हरये' पद में विभक्ति है– [2013 (BJ, BP), 14 (CT)]
(क) द्वितीया (ख) चतुर्थी (ग) पंचमी (घ) तृतीया
उत्तर– (ख) चतुर्थी।

44. 'बाला पुष्पेभ्यः स्पृह्यति' इस वाक्य में 'पुष्पेभ्यः' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2013 (BJ)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

45. 'हिमालयात् गङ्गा प्रभवति' इस वाक्य में 'हिमालयात्' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2013 (BM)]
(क) चतुर्थी (ख) पञ्चमी (ग) षष्ठी (घ) सप्तमी (ङ) द्वितीया
उत्तर– (ख) पञ्चमी।

46. 'लक्ष्म्यै नमः' इस वाक्य में 'लक्ष्म्यै' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2013 (BD)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) पंचमी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

47. 'तुभ्यम् स्वस्ति' इस वाक्य में 'तुभ्यम्' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2013 (BK)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

48. 'गंगे तव दर्शनात् मुक्तिः' इस वाक्य में 'दर्शनात्' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2013 (BN)]
(क) सप्तमी (ख) पञ्चमी (ग) प्रथमा
उत्तर– (ख) पञ्चमी।

49. 'भवते रोचते कथा' इस वाक्य में 'भवते' पद में कौन-सी विभक्ति एवं वचन है? [2013 (BN)]
(क) सप्तमी, एकवचन (ख) द्वितीया, बहुवचन (ग) चतुर्थी, एकवचन (घ) प्रथमा, द्विवचन
उत्तर– (ग) चतुर्थी, एकवचन।

50. 'नृपः सिंहासने अस्ति' में 'सिंहासने' पद में विभक्ति है– [2014 (CS)]
(क) तृतीय (ख) चतुर्थी (ग) पंचमी (घ) सप्तमी
उत्तर– (घ) सप्तमी।

51. 'तिलेषु तैलम्' में 'तिलेषु' पद में विभक्ति है– [2014 (CU]

(क) द्वितीया (ख) पञ्चमी (ग) षष्ठी (घ) सप्तमी

उत्तर– (घ) सप्तमी।

52. 'हरये नमः' में 'हरये' पद में विभक्ति है– [2014 (CV)]

'हरये नमः' पद में विभक्ति है– [2017 (NJ)]

(क) चतुर्थी (ख) द्वितीया (ग) सप्तमी (घ) पञ्चमी

उत्तर– (क) चतुर्थी।

53. 'मोक्षे इच्छाऽस्ति' में 'मोक्षे' पद में विभक्ति है– [2014 (CV)]

(क) षष्ठी (ख) तृतीया (ग) प्रथमा (घ) सप्तमी

उत्तर– (घ) सप्तमी।

54. 'पितृभ्यो नमः' में 'पितृभ्यः' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2014 (CW)]

(क) सप्तमी (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी

उत्तर– (ग) चतुर्थी।

55. 'उपाध्यायाद् अधीते' में 'उपाध्यायाद्' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2014 (CW)]

(क) षष्ठी (ख) द्वितीया (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी

उत्तर– (घ) पञ्चमी।

56. 'हनुमते नमः' वाक्य में 'हनुमते' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2014 (CX)]

(क) सप्तमी (ख) षष्ठी (ग) चतुर्थी (घ) पञ्चमी

उत्तर– (ग) चतुर्थी।

57. 'ग्रामं निकषा समुद्रोवर्तते' में 'ग्रामं' पद में विभक्ति है? [2015 (DT)]

(क) चतुर्थी (ख) द्वितीया (ग) पञ्चमी (घ) सप्तमी

उत्तर– (ख) द्वितीया।

58. 'गोष्ठे गावः तिष्ठन्ति' में 'गोष्ठे' पद में विभक्ति है? [2015 (DT)]

(क) तृतीया (ख) प्रथमा (ग) सप्तमी (घ) षष्ठी

उत्तर– (ग) सप्तमी।

59. 'नमो भगवते वासुदेवाय' में 'वासुदेवाय' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2016 (TJ)]

(क) प्रथमा (ख) षष्ठी (ग) चतुर्थी (घ) सप्तमी

उत्तर– (ग) चतुर्थी।

60. 'सः चौरात् बिभेति' इस वाक्य के 'चौरात्' पद में विभक्ति है? [2016 (TK)]

(क) द्वितीया (ख) पञ्चमी (ग) सप्तमी (घ) षष्ठी

उत्तर– (ख) पञ्चमी।

61. 'देवदत्तः मातरि स्निह्यति' वाक्य में 'मातरि' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2016 (TM)]

(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) सप्तमी (घ) षष्ठी

उत्तर– (ग) सप्तमी।

62. 'भगवतः कृपा' में 'भगवतः' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2016 (TO)]

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) चतुर्थी (घ) षष्ठी

उत्तर– (घ) षष्ठी।

63. 'रमया सह पठति' वाक्य में 'रमया' पद में कौन विभक्ति है? [2016 (TO)]

(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी

उत्तर– (ग) तृतीया।

64. 'शिशुः पादेन खञ्जः' वाक्य में 'पादेन' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2016 (TP)]
(क) द्वितीया (ख) पञ्चमी (ग) तृतीया (घ) षष्ठी
उत्तर– (ग) तृतीया।

65. 'असौ स्थाल्यां पचति' वाक्य के 'स्थाल्यां' पद में विभक्ति है? [2017 (NK)]
(क) पञ्चमी (ख) षष्ठी (ग) सप्तमी (घ) द्वितीया
उत्तर– (घ) द्वितीया।

66. 'देवदत्तः पापात् जुगुप्सते' वाक्य में 'पापात्' पद में विभक्ति है? [2017 (NL)]
(क) चतुर्थी (ख) पञ्चमी (ग) द्वितीया (घ) षष्ठी
उत्तर– (ख) पञ्चमी।

67. 'लक्ष्मणः रामस्य प्रियतमः भ्राता आसीत्।' उपर्युक्त वाक्य के 'रामस्य' पद में विभक्ति होगी– [2017 (NM)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) पञ्चमी (घ) षष्ठी
उत्तर– (घ) षष्ठी।

68. 'सुशीला सिंहात् बिभेति।' वाक्य में 'सिंहात्' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2017 (NN)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) पञ्चमी (घ) षष्ठी
उत्तर– (ग) पञ्चमी।

69. 'रामः तस्मै क्रुध्यति' वाक्य में 'तस्मै' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2017 (NP)]
(क) पञ्चमी (ख) षष्ठी (ग) चतुर्थी (घ) तृतीया
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

70. 'छात्रैः सह क्रीड़ास्थले आगच्छ!' वाक्य के 'छात्रैः' पद में कौन-सी विभक्ति और वचन है? [2018 (BK)]
(क) द्वितीया, बहुवचन (ख) तृतीया, बहुवचन (ग) चतुर्थी, एकवचन (घ) पंचमी, द्विवचन
उत्तर– (ख) तृतीया, बहुवचन।

71. 'बालकेभ्यः फलानि यच्छति' वाक्य में 'बालकेभ्यः' पद में कौन-सी विभक्ति है? [2018 (BN)]
(क) सप्तमी (ख) चतुर्थी (ग) तृतीया (घ) षष्ठी
उत्तर– (ख) चतुर्थी।

72. 'शत्रुभ्यः क्रुध्यति वीरः' रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है? [2019 (DA)]
(क) चतुर्थी (ख) पंचमी (ग) तृतीया (घ) षष्ठी
उत्तर– (क) चतुर्थी।

73. 'स्वामी सेवकाय क्रुध्यति' रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है? [2019 (DB)]
(क) पञ्चमी (ख) चतुर्थी (ग) षष्ठी (घ) द्वितीया
उत्तर– (ख) चतुर्थी।

74. रामः बाणेन रावणं हतवान्। [2019 (DC), 20 (ZS)]
(क) चतुर्थी (ख) तृतीया (ग) द्वितीया (घ) पञ्चमी
उत्तर– (ख) तृतीया।

75. ''रामः बाणेन रावणं हतवान्'' में रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है? [2020 (ZP)]
(क) चतुर्थी (ख) पञ्चमी (ग) तृतीया (घ) षष्ठी
उत्तर–(घ) षष्ठी।

76. 'अग्नपे स्वाहा' में रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है? [2020 (ZQ)]
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) सप्तमी
उत्तर– (ग) चतुर्थी।

3 समास

(अंक-3)

समास का अर्थ है – संक्षिप्त। जब दो या दो से अधिक पद परस्पर मिलकर नया शब्द बनाते हैं, तो उनके बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं और बना हुआ शब्द समास कहलाता है।

यथा — रामस्य पुत्रः = रामपुत्रः

विशालः बाहुः यस्य सः = विशालबाहुः।

विग्रह – समास के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए जिन पदों को अलग किया जाता है, उन्हें विग्रह कहते हैं। यथा— रामस्य पुत्रः, विशालः बाहुः यस्य सः।

समस्त-पद – सकमास होने पर जो शब्द बनता है, उसे समस्त पद या सामासिक पद कहते हैं।

यथा — रामपुत्रः, विशालबाहुः।

समास के भेद

समास के प्रमुख रूप से छह भेद हैं—

(1) अव्ययीभाव समास (2) तत्पुरुष समास

(3) कर्मधारय समास (4) द्विगु समास

(5) बहुव्रीहि समास (6) द्वन्द्व समास

(1) अव्ययीभाव समास

जिस समास में पूर्व पद अव्यय हो और उसी की प्रधानता हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। यथा—

समस्त पद	**समास विग्रह**	**हिन्दी अर्थ**	
अधिहरि	हरौ इति	हरि के अधीन	(2019 DC)
उपनगरम्	नगरस्य समीपम्	नगर के पास	
निर्मक्षिकम्	मक्षिकाणाम अभावः	मक्खियों का अभाव	(2009 DU, DY, 10 CJ, CK)
निर्जनाम्	जनानाम् अभावः	मनुष्यों का अभाव	
अतिहिमम्	हिमस्य अत्ययः	हिम का नाश हो जाने पर	
प्रतिदिशम्	दिशं दिशं प्रति	प्रत्येक दिशा	

नियम (1) – अव्ययं विभक्ति समीप समृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावत्ययासम्प्रतिप्रादुर्भावपश्चात् यथाऽनुपूर्व्ययोग पद्यसादृश्य सम्पतिसाकल्याऽन्तवचनेषु।

यथा—

समस्त पद	**विग्रह**	**अर्थ**	**सूत्र के आधार पर अव्यय का अर्थ**
अधिहरि	हरि ङि अधि	हरि के अधीन	विभक्ति अर्थ में।
उपकृष्णम्	कृष्णस्य समीपम्	कृष्ण के समीप	समीप अर्थ में।
सुभद्रम्	भद्राणां समृद्धिः	भद्रों की समृद्धि	समृद्धि अर्थ में।

दुर्राक्षसम्	राक्षसाणां व्यृद्धि	राक्षसों की अवनति	व्यृद्धि अर्थ में।
निर्दोषः (2019 CZ, DE)	दोषाणाम् अभावः	दोषों का अभाव	अभाव अर्थ में।
निष्प्राणः (2017 NN)	प्राणानाम् अभावः	प्राणों का अभाव	अभाव अर्थ में।
निर्विघ्नम्	विघ्नानाम् अभावः	विघ्नों का अभाव	अभाव अर्थ में।
अतिहिमम् (2018 BN)	हिमस्य अत्यय	हिम का नाश हो जाने पर	अव्यय (नाश) अर्थ में।
अतिनिद्रम्	निद्रा सम्प्रति न युज्यते	निद्रा के अनुचित समय में	अनुचित अर्थ में।
इतिहरि (2020ZR)	हरिशब्दस्य प्रकाशः	हरि शब्द का अर्थ में उच्चारण	प्रकाश अर्थ में।
अनुकृष्णम् (2017 NO)	कृष्णस्य पश्चात्	कृष्ण के पीछे	पश्चात् अर्थ में।
अनुरूपम् (2017 NM, 20ZU)	रूपस्य योग्यम्	एक रूप के योग्य	यथार्थ योग्यता अर्थ में
प्रत्येकं	एकम् एवं प्रति	प्रति एक	यथार्थ वीप्सा अर्थ में।
यथाशक्ति (2011 HX, ID, 19 DB, DD, DE, 20 ZP)	शक्तिम् अनतिक्रम्य	शक्ति के अनुसार	अनतिक्रम्य अर्थ में।
अनुज्येष्ठम्	ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येण	जयेष्ठक्रम के अनुसार	अनुपूर्व्य क्रम अर्थ में।
सचक्रम्	चक्रेण युगपद्	चक्र के साथ-साथ	योगपद्य अर्थ में।
सहरि (2017 NN)	हरेः सादृश्यम्	हरि के समान	सादृश्य अर्थ में।
सक्षत्रम्	क्षत्रानां सम्पत्ति	क्षत्रियों की सम्पत्ति	सम्पत्ति अर्थ में।
सतृणम् (2018 BK)	तृणम् अपि अपरित्यज्य	तिनके को भी न छोड़कर	साकल्य अर्थ में।
सबालकाण्डम्	बालकाण्डपर्यन्तम्	बालकाण्ड तक	पर्यन्त अर्थ में।
अनुविष्णु (2014 CS)	विष्णोः पश्चात्	विष्णु के पीछे	पश्चात् अर्थ में।

नियम (2) नदीभिश्च – नदी विशेषवाची शब्दों के साथ संख्यावाची शब्दों का समास होता है और वह अव्ययीभाव समास कहलाता है। यथा—

पंचगंगम्	पञ्चानां गंगानां समाहारः	पाँच गंगाओं का समाहार	नदी शब्द के अर्थ में
द्वियमुनम्	द्वयोः यमुनयोः समाहारः	दो यमुनाओं का समाहार	,, ,,

नियम (3) अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः – शरद् आदि शब्दों से अव्ययीभाव समास में समासान्त टच् प्रत्यय होता है। टच् प्रत्यय में ट् और च् का लोप हो जाता है केवल 'अ' शेष रहता है। यथा–

उपशरदम् शरदः समीपम् शरद् के समीप

नियम (4) अनश्च – जिस अव्ययीभाव समास के अन्त में अन् होता है वह अन्नन्त अव्ययीभाव है। उससे समासान्त टच् प्रत्यय होता है। यथा—

उपराजम् (2014 CS) राज्ञः समीपम् राजा के समीप

नियम (5) नपुंसकादन्यतरस्याम् – अन् अन्तवाला जो नपुंसक लिंग शब्द है तदन्त अव्ययीभाव से समासान्त टच् प्रत्यय विकल्प से होता है। यथा—

उपचर्मम् चर्मणः समीपम् चर्म के समीप

(2) द्विगु समास

संख्यापूर्वो द्विगुः– अर्थात् जिस समानाधिकरण तत्पुरुष में पूर्व पद या प्रथम पद संख्यावाची होता है, द्विगु समास कहलाता है। यथा—

समस्त पद	समास-विग्रह	हिन्दी अर्थ
पंचगवम् (2014 CS)	पञ्चानाम् गवाम् समाहारः	पाँच गायों का समूह
पञ्चवटी	पञ्चानाम् वटानां समाहारः	पाँच वटियों का समाहार
त्रिलोकी (2019 DD)	त्रयाणाम् लोकानाम् समाहारः	तीन लोकों का समाहार

त्रिभुवनम् (2011 HX)	त्रयाणाम् भुवनानाम् समाहारः	तीनों भुवनों का समूह
पञ्चामृतम्	पञ्चानाम् अमृतानाम् समाहारः	पाँच अमृतों का समूह
पञ्चपात्रम् (2020 ZU)	पञ्चानाम् पात्राणाम् समाहारः	पाँच पात्रों का समूह

(3) द्वन्द्व समास

'**चार्थे द्वन्द्वः**' अर्थात् जिसमें प्रायः पूर्वपद तथा उत्तरपद प्रधान होते हैं, द्वन्द्व समास कहलाता है। यह समस्त पद प्रधान समास है। इसमें 'च' से दो या दो से अधिक संज्ञाओं को जोड़ा जाता है।

द्वन्द्व समास के भेद

(क) इतरेतर द्वन्द्व — जहाँ द्वन्द्व में आये हुए दोनों पदों का अपना अलग-अलग अस्तित्व होता है, वहाँ इतरेतर द्वन्द्व होता है। यथा— 'रामलक्ष्मणौ' में राम तथा लक्ष्मण का अलग-अलग अस्तित्व है। अतः यहाँ रामलक्ष्मणौ में इतरेतर द्वन्द्व समास है।

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**हिन्दी अर्थ**
सीतारामौ (2017 NN)	सीता च रामश्च	सीता और राम
रामकृष्णौ (2010 CK, 18 BK, BN, 20 ZP)	रामः च कृष्णः च	राम और कृष्ण
देवासुरौ (2019 DE)	देवश्च असुरश्च	देवता और असुर
कृष्णार्जुनौ (2017 NK)	कृष्णश्च अर्जुनश्च	कृष्ण और अर्जुन
पार्वतीपरमेश्वरौ (2010 CG)	पार्वती च परमेश्वरश्च	पार्वती और परमेश्वर
हरिहरौ (2019 DA, DC)	हरिश्च हरश्चः	हरि और हर
ईशकृष्णौ (2017 NO, 19 DC)	ईशश्च कृष्णश्च	ईश और कृष्ण
हस्तपादौ (2017 NO)	हस्तश्च पादश्च	हाथ और पैर
सज्जनदुर्जनौ	सज्जनः च दुर्जनः च	सज्जन और दुर्जन
शिवकेशवौ (2011 ID, 19 DA, 20 ZR)	शिवश्च केशवश्च	शिव और केशव
रामलक्ष्मणौ (2010 CJ)	रामः च लक्ष्मणः च	राम और लक्ष्मण
पितरौ (2011 IB, 19 DD)	माता च पिता च	माता और पिता
भीमार्जुनौ (2011 HX)	भीमः च अर्जुनः च	भीम और अर्जुन

(ख) समाहार द्वन्द्व — जिस द्वन्द्व समास में आए हुए पद अपना अर्थ बतलाने के साथ-साथ समूह या समाहार का बोध कराते हैं उसे समाहार द्वन्द्व कहते हैं। यथा—पाणिपादम् पाणी च पादौ च तेषां समाहारः—पाणिपादम्।

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**हिन्दी अर्थ**
रथिकाश्वारोहम्	रथिकः च अश्वारोही च	कोचवान् और घुड़सवार
भेरीपटहम्	भेरी च पटहश्च	भेरी और पटह
अहिनकुलम्	अहिश्च नकुलश्च	अहि और नकुल
अहोरात्रम् (2017 NO)	अहः च रात्रि च	रात और दिन

(ग) एकशेष द्वन्द्व — जिस द्वन्द्व समास में दो या दो से अधिक पदों में से केवल एक पद शेष रहता है उसे 'एकशेष द्वन्द्व' समास कहते हैं। सामासिक पद का वचन समास में स्थित शब्दों की संख्या के आधार पर होता है। यदि समास में पुंल्लिग तथा स्त्रीलिंग दोनों प्रकार के शब्द हों तो पुंल्लिग पद ही शेष रहेगा।

यथा—

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**हिन्दी अर्थ**
दुहितरौ (2017 NL)	दुहिता च दुहिता च	दो पुत्रियाँ
मयूरौ (2017 NM, NN)	मयूरी च मयूरः च	मयूरी और मयूर

गत वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गये समास (उत्तर सहित)

[2011]

नीलाम्बरः	(IC)	नीलम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
रामलक्ष्मणौ	(IA, IC)	रामः च लक्ष्मणः च	द्वन्द्व समास
पीताम्बरः	(IA, 17 NJ)	पीतम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
दशाननः	(IA, IB, HZ, 17 NP)	दशः आननः यस्य सः	बहुव्रीहि समाम
प्रतिदिनम्	(IA, 17 NL,NO,NP, 20ZO,ZS)	दिनं दिनं प्रति	अव्ययीभावः
हरिहरौ	(HZ)	हरि च हर च	द्वन्द्वः
निर्मक्षिकम्	(HZ)	मक्षिकाणां अभावः	अव्ययीभाव
शिवकेशवौ	(IB, 19 DB, 20 ZR)	शिव च केशव च	द्वन्द्वः
पाणिपादम्	(HZ)	पाणी च पादौ च	द्वन्द्वः
घनश्यामः	(HZ)	घन इव श्यामः	कर्मधारय समास

[2012]

यथाशक्तिः	(HD,HE,HI, 19 DD, 20 ZR)	शक्तिमनतिक्रम्य	अव्ययीभाव
पीताम्बरः	(HD,HE,HG,HI)	पीतम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि
पाणिपादम्	(HD,HJ)	पाणी च पादौ च	द्वन्द्व
निर्मक्षिकम्	(HD, 17 NK)	मक्षिकाणाम् अभावः	अव्ययीभाव
घनश्यामः	(HD,HF,HG,HJ)	घन इव श्मामः	कर्मधारय
पार्वतीपरमेश्वरौ	(HE)	पार्वती च परमेश्वरः च	द्वन्द्व
सीतापतिः	(HE)	सीतायाः पतिः	षष्ठी तत्पुरुष
उपसमुद्रम्	(HE, 19 DA)	समुद्रस्य समीपम्	अव्ययीभाव
राजपुरुषः	(HF)	राज्ञः पुरुषः	षष्ठी तत्पुरुष
अधिहरिः	(HF, 17 NM, 19 DC)	हरौ इति	अव्ययीभाव
हरिहरौ	(HF, 17 NM)	हरिश्च हरश्च	द्वन्द्व
त्रिभुवन	(HF)	त्रयाणाम् भुवनानाम् समाहारः	द्विगु
लम्बोदर	(HG,HI,HJ)	लम्बम् उदरं यस्य सः	बहुव्रीहि
ईश्वरभक्तः	(HG,HH)	ईश्वरस्य भक्तः	षष्ठी तत्पुरुष
आसमुद्रम्	(HH)	समुद्र पर्यन्तम्	अव्ययीभाव
चरणकमलम्	(HH)	कमल इव चरणम्	कर्मधारय
भीमार्जुनौ	(HH)	भीमः च अर्जुनः च	द्वन्द्व
प्रतिदिनम्	(HG, 17 NL)	दिनम् दिनम्	अव्ययीभाव

[2013]

अधि हरिः	(BK)	हरौ इति	अव्ययीभाव समास
राजपुरुषः	(BK, BN)	राज्ञः पुरुषः	षष्ठी तत्पुरुष समास
पीताम्बरः	(BK, BL, BN, 19 DA)	पीतः अम्बरः यस्य सः	बहुव्रीहि समास
घनश्यामः	(BK)	घन इव श्यामः	कर्मधारय समास
नीलकमलम्	(BK, BP)	नीलम् इव कमलम्	कर्मधारय समास

पितरौ	(BK, 19 DD)	माता च पिता च	द्वन्द्व समास
उपकृष्णम्	(BL, BM)	कृष्णस्य समीपम्	अव्ययीभाव समास
निर्मक्षिकम्	(BL)	मक्षिकाणाम् अभावः	अव्ययीभाव समास
देवालयः	(BL)	देवस्य आलयः	षष्ठी तत्पुरुष समास
रामकृष्णौ	(BL)	रामः च कृष्णः च	द्वन्द्व समास
त्रिलोकम्	(BL)	त्रयाणाम् लोकानाम् समाहारः	द्विगु समास
कृष्णसर्पः	(BM, 20 ZQ)	कृष्णः चासौ सर्पः	कर्मधारय समास
कुम्भकारः	(BM, BN)	कुम्भं करोति	उपपद तत्पुरुष समास
पार्वतीपरमेश्वरौ	(BM, 20 ZU)	पार्वती च परमेश्वरः च	द्वन्द्व समास
वाणी विनायकौ	(BN)	वाणी च विनायक च	द्वन्द्व समास
पञ्चगवम्	(BN, 17 NK, NM, NN)	पंचानाम् गवाम् समाहारः	द्विगु समास
यथाशक्तिः	(BJ, BM)	शक्तिमतिक्रम्य	अव्ययीभाव समास
राजपुत्रः	(BJ, 19 DB)	राज्ञः पुत्रः	षष्ठी तत्पुरुष समास
नीलाम्बरम्	(BJ)	नीलम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
उपसमिधम्	(BP)	समिधस्य समीपम्	अव्ययीभाव समास
मातापितरौ	(BP, 17 NL)	माता च पिता च	द्वन्द्व समास
प्राप्तोदकः	(BP)	प्राप्तं उदकं यं स	बहुव्रीहि समास
रामलक्ष्मणौ	(BO)	रामः च लक्ष्मणः च	द्वन्द्व समास
श्वेताम्बरः	(BO)	श्वेतम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
यथोचित	(BO, 19 DF)	उचित अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समास

[2014]

अनुविष्णुः	(CS)	विष्णोः पश्चात्	अव्ययीभाव समास
उपराजम्	(CS)	राज्ञः समीपम्	अव्ययीभाव समास
कृष्णाश्रितः	(CS)	कृष्णम् आश्रितः	द्वितीया तत्पुरुष समास
जीवनप्राप्तः	(CS)	जीवनम् प्राप्तः	द्वितीया तत्पुरुष समास
नीलोत्पलम्	(CS, CY)	नीलं च तत् उत्पलम्	कर्मधारय समास
पञ्चगवम्	(CS, CV)	पञ्चानाम् गवाम् समाहारः	द्विगु समास
नीलकमलम्	(CT)	नीलमेव कमलम्	कर्मधारय समास
रामलक्ष्मणौ	(CT, CU, 17 NP)	रामश्च लक्षमणश्च	द्वन्द्व समास
राजपुरुषः	(CT, 20 ZT)	राज्ञः पुरुषः	षष्ठी तत्पुरुष समास
यथोचितम्	(CT, CX)	उचितमनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समास
देवालयः	(CT)	देवस्य आलयः	षष्ठी तत्पुरुष समास
निर्मक्षिकम्	(CT)	मक्षिकाणाम् अभावः	अव्ययीभाव समास
उपकृष्णम्	(CU)	कृष्णस्य समीपम्	अव्ययीभाव समास
यूपादास	(CU)	यूपाय दासः	चतुर्थी तत्पुरुष समास
जितेन्द्रियः	(CU, CX)	जितानि इन्द्रियाणि येन सः	बहुव्रीहि समास
चोरभयम्	(CU)	चौरात् भयम्	पंचमी तत्पुरुष समास
त्रिभुवनम्	(CU)	त्रयाणाम् भुवनानाम् समाहारः	द्विगु समास
यथाशक्ति	(CV, 20 ZO,ZT)	शक्तिम् अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समास
भूतवलिः	(CV)	भूतेभ्यः वलिः	चतुर्थी तत्पुरुष समास
प्राप्तोदकः	(CV)	प्राप्तं उदकं यस्य सः	बहुव्रीहि समास

घनश्यामः	(CV, CY)	घन इव श्यामः	बहुव्रीहि समास
हरिहरौ	(CV, CX, 20 ZT)	हरिश्च हरश्च	द्वन्द्व समास
उपगङ्गम्	(CW)	गङ्गायाः समीपम्	अव्ययीभाव समास
शिवकेशवौ	(CW)	शिवश्च केशवश्च	द्वन्द्व समास
पीताम्बरम्	(CW, CX)	पीतम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
लम्बोदरः	(CW)	लम्बम् उदरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
दशाननः	(CW, 17 NP)	दशः आननः यस्य सः	बहुव्रीहि समास
श्वेताम्बरम्	(CX)	श्वेतम् अम्बरम् यस्य सः	बहुव्रीहि समास
उपकृष्णम्	(CY)	कृष्णस्य समीपम्	अव्ययीभाव समास
अधिहरि	(CY, 17 NN)	हरौ इति	अव्ययीभाव समास
कष्टापन्नः	(CY)	कष्टम् आपन्नः	द्वितीया तत्पुरुष समास
नीलाम्बरः	(CY)	नीलम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास

[2015]

लक्ष्मीपतिः	(DU)	लक्ष्म्याः पतिः	षष्ठी तत्पुरुष
श्वेताम्बरम्	(DU)	श्वेतम् अम्बरम् यस्य सः	बहुव्रीहि समास
यथाशक्ति	(DU, 17 NP)	शक्ति अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समास
राजपुरुषः	(DU)	राज्ञः पुरुषः	षष्ठी तत्पुरुष समास
लम्बोदरः	(DT)	लम्बम् उदरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
शिवकेशवौ	(DT)	शिवश्च केशवश्च	द्वन्द्व समास
त्रिभुवनम्	(DT, 19 DF)	त्रयाणां भुवनानाम् समाहारः	द्विगु समास
घनश्यामः	(DT, 20 ZT)	घन इव श्यामः	कर्मधारय समास
उपगङ्गम्	(DT)	गङ्गायाः समीपम्	अव्ययीभाव समास
पीताम्बरम्	(DT)	पीतम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास

[2016]

भूतवलिः	(TJ)	भूतेभ्यः वलिः	चतुर्थी तत्पुरुष
प्राप्तोदकः	(TJ)	प्राप्तं उदकं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
मातापितरौ	(TJ, 17 NL)	माता च पिता च	द्वन्द्व समास
यथोचितम्	(TJ, 19 DF, 20 ZQ)	उचित अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समास
जितेन्द्रियः	(TJ)	जितानि इन्द्रियाणि येन सः	बहुव्रीहि समास
उपकूलम्	(TK, 17 NK)	कूलस्य समीपम्	अव्ययीभाव
अध्ययनकुशलः	(TK)	अध्ययने कुशलः	तत्पुरुष समास
घनश्याम	(TK, TO)	घन इव श्यामः	बहुव्रीहि समास
नवरात्रम्	(TK, 17 NL)	नवानाम् रात्रीणाम् समाहारः	द्विगु समास
दिव्याम्बरः	(TK)	दिव्यम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
पितरौ	(TO, 19 CZ, 20 ZO)	माता च पिता च	द्वन्द्व समास
उपनगरम्	(TP)	नगरस्य समीपम्	अव्ययीभाव समास
यथारुचि	(TP)	रुचि अनतिक्रम्य	अव्ययीभाव समास
विष्णुशिवौ	(TP)	विष्णुश्च शिवश्च	द्वन्द्व समास
प्रज्ञाचक्षुः	(TP)	प्रज्ञा चक्षुः इव	कर्मधारय समास
ईशकृष्णा	(DC)	ईशश्च कृष्णश्च	द्वन्द्व समास

निर्दोषः	(DE)	दोषाणाम् अभावः	अव्ययीभाव समास
देवासुरौ	(DE)	देवश्च असुरश्च	द्वन्द्व समास

[2017]

अनुदिनम्	(NK)	दिनस्य पश्चात्	अव्ययीभाव समास
उपगृहम्	(NL)	गृहस्य समीपम्	अव्ययीभाव समास
पञ्चखट्वम्	(NM)	पञ्चानां खट्वानां समाहारः	द्विगु समास
महावीरः	(NP)	महान् वीरः यस्य सः	बहुव्रीहि समास
सूर्योदयः	(NP)	सूर्यस्य उदयः	षष्ठी तत्पुरुष समास

[2018]

सतृणम्	(BK)	तृणमपि अपरित्यज्य	अव्ययीभाव समास
आचन्द्रोदयः	(BK)	चन्द्रोदयस्य पर्यन्तम्	अव्ययीभाव समास
त्रिफला	(BK)	त्रयाणां फलानां समाहारः	द्विगु समास
रामकृष्णौ	(BK, BN)	रामः च कृष्णः च	द्वन्द्व समास
अतिहिमम्	(BN)	हिमस्य अत्यय	अव्ययीभाव समास
पञ्चामृतम्	(BN)	पञ्चानाम् अमृतानाम् समाहारः	द्विगु समास
निर्मक्षिकम्	(BN)	मक्षिकाणाम् अभावः	अव्ययीभाव समास

[2019]

ईशकृष्णौ	(DC)	ईशश्च कृष्णश्च	द्वन्द्व समास
निर्दोषः	(DE)	दोषाणाम् अभावः	अव्ययीभाव समास
देवासुरौ	(DE)	देवश्च असुरश्च	द्वन्द्व समास

[2020]

रामश्याये	(ZQ)	रामश्च श्यामश्च	द्वन्द्व समास
पञ्चगङ्गम्	(ZR)	पञ्चानां गङ्गनां समाहारः	द्विगु समास

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **'अनुरूपम्' में समास है–**
(क) द्विगु (ख) तत्पुरुष (ग) अव्ययीभाव (घ) कर्मधारय
उत्तर – (ग) अव्ययीभाव।

2. **'प्रतिदिनम्' में समास है–**
(क) अव्ययीभाव (ख) बहुव्रीहि (ग) द्विगु (घ) तत्पुरुष
उत्तर – (क) अव्ययीभाव।

3. **'सपुत्रः' में समास होगा–**
(क) अव्ययीभाव (ख) बहुव्रीहि (ग) द्विगु (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ख) बहुव्रीहि।

4. **'जितेन्द्रियः' में समास है–**
अथवा **'जितेन्द्रियः' में प्रयुक्त समास का नाम है–** (2019DA)
(क) द्विगु (ख) द्वन्द्व (ग) अव्ययीभाव (घ) बहुव्रीहि
उत्तर – (घ) बहुव्रीहि।

5. **'पञ्चपात्रम्' में समास है–**
(क) द्वन्द्व (ख) अव्ययीभाव (ग) कर्मधारय (घ) द्विगु
उत्तर – (घ) द्विगु।

6. **'नवरत्नम्' में कौन-सा समास है?**
(क) द्विगु (ख) बहुव्रीहि (ग) अव्ययीभाव (घ) तत्पुरुष
उत्तर –(क) द्विगु ।

7. **'प्रत्यक्षम्' में कौन-सा समास है?**
(क) द्विगु (ख) अव्ययीभाव (ग) कर्मधारय (घ) द्वन्द्व
उत्तर – (ख) अव्ययीभाव।

8. **'निर्मक्षिकम्' में कौन-सा समास है?**
(क) द्विगु (ख) बहुव्रीहि (ग) द्वन्द्व (घ) अव्ययीभाव
उत्तर – (घ) अव्ययीभाव।

9. **'चन्द्रशेखरः' में कौन-सा समास है?**
(क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष (ग) बहुव्रीहि (घ) द्वन्द्व
उत्तर – (ग) बहुव्रीहि।

10. **'पीताम्बरः' में कौन-सा समास है?** (2019DC)
(क) द्विगु (ख) बहुव्रीहि (ग) अव्ययीभाव (घ) तत्पुरुष
उत्तर – (ख) बहुव्रीहि।

11. **'उपकृष्णम्' में कौन-सा समास है?**
(क) द्विगु (ख) अव्ययीभाव (ग) कर्मधारय (घ) द्वन्द्व
उत्तर – (ख) अव्ययीभाव।

12. **'नवरात्रम्' में समास होगा–**
(क) द्विगु (ख) द्वन्द्व (ग) कर्मधारय (घ) अव्ययीभाव
उत्तर – (क) द्विगु।

13. **'निर्दोषः' में समास है–**
(क) नञ् तत्पुरुष (ख) द्वन्द्व (ग) अव्ययीभाव (घ) कर्मधारय
उत्तर –(ग) अव्ययीभाव।

14. **'लब्धप्रतिष्ठः' में कौन-सा समास है?**
(क) द्विगु (ख) द्वन्द्व (ग) बहुव्रीहि (घ) तत्पुरुष
उत्तर – (ग) बहुव्रीहि।

15. **'गंगायमुने' शब्द में कौन-सा समास है?**
(क) द्विगु (ख) बहुव्रीहि (ग) द्वन्द्व (घ) अव्ययीभाव
उत्तर – (ग) द्वन्द्व।

16. **'पञ्चवटी' शब्द में कौन-सा समास है?** (2019DD)
(क) अव्ययीभाव (ख) द्वन्द्व (ग) बहुव्रीहि (घ) द्विगु
उत्तर – (घ) द्विगु।

17. **'महादेवः' में कौन-सा समास है?**
(क) द्विगु (ख) द्वन्द्व (ग) कर्मधारय (घ) बहुव्रीहि
उत्तर – (ग) कर्मधारय।

18. **'विद्याहीनः' में कौन-सा समास है?**
(क) कर्मधारय (ख) तत्पुरुष (ग) द्वन्द्व (घ) बहुव्रीहि
उत्तर – (ख) तत्पुरुष।

19. **'त्रिभुवनम्' शब्द में समास है–**
(क) कर्मधारय (ख) द्विगु (ग) अव्ययीभाव (घ) द्वन्द्व
उत्तर – (ख) द्विगु।

20. 'अधिहरि' में कौन-सा समास है? (2020ZT)
(क) द्विगु (ख) बहुव्रीहि (ग) द्वन्द्व (घ) अव्ययीभाव
उत्तर – (घ) अव्ययीभाव।

21. 'हरिहरौ' में कौन-सा समास है? (2020ZR)
(क) द्विगु (ख) अव्ययीभाव (ग) कर्मधारय (घ) द्वन्द्व
उत्तर – (घ) द्वन्द्व।

22. 'पितरौ' में कौन-सा समास है?
(क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष (ग) द्वन्द्व (घ) बहुव्रीहि
उत्तर – (ग) द्वन्द्व।

23. 'रामकृष्णौ' में कौन-सा समास है?
(क) अव्ययीभाव (ख) द्विगु (ग) द्वन्द्व (घ) तत्पुरुष
उत्तर – (ग) द्वन्द्व।

24. 'यशोधन' में कौन-सा समास है?
(क) द्वन्द्व (ख) बहुव्रीहि (ग) तत्पुरुष (घ) द्विगु
उत्तर – (ख) बहुव्रीहि।

25. 'तपोधनः' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) बहुव्रीहि (ग) द्विगु (घ) द्वन्द्व
उत्तर – (ख) बहुव्रीहि।

26. 'यथाशक्तिः' में कौन-सा समास है?
(क) कर्मधारय (ख) द्वन्द्व (ग) अव्ययीभाव (घ) तत्पुरुष
उत्तर – (ग) अव्ययीभाव।

27. 'राजपुरुष' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय (ग) बहुव्रीहि (घ) द्विगु
उत्तर – (क) तत्पुरुष।

28. 'लम्बोदरः' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) बहुव्रीहि (ग) कर्मधारय (घ) द्वन्द्व
उत्तर – (ख) बहुव्रीहि।

29. 'कृष्णसर्पः' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय (ग) द्वन्द्व (घ) द्विगु
उत्तर – (ख) कर्मधारय।

30. 'घनश्यामः' में कौन-सा समास है?
(क) कर्मधारय (ख) तत्पुरुष (ग) बहुव्रीहि (घ) द्वन्द्व
उत्तर – (क) कर्मधारय।

31. 'सूर्योदयः' में कौन-सा समास है?
(क) तत्पुरुष (ख) द्वन्द्व (ग) कर्मधारय (घ) अव्ययीभाव
उत्तर – (क) तत्पुरुष।

32. 'उपगङ्गम्' में समास है–
(क) अव्ययीभाव (ख) बहुव्रीहि (ग) तत्पुरुष
उत्तर –(क) अव्ययीभाव।

33. 'यथायोग्यम्' में समास है–
(क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष (ग) बहुव्रीहि
उत्तर – (क) अव्ययीभाव।

34. 'सप्ताध्यायी' में कौन-सा समास है?
(क) अव्ययीभाव (ख) बहुव्रीहि (ग) द्विगु (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) द्विगु।

35. 'पाणिपादम्' पद में प्रयुक्त समास है– (2017 NK, 19 DF)

(क) अव्ययीभावः (ख) द्वन्द्वः (ग) द्विगुः

उत्तर – (ख) द्वन्द्वः।

36. 'इतिहरि' पद में प्रयुक्त समास का नाम है– (2017 NL)

(क) द्वन्द्वः (ख) अव्ययीभावः (ग) द्विगुः

उत्तर – (ख) अव्ययीभावः।

37. 'अनाकारथम्' पद में समास का नाम लिखिए। (2017 NM)

उत्तर – तत्पुरुष समास।

38. 'निर्विघ्नं' में प्रयुक्त समास का नाम लिखिए। (2017 NN)

उत्तर – अव्ययीभाव।

39. 'अनुकृष्णम्' में प्रयुक्त समास का नाम लिखिए– (2017 NO)

(क) अव्ययीभाव (ख) द्वन्द्व (ग) द्विगु

उत्तर – (क) अव्ययीभाव।

40. 'जलमग्नः' में प्रयुक्त समास का नाम है– (2017 NP)

(क) सप्तमी तत्पुरुष (ख) कर्मधारय (ग) बहुव्रीहि

उत्तर – (क) सप्तमी तत्पुरुष।

41. 'श्वशुरौ' पद में सविग्रह समास का नाम है? (2018 BK)

(क) श्वश्रूच श्वशुरश्च– द्वन्द्व समास (ख) श्वश्रुश्च श्वशुरश्च– द्विगु समास

(ग) श्वश्रुःच श्वशुरश्च– द्वन्द्व समास (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर – (घ) इनमें से कोई नहीं।

42. 'घनश्यामः' में प्रयुक्त समास का नाम है– (2018 BN)

(क) कर्मधारयः (ख) द्वन्द्वः (ग) बहुव्रीहिः (घ) अव्ययीभावः

उत्तर – (क) कर्मधारयः।

43. राजसेवकः में प्रयुक्त समास का नाम है– (2019 CZ, 20ZS)

(क) कर्मधारय (ख) तत्पुरुष (ग) बहुव्रीहि

उत्तर – (ख) तत्पुरुष।

44. नीलोत्पलम् में प्रयुक्त समास का नाम है– (2019 DB, 20ZQ)

(क) द्वन्द्व (ख) द्विगु (ग) कर्मधारय (घ) अव्ययीभाव

उत्तर – (ग) कर्मधारय।

45. 'रामलक्ष्मणौ' में समास है– (2019 DE)

(क) द्वन्द्व (ख) द्विगु (ग) कर्मधारय (घ) अव्ययीभाव

उत्तर – (क) द्वन्द्व।

46. 'पञ्चामृतम्' में समास है– (2020 ZO)

(क) अव्ययीभाव (ख) द्विगु (ग) द्वन्द्व

उत्तर – (ख) द्विगु।

47. 'पञ्चवटी' में प्रयुक्त समास का नाम है– (2020 ZP)

(क) द्वन्द्व (ख) द्विगु (ग) कर्मधारय

उत्तर – (ख) द्विगु

48. 'देवास्दरौ' में प्रयुक्त समास का नाम है– (2020 ZU)

(क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय (ग) द्वन्द्व

उत्तर – (ग) द्वन्द्व।

●●

4 सन्धि

(3 अंक)

सन्धि का अर्थ मेल होता है। अतः निकटवर्ती दो वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे सन्धि कहते हैं। सन्धि योजना में पहले शब्द का अन्तिम अक्षर और दूसरे शब्द का प्रथम अक्षर ग्रहण किया जाता है। जैसे– पुस्तकालयः (पुस्तक+आलयः) में अ और आ मिलकर 'आ' हो गया है। सन्धि किये हुए शब्दों को अलग-अलग करना सन्धि-विच्छेद कहलाता है।

सन्धि के भेद

सन्धि के तीन भेद हैं— (क) स्वर सन्धि, (ख) व्यञ्जन सन्धि, (ग) विसर्ग सन्धि।

(क) – स्वर सन्धि— स्वर वर्ण का स्वर वर्ण के साथ जो मेल होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। जैसे — नर+ईशः = नरेशः। यहाँ नर के अन्त में 'अ' और ईशः के आदि में 'ई' है। दोनों मिलकर 'ए' हो गया है, अतः स्वर सन्धि है।

विशेष — स्वर सन्धि को अच् सन्धि भी कहा जाता है। स्वर सन्धि में जो व्यञ्जन आधे लिखे हुए नहीं होते और उनके अन्त में हलन्त का चिह्न लगा हुआ नहीं होता, वे सभी अपने अन्त में किसी स्वर को अवश्य रखते हैं। जैसे – र में 'अ', कि में 'इ', कु में 'उ' है।

(ख) – व्यञ्जन सन्धि — जिसमें पहले शब्द या भाग का अन्तिम अक्षर व्यञ्जन और दूसरे शब्द या भाग के पहले व्यञ्जन या स्वर हों, उनके मेल को व्यञ्जन सन्धि कहते हैं अथवा व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन अक्षर आने पर जो विकार होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। जैसे — जगत् + ईशः = जगदीशः। यहाँ 'त्' व्यंजन के बाद 'ई' स्वर आया है, अतः व्यञ्जन सन्धि है।

(ग) – विसर्ग सन्धि — जिसमें पहले शब्द के अन्त में विसर्ग हो और दूसरे शब्द का पहला अक्षर स्वर या व्यञ्जन हो, तो उनके मेल को विसर्ग सन्धि कहते हैं या विसर्ग के साथ स्वर या व्यञ्जन के मिलने से जो विकार होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। जैसे— भाः + करः। यहाँ विसर्ग के बाद व्यञ्जन है, अतः विसर्ग सन्धि है।

व्यञ्जन या हल् सन्धि

व्यञ्जन के बाद स्वर या व्यञ्जन (व्यञ्जन + स्वर, व्यञ्जन + व्यञ्जन) आने पर जो विकार होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। इसमें जमा (+) चिह्न से पहले हलन्त व्यञ्जन आता है। जैसे सत् + चित् = सच्चित्, जगत् + ईश्वरः = जगदीश्वरः। यहाँ पहले उदाहरण में 'त्' के बाद व्यञ्जन और दूसरे उदाहरण में व्यञ्जन के बाद स्वर आया है।

1. श्चुत्व सन्धि

सूत्र–स्तोः श्चुनाश्चुः

नियम–सकार या तवर्ण (त, थ, द, ध, न) के पहले या बाद में शकार या चवर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) का योग होने पर 'स' को 'श' तथा तवर्ग को चवर्ग हो जाता है।

उदाहरण– सत् + चित् = सच्चित् [2017 NJ, NK, 19 DA, DD, DE]

सद् + जनः = सज्जनः [2017 NJ, 20 ZO, ZS]

रामस् + शेते = रामश्शेते [2017 NN]

शार्ङ्गिन् + जयः = शार्ङ्गिञ्जयः [2017 NO]

कस् + चित् = कश्चित्

बृहद् + झरः = बृहज्झरः

2. ष्टुत्व सन्धि

सूत्र –ष्टुनाष्टुः

नियम — सकार या तवर्ग के पहले या बाद में षकार या टवर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण) का योग होने पर स् को ष् तथा तवर्ग को टवर्ग हो जाता है।

उदाहरण – तत् + टीका = तट्टीका
रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः
उद् + डयनम् = उड्डयनम् (2018 BN)
कृष् + नः = कृष्णः [2017 NJ]
दुष् + तः = दुष्टः [2017 NJ]
चक्रिन् + ढौकसे = चक्रिण्ढौकसे

3. जश्त्व सन्धि

यह सन्धि दो प्रकार की होती है — (क) पदान्त जश्त्व सन्धि, (ख) अपदान्त जश्त्व सन्धि।

(क) पदान्त जश्त्व सन्धि

सूत्र – झलां जशोऽन्ते

नियम — यदि पदान्त में झलों (वर्ग के पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे वर्ण) के बाद कोई भी स्वर तथा वर्ग के तीसरे, चौथे और पाँचवें वर्ग या य, र, ल, व में से कोई वर्ण आये तो पहले वाले वर्ण के स्थान में उसी वर्ग का तीसरा वर्ग जश् हो जाता है।

उदाहरण – अच् + अन्तः = अजन्तः
वाक् + ईशः = वागीशः
षट् + आननः = षडाननः
दिक् + अम्बरः = दिगम्बरः (2018 BK)
सुप् + ईशः = सुबीश
एतत् + मुरारिः = एतद् मुरारिः
षट् + म्यः = षड्म्यः

(ख) अपदान्त जश्त्व सन्धि

सूत्र – झलां जश् झशि

नियम — यदि अपदान्त में झलों (वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ वर्ण) के बाद कोई झश् (वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण) परे होने पर जश् (अपने वर्ग का तृतीय वर्ण) हो जाता है।

उदाहरण – क्रुध + धः = क्रुद्धः
शुध् + धः = शुद्धः
लभ् + धम् = लब्धम्
युध् + धः = युद्धः
दघ् + धः = दुग्धः

4. चर्त्व सन्धि

सूत्र – खरि च

नियम — यदि झल् (वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीया और चतुर्थ वर्ण) के बाद वर्ग का प्रथम व द्वितीय वर्ण या श, ष, स आता है तो उनके स्थान पर चर् (अपने वर्ग का प्रथम वर्ण) हो जाता है।

उदाहरण – सद् + कारः = सत्कारः
सद् + पात्रम् = सत्पात्रम्
तद् + शिवः = तच्छिवः
एतद् + करोति = एतत् करोति
दिग् + पालः = दिक्पालः
सद् + शिष्यः = सच्छिष्यः [2017 NM]

5. अनुस्वार सन्धि

सत्र – मोऽनुस्वारः

नियम — पदान्त में 'म्' के बाद कोई भी व्यञ्जन आता है, तो 'म्' के स्थान में अनुस्वार (ं) हो जाता है।

उदाहरण – हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे
त्वम् + करोषि = त्वं करोषि
रामम् + भजामि = रामं भजामि (2020 ZR, ZU)

6. तोर्लि

नियम — यदि 'त' वर्ग के किसी वर्ण से परे ल हो तो त वर्गीय वर्ण के स्थान पर ल् हो जाता है।

उदाहरण – उद् + लिखितम् = उल्लिखितम्
तद् + लीनः = तल्लीनः
उद् + लेखः = उल्लेखः
विद्वान् + लिखति = विद्वांल्लिखति

विशेष – अनुनासिक न् के स्थान में अनुनासिक ल् होता है।

7. परसवर्ण सन्धि

सूत्र – अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।

नियम — अनुस्वार से परे यदि यय् प्रत्याहार (श्, ष्, स्, ह् के अतिरिक्त सभी व्यञ्जन यय् प्रत्याहार में आते हैं) का कोई भी व्यञ्जन आये तो अनुस्वार का परसवर्ण हो जाता है। अर्थात् पद के मध्य में अनुस्वार के आगे श्, ष्, स्, ह् को छोड़कर किसी भी वर्ग का कोई भी व्यञ्जन आने पर अनुस्वार के स्थान पर उस वर्ग का पञ्चम वर्ण हो जाता है; यथा — गम् + गा = गंगा या गङ्गा।

विशेष – यह नियम प्रायः अनुस्वार सन्धि के पश्चात् लगता है। पदान्त में यह नियम विकल्प से होता है; यथा— कार्यम् + करोति = कार्यं करोति या कार्यङ्करोति।

उदाहरण – शाम् + तः = शान्तः
अन् + कितः = अङ्कितः
कुन् + ठितः = कुण्ठितः
गुम् + फितः = गुम्फितः
अन् + चितः = अञ्चितः

पदान्त में होने पर –

अलम् + चकार = अलं चकार या अलञ्चकार
रामम् + नमामि = रामं नमामि या रामन्नमामि
त्वम् + करोषि = त्वं करोषि या त्वङ्करोषि

व्यञ्जन सन्धि चक्र

सन्धि का नाम	सूत्र	अर्थ	प्रयोग
1. श्चुत्व सन्धि	स्तोः श्चुनाश्चुः	स् अथवा त वर्ग के योग में श या च् वर्ग आवे तो स का श्, त् वर्ग का च वर्ग होता है।	रामस् + शेते = रामश्शेते। [2017 NN] रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति। [2019 CZ] सत् + चित् = सच्चित्।
2. ष्टुत्व सन्धि	ष्टुनाष्टुः	सकार त वर्ग के पहले या बाद में षकार और ट वर्ग आवे तो स का ष और त वर्ग का ट वर्ग हो जाता है।	रामस् + षष्ठः = रामष्षष्ठः। रामस् + टीकते = रामष्टीकते। [2019 DB] तत् + टीका = तट्टीका। पृस् + टः = पृष्टः।
3. जश्त्व सन्धि	झलां जशोऽन्ते	पद के अन्त में वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण के बाद व्यंजन आने पर पहले वर्ण को तृतीय होता है।	जगत् + ईशः = जगदीशः। [2017 NL, 19 CZ, DF] अप् + जम् = अब्जम्। षट् + आननः = षडाननः।
4. चर्त्व सन्धि	खरि च	वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ वर्ण के आगे किसी वर्ग के प्रथम	छेद् + ता = छेत्ता। लिभ् + सा = लिप्सा। हृद् + स्थलम् = हृत्स्थलम्।

		या द्वितीय अक्षर के आने पर वे अपने वर्ग के प्रथम अक्षर में बदले जाते हैं।	
5. अनुस्वार सन्धि	मोऽनुस्वारः	पद के अन्त में म् के बाद व्यञ्जन आने पर 'म' का अनुस्वार हो जाता है।	हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे। त्वम् + करोषि = त्वं करोषि।

विसर्ग सन्धि

विसर्ग के साथ स्वर या व्यञ्जन के मिलने से विसर्ग में जो विकार होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। जैसे मनः + रथः = मनोरथः!

विसर्ग सदा किसी न किसी स्वर के बाद ही आता है। जैसे — 'दुःखः' तथा 'रामः' में विसर्ग क्रमशः 'उ' और 'अ' के बाद है। अतः विसर्ग सन्धि में विसर्ग से पहले आने वाले स्वर तथा बाद के स्वर अथवा व्यञ्जन दोनों का ही ध्यान रखा जाता है।

इसके प्रधान नियम निम्न हैं—

1. सत्व सन्धि (सूत्र– विसर्जनीयस्य सः) — यदि विसर्ग (ः) के आगे कोई खर् प्रत्याहार का वर्ण (किसी वर्ग का पहला, दूसरा वर्ण या श् ष् स्) हो तो विसर्ग के स्थान में स् हो जाता है।

जैसे–

कः + कः = कस्कः।
दुः + तरः = दुस्तरः।

इस नियम को समझने के लिए निम्न बातों पर ध्यान देना आवश्यक है—

(क) यदि विसर्ग के परे क ख या प फ में से कोई हो तो विसर्ग के स्थान पर स् होता है।

जैसे–

कः + करोति = कस्करोति।
इतः + ततः = इतस्ततः।

(ख) यदि विसर्ग से परे च या छ हो तो विसर्ग के स्थान पर स् हो जाता है। फिर श्चुत्व सन्धि होकर 'स' का 'श्' बन जाता है। जैसे—

निः + छलम् = निश्छलम्।
निः + चलम् = निश्चलम्।
कः + चित् = कश्चित्। [2017 NP]

(ग) यदि विसर्ग के परे ट् या ठ् हो तो विसर्ग के स्थान में स् हो जाता है। फिर ष्टुत्व सन्धि होकर स् का ष् बन जाता है। जैसे—

रामस् + टीकते = रामष्टीकते।
धनुः + टंकारः = धनुष्टंकारः।

(घ) यदि विसर्ग के परे त या थ हो तो विसर्ग के स्थान में स् होकर जैसा का तैसा रहता है। जैसे —

इतः + ततः = इतस्ततः।
कृतः + तथा = कृतस्तथा।

(य) यदि विसर्ग के परे श् ष् या स् में से कोई हो तो विसर्ग के स्थान में पर जैसा वर्ण हो जाता है अथवा विसर्ग जैसा का तैसा रहता है। जैसे—

हरिः + शेते = हरिश्शेते = हरिःशेते।
रामः + षष्ठः = रामष्षष्ठः = रामःषष्ठः।
निः + सन्देहम् = निस्सन्देहम् = निःसन्देहम्।

अन्य उपयोगी उदाहरण —

मनः + तापः	=	मनस्तापः	हरिः + छलति	= हरिश्छलति।
पुरः + कार	=	पुरस्कार	हरिः + चलति	= हरिश्चलति।
नमः + ते	=	नमस्ते	गौः + चरति	= गौश्चरति।

2. रुत्व सन्धि (सूत्र – ससजुषोः रुः) – पदान्त (पद के अन्त) के स् के स्थान में रु (र्) हो जाता है। जैसे—

कवि : + अयम्	=	कविरयम्	हरेः + इदम्	= हरेरिदम्।
गौः + अयम्	=	गौरयम्	प्रातः + अहम्	= प्रातरहम्।
पाशैः + वृद्धः	=	पाशैर्वद्धः	ॠषिः + वदति	= ॠषिर्वदति।
भानोः + अयम्	=	भानोरयम्	मातृः + आदेशः	= मातृरादेशः।
पितृः + आज्ञा	=	पितृराज्ञा	साधुः + गच्छति	= साधुर्गच्छति।
मुनिः + आगच्छति	=	मुनिरागच्छति	निः + धनम्	= निर्धनम्।
कैः + उक्तम्	=	कैरुक्तम्	प्रातः + एव	= प्रातरेव।

अन्य उपयोगी उदाहरण –

कविस् + आगच्छति	=	कविर् + आगच्छति	=	कविरागच्छति।
मुनिस् + इव	=	मुनिर् + इव	=	मुनिरिव।
निस् + दयः	=	निर्दयः		
पतिः + उवाच	=	पतिरुवाच		
भानु + उदेति	=	भानुरुदेति		
हरेः जन्म	=	हरेर् + जन्म	=	हरेर्जन्म।
गुरोः + आगमनम्	=	गुरोर् + आगमनम्	=	गुरोरागमनम्।
मुनिः + गच्छति	=	मुनिर् + आगच्छति	=	मुनिर्गच्छति।

3. उत्व सन्धि– (क) (सूत्र – अतोरोरप्लुतादप्लुते) — यदि रु के र् से पूर्व ह्रस्व अ हो और परे भी ह्रस्व अ हो तो रु (र) के स्थान में 'उ' हो जाता है।

विशेष – (अ + उ + अ) बन जाने पर गुण सन्धि तथा पूर्वरूप सन्धि होकर (अ + उ + अ) तीनों का एक 'ओ' बन जाता है। जैसे –

शिवस् + अर्च्यः
रुत्व सन्धि होकर शिव + र् + अर्च्यः
उपर्युक्त उत्व सन्धि होकर = शिव + उ + अर्च्यः
गुण सन्धि होकर = शिवो + अर्च्यः
पूर्वरूप सन्धि होकर शिवोऽर्च्यः

इसी प्रकार — सम् + अपि = सोऽपि
देवस् + अपि = देवोऽपि
सस् + अहम् = सोऽहम्
शिवस् + अत्र = शिवोऽत्र।

(ख) (सूत्र – हशि च) — यदि रु (र्) के पूर्व ह्रस्व अ हो और परे हश् (वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण तथा य व र ल ह) हो तो रु (र्) के स्थान में 'उ' हो जाता है। फिर अ + उ में गुण सन्धि हो जाती है। जैसे—

मनस् + रथः = मन + र + रथः = मन + उ + रथः = मनोरथः
शिवस् + वन्द्यः = शिव + र् + वन्द्यः = शिव + उ + वन्द्य = शिवोवन्द्यः

अन्य उपयोगी उदाहरण –

रामस् + नमति = रामो नमति।
रामस् + हसति = रामो हसति।

मृगस् + धावति = मृगो धावति।
मेघस् + गर्जति = मेघो गर्जति।

4. रलोप सन्धि (सूत्र – रोरि) – यदि र् से परे र् हो तो पूर्व 'र्' का लोप हो जाता है। जैसे —

बालकास् + रमन्ते = बालकार् + रमन्ते = बालका रमन्ते
गौः + रम्भते = गौर् + रम्भते = गौ रम्भते।

5. लोप निमित्तक दीर्घ (सूत्र – ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः) — यदि ढ् या र् परे होने पर ढ् या र् का लोप हुआ है और लुप्त होनेवाले ढ् या र् से पूर्व अ इ उ में से कोई हो तो इनका दीर्घ बन जाता है। जैसे—

हरिर् + रम्यः = हरि रम्यः
पुनर् + रमते = पुना रमते
शम्भुर् + राजते = शम्भू राजते।

6. खरवसानयोर्विसर्जनीयः

यदि पदान्त में र् आए अथवा र् से परे खर् (वर्गों के प्रथम द्वितीय वर्ण एवं श् ष् स्) आये तो दोनों स्थितियों में र् का विसर्ग हो जाता है। जैसे —

रामर्	+	खादति	=	रामः खादति
पुनर्	+	पृच्छति	=	पुनः पृच्छति
रामर्	+	करोति	=	रामः करोति
वृक्षर्	+	फलति	=	वृक्षः फलति
गुरुर्	+	पाठयति	=	गुरुः पाठयति

7. वा शरि

यदि विसर्ग के बाद शर् अर्थात् श्, ष्, स् आये तो विसर्ग के स्थान पर विकल्प से स् होता है। जैसे—

मुनिः	+	शेते	=	मुनिश्शेते
रामः	+	षष्ठः	=	रामष्षष्ठः
कृष्णः	+	सर्पः	=	कृष्णस्सर्पः
मत्तः	+	षट्पदः	=	मत्तष्षट्पदः

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. 'तल्लयः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है? (2017 NJ, 19 DB, 20 ZP, ZT)
(क) खरि च (ख) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः
(ग) तोर्लि (घ) यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा
उत्तर – (ग) तोर्लि।

2. 'बालको हसति' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की जाती है?
(क) आद् गुणः (ख) अतोरोरप्लुतादप्लुते (ग) हशि च (घ) ससजुषोरुः
उत्तर – (ग) हशि च।

3. 'हरिस् + शेते' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) झलां जशोऽन्ते (ग) स्तोश्चुनाश्चुः (घ) शात्
उत्तर – (ग) स्तोश्चुनाश्चुः।

4. 'शान्तः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गई है?
(क) झलां जशोऽन्ते (ख) मोऽनुस्वारः (ग) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः (घ) खरि च।
उत्तर – (ग) अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।

5. 'हरिश्शेते' में किस सूत्र में सन्धि की गयी है?
(क) आद्गुणः (ख) वृद्धिरेचि (ग) स्तोः श्चुना श्चुः (घ) अकः सवर्णे दीर्घः
उत्तर – (ग) स्तोः श्चुना श्चुः।

6. 'वाक् + ईशः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) आद्गुणः (ग) झलाँ जशोऽन्ते (घ) स्तोः श्चुनाश्चुः
उत्तर – (ख) आद्गुणः।

7. विसर्ग सन्धि का उदाहरण है–
(क) मुनिरिति (ख) तच्चित्रम (ग) परीक्षणम् (घ) गौयत्र
उत्तर – (क) मुनिरिति।

8. 'रामश्चिनोति' इसमें किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गयी है?
(क) ष्टुनाष्टुः (ख) खरिच (ग) स्तोः श्चुना श्चुः (घ) झलां जशोऽन्ते
उत्तर – (ग) स्तोः श्चुना श्चुः।

9. 'जगदीशः' इस शब्द में किस सूत्र से सन्धि कार्य होता है?
(क) स्तोः श्चुना श्चुः (ख) ष्टुनाष्टुः (ग) झलां जशोऽन्ते (घ) झलां जश झशि
उत्तर – (ग) झलां जशोऽन्ते।

10. 'उच्चारणम्' इस शब्द में किस सूत्र से सन्धिकार्य होता है?
(क) स्तोः श्चुना श्चुः (ख) ष्टुना ष्टुः (ग) शात् (घ) झलां जशोऽन्ते
उत्तर – (क) स्तोः श्चुना श्चुः।

11. 'शान्तः' में किस सूत्र के अनुसार सन्धि की गई है?
(क) झलां जशोऽन्ते (ख) मोऽनुस्वारः
(ग) अनुस्वारस्य ययि पर सवर्णः (घ) खरि च
उत्तर – (ग) अनुस्वारस्य ययि पर सवर्णः।

12. 'हरेऽव' पद का सन्धि-विच्छेद होता है– (2017 NJ, 19 DD, 20 ZQ, ZS)
(क) हर + इव (ख) हरे + अव (ग) हरे + व (घ) हरा + इव
उत्तर – (ख) हरे + अव।

13. 'हरिं वन्दे' में किस सूत्र से सन्धि हुई है?
(क) एङिपारूपम् (ख) स्तोः श्चुना श्चुः (ग) मोऽनुस्वारः (घ) विसर्गनीयस्य सः
उत्तर – (ग) मोऽनुस्वारः।

14. 'तच्चित्रम्' में किस सूत्र से सन्धि की गयी है?
(क) ष्टुना ष्टुः (ख) स्तोः श्चुना श्चुः (ग) झलां जशोऽन्ते (घ) खरि च
उत्तर – (ख) स्तोः श्चुना श्चुः।

15. 'हरिरिह' में सन्धि-विच्छेद होता है–
(क) हरिः + इह (ख) हरि + रिह (ग) हरौ + इह (घ) हरौ + इह
उत्तर – (क) हरिः + इह।

16. 'सच्चित' में सन्धि-विधायक सूत्र है–
(क) खरि च (ख) स्तोः श्चुना श्चुः (ग) झलां जसोऽन्ते (घ) शश्छोऽटि
उत्तर – (ख) स्तोः श्चुना श्चुः।

17. 'वाग्देवी' उदाहरण है–
(क) यण् सन्धि का (ख) विसर्ग सन्धि का (ग) व्यञ्जन सन्धि का (घ) स्वर सन्धि का
उत्तर – (ग) व्यञ्जन सन्धि का।

18. 'सच्चरितम्' इस शब्द में किस सूत्र से सन्धि कार्य होता है? (2010 CJ)
(क) आद्गुणः (ख) वृद्धिरेचि (ग) स्तोश्चुनाश्चुः (घ) झलांजशोऽन्ते
उत्तर – (ग) स्तोश्चुनाश्चुः।

19. 'सच्चरितम्' पद का सन्धि-विच्छेद होता है– [2011 (HX)]
(क) सच्च + रितम् (ख) (सच्चरि + तम् (ग) सच् + चरितम् (घ) सत् + चरितम्
उत्तर– (घ) सत् + चरितम्।

20. 'हरिरिह' में सन्धिविच्छेद है– [2013 (BN)]
(क) हरिः + इह (ख) हरि + रिह (ग) हरी + इह (घ) हरिः + रिह
उत्तर– (क) हरिः + इह।

21. 'वागीशः' में सन्धिविधायक सूत्र है– [2014 (CV)]
(क) अकः सवर्णे दीर्घः (ख) झलां जशोऽन्ते (ग) वृद्धिरेचि (घ) विसर्जनीयस्य सः
उत्तर– (ख) झलां जशोऽन्ते।

22. 'महौषधिः' पद का सन्धि-विच्छेद होता है– [2015 (DW)]
(क) मह + औषधिः (ख) महा + औषधिः (ग) महा + ओषधिः (घ) महौ + उषधिः
उत्तर– (ग) महा + ओषधिः।

23. 'परोपकारः' पद में सन्धि विधायक सूत्र है– [2015 (DU)]
(क) इकोयणचि (ख) आद्गुणः (ग) वृद्धिरेचि (घ) अकः सवर्णे दीर्घः
उत्तर– (घ) अकः सवर्णे दीर्घः।

24. 'गङ्गोदकम्' में सन्धि-विच्छेद है– [2015 (DT), 16 (TJ, TO)]
(क) गङ्गो + दकम् (ख) गङ्ग + ओदकम् (ग) गङ्गा + उदकम् (घ) गङ्गोग + दकम्
उत्तर– (ग) गङ्गा + उदकम्।

25. 'श्रीशः' में सन्धिविधायक सूत्र है– [2015 (DT)]
(क) झलां जशोऽन्ते (ख) वृद्धिरेचि (ग) अकः सवर्णे दीर्घः (घ) रोरि
उत्तर– (ग) अकः सवर्णे दीर्घः।

26. 'विष्णोऽव' का सन्धि विधायक सूत्र है– [2016 (TJ)]
(क) एङिपररूपम् (ख) मोऽनुस्वारः (ग) एचोऽयवायावः (घ) एङः पदान्तादति
उत्तर– (घ) एङः पदान्तादति।

27. 'सञ्चयनम्' पद में सन्धि-विच्छेद होगा– [2016 (TK)]
(क) सञ्च + अयनम् (ख) सञ्चु + अनम् (ग) सञ्चे + अनम् (घ) सञ्चे + अयनम्
उत्तर– (क) सञ्च + अयनम्।

28. 'प्रेजते' का सन्धि विधायक सूत्र है– [2016 (TK)]
(क) आद्गुणः (ख) वृद्धिरेचि (ग) एचोऽयवायावः (घ) एङिपररूपम्
उत्तर– (घ) एङिपररूपम्।

29. 'यद्यपि' में सन्धि विधायक सूत्र है– [2016 (TO)]
(क) आद्गुणः (ख) वृद्धिरेचि (ग) इकोयणचि (घ) एङिपररूपम्
उत्तर– (ग) इकोयणचि।

30. 'भानुरुदेति' पद में सन्धि-विच्छेद होगा– [2016 (TP)]
(क) भानुर् + उदेति (ख) भानुरु + देति (ग) भानुः + उदेति (घ) भा + नुरुदेति
उत्तर– (ग) भानुः + उदेति।

31. 'तट्टीका' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा– [2017 (NL)]
(क) तद् + टीका (ख) तत + टीका (ग) तत् + टीका (घ) तट् + टीका
उत्तर– (ग) तत् + टीका।

32. 'रामष्टीकते' पद का सन्धि-विच्छेद होगा— [2017 (NK)]
(क) रामष् + टीकते (ख) रामस् + टीकते (ग) रामः + टीकते (घ) रामश् + टीकते
उत्तर— (ख) रामस् + टीकते।

33. 'षेष्टा' पद का सन्धि-विच्छेद होगा— [2017 (NM)]
(क) पेस् + टा (ख) पेश् + टा (ग) पेष् + टा (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर— (घ) इनमें से कोई नहीं।

34. 'अजन्तः' का सन्धि-विग्रह— [2017 (NN)]
(क) अच् + अन्तः (ख) अज् + अन्तः (ग) अ + जन्तः
उत्तर— (क) अच् + अन्तः।

35. 'दिगम्बरः' का सन्धि-विग्रह है— [2017 (NO)]
(क) दिक् + अम्बरः (ख) दिग् + अम्बरः (ग) दिक + अम्बरः
उत्तर— (ग) दिक् + अम्बरः।

36. 'वागीशः' का सन्धि-विग्रह है— [2017 (NP), 20 (ZU)]
(क) वाक् + गीशः (ख) वाक् + ईशः (ग) वाग् + इशः (घ) वाग् + एशः
उत्तर— (ख) वाक् + ईशः।

37. 'सन्नद्धः' पद का सन्धि-विच्छेद होगा— [2018 (BK)]
(क) सम् + धः (ख) सन् + द्धः (ग) सम्नध् + धः (घ) सन् + नद्धः
उत्तर— (ग) सन्नध् + धः।

38. 'सच्चरितम्' का सन्धि-विच्छेद होगा— [2018 (BN)]
(क) सच्च + चरितम् (ख) सत् + चरितम् (ग) सच् + चरितम् (घ) सच्चरि + तम्
उत्तर— (ख) सत् + चरितम्।

39. 'रामश्चिनोति' का सन्धि-विच्छेद है— [2019 (CZ)]
(क) राम+श्चिनोति (ख) रामश्चि+नोति (ग) रामशि+चनोति (घ) रामस् + चिनोति
उत्तर— (घ) रामस् + चिनोति।

40. 'षडाननः' का सन्धि-विच्छेद है— [2019 (DA)]
(क) षड + आननः (ख) षट् + आननः (ग) षडा + ननः (घ) ष + डाननः
उत्तर— (ख) षट् + आननः।

41. ''रामश्शेते' का सन्धि विच्छेद है'— [2019 (DC)]
(क) रामः + शेते (ख) रामस् + शेते (ग) रामश् + शेते (घ) रामस् + सेते
उत्तर— (ख) रामस् + शेते।

42. 'हरेऽव' का सन्धि-विच्छेद होता है— [2019 (DE)]
(क) हरे + व (ख) हर + इव (ग) हरे + अव (घ) हरा + एव
उत्तर— (ग) हरे + अव।

43. ''सच्चित्'' का सन्धि - विच्छेद है— [2019 (DF)]
(क) सत् + चित् (ख) सच + चित् (ग) सच्चि + त्
उत्तर— (क) सत् + चित्।

44. ''पित्राज्ञा'' का सन्धि - विच्छेद है— [2020 (ZO)]
(क) पितृ + आज्ञा (ख) पित्र + आज्ञा (ग) पितृ + आज्ञा
उत्तर— (क) पितृ + आज्ञा।

45. 'कविरयम्' का सन्धि - विच्छेद है— [2020 (ZR)]
(क) कविः + अयम् (ख) कविर + अयम् (ग) कवि + अयम् (घ) कविरा + अयम्
उत्तर— (क) कविः + अयम्।

5

शब्द-रूप

(अंक- 3)

नपुंसकलिङ्ग

1. 'गृह' (अकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गृहम्	गृहे	गृहाणि/गृहाः
द्वितीया	गृहम्	गृहे	गृहाणि/गृहान्
तृतीया	गृहेण	गृहाभ्याम्	गृहैः (2017 NL)
चतुर्थी	गृहाय	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
पंचमी	गृहात्	गृहाभ्याम्	गृहेभ्यः
षष्ठी	गृहस्य	गृहयोः	गृहाणाम्
सप्तमी	गृहे	गृहयोः	गृहेषु (2020 ZS)
सम्बोधन	हे गृह!	हे गृहे!	हे गृहाणि!

2. 'वारि' (ईकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि (2018 BN)
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा (2011 IC, 17 NM, 19 DA)	वारिभ्याम्	वारिभिः (2020 ZU)
चतुर्थी	वारिणे (2017 NK)	वारिभ्याम्	वारिभ्यः (2018 BK)
पंचमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि (2011 IB, 17 NN)	वारिणोः	वारीणाम्
सम्बोधन	हे वारे!/हे वारि!	हे वारिणी!हे वारीणि!	

3. 'दधि' (इकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनी	दधीनि
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने (2017 NO, 20 ZQ)	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
पंचमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्

सप्तमी	दध्नि/दधनि	दध्नोः	दधिषु
सम्बोधन	हे दधि!/हे दधे!	हे दधिनी	हे दधीनि!

4. 'मधु' (उकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मधु (2017 NN)	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना (2019 DC)	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने (2019 DB)	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पंचमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु!/हे मधो!	हे मधुनि!	हे मधूनि!

5. जगत् (तकारान्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	जगत्	जगती	जगन्ति
द्वितीया	जगत्	जगती	जगन्ति
तृतीया	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः
चतुर्थी	जगते (2019 CZ,20ZO,ZP)	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
पंचमी	जगतः	जगद्भ्याम्	जगद्भ्यः
षष्ठी	जगतः	जगतोः	जगताम् (2011 IB)
सप्तमी (2009 DU, 10 CK)	जगति	जगतोः	जगत्सु
सम्बोधन	हे जगत्!	हे जगती!	हे जगन्ति!

6. 'नामन्' (अनन्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नाम	नामनी/नाम्नी	नामानि
द्वितीया	नाम	नामनी/नाम्नी	नामानि
तृतीया	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
चतुर्थी	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्यः
पंचमी	नाम्नः	नामभ्याम्	नामभ्यः
षष्ठी	नाम्नः	नाम्नोः	नाम्नाम्
सप्तमी	नाम्नि/नामनि	नाम्नोः	नामसु
सम्बोधन	हे नाम!/नामन्!	हे नाम्नी!/नामनी	हे नामानि!

7. 'मनस्' (असन्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मनः	मनसी	मनांसि
द्वितीया	मनः	मनसी	मनांसि
तृतीया	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः

चतुर्थी	मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
पंचमी	मनसः	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
षष्ठी	मनसः	मनसोः	मनसाम्
सप्तमी	मनसि (2017 NP)	मनसोः	मनस्सु,/मनःसु
सम्बोधन	हे मनः!	हे मनसी!	हे मनांसि

8. 'ब्रह्मन्' (अनन्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्मणिः
द्वितीया	ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्मणि
तृतीया	ब्रह्मणा	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभिः
चतुर्थी	ब्रह्मणे	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभ्यः
पंचमी	ब्रह्मणः	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभ्यः
षष्ठी	ब्रह्मणः	ब्रह्मणोः	ब्रह्मणाम्
सप्तमी	ब्रह्मणि	ब्रह्मणोः	ब्रह्मसु
सम्बोधन	हे ब्रह्मन्!	हे ब्रह्मणी!	हे ब्रह्मांणि!

9. 'धनुस्' (उसन्त नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	धनुः	धनुषी	धनूंषि
द्वितीया	धनुः	धनुषी	धनूंषि
तृतीया	धनुषा	धनुभ्याम्	धनुर्भिः
चतुर्थी	धनुषे	धनुभ्याम्	धनुर्भ्यः
पंचमी	धनुषः	धनुभ्याम्	धनुर्भ्यः
षष्ठी	धनुषः	धनुषोः	धनुषाम्
सप्तमी	धनुषि	धनुषोः	धनुस्सु
सम्बोधन	हे धनुः!	हे धनुषी!	हे धनूंषि!

सर्वनाम

1. सर्व-सब (पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	सर्वः	सर्वो	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वो	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पंचमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

सर्व (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै (2014 CS)	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पंचमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

सर्व (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणिः
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पंचमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

2. तद्-वह (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन् (2017 NP)	तयोः	तेषु

तद् (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

तद् (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

3. यद्-जो, जिस, जिन (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पंचमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

यद् (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पंचमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

यद् (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि
तृतीया	येन्	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पंचमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

4. किम्-क्या, कौन (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

किम् (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

5. युष्मद्-तू, तुम (तीनों लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्/त्वा	युवाम्/वाम्	युष्मान्/वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्/ते	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्/वः
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः, वाम्	युष्माकम्/वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

6. अस्मद्-मैं, हम (तीनों लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्, नः
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

7. इदम्-यह (पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पंचमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

8. एतत्-यह (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पंचमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

एतत्-यह (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एतत्-द	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्-द	एते	एतानि
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पंचमी	एतस्मात्-द	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

9. अदस्-वह (पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमी
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमून्
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पंचमी	अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

अदस् (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	असौ	अमू	अमूः
द्वितीया	अमुम्	अमू	अमूः
तृतीया	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्यै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
पंचमी	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
षष्ठी	अमुष्याः	अमुयोः	अमूषाम्
सप्तमी	अमुष्याम्	अमुयोः	अमूषु

अदस् (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अदः	अमुनी	अमूनि
द्वितीया	अदः	अमुनी	अमूनि
तृतीया	अमुना	अमूभ्याम्	अमूभिः
चतुर्थी	अमुष्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
पंचमी	अमुष्मात्-द्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः
षष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
सप्तमी	अमुष्मिन्	अमुयोः	अमीषु

10. भवत् (पुंल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पंचमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवन्!	हे भवन्तौ! हे भवन्तः!	

भवत् (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवती	भवत्यौ	भवत्यः
द्वितीया	भवतीम्	भवत्यौ	भवतीः
तृतीया	भवत्या	भवतीभ्याम्	भवतीभिः
चतुर्थी	भवत्यै	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः
पंचमी	भवत्याः	भवतीभ्याम्	भवतीभ्यः
षष्ठी	भवत्याः	भवत्योः	भवतीनाम्
सप्तमी	भवत्याम्	भवत्योः	भवतीषु
सम्बोधन	हे भवति!	हे भवत्यौ!हे भवत्यः!	

भवत् (नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवत्/भवद्	भवती	भवन्ति
द्वितीया	भवत्/भवद्	भवती	भवन्ति
तृतीया	भवता (2010 CK)	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पंचमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवत्!	हे भवती!	हे भवन्ति!

(ङ) एक से सौ तक के संख्यावाचक शब्द

1. एकः
2. द्वौः
3. त्रयः
4. चत्वारः
5. पञ्च
6. षट्
7. सप्त
8. अष्ट
9. नव
10. दश
11. एकादश
12. द्वादश
13. त्रयोदश
14. चतुर्दश
15. पञ्चदश
16. षोडश
17. सप्तदश
18. अष्टादश
19. नवदश, एकोनविंशतिः
20. विंशतिः
21. एकविंशतिः
22. द्वविंशतिः
23. त्रयोविंशतिः
24. चतुर्विंशतिः
25. पञ्चविंशतिः
26. षड्विंशतिः
27. सप्तविंशतिः
28. अष्टविंशतिः
29. नवविंशतिः, एकोनत्रिंशत्
30. त्रिंशत्
31. एकत्रिंशत्
32. द्वात्रिंशत्
33. त्रयस्त्रिंशत्
34. चतुस्त्रिंशत्
35. पञ्चत्रिंशत्
36. षट्त्रिंशत्
37. सप्तत्रिंशत्
38. अष्टत्रिंशत्
39. नवत्रिंशत्, एकोनचत्वारिंशत्
40. चत्वारिंशत्
41. एकचत्वारिंशत्
42. द्विचत्वारिंशत्
43. त्रिचत्वारिंशत्
44. चतुश्चत्वारिंशत्
45. पञ्चचत्वारिंशत्
46. षट्चत्वारिंशत्
47. सप्तचत्वारिंशत्
48. अष्टचत्वारिंशत्
49. नवचत्वारिंशत्
50. पञ्चाशत्
51. एकपञ्चाशत्
52. द्विपञ्चाशत्
53. त्रिपञ्चाशत्
54. चतुःपञ्चाशत्
55. पञ्चपञ्चाशत्

56. षट्पञ्चाशत् 57. सप्तपञ्चाशत् 58. अष्टपञ्चाशत् 59. नवपञ्चाशत्
60. षष्टिः 61. एकषष्टिः 62. द्विषष्टिः 63. त्रिषष्टिः
64. चतुष्षष्टिः 65. पञ्चषष्टिः 66. षट्षष्टिः 67. सप्तषष्टिः
68. अष्टषष्टिः 69. नवषष्टिः 70. सप्ततिः 71. एकसप्ततिः
72. द्विसप्ततिः 73. त्रिसप्ततिः 74. चतुःसप्ततिः 75. पञ्चसप्ततिः
76. षट्सप्ततिः 77. सप्तसप्ततिः 78. अष्टासप्ततिः 79. नवसप्ततिः
80. अशीतिः 81. एकाशीतिः 82. द्वयशीतिः 83. त्रयाशीतिः
84. चतुरशीतिः 85. पञ्चाशीतिः 86. षडशीतिः 87. सप्ताशीतिः
88. अष्टाशीतिः 89. नवाशीतिः 90. नवतिः 91. एकनवतिः
92. द्विनवतिः 93. त्रिनवतिः 94. चतुर्नवतिः 95. पञ्चनवतिः
96. षण्णवतिः 97. सप्तनवतिः 98. अष्टनवतिः 99. नवनवतिः
100. शतम्।

कति (पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, नपुंसकलिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	—	—	कति
द्वितीया	—	—	कति
तृतीया	—	—	कतिभिः
चतुर्थी	—	—	कतिभ्यः
पंचमी	—	—	कतिभ्यः
षष्ठी	—	—	कतीनाम्
सप्तमी	—	—	कतिषु

नोट– संख्यावाचक कति शब्द का प्रयोग बहुवचन में ही होता है।

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'गुरुभ्यः' पद 'गुरु' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?
(क) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (ख) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन
(ग) पंचमी विभक्ति, एक वचन (घ) षष्ठी विभक्ति, बहुवचन
उत्तर–(ख) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन।

2. विद्वस् शब्द का द्वितीया बहुवचन में रूप है–
(क) विद्वान (ख) विद्वांसम् (ग) विदुषः (घ) विदुषा
उत्तर–(ग) विदुषः।

3. 'रमा' प्रातिपदिक के सप्तमी एकवचन में रूप होगा–
(क) रामाणाम् (ख) रमायाम् (ग) रमया (घ) रमे
उत्तर–(ख) रमायाम्।

4. 'गुरु' शब्द के षष्ठी एक वचन में रूप होता है–
(क) गुरुणा (ख) गुरवे (ग) गुरोः (घ) गुरौ
उत्तर–(ग) गुरोः।

5. **'नद्याम्' पद 'नदी' शब्द के किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?**

(क) द्वितीया विभक्ति तथा द्विवचन का (ख) षष्ठी विभक्ति तथा बहुवचन का

(ग) सप्तमी विभक्ति तथा एकवचन का (घ) किसी का नहीं

उत्तर–(ग) सप्तमी विभक्ति तथा एकवचन का।

6. **'पितृ' शब्द का पंचमी एकवचन में रूप होता है–**

(क) पित्रः (ख) पितरस्य (ग) पितुः (घ) पित्रात्

उत्तर–(ग) पितुः।

7. **'गुर्वोः' पद 'गुरु' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?**

(क) प्रथमा एकवचन (ख) पंचमी बहुवचन

(ग) सप्तमी द्विवचन (घ) किसी का नहीं

उत्तर–(ग) सप्तमी द्विवचन।

8. **'वारिणे' पद 'वारि' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?**

(क) द्वितीया विभक्ति, एकवचन (ख) तृतीया विभक्ति, बहुवचन

(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, एकवचन

उत्तर–(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

9. **'नद्यै' पद 'नदी' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?**

(क) द्वितीया विभक्ति तथा द्विवचन (ख) तृतीया विभक्ति तथा बहुवचन

(ग) चतुर्थी विभक्ति तथा एकवचन (घ) किसी का नहीं

उत्तर–(ग) चतुर्थी विभक्ति तथा एकवचन।

10. **'दधि' शब्द का पंचमी एकवचन में रूप होता है–**

(क) दधिनी (ख) दध्ना (ग) दध्नः (घ) दध्ने

उत्तर–(ग) दध्नः।

11. **'राज्ञि' पद 'राजन्' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है–**

(क) द्वितीया विभक्ति एकवचन का (ख) सप्तमी विभक्ति का एकवचन का

(ग) चतुर्थी विभक्ति द्विवचन (घ) किसी का नहीं

उत्तर–(ग) चतुर्थी विभक्ति द्विवचन।

12. **'भवत्' शब्द का 'सप्तमी' बहुवचन में रूप होता है–** (2019 DE, 20ZP)

(क) भवतः (ख) भवद्भयः (ग) भवत्सु (घ) भवद्भिः

उत्तर–(ग) भवत्सु।

13. **'हरेः' पद 'हरि' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?**

(क) प्रथमा विभक्ति एकवचन का (ख) सप्तमी विभक्ति एकवचन का

(ग) पञ्चमी विभक्ति एकवचन का(घ) द्वितीया विभक्ति बहुवचन का

उत्तर–(ग) पञ्चमी विभक्ति एकवचन का।

14. **'राज्ञि' पद 'राजन्' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?**

(क) द्वितीया विभक्ति एकवचन का (ख) सप्तमी विभक्ति एकवचन का

(ग) चतुर्थी विभक्ति एकवचन का (घ) किसी का नहीं

उत्तर–(ख) सप्तमी विभक्ति एकवचन का।

15. 'नद्यः' पद 'नदी' शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?

(क) प्रथमा एकवचन (ख) द्वितीया द्विवचन
(ग) प्रथमा बहुवचन (घ) तृतीया बहुवचन

उत्तर–(ग) प्रथमा बहुवचन।

16. 'इदम्' शब्द का षष्ठी बहुवचन में रूप होता है–

(क) इदमानाम् (ख) इदानाम् (ग) एनानाम् (घ) एषाम्

उत्तर–(घ) एषाम्।

17. 'भवत्' शब्द का सप्तमी बहुवचन में रूप होता है–

(क) भवतः (ख) भवद्भ्यः (ग) भवत्सु (घ) भवद्भिः

उत्तर–(ग) भवत्सु।

18. 'रमा' शब्द का षष्ठी एकवचन में रूप होता है–

(क) रमायै (ख) रमाः (ग) रमायाः (घ) रमायाम्

उत्तर–(ग) रमायाः।

19. 'त्वया' पद युष्मद्-शब्द के किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?

(क) प्रथमा विभक्ति तथा एकवचन (ख) पंचमी विभक्ति तथा बहुवचन
(ग) किसी का नहीं (घ) तृतीया विभक्ति तथा एकवचन

उत्तर–(घ) तृतीया विभक्ति तथा एकवचन।

20. 'सरित्' शब्द तृतीया विभक्ति एक वचन का रूप है–

(क) सरितः (ख) सरिता (ग) सरितम् (घ) सरिते

उत्तर–(ग) सरितम्।

21. भगवत्' शब्द का तृतीया विभक्ति बहुवचन में रूप होता है–

(क) भगवतैः (ख) भगवद्भिः (ग) भगवद्भ्याः (घ) भगवता

उत्तर–(ख) भगवद्भिः।

22. 'धमिताभ' पद किस शब्द के किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?

(क) 'धी' पद का द्वितीय विभक्ति, द्विवचन (ख) 'धी' पद का षष्ठी विभक्ति बहुवचन का
(ग) 'धीमत्' पद का षष्ठी विभक्ति, बहुवचन का (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर–(ख) 'धी' पद का षष्ठी विभक्ति बहुवचन का ।

23. निम्नलिखित में से सप्तमी विभक्त्यन्त पदों को पहचानें–

(क) शय्याम् (ख) मे (ग) पित्रे (घ) भुवि

उत्तर–(घ) भुवि।

24. 'नदीः' की सही विभक्ति एवं वचन का निर्देश करें–

(क) प्रथमा एकवचन (ख) द्वितीया एकवचन
(ग) द्वितीया बहुवचन (घ) तृतीया बहुवचन

उत्तर–(ग) द्वितीया बहुवचन।

25. 'राजन्' शब्द का सप्तमी विभक्ति एकवचन का रूप है–

(क) राज्ञे (ख) राज्ञि (ग) राजसु (घ) राज्ञोः

उत्तर–(ख) राज्ञि।

26. **'वारिणे' पद वारि शब्द के किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?**
(क) सप्तमी विभक्ति एकवचन (ख) षष्ठी विभक्ति एकवचन
(ग) चतुर्थी विभक्ति एकवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति एकवचन
उत्तर–(ग) चतुर्थी विभक्ति एकवचन।

27. **'हरिणा' पद हरि शब्द के किस विभक्ति और वचन का रूप है?** (2009 DV, DZ)
(क) प्रथमा विभक्ति तथा एकवचन(ख) द्वितीया विभक्ति तथा द्विवचन
(ग) तृतीया विभक्ति तथा एकवचन (घ) इसमें से किसी का नहीं
उत्तर–(ग) तृतीया विभक्ति तथा एकवचन।

28. **धेनु शब्द का चतुर्थी एकवचन में क्या रूप होता है?**
(क) धेनवः (ख) धेनुना (ग) धेनवे (घ) धेनोः
उत्तर–(ग) धेनवे।

29. **'रमासु' पद 'रमा' शब्द के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है?**
(क) प्रथमा विभक्ति एक वचन का (ख) सप्तमी विभक्ति बहुवचन का
(ग) तृतीया विभक्ति एक वचन का (घ) द्वितीया विभक्ति एक वचन का
उत्तर–(ख) सप्तमी विभक्ति बहुवचन का।

30. **'पितृ' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप होता है–**
(क) पिते (ख) पितरि (ग) पितरौ (घ) पितृषु
उत्तर – (ख) पितरि।

31. **पितृ शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है–**
अथवा **पितृ शब्द का षष्ठी बहुवचन में रूप होता है–** (2017 NJ)
(क) पितुः (ख) पितरि (ग) पितृणाम् (घ) पीतृणाम
उत्तर – (ग) पितृणाम्।

32. **'करिणे' पद 'करिन्' के किस विभक्ति और वचन का रूप है?**
(क) प्रथमा द्विवचन (ख) तृतीया एकवचन
(ग) चतुर्थी एकवचन (घ) पंचमी बहुवचन
उत्तर – (ग) चतुर्थी एकवचन।

33. **'भगवत्सु' पद किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?**
(क) भगवा शब्द प्रथमा बहुवचन (ख) भगवत् शब्द सप्तमी बहुवचन
(ग) भगवन् शब्द सप्तमी बहुवचन(घ) भगवत् शब्द सप्तमी एकवचन
उत्तर – (ख) भगवत् शब्द सप्तमी बहुवचन।

34. **युष्मद् शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप होता है–** (2019 DD)
(क) युष्मान् (ख) युष्माकम् (ग) तव (घ) युष्माणाम्
उत्तर – (ख) युष्माकम्।

35. **चन्द्रमसि पद चन्द्रमस् की किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?**
(क) प्रथमा विभक्ति द्विवचन (ख) तृतीया विभक्ति एकवचन
(ग) पञ्चमी विभक्ति बहुवचन (घ) सप्तमी विभक्ति एकवचन
उत्तर – (घ) सप्तमी विभक्ति एकवचन।

36. भवत् शब्द का चतुर्थी एक वचन में क्या रूप होता है?
(क) भवतः (ख) भवद्भिः (ग) भवते (घ) भवत्सु।
उत्तर – (ग) भवते।

37. 'एतद्' (पुँल्लिङ्ग) शब्द के पञ्चमी विभक्ति द्विवचन का रूप होगा–
(क) एते (ख) एतैः (ग) एताभ्याम् (घ) एनयोः
उत्तर – (घ) एनयोः।

38. 'वारि' शब्द का चतुर्थी एकवचन का रूप है–
(क) वारिण (ख) वारिणः (ग) वारिणे (घ) वारिणो
उत्तर – (ग) वारिणे।

39. 'मधुने' पद 'मधु' शब्द की किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?
(क) सप्तमी विभक्ति, एकवचन (ख) षष्ठी विभक्ति, एकवचन
(ग) चतुर्थी विभक्ति एकवचन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) चतुर्थी विभक्ति एकवचन।

40. 'करिन्' शब्द का तृतीया विभक्ति एकवचन का रूप है–
(क) करिण (ख) करिणा (ग) करिणेन (घ) करिणि
उत्तर – (घ) करिणि।

41. 'मनस्' शब्द के तृतीया विभक्ति एकवचन का रूप होता है–
(क) मनसा (ख) मनेन (ग) मनसेन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (क) मनसा।

42. 'रमाः' पद 'रमा' प्रातिपदिक के किस विभक्ति वचन का रूप होता है?
(क) द्वितीया विभक्ति, एकवचन (ख) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन
(ग) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन
उत्तर – (ख) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन।

43. 'गृह' प्रातिपदिक का तृतीया बहुवचन का रूप है–
(क) गृहम् (ख) गृहात् (ग) गृहैः (घ) गृहाणि
उत्तर – (ग) गृहैः।

44. 'सम्पत्' शब्द का षष्ठी विभक्ति, बहुवचन का रूप है–
(क) सम्पदम् (ख) सम्पदाम् (ग) सम्पदभ्याम् (घ) सम्पदः
उत्तर – (ख) सम्पदाम्।

45. 'वारि' प्रातिपदिक के सप्तमी विभक्ति एकवचन में रूप होगा–
(क) वारिणी (ख) वारिणि (ग) वारिणे (घ) वारिणः
उत्तर – (ख) वारिणि।

46. 'चन्द्रमाः' पद 'चन्द्रमस्' प्रातिपदिक के किस विभक्ति-वचन का रूप है?
(क) प्रथमा, बहुवचन (ख) तृतीया, बहुवचन (ग) प्रथमा, एकवचन (घ) चतुर्थी, एकवचन
उत्तर – (क) प्रथमा, बहुवचन।

47. 'नदी' शब्द के प्रथमा बहुवचन का रूप है–
(क) नदीनाम् (ख) नदीः (ग) नद्यः (घ) नदीभिः
उत्तर – (ग) नद्यः।

48. 'वाचा' पद वाच् शब्द की किस विभक्ति-वचन का रूप है?
(क) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (ख) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन
(ग) तृतीया विभक्ति, एकवचन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) तृतीया विभक्ति, एकवचन।

49. 'नदी' शब्द का सप्तमी विभक्ति, एकवचन का रूप है–

(क) नद्यै (ख) नद्याः (ग) नद्याम् (घ) नद्या

उत्तर – (ग) नद्याम्।

50. 'जगताम्' पद 'जगत्' शब्द की किस विभक्ति-वचन का रूप है?

(क) षष्ठी द्विवचन (ख) षष्ठी बहुवचन

(ग) सप्तमी एकवचन (घ) सप्तमी द्विवचन

उत्तर – (ख) षष्ठी बहुवचन।

51. 'पितृ' शब्द का चतुर्थी एकवचन में रूप है–

(क) पितरः (ख) पित्रा (ग) पितृभ्यः (घ) पित्रे

उत्तर – (घ) पित्रे।

52. 'मत्' में कौन-सी विभक्ति है?

(क) पञ्चमी (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) प्रथमा

उत्तर – (क) पञ्चमी।

53. 'रामस्य' पद 'राम' शब्द के किस विभक्ति-वचन का रूप है?

(क) तृतीया विभक्ति, एकवचन (ख) पञ्चमी विभक्ति, द्विवचन

(ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, द्विवचन

उत्तर – (ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन।

54. 'रमा' शब्द का चतुर्थी एकवचन में रूप होता है– (2010 CH, CI)

(क) रमया (ख) रमायै (ग) रमायाः (घ) रमायाम्

उत्तर – (ख) रमायै।

55. 'रामाय' पद 'राम' शब्द के किस विभक्ति-वचन का रूप है? (2010 CJ)

(क) द्वितीया, एकवचन (ख) तृतीया, द्विवचन

(ग) चतुर्थी, एकवचन (घ) पञ्चमी, द्विवचन

उत्तर – (ग) चतुर्थी, एकवचन।

56. 'हरि' शब्द का तृतीया एकवचन में रूप होता है– (2010 CJ)

(क) हरिः (ख) हरिम् (ग) हरिणा (घ) हरये

उत्तर – (ग) हरिणा।

57. 'रमा' शब्द का द्वितीया एकवचन में क्या रूप होता है?

(क) रमाम् (ख) रमया (ग) रमायै (घ) रमायाः

उत्तर – (क) रमाम्।

58. 'वारि' शब्द के तृतीया विभक्ति, एक वचन का रूप है– [2011 (IC)]

(क) वारिणे (ख) वारिणा (ग) वारिणः (घ) वारिणि

उत्तर– (ख) वारिणा।

59. 'गुरुणा' पद 'गुरु' प्रातिपदिक के किस विभक्ति व वचन का रूप है? [2011 (IC)]

(क) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन

(ग) पञ्चमी विभक्ति, एकचन (घ) षष्ठी विभक्ति, एकवचन

उत्तर– (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन।

60. 'हरये' पद 'हरि' शब्द के किस विभक्ति व वचन का रूप है? [2011 (IC, HX)]

(क) प्रथम विभक्ति, बहुवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन

(ग) तृतीया विभक्ति, एक वचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन

उत्तर– (घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

61. 'रमा' शब्द का षष्ठी विभक्ति बहुवचन का रूप है– [2011 (IC)]

(क) रमया (ख) रमायै (ग) रमाणाम् (घ) रमासु

उत्तर– (ग) रमाणाम्।

62. 'वारि' प्रातिपदिक के सप्तमी एकवचन का रूप है– [2011 (HZ)]

(क) वारीणि ख) वारिणः (ग) वारिणि (घ) वारिणे

उत्तर– (ग) वारिणि।

63. 'नाम्ना' पद 'नामन' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं किस वचन का रूप है? [2011 (HZ)]

(क) प्रथम एकवचन (ख) चतुर्थी एकवचन (ग) षष्ठी एकवचन (घ) तृतीया एकवचन

उत्तर– (घ) तृतीया एकवचन।

64. 'अस्मद्' शब्द के तृतीया एकवचन का रूप है– [2011 (HX), 13 (BL, BK), 20 (ZQ)]

(क) माम् (ख) मया (ग) मह्यम् (घ) मम

उत्तर– (ख) मया।

65. 'गुरवे' पद गुरु प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2011 (ID)]

(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन

(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, द्विवचन

उत्तर– (ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

66. 'कर्मणा' पद किस विभक्ति और वचन का रूप है? [2011 (ID)]

(क) प्रथमा विभक्ति, एकवचन (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन

(ग) सप्तमी विभक्ति, एकवचन (घ) तृतीया विभक्ति, बहुवचन

उत्तर– (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन।

67. 'हरये' पद 'हरि' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं किस वचन का रूप है? [2012 (HD)]

(क) प्रथमा, एकवचन (ख) चतुर्थी, एकवचन (ग) षष्ठी, एकवचन (घ) तृतीया, एकवचन

उत्तर– (ख) चतुर्थी, एकवचन।

68. 'युष्मद्' शब्द के तृतीया, एकवचन का रूप है– [2012 (HD), 14 CX]

(क) त्वाम् (ख) त्वया (ग) तुभ्यम् (घ) तव

उत्तर–(ख) त्वया।

69. 'विद्वांसः' पद प्रातिपादिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है– [2012 (HE)]

(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन

(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) तृतीया विभक्ति, बहुवचन

उत्तर–(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन।

70. 'कस्मै' पद किस विभक्ति और वचन का रूप है? [2012 (HE)]

(क) प्रथमा विभक्ति, एकवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, एकवचन

(ग) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

उत्तर–(घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

71. 'नद्याः' पद नदी प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2012 (HF)]

(क) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन (ख) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन

(ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति द्विवचन

उत्तर–(ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन

72. 'पित्रा' पद किस विभक्ति और वचन का रूप है? [2012 (HF)]

(क) प्रथमा विभक्ति, द्विवचन (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन

(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, एकवचन

उत्तर–(ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन।

73. 'हरीन्' पद 'हरि' शब्द की किस विभक्ति तथा वचन का रूप है? [2012 (HG)]

(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन

(ग) तृतीया विभक्ति, एकवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, द्विवचन

उत्तर–(ख) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन।

74. 'रमा' शब्द का चतुर्थी विभक्ति एकवचन का रूप है? [2012 (HG)]

(क) रमाम् (ख) रमया (ग) रमायै (घ) रमायाः

उत्तर– (ग) रमायै।

75. 'भगवत्' शब्द के सप्तमी, एकवचन का रूप है? [2012 (HH)]

(क) भगवते (ख) भगवति (ग) भगवतः (घ) भगवान्

उत्तर–(ख) भगवति।

76. सज्जनात् यह पद सज्जन शब्द के किस विभक्ति और किस वचन का रूप हैं? [2012 (HI)]

(क) प्रथमा, बहुवचन (ख) द्वितीया, बहुवचन (ग) पंचमी, बहुवचन (घ) चतुर्थी, बहुवचन

उत्तर–(ग) पंचमी, बहुवचन।

77. 'हरौ' हरि प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं किस वचन का रूप है? [2013 (BJ), 14 (CT, CX)]

(क) द्वितीया, एकवचन (ख) तृतीया, एकवचन (ग) सप्तमी, एकवचन (घ) पञ्चमी, एकवचन

उत्तर–(ग) सप्तमी, एकवचन।

78. 'पितृ' शब्द के सप्तमी एकवचन का रूप है– [2013 (BJ)]

(क) पितरम् (ख) पित्रा (ग) पितरि (घ) पित्रे

उत्तर–(ग) पितरि।

79. 'हरिभिः' पद 'हरि' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2013 (BL), 19 (DA)]

(क) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (ख) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन

(ग) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (घ) पंचमी विभक्ति, बहुवचन

उत्तर–(ग) तृतीया विभक्ति, बहुवचन।

80. 'रमायाम्' रमा प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं किस वचन का रूप है? [2013 (BK)]

(क) द्वितीया, एकवचन (ख) चतुर्थी, एकवचन (ग) षष्ठी, बहुवचन (घ) सप्तमी, एकवचन

उत्तर–(ग) सप्तमी, एकवचन।

81. 'पितरः' पद 'पितृ' शब्द के किस विभक्ति और किस वचन का रूप है? [2013 (BH)]

(क) प्रथमा विभक्ति, एकवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन

(ग) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (घ) तृतीया विभक्ति, एकवचन

उत्तर–(ग) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन।

82. 'रमायै' पद प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2013 (BM)]

(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन

(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) तृतीया विभक्ति, बहुवचन

उत्तर–(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

83. 'भवते' पद किस विभक्ति और वचन का रूप है?

(क) प्रथमा विभक्ति, एकवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, एकवचन

(ग) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन

उत्तर–(घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

84. 'भगवति' पद 'भगवद्' शब्द के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2013 (BN)]
(क) प्रथमा, द्विवचन (ख) सप्तमी, एकवचन (ग) चतुर्थी, एकवचन (घ) द्वितीया, बहुवचन
उत्तर–(ख) सप्तमी, एकवचन।

85. 'गुरु' शब्द का षष्ठी एकवचन में रूप होता है– [2013 (BN)]
(क) गुर्वः (ख) गुरोः (ग) गुरुस्य (घ) गुर्वीः
उत्तर–(ख) गुरोः।

86. 'वारिणोः' वारि प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है– [2014 (CS)]
(क) पञ्चमी, द्विवचन (ख) षष्ठी, द्विवचन (ग) प्रथमा, बहुवचन (घ) सप्तमी, एकवचन
उत्तर–(ख) षष्ठी, द्विवचन।

87. 'सर्व' शब्द चतुर्थी विभक्ति, एकवचन का रूप है– [2014 (CS)]
(क) सर्वाय (ख) सर्वस्यै (ग) सर्वा (घ) सर्वस्याम्
उत्तर–(ख) सर्वस्यै।

88. 'नमो भगवते वासुदेवाय' वाक्य में 'भगवते' पद किस विभक्ति, वचन का रूप है? [2014 (CT)]
(क) द्वितीया विभक्ति, एकवचन (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन
(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, एकवचन
उत्तर–(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

89. 'सर्वे' सर्व (पुल्लिङ्ग) प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं किस वचन का रूप है? [2014 (CU)]
(क) द्वितीया, द्विवचन (ख) सप्तमी, एकवचन (ग) प्रथमा, बहुवचन (घ) चतुर्थी, एकवचन
उत्तर–(घ) चतुर्थी, बहुवचन।

90. 'गृह' शब्द के द्वितीया, द्विवचन का रूप है– [2014 (CU)]
(क) गृहाणि (ख) गृहे (ग) गृहम् (घ) गृहाभ्याम्
उत्तर–(ख) गृहे।

91. 'पित्रे' पितृ प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं किस वचन का रूप है? [2014 (CV)]
(क) चतुर्थी, एकवचन (ख) सप्तमी, एकवचन (ग) तृतीया, बहुवचन (घ) पञ्चमी, द्विवचन
उत्तर–(क) चतुर्थी, एकवचन।

92. 'युष्मद्' शब्द के षष्ठी, एकवचन का रूप है– [2014 (CV)]
(क) त्वया (ख) तुभ्यम् (ग) तव (घ) युष्मास्द
उत्तर–(ग) तव।

93. 'पित्रा' पद 'पितृ' प्रातिपदिक के किस विभक्ति और किस वचन का रूप है?– [2014 (CW)]
(क) प्रथमा, एकवचन (ख) द्वितीया, एकवचन (ग) तृतीया, एकवचन (घ) चतुर्थी, एकवचन
उत्तर–(ग) तृतीया, एकवचन।

94. 'नदी' प्रातिपदिक के चतुर्थी, एकवचन का रूप होगा– [2014 (CW)]
(क) नद्याः (ख) नदीम् (ग) नद्यै (घ) नद्याम्
उत्तर–(ग) नद्यै।

95. 'नद्या' किस विभक्ति एवं वचन का रूप है– [2014 (CY)]
(क) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन
(ग) द्वितीया विभक्ति, एकवचन (घ) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन
उत्तर–(ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन।

96. 'राजनि' किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2014 (CY)]
(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन
(ग) पञ्चमी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, एकवचन
उत्तर–(घ) सप्तमी विभक्ति, एकवचन।

97. 'हरिभिः' पद 'हरि' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2015 (DU)]
(क) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, द्विवचन
(ग) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (घ) पंचम विभक्ति, बहुवचन
उत्तर–(ग) तृतीया विभक्ति, बहुवचन।

98. 'अस्मद्' शब्द के तृतीया एकवचन का रूप है? [2015 (DU)]
(क) माम् (ख) मह्यम् (ग) मया (घ) मयि
उत्तर–(ग) मया।

99. 'युष्मद्' प्रातिपदिक के तृतीया विभक्ति एकवचन का रूप है? [2015 (DT), 16 (TJ)]
(क) तुभ्यम् (ख) त्वत् (ग) त्वया (घ) त्वयि
उत्तर–(ग) त्वया।

100. 'हरये' पद किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2016 (TJ, TK)]
(क) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (ख) तृतीया विभक्ति, बहुवचन
(ग) षष्ठी विभक्ति, एकवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, द्विवचन
उत्तर–(क) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

101. 'नदी' शब्द के प्रथमा विभक्ति बहुवचन का रूप है? [2016 (TK)]
(क) नद्याः (ख) नदीः (ग) नद्यः (घ) नदी
उत्तर–(ग) नद्यः।

102. 'वाचे' पद 'वाच्' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2016 (TO)]
(क) तृतीया, द्विवचन (ख) चतुर्थी, एकवचन (ग) सप्तमी, एकवचन (घ) प्रथमा, द्विवचन
उत्तर–(ख) चतुर्थी, एकवचन।

103. 'भगवत्' प्रातिपदिक के चतुर्थी, एकवचन का रूप है? [2016 (TP)]
(क) भगवतः (ख) भगवते (ग) भगवन्तं (घ) भगवति
उत्तर–(ख) भगवते।

104. 'वधुषु' पद में 'वधु' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2016 (TP)]
(क) प्रथमा, एकवचन (ख) चतुर्थी, द्विवचन (ग) सप्तमी, बहुवचन (घ) षष्ठी, एकवचन
उत्तर–(ग) सप्तमी, बहुवचन।

105. निम्नलिखित में से सप्तमी विभक्त्यन्त पदों की पहचान कीजिए– [2017 (NJ)]
(क) शय्याम् (ख) में (ग) पित्रे (घ) भूवि
उत्तर–(घ) भूवि।

106. 'मनोभिः' मनस् प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2017 (NK)]
(क) चतुर्थी, बहुवचन (ख) तृतीया, बहुवचन
(ग) षष्ठी, बहुवचन (घ) सप्तमी, एकवचन
उत्तर–(ख) तृतीया, बहुवचन।

107. 'दध्नाम्' 'दधि' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2017 (NL)]
(क) सप्तमी, एकवचन (ख) षष्ठी, बहुवचन (ग) तृतीया, द्विवचन (घ) द्वितीया, एकवचन
उत्तर–(ख) षष्ठी, बहुवचन।

108. 'धनुषी' पद में कौन-सी विभक्ति एवं वचन है? [2017 (NM)]
(क) प्रथमा, एकवचन (ख) द्वितीया, द्विवचन
(ग) तृतीया, एकवचन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर–(ख) द्वितीया, द्विवचन।

109. 'वारिणि' पद में 'वारि' प्रातिपदिक के किस विभक्ति व वचन का रूप है? [2017 (NN)]
(क) तृतीया, एकवचन (ख) चतुर्थी, बहुवचन (ग) सप्तमी, एकवचन (घ) प्रथमा, एकवचन
उत्तर–(ग) सप्तमी, एकवचन।

110. 'मनसि' पद में 'मनस्' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2017 (NO), 19 (DB)]

(क) प्रथमा, एकवचन (ख) चतुर्थी, द्विवचन (ग) सप्तमी, एकवचन (घ) पञ्चमी, बहुवचन

उत्तर–(ग) सप्तमी, एकवचन।

111. 'वारिभ्यः' शब्द किस विभक्ति व वचन का रूप है? [2018 (BK)]

(क) प्रथमा, बहुवचन (ख) द्वितीया, बहुवचन (ग) तृतीया, बहुवचन (घ) चतुर्थी, बहुवचन

उत्तर–(घ) चतुर्थी, बहुवचन।

112. मनसा पद में मनस् प्रातिपदिक के किस विभक्ति और वचन का रूप है? [2019 (CZ)]

(क) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन

(ग) चतुर्थी विभक्ति, द्विवचन (घ) षष्ठी विभक्ति, बहुवचन

उत्तर– (ख) तृतीया विभक्ति, एकवचन।

113. 'नाम्नः' पद में 'नामन्' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2019 (DC)]

(क) प्रथमा विभक्ति, बहुवचन (ख) षष्ठी विभक्ति, एकवचन

(ग) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन (घ) द्वितीया विभक्ति, बहुवचन

उत्तर– (ख) षष्ठी विभक्ति, एकवचन।

114. 'भवत्' शब्द का षष्ठी, एकवचन का रूप होता है– [2019 (DD)]

(क) भवतः (ख) भवत्सु (ग) भवद्भ्यः (घ) भवद्भिः

उत्तर– (क) भवतः।

115. 'नामन्' प्रातिपदिक में चतुर्थी एकवचन में रूप होता है– [2019 (DF)]

(क) नाम्ना (ख) नाम्नः (ग) नाम्ने (घ) नामनि

उत्तर– (ग) नाम्ने।

116. किम् प्रातिपदिक में 'कस्मात्' किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? [2019 (DF)]

(क) तृतीया विभक्ति, एकवचन (ख) पंचमी विभक्ति, एकवचन (ग) सप्तमी विभक्ति, बहुवचन

उत्तर– (ख) पंचमी विभक्ति, एकवचन।

117. 'सर्व' नपुंसकलिङ्ग पञ्चमी, एक वचन का रूप है– [2020 (ZR)]

(क) सर्वात् (ख) सर्वस्य (ग) सर्वस्यात् (घ) सर्वेभ्यः

उत्तर– (ग) सर्वस्यात्।

118. 'जगता' किस विभक्ति व वचन का रूप है– [2020 (ZS)]

(क) प्रथमा विभक्ति, द्विवचन (ख) तृतया विभक्ति, एक वचन

(ग) पञ्चमी विभक्ति, बहुवचन (घ) सप्तमी विभक्ति, एक वचन

उत्तर– (ख) तृतया विभक्ति, एक वचन।

119. 'अस्यान्' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है– [2020 (ZT)]

(क) अस्यान् (ख)अस्याभिः (ग) अस्यभ्यम् (घ) अस्याकम्

उत्तर– (घ) अस्याकम्।

120. 'भवत्' शब्द का षष्ठी विभक्ति एक वचन का रूप होता है– [2020 (ZT)]

(क) भवतः (ख) भवते (ग) भवता (घ) भवति

उत्तर– (क) भवतः।

121. 'सर्वेषु' किस विभक्ति व वचन का रूप है? [2020 (ZU)]

(क) द्वितीया, बहुवचन (ख) चतुर्थी, एकवचन (ग) सप्तमी, बहुवचन (घ) पञ्चमी, एकवचन

उत्तर– (ग) सप्तमी, बहुवचन।

●●

6 धातु-रूप

(अंक-3)

आत्मनेपद

1. लभ् (प्राप्त करना, पाना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	लभते [2019 DB, DC, 20 ZR]	लभेते	लभन्ते [2020 ZQ]
म. पु.	लभसे [2019 DF]	लभेथे	लभध्वे [2017 NP]
उ. पु.	लभे [2011 IB]	लभावहे	लभामहे [2020 ZU]

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म. पु.	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ. पु.	लभै	लभावहै	लभामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अलभत्	अलभेथाम्	अलभन्त
म. पु.	अलभथाः	अलभेथम्	अलभध्वम्
उ. पु.	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	लभेत्	लभेयाताम्	लभेरन्
म. पु.	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ. पु.	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	लप्स्यते [2017 NK]	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म. पु.	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ. पु.	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

2. वृध् (बढ़ना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्र. पु.	वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते	
म. पु.	वर्धसे	वर्धेथे	वर्धध्वे	[2011 IB]
उ. पु.	वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे	

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्र. पु.	वर्धताम्	वर्धेताम्	वर्धन्ताम्	[2020 ZS]
म. पु.	वर्धस्व	वर्धेथाम्	वर्धध्वम्	
उ. पु.	वर्धे	वर्धावहै	वर्धामहै	

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्त
म. पु.	अवर्धथाः	अवर्धेथाम्	अवर्धध्वम्
उ. पु.	अवर्धे	अवर्धावहि	अवर्धामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
म. पु.	वर्धेथा	वर्धयाथाम्	वर्धेध्वम्
उ. पु.	वर्धेय	वर्धेवहि	वर्धेमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	वर्धिस्यते	वर्धिस्येते	वर्धिस्यन्ते
म. पु.	वर्धिस्यसे	वर्धिस्येथे	वर्धिस्यध्वे
उ. पु.	वर्धिस्ये	वर्धिस्यावहे	वर्धिस्यामहे

3. भाष् (स्पष्ट बोलना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	भाषते	भाषेते	भाषन्ते
म. पु.	भाषसे	भाषेथे	भाषध्वे
उ. पु.	भाषे	भाषावहे	भाषामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्र. पु.	भाषताम्	भाषेताम्	भाषन्ताम्	
म. पु.	भाषस्व	भाषेथाम्	भाषध्वम्	
उ. पु.	भाषै	भाषावहै	भाषामहै	[2018 BN]

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अभाषत	अभाषेताम्	अभाषन्त
म. पु.	अभाषथाः	अभाषेथाम्	अभाषध्वम्
उ. पु.	अभाषे	अभाषावहि	अभाषामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	भाषेत	भाषेयाताम्	भाषेरन्
म. पु.	भाषेथाः	भाषेयाथाम्	भाषेध्वम्
उ. पु.	भाषेय	भाषेवहि	भाषेमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्र. पु.	भाषिष्यते	भाषिष्येते	भाषिष्यन्ते	[2018 BK]
म. पु.	भाषिष्यसे	भाषिष्येथे	भाषिष्यध्वे	
उ. पु.	भाषिष्ये	भाषिष्यावहे	भाषिष्यामहे	

4. शी (सोना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	शेते	शयाते	शेरते
म. पु.	शेषे	शयाथे	शेध्वे
उ. पु.	शये	शेवहे	शेमहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	शेताम्	शयाताम्	शेरताम्
म. पु.	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
उ. पु.	शयै	शयावहे	शयामहे

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अशेत	अशेयाताम्	अशेरत
म. पु.	अशेथाः	अशेयाथाम्	अशेध्वम्
उ. पु.	अशेयि	अशेवहि	अशेमहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
म. पु.	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
उ. पु.	शयीय	शयीवहि	शयीमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
म. पु.	शयिष्यसे	शयिष्येथे	शयिष्यध्वे
उ. पु.	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

5. विद् (जानना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	विद्यते	विद्येते	विद्यन्ते
म. पु.	विद्यसे	विद्येथे	विद्यध्वे
उ. पु.	विद्ये	विद्यावहे	विद्यामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	विद्यताम्	विद्येताम्	विद्यन्ताम्
म. पु.	विद्यस्व	विद्येथाम्	विद्यध्वम्
उ. पु.	विद्यै	विद्यावहै	विद्यामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अविद्यत	अविद्येताम्	अविद्यन्त
म. पु.	अविद्यथाः	अविद्येथाम्	अविद्यध्वम्
उ. पु.	अविद्ये	अविद्यावहि	अविद्यामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	विद्यते	विद्येयाताम्	विद्येरन्
म. पु.	विद्येथाः	विद्येयाथाम्	विद्येध्वम्
उ. पु.	विद्येय	विद्येवहि	विद्येमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	वेत्स्यते	वेत्स्येते	वेत्स्यन्ते
म. पु.	वेत्स्यसे	वेत्स्येथे	वेत्स्यध्वे
उ. पु.	वेत्स्ये	वेत्स्यावहे	वेत्स्यामहे

6. सेव् (सेवा करना)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
म. पु.	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उ. पु.	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम् [2019 CZ]
म. पु.	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उ. पु.	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	असेवेत	असेवेताम्	असेवन्त
म. पु.	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उ. पु.	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	सेवेत	सेवायाताम्	सेवेरन्
म. पु.	सेवेथाः	सेवयाथाम्	सेवेध्वम्
उ. पु.	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते

म. पु.	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उ. पु.	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

उभयपदी धातु रूप

1. नी (नय्) ले जाना (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नयति	नयतः	नयन्ति
म. पु.	नयसि	नयथः	नयथ
उ. पु.	नयामि [2019 DA, 20 ZP]	नयावः	नयामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नयतु, नयतात् (2010 CK)	नयताम्	नयन्तु
म. पु.	नय, नयतात्	नयतम्	नयत
उ. पु.	नयानि	नयाव	नयाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अनयत्	अनयताम्	अनयनत्
म. पु.	अनयः	अनयतम्	अनयत
उ. पु.	अनयम्	अनयाव	अनयाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नयेत्	नयेताम्	नयेयुः
म. पु.	नयेः	नयेतम्	नयेत
उ. पु.	नयेयम्	नयेव	नयेम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति
म. पु.	नेष्यसि	नेष्यथः [2011 IB]	नेष्यथ
उ. पु.	नेष्यामि [2020 ZO]	नेष्यावः	नेष्यामः

नी = (नय्) ले जाना (आत्मनेपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नयते	नयेते	नयन्ते

म. पु.	नयसे	नयेथे	नयध्वे
उ. पु.	नये	नयावहे	नयामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
म. पु.	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
उ. पु.	नयै	नयावहै	नयामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
म. पु.	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
उ. पु.	अनयि	अनयावहि	अनयामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
म. पु.	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
उ. पु.	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
म. पु.	नेष्यसे	नेष्येथे	नेष्यध्वे
उ. पु.	नेष्ये	नेष्यावहे	नेष्यामहे

2. याच् (माँगना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	याचति	याचतः [2020 ZU]	याचन्ति
म. पु.	याचसि	याचथः	याचथ
उ. पु.	याचामि	याचावः	याचामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	याचतु	याचताम्	याचन्तु
म. पु.	याच	याचतम्	याचत
उ. पु.	याचानि	याचाव	याचाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अयाचत्	अयाचेताम्	अयाचन्
म. पु.	अयाचः	अयाचतम्	अयाचत्
उ. पु.	अयाचम् [2017 NN]	अयाचाव	अयाचाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	याचेत्	याचेताम्	याचेयुः
म. पु.	याचेः	याचेतम्	याचेत
उ. पु.	याचेयम्	याचेव	याचेम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	याचिष्यति	याचिष्यतः	याचिष्यन्ति
म. पु.	याचिष्यसि	याचिष्यथः	याचिष्यथ
उ. पु.	याचिष्यामि	याचिष्यावः	याचिष्यामः

याच् = माँगना (आत्मनेपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	याचते	याचेते [2020 ZU]	याचन्ते
म. पु.	याचसे	याचेथे	याचध्वे
उ. पु.	याचे	याचावहे	याचामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
म. पु.	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
उ. पु.	याचै	याचावहै	याचामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अयाचत्	अयाचेताम्	अयाचन्त
म. पु.	अयाचथाः	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
उ. पु.	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	याचेत	याचेताताम्	याचेरन्
म. पु.	याचेथाः	याचेयाथाम्	याचेध्वम्
उ. पु.	याचेय	याचेवहि	याचेमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
म. पु.	याचिष्यसे	याचिष्येथे	याचिष्यध्वे
उ. पु.	याचिष्ये	याचिष्यावहे	याचिष्यामहे

3. दा (दान देना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ददाति	दत्तः	ददति
म. पु.	ददासि	दत्थः	दत्थ
उ. पु.	ददामि [2017 NO]	दद्वः	दद्मः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
प्र. पु.	ददातु, दत्तात्	दत्ताम्	ददतु	
म. पु.	देहि, दत्तात्	दत्तम्	दत्त	[2014 CS]
उ. पु.	ददानि	ददाव	ददाम	

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अददात्	अदत्ताम्	अददुः
म. पु.	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ. पु.	अददाम्	अदद्व	अदद्म

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
म. पु.	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात्
उ. पु.	दद्याम्	दद्याव	दद्याम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म. पु.	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ. पु.	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः

आत्मनेपद

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दत्ते	ददाते	ददते
म. पु.	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
उ. पु.	ददे	दद्वहे	दद्दहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
म. पु.	दत्स्व	ददाथाम्	ददध्वम्
उ. पु.	ददै	ददावहै	ददामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अदत्त	अददाताम्	अददत
म. पु.	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
उ. पु.	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
म. पु.	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
उ. पु.	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
म. पु.	दास्यसे	दास्येथे	दास्यध्वे
उ. पु.	दास्ये	दास्यावहे	दास्यामहे

4. ग्रह् (ग्रहण करना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
म. पु.	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उ. पु.	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गृह्णातु, गृहतात्	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
म. पु.	गृहाण, गृहतात्	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उ. पु.	गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
म. पु.	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उ. पु.	अगृह्णाम	अगृह्णीव	अगृह्णीम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गृह्णीयात्	गृह्णीयातात्	गृह्णीयुः
म. पु.	गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात
उ. पु.	गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति
म. पु.	ग्रहीष्यसि	ग्रहीष्यथः	ग्रहीष्यथ
उ. पु.	ग्रहीष्यामि	ग्रहीष्यावः	ग्रहीष्यामः

आत्मनेपद (लट् लकार)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णन्ते
म. पु.	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णध्वे
उ. पु.	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गृह्णीताम्	गृह्णताम्	गृह्णताम्
म. पु.	गृह्णीष्व	गृह्णथाम्	गृह्णीध्वम्
उ. पु.	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत
म. पु.	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
उ. पु.	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
म. पु.	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
उ. पु.	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते
म. पु.	ग्रहीष्यसे	ग्रहीष्येथे	ग्रहीष्यध्वे
उ. पु.	ग्रहीष्ये	ग्रहीष्यावहे	ग्रहीष्यामहे

5. ज्ञा (जानना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	जानाति	जानीतः	जानन्ति
म. पु.	जानासि	जानीथः	जानीथ
उ. पु.	जानामि	जानीवः	जानीमः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	जानातु, जानीतात्	जानीताम्	जानन्तु
म. पु.	जानीहि, जानीतात्	जानीतम्	जानीत
उ. पु.	जानानि	जानाव	जानाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अजानात्	अजानीताम्	अजानन्

म. पु.	अजानाः	अजानीतम्	अजानीत
उ. पु.	अजानम्	अजानीव	अजानीम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः
म. पु.	जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात
उ. पु.	जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति
म. पु.	ज्ञास्यसि	ज्ञास्यथः	ज्ञास्यथ
उ. पु.	ज्ञास्यामि	ज्ञास्यावः	ज्ञास्यामः

आत्मनेपद

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	जानीते	जानाते	जानन्ते
म. पु.	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे
उ. पु.	जाने	जानीवहे	जानीमहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्
म. पु.	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
उ. पु.	जानै	जानावहै	जानामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अजानीत्	अजानीताम्	अजानत
म. पु.	अजानीथाः	अजानीथाम्	अजानीध्वम्
उ. पु.	अजानिं	अजानीवहिं	अजानीमहिं

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्

म. पु.	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
उ. पु.	जानीय	जानीवहि	जानीमहि

लृट् लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र. पु.	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते
म. पु.	ज्ञास्यसे	ज्ञास्येथे	ज्ञास्यध्वे
उ. पु.	ज्ञास्ये	ज्ञास्यावहे	ज्ञास्यामहे

6. चुर् (चुराना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र. पु.	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
म. पु.	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उ. पु.	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लोट् लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र. पु.	चोरयतु, चोरयतात्	चोरयताम्	चोरयन्तु
म. पु.	चोरय, चोरयतात्	चोरयतम्	चोरयत
उ. पु.	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

लङ् लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र. पु.	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
म. पु.	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उ. पु.	अचोरयाम्	अचोरयाव	अचोरयाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र. पु.	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
म. पु.	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उ. पु.	चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम

लृट् लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र. पु.	चोरंयिष्यति	चोरंयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
म. पु.	चोरंयिष्यसि	चोरंयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उ. पु.	चोरंयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

आत्मनेपद

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
म. पु.	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
उ. पु.	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
म. पु.	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
उ. पु.	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त
म. पु.	अचोरयथाः	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
उ. पु.	अचोरये	अचोरयावहि	आचोरयामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	चोरयेता	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्
म. पु.	चोरयेथाः	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
उ. पु.	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
म. पु.	चोरयिष्येसे	चोरयिष्येथे	चोरयिष्वध्वे
उ. पु.	चोरयिष्ये	चोरयिष्यावहे	चोरयिष्यामहे

7. श्रि (सेवा करना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	श्रयति	श्रयतः	श्रयन्ति
म. पु.	श्रयसि	श्रयथः	श्रयथ
उ. पु.	श्रयामि	श्रयावः	श्रयामः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	श्रयतु, श्रयतात्	श्रयताम्	श्रयन्तु
म. पु.	श्रय, श्रयतात्	श्रयतम्	श्रयत
उ. पु.	श्रयाणि	श्रयाव	श्रयाम

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अश्रयत्	अश्रयताम्	अश्रयन्
म. पु.	अश्रयः [2017 NL]	अश्रयतम्	अश्रयत
उ. पु.	अश्रयम्	अश्रयाव	अश्रयाम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	श्रयेत्	श्रयेताम्	श्रयेयुः
म. पु.	श्रयेः	श्रयेतम्	श्रयेत
उ. पु.	श्रयेयम्	श्रयेव	श्रयेम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	श्रयिष्यति	श्रयिष्यतः	श्रयिष्यन्ति
म. पु.	श्रयिष्यसि	श्रयिष्यथः	श्रयिष्यथ
उ. पु.	श्रयिष्यामि	श्रयिष्यावः	श्रयिष्यामः

आत्मनेपद

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	श्रयते	श्रयेते	श्रयन्ते
म. पु.	श्रयसे	श्रयेथे	श्रयध्वे
उ. पु.	श्रये	श्रयावहे	श्रयामहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	श्रयताम्	श्रयेताम्	श्रयन्ताम्
म. पु.	श्रयस्व	श्रयेथाम्	श्रयध्वम्
उ. पु.	श्रयै	श्रयावहै	श्रयामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अश्रयत	अश्रयेताम्	अश्रयन्त
म. पु.	अश्रयथाः	अश्रयेथाम्	अश्रयध्वम्
उ. पु.	अश्रये	अश्रयावहि	अश्रयामहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	श्रयेत	श्रयेयाताम्	श्रयेरन्
म. पु.	श्रयेथाः	श्रयेयाथाम्	श्रयेध्वम्
उ. पु.	श्रयेय	श्रयेवहि	श्रयेमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	श्रयिष्यते	श्रयिष्येते	श्रयिष्यन्ते
म. पु.	श्रंयिष्यसे	श्रयिष्येथे	श्रंयिष्यध्वे
उ. पु.	श्रयिष्ये	श्रयिष्यावहे	श्रयिष्यामहे

8. क्री (मोल लेना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
म. पु.	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
उ. पु.	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	क्रीणातु, क्रीणीतात्	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु
म. पु.	क्रीणीहि, क्रीणीतात्	क्रीणीतम्	क्रीणीत
उ. पु.	क्रीणानि	क्रीणीव	क्रीणीम्

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अक्रीणात्	अक्रीणीयाताम्	अक्रीणन्
म. पु.	अक्रीणाः	अक्रीणीयातम्	अक्रीणीत
उ. पु.	अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	क्रीणीयात् [2017 NM]	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः
म. पु.	क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात
उ. पु.	क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	क्रेष्यंति	क्रेष्यतः	क्रेष्यंन्ति
म. पु.	क्रेष्यसि	क्रेष्यथः	क्रेष्यथ
उ. पु.	क्रेष्यामि	क्रेष्यावः	क्रेष्यामः

आत्मनेपद

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
म. पु.	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
उ. पु.	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
म. पु.	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ. पु.	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अक्रीणीत	अक्रीणीताम्	अक्रीणत
म. पु.	अक्रीणीथाः	अक्रीणीथाम्	अक्रीणीध्वम्
उ. पु.	अक्रींणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
म. पु.	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
उ. पु.	क्रीणीथ	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
म. पु.	क्रेष्यसे	क्रेष्येथे	क्रेष्यध्वे
उ. पु.	क्रेष्ये	क्रेष्यावहे	क्रेष्यामहे

9. धा (धारण, पोषण करना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दधाति	धत्तः	दधति
म. पु.	दधासि	धत्थः	धत्थ
उ. पु.	दधामि	दध्वः	दध्मः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दधातु, धत्तात्	धत्ताम्	दधतु
म. पु.	धेहि, धत्तात्	धत्राम्	धत्त
उ. पु.	दधानि	दधाव	दधाम्

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः
म. पु.	अदधाः	अधत्तम्	अधत्त
उ. पु.	अदधम्	अदध्व	अदध्म

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दध्यातु	दध्याताम्	दध्युः
म. पु.	दध्याः	दध्यातम्	दध्यात
उ. पु.	दध्याम्	दध्याव	दध्याम

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	धास्यति	धास्यतः	धास्यन्ति
म. पु.	धास्यसि	धास्यथः	धास्यथ
उ. पु.	धास्यामि	धास्यावः	धास्यामः

आत्मनेपद

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	धत्ते	दधाते	दधते
म. पु.	धत्से	दधाथे	दद्ध्वे
उ. पु.	दधे	दध्वहे	दध्महे

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	धत्ताम्	दधात्ताम्	दधताम्
म. पु.	धत्स्व	दधाथाम्	दधध्वम्
उ. पु.	दधै	दधावहै	दधामहै

लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	अधत्त	अदधाताम्	अदधत
म. पु.	अधत्थाः	अदधाथाम्	अदधध्वम्
उ. पु.	अदधि	अदध्वहि	अदध्महि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्
म. पु.	दधीथाः	दधीयाथाम्	दधीध्वम्
उ. पु.	दधीय	दधीवहि	दधीमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	धास्यते	धास्येते	धास्यन्ते
म. पु.	धास्यसे	धास्येथे	धास्यध्वे
उ. पु.	धास्ये	धास्यावहे	धास्यामहे

10. कृ (करना) (परस्मैपद)

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म. पु.	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ. पु.	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	करोतु, कुरुतात्	कुरुताम्	कुर्वन्तु

म. पु.	कुरु, कुरुतात्	कुरुतम्	कुरुत
उ. पु.	करवाणि	करवाव	करवाम

लङ् लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र. पु.	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म. पु.	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ. पु.	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

विधिलिङ् लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र. पु.	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
म. पु.	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उ. पु.	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लृट् लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र. पु.	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
म. पु.	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उ. पु.	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

आत्मनेपद

लट् लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र. पु.	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
म. पु.	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
उ. पु.	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे

लोट् लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र. पु.	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
म. पु.	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
उ. पु.	करवै	करवावहै	करवामहै

लङ् लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्र. पु.	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
म. पु.	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
उ. पु.	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि

विधिलिङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
म. पु.	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
उ. पु.	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि

लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र. पु.	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
म. पु.	करिष्यसे	करिष्येथे	करिष्यध्वे
उ. पु.	करिष्ये	करिष्यावहे	करिष्यामहे

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'स्था' धातु लोट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन का रूप होता है–
(क) तिष्ठत (ख) तिष्ठतम् (ग) अतिष्ठताम् (घ) तिष्ठताम्
उत्तर – (क) तिष्ठत।

2. 'भू' धातु का लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का रूप होता है– (2017 NJ)
(क) भवतु (ख) भवतम् (ग) भव (घ) भवाव
उत्तर – (ग) भव।

3. 'सेव्' धातु लङ्लकार, प्रथम पुरुष के एकवचन में रूप होता है–
(क) असेवेत (ख) असेवत (ग) असेवताम् (घ) असेवतः
उत्तर – (क) असेवेत।

4. 'भू' धातु का लङ्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन में रूप होता है–
(क) भवति (ख) भवतु (ग) भविष्यते (घ) अभवत्
उत्तर – (घ) अभवत्।

5. 'पा' धातु का लट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन में रूप होता है–
(क) पासि (ख) पाहि (ग) पिबसि (घ) पास्यसि
उत्तर – (ग) पिबसि।

6. 'बिभ्यति' में मूल धातु एवं लकार है–
(क) भी लट् (ख) भी, लृट् (ग) बिभ, लट् (घ) विम्य, लट्
उत्तर – (ग) बिभ, लट्।

7. 'लभेत्' रूप 'लभ्' धातु के किस वचन-पुरुष में होता है?
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) विधिलिङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन (घ) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ख) विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

8. 'हस्' धातु का लङ् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन में रूप होता है–
(क) अहसतम् (ख) अहसत (ग) अहसत् (घ) हसेत्
उत्तर – (क) अहसतम्।

9. 'गच्छेयम्' गम् धातु का रूप होता है–
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) विधिलिङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन (घ) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ग) विधिलिङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन।

10. 'भू' धातु लोट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन का रूप है—
(क) भवत (ख) भवथ (ग) भवतः (घ) भवता
उत्तर — (क) भवत।

11. 'गम्' धातु का लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन में रूप होता है—
(क) गच्छति (ख) गच्छतु (ग) गमिष्यति (घ) गच्छेत्
उत्तर — (ग) गमिष्यति।

12. 'दास्यति' 'दा' धातु का रूप है— (2014 CW)
अथवा 'दास्यति' 'दा' धातु के किस पुरुष तथा किस वचन का रूप है— (2017 NJ)
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का (ख) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन का
(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का (घ) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का
उत्तर — (घ) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का।

13. 'प्रच्छ' धातु के लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन में रूप होता है—
(क) पृच्छताम् (ख) प्रक्ष्यथः (ग) पृच्छतम् (घ) पृच्छेतम्
उत्तर — (ग) पृच्छतम्।

14. किसी एक धातु के लोट् लकार के मध्यम पुरुष के तीनों वचनों में रूप लिखिए—
(क) पठ् = पठ पठतम् पठत (ख) भू = भव भवतम् भवत
(ग) गम् = गच्छ गच्छतम् गच्छत

15. 'पास्यसि' में पा धातु के किस लकार, पुरुष, वचन का रूप होता है— (2011 IA)
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का (ख) लट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का
(ग) लृट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का (घ) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का
उत्तर — (ग) लृट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन का।

16. 'पा' धातु के लङ्लकार, मध्यम पुरुष, एक वचन में रूप होगा— (2010 CJ)
(क) पिबन्ति (ख) पिबताम् (ग) अपिबः (घ) पास्यति
उत्तर — (ग) अपिबः।

17. 'दृश्' धातु के लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एक वचन का रूप होगा— (2010 CJ)
(क) पश्यति (ख) अपश्यताम् (ग) पश्यन्तु (घ) द्रक्ष्यति
उत्तर — (घ) द्रक्ष्यति।

18. 'दृश्' धातु के लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन में रूप होता है— [2011 (HZ)]
(क) दृक्ष्यति (ख) द्रक्ष्यति (ग) द्रक्ष्यामि (घ) द्रक्ष्यथ
उत्तर— (ग) द्रक्ष्यामि।

19. 'द्रक्ष्यति' रूप 'दृश्' धातु के किस लकार, वचन एवं पुरुष का है? [2011 (IA)]
(क) लट् ल0, प्र0पु0, एकवचन (ख) लृट् ल0, प्र0पु0, एकवचन
(ग) लोट् ल., प्र.पु., एकवचन
उत्तर— (ख) लृट् ल., प्र.पु., एकवचन।

20. 'द्रक्ष्यामि' दृश् धातु का रूप है— [2011 (ID)]
(क) लट् लकार, उ. पु., एकवचन (ख) लट् लकार, उ.पु., बहुवचन
(ग) लृट् लकार, उ. पु., एकवचन (घ) लृट् लकार, उ.पु., बहुवचन
उत्तर— (ग) लृट् लकार, उ. पु., एकवचन।

21. 'गम्' धातु का लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन में रूप होता है— [2011 (IC)]
(क) अगच्छन् (ख) अगमिष्यन् (ग) अगमन् (घ) अगच्छतम्
उत्तर— (क) अगच्छन्।

22. 'पठताम्' रूप 'पठ्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन में होता है? [2011 (IC)]
(क) लट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन (ख) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन

(ग) विधिलिङ्ग लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन (घ) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन
उत्तर– (ख) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन।

23. 'पास्यति' रूप 'पा' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का है? [2011 (IA)]
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
(ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर– (ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

24. 'पा' धातु का लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन में रूप होता है– [2011 (HX)]
(क) पिबताम् (ख) पिबतम् (ग) पिबाव (घ) पिबेतम्
उत्तर– (ख) पिबतम्।

25. 'द्रक्ष्यति' रूप 'दृश्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन में होता है? [2012 (HD)]
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लोट् लकार, प्र0 पुरुष, एकवचन
(ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लङ् लकार प्र0 पुरुष, एकवचन
उत्तर–(ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

26. 'स्था' धातु का लोट् लकार, म0 पुरुष, द्विवचन में रूप होता है– [2012 (HD)]
(क) तिष्ठाम् (ख) तिष्ठतम् (ग) तिष्ठाव (घ) तिष्ठेतम्
उत्तर–(ख) तिष्ठतम्।

27. 'पठिष्यति' पठ् धातु का रूप है– [2012 (HE)]
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन
(ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन
उत्तर–(क) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

28. 'अपिबः' 'पा' धातु का रूप है– [2012 (HF)]
(क) लट् लकार, म. पुरुष, एकवचन (ख) लङ् लकार, म. पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, प्र. पुरुष, द्विवचन (घ) लृट् लकार, उ. पुरुष, बहुवचन
उत्तर–(ख) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।

29. 'पास्यामि' रूप 'पा' धातु के किस लकार, पुरुष तथा वचन का है? [2012 (HG), 20 (ZT)]
(क) लट् लकार, प्र. पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, प्र. पुरुष, द्विवचन (घ) लङ् लकार, म. पुरुष, बहुवचन
उत्तर–(ख) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन।

30. 'अगच्छम्' रूप गम् धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का है? [2012 (HG)]
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, म0 पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, प्र0 पुरुष, बहुवचन (घ) लङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर–(घ) लङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन।

31. 'दा' धातु का लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप है– [2012 (HH)]
(क) दास्यति (ख) ददाति (ग) ददाष्यति (घ) दाता
उत्तर–(क) दास्यति।

32. 'द्रक्ष्यामि' दृश् धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? [2012 (HJ)]
(क) लोट् लकार, म0 पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, उ0 पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, म0 पुरुष, एकवचन।
उत्तर–(ख) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन।

33. 'अपठत्' पद 'पठ्' धातु के किस लकार, पुरुष और वचन का है? [2012 (HI)]
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लङ् लकार, प्र0 पुरुष, एकवचन

(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) इनमें से कोई नही

उत्तर–(ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

34. 'गम्' धातु लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन का रूप होता है– [2012 (HI)]

(क) गच्छति (ख) गच्छन्ति (ग) अगच्छत् (घ) गच्छेत्

उत्तर–(ख) गच्छन्ति

35. 'गच्छताम्' 'गम्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? [2013 (BJ)]

(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन

(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन (घ) लङ् लकार, उत्तम पुरुष, द्विवचन

उत्तर–(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन।

36. 'शी' धातु के लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन का रूप है– [2013 (BJ)]

(क) शेते (ख) शयाते (ग) शेरते (घ) शयाथे

उत्तर–(ग) शेरते।

37. 'दृश्' धातु के लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन में रूप होता है– [2013 (BL)]

(क) पश्यताम् (ख) पश्यतम् (ग) पश्यत (घ) पश्यतः

उत्तर–(ख) पश्यतम्।

38. 'भवेयुः' 'भू' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? [2013 (BK)]

(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन

उत्तर–(घ) विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

39. 'लभ्' धातु लट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन का रूप है– [2013 (BK), 19 (DE)]

(क) लभते (ख) लभेते (ग) लभसे (घ) लभेथे

उत्तर–(ख) लभेते।

40. 'ददति' में 'दा' धातु का किस लकार, पुरुष व वचन का रूप होता है? [2013 (BM)]

(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन

(ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लोट लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

उत्तर–(ख) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

41. 'पठ्' धातु का लङ्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन में रूप होता है– [2013 (BM)]

(क) पठति (ख) पठतु (ग) अपठत् (घ) पठेत्

उत्तर–(ग) अपठत्।

42. 'भवते' पद किस विभक्ति और वचन का रूप है? [2013 (BO)]

(क) प्रथमा विभक्ति, एकवचन (ख) द्वितीया विभक्ति, एकवचन

(ग) तृतीया विभक्ति, एकवचन (घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन

उत्तर–(घ) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन।

43. 'अतिष्ठत्' स्था धातु का रूप है– [2013 (BN)]

(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

उत्तर–(ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

44. 'गम्' धातु का विधिलिङ्, प्रथम पुरुष, एकवचन में रूप है– [2013 (BN)]

(क) गमेत् (ख) गच्छेत (ग) गमेत (घ) गच्छति

उत्तर–(ख) गच्छेत्।

45. 'अनयन्' नी धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2014 CS)

(क) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन

(ग) लिङ् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन (घ) लोट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन

उत्तर – (ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

46. 'दा' धातु लोट् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन का रूप है– (2014 CS)

(क) दत्त (ख) ददात् (ग) दद्युः (घ) ददतु

उत्तर – (क) दत्त।

47. 'स्थास्यति' स्था धातु का रूप है– (2014 CT)

(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

(ग) लिट् लकार, अन्य पुरुष, एकवचन (घ) लुङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

उत्तर – (ख) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

48. 'पिबन्तु' 'पा' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2014 CU)

(क) विधिलिङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन (ख) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन

(ग) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, द्विवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन

उत्तर – (ख) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

49. 'अगच्छन्' 'गम्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2014 CV)

(क) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (ख) विधिलिङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन

(ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, द्विवचन

उत्तर – (ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

50. 'नी' धातु लट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन का रूप है– (2014 CV)

(क) नेष्यतः (ख) नयतः (ग) नेष्यथः (घ) नेयताम्

उत्तर – (ख) नयतः।

51. 'अपश्यः' रूप 'दृश्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2014 CX)

(क) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन

(ग) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन

उत्तर – (ख) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।

52. 'गम्' धातु के लङ् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन में रूप होता है– (2014 CX, 16 TJ)

(क) अगच्छः (ख) अगच्छत् (ग) अगच्छम् (घ) अगच्छाम्

उत्तर – (ग) अगच्छम्।

53. 'ज्ञास्यति' 'ज्ञा' धातु का रूप है– (2014 CY, 15 DU)

(क) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

उत्तर – (क) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

54. 'अपठः' पठ् धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2015 DT)

(क) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन

(ग) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन (घ) लङ्लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन

उत्तर – (घ) लङ्लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।

55. 'दृश्' धातु लट्लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन का रूप है– (2015 DT)

(क) अपश्यन् (ख) पश्येयुः (ग) पश्यन्तु (घ) पश्यन्ति

उत्तर – (घ) पश्यन्ति।

56. 'अपश्यः' रूप 'दृश्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2016 TJ)

(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन

(ग) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन

उत्तर – (ख) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।

57. 'आसन्' अस् धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2016 TK)
(क) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (ख) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन (घ) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन
उत्तर – (घ) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन।

58. 'लभ्' धातु लृट्लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन का रूप है– (2016 TK)
(क) लप्स्येथे (ख) लप्स्यध्वे (ग) लभध्वे (घ) लपस्यते
उत्तर – (ख) लप्स्यध्वे।

59. 'भव' 'भू' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2016 TO)
(क) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
(ग) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लङ् लकार, मध्यम पुरुष, बहुवचन
उत्तर – (क) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन।

60. 'स्था' धातु के लट्लकार के उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप है– (2016 TO)
(क) स्थाति (ख) स्थानि (ग) स्थामि (घ) तिष्ठामि
उत्तर – (घ) तिष्ठामि।

61. 'हसथः' रूप 'हस्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2016 TP)
(क) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन
(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) विधिलिङ्, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ख) लट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन।

62. 'कृ' धातु लट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन का रूप होगा– (2017 NJ, 19 DD)
(क) करोति (ख) कुरुतः (ग) करोषि
उत्तर – (ख) कुरुतः।

63. 'ददानि' रूप 'दा' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप होता है? (2017 NK)
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (ख) लङ् लकार, उत्तम पुरुष, बहुवचन
(ग) लोट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन (घ) विधिलिङ्, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ग) लोट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन।

64. 'दधति' रूप 'धा' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन में होता है? (2017 NL)
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (घ) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
उत्तर – (घ) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

65. 'शी' धातु के लट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप होगा– (2017 NM)
(क) शेषे (ख) शेते (ग) शेरते (घ) शये
उत्तर – (घ) शये।

66. 'वर्धते' रूप 'वृध्' धातु के किस लकार एवं पुरुष व वचन का है? (2017 NN)
(क) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
(ग) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (घ) विधिलिङ्, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ख) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

67. 'याचन्तु' रूप 'याच्' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2017 NO)
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
(ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
उत्तर – (घ) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

68. 'अनयत्' रूप 'नी' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन का होता है? (2017 NP)
(क) विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लोट् लकार, मध्यम पुरुष, द्विवचन

(ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (घ) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन
उत्तर – (ग) लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

69. 'द्रक्ष्यामि' रूप किस लकार, पुरुष एवं वचन का रूप है? (2018 BK)
(क) लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लृट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
(ग) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन (घ) इनमें से कोई नहीं
उत्तर – (ग) लृट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन।

70. 'ददति' रूप 'दा' धातु के किस लकार, पुरुष एवं वचन में होता है? (2018 BN)
(क) लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन (ख) लट् लकार, मध्यम पुरुष, एकवचन
(ग) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन (घ) लृट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन
उत्तर – (ग) लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

71. ''याच्'' धातु के विधिलिङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप होगा– (2019 CZ)
(क) याचताम् (ख) याचेत् (ग) याचतु (घ) याचाम
उत्तर – (ख) याचेत्।

72. 'ग्रह्' धातु लट्लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन का रूप है– (2019 DA)
(क) गृह्णीतः (ख) गृह्णीयः (ग) गृह्णीवः (घ) गृह्णीथ
उत्तर – (क) गृह्णीतः।

73. 'वृध्' धातु लोट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप होगा– (2019 DB)
(क) वधे (ख) वधेव (ग) अवधे (घ) वर्धै
उत्तर – (घ) वर्धै।

74. 'नी' धातु के परस्मैपद लोट् लकार, उत्तम पुरुष, एकवचन का रूप होगा– (2019 DC)
(क) नयामि (ख) नयानि (ग) नयाम (घ) नयतु
उत्तर – (ख) नयानि।

75. ''ग्रह्'' (ग्रहण करना) धातु के लोट् लकार, बहुवचन में रूप होता है– (2019 DF)
(क) गृहाण (ख) गृह्णन्तु (ग) गृह्णानि
उत्तर – (ख) गृह्णन्तु।

76. 'नी' धातु, लृट् लकार, उत्तम पुरुष एक वचन होगा– (2020 ZO)
(क) नेष्यति (ख) नेष्यसि (ग) नेस्यामि (घ) नयामि
उत्तर – (ग) नेस्यामि।

77. 'ग्रह' धातु, लृट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन का रूप है– (2020 ZP)
(क) ग्रह्णीतः (ख) ग्रह्णीयः (ग) ग्रहणीवः (घ) ग्रहणीय
उत्तर – (क) ग्रह्णीतः।

78. 'नी' धातु परस्यैपद में लोट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन का रूप होता है– (2020 ZQ)
(क) नयताम् (ख) नयतम् (ग) नयत (घ) नयाव
उत्तर – (क) नयताम्।

79. 'दा' धातु परस्यैपदी, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन का रूप है– (2020 ZR)
(क) ददन्ति (ख) ददति (ग) ददामः (घ) दत्तः
उत्तर – (ख) ददति।

80. 'दा' धातु लृट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन का रूप होगा– (2020 ZS)
(क) ददाताम् () अदद्ध्वम् (ग) ददीमहि (घ) दास्यते
उत्तर – (घ) दास्यते।

81. 'कृ' धातु लोट्लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन का रूप होता है– (2020 ZT)
(क) करोतु (ख) कुर्वन्ति (ग) करिष्यन्ति (घ) कुर्वन्तु
उत्तर – (घ) कुर्वन्तु।

●●

7 प्रत्यय

(अंक-2)

जो वर्ण या समूह किसी धातु या शब्द के अन्त में जुड़कर नये अर्थ की प्रतीति कराते हैं तथा शब्द की विश्वसनीयता में वृद्धि करते हैं, उसे प्रत्यय कहते हैं। प्रत्यय दो प्रकार के हैं– कृदन्त प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय।

1. कृदन्त प्रत्यय — जो प्रत्यय क्रिया या धातु के अन्त में प्रयुक्त होकर नये शब्द बनाते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं और उनके मेल से बने शब्द कृदन्त कहलाते हैं।

2. तद्धित प्रत्यय — संज्ञा और विशेषण के अन्त में लगनेवाले प्रत्यय तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं और बने हुए शब्दों को 'तद्धितान्त' कहते हैं।

नोट – पाठ्यक्रम में निर्धारित प्रत्यय नीचे दिये जा रहे हैं।

(1) ल्युट् प्रत्यय–'नपुंसके भावे क्तः ल्युट् च' अर्थात् भाववाचक अर्थ में ल्युट् प्रत्यय लगता है। इसका रूप नपुंसकलिङ्ग में ही बनता है। यह भूतकालिक 'क्त' प्रत्यय का विकल्प है। ल्युट् का 'यु' शेष रहता है तथा 'यु' का (युवोरनाकौ सूत्र से) 'अन' हो जाता है। यथा—

दा	+	ल्युट्	=	दानम्	लिख	+	ल्युट्	=	लेखनम्
अर्च	+	ल्युट्	=	अर्चनम्	ग्रह्	+	ल्युट्	=	ग्रहणम्
कथ्	+	ल्युट्	=	कथनम्	नम्	+	ल्युट्	=	नयनम्
पठ्	+	ल्युट्	=	पठनम्	अधि	+	ल्युट्	=	अध्ययनम्
ज्ञा	+	ल्युट्	=	ज्ञानम्	गम्	+	ल्युट्	=	गमनम्
याच्	+	ल्युट्	=	याचनम्	भू	+	ल्युट्	=	भवनम्
कृ	+	ल्युट्	=	करणम् (2018 BK)	दृश्	+	ल्युट्	=	दर्शनम्
नी	+	ल्युट्	=	नयनम् (2013 BM)	हन्	+	ल्युट्	=	हननम्

(2) णमुल् प्रत्यय — "आभीक्ष्ण्ये णमुल् च। नित्यवीप्सयोः।" अर्थात् यदि किसी क्रिया का बार-बार लगातार (आभीक्ष्ण्य) अर्थ में प्रयोग करना होता है तो वहाँ णमुल् प्रत्यय जोड़ा जाता है। इसका प्रयोग पूर्वकालिक क्रियावाचक धातु से अर्थात् क्त्वा के अतिरिक्त होता है। 'णमुल्' में अम् शेष रहता है। यह दो बार प्रयुक्त होता है और अव्यय रूप होने के कारण इसके रूप नहीं चलते। इसकी धातु के आदि 'अ' को 'आ' तथा अन्य स्वर को गुण हो जाता है। यथा—

तड्	+	णमुल्	=	ताडं ताडम्	भिद्	+	णमुल्	=	भेदं भेदम्

यदि धातु आकारान्त है तो णमुल् प्रत्यय के जुड़ने पर मध्य में य् जुड़ जाता है। यथा —

दा	+	णमुल्	=	दायं दायम्	पा	+	णमुल्	=	पायं पायम्
गम्	+	णमुल्	=	गामं गामम्	पच्	+	णमुल्	=	पाचं पाचम्
वृ	+	णमुल्	=	वारं वारम्	दृश्	+	णमुल्	=	दर्शं दर्शम्
छिद्	+	णमुल्	=	छेदं छेदम्	नश्	+	णमुल्	=	नाशं नाशम्
नम्	+	णमुल्	=	नामं नामम्	भिद्	+	णमुल्	=	भेदं भेदम्
पठ्	+	णमुल्	=	पाठं पाठम्	लभ्	+	णमुल्	=	लाभं लाभम्
रुद्	+	णमुल्	=	रोदं रोदम्	ग्रह	+	णमुल्	=	ग्राहं ग्राहम्

(3) तव्यत् अनीयर् प्रत्यय — तव्यत् में से 'तव्य' तथा अनीयर् में से 'अनीय' शेष रहता है। इनका प्रयोग साधारणतः विधिलिङ्ग लकार चाहिए अर्थ में होता है। यथा —

कथ्	+	अनीयर्	=	कथनीयम्	पठ्	+	अनीयर्	=	पठनीय

भू	+	अनीयर् =	भवनीयम्		पा	+	अनीयर्	=	पानीयम्
दृश्	+	अनीयर् =	दर्शनीय		कृ	+	अनीयर्	=	करणीयम् (2020 ZS)
गम्	+	अनीयर् =	गमनीय		हस्	+	अनीयर्	=	हसनीयम्
रम्	+	अनीयर् =	रमणीयम्		घ्रा	+	अनीयर्	=	घ्राणीयम् (2018 BK)

तव्यत् प्रत्यय के कुछ उदाहरण—

कृ	+	तव्यत्	=	कर्त्तव्यः					
गम्	+	तव्यत्	=	गन्तव्यः	दृश्	+	तव्यत्	=	द्रष्टव्यः
पच्	+	तव्यत्	=	पक्तव्यम्	पृच्छ्	+	तव्यत्	=	प्रष्टव्यः

(4) टाप् प्रत्यय — **'अजाद्यतष्टाप्'** = यह स्त्री प्रत्यय है जिसके प्रयोग से पुंल्लिङ्ग शब्द स्त्रीलिङ्ग शब्द बन जाते हैं। टाप् प्रत्यय अजादिगण के शब्दों तथा अकारान्त शब्दों के साथ प्रयोग किया जाता है। इस प्रत्यय से बने हुए शब्दों के रूप रमा की भाँति चलते हैं। टाप् प्रत्यय में 'आ' शेष रहता है। अतः टाप् प्रत्ययान्त शब्द आकारान्त कहलाते हैं। यथा —

क्षत्रिय	+	टाप्	=	क्षत्रिया	सुनयन	+	टाप्	=	सुनयना (2020 ZU)
चटक	+	टाप्	=	चटका	बाल	+	टाप्	=	बाला
अश्व	+	टाप्	=	अश्वा	अचल	+	टाप्	=	अचला
अनुकूल	+	टाप्	=	अनुकूला	कुशल	+	टाप्	=	कुशला

टाप् प्रत्यय जोड़ते समय यदि शब्द के अन्त में 'क' हो और 'क' से पूर्व 'अ'हो तो 'अ' के स्थान पर 'इ' हो जाता है। यथा—
कारक के 'क' से पूर्व र में अ होने से अ का इ होने पर 'कारिका' रूप बनेगा। यथा —

नाटक	+	प्रत्ययस्थात्कारत्पूर्वस्या इदाप्यसुथः सूत्र	+	टाप्	=	नाटिका
बालक	+	प्रत्ययस्थात्कारत्पूर्वस्या इदाप्यसुथः सूत्र	+	टाप्	=	बालिका
अध्यापक	+	प्रत्ययस्थात्कारत्पूर्वस्या इदाप्यसुथः सूत्र	+	टाप्	=	अध्यापिका
गायक	+	प्रत्ययस्थात्कारत्पूर्वस्या इदाप्यसुथः सूत्र	+	टाप्	=	गायिका

(5) ङीष् प्रत्यय — **'षिद् गौरादिभ्यश्च'** अर्थात् जिनमें 'ष' लुप्त हुआ है, ऐसा प्रत्यय जुड़कर बने हुए शब्दों से तथा गौरादिगण के शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए ङीष् प्रत्यय का प्रयोग होता है। इसका 'ई' शेष रहता है। जिन शब्दों के अन्त में 'य' है, किन्तु उससे पूर्व स्वर रहित व्यंजन भी हैं तो अन्त के 'य' का लोप हो जाता है। पहले से ही स्त्रीलिङ्ग शब्दों में ङीष् प्रत्यय नहीं लगता है। इस प्रत्यय से युक्त शब्दों के रूप 'नदी' की तरह चलते हैं। यथा —

नर्तक	+	ङीष्	=	नर्तकी	गौर	+	ङीष् (ई)	=	गौरी
मातामह	+	ङीष्	=	मातामही	नट	+	ङीष् (ई)	=	नटी
तट	+	ङीष्	=	तटी	चन्द्रमुख	+	ङीष् (ई)	=	चन्द्रमुखी
मनुष्य	+	ङीष्	=	मनुषी	शिखण्ड	+	ङीष् (ई)	=	शिखण्डी
शूद्र	+	ङीष्	=	शूद्री					

(6) क्त्वा प्रत्यय– जब दो क्रियाओं का एक ही कर्ता होता है तब जो क्रिया पूरी हो चुकी होती है उसे बताने के लिए धातु के साथ 'क्त्वा' (त्वा) प्रत्यय जोड़ देते हैं। 'क्त्वा' का 'त्वा' शेष रहता है। 'क्त्वा' प्रत्ययान्त शब्द अव्यय होता है।
यथा—अहं पुस्तकं पठित्वा तत्र गमिष्यामि। बालकाः कार्यं कृत्वा एव तत्र आगच्छन्ति।

भू	+	क्त्वा	=	भूत्वा	कृ	+	क्त्वा	=	कृत्वा
पठ्	+	क्त्वा	=	पठित्वा	जि	+	क्त्वा	=	जित्वा
गम्	+	क्त्वा	=	गत्वा	श्रु	+	क्त्वा	=	श्रुत्वा
पा	+	क्त्वा	=	पीत्वा	नी	+	क्त्वा	=	नीत्वा
स्था	+	क्त्वा	=	स्थित्वा (2018 BN)	खाद	+	क्त्वा	=	खादित्वा
दृश्	+	क्त्वा	=	दृष्ट्वा	त्यज्	+	क्त्वा	=	त्यक्त्वा
दा	+	क्त्वा	=	दत्त्वा	कथ्	+	क्त्वा	=	कथयित्वा

लभ् + क्त्वा = लब्ध्वा

(7) तुमुन् प्रत्यय– यह प्रत्यय, चतुर्थी विभक्ति के स्थान पर 'के लिए' के निमित्त के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इस प्रत्यय का तुम शेष रहता है। यह अव्यय होता है, अतः इसके रूप नहीं चलते हैं।

ध्यातव्य बातें–(i) तुमुन् प्रत्यय का प्रयोग वहीं होता है जहाँ दोनों क्रियाओं का कर्ता एक ही होता है; यथा–अहं पठितुम् इच्छामि। किम् अहं गन्तुं शक्नोमि?

(ii) जहाँ दोनों क्रिया के कर्ता भिन्न होते हैं वहाँ तुमुन् नहीं होता है।

भू + तुमुन् = भवितुम्
पठ् + तुमुन् = पठितुम्
गम् + तुमुन् = गन्तुम्
पा + तुमुन् = पातुम्
स्था + तुमुन् = स्थातुम्
दृश् + तुमुन् = द्रष्टुम्
दा + तुमुन् = दातुम्
लभ् + तुमुन् = लब्धुम्
ज्ञा + तुमुन् = ज्ञातुम्
हन् + तुमुन् = हन्तुम्
कृ + तुमुन् = कर्तुम्
जि + तुमुन् = जेतुम्
श्रु + तुमुन् = श्रोतुम्
पृच्छ + तुमुन् = प्रष्टुम्
त्यज् + तुमुन् = त्यक्तुम्

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'दानीय' पद में धातु और प्रत्यय है– (2010 CH, 17 NJ)

(क) दा + नीय (ख) दा + तुमुन् (ग) दा + क्त (घ) दा + अनीयर्

उत्तर – (घ) दा + अनीयर्।

2. 'दृश्' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय का योग करने पर बनता है– (2020 ZR)

(क) दर्शितुम् (ख) पश्यतुम् (ग) दृष्टुम् (घ) दृष्टम्

उत्तर – (ग) दृष्टुम्।

3. 'गन्तव्यम्' शब्द में धातु और प्रत्यय है–

(क) गी + तुमुन् (ख) गृ + अनीयर (ग) गम् + तव्यत् (घ) गृह + शानच्

उत्तर – (ग) गम् + तव्यत्।

4. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प शुद्ध नहीं है?

(क) कृ + तव्यत् (ख) गृह + तुमुन् (ग) पश्य + तल् (घ) दा + यत्

उत्तर – (ग) पश्य + तल्।

5. 'नेतुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय है–

(क) ने + तुमुन् (ख) नी + तुमुन् (ग) नै + तुमुन् (घ) नय् + तुमुन्

उत्तर – (ख) नी + तुमुन्।

6. 'पठनीयम्' पद में धातु और प्रत्यय है–

(क) पठ् + अनीयर् (ख) पठ् + तुमुन् (ग) पठ + शतृ (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर – (क) पठ् + अनीयर्।

7. 'स्था' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर बनता है– (2020 ZU)

(क) स्थाक्त्वा (ख) स्थित्वा (ग) तिष्ठित्वा (घ) स्थात्वा

उत्तर – (ख) स्थित्वा।

8. 'दृष्टिः' पद में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय है–

(क) दृश् + क्तिन् (ख) दृष् + टि (ग) दृश् + ति (घ) दृष् + क्तिन्

उत्तर – (क) दिश् + क्तिन्।

9. 'गन्तुम्' पद में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है– (2010 CJ, CK, 19 DB)

(क) गम् + तुमन् (ख) गन् + तुम् (ग) गम् + तुम् (घ) गन् + तुमुन्

उत्तर – (क) गम् + तुमन्।

10. 'गमनम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है– (2011 IC, 17 NJ)

(क) गम् + ल्युट् (ख) गम् + युच् (ग) गम् + अन् (घ) गम् + शानच्

उत्तर – (क) गम् + ल्युट्।

11. 'शी' धातु में ल्युट् प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा–

(क) शयनम् (ख) शेनम् (ग) शील्युट् (घ) शील्यु

उत्तर – (क) शयनम्।

12. 'द्रष्टुम्' में प्रकृति-प्रत्यय है–

(क) दृश् + शतृ (ख) दृश + शानच् (ग) दृश् + तुमुन् (घ) दृश् + क्त्वा

उत्तर – (ग) दृश् + तुमुन्।

13. 'पा' धातु में 'शतृ' प्रत्यय का योग करने पर बनता है–

'पा' धातु में 'शतृ' प्रत्यय प्रयुक्त होने पर बनता है– (2017 NJ)

(क) पातुम् (ख) पीत्वा (ग) पिबन् (घ) पीतम्

उत्तर – (ग) पिबन्।

14. 'पठितुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है–

(क) पठ् + त्वा (ख) पठ् + क्त (ग) पठ् + तुमुन् (घ) पठ् + ल्यप्

उत्तर – (ग) पठ् + तुमुन्।

15. 'नी' धातु में ल्युट् प्रत्यय लगाने पर रूप होता है–

(क) नयनम् (ख) नयन् (ग) नयमानः (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर – (क) नयनम्।

16. 'गच्छन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है–

(क) गम् + शतृ (ख) गच्छ + शानच् (ग) गच्छ् + शतृ (घ) गम् + क्त्वा

उत्तर – (क) गम् + शतृ।

17. 'भू' धातु में 'तुमुन्' 'प्रत्यय' करने पर रूप होता है– (2016 TK)

(क) भूतम् (ख) भवतुम् (ग) भवितुम् (घ) भवन

उत्तर – (ग) भवितुम्।

18. 'कृ + शतृ' का उचित कृदन्त रूप है–

(क) कर्ता (ख) कुर्वन् (ग) कर्तृ (घ) कृतम्

उत्तर – (ख) कुर्वन्।

19. 'गमनम्' का प्रकृति-प्रत्यय है–

(क) गम् + अन् (ख) गम् + शानच् (ग) गम् + ल्युट् (घ) गा + ल्युट्

उत्तर – (ग) गम् + ल्युट्।

20. 'पठित्वा' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है–

(क) पठ् + क्त (ख) पठ् + शतृ (ग) पठ् + क्त्वा (घ) पठ् + क्तवतु

उत्तर – (ग) पठ् + क्त्वा।

21. 'पठ्' धातु में तुमुन् प्रत्यय के प्रयोग करने पर होता है– (2011 IA)

(क) पठतुम् (ख) पठितुम् (ग) पाठतुम् (घ) पाठितुम्

उत्तर – (ख) पठितुम्।

22. 'गन्तुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय है– (2016 TO)

(क) गम् + क्त (ख) गम् + क्त्वा (ग) गम् + तुमुन् (घ) गम् + क्तवतु

उत्तर – (ग) गम् + तुमुन्।

23. 'गम्' धातु में क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग करने पर होता है–

(क) गतः (ख) गतवान् (ग) गत्वा (घ) गमित्वा

उत्तर – (ग) गत्वा।

24. 'पठन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति (धातु) एवं प्रत्यय है– (20 11 HX)

(क) पठ् + क्त्वा (ख) पठ् + शतृ (ग) पठ् + तुमुन् (घ) पठ् + ल्यप्

उत्तर – (ख) पठ् + शतृ।

25. 'लभ्' धातु में क्त्वा प्रत्यय का रूप होगा–

(क) लभित्वा (ख) लब्ध्वा (ग) लाभित्वा (घ) इनमें से कोई भी नहीं

उत्तर – (ख) लब्ध्वा।

26. 'पा' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर क्या रूप बनेगा? (2010 CJ, 11 HX)

(क) पीतम् (ख) पीतः (ग) पीत्वा (घ) पातुम्

उत्तर – (ग) पीत्वा।

27. 'दा' धातु में अनीयर् प्रत्यय लगने पर रूप होता है– (2010 CK)

(क) दानीयः (ख) दयनीयम् (ग) दातुम् (घ) दातव्यम्

उत्तर – (क) दानीयः।

28. 'भू' धातु में तुमुन् प्रत्यय करने पर रूप होता है– (2010 CI)

(क) भूतम् (ख) भवतुम् (ग) भवितुम्

उत्तर – (ग) भवितुम्।

29. 'ददत्' पद में प्रयुक्त प्रकृति और प्रत्यय हैं– (2011 HZ)

(क) दा + शतृ (ख) दा + तव्यत् (ग) दा + अनीयर् (घ) दा + क्त्वा

उत्तर– (क) दा + शतृ।

30. 'गम्' धातु में शतृ प्रत्यय लगने पर रूप होगा– (2011 IA)

(क) गन्तुम् (ख) गमयितुम् (ग) गच्छन् (घ) गमितः

उत्तर– (ग) गच्छन्।

31. 'भुज्' धातु में 'क्त' प्रत्यय लगने पर रूप बनेगा– (2011 ID)

(क) भुक्त्वा (ख) भुक्तवान् (ग) भुक्तम् (घ) भोक्ता

उत्तर– (ग) भुक्तम्।

32. 'लब्धुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है– (2011 ID)

(क) लभ् + क्त (ख) लभ् + क्त्वा (ग) लभ् + तुमुन् (घ) लभ् + क्तवतु

उत्तर– (ग) लभ् + तुमुन्।

33. 'गच्छन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है– (2012 HD, 15 DT)

(क) गम् + शतृ (ख) गम् + शानच् (ग) गम् + तुमुन् (घ) गम् + ण्मुल्

उत्तर– (क) गम् + शतृ।

34. 'धा' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगाने पर रूप होता है– (2012 HD, 19 DA, 20 ZQ)

(क) धात्वा (ख) हित्वा (ग) धूत्वा (घ) धोत्वा

उत्तर– (क) धात्वा।

35. 'गन्तुम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है– (2012 HE)
(क) गम् + क्त (ख) गम् + क्त्वा (ग) गम् + तुमुन् (घ) गम् + क्तवतु
उत्तर– (ग) गम् + तुमुन्।

36. 'हस्' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर रूप होता है– (2012 HE)
(क) हसितवान् (ख) हसितुम् (ग) हसितम् (घ) हसित्वा
उत्तर– (घ) हसित्वा।

37. 'पठनीयम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है– (2012 HF, 19 DF)
(क) पठ् + क्तवतु (ख) पठ् + क्त्वा (ग) पठ् + अनीयर् (घ) पठ् + ल्यप्
उत्तर– (ग) पठ् + अनीयर्।

38. 'पठ्' धातु में 'शतृ' प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा– (2012 HF)
(क) पठिता (ख) पठन् (ग) पठित (घ) पठित्वा
उत्तर– (ख) पठन्।

39. 'भू' धातु में तुमुन् प्रत्यय लगाने पर रूप होगा– (2012 HG)
(क) भूतुम् (ख) भूतम् (ग) भवतुम् (घ) भवितुम्
उत्तर– (घ) भवितुम्।

40. 'पठ्' धातु में 'शतृ' प्रत्यय लगाने पर रूप होगा– (2012 HG, 17 NN)
(क) पठत् (ख) पठन् (ग) पठितुम् (घ) पठितः
उत्तर– (ख) पठन्।

41. 'ज्ञानम्' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय एवं प्रकृति है– (2012 HH)
'ज्ञानम्' पद में प्रकृति एवं प्रत्यय है– (2017 NN)
(क) ज्ञा + शतृ (ख) ज्ञा + ल्युट् (ग) ज्ञा + अनीयर् (घ) ज्ञा + क्त
उत्तर– (ख) ज्ञा + ल्युट्।

42. 'पानीयम्' पद में धातु और प्रत्यय है– (2012 HI)
(क) पा + अनीयर् (ख) पा + शतृ (ग) पा + शानच् (घ) पा + ल्यप्
उत्तर– (क) पा + अनीयर्।

43. 'पठ्' धातु में 'शतृ' प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा– (2013 BJ, 15 DU)
(क) पठितः (ख) पठन् (ग) पठित्वा (घ) पठिता
उत्तर– (ख) पठन्।

44. 'गायन्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय हैं– (2013 BL)
(क) गै + शतृ (ख) गै + शानच् (ग) गै + तुमुन् (घ) गै + यत्
उत्तर– (क) गै + शतृ।

45. 'रुद्' धातु से 'ल्युट्' प्रत्यय करने पर रूप होता है– (2013 BL)
(क) रुदनम् (ख) रोदनम् (ग) रोचनम् (घ) रोधनम्
उत्तर– (ख) रोदनम्।

46. 'पातुम्' पद में प्रकृति-प्रत्यय है– (2013 BK)
(क) पा + क्तिन् (ख) पा + तुमुन् (ग) पा + ल्युप् (घ) पा + त्क्वा
उत्तर– (ख) पा + तुमुन्।

47. 'ज्ञा' धातु में (त्त्वा) प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा– (2013 BO)
(क) ज्ञातुम् (ख) ज्ञात्वा (ग) ज्ञातम् (घ) ज्ञेयम्
उत्तर– (ख) ज्ञात्वा।

48. 'ज्ञा' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय के योग से रूप बनेगा– (2013 BN)

(क) ज्ञातम् (ख) ज्ञातुम् (ग) ज्ञानितुम् (घ) ज्ञातुमुन्

उत्तर– (ख) ज्ञातुम्।

49. 'द्रष्टुं' पद में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है– (2013 BN)

(क) दृश् + क्त (ख) दृश् + त्त्वा (ग) दृश् + तुमुन् (घ) दृश् + क्तवतु

उत्तर– (ग) दृश् + तुमुन्।

50. 'लभमानः' में प्रकृति प्रत्यय है– (2014 CS)

(क) लभ् + शतृ (ख) लभ् + शानच् (ग) लभ् + क्त्वा (घ) लभ् + अनीयर्

उत्तर– (ख) लभ् + शानच्।

51. 'ची + अनीयर्' में रूप बनता है– (2014 CS, 19 DD)

(क) चयनीयः (ख) चेयम् (ग) चयनम् (घ) चेयः

उत्तर– (क) चयनीयः।

52. 'गायन' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय है– (2014 CT)

(क) गै + शतृ (ख) गै + शानच् (ग) गै + यत् (घ) गै + क्तः

उत्तर– (क) गै + शतृ।

53. 'ज्ञा' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर रूप बनेगा– (2014 CT)

(क) ज्ञातुम् (ख) ज्ञातम् (ग) ज्ञात्वा (घ) ज्ञेयम्

उत्तर– (ग) ज्ञात्वा।

54. 'पठित्वा' पद में प्रकृति प्रत्यय है– (2014 CU)

(क) पठ् + क्तिन् (ख) पठ् + क्त्वा (ग) पठ् + क्त (घ) पठ् + ल्युट्

उत्तर– (ख) पठ् + क्त्वा।

55. 'नी' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय लगने पर रूप बनेगा– (2014 CU)

(क) नयनम् (ख) नीतिः (ग) नीतम् (घ) नेतुम्

उत्तर– (घ) नेतुम्।

56. 'पठन्' शब्द में प्रकृति-प्रत्यय है– (2014 CV)

(क) पठ् + ल्युट् (ख) पठ् + शतृ (ग) पठ् + अनीयर् (घ) पठ् + क्तिन्

उत्तर– (ख) पठ् + शतृ।

57. 'पा' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय लगने पर रूप बनेगा– (2014 CV, 17 NO)

(क) पानम् (ख) पीत्वा (ग) पातुम् (घ) पिबन्

उत्तर– (ग) पातुम्।

58. 'पठन्' पद में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है– (2014 CW)

(क) पठ् + शतृ (ख) पठ् + शानच् (ग) पठ् + तव्यत् (घ) पठ् + त्त्वा

उत्तर– (क) पठ् + शतृ।

59. 'दा' धातु में 'तुमुन्' प्रत्यय लगने पर रूप होगा– (2014 CW, 16 TJ)

(क) ददत् (ख) दत्त्वा (ग) दातुम् (घ) देयत्

उत्तर– (ग) दातुम्।

60. 'लभमानः' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है– (2014 CX)

(क) लभ् + यत् (ख) लभ् + शतृ (ग) लभ् + शानच् (घ) लभ् + तुमुन्

उत्तर– (ग) लभ् + शानच्।

61. 'पठ्' धातु में तुमुन् प्रत्यय लगने पर रूप होता है— (2014 CX)

(क) पाठयित्वा (ख) पठनम् (ग) पठितुम् (घ) पठन्

उत्तर— (ग) पठितुम्।

62. 'गङ्गा' शब्द में प्रकृति-प्रत्यय है— (2014 CY, 15 DU)

(क) गङ्गा + अप् (ख) गङ्गा + प् (ग) गङ्ग + टाप् (घ) गङ्ग + अप्

उत्तर— (ग) गङ्ग + टाप्।

63. 'पठ्' धातु में 'शतृ' लगने पर रूप बनेगा— (2014 CY)

(क) पठमानः (ख) पठन् (ग) पठित्वा (घ) पठितुम्

उत्तर— (ख) पठन्।

64. 'पठ्' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर रूप बनेगा— (2015 DT)

(क) पठितुम् (ख) पठन् (ग) पठित्वा (घ) पठनीयम्

उत्तर— (ग) पठित्वा।

65. 'गायन' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है— (2016 TJ)

(क) गै + शतृ (ख) गै + शानच् (ग) गै + यत् (घ) गै + क्तः

उत्तर— (क) गै + शतृ।

66. 'वर्धमानम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति-प्रत्यय है— (2016 TK)

(क) वर्ध + शानच् (ख) वृध् + शानच् (ग) वध् + मानम् (घ) वर्धमान् + तुमुन्

उत्तर— (ख) वृध् + शानच्।

67. 'दृश्' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगने पर बनेगा— (2016 TO)

(क) पश्य (ख) दृष्ट्वा (ग) दृश्ट्वा (घ) दृश्ट्बा

उत्तर— (ख) दृष्ट्वा।

68. 'कृतवती' पद में प्रकृति-प्रत्यय है— (2016 TP)

(क) कृ + शतृ (ख) कृ + क्तवतु (ग) कृ + ल्युट् (घ) कृ + क्तिन्

उत्तर— (क) कृ + शतृ।

69. 'लिख्' धातु में 'अनीयर्' प्रत्यय लगने पर रूप बनेगा— (2016 TP)

(क) लिखन् (ख) लिखितुं (ग) लेखनीयम् (घ) लिखित्वा

उत्तर— (ग) लेखनीयम्।

70. 'याचनम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है— (2017 NK)

(क) याच् + णमुल् (ख) याच् + ल्युट् (ग) याच् + अनीयर् (घ) याच् + ङीष्

उत्तर— (ख) याच् + ल्युट्।

71. 'दृश्' धातु में अनीयर् प्रत्यय लगने पर रूप होगा— (2017 NK)

(क) दर्शनीयम् (ख) दर्शनम् (ग) दृष्टी (घ) दर्शम्

उत्तर— (क) दर्शनीयम्।

72. अध्ययनम्' शब्द में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है— (2017 NL, 20ZS)

(क) अधि + णमुल् (ख) अधि + ल्युट् (ग) अधि + अनीयर् (घ) अधि + टाप्

उत्तर— (ख) अधि + ल्युट्।

73. 'कृ' धातु में अनीयर् प्रत्यय लगने पर रूप होगा– (2017 NL, 20 ZS)

(क) करणम् (ख) करणीयम् (ग) कृतम् (घ) क्रीतम्

उत्तर– (ख) करणीयम्।

74. 'नर्तनम्' पद में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है– (2017 NM)

(क) नृत् + तुमुन् (ख) नृत् + ण्वुल् (ग) नृत् + ल्युट् (घ) नृत् + शतृ

उत्तर– (ग) नृत् + ल्युट्।

75. 'दृश्' धातु में 'अनीयर्' प्रत्यय लगाने पर शब्द बनेगा– (2017 NM)

(क) दर्शनीयः (ख) दृशनीयः (ग) दरशनीयः (घ) दरसनीयः

उत्तर– (क) दर्शनीयः।

76. 'भवितुम्' पद में प्रकृति-प्रत्यय है– (2017 NO)

(क) भू + शतृ (ख) भू + ल्युट् (ग) भू + तुमुन् (घ) भू + क्तवतु

उत्तर– (ग) भू + तुमुन्।

77. 'पाठं पाठम्' में प्रयुक्त प्रकृति और प्रत्यय है– (2017 NP)

(क) पठ् + घञ् (ख) पठ् + णमुल् (ग) पठ् + क्त (घ) पठ् + अनीयर्

उत्तर– (ख) पठ् + णमुल्।

78. 'तट' शब्द में 'ङीप्' प्रत्यय लगने पर रूप होगा– (2017 NP)

(क) तटा (ख) तटी (ग) तटिनी (घ) तटङी

उत्तर– (ख) तटी।

79. 'कृ' धातु में 'ल्युट्' प्रत्यय जोड़ने पर शब्द बनेगा– (2018 BK)

(क) करण (ख) करणम् (ग) कृणम् (घ) कृणनम्

उत्तर– (ख) करणम्।

80. 'शयनम्' में प्रयुक्त प्रकृति और प्रत्यय है– (2018 BN, 19 DA, 20 ZQ)

(क) शी + तुमुन् (ख) शी + ल्युट् (ग) शी + शतृ (घ) शी + शानच्

उत्तर– (ख) शी + ल्युट्।

81. 'स्था' धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगाने पर रूप होगा– (2018 BN, 20 ZU)

(क) तिष्ठित्वा (ख) स्थित्वा (ग) स्थात्वा (घ) स्थाक्त्वा

उत्तर– (ख) स्थित्वा।

82. 'दर्शनीय' पद में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय है– (2019 CZ)

(क) दृश् + ल्युट् (ख) दृश् + णमुल् (ग) दृश् + तव्यत् (घ) दृश् + अनीयर्

उत्तर– (घ) दृश् + अनीयर्।

83. 'गम्' धातु में तव्यत् प्रत्यय लगाने पर शब्द बनेगा– (2019 CZ)

(क) गन्तुम् (ख) गमनीय (ग) गन्तव्यम् (घ) गन्तव्यः

उत्तर– (घ) गन्तव्यः।

84. 'पठ्' धातु में 'क्त' प्रत्यय लगाने पर रूप होगा– (2019 DB)

(क) पठित्वा (ख) पठितः (ग) पठितुम् (घ) पाठः

उत्तर– (ख) पठितः।

85. 'गत्वा' पद में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है– (2019 DC)

(क) गम् + क्त्वा (ख) गम् + तुमुन् (ग) गम् + ल्यप् (घ) गम् + ल्युट्

उत्तर– (क) गम् + क्त्वा।

86. 'पा' धातु में 'क्त' प्रत्यय लगाने पर रूप होगा– (2019 DC, 20 ZP)

(क) पीतः (ख) पीत्वा (ग) पानम् (घ) पिबन्

उत्तर– (क) पीतः।

87. 'पठनम्' में प्रकृति प्रत्यय है– (2019 DD)

(क) पठ् + ल्युट् (ख) पठ् + तुमुन् (ग) पठ्+ शानच् (घ) पठ्+ अनीयर्

उत्तर– (क) पठ् + ल्युट्।

88. 'गत्वा' पद में प्रयुक्त प्रकृति प्रत्यय है– (2019 DE)

(क) गम् + तुमुन् (ख) गम् + क्त्वा (ग) गम् + अनीयर् (घ) गम् + तत्वयत्

उत्तर– (ख) गम् + क्त्वा।

89. 'नी' धातु में ल्युट् प्रत्यय लगाने पर रूप होता है– (2019 DE)

(क) नयनम् (ख) नयन् (ग) नयमान् (घ) नीतः

उत्तर– (क) नयनम्।

90. 'लिख्' धातु में तुमुन् प्रत्यय लगाने पर रूप होगा– (2019 DF)

(क) लिखन् (ख) लेखनीयम् (ग) लिखितुं (घ) लिखित्वा

उत्तर– (ग) लिखितुं।

91. 'स्थित्वा' पद में प्रकृति प्रत्यय है– (2020 ZO)

(क) तिष्ठा + त्वा (ख) स्या + वत्त्वा (ग) स्थिति + त्वा (घ) स्थि + क्त्वा

उत्तर– (ख) स्या + वत्त्वा।

92. 'भू' धातु में तुमुन् प्रत्यय लगने पर बनेगा– (2020 ZO)

(क) भूतम् (ख) भोक्तुम् (ग) भवितुम् (घ) भावितुम्

उत्तर– (ग) भवितुम्।

93. 'पीत्वा' में प्रकृति प्रत्यक्ष है– (2020 ZR)

(क) पी + क्त्वा (ख) पा + त्वा (ग) पा + क्त्वा (घ) पी + त्वा

उत्तर– (ग) पा + क्त्वा।

94. 'कृतः' में प्रकृति प्रत्यय है– (2020 ZT)

(क) कृ + शतृ (ख) कृ + तुमुन् (ग) कृ + क्तवतु (घ) कृ + क्त

उत्तर– (घ) कृ + क्त।

95. चिञ् (चि) + अनीयर् में रूप बनता है– (2020 ZT)

(क) चेयम् (ख) चयनीयम् (ग) चयनम् (घ) चेतव्यम्

उत्तर– (ख) चयनीयम्।

●●

8 वाच्य-परिवर्तन

(अंक-2)

वाक्य की उस दशा को वाच्य कहा जाता है जिससे यह पता चल सके कि वाक्य के प्रयोग में कर्त्ता की प्रधानता है या कर्म की प्रधानता है या भाव की। अतः वाक्य के कहने की विधि को संस्कृत में वाच्य कहते हैं। वाच्य तीन प्रकार के होते हैं–

(1) कर्तृ वाच्य

(2) कर्म वाच्य

(3) भाव वाच्य

(1) कर्तृ वाच्य — कर्तृ वाच्य वाक्यों में क्रिया कर्त्ता के अनुसार प्रयोग होती है अर्थात् जिस वाक्य में कर्त्ता प्रधान हो और क्रिया कर्त्ता के पुरुष और वचन के अनुसार प्रयोग की जाती हो उसे कर्तृ वाच्य कहते हैं। जैसे— बालकः पत्रं लिखति।

इस वाक्य में चूँकि पत्र लिखने का कार्य बालक कर रहा है इसलिए बालक कर्त्ता है। अतः इसमें प्रथमा विभक्ति का प्रयोग होगा। 'बालक' कर्त्ता के अनुसार विभक्ति के वचन तथा क्रिया का प्रयोग 'लिखति' हुआ है। कर्म 'पत्रं' में द्वितीया विभक्ति है।

सुरेशः पुस्तकं पठति।

राधा गृहं गच्छति।

वयम् आपणं गच्छामः।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रियाएँ — पठति, गच्छति, गच्छामः अपने कर्त्ता — सुरेश, राधा, वयम् के अधीन हैं। कर्त्ता की प्रधानता के कारण कर्त्ता प्रथमा विभक्ति के हैं तथा क्रियाएँ उनके पुरुष एवं वचन के अनुसार प्रयुक्त हुई हैं। कर्म में द्वितीया विभक्ति है।

(2) कर्म वाच्य — कर्म वाच्य के वाक्यों में कर्त्ता के स्थान पर कर्म की प्रधानता रहती है और क्रिया कर्म के अधीन होती है, तदनुसार कर्म में प्रथमा विभक्ति यथा कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है। क्रिया का पुरुष और वचन कर्म के अनुसार होते हैं। यथा—

कृष्णेन कंसः हतः।	कर्तृ वाच्य	कृष्णः कंसं हतवान्।
मया पुस्तकानि पठ्यन्ते।	कर्तृ वाच्य	अहं पुस्तकानि पठामि।
त्वया पत्रं लिख्यते।	कर्तृ वाच्य	त्वं पत्रं लिखसि।

उक्त कर्तृवाच्य के वाक्य (1) कृष्णः कर्त्ता, कर्मवाच्य में तृतीया विभक्ति में प्रयुक्त हुआ है और कर्म '**कंसः**' को कर्मवाच्य में कर्त्ता का स्थान दिया है। इसी प्रकार वाक्य (2) में अहं कर्त्ता कर्मवाच्य में तृतीया विभक्ति में 'मया' तथा 'पुस्तकानि' कर्मकारक द्वितीया विभक्ति का रूप कर्मवाच्य में 'पुस्तकानि' प्रथमा विभक्ति के रूप में प्रयुक्त हुआ है। वाक्य (3) में त्वं कर्त्ता कारक है तथा कर्मवाच्य में त्वया तृतीया विभक्ति में प्रयुक्त हुआ है और इसी वाक्य में 'पत्रं' कर्म को कर्मवाच्य में कर्त्ता के रूप में प्रयोग किया है। कर्मवाच्य में क्रियाएँ कर्म के आधार पर लगाई जाती हैं।

(3) भाववाच्य— भाववाचक केवल अकर्मक धातुओं से ही होता है। इस वाच्य में भी कर्त्ता में तृतीया विभक्ति होती है। यथा— त्वया गम्यते। अस्माभिः अत्र पठ्यते। बालकैः सदा परिश्रमपरैः भवितव्यम्।

भाववाच्य का कर्त्ता किसी भी लिंग और वचन का हो, उसकी क्रिया में एकवचन ही होगा। इसमें कर्म का अभाव रहता है।

यथा— (1) मया हस्यते।

(2) रामाभ्यां हस्यते।

(3) तैः पठ्यते।

उपर्युक्त वाक्यों में भाव की प्रधानता तथा कर्म का अभाव है। यहाँ तीनों कर्त्ता तृतीया विभक्ति (मया–एकवचन) (रामाभ्याम् द्विवचन) तथा (तैः बहुवचन) के हैं लेकिन क्रियाएँ हस्यते, पठ्यते प्रथम पुरुष एक वचन की हैं। कर्त्ता का कोई प्रभाव इन क्रियाओं पर नहीं है।

कर्त्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना

कर्मवाच्य की क्रिया सदैव आत्मनेपद में आती है।

कर्मवाच्य के कर्त्ता को तृतीया विभक्ति में तथा कर्म को प्रथमा विभक्ति में बदलकर रखा जाता है।

कर्म के पुरुष तथा वचन के अनुसार क्रिया का प्रयोग होता है।

कर्मवाच्य बनाने के लिए सार्वधातुक (लट्, लोट्, विधिलिङ्ग,लङ्) लकारों में धातु में 'यक्' प्रत्यय जोड़ते हैं जिसका 'य' शेष रहता है। जैसे पठ् धातु में 'य' जोड़कर 'पठ्य' बना और इसके रूप लट्लकार पठ्यते आदि, लोट् में पठ्यताम् आदि, विधिलिङ्ग में पठ्येत आदि तथा लङ्लकार में अपठयत् आदि रूप बनेंगे।

आकारान्त धातुओं में आ, ए, ऐ, ओ, औ, का ई बनाकर रूप बनाते हैं। यथा — पा, दा, धा, भा, स्था, ह्वा एवं गा के रूप होंगे — पी, दी, धी, भी, स्थी, ह्वी, गी से रूप बनाते हैं। जैसे — पीयते, दीयते, स्थीयते आदि।

यदि धातुओं के आदि में य, व, र आदि है तो कर्मवाच्य में 'य' का इ, 'व' का उ हो जाता है। यथा यज् से इज्यते, वस् से उष्यते।

जिन धातुओं के अन्त में ह्रस्व इ तथा ह्रस्व उ होता है, कर्मवाच्य में इ से ई, उ से ऊ हो जाता है। यथा जि = जीयते, चि = चीयते, श्रु = श्रूयते, स्तु = स्तूयते।

कर्मवाच्य में धातु के अन्त में आनेवाली ऋ को 'रि' और 'ईर' हो जाता है। यथा — 'कृ' से क्रियते, ह्री से ह्रियते, जृ से जीर्यते, तृ से तीर्यते।

कर्त्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना

भाववाच्य में क्रिया आत्मनेपद में आती है।

कर्त्ता में तृतीया विभक्ति तथा क्रिया सदैव लट् लकार प्रथम पुरुष एक वचन की ही प्रयुक्त होती है।

सार्वधातुक लकारों में धातु में 'यक्' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

भाववाच्य में परिवर्तन को अन्य नियम तो प्रायः कर्मवाच्य परिवर्तन जैसे हैं लेकिन विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। क्रिया के आधार पर वाक्य को दो प्रकार से बदलते हैं :

(1) सकर्मक क्रिया होने पर कर्त्तृवाच्य को कर्मवाच्य में ही बदला जा सकता है।

(2) अकर्मक क्रिया होने पर कर्त्तृवाच्य केवल भाववाच्य में परिवर्तित होगा।

सकर्मक क्रिया का उदाहरण — बालकः पत्रं लिखति = पत्रं बालकेन लिख्यते।

अकर्मक क्रिया का उदाहरण — अहं गच्छामि = मया गम्यते।

गत वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में पूछे गये वाच्य-परिवर्तन

[2011]

सः पुस्तकं पठति।	IA, 20ZU	तेन पुस्तकं पठ्यते।
अहं जलं पिबामि।	IA	मया जलं पीयते।
त्वं पत्रं लिखसि	IA	त्वया पत्रं लिख्यते।
बालिका पुस्तकं पठति।	IB	बालिकया पुस्तकं पठ्यते।
मया हस्यते।	IB	अहं हसामि।
रजकः गर्दभं ताडयति।	IB	रजकेन गर्दभं ताड्यते।
छात्रः पुस्तकं पठति।	IC	छात्रेण पुस्तकं पठ्यते।

अहं पत्रं लिखामि।	IC	मया पत्रं लिख्यते।
कृषकेण जलं पीयते।	IC	कृषकः जलं पिबति।
सः दुग्धं पिबति।	ID, 19 DE	तेन दुग्धं पीयते।
अहं गच्छामि।	ID, 19 DE	मया गम्यते।
लता गीतं गायति।	IX	लतया गीतं गीयते।
त्वं पत्रं लिखसि।	IX, 19 DA	त्वया पत्रं लिख्यते।

[2012]

बालिका गीतं गायति	HD	बालिकया गीतं गीयते।
कविः काव्यं करोति	HD, 17 NM	कविना काव्यं कुरुते।
तया गम्यते	HD, 19 DD	त्वं गच्छसि।
सः ग्रामं गच्छति	HE	तेन ग्रामं गम्यते।
तेन यत्रं पठयते	HE	सः पत्र पठति।
अहं पश्यामि	HE	मया दृश्यते।
सः पुस्तकं पठति	HF	तेन पुस्तक पठ्यते।
तेन जलं पीयते	HF	सः जलं पिबति।
अहं लिखामि	HF	मया लिख्यते।
रामः जल पिबति	HG,HJ	रामेण जलं पीयते।
त्वं किं लिखसि	HG	त्वया किं लिख्यते।
अहं पुस्तकं पठामि	HG	मया पुस्तकं पठ्यते।
सा विद्यालयं गच्छति	HJ	तया विद्यालयं गम्यते।
त्वयां पत्र लिख्यते	HJ	त्वं पत्रं लिखसि।
अहं गृहं गच्छामि	HI, 20ZT	मया गृहं गम्यते।
त्वया पुस्तकं पठ्यते	HI	त्वं पुस्तक पठसि।
सिद्धार्थः चित्रपटं पश्यति	HI	सिद्धार्थेन चित्रपटं दृश्यते।

[2013]

तेन दुग्धं पीयते	BJ, 20ZS	सः दुग्धं पिबति।
रामः पुस्तकं पठति	BJ	रामेण पुस्तकं पठ्यते।
रमा पत्रं लिखति	BJ	रमया पत्रं लिख्यते।
अहम् गच्छामि	BK	मया गम्यते।
रामेण पुस्तकं पठ्यते	BK	रामः पुस्तकं पठति।
मोहनः गीतं गायति	BL, 19 DC	मोहनेन गीतं गीयते।
सीता पत्रं लिखति	BL	सीतया पत्रं लिख्यते।
छात्रया पुस्तकं पठ्यते	BN	छात्रा पुस्तकं पठति।
माता ओदनं पचति	BN	मात्रा ओदन पच्यते।
सन्दीपः विद्यालयं गच्छति	BO	सन्दीपेन विद्यालयं गम्यते।
कोमलेन पत्रं लिख्यते	BO	कोमल पत्रं लिखति।

अहं पुस्तकं पठामि	BO, 19 DD	मया पुस्तकं पठ्यते।
अहं ग्रामं गच्छामि	BP	मया ग्रामं गम्यते।
रामेण ग्रामं गम्यते	BP	रामः ग्रामं गच्छति।
तेन पत्रं पठ्यते	BP	सः पत्रं पठति।

[2014]

बालकः मार्गे अधावत्।	CS	बालकेन मार्गे धावते।
रमा पत्रं लिखति।	CS	रमया पत्रं लिख्यते।
तेन पुस्तकं पठ्यते।	CS	सः पुस्तकं पठति।
रामेण पुस्तकं पठ्यते।	CT	रामः पुस्तकं पठति।
ते पत्रं पठन्ति।	CT	तैः पत्रं पठ्यन्ते।
अहम् गच्छामि।	CT	मया गम्यते।
सः ग्रन्थं पठति।	CU	तेन ग्रन्थं पठ्यते।
त्वया गृहं गम्यते।	CU, 19 DF	त्वम् गृहं गच्छसि।
अहं लेखं लिखामि।	CU	मया लेखं लिख्यते।
रामेण बाली हन्यते।	CV	रामः वाली हन्ति।
अहं जलं पिबामि।	CV	मया जलं पीयते।
सः हसति।	CV	तेन हस्यते।
सा रामायणं पठति।	CW	तया रामायणं पठ्यते।
रमेशः पुस्तकं पश्यति।	CW	रमेशेन पुस्तकं दृश्यते।
तेन गम्यते।	CW	सः गच्छति।
तया हस्यते।	CX	सा हसति।
गोपालः पुस्तकं पठति।	CX	गोपालेन पुस्तकं पठ्यते।
भक्तः ज्ञानम् प्राप्नोति।	CX	भक्तेन ज्ञानं प्राप्यते।
अहं पुस्तकं पठामि।	CY, 17 NJ	मया पुस्तकं पठ्यते।
त्वया ग्रामः गम्यते।	CY	त्वम् ग्रामं गच्छसि।
ते पत्राणि पठन्ति।	CY	तैः पत्राणि पठ्यन्ते।

[2015]

तेन दुग्धं पीयते।	DU	सः दुग्धं पिबति।
रामः विद्यालयं गच्छति।	DU, 20ZU	रामेण विद्यालयं गम्यते।
अहं पुस्तकं पठामि।	DU	मया पुस्तकं पठ्यते।
सः रामायणं पठति।	DT	तेन रामायणं पठ्यते।
अहं दुग्धं पिबामि।	DT, 19 DB	मया दुग्धं पीयते।
तया लिख्यते।	DT	त्वं लिखसि।

[2016]

तेन पुस्तकं पठ्यते।	TJ	सः पुस्तकं पठति।
अहं गच्छामि।	TJ	मया गम्यते।

छात्राः पत्रं लिखति।	TJ	छात्रया पत्रं लिख्यते।
अहं पुस्तकं पठामि।	TK	मया पुस्तकं पठ्यते।
मया जलं पीयते।	TK, 19 DD, 20 ZP	अहं जलं पिबामि।
तया गम्यते।	TK	त्वं गच्छसि।
रामेण ग्रामः गम्यते।	TO	रामः ग्रामं गच्छति।
बालकाः धावन्ति।	TO	बालकाभिः धावन्ते।
रामेण तीव्रं हस्यते।	TO	रामः तीव्रं हसति।
सः प्रयागं गच्छति।	TP	तेन प्रयागं गम्यते।
तेन पुस्तकं नीयते।	TP, 19 DB	सः पुस्तकं नयति।
अहं पुस्तकं लिखामि।	TP	मया पुस्तकं लिख्यते।

[2017]

भक्तेन ज्ञानं प्राप्यते।	NJ	भक्तः ज्ञानं प्राप्नोति।
रामः विद्यालयं गच्छति।	NJ	रामेण विद्यालयं गम्यते।
रामः धनं ददाति।	NK	रामेण धनं दीयते।
मया चित्रं दृश्यते।	NK, 20ZT	अहं चित्रं पश्यामि।
अहं संस्कृतं पठामि।	NK	मया संस्कृतं पठ्यते।
रामः अजां नयति।	NL	रामेण अजां नयते।
अहं चित्रं पश्यामि।	NL	मया चित्रं दृश्यते।
छात्रैः पुस्तकानि नीयन्ते।	NM	छात्राः पुस्तकानि नयन्ति।
मोहनः ग्रामम् गच्छति।	NN	मोहनेन ग्रामम् गम्यते।
विमला नाटकं पठति।	NN	विमलया नाटकं पठ्यते।
बालिकया पुस्तिका लिख्यते।	NN	बालिका पुस्तिका लिखति।
सीता जलं पिबति।	NO	सीतया जलं पीयते।
अनुसूया पत्रं लिखति।	NO	अनुसूयया पत्रं लिख्यते।
छात्रैः पुस्तकानि पठ्यन्ते।	NO	छात्राः पुस्तकानि पठन्ति।
त्वया पुस्तकं पठ्यते।	NP	त्वं पुस्तकं पठसि।
मल्लः व्यायामं करोति।	NP	मल्लेन व्यायायं कुरुते।
अहं गृहं गमिष्यामि।	NP	मया गृहं गमिष्यते।

[2018]

त्वं कुत्र गच्छसि।	BK	त्वया कुत्र गम्यते।
मया किं क्रियते।	BK	अहं किं करोमि।
त्वया पुस्तकं नीयते।	BK	सा पुस्तकं नयति।
सः दुग्धं पिबति।	BK	तेन दुग्धं पीयते।
कृष्णः धेनुं नयति।	BN	कृष्णेन धेनुं नीयते।
त्वया किं पठ्यते।	BN	त्वं किं पठसि।
बालिका गीतं गायति।	BN	बालिकया गीतं गीयते।

[2019]

सा जलं पिबति।	(DA)	तया जलं पीयते।
मोहनः पुस्तकं पठति।	(DA)	मोहनेन पुस्तकं पठ्यते।
त्वं ग्रामं गच्छसि।भ	(DB)	त्वया ग्रामं गम्यते।
बालकः रामायणं पठति।	(DC)	बालकेन रामायणं पाठ्यते।
तेन वनं गम्यते।	(DC)	सः वनं गच्छति।
अहं पुस्तकं पठामि।	(DF)	मया पुस्तकं पठ्यते।
वयं विद्यालयं गच्छामः।	(DF)	अस्माभिः विद्यालयं गम्यते।

[2020]

त्वं पुस्तकं ददासि।	ZO	त्वया पुस्तकं दीयते।
अस्याभिः पुस्तकानि पढ्यन्ते।	ZO	वयं पुस्तकानि पठायः।
वयं हसायः।	ZO	अस्याभिः हस्यते।
रामः वनं गच्छति।	ZP	रामेण वनं गस्यते।
सिद्धार्थः गीतं गायन्ति।	ZP	सिद्धार्थेन गीतं गीयते।
रमेशः पुस्तकं पठति।	ZQ	रमेशेण पुस्तकं पठ्यते।
अहं पत्रं लिखामि।	ZQ	मया पत्रं लिख्येत।
मया ग्रामः गम्यते।	ZR	अहं ग्रामं गच्छामि।
त्वं दुग्धं पिबसि।	ZR	त्वया दुग्धं पीयते।
बालिकाभिः हस्यते।	ZT	बालिकाः हसन्ति।
बालकेन मोहनः दृश्यते।	ZU	बालकः मोहनं पश्यति।

●●

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

संस्कृत
कक्षा-12

समय : तीन घण्टे 15 मिनट] *[पूर्णांक : 100*

निर्देश : प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।

1. निम्नलिखित गद्य खण्ड पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : **5 × 2 = 10**

चन्द्रापीडोऽपि तत्रैव शिलातले, निरभिमानताम् अतिगम्भीरतां च कादम्बर्याः, निष्कारणवत्सलतां महाश्वेतायाः, अतिसमृद्धिं च गन्धर्वराजलोकस्य मनसा भावयन्, केयूरकेण संवाह्यमान चरणः, क्षणादिव क्षणदां क्षपितवान् । अथ समुद्गते सवितरि, शिलातलात् उत्थाय चन्द्रापीडः प्रक्षालितमुखकमलः कृतसन्ध्यानमस्कृतिः गृहीतताम्बूलः "केयूरक! विलोकय, देवी कादम्बरी प्रबुद्धा वा न वा? क्व सा तिष्ठति? इत्यवोचत्। गतप्रतिनिवृत्तेन च तेन "देव! मन्दरप्रासादस्य अधस्तात्, अङ्गणसौधवेदिकायां महाश्वेतया सह अवतिष्ठते" इत्यावेदिते, ताम् आलोकितुम् आजगाम।

(i) प्रस्तुत गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

(ii) चन्द्रापीडः केन संवाह्यमानचरणः, क्षणादिव क्षणदां क्षपितवान?

(iii) "केयूरक ! विलोकय, देवी कादम्बरी प्रबुद्धा वा न वा? क्व सा तिष्ठति?" इत्यवोचत् रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

(iv) 'महाश्वेतया' में कौन-सी विभक्ति है?

(v) 'गतप्रतिनिवृत्तेन' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

अथवा

अथ च उदयगिरिशिखरम् आरूढे भगवति सप्तसप्तौ अग्रतः अर्धगव्यूतिमात्र एव आयातं स्कन्धावारम् अद्राक्षीत्। जवविशेषग्राहिणा इन्द्रायुधेन सत्वरम् आसाद्य, स्कन्धावारं प्रविश्य, 'क्व वैशम्पायनः' इत्यपृच्छत्। ततः ते स्कन्धावारवर्तिनः सर्वेजनाः सममेव अस्मिन् तरुतले अवतरतु तावत् देवः, ततः यथावस्थितं विज्ञापयामः" इति न्यवेदयन्। चन्द्रापीडस्तु तेन कष्टतरेण वचसा अन्तःशल्य इव भूत्वा पुनः तान् अप्राक्षीत् "किं वृत्तम् अस्य, येनासौ नागतः?"इति।

(i) उपरोक्त गद्यांश किस पुस्तक से उद्धृत है?

(ii) चन्द्रापीडः स्कन्धावारं प्रविश्य किम् अपृच्छत्।

(iii) 'उदयगिरिशिखरम् आरूढे भगवति सप्तसप्तौ' रेखांकित अंश का अनुवाद कीजिए।

(iv) 'इन्द्रायुधेन' में कौन-सी विभक्ति है।

(v) 'अन्तः शल्य इव भूत्वा' का शाब्दिक अर्थ लिखिए।

2. अपनी पाठ्यपुस्तक के आधार पर किसी **एक** पात्र का हिन्दी में चरित्र-चित्रण कीजिए : (अधिकतम 100 शब्द) **4**

(i) कादम्बरी (ii) चन्द्रापीड (iii) चाण्डालकन्या।

3. 'बाणस्तु पञ्चाननः' उक्ति की विवेचना हिन्दी **अथवा** संस्कृत में कीजिए। (अधिकतम 100 शब्द) **4**

4. निम्नलिखित प्रश्नों का सही विकल्प लिखिए :

(अ) 'एष च दर्शनात् प्रभृति में निष्कारण बन्धुतां गतः' इति का वदति? 1

(i) कादम्बरी (ii) महाश्वेता (iii) पत्रलेखा (iv) मदलेखा।

(आ) महाश्वेतायाः माता का आसीत्? 1

(i) विलासवती (ii) गौरी

(iii) मदिरा (iv) मदलेखा।

5. निम्नलिखित में से किसी **एक** श्लोक की हिन्दी में सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 2 + 5 = 7

(अ) एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वं
नवं वयः कान्तमिदं वपुश्च।
अल्पस्य हेतोर्बहुहातुमिच्छन्
विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्।।

(आ) तस्मिन् क्षणे पालयितुः प्रजाना-
मुत्पश्यतः सिंहनिपातमुग्रम् ।
अपाङ्मुखस्योपरि पुष्पवृष्टिः
पपात विद्याधरहस्तमुक्ता।।

6. अधोलिखित में से किसी **एक** श्लोक की सन्दर्भ सहित व्याख्या संस्कृत में कीजिए : 2 + 5 = 7

(अ) प्रत्यब्रवीच्चैनमिषुप्रयोगे
तत्पूर्वभङ्गे वितथप्रयत्नः।
जडीकृतस्त्र्यम्बक वीक्षणेन
वज्रं मुमुक्षन्निव चक्रपाणिः।।

(आ) इत्थं क्षितीशेन वशिष्ठधेनु-
र्विज्ञापिता प्रीततरा बभूव।
तदन्विता हैमवताच्च कुक्षेः
प्रत्याययावाश्रममश्रमेण।।

7. कालिदास की काव्यशैली हिन्दी **अथवा** संस्कृत में लिखिए। (अधिकतम 100 शब्द) 4

8. निम्नलिखित दिये गये विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए :

(अ) नन्दिनी कस्य धेनुः अस्ति? 1

(i) दिलीपस्य (ii) वशिष्ठस्य

(iii) सुदक्षिणायाः (iv) अजस्य।

(आ) दिलीपस्य परीक्षार्थं नन्दिनी कुत्र प्रविष्टा? 1

(i) गृहे (ii) गिरिगुहायाम्

(iii) आश्रमे (iv) गौशालायाम्।

9. निम्नलिखित में से किसी **एक** अंश की हिन्दी में ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : 2 + 5 = 7

(अ) यस्य त्वयाव्रणविरोपणमिङ्गुदीनां
तैलं न्यषिच्यत मुखे कुशसूचिविद्धे
श्यामाकमुष्टिपरिवर्धितको जहाति
सोऽयं न पुत्रकृतकः पदवीं मृगस्ते।।

(आ) भृत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी,
दौष्यन्तिमप्रतिरथं तनयं निवेश्य।
भर्त्रा तदर्पितकुटुम्बभरेण सार्धं,
शान्ते करिष्यसि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन् ।।

10. निम्नलिखित में से किसी एक सूक्ति की सन्दर्भ सहित हिन्दी में व्याख्या कीजिए : **2 + 5 = 7**

(i) यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः।
(ii) अद्यप्रभृति दूरवर्तिनी ते खलु भविष्यामि।
(iii) वनौकसोऽपि सन्तःलैकिकज्ञा वयम्।

11. कालिदास का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों का नामोल्लेख कीजिए। (अधिकतम **100** शब्द) **4**

12. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर सही विकल्पों चुनकर दीजिए :

(अ) शकुन्तलया सह राजकुलं का गता? **1**

(i) अनसूया (ii) प्रियंवदा
(iii) गौतमी (iv) मेनका ।

(आ) शकुन्तलां कोऽपालयत् ? **1**

(i) वशिष्ठः (ii) कण्वः
(iii) विश्वामित्रः (iv) अगस्त्यः।

13. निम्नलिखित में से किसी **एक** विषय पर संस्कृत में **10** पंक्तियों का निबन्ध लिखिए : **10**

(i) बाणस्तु पञ्चाननः
(ii) पर्यावरण-प्रदूषणम्
(iii) आचारः परमो धर्मः
(iv) जनसंख्या-विस्फोटः।

14. संस्कृत में उदाहरण देकर उपमा अलंकार को स्पष्ट कीजिए। **3**

अथवा

रूपक अलंकार का लक्षण लिखकर उदाहरण स्पष्ट करें।

15. अधोलिखित में से किन्हीं **चार** वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए : **4 × 2 = 8**

(i) गाँव के दोनों ओर नदी बहती है।
(ii) दुष्यन्त के साथ शकुन्तला जाती है।
(iii) ज्ञान के बिना मुक्ति संभव नहीं है।
(iv) सभी देवताओं को नमस्कार है।
(v) कवियों में कालिदास श्रेष्ठ कवि हैं।
(vi) देवदत्त अध्ययन के लिए शहर में रहता है।

16 (अ) अधोलिखित रेखांकित पदों में से किसी **एक** में नियम निर्देशपूर्वक विभक्ति का उल्लेख कीजिए : **2**

(i) पापात् निवारयति।
(ii) छात्रः अध्यापकाय द्रुह्यति।
(iii) गोषु नन्दिनी बहुक्षीरा।

(आ) 'शत्रुभ्यः क्रुध्यति वीरः' में रेखांकित पद में कौन-सी विभक्ति है? 1

(i) चतुर्थी (ii) पंचमी

(iii) तृतीया (iv) षष्ठी

17. निम्नलिखित में से किसी **एक** पद में विग्रह कीजिए : 2

(अ) (i) पीताम्बरः (ii) उपसमुद्रम्

(iii) हरिहरौ।

(आ) 'जितेन्द्रियः' में प्रयुक्त समास का नाम है : 1

(i) बहुव्रीहिः (ii) कर्मधारयः

(iii) द्वन्द्वः (iv) तत्पुरुषः।

18. (अ) 'सच्चित्' का सन्धि विधायक सूत्र लिखिए। 2

(आ) 'षडाननः' का सन्धि-विच्छेद है : 1

(i) षड + आननः (ii) षट् + आननः

(iii) षडा + ननः (iv) ष + डाननः।

19. (अ) 'वारिणा' पद में वारि प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? 2

(आ) 'हरिभिः' पद 'हरि' प्रातिपदिक के किस विभक्ति एवं वचन का रूप है? 1

(i) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन (ii) चतुर्थी विभक्ति, बहुवचन

(iii) तृतीया विभक्ति, बहुवचन (iv) पंचमी विभक्ति, बहुवचन।

20. (अ) 'नयामि' क्रियापद का पुरुष और वचन लिखिए। 2

(आ) 'ग्रह्' धातु लट् लकार, प्रथम पुरुष, द्विवचन का रूप है : 1

(i) गृह्णीतः (ii) गृह्णीयः

(iii) गृह्णीवः (iv) गृह्णीथ।

21. (अ) 'शयनम्' पद में प्रयुक्त प्रकृति एवं प्रत्यय है : 1

(i) शी + तुमुन् (ii) शी + ल्युट्

(iii) शी + शतृ (iv) शी + शानच्।

(आ) 'धा' धातु से क्त्वा प्रत्यय लगाने पर रूप बनेगा : 1

(i) धात्वा (ii) ध्यात्वा

(iii) धृत्वा (iv) धोत्वा।

22. अधोलिखित वाक्यों में से किसी **एक** का वाच्य परिवर्तन कीजिए : 2

(i) सा जलं पिबति। (ii) त्वं पत्रं लिखसि।

(iii) मोहनः पुस्तकं पठति।

●●